स्थापित वि. संवत् १९३२
(१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2009-10 ई.

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३४ वाँ



एकमात्र वितरक :
मॉडर्न पब्लिशर्ज़
रेलवे रोड, जालन्धर
फोन : 2457160

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008

अन्य प्राप्ति स्थान :
जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 2457959

मूल्य:
रु० 60.00



गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी



श्री गणेशाय नमः



संस्थापक : पं. देवी दयालु ज्योतिषी



श्री सरस्वत्यै नमः



स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

नया शुभकृत नामक

वि. संवत् २०६६ (सन् 2009-10 ई.)

राजा शुक्र

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

मन्त्री चन्द्र

मशहूरे आलम—

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)

सुपुत्र: स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

सह-संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (भारत) फोन नं. 0181-2457959, फैक्स 2227388

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३४ वां

स्थापित वि. संवत् १९३३

प्रकाशक : मॉडर्न पब्लिशर्ज़, रेलवे रोड, जालन्धर शहर, फोन : 2458388

Printed by : Balwant Sharma (Executive Director), MBD Printographics (P) Ltd, Ram Nagar, Industrial Area, Gagret, Distt. Una (H.P.)

विषय-सूची —पंचांगदिवाकर संवत् २०६६ (सं. 2009-10 ई.)

विषय	पृष्ठ
पर्व, त्यौहार व छुट्टियां	3-5
हिमाचल, जम्मू, पंजाबादि के मेले	6
सरकारी छुट्टियां, सिक्ख, जैन पर्व	7
संक्रान्ति, एकादशी आदि व्रत-एक दृष्टि में	8
गण्डमूल, पंचक विचार	10
ग्रहण-विवरण	11-20
शनि-साढ़ेसाती व पायाविचार गुरु व राहु-केतु गोचरफल	21-24
सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि योग	25-26
द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग	26
व्यापारिक मन्दा-तेजी	43-49
चामत्कारिक मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र	50-53
बारह राशियों का मासिक फलादेश	55-62
राजा-मन्त्री, आर्द्रा प्रवेश फल	63-66
आकाशी कौंसिल, प्रमुख भविष्यवाणियां	67-75
सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश	76-79
चतुर्युगों की व्यवस्था	80
संदिग्ध व्रत-पर्वों का निर्णय	81
करवाचौथ के चं. उ., दीपावली मुहू.	82-83
चैत्रादि पक्ष (घड़ी-पलों में)	85-108
चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश	109-112
दैनिक ग्रहस्पष्ट, चन्द्रोदय-चन्द्रास्त	114-124
शुद्ध विवाह मुहूर्त्त	125-130
राशियों के अनुसार विवाह मुहूर्त्त	131-133
मुण्डन, गृहप्रवेशादि मुहूर्त्त	134-138
लग्नशुद्धि, भद्रा परिहार, यात्रा मुहू.	140-142
किस दिन क्या करना शुभ है ?	145-146
वर्णादि अष्टकूट, मंगलीक परिहार	147-151

विषय	पृष्ठ
वर-कन्या मिलान सारिणी	152-155
गण्डान्त नक्षत्र विचार	156
सप्तवार व्रत, घाती, वर्णादि चक्र	157-158
षोडश संस्कारों के मुहूर्त्त	160-162
प्रसूती लग्नादि विचार	164-165
प्रमुख लग्न सारिणीयां	167-171
षड्वर्ग सारिणी	172
भारत के नगरों के अक्षांश-रेखांश	175-177
राजस्थान, जम्मू, हरियाणा के अक्षांश	179-180
विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश	181-182
किसी भी नगर का सूर्योदय निकालें	183-187
हिमाचल के नगरों के सू.उ.-सू.अ.	188-191
भारत के प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त	192-199
चन्द्रस्पष्ट द्वारा भोग्यदशा जानना	200-202
दशाऽन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा चक्र	203-206
विंशोत्तरी दशाओं का वर्णन	207-208
वर्षफल सारिणी (घण्टा-मिनटों में)	220
दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली	223-228
दैनिक लग्न सारिणी जालन्धर	241-246
उपयोगी रत्न एवं उपरत्न	250-252
पुस्तक सूची	255-256

✤ देखें पृष्ठ 63-64

वर्ष का राजा-शुक्र✤, मन्त्री-चन्द्र

इस वर्ष के नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

विषय	पृष्ठ
कुम्भ महापर्व-हरिद्वार, सोमवती अमावस	9
ग्रहण विवरण (विशेष)	11-20
बारह संक्रान्तियों का फल	27-28
रुद्राक्ष की महिमा एवं महत्त्व	29-31
गंङ्गा रहस्य	31
शिव के अङ्गभूत एवं नाग देवता	32
अरिष्ट ग्रहों के दान, पूजा, उपाय	35-37
विभिन्न समस्याओं के उपाय/टोटके	38-39
वर-कन्या मेलापक-आधुनिक सन्दर्भ	40-41
सन्तान सुख-बाधाकारक योग	42
भगवान् सूर्य के जपनीय मंत्र	54
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय	83
केतु-शुक्र की दशाऽन्तर्दशा फल	207-208
योगिनी दशाऽन्तर्दशा फल	209-210
जन्मदिन पर क्या करें, क्या न करें ?	211
घड़ी-पलों का घण्टा-मिन्ट में परिवर्तन	222
द्विग्रही, त्रिग्रही योगों का फल	234-239
कालसर्प योग के कुछ उपाय	253

≈आगामी वर्ष के नवीन विषय≈

- उत्तर-प्रदेश व उत्तराखण्ड के नगरों के अक्षांश-रेखांश
- जम्मू की दैनिक लग्न-सारिणी
- स्त्री जातक सम्बन्धी विशेष योग
- मंत्रों द्वारा इष्ट सिद्धि
- कुण्डली में चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग

पंचाँग दिवाकर के १३४वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्निस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ

वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:

प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी

श्री हस्त-मुद्रा—

१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ:

श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्

(वाराणसी)

प्रमुख व्रत, पर्व, त्योहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2009-10 ई.)

* जनवरी 2009 ई. *

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. गुरु
गुरु गोबिन्द सिंह जयंती	5 जन. चंद्र
पुत्रदा एकादशी व्रत	7 जन. बुध
पूर्णिमा, माघस्नान प्रा.	11 जन. रवि
लोहड़ी पर्व	12 जन. चंद्र
मकर संक्रान्ति (माघी)	13 जन. मंग.
पुण्य माघ संक्रा. सू.उ. से	14 जन. बुध
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	14 जन. बुध
षट्तिला एका. व्रत	21 जन. बुध
सोमवती मौनी अमावस	26 जन. सोम.
भारत-गणतन्त्र दिवस	26 जन. चंद्र
गौरी तृतीया व्रत	29 जन. गुरु
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	30 जन. शुक्र
वसन्तपंचमी, श्रीपंचमी	31 जन. शनि
सरस्वती जयन्ती	31 जन. शनि

* फरवरी *

रथ-आरोग्य सप्तमी	2 फर. चंद्र
पुत्र सप्तमी व्रत	2 फर. चंद्र
भीष्म द्वादशी	6 फर. शुक्र
माघ पूर्णिमा	9 फर. चंद्र
माघ स्नान समाप्त	9 फर. चंद्र
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	9 फर. चंद्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	23 फर. चंद्र
भौमवती अमावस	24 फर. मंग.

* मार्च *

होलाष्टक प्रारम्भ	4 मार्च बुध
गोविन्द द्वादशी	8 मार्च रवि
होलिका दहन (सायं)	10 मार्च मंग.
फा. पूर्णिमा, होली	11 मार्च बुध
होलाष्टक समाप्त	11 मार्च बुध
वसन्तोत्सव प्रा.	11 मार्च बुध
होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा सा.)	11 मार्च बुध
श्रीशीतलाष्टमी व्रत	19 मार्च गुरु
महाविषुव दिवस	20 मार्च शुक्र
वारुणी पर्व	24 मार्च मंग.
चैत्र अमावस (वि. संवत् 2065 पूर्ण)	26 मार्च गुरु
वि. संवत् 2066 प्रा.	27 मार्च शुक्र
चैत्र (वासंत)नवरात्रे शुरु	27 मार्च शु.
गौरी तृतीया (गणगौर)	29 मार्च रवि
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	31 मार्च मंग.
स्कन्द षष्ठी(पंचमी विद्धा)	31 मार्च मं.

* अप्रैल *

श्रीदुर्गाष्टमी व्रत	3 अप्रै. शुक्र
अशोकाष्टमी	3 अप्रै. शुक्र
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	3 अप्रै. शुक्र
श्रीरामनवमी	3 अप्रै. शुक्र
वासन्त नवरात्रे समाप्त	3 अप्रै. शुक्र
अनङ्ग त्रयोदशी	7 अप्रै. मंग.
श्रीमहावीर जयन्ती	7 अप्रै. मंग.
चैत्र पूर्णिमा	9 अप्रै. गुरु
वैशाख स्नान प्रारम्भ	9 अप्रै. गुरु
गुड फ्राइडे	10 अप्रै. शुक्र
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. चंद्र
डा. अम्बेदकर जयन्ती	14 अप्रै. मंग.
अक्षय तृतीया	27 अप्रै. चंद्र
श्रीपरशुराम जयन्ती	27 अप्रै. चंद्र
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं.	29 अप्रै. बु.

* मई *

श्रीगंगा जयन्ती	1 मई शुक्र
श्रीसीता नवमी	3 मई रवि
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	3 मई रवि
नृसिंह जयन्ती	7 मई गुरु
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा	9 मई शनि
वैशाख स्नान समाप्त	9 मई शनि
अङ्गारकी गणेश चतुर्थी	12 मई मंग.
भद्रकाली एकादशी	20 मई बुध
भावुका अमावस	24 मई रवि
वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष)	24 मई रवि
शनैश्चर जयन्ती	24 मई रवि
रम्भा तृतीया व्रत	26 मई मंग.
श्रीदुर्गाष्टमी	31 मई रवि

* जून *

गंगा दशहरा पर्व	2 जून मंग.
निर्जला एकादशी व्रत	3 जून बुध
वटसावित्री (पूर्णिमा पक्ष)	7 जून रवि
सन्त कबीर जयन्ती	7 जून रवि
सा. दक्षिणायन प्रारम्भ	21 जून रवि
सोमवती अमावस	22 जून चंद्र
रथ यात्रा (पुरी)	24 जून बुध
कुमार षष्ठी	27 जून शनि
विवस्वत सप्तमी	28 जून रवि

* जुलाई *

हरिशयनी एकादशी	3 जुला. शुक्र
चातुर्मास्य व्रतादि प्रा.	3 जुला. शुक्र
कोकिला व्रत	6 जुला. चंद्र
गुरुपूर्णिमा, व्यास पूजा	7 जुला. मंग.
नाग पंचमी (राज.)	12 जुला. रवि
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. गुरु
हरियाली अमावस	22 जुला. बुध
सूर्यग्रहण	22 जुला. बुध
मधुश्रवा-हरियाली तीज	24 जुला. शुक्र
सिंघारा तीज	24 जुला. शुक्र
नाग पंचमी	26 जुला. रवि
श्रीकल्कि जयन्ती	26 जुला. रवि
गो. तुलसीदास जयन्ती	28 जुला. मंग
दुर्गाष्टमी (मे. चिन्तपूर्णी)	29 जुला. बुध

* अगस्त *

पुण्यतिथि गंगाधर तिलक	1 अग. शनि
श्रावण पूर्णिमा	5 अग. बुध
रक्षा-बन्धन (राखी)	5 अग. बुध
श्रावणी उपाकर्म	5 अग. बुध
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	5 अग. बुध
ऋग्वेदि उपाकर्म	6 अग. गुरु
श्रीगणेश बहुला चतुर्थी	9 अग. रवि
चन्दन षष्ठी व्रत	11 अग. मंग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत(स्मार्त)	13 अग. गु.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव)	14 अग. शुक्र
गोकुल अष्टमी	14 अग. शुक्र
श्रीगुग्गा नवमी	15 अग. शनि
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. शनि
कुशोत्पाटनी पिठोरी अमावस	19 अग. बु.
भाद्रपद अमावस	20 अग. गुरु
हरितालिका तृतीया	23 अग. रवि
गौरी तृतीया	23 अग. रवि
सिद्धिविनायक व्रत	23 अग. रवि
कलंक चतुर्थी (चंद्रदर्शन निषेध)	23 अग. रवि
ऋषि पंचमी	24 अग. चंद्र
सूर्य षष्ठी व्रत	25 अग. मंग.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा.	27 अग. गुरु
श्रीराधाष्टमी	27 अग. गुरु
दूर्वाष्टमी व्रत	27 अग. गुरु
श्रीचन्द्रनवमी (उदासीन)	28 अग. शुक्र

* सितम्बर *

श्रीवामन जयन्ती	1 सितं. मंग.
अनन्त चतुर्दशी व्रत	3 सितं. गुरु
मे. बाबा सोढल, जालं.	3 सितं. गुरु
प्रौष्ठपदी, पूर्णिमा श्राद्ध	4 सितं. शुक्र
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ	5 सितं. शनि
अङ्गारकी गणेश चतुर्थी	8 सितं. मंग.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.	11 सितं. शुक्र
जीवित्पुत्रिका व्रत	12 सितं. शनि
सर्वपितृ श्राद्ध	18 सितं. शुक्र
महालय श्राद्ध समाप्त	18 सितं. शुक्र
शरद् नवरात्रे प्रारम्भ	19 सितं. शनि
उपांग ललिता व्रत	23 सितं. बुध
सरस्वती आवाहन	25 सितं. शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	26 सितं. शनि
सरस्वती पूजन	26 सितं. शनि
महानवमी (शस्त्र पूजा)	27 सितं. रवि
सरस्वती बलिदान	27 सितं. रवि
नवरात्रे समाप्त	27 सितं. रवि
विजयादशमी (दशहरा)	28 सितं. चंद्र
सरस्वती विसर्जन	28 सितं. चंद्र
भरत मिलाप	29 सितं. मंग.

* अक्तूबर *

महात्मा गाँधी जयंती	2 अक्तू. शुक्र
शरद् पूर्णिमा व्रत	3 अक्तू. शनि
आश्विन पूर्णिमा स्नान	4 अक्तू. रवि
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	4 अक्तू. रवि
कार्तिक स्नान प्रारम्भ	4 अक्तू. रवि
करवा चौथ व्रत	7 अक्तू. बुध
अहोई अष्टमी व्रत	11 अक्तू. रवि
गोवत्स द्वादशी	15 अक्तू. गुरु
धन त्रयोदशी	15 अक्तू. गुरु
श्रीहनुमान जयन्ती	16 अक्तू. शुक्र
नरक चतुर्दशी	17 अक्तू. शनि
दीपावली	17 अक्तू. शनि
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. शनि
अन्नकूट-गोवर्धन पूजा	18 अक्तू. रवि
भाई दूज, यम द्वितीया	19 अक्तू. चंद्र
श्रीविश्वकर्मा पूजा	20 अक्तू. मंग
सूर्य षष्ठी	24 अक्तू. शनि
गोपाष्टमी	26 अक्तू. चंद्र
अक्षय, कूष्माण्ड नवमी	27 अक्तू. मंग
भीष्मपंचक प्रारम्भ	29 अक्तू. गुरु
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	29 अक्तू. गुरु
तुलसी विवाह	30 अक्तू. शुक्र

नवम्बर

वैकुण्ठ चतुर्दशी	1 नवं. रवि
कार्तिक पूर्णिमा	2 नवं. चंद्र
श्री गुरुनानक जयन्ती	2 नवं. चंद्र
भीष्मपंचक समाप्त	2 नवं. चंद्र
मे. पुष्कर, रामतीर्थ (अमृत.)	2 नवं. चंद्र
श्रीकालभैरवाष्टमी	9 नवं. चंद्र
सोमवती अमावस	16 नवं. चंद्र
स्कन्द षष्ठी	23 नवं. चंद्र
मित्र सप्तमी	24 नवं. मंग.
मोक्षदा एकादशी व्रत	28 नवं. शनि
श्रीगीता जयन्ती	28 नवं. शनि

दिसम्बर

पिशाचमोचन श्राद्ध	1 दिसं. मंग.
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	1 दिसं. मंग.
मार्गशीर्ष पूर्णिमा स्नान	2 दिसं. बुध
सायन उत्तरायण प्रारम्भ	21 दिसं. चंद्र
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शुक्र
पुत्रदा एकादशी व्रत	28 दिसं. चंद्र
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	31 दिसं. गुरु
माघस्नान प्रारम्भ	31 दिसं. गुरु

जनवरी-2010 ई.

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शुक्र
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	3 जन. रवि
गु. गोबिन्दसिंह जयं. (ना.शा.)	5 जन. मं.
षट्तिला एकादशी व्रत	10 जन. रवि
लोहड़ी पर्व	13 जन. बुध
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जन. गुरु
मौनी अमावस	15 जन. शुक्र
कंकण सूर्यग्रहण	15 जन. शुक्र
मेला फाल्गू (पिहोवा) हरि.	15 जन. शुक्र
श्रीगौरी तृतीया व्रत	18 जन. चंद्र
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	19 जन. मंग.
वसन्तपंचमी, श्रीपंचमी	20 जन. बुध
सरस्वती जयन्ती	20 जन. बुध
रथ-आरोग्य सप्तमी	22 जन. शुक्र
पुत्र सप्तमी व्रत	22 जन. शुक्र
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. मंग.
भीष्म द्वादशी	27 जन. बुध
माघ पूर्णिमा	30 जन. शनि
श्रीगुरु रविदास जयंती	30 जन. शनि
माघस्नान समाप्त	30 जन. शनि

फरवरी-2010 ई.

अंगारकी गणेश चतुर्थी	2 फर. मंग
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर. शुक्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 फर. शुक्र
कुम्भ महापर्व-स्नान माहात्म्य प्रारम्भ	12 फर. शुक्र
शनिवारी फागु. अमावस	13 फर. शनि
फागुन अमावस स्नान	14 फर. रवि
होलाष्टक प्रारम्भ	22 फर. चंद्र
गोविन्द द्वादशी	26 फर. शुक्र
फा. पूर्णिमा, होली	28 फर. रवि
होलाष्टक समाप्त	28 फर. रवि
होलिका दहन	28 फर. रवि

मार्च

वसन्तोत्सव	1 मार्च चंद्र
होला मेला (आनंदपुर सा.)	1 मार्च चंद्र
शीतलाष्टमी व्रत	8 मार्च चंद्र
वारुणी पर्व	13 मार्च शनि
सोमवती चैत्र अमावस	15 मार्च चंद्र
वि. संवत् 2066 पूर्ण	15 मार्च चंद्र

एकादशी व्रत-सं. २०६६

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	7 जन. बु.
षट्तिला (माघ कृष्ण)	21 जन. बु.
जया (माघ शुक्ल)	6 फर. शु.
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	20 फर. शु.
आमलकी (फाल्गुन शु.)	7 मार्च श.
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	22 मार्च र.
कामदा (चैत्र शुक्ल)	5 अप्रै. र.
वरूथिनी (वैशाख कृ.)	21 अप्रै. मं.
मोहिनी (वैशाख शु.)	5 मई मं.
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	20 मई बु.
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	3 जून बु.
योगिनी (आषाढ़ कृष्ण)	19 जून शु.
देवशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	3 जुला. शु.
कामिका (श्रावण कृष्ण)	18 जुला. श.
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	1 अग. श.
अजा (भाद्र. कृ.) स्मार्त	16 अग. र.
अजा (भाद्र. कृ.) वैष्णव	17 अग. चं.
पद्मा (भाद्र. शुक्ल)	31 अग. चं.
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	15 सितं. मं.
पापांकुशा (आश्विन शुक्ल)	30 सितं. बु.
रमा (कार्तिक कृष्ण)	14 अक्तू. बु.
देवप्रबोधिनी (कार्तिक शु.)	29 अक्तू. गु.
उत्पन्ना (मार्ग. कृ.) स्मार्त	12 नवं. गु.
उत्पन्ना (मार्ग. कृ.) वैष्णव	13 नवं. शु.
मोक्षदा (मार्ग. शुक्ल)	28 नवं. श.
सफला (पौष कृष्ण)	12 दिसं. श.
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	28 दिसं. चं.

(एकादशी व्रत सन् 2010 ई.)

षट्तिला (माघ कृष्ण)	10 जन. र.
जया (माघ शुक्ल)	26 जन. मं.
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	9 फर. मं.
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	25 फर. गु.
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	11 मार्च गु.

श्रीसत्यनारायण व्रत

श्रीसत्यनारायण व्रत का पूर्णमाशी के स्नान, दानादि उदयव्यापिनी के पर्वकालीन तारीख से कभी-कभी एक तारीख का अन्तर पड़ सकता है। क्योंकि चन्द्रोदय कालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष पूर्णिमा व्रत	10 जन. श.
माघ पूर्णिमा व्रत	9 फर. चं.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	10 मार्च मं.
चैत्र पूर्णिमा व्रत	9 अप्रै. गु.
वैशाख पूर्णिमा व्रत	8 मई शु.
ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रत	7 जून र.
आषाढ़ पूर्णिमा व्रत	6 जुला. चं.
श्रावण पूर्णिमा व्रत	5 अग. बु.
भाद्रपद पूर्णिमा व्रत	4 सितं. शु.
आश्विन पूर्णिमा व्रत	3 अक्तू. श.
कार्तिक पूर्णिमा व्रत	2 नवं. चं.
मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत	1 दिसं. मं.
पौष पूर्णिमा व्रत	31 दिसं. गु.

——(सन् 2010 ई.)——

माघ पूर्णिमा व्रत	29 जन. शु.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	28 फर. र.

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

माघ (सोमवती)	26 जन. चं.
फाल्गुन (भौमवती)	24 फर. मं.
चैत्र	26 मार्च गु.
वैशाख (शनिवारी)	25 अप्रै. श.
ज्येष्ठ	24 मई र.
आषाढ़ (सोमवती)	22 जून चं.
श्रावण	22 जुला. बु.
भाद्रपद	20 अग. गु.
आश्विन	18 सितं. शु.
कार्तिक	18 अक्तू. र.
मार्गशीर्ष (सोमवती)	16 नवं. चं.
पौष	16 दिसं. बु.

——(सन् 2010 ई.)——

माघ	15 जन. शु.
फाल्गुन	13/14 फर. श.
चैत्र (सोमवती)	15 मार्च चं.

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

माघ कृ. (संकट चौथ)	14 जन. बु.
माघ शु. (तिल चौथ)	30 जन. शु.
फाल्गुन	12 फर. गु.
चैत्र	14 मार्च श.
वैशाख	12 अप्रै. र.
ज्येष्ठ (अङ्गारकी)	12 मई मं.
आषाढ़	11 जून. गु.
श्रावण	11 जुला. श.
भाद्रपद (बहुला चतु.)	9 अग. र.
सिद्धिविनायक व्रत (भा.शु.)	23 अग. र.
आश्विन (अङ्गारकी)	8 सितं. मं.
कार्तिक	7 अक्तू. बु.
मार्गशीर्ष	5 नवं. गु.
पौष	5 दिसं. श.

——(सन् 2010 ई.)——

माघ कृ. (संकट चौथ)	3 जन. र.
माघ शु. (तिल चौथ)	19 जन. मं.
फाल्गुन (अङ्गारकी)	2 फर. मं.
चैत्र	3 मार्च बुध

मुस्लिम त्यौहार

मुहर्रम (ताजिया)	8 जन. गु.
चेहलम	16 फर. चं.
शहादत-ए-इमाम हसन	24 फर. मं.
आखिरी चहार	25 फर. बु.
ईद-ए-मिलाद	10 मार्च मं.
ईद-ए-मौलाद	15 मार्च र.
ग्यारहवीं शरीफ	8 अप्रै. बु.
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	25-30 जून
जन्म श्रीहजरत अली	7 जुला. मं.
शबे मिराज	21 जुला. मं.
शबे बारात	7 अग. शु.
रमज़ान (रोज़े शुरु)	23 अग. र.
शहादत-ए-हजरत अली	12 सितं. श.
जमातुलविदा	18 सितं. शु.
शबे-कदर	18 सितं. शु.
ईदुलफितर	21 सितं. चं.
ईदुलजुहा (बकरीद)	28 नवं. श.
मुहर्रम (हिजरी 1431 शुरु)	19 दिसं.
मुहर्रम (ताजिया)	28 दिसं. चं.

——(सन् 2010 ई.)——

चेहलुम	5 फर. शु.
आखिरी चहार	10 फर. बु.
शहादत-ए-इमामहसन	13 फर. श.
ईद-ए-मिलाद	27 फर. श.
ईद-ए-मौलाद	4 मार्च गु.
ग्यारहवीं शरीफ	28 मार्च र.

कुम्भ महापर्व, हरिद्वार अगले वर्ष सं. २०६७ में

अगले वर्ष सं. २०६७ वि. में (14 अप्रैल, सन् 2010 ई. के दिन) हरिद्वार में कुम्भ महापर्व होगा।

इसकी सभी स्नानतिथियों, माहात्म्य का विस्तृत विवरण तथा अन्य आवश्यक जानकारी सं. २०६७ वि. के पंचांग में दी जाएगी। इस महापर्व की संक्षिप्त जानकारी के लिए देखें पृष्ठ 9

पितृपक्ष में श्राद्ध-2009 ई.

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2009 ई. में श्राद्ध की तिथियों का विवरण—

पूर्णिमा का श्राद्ध	4 सितं. शु.
प्रतिपदा का श्राद्ध	5 सितं. श.
द्वितीया का श्राद्ध	6 सितं. र.
तृतीया का श्राद्ध	7 सितं. चं.
चतुर्थी का श्राद्ध	8 सितं. मं.
पंचमी का श्राद्ध	9 सितं. बु.
षष्ठी का श्राद्ध	10 सितं. गु.
सप्तमी का श्राद्ध	11 सितं. शु.
अष्टमी का श्राद्ध	12 सितं. श.
नवमी का श्राद्ध	13 सितं. र.
दशमी का श्राद्ध	14 सितं. चं.
एकादशी का श्राद्ध	14 सितं. चं.
द्वादशी का श्राद्ध	15 सितं. मं.
त्रयोदशी का श्राद्ध	16 सितं. बु.
चतुर्दशी का श्राद्ध*	17 सितं. गु.
अमावस का श्राद्ध	18 सितं. शु.
सर्वपितृ श्राद्ध	18 सितं. शु.

✤ = चतुर्दशी को शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में मृतों का श्राद्ध अमावस्या में करने का विधान है।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	2 फर. चं.
श्रीहोलिका दहन	10 मार्च मं.
श्रीभगवतनाराण जयं.	14 मार्च श.
रामनवमी पर्व	3 अप्रै. शु.
वैशाखी पर्व	13-15 अप्रै.
जानकी जयन्ती	3 मई र.
गंगा दशहरा	2 जून मं.
गुरु पूर्णिमा	7 जुला. मं.
तुलसी जयन्ती पर्व	28 जुला. मं.
कृष्ण जयन्ती पर्व	13-15 अग.
वामन जयन्ती	1 सितं. मं.
शरद् पूर्णिमा व्रत	3-4 अक्तू.
श्रीहनुमान जयन्ती	16 अक्तू. शु.
महंत गु. गोविन्ददास जयं.	27 अक्तू. मं.
श्रीगीता जयन्ती	28 नवं. श.

प्रदोष व्रत-2009 ई.

पौष शुक्ल	9 जन. शु.
माघ कृष्ण	23 जन. शु.
माघ शुक्ल (शनि)	7 फर. श.
फाल्गुन कृष्ण	22 फर. र.
फाल्गुन शुक्ल	8 मार्च र.
चैत्र कृष्ण (भौम)	24 मार्च मं.
चैत्र शुक्ल (भौम)	7 अप्रै. मं.
वैशाख कृष्ण	22 अप्रै. बु.
वैशाख शुक्ल	6 मई बु.
ज्येष्ठ कृष्ण	22 मई शु.
ज्येष्ठ शुक्ल	5 जून शु.
आषाढ़ कृष्ण (शनि)	20 जून श.
आषाढ़ शुक्ल (शनि)	4 जुला. श.
श्रावण कृष्ण	19 जुला. र.
श्रावण शुक्ल (सोम)	3 अग. चं.
भाद्रपद कृष्ण (भौम)	18 अग. मं.
भाद्रपद शुक्ल (भौम)	1 सितं. मं.
आश्विन कृष्ण	16 सितं. बु.
आश्विन शुक्ल	1 अक्तू. गु.
कार्तिक कृष्ण	15 अक्तू. गु.
कार्तिक शुक्ल (शनि)	31 अक्तू. श.
मार्गशीर्ष कृष्ण (शनि)	14 नवं. श.
मार्गशीर्ष शुक्ल (सोम)	30 नवं. चं.
पौष कृष्ण	13 दिसं. र.
पौष शुक्ल (भौम)	29 दिसं. मं.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम, हरिद्वार भूपतवाला रोड, हरिद्वार

स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती	31 जन.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	13 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	11 अप्रै.
स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	26 अप्रै.
गुरु प्रेमानन्द जी जयन्ती	7 जुला.
निर्वाण गु. प्रेमानन्द जी	25 जुला.

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

स्वामी विवेकानन्द	17 जन. श.
स्वामी रामानन्दाचार्य	17 जन. श.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शु.
लाला लाजपतराय जी	28 जन. बु.
सिद्धबाबा लालदयाल जी	28 जन. बु.
श्रीगुरु रविदास जी	9 फर. चं.
श्रीगुरु रामदास जी	18 फर. बु.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	19 फर. गु.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	27 फर. शु.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	11 मार्च बु.
सन्त तुकाराम जी	12 मार्च गु.
शहीदी स: भगत सिंह	23 मार्च चं.
श्रीमहावीर	7 अप्रै. मं.
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. मं.
श्रीवल्लभाचार्य जी	21 अप्रै. मं.
श्री छत्रपति शिवाजी	26 अप्रै. र.
भगवान परशुराम	27 अप्रै. चं.
आद्य गुरु शंकराचार्य जी	29 अप्रै. बु.
स्वामी रामानुजाचार्य	30 अप्रै. गु.
श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई गु.
महात्मा बुद्ध	9 मई श.
श्रीनारद जयन्ती	11 मई चं.
श्रीमहाराणा प्रताप	27 मई बु.
सन्त कबीर जयन्ती	7 जून र.
श्री ध्यानू भगत	24 जून बु.
ऋषि वेदव्यास	7 जुला. मं.
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. गु.
लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	1 अग. श.
सन्त ज्ञानेश्वर	14 अग. शु.
भक्त नवल (जोधपुर)	14 अग. शु.
श्रीचन्द्र महाराज (उदासीन)	28 अग. शु.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. मं.
महाराज अग्रसेन	19 सितं. श.
श्रीमाधवाचार्य जी	28 सितं. चं.
महात्मा गांधी, शास्त्रीजी	2 अक्तू. शु.
श्रीधनवन्तरी	16 अक्तू. शु.
श्रीहनुमान	17 अक्तू. श.
श्रीविश्वकर्मा जयंती	20 अक्तू. मं.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. गु.
श्रीवीर वैरागी	31 अक्तू. श.
श्रीगुरु नानकदेव जी	2 नवं. चं.
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. शु.
श्रीजवाहर लाल नेहरू	14 नवं. श.
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. मं.
सत्य श्रीसाईं बाबा	23 नवं. चं.
श्रीदत्तात्रेय	1 दिसं. मं.
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. गु.

—(सन् 2010 ई.)—

स्वामी विवेकानन्दजी	6 जन. बु.
स्वामी रामानन्दाचार्यजी	6 जन. बु.
सिद्ध बा. लालदयालजी	17 जन. र.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. श.
लाला लाजपतराय जी	28 जन. गु.
श्रीगुरु रविदास जी	30 जन. श.
गुरु रामदास जी	7 फर. र.
स्वामी दयानन्द सरस्वती	8 फर. चं.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	16 फर. मं.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 फर. र.
सन्त तुकाराम जी	2 मार्च मं.

क्रिश्चियन त्योहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. गु.
गुड फ्राइडे	10 अप्रै. शु.
ईस्टर सण्डे	12 अप्रै. र.
लो सण्डे	19 अप्रै. र.
रोगेशन सण्डे	17 मई र.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शु.

—(सन् 2010 ई.)—

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शु.
गुड फ्राइडे	2 अप्रै. शु.

दशमहाविद्या जयन्ती

श्रीमहातारा जयन्ती	3 अप्रै. शु.
श्रीमातङ्गी जयन्ती	27 अप्रै. चं.
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	3 मई र.
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	9 मई श.
श्रीधूमावती जयन्ती	31 मई र.
श्रीमहाकाली जयन्ती	13 अग. गु.
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	17 अग. चं.
श्रीकमला जयन्ती	7 अक्तू. बु.
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	2 दिसं. बु.
श्रीललिता जयन्ती	30 जन. (2010)

दशावतार जयन्तियां

श्रीमत्स्यावतार जयन्ती	29 मार्च र.
श्रीरामावतार जयन्ती	3 अप्रै. शु.
श्रीपरशुराम जयन्ती	27 अप्रै. चं.
श्रीनृसिंहावतार जयन्ती	7 मई गु.
श्रीकूर्मावतार जयंती	8 मई शु.
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	9 मई श.
श्रीकल्कि अवतार	26 जुला. र.
श्रीकृष्णावतार	13 अग. गु.
श्रीवाराहावतार	22 अग. श.
श्रीवामनावतार	1 सितं. मं.

मास-शिवरात्रि व्रत

माघ	24 जन. शनि
फाल्गुन	23 फर. चंद्र
चैत्र	24 मार्च मंग.
वैशाख	23 अप्रै. गुरु
ज्येष्ठ	23 मई शनि
आषाढ़	21 जून रवि
श्रावण	20 जुला. चंद्र
भाद्रपद	18 अग. मंग.
आश्विन	17 सितं. गुरु
कार्तिक	16 अक्तू. शुक्र
मार्गशीर्ष	15 नवं. रवि
पौष	14 दिसं. चंद्र

—(सन् 2010 ई.)—

माघ	13 जन. बुध
फाल्गुन	12 फर. शुक्र
चैत्र	13 मार्च शनि

9469388799 R.K.awsthi

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले—सन् 2009 ई.

मेला लोहड़ी (सर्वत्र)	12 जन.
मे. दांऊ (रोपड़)	12 जन.
मे. माघी (मुक्तसर) पं.	13 जन.
मे. पोंगल (द.भारत)	13 जन.
मे. मौनी अमावस, यू.पी. (प्रयाग, हरिद्वार आदि)	26 जन.
मे. मस्तुआणा (पं.)	31 जन.
मे. बसन्त पंचमी	31 जन.
मे. जैसलमेर (राज.)	7-9 फर.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	7-9 फर.
माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	9 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	23 फर.
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	23 फर.
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	4-11 मार्च
मे. सावातिल्ला	9 मार्च
होला (श्रीआनन्दपुर साहिब)	12 मार्च
मे. श्री रामराय (देहरादून)	15 मार्च
मे. नवचण्डी (मेरठ)	15 मार्च
श्रीवीरमदास, बधोछी, पटियाला	17 मार्च
मे. शीतलामाता, कुराली (पं.)	18-19 मार्च
पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	25 मार्च
मे. नानकसर चीमा	27 मार्च
मेला नवरात्रे (मनसादेवी, हरिद्वार)	27-3 अप्रै.
मनसादेवी, पंचकूला (हरि.)	27-3 अप्रै.
गौरी तृतीया (जयपुर)	29 मार्च
भण्डारा स्वा. सन्तदास जी, गोपाल नगर, जालंधर	30 मार्च
माईसरखाना (बठिण्डा)	1 अप्रै.
मे. नरीसैमरी (मथुरा)	1 अप्रै.
मे. काँसा देवी (चण्डीगढ़)	8-9 अप्रै.
मेला वैसाखी (पं.)	13 अप्रै.
मे. पिंजौर (हरियाणा)	25 अप्रै.
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	1 मई
मे. भद्रकाली, कपूरथला, पं.	20 मई
जोड़ मेला, संत खुशीरामजी गाँव भरोमजारा, नवांशहर (पं.)	23-24 मई
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	2 जून
साईं टेऊँराम पुण्यतिथि भूपतवाला रोड, हरिद्वार	9 जून
रथयात्रा उत्सव, पुरी, उड़ीसा	24 जून
गुरु पूर्णिमा उत्सव	7 जुला.
मे. काहनूवाल, (गुरदासपुर)	7 जुला.
साईं टेऊँराम जयन्ती भूपतवाला, हरिद्वार	8 जुला.
मे. नागपंचमी-राज., बंगाल	12 जुला.
सिंघारा तीज	24 जुला.
गौरी तीज, जयपुर, राज.	24 जुला.
मेला बग्गी देहरी गां-कण्डे लालोवाल, गुरदासपुर	5 अग.
कृष्णजन्माष्टमी पर्व, मथुरा	14 अग.
मे. गुग्गा नवमी, अम्बाला	14 अग.
गुग्गा जाहिरपीर, नकोदर, पं.	15 अग.
गोगामेड़ी, श्रीगंगानगर, राज.	15 अग.
मे. सुथरेशाह, दिल्ली	20 अग.
मे. गोसाईंआणां, कुराली, पं.	22 अग.
मे. भरोमजारा, नवांशहर	27-28 अग.
रामदेव रोणेचा, जोधपुर, राज.	30 अग.
वामन द्वादशी, पटियाला	1 सितं.
मे. छपार, मलेरकोटला, पं.	2-4 सितं.
मे. बाबा सोढल, जालन्धर	3 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब, अमृतसर	4 सितं.
गुग्गापीर, लुधियाना	4 सितं.
मे. फाल्गू, कुरुक्षेत्र प्रा.	17-18 सितं.
आशापूर्णी, पठानकोट	19-28 सितं.
मे. हरचोवाल, गुरदासपुर	26-27 सितं.
बाबा बुड्ढा सा., अमृतसर	28 सितं.
अचलेश्वर (बटाला)	28-29 अक्तू.
मे. जन्मवीर वैरागी, नकोदर	31 अक्तू.
मे. बग्गी देहरी, गाँ-कण्डे लालोवाल (गुरदासपुर)	1-2 नवं.
मे. रामतीर्थ, अमृतसर	2 नवं.
कपालमोचन, हरियाणा	2 नवं.
मे. श्रीगढ़गंगा, पुष्कर तीर्थ	2 नवं.
भण्डारा संत प्रीतमदास जी गोपाल नगर, जालन्धर	30 नवं.
मे. चमकौर साहिब	26-28 दिसं.
मे. जोड़ फतेहगढ़ सा. प्रा.	26 दिसं.

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	12 जन.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	24-25 मार्च
गुप्तगंगा, कपी-अरवनूर	25 मार्च
नवरात्रे पर्व	27 मा.-3 अप्रै.
मे. बाहूफोर्ट	3 अप्रै.
मे. रामबन	3 अप्रै.
गुरुगद्दी 1008 सत्गुरु बाबा कांशीगिरजी (सुन्दरवनी)	12-13 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	7 मई
मे. मानसर	29-30 मई
मे. क्षीर (खीर) भवानी	31 मई
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	7 जून
मे. शरीक भवानी	30 जून
मे. हरिप्रयाग (बनी)	2-3 जुला.
मे. ज्वालामुखी	6 जुला.
मे. रुद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	7 जुला.
शहीदी दिवस	13 जुला.
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	5 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य	5 अग.
मे. रामबन	14 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	18 अग.
मेला पात, भद्रवाह	24-26 अग.
मे. आशापति, मार्तण्ड	17-18 सितं.
मे. झिड़ी बाबा	2 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	15 नवं.

हिमाचल प्रदेश के मेले—सन् 2009 ई.

मेला श्री ब्रह्मा, कुल्लू	19 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	31 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	23 फ.-3 मा.
कालेश्वर महादेव, नादौन	23 फर.
मे. स्वर्गाश्रम, नूरपुर	23 फर.
मे. काठगढ़	23 फर.
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	24 फर.
सुजानपुर टिहरा, हमीरपुर	11-14 मार्च
होला मेला, पौंटा साहिब	12 मार्च
मेला बाबा बालक नाथ प्रा.	14 मार्च
मे. कनिहारा (धर्मशाला) प्रा.	14 मार्च
मे. नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. नलवाड़, सुन्दरनगर	22-27 मार्च
बालासुन्दरी, सिरमौर	27 मा.-9 अप्रै.
नयनादेवी, बिलासपुर	27 मा.-3 अप्रै.
मे. ललवाड़, सुन्दरनगर	29 मा.-3 अप्रै.
मे. लाहौल, मण्डी	2 अप्रै.
श्रीदुर्गाष्टमी, कांगड़ा	3 अप्रै.
रोहरू (महासू)	5-6 अप्रै.
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
मे. मारकण्डा (बिसासपुर)	12-15 अप्रै.
कालेश्वर महादेव, देहरा, कांगड़ा	13 अप्रै.
मे. राजगढ़ (सिरमौर)	13-15 अप्रै.
मे. बिशु प्रारम्भ	13 अप्रै.
मे. कशाधा हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
त्राम्बली (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. खनाणी (शिम., कुल्लू)	19-20 अप्रै.
पीपल जातर, कुल्लू	28-30 अप्रै.
मे. माहूनाग, करसोग	28-29 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
मनीकरण (कुल्लू)	4-9 मई
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. ढुंगरी जातर	14-15 मई
मे. बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
मे. नारकण्डा (हमीरपुर)	15-17 मई
पशु मेला (हमीरपुर)	18 मई
मे. श्यामाकाली (सरकाघाट)	17 मई
कमलाहिया (धर्मपुर)	17 मई
मेला शाढ़ी जातर	18-23 मई
हरिदेवी (घुमारवीं)	21 मई
शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मे. मुरारीदेवी (सरकाघाट)	25-27 मई
ग्राम पंजगाई, बिलासपुर	29-30 मई
मे. स्थूल मढोल	1-4 जून
मेला पीपलू (हमीरपुर)	3 जून
मेला बाड़ी (सोलन)	14 जून
मे. अहल (हमीरपुर)	14 जून
नौवाही देवी (सरकाघाट)	14 जून
भुन्तर मेला	15-17 जून
टाणी देवी (हमीरपुर)	23 जून
मे. माँ शूलिनी (सोलन)	28 जून
त्रिमौणी, सिरमौर	5 जुला.
मे. नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो, ज्वाली	19 जुला.
मे. चिन्तपूर्णी (ऊना)	22-29 जुला.
नयनादेवी (बिलासपुर)	22-29 जुला.
मिंजर (चम्बा) प्रारंभ	26 जुला.
गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	15 अग.
मे. बन्द्राल (कुल्लू)	15 अग.
संतोषी माता (लहरौर)	16 अग.
अम्बिकादेवी, सदर (मण्डी)	19 अग.
श्रीगणपति उत्सवं (मण्डी)	23 अग.-3 सितं.
गुग्गा माड़ी, सुबाथू, सोलन	27-30 अग.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा.	27 अग.
वामन द्वादशी (नाहन)	1 सितं.
मे. नलवाड़ (चिच्चोट)	16 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मे. सायर, अर्की	16-17 सितं.
बगुलामुखी (वनखण्डी)	19-28 सितं.
मे. चामुण्डा (कांगड़ा)	19-27 सितं.
मेला रामलीला	19-27 सितं.
शीतलामाता (मच्छिभवन)	26 सितं.
मेला तारादेवी (शिमला)	26-28 सितं.
मे. दशहरा (अर्की)	28 सितं.
मे. दशहरा (कुल्लू)	28 सितं.-4 अक्तू.
मे. काली बाड़ी (शिमला)	17-18 अक्तू.
मे. रेणुका (सिरमौर)	29-30 अक्तू.
बाबा रुद्रीनन्दनारी, ऊना	29 अक्तू.-2 नवं.
मे. जोगी पांगा	2 नवं.
लावी (रामपुर-चिच्चोट)	11-14 नवं.

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल सन् 2009-10 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	13 जन. मंग.	30-27	अगले दिन दुपैहर 12/51 तक
फागुन संक्रान्ति	12 फर. गुरु	19-24	मध्याह्न बाद से प्रारम्भ
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शनि	16-16	प्रात: 9/52 से प्रारम्भ
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. चंद्र	24-47	अगले दिन प्रात: 7/11 तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई गुरु	21-40	मध्याह्न बाद से प्रारम्भ
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून रवि	28-17	अगले दिन प्रात: 10/41 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. गुरु	15-08	प्रात: 8/44 से प्रारम्भ
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग. रवि	23-29	मध्याह्न बाद से प्रारम्भ
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. बुध	23-23	मध्याह्न बाद से
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. शनि	11-20	सूर्योदय से प्रारम्भ
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं. चंद्र	11-11	सूर्योदय से प्रारम्भ
पौष संक्रान्ति	15 दिसं. मंग.	25-51	अगले दिन प्रात: 8/15 तक,
माघ संक्रान्ति-10	14 जन. गुरु	12-38	सूर्योदय से प्रारम्भ
फागुन संक्रान्ति	12 फर. शुक्र	25-38	अगले दिन प्रात: 8/02 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च रवि	22-30	मध्याह्न बाद

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

मेरू त्रयोदशी	23 जन. शु.
मर्यादा महोत्सव	2 फर. चं.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	9-11 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	18 मार्च बु.
वरसी तप प्रारम्भ	19 मार्च गु.
ओली तप प्रारम्भ	1/2 अप्रै.
श्रीमहावीर जयन्ती	7 अप्रै. मं.
ओली तप समाप्त	9 अप्रै. गु.
वरसी तप समाप्त	27 अप्रै. चं.
केवल ज्ञान दिवस	4 मई चं.
मे. चक्रेश्वरीदेवी (सरहिंद)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम प्रा.	7 जुला. मं.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	7 जुला मं.
जैन महोत्सव	22 जुला बु.
पर्युषण पर्व प्रा. (चतु. पक्ष)	16 अग. र.
पर्युषण पर्व शु. (पंचमी पक्ष)	17 अग. चं.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	17 अग. चं.
संवत्सरी महापर्व	24 अग. चं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	25 अग. मं.
श्रीतुलसी पट्टारोहण	28 अग. शु.
ओली तप शुरु	25 सितं. शु.
ओली तप समाप्त	3 अक्तू. श.
श्रीमहावीर निर्वाण	18 अक्तू. र.
श्रीवीर संवत 2535 प्रा.	19 अक्तू. चं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	20 अक्तू. मं.
ज्ञान पंचमी	23 अक्तू. शु.
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	2 नवं. चं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	11 नवं. बु.
मौनी एकादशी	28 नवं. श.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	6 दिसं. र.
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	11 दिसं. शु.

---(सन् 2010 ई.)---

मेरू त्रयोदशी	12 जन. मं.
मर्यादा महोत्सव	22 जन. शु.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	26-28 फर.
ऋषभदेव जयन्ती	7 मार्च र.
वरसी तप प्रारम्भ	8 मार्च चं.

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2009-10 ई.)

(इन छुट्टियों को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लें)

श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	5 जन. चं.
मुहर्रम (ताजिया)	8 जन. गु.
मकर संक्रान्ति	13 जन. मं.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. चं.
श्रीगुरु रविदास जयंती	9 फर. चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	23 फर. चं.
ईद-ए-मिलाद	10 मार्च मं.
होला मेला (पं.)	12 मार्च गु.
श्रीरामनवमी	3 अप्रै. शु.
श्रीमहावीर जयंती	7 अप्रै. मं.
गुड फ्राईडे	10 अप्रै. शु.
वैशाखी	13 अप्रै. चं.
श्रीबुद्ध जयन्ती	9 मई श.
रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	24 जून बु.
जन्म श्रीहजरत अली	7 जुला. मं.
शहीदी स: ऊधम सिंह	31 जुला. शु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	14 अग. शु.
भारत स्वतन्त्र दिवस	15 अग. श.
श्रीगणेश चतुर्थी (महारा.)	23 अग. र.
जमातुलविदा	18 सितं. शु.
ईदुलफितर	21 सितं. चं.
दशहरा	28 सितं. चं.
महात्मा गांधी जयंती	2 अक्तू. शु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	4 अक्तू. र.
दीपावली	17 अक्तू. श.
श्रीगुरुनानक जयंती	2 नवं. चं.
ईदुलजुहा (बकरीद)	28 नवं. श.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शु

(सन् 2010 ई.)

गु. गोबिन्द सिंह जयंती	5 जन. मं.
मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. मं.
श्रीगुरु रविदास जयंती	30 जन. श.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 फर. शु.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि-2009-10 ई.

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार) जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	(नानकशाही कलैण्डर अनुसार) जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	2 नवंबर	जन्म से	14 सितंबर	2 नवंबर	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	26 अप्रैल	9 सितंबर	30 मार्च	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	8 मई	27 मार्च	4 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	6 अक्तूबर	2 सितंबर	23 अगस्त	9 अक्तूबर	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जनदेव जी	16 अप्रैल	22 अगस्त	27 मई	2 मई	16 सितंबर	16 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	8 जून	17 मई	31 मार्च	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	7 फर. 09 ई. 28 जन. 10 ई.	24 मार्च 09 ई. 13 मार्च 10 ई.	12 अक्तूबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	16 जुलाई	12 अक्तूबर	8 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	14 अप्रैल	7 अप्रैल	21 नवंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	3 जन. 09 ई. 24 दिसं. 09 ई.	19 नवंबर	23 अक्तूबर	5 जनवरी	24 नवंबर	21 अक्तूबर

श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार	21 अग.	17 भादों (ना.शा.)	1 सितं., 2009 ई.
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार	20 अक्तू.	6 कार्तिक (ना.शा.)	20 अक्तू., 2009 ई.
खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे तदनुसार	13 अप्रैल	1 वैशाख (ना. शा.)	14 अप्रैल, 2009 ई.

वि. संवत् २०६६ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–शुक्र **वर्ष का मन्त्री–चन्द्र**

- वि. संवत् (शुभकृत) २०६६ का शुभारम्भ = 27 मार्च, शुक्रवार
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,110 वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = 1,95,58,85,108 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,890 वर्ष
- २०६६ में कलि वर्ष = 5110वां वर्ष (26 जुलाई, रविवार)
- श्री कृष्ण जन्म संवत् = 5245 प्रा., (13 अगस्त, गुरुवार)
- सप्तर्षि संवत् 5085 प्रारम्भ = 27 मार्च, शुक्रवार
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2633 प्रा., = 9 मई, शनिवार
- महावीर निर्वाण संवत् 2535 प्रा. = 19 अक्तू., सोमवार
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2010 प्रारम्भ = 1 जन., शुक्रवार
- *(i)* शाका संवत् 1931 प्रा. = 22 मार्च, 2009 ई., रविवार
  (ii) शाका संवत् 1932 प्रारम्भ = 22 मार्च, 2010 ई., सोमवार
- हिजरी सन् 1431 (मुस्लिम) प्रा. = 19 दिसंबर, शनिवार
- बंगाली सन् 1416 प्रारम्भ = 27 मार्च, 2009 ई., शुक्रवार
- नानकशाही संवत् 541 प्रारम्भ = 14 मार्च, 2009 ई.
- खालसा सम्वत् 311 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, 2009 ई.
- जय हिन्द संवत् 63वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, 2009 ई.
- 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 134वाँ = 27 मार्च, 2009 ई., शुक्रवार

सन् 2009-10 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा आदि–एक दृष्टि में

(मास) 2009 ई.↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत (स्मा.)	प्रदोष व्रत	सत्य-नारायण व्रत	पूर्णिमा	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	13 (माघ)	7, 21	9, 23	10	11	14	26
फरवरी	12 (फागु.)	6, 20	7, 22	9	9	12	24
मार्च	14 (चैत्र)	7, 22	8, 24	10	11	14	26
अप्रैल	13 (वैशा.)	5, 21	7, 22	9	9	12	25
मई	14 (ज्ये.)	5, 20	6, 22	8	9	12	24
जून	14 (आषा.)	3, 19	5, 20	7	7	11	22
जुलाई	16 (श्राव.)	3, 18	4, 19	6	7	11	22
अगस्त	16 (भाद्र.)	1,16,31	3, 18	5	6	9	20
सितम्बर	16 (आश्वि.)	15, 30	1, 16	4	4	8	18
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	14, 29	1, 15, 31	3	4	7	18
नवम्बर	16 (मार्ग.)	12, 28	14, 30	2	2	5	16
दिसम्बर	15 (पौष)	12, 28	13, 29	1,31	2, 31	5	16
जनवरी (10)	14 (माघ)	10, 26	12, 28	29	30	3	15
फरवरी	12 (फाल्गु.)	9, 25	11, 26	28	28	2	13/14
मार्च	14 (चैत्र)	11, 26	13, 27	29	30	3	15

आगामी वि. संवत् २०५७ के प्रमुख व्रत-पर्व

वासन्त नवरात्रे प्रा. 16 मार्च मं.
श्रीदुर्गाष्टमी 23 मार्च मं.
श्रीरामनवमी 24 मार्च बु.
श्रीमहावीर जयंती 28 मार्च र.
वैशाखी 14 अप्रै. बु.
कुम्भमहापर्व (हरिद्वार) 14 अप्रै. बु.
वैशा. अधिकमास प्रा. 15 अप्रै. गु.
वैशा. अधिक मास समाप्त 14 मई शु.
अक्षय तृतीया 16 मई र.
श्रीबुद्ध जयन्ती 27 मई गु.
श्रीगंगा दशहरा 21 जून सोम
गुरु पूर्णिमा 25 जुला. र.
रक्षाबन्धन 24 अग. मं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.) 1 सितं. बु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्ण.) 2 सितं. गु.
सिद्धि विनायक व्रत 11 सितं. श.
श्राद्ध प्रारम्भ 24 सितं. शु.
शरद् नवरात्रे प्रा. 8 अक्तू. शु.
श्रीदुर्गाष्टमी 15 अक्तू. शु.
दशहरा (विजयादशमी) 17 अक्तू. र.
शरद् पूर्णिमा 22 अक्तू. शु.
महर्षि वाल्मीकि जयं. 22 अक्तू. शु.
करवा चौथ व्रत 26 अक्तू. मं.
दीपावली 5 नवं. शु.
भाई दूज 7 नवं. र.
श्रीगुरुनानक जयं. 21 नवं. र.
गीता जयन्ती 17 दिसं. शु.

(सन् 2011 ई.)

लोहड़ी पर्व 13 जन. गु.
मकर संक्रान्ति 14 जन. शु.
बसन्त पंचमी 8 फर. मं.
श्रीगुरु रविदास जयं. 18 फर. शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत 2 मार्च बु.
होली पर्व 19 मार्च श.

आगामी संवत् २०६७ वि. में 14 अप्रैल, सन् 2010 ई. को हरिद्वार में 'कुम्भ–महापर्व' घटित होगा। 'कुम्भ महापर्व' की मुख्य स्नान तिथियां आगामी पृष्ठ पर दी गई हैं। कुम्भ महापर्व पर विस्तृत लेख आगामी वर्ष के पंचांग में दिया जाएगा। श्रद्धालु एवं धर्मपरायण लोग पहले ही अपना कार्यक्रम निश्चित कर प्रोग्राम बनाएं।

कुम्भ महापर्व–हरिद्वार (14 अप्रैल, बुधवार), सन् 2010 ई०



आगामी वर्ष हरिद्वार के पावन तीर्थ पर कुम्भ महापर्व का आयोजन होने जा रहा है। कुम्भ महापर्व भारतीय संस्कृति एवं हिन्दु समाज का महान् एवं अद्वितीय **महापर्व** है। इस महापर्व पर भारत से ही नहीं, अपितु विश्व के अनेक देशों से भी असंख्य श्रद्धालु एवं धर्मपरायण लोक एकत्र होकर गंगा जी के तट पर स्नान, जप, तप, दान आदि करके अपने जीवन को धन्य करते हैं। इस महापर्व का **मुख्य स्नान** 14 अप्रैल, बुधवार, सन् 2010 ई. (वैशाख अमावस तिथि) को होगा। **कुम्भ महापर्व** के स्नान-दान, जपानुष्ठान का लाभ एवं सिद्ध महापुरूषों के सत्संग का विशेष पुण्य लाभ प्राप्त करने के लिए धर्मपरायण श्रद्धालु साधु लोग कुम्भपर्व के प्रमुख स्नान दिन से लगभग तीन मास पूर्व ही श्री गंगा जी (हरिद्वार, ऋषिकेश, काशी आदि) के तटों पर अस्थायी तौर पर निवास करना आरम्भ कर देते हैं। आचार्यों की मान्यता अनुसार कुम्भ महापर्व के मुख्य **स्नान दिन** (14 अप्रैल, 2010 ई., बुधवार) से पहिले और पश्चात् की कुछ पुण्य तिथियाँ होंगी, जो स्नान-दान के लिए कुम्भ पर्व की भान्ति ही विशेष पुण्य-प्रदायक रहेंगी—

≈सन् 2010 ई० में कुम्भ महापर्व की पुण्य स्नान तिथियाँ≈

(१) **मकर संक्रान्ति**—14 जनवरी, गुरुवार, (२) **मौनी अमावस्या**—सूर्यग्रहण स्नान, 15 जन., शुक्रवार, (३) **वसन्त पंचमी**—20 जन. बुधवार, (४) **माघ पूर्णिमा**—30 जनवरी शनिवार, **(५) श्रीमहाशिवरात्रि स्नान (12 फर., शुक्रवार)** (शाही स्नान) (६) वारूणी पर्व स्नान (13 मार्च, शनिवार), (७) **सोमवती अमावस** (15 मार्च, सोमवार) (शाही स्नान) (८) नवसंवतारंभ स्नान (16 मार्च, मंगल), (९) महाविषुव दिवस स्नान (20 मार्च, शनि), (१०) श्रीरामनवमी (24 मार्च, बुध), (११) चैत्र पूर्णिमा (30 मार्च, मंगल), (१२) **वैशाख संक्रान्ति—प्रमुख शाही स्नान** (14 अप्रैल, बुधवार) वैशा. अधिमास इसी दिन सायंकाल को होगा। (१३) **वैशाख अधिमास** पूर्णिमा स्नान (28 अप्रैल, बुध), (१४) वैशाख अधिमास पूर्ति स्नान (14 मई), (१५) अक्षय तृतीया स्नान, 16 मई, रवि, (१६) आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती—18 मई, (१७) श्रीगंगा जयन्ती—20 मई, (१८) वैशाख पूर्णिमा स्नान, 27 मई, वीरवार।

ध्यान रहे, 2 मई रविवार से **गुरु मीन राशि** प्रविष्ट होने से आगे की तारीखों में कुम्भ पर्व स्नान का विशेष माहात्म्य नहीं होगा, परन्तु तिथि, मासादि स्नान का महत्त्व अवश्य रहेगा।

कुम्भ महापर्व (हरिद्वार) के स्नान, दान, माहात्म्य जपानुष्ठान, कथा एवं आध्यात्मिक महत्त्व के सम्बन्ध में विशिष्ट एवं विस्तृत जानकारी के लिए आगामी **सम्वत् २०६७ (सन् 2010-11 ई.)** के पंचाँगदिवाकर का अवलोकन करें।

निवेदक—पं. पन्ना लाल ज्योतिषी गणितकर्त्ता, **पंचाँगदिवाकर।**

सोमवती अमावस्या का माहात्म्य 2009-10 ई.

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। **स्कन्द पुराण** के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान् शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है—

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते।
तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्॥

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्नान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है—

सोमवारे स्वमावस्या तत्रैव बहुपुण्यदा। विप्राणां भोजनं देयं तत्र पुण्यफलेप्सुभिः॥

पुरुषार्थ-चिन्तामणि के अनुसार तो अमावस्या यदि सोमवार या **मंगलवार** अथवा **गुरुवार** को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर** योग कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहण में किए हुए स्नान, दान-पुण्य आदि से भी सौ गुणा अधिक माना गया है।

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्॥

सोमवती अमावस के पर्व पर हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, वाराणसी, गया जी, पुष्कर, आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जपादि अनुष्ठान का विशेष माहात्म्य कहा गया है।

सिक्ख धर्म के अनुसार भी अमृतसर (श्री हरिमन्दिर साहिब), आनन्दपुर साहिब, कीरतपुर साहिब आदि तीर्थों पर भी अमावस को स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य होता है।

सोमवती अमावस्या के योग में, यदि चन्द्रमा अश्विनी, कृतिका, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, विशाखा, मघा, उ.फा., मूला, उ.षा., श्रवण या उ.भा.—इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में संचरित हो, तो ऐसे योग में तैयार की (जड़ी-बूटियों से निर्मित) गई औषधि अनेक प्रकार के कायिक एवं मानसिक रोगों में लाभकारी होती है। इसके अतिरिक्त **सोमवती अमावस के** विशिष्ट योग में पितृ-दोष की शान्ति, धन/सम्पदा सम्बन्धी परेशानियाँ, लड़के या लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान कष्ट आदि बाधाएं एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मशुद्धि, स्नानदान, जप पाठ आदि की दृष्टि से सोमवती अमावस का विशेष महत्त्व होता है। इस दिन व्रत धारण करके अपने इष्टदेव एवं भगवान् **विष्णु एवं शिव** पूजन, चन्द्र तथा **पीपल वृक्ष** की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, दुग्ध-युक्त शुद्ध जल से सींचन एवं फूल-फलों, मिष्ठान्न, क्षीर, धूप-दीप आदि द्रव्यों से पूजन करके 108 बार अथवा यथ 7 बार प्रदक्षिणा करके ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2009-10 ई. में सोमवती अमावस्याएँ—माघ सोमवती (26 जन., 2009 ई.), आषाढ़ सोमवती (22 जून), **मार्गशीर्ष सोमवती** (16 नवं.), **चैत्र सोमवती** (15 मार्च, 2010 ई.)

गुरूवारी अमावस्या का भी स्नान, दान आदि में विशेष महत्त्व होता है—

चैत्र अमावस (26 मार्च), **भाद्रपद अमावस** (20 अग.)

शनिवारी अमावस ⇒ फाल्गु. अमा. (13 फर., शनि.), पितृतर्पण, शनि उपासना में प्रशस्त

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०६६ वि.

(1 जनवरी सन् 2009 ई. से 20 मार्च, 2010 ई. तक)

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती—ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं—इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट—हमारे कार्यालय से छपी '**सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग**' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। **मूल्य 40 रु., पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर**

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
4 जन.	10 54	6 जन.	9 52
12 जन.	16 17	14 जन.	12 24
21 जन.	20 31	24 जन.	02 41
31 जन.	16 39	2 फर.	16 36
9 फर.	03 28	10 फर.	23 19
18 फर.	03 43	20 फर.	09 49
27 फर.	22 22	1 मार्च	22 00
8 मार्च	12 41	10 मार्च	09 25
17 मार्च	11 54	19 मार्च	17 41
27 मार्च	5 41	28 मार्च	4 19
4 अप्रै.	19 16	6 अप्रै.	17 12
13 अप्रै.	20 20	15 अप्रै.	25 47
23 अप्रै.	14 43	25 अप्रै.	12 42
1 मई	24 37	3 मई	22 58
11 मई	4 09	13 मई	9 26
20 मई	24 21	22 मई	22 36
29 मई	6 57	31 मई	4 30
7 जून	10 52	9 जून	16 17
17 जून	9 12	19 जून	8 32
25 जून	15 30	27 जून	11 36
4 जुला.	16 48	6 जुला.	22 28
14 जुला.	16 25	16 जुला.	17 05
22 जुला.	25 51	24 जुला.	20 51
31 जुला.	22 45	3 अग.	4 31
10 अग.	22 15	12 अग.	23 42
19 अग.	12 31	21 अग.	7 21

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
28 अग.	5 35	30 अग.	11 05
7 सितं.	3 55	9 सितं.	5 10
15 सितं.	21 44	17 सितं.	17 27
24 सितं.	13 39	26 सितं.	18 34
4 अक्तू.	10 45	6 अक्तू.	11 13
13 अक्तू.	4 37	14 अक्तू.	25 37
21 अक्तू.	22 29	23 अक्तू.	26 46
31 अक्तू.	19 18	2 नवं.	19 11
9 नवं.	9 59	11 नवं.	7 36
18 नवं.	7 02	20 नवं.	11 01
28 नवं.	4 49	30 नवं.	5 02
6 दिसं.	16 14	8 दिसं.	13 03
15 दिसं.	14 20	17 दिसं.	18 34
25 दिसं.	13 47	27 दिसं.	15 12
(सन् 2010 ई.)			
2 जन.	25 12	4 जन.	20 24
11 जन.	20 18	13 जन.	25 03
21 जन.	21 06	23 जन.	23 51
30 जन.	12 28	1 फर.	6 31
7 फर.	26 05	10 फर.	6 57
17 फर.	27 01	20 फर.	6 21
26 फर.	23 45	28 फर.	17 57

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल—सं० २०६६

(1 जन. 2009 से 20 मार्च, सन् 2010 ई. तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
31 दिसं.	18 07	5 जन.	10 45
27 जन.	23 58	1 फर.	16 53
24 फर.	6 53	28 फर.	22 22
23 मार्च	15 03	28 मार्च	5 11
19 अप्रै.	23 41	24 अप्रै.	13 58
17 मई	7 53	21 मई	23 50
13 जून	15 01	18 जून	9 16
10 जुला.	21 10	15 जुला.	17 07
6 अग.	27 05	11 अग.	23 15

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
3 सितं.	9 33	8 सितं.	4 45
30 सितं.	17 01	5 अक्तू.	11 12
27 अक्तू.	25 15	1 नवं.	19 32
24 नवं.	9 30	29 नवं.	5 18
21 दिसं.	17 00	26 दिसं.	14 54
(सन् 2010 ई.)			
17 जन.	23 36	22 जन.	22 48
14 फर.	5 44	19 फर.	4 55.
13 मार्च	12 05	18 मार्च	10 34

पंचक-नक्षत्र-विचार

वासवोत्तर दलादि पंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम्।
प्रेत दाहतृण काष्ठ संचयं शय्यका वितरणं च वर्जयेत्॥

—पंचक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि-दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झौंपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पंचकों में हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में तीन गुना तथा द्विपुष्कर में दोगुणा लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है। प्रेत दाह अथवा किसी अन्य कारण से हानि की आशंका हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान् ब्राह्मण से पंचक शान्ति करवाने का विधान होता है।

ध्यान रहे, मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षा-बन्धन, भैय्या दूज आदि पर्वों में पंचक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

बृहद् ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धिप्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं जबकि पू. भाद्रपद एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धि कारक माने गए हैं।

—सम्पादक।

ग्रहण विवरण (सन् 2009-10 ई.)

सन् 2009-10 ई. में पृथ्वी पर कुल चार ग्रहण घटित होंगे—

(1) कंकण सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (26 जनवरी, 2009 ई., सोमवार)
(2) खग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (22 जुलाई, 2009 ई., बुधवार)
(3) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (31 दिसंबर, 2009 ई. गुरुवार)
(4) कंकण सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (15 जनवरी, 2010 ई., शुक्रवार)

● भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण ●

(1) कंकण सूर्यग्रहण (26 जनवरी, 2009 ई., माघ अमावस, सोमवार)— यह कंकण सूर्यग्रहण 26 जनवरी, 2009 ई. सोमवार को दोपहर बाद भारत के दक्षिण-पूर्वी भाग (दक्षिणी कर्नाटक, दक्षिण आंध्रप्रदेश, तामिलनाडू, केरल, दक्षिणी उड़ीसा, दक्षिणी बंगाल, मिज़ोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैंड, पूर्वी अरु० प्रदेश, असम, मेघालय) में खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। उत्तर, उत्तर-पश्चिमी एवं मध्य भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। भूलोक पर इस कंकण सूर्यग्रहण का आरम्भ भा. स्टैं. टा. अनुसार प्रातः 10 घं. 27 मिं. से तथा समाप्ति सायं 16 घं. 31 मिं. पर होगी।

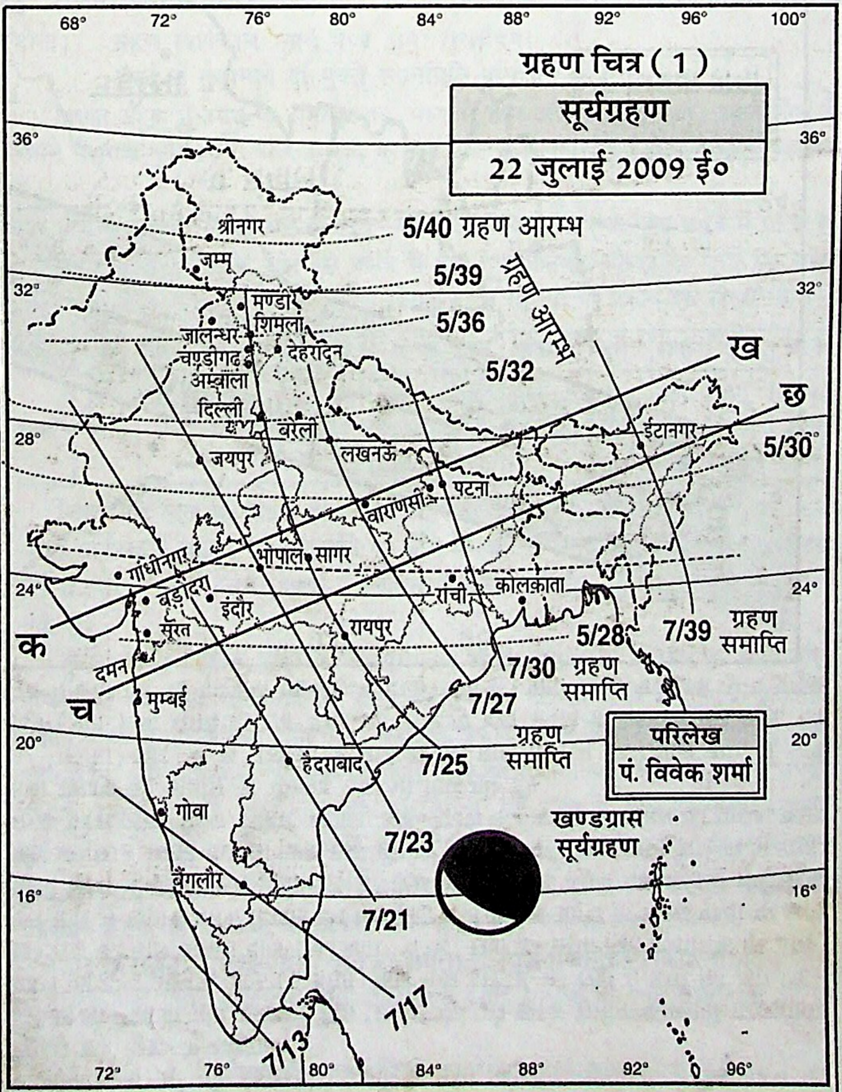
भारत के विभिन्न नगरों में इस खण्डग्रास सूर्यग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल गतवर्षीय 'पंचांगदिवाकर' के पृष्ठ 15 पर दे आए हैं। अथवा नए वर्ष 2009 ई. की 'मुफीद आलम जंत्री' का अवलोकन करें।

(2) खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई., बुधवार)—

यह ग्रहण श्रावण अमावस, बुधवार को भारत में ग्रस्तोदय खण्डग्रास, खण्डग्रास तथा खग्रास रूप में दिखाई देगा। भूलोक में यह खग्रास सूर्यग्रहण भा. स्टैं. टा. अनुसार प्रातः 5 घं. 28 मिं. से प्रारम्भ होकर प्रातः 10 घं. 42 मिं. पर समाप्त होगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण दक्षिणी-पूर्वी एशिया, सिंगापुर, हांगकांग, जापान, उत्तरी इण्डोनेशिया, फिलीपीन्ज तथा मध्य प्रशान्त महासागर में भी दिखाई देगा।

ग्रहण चित्र (1) में दी गई इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) व मोक्ष (समाप्ति) दर्शाने वाली रेखाओं से भारत के किसी भी स्थल पर इस ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) जाना जा सकता है। यहाँ अलग से पृष्ठ 14 व 15 पर लगभग दो सौ भारतीय नगरों में इस ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्तिकाल दिया गया है। इसके साथ ही यहाँ इन नगरों में 22 जुलाई के दिन सूर्योदय काल भी दिया गया है क्योंकि भारत के अधिकांश भाग में सूर्य ग्रस्त ही उदय होगा (अर्थात् सूर्योदय से पहले ही ग्रहण प्रारम्भ हो चुका होगा।) अतः इन नगरों के साथ दिए गए सूर्योदय काल से यह जाना जा सकता है कि अमुक नगर में ग्रहण प्रारम्भ सूर्योदय से पहले होगा या नहीं।

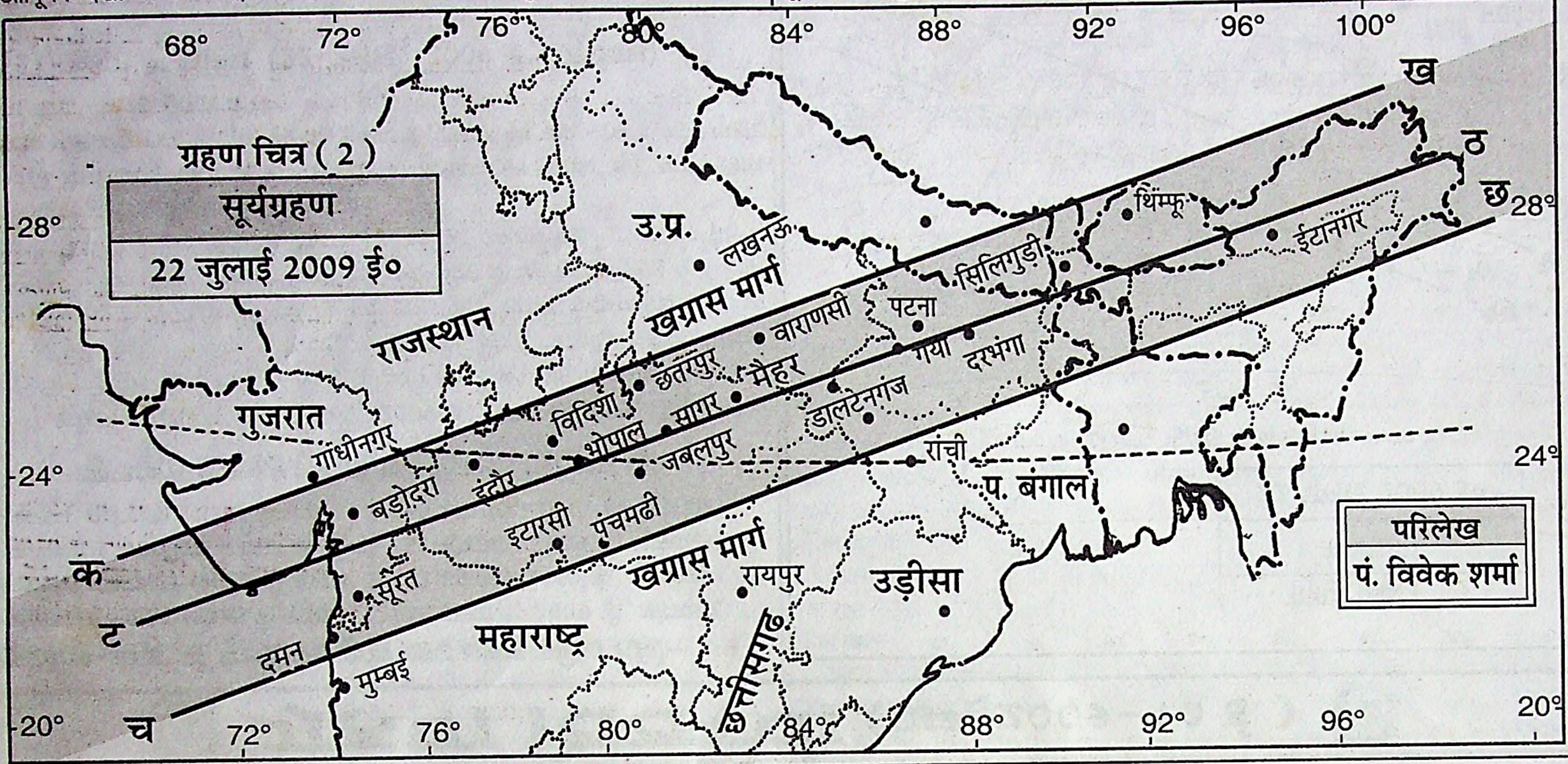


इसी चित्र में 'क-ख' और 'च-छ' पट्टीनुमा दो समानान्तर रेखाएँ दिखाई गई हैं, जो गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक जा रही हैं। यह इस ग्रहण का खग्रास मार्ग है। इस पट्टी में बसे नगर-ग्रामों में इस ग्रहण की खग्रास आकृति दिखाई देगी। (अर्थात् इन नगरों में सूर्य का बिम्ब बिल्कुल ढक जाएगा। इस खग्रास मार्ग से ऊपर (उत्तर-भारत) स्थित नगर ग्रामों में सूर्य का बिम्ब दक्षिण की ओर से तथा नीचे (दक्षिण-भारत) स्थित नगरों में उत्तर की ओर से कटा दिखाई पड़ेगा। कोई नगर-ग्राम इस खग्रास-मार्ग के उत्तर या दक्षिण की ओर जितना अधिक समीपस्थ होगा, वहाँ सूर्य उतना ही अधिक ग्रस्त दिखाई देगा। इसी प्रकार कोई नगर-ग्राम इस खग्रास मार्ग से दक्षिण या उत्तर की ओर जितना दूर होगा, वहाँ सूर्य का ग्रस्त भाग उतना कम होगा। पृष्ठ—पर इन नगरों का प्रारम्भ, समाप्तिकाल तथा ग्रहण अवधि बताई गई है जहाँ यह ग्रहण खग्रास रूप में दिखाई देगा।

ग्रहण चित्र (2) देखिए—इस ग्रहण का खग्रास मार्ग काफ़ी बड़ा करके दिखाया गया है। इसमें गुजरात, मध्यप्रदेश, बिहार, बंगाल, अरुणाचल प्रदेश के उन नगर-ग्रामों को स्पष्टतापूर्वक देखा जा सकता है, जहाँ इस ग्रहण की खग्रास आकृति दिखाई देगी। इस चित्र में अंकित 'क-ख' और 'च-छ' रेखाओं के मध्य बसे नगर-ग्रामों में ही इस ग्रहण का खग्रास रूप देखा जा सकेगा।

इन दो रेखाओं की मध्यवर्ती रेखा 'ट-ठ' पर बसे इसके समीपस्थ स्थानों पर खग्रास ग्रहण का दृश्य अधिक आकर्षक होगा। कोई नगर इस 'ट-ठ' रेखा से उत्तर की ओर 'क-ख' रेखा की ओर अथवा दक्षिण की ओर 'च-छ' रेखा की तरफ जितना अधिक दूर होगा, उस नगर में खग्रास ग्रहण दिखाई देने का काल तथा खग्रास ग्रहण के समय पृथ्वी पर छाने वाली छाया भी उतनी कम होगी। 'ट-ठ' रेखा वाले विभिन्न स्थलों पर भारत में पूर्ण ग्रहण की अवधि 3 मिनट 50 सैकिण्ड तक होगी। पृष्ठ 16 पर एक अलग चार्ट में गुजरात, मध्य-प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, बिहार, बंगाल, अरु० प्रदेश के—नगरों में खग्रास का प्रारम्भ काल तथा खग्रास की अवधि के सैकण्ड तक भी दिए गए हैं।

'क-ख' और 'च-छ' रेखाओं के मध्य खग्रास मार्ग के मध्य पड़ने वाले नगरों में आप दिन (प्रात:) के समय ही रात जैसा अद्भुत दृश्य देख सकते हैं। प्रात: मंगल, शुक्र को पूर्व में तथा गुरु को पश्चिमी आकाश में देख सकते हैं। प्रात: 7/30 बजे तक अन्य प्रमुख



तारे भी टिमटिमाते नज़र आएंगे। खग्रास प्रारम्भ एवं समाप्ति पर हीरे जैसी आकृति भी आप देख सकते हैं। **परन्तु सूर्यग्रहण को नंगी आँखों से कदापि न देखें।**

ध्यान रहें, अधिकांश भारत (पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश (पश्चिमी), जम्मू-कश्मीर, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश में यह ग्रहण खण्डग्रास रूप में तथा ग्रस्तोदय खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक सामान्यत: 21 जुलाई, 09 ई. के सूर्यास्त से प्रारम्भ हो जाएगा। लेकिन ग्रस्तोदय ग्रहण हो तो स्पर्शकाल से ठीक 12 घण्टे पूर्व लगभग 17 घं. 28 मिं. से प्रारम्भ हो जाएगा।

जैसे अमृतसर का सूर्योदय 5 घं. 40 मिं. होने के कारण ग्रहण ग्रस्तोदय खण्डग्रास होगा, तो सूतक 21 जुलाई की सायं 17 घं. 40 मिं. से प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का पर्वकाल—पृष्ठ पर भारत के लगभग 200 नगरों का सूर्योदयकाल, ग्रहण प्रारम्भ, मध्य, मोक्षकाल तथा सूर्योदय दिया गया है। जहाँ सूर्योदय के बाद ग्रहण प्रारम्भ होगा, वहाँ ग्रहण प्रारम्भ से ग्रहण समाप्ति तक के काल को पर्वकाल माना जाएगा।

क्योंकि यह सूर्यग्रहण अधिकांश भारत में लगभग सूर्योदय से ही प्रारम्भ हो रहा है, इसलिए सूर्योदय होने से पूर्व ही धार्मिक लोगों को जप, पूजा, दान में प्रवृत्त हो जाना चाहिए। ग्रहण मोक्ष पर पुन: स्नान करके संकल्पर्वूक दानादि कार्य करने चाहिए।

ग्रहण-काल में कृत्य-अकृत्य—ग्रहणकाल में स्नानादि करके इष्टदेव, भगवान् सूर्य की पूजा, पाठ, जपादि करना चाहिए। पूजा-पाठ, पितृ-तर्पण, वैदिक मन्त्रों, आदित्यहृदय स्तोत्र, सूर्याष्टक स्तोत्र, गायत्री मन्त्र, गणपत्यथर्वशीर्ष आदि स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए। गणपत्युपनिषद् में भी लिखा है कि सूर्यग्रहण में महानदी अर्थात् गंङ्गा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों में या किसी प्रतिमा के पास मन्त्र जपने से वह सिद्ध हो जाता है।

'सूर्यग्रहणे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा स सिद्धमन्त्रो भवति।' (गणपत्युनिषद्)

वेध या ग्रहणकाल में पहले से पकाया हुआ अन्न भी नहीं खाना चाहिए। ग्रहण में सभी वर्णों को सूतक लगता है—**'सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहुदर्शने।'** नरकट, दूध-दही, मट्ठा, घी का पका अन्न और मणि में रखा जल, तिल या कुश डालने पर अपवित्र नहीं होते। गङ्गाजल अपवित्र नहीं होता। जैमिनि पुत्रवान को रविवार और संक्रान्ति के सिवा ग्रहण में भी उपवास वर्जित करते हैं। हाँ सबके लिए जप आदि का विधान और शयन आदि का निषेध अवश्य है—

सूर्येन्दुग्रहणं यावत् तावत् कुर्याज्जपादिकम्। न स्वपेन्न च भुञ्जीत स्नात्वा भुञ्जीत भुक्तयो॥ (नि० सि०)

ग्रहण उपरान्त अन्न, जल, वस्त्र, फलों आदि का दान सुपात्र को देना चाहिए। रजस्वला स्त्री गंगा आदि नदियों या सरोवर में डुबकी न लगाएं, अपितु पात्र द्वारा उसका पानी अलग लेकर स्नान करें। गर्भवती महिलाओं को ग्रहणकाल में सब्ज़ी काटना, पापड़ सेंकनादि उत्तेजित कार्यों से परहेज़ करना चाहिए तथा धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करते हुए प्रसन्नचित्त रहें। इससे भावी सन्तति स्वस्थ एवं सद्गुणी होती है।

ग्रहण का माहात्म्य—कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नानादि का अनन्त माहात्म्य होगा। **ग्रहण स्पर्शकाले स्नानं मध्ये होमः सुरार्चनम्।**
श्राद्धं च मुच्यमाने दां मुक्ते स्नानमिति क्रमः॥ (धर्मसिन्धु)

अर्थात् ग्रहण में स्पर्श के समय स्नान, मध्य में होम और देवपूजन और ग्रहण मोक्ष के समय में श्राद्ध और अन्न, वस्त्र, धनादि का दान और सर्वमुक्त होने पर स्नान करें—यह क्रम है।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव—यह ग्रहण कर्क राशि तथा पुष्य नक्षत्र में घटित हो रहा है। अतएव इस राशि तथा इस नक्षत्र में पैदा हुए जातक/जातिका के लिए यह ग्रहण विशेष अशुभप्रद एवं उथल-पुथल वाला रहेगा। बारह राशियों पर प्रभाव इस प्रकार रहेगा—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	कार्य सिद्धि	धन लाभ	धन हानि	दुर्घटना चोटभय चिन्ता	धन हानि	लाभ उन्नति	रोग, कष्ट भय	गुप्त चिन्ता	लाभ सौख्य	स्त्री/ पति कष्ट	रोग, कष्ट भय	मान हानि, खर्च

जिस राशि वाले को ग्रहण का फल अशुभ हो, विशेषकर कर्क राशि वालों को, उन्हें अपने राशिस्वामी चन्द्रमा का तथा ताँबे या काँसे के पात्र में अन्न/घी भरकर संकल्पर्वूक दान देने से अरिष्ट की शान्ति हो जाती है। नवग्रह सम्बन्धी औषधि स्नान भी कल्याणप्रद माना गया है।

सूर्यग्रहण एवं लोक भविष्य—यह सूर्यग्रहण श्रावण अमावस्या, बुधवार को कर्क राशि, पुष्य नक्षत्र तथा वज्र योग कालीन घटित हो रहा है। तटवर्ती क्षेत्रों में तूफ़ान, प्राकृतिक प्रकोप, कृषि व फ़सलों को हानि एवं राजनीतिक उथल-पुथल के संकेत हैं। काश्मीर, चीन, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान तथा मुस्लिम राष्ट्रों में विशेष राजनीतिक उथल-पुथल एवं उपद्रव होने के संकेत हैं। रूई, चावल, सुपारी, गुड़, चीनी, गेहूँ आदि के भाव तेज होंगे। व्यापारी वर्ग को लाभ, परन्तु गुरुजनों, कारीगरों, लकड़ी का काम करने वालों, साधु, यज्ञ करने वालों तथा जल/तरल पदार्थों से सम्बन्धित कार्य करने वालों को कष्ट होगा। जहाँ-जहाँ ग्रहण ग्रस्तोदय होगा वहाँ उपद्रव, अराजकता तथा ब्राह्मणों में भय रहे।

उदितः सग्रहः सूर्यश्चन्द्रमा यदि वा भवेत्। राजयुद्धं प्रजानाशं सर्वग्रस्तोऽतिदुखदः।

जहाँ-जहाँ ग्रहण ग्रस्तोदित होगा, वहाँ धान्य आदि फसलों का नाश तथा राजा को भी कष्ट व पीड़ा रहे—

ग्रस्तावुदितास्तमितौ शारदधान्यवनीश्वरक्षयदौ॥

भारत के प्रसिद्ध नगरों में सूर्यग्रहण (22 जुला., 09 ई.) का स्पर्श, मोक्ष आदिकाल (भा. स्टै. टा.)

[इन नगरों में खण्डग्रास ही दिखाई देगा। जिस नगर का स्पर्शकाल नहीं दिया गया है, वहाँ सूर्य ग्रस्त ही उदित होगा।]

नगर	ग्रहण प्रारम्भ		ग्रहण मध्य		ग्रहण समाप्त		सूर्योदय	
	घं.	मिं.	परमग्रास		घं.	मिं.	घं.	मिं.
अगरतला	5	30	6	29	7	35	4	50
अजमेर (राज.)	—	—	6	25	7	23	5	52
अमृतसर	—	—	6	28	7	24	5	40
अम्बाला	5	36	6	28	7	25	5	36
अयोध्या	5	32	6	27	7	28	5	17
अलवर (राज.)	—	—	6	25	7	23	5	39
अर्की (हि.प्र.)	5	36	6	28	7	25	5	32
अल्मोड़ा	5	35	6	27	7	26	5	24
अहमदाबाद	—	—	6	24	7	21	6	06
अलीगढ़	—	—	6	27	7	27	5	34
आगरा	—	—	6	27	7	25	5	36
आबू (राज.)	—	—	6	25	7	22	6	03
अबोहर	—	—	6	28	7	24	5	46
आनन्दपुर साहि.	5	36	6	27	7	25	5	35
आईजोल (मिजो.)	5	30	6	29	7	37	4	44
इलाहाबाद	5	30	6	26	7	27	5	24
इम्फाल	5	30	6	31	7	39	4	37
उदयपुर (राज.)	—	—	6	24	7	22	5	59
ऊना (हि.प्र.)	5	36	6	28	7	24	5	34
उधमपुर (का.)	5	39	6	30	7	24	5	36
कपूरथला	—	—	6	28	7	24	5	39
कठुआ	5	39	6	28	7	24	5	37
कन्नौज (उ.प्र.)	5	31	6	26	7	27	5	28
कोलकाता	5	29	6	26	7	31	5	04
करनाल	5	36	6	27	7	25	5	35
करतारपुर	—	—	6	28	7	24	5	38
कटक	5	28	6	25	7	27	5	17
कांगड़ा	5	36	6	28	7	25	5	34

नगर	ग्रहण प्रारम्भ		ग्रहण मध्य		ग्रहण समाप्त		सूर्योदय	
	घं.	मिं.	परमग्रास		घं.	मिं.	घं.	मिं.
कानपुर	5	32	6	27	7	26	5	28
कालका (ह.)	5	36	6	28	7	25	5	32
किश्तवाड़ (का.)	5	39	6	29	7	24	5	34
कुराली	5	36	6	28	7	25	5	35
कुरुक्षेत्र	—	—	6	27	7	25	5	36
कोचीन	—	—	6	20	7	14	6	13
कुल्लू	5	37	6	29	7	25	5	30
कैथल (हरि.)	—	—	6	26	7	24	5	37
कोटखाई (हि.प्र.)	5	36	6	28	7	25	5	31
कोहिमा	5	31	6	31	7	39	4	35
कन्याकुमारी	—	—	6	20	7	13	6	11
कोटकपुरा (पं.)	—	—	6	29	7	24	6	41
कोल्हापुर (म.)	—	—	6	21	7	18	6	10
खन्ना (पं.)	5	36	6	28	7	24	5	35
खरड़ (पं.)	5	36	6	28	7	25	5	35
खुर्जा (उ.प्र.)	5	36	6	29	7	25	5	36
गाज़ियाबाद	5	34	6	28	7	25	5	34
ग्वालियर	—	—	6	25	7	23	5	37
गुड़गांव	—	—	6	27	7	25	5	38
गुवाहाटी (बंगा.)	5	30	6	30	7	37	4	43
गोईंदवाल (पं.)	—	—	6	28	7	24	5	39
गोराया (पं.)	—	—	6	28	7	24	5	37
गांधीनगर (गु.)	—	—	6	24	7	21	6	05
चम्बा (हि.प्र.)	5	36	6	29	7	25	5	32
चण्डीगढ़	5	36	6	28	7	25	5	34
चन्दौसी (उ.प्र.)	5	33	6	27	7	26	5	31
चमौली (उत्तरां)	5	35	6	28	7	26	5	26
चेन्नई	—	—	6	21	7	18	5	52

नगर	ग्रहण प्रारम्भ		ग्रहण मध्य		ग्रहण समाप्त		सूर्योदय	
	घं.	मिं.	परमग्रास		घं.	मिं.	घं.	मिं.
छिन्दवाड़ा (म.प्र.)	—	—	6	28	7	23	5	41
जालन्धर	—	—	6	28	7	24	5	39
जम्मू	5	39	6	29	7	24	5	38
जयपुर	—	—	6	26	7	23	5	46
जलगांव (म.)	—	—	6	23	7	20	5	57
जैसलमेर	—	—	6	25	7	22	6	05
जीन्द	—	—	6	27	7	25	5	40
जोगिन्द्रनगर	5	36	6	28	7	25	5	32
जोधपुर	—	—	6	25	7	22	5	59
जैतों	—	—	6	27	7	23	5	42
जीरा (पं.)	—	—	6	27	7	23	5	41
झुझुनूं	—	—	6	27	7	23	5	45
झांसी (उ.प्र.)	—	—	6	25	7	25	5	39
टोहाना	—	—	6	26	7	25	5	39
डोडा (का.)	5	39	6	29	7	24	5	35
डलहौज़ी	5	37	6	27	7	25	5	33
तिरूवनन्तपुरम्	—	—	6	20	7	13	6	12
दिल्ली	—	—	6	27	7	25	5	37
दुर्ग (छत्ती.)	—	—	6	24	7	25	5	35
देहरादून	5	35	6	28	7	26	5	30
द्वारिका	—	—	6	24	7	19	6	21
धर्मशाला (हि.प्र.)	5	36	6	28	7	25	5	33
धूरी	—	—	6	28	7	24	5	40
नवलगढ़	—	—	6	28	7	25	5	46
नकोदर	—	—	6	28	7	24	5	39
नरवाना (ह.)	—	—	6	27	7	25	5	38
नवांशहर	5	36	6	28	7	25	5	36
नंगल	5	36	6	28	7	25	5	35
नागपुर	—	—	6	23	7	23	5	43

पर्वकाल—स्पर्श से मोक्ष समय तक का काल 'पर्वकाल' कहलाता है, जहाँ सूर्योदय से पहले ही ग्रहण प्रारम्भ होगा, वहाँ सूर्योदय से ग्रहण समाप्ति तक के समय को 'पर्वकाल' माना जाएगा।

नगर	ग्रहण प्रारम्भ		ग्रहण मध्य		ग्रहण समाप्त		सूर्योदय	
	घं.	मिं.	परमग्रास		घं.	मिं.	घं.	मिं.
नाहन (हि.प्र.)	5	36	6	29	7	25	5	32
नासिक	—	—	6	22	7	20	6	06
नालागढ़ (हि.प्र.)	—	—	6	28	7	25	5	36
नौशेहरा (का.)	5	39	6	29	7	24	5	40
पठानकोट	—	—	6	29	7	24	5	36
पटियाला	—	—	6	28	7	25	5	37
पणजी (गोआ)	—	—	6	21	7	17	6	14
पाण्डिच्चेरी	—	—	6	21	7	17	5	56
पंचकूला	5	36	6	28	7	25	5	34
पानीपत	—	—	6	27	7	25	5	37
पिहोवा	—	—	6	27	7	25	5	36
पिथौरागढ़	5	35	6	29	7	27	5	22
पुँछ (जं.का.)	5	36	6	29	7	24	5	37
पीलीभीत	5	34	6	27	7	26	5	25
पोर्ट-ब्लेयर	5	34	6	26	7	26	5	04
पालमपुर (हि.प्र.)	5	36	6	28	7	25	5	33
पूना	—	—	6	22	7	19	6	09
पुरी	5	28	6	24	7	27	5	19
पपरौला	5	36	6	28	7	25	5	33
फर्रुखाबाद	5	31	6	27	7	26	5	31
फगवाड़ा (पं.)	—	—	6	28	7	24	5	38
फरीदकोट	—	—	6	29	7	23	5	41
फाज़िल्का	—	—	6	29	7	23	5	47
फरीदाबाद	—	—	6	27	7	25	5	41
फतेहाबाद (हरि.)	—	—	6	27	7	25	5	41
विजयवाड़ा	—	—	6	22	7	21	5	45
बटाला	—	—	6	28	7	24	5	38
बंगा	—	—	6	28	7	25	5	37
बलाचौर (पं.)	5	36	6	28	7	25	5	36
बरनाला	—	—	6	27	7	23	5	40
बिजनौर (उ.प्र.)	5	35	6	28	7	26	5	32
बुलन्दशहर(उ.प्र.)	—	—	6	27	7	25	5	35
बरेली (उ.प्र.)	5	33	6	27	7	27	5	29

नगर	ग्रहण प्रारम्भ		ग्रहण मध्य		ग्रहण समाप्त		सूर्योदय	
	घं.	मिं.	परमग्रास		घं.	मिं.	घं.	मिं.
बारामूला (का.)	—	—	6	29	7	24	5	37
बनिहाल (का.)	5	39	6	29	7	24	5	33
बल्लभगढ़ (हरि.)	—	—	6	28	7	25	5	37
बीकानेर	—	—	6	27	7	24	5	53
बागपत	5	36	6	28	7	26	5	36
बैजनाथ	5	37	6	29	7	24	5	33
बिलासपुर(हि.प्र.)	5	37	6	29	7	25	5	34
बैंगलोर	—	—	6	21	7	17	6	03
भठिण्डा	—	—	6	28	7	24	5	43
भद्रवाह	5	39	6	28	7	25	5	34
भिवानी	—	—	6	28	7	24	5	41
भुवनेश्वर	5	28	6	24	7	27	5	18
मलेरकोटला	—	—	6	28	7	24	5	37
मोगा	—	—	6	27	7	24	5	40
मदुरई	—	—	6	20	7	15	6	05
मोहाली	—	—	6	28	7	25	5	34
मेरठ	—	—	6	27	7	25	5	34
मंगलौर	—	—	6	21	7	16	6	14
मुक्तसर	—	—	6	28	7	25	5	44
मण्डी (हि.प्र.)	5	38	6	29	7	26	5	31
मनीकरण	5	38	6	29	7	26	5	30
मुम्बई	—	—	6	22	7	19	6	12
मुर्शीदाबाद	5	29	6	27	7	32	5	01
यमुनानगर	5	35	6	28	7	25	5	34
रामपुरबुशैहर	5	37	6	29	7	25	5	30
रोहड़	5	37	6	29	7	24	5	30
रोपड़	5	36	6	28	7	25	5	35
रोहतक	—	—	6	27	7	25	5	38
रिवाड़ी	—	—	6	27	7	25	5	40
रामबन (का.)	5	39	6	29	7	24	5	36
रियासी (का.)	5	39	6	29	7	24	5	37
रामनगर (का.)	5	39	6	30	7	23	5	36
रतलाम (म.प्र.)	—	—	6	25	7	22	5	56
राँची (झार.)	5	29	6	26	7	29	5	14

नगर	ग्रहण प्रारम्भ		ग्रहण मध्य		ग्रहण समाप्त		सूर्योदय	
	घं.	मिं.	परमग्रास		घं.	मिं.	घं.	मिं.
राजौरी (का.)	—	—	6	28	7	25	5	42
रामपुर (उ.प्र.)	5	33	6	27	7	28	5	29
रायपुर (छत्ती.)	—	—	6	24	7	25	5	33
राजकोट	—	—	6	24	7	20	6	14
रूड़की	5	35	6	28	7	26	5	31
लखनऊ	5	31	6	26	7	27	5	26
लुधियाना	—	—	6	28	7	25	5	36
लाडवा	5	34	6	27	7	25	5	35
शिमला	5	36	6	28	7	25	5	32
शाहाबाद (ह.)	5	36	6	28	7	24	5	35
शाहजहांपुर	5	32	6	27	7	26	5	27
शिलांग	5	30	6	30	7	37	4	44
श्रीनगर	5	40	6	30	7	24	5	35
संगरूर (पं.)	—	—	6	28	7	24	5	39
सरहिन्द (पं.)	5	36	6	28	7	24	5	35
सपाटू (हि.प्र.)	5	37	6	29	7	26	5	33
सहारनपुर	5	34	6	27	7	25	5	33
सरकाघाट	5	37	6	29	7	25	5	34
सुन्दरनगर	5	36	6	29	7	25	5	31
सुनाम (पं.)	—	—	6	28	7	24	5	40
सोलन (हि.प्र.)	5	36	6	28	7	25	5	32
सिरसा (हरि.)	—	—	6	28	7	25	5	43
सोनीपत	—	—	6	27	7	25	5	36
हमीरपुर	5	37	6	28	7	24	5	33
हरिद्वार	5	35	6	28	7	26	5	31
हज़ारीबाग	5	29	6	26	7	29	5	14
हनुमानगढ़	—	—	6	28	7	23	5	46
होशियारपुर	5	36	6	28	7	24	5	35
हैदराबाद	—	—	6	22	7	20	5	52
हांसी (ह.)	—	—	6	27	7	24	5	41
हाटकोटी(हि.प्र.)	5	36	6	28	7	25	5	30
हिसार	—	—	6	27	7	24	5	41
हुबली (कर्ना.)	—	—	6	21	7	18	6	09

पर्वकाल—स्पर्श से मोक्ष समय तक का काल 'पर्वकाल' कहलाता है, जहाँ सूर्योदय से पहले ही ग्रहण प्रारम्भ होगा, वहाँ सूर्योदय से ग्रहण समाप्ति तक के समय को 'पर्वकाल' माना जाएगा।

गुजरात, मध्य प्रदेश, उ. प्र., बिहार, बंगाल के वे नगर जहाँ खग्रास (पूर्ण- ग्रहण) दिखाई देगा।

[जहाँ स्पर्शकाल नहीं दिया गया है, वहाँ सूर्योदय से पहले ही ग्रहण प्रारम्भ हो जाएगा अर्थात् ग्रस्तोदय खग्रास ग्रहण होगा।]

नगर	स्पर्श काल		खग्रास प्रारम्भ		परम ग्रास		खग्रास की अवधि		मोक्ष काल		सूर्योदय	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	मिं.	सैकण्ड	घं.	मिं.	घं.	मिं.
ईटानगर (अरुणां.)	5	31	6	30	6	32	3	28	7	39	4	34
इन्दौर (म.प्र.)	—	—	6	22	6	23	3	13	7	22	5	54
इटारसी (म.प्र.)	—	—	6	22	6	23	2	50	7	23	5	48
उज्जैन (म.प्र.)	—	—	6	23	6	24	1	39	7	22	5	53
कटिहार	5	30	6	26	6	27	2	42	7	31	5	03
कूचबिहार (बंगा.)	5	30	6	27	6	29	3	52	7	34	4	52
खण्डवा (म.प्र.)	—	—	6	22	6	23	1	23	7	21	5	54
गया (बिहार)	5	30	6	24	6	26	3	15	7	29	5	13
छपरा (बिहार)	5	30	6	24	6	26	3	41	7	29	5	14
छतरपुर (म.प्र.)	—	—	6	24	6	25	1	01	7	25	5	36
जबलपुर (म.प्र.)	—	—	6	23	6	24	3	02	7	24	5	37
डाल्टनगंज (बि.)	5	29	6	25	6	25	0	39	7	28	5	19
डिब्रूगढ़ (असम)	5	32	6	31	6	33	3	38	7	41	4	28
थिम्फू (भूटा.)	5	31	6	28	6	29	2	48	7	35	4	49
दरभंगा (बिहा.)	5	30	6	25	6	27	3	16	7	30	5	09
दमन	—	—	6	22	6	23	1	46	7	19	6	11
दार्जिलिंग (बंगा.)	5	31	6	27	6	29	2	57	7	33	4	56
पंचमढ़ी (म.प्र.)	—	—	6	22	6	23	2	04	7	23	5	45
पटना (बिहा.)	5	30	6	25	6	27	3	47	7	30	5	11
पुरनिया (बिहा.)	5	30	6	26	6	27	3	22	7	31	5	03
बंकीपुर	5	30	6	24	6	26	3	51	7	29	5	12
मुजफ्फरपुर (बिहा.)	5	30	6	25	6	27	3	06	7	30	5	09
भरूच (गुज.)	—	—	6	21	6	23	3	16	7	20	6	07
भावनगर (गुज.)	—	—	6	22	6	23	2	49	7	20	6	11
भोपाल (म.प्र.)	—	—	6	22	6	24	3	12	7	23	5	47
भागलपुर (बिहा.)	5	30	6	26	6	27	2	54	7	31	5	04
मैहर (म.प्र.)	—	—	6	23	6	25	3	31	7	25	5	33
मिर्ज़ापुर (उ.प्र.)	5	30	6	24	6	25	3	07	7	27	5	23
रीवा (म.प्र.)	—	—	6	23	6	25	3	37	7	26	5	30
विदिशा (म.प्र.)	—	—	6	22	6	24	3	11	7	23	5	46
वड़ोदरा (गुज.)	—	—	6	23	6	23	1	19	7	20	6	05
वाराणसी (उ.प्र.)	5	30	6	24	6	26	3	08	7	28	5	20
सिलीगुड़ी (बंगा.)	5	30	6	27	6	28	3	47	7	33	4	56
सूरत (गुज.)	—	—	6	21	6	23	3	17	7	20	6	08
सागर (म.प्र.)	—	—	6	22	6	24	3	25	7	24	5	42
सिलवासा (गुज.)	—	—	6	22	6	23	0	11	7	19	6	09
सिबसागर (आसा.)	5	31	6	31	6	32	1	15	7	41	4	29
गंगटोक	5	31	6	28	6	29	2	08	7	34	4	54

(2) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

(31 दिसंबर, सन् 2009 ई., गुरुवार)

यह ग्रहण पौष पूर्णिमा को 31 दिसंबर, 09 तथा 1 जनवरी, सन् 2010 ई. की मध्यगत रात्रि को सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा । इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष आदि का काल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार होगा—

	घं. मिं.	
ग्रहण स्पर्श	24-22	31 दिसं०/1 जन० (गुरु/शुक्र)
ग्रहण मध्य	24-53	रात्रि
ग्रहण मोक्ष	25-24	(भा. स्टैं. टा.)

(ग्रहण की अवधि = 1 घं. 02 मिं.; ग्रासमान = 0.081 प्रतिशत)

(चन्द्र मालिन्यारम्भ = 22 घं. 45 मिं., चन्द्र क्रान्ति निर्मल = 27 घं. 00 मिं.)

भारत में जब 31 दिसंबर, 2009 ई. की रात्रि 12 बजकर 22 मिनट पर यह चन्द्रग्रहण शुरू होगा, उस समय सम्पूर्ण भारत में चन्द्र उदय हो चुका होगा। भारत के सभी नगरों/ग्रामों में 31 दिसंबर को सायं 4-00 (घं. मिं.) से सायं 6-00 बजे तक चन्द्र उदय हो जाएगा तथा यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 31 दिसं. की रात्रि 24 घं. 22 मिं. से प्रारम्भ होकर रात्रि 1 बजकर 24 मिनट (अर्थात् 25 घं. 24 मिं.) पर समाप्त (मोक्ष) होगा। भारत के सभी नगरों में इसका प्रारम्भ, मध्य तथा मोक्ष रूप देखा जा सकेगा।

भारत के अतिरिक्त यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण अलास्का, आस्ट्रेलिया, इण्डोनेशिया, एशिया के देशों जैसे-पाकिस्तान, नेपाल, सिंगापुर, हांगकांग, श्रीलंका, बर्मा, आदि देशों, अफ्रीका, सम्पूर्ण यूरोप के देशों में भी (इंगलैण्ड, आयरलैण्ड आदि सहित) दिखाई देगा।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 31 दिसंबर, 2009 ई० को दोपहर 3 बजकर 22 मिनट (15-22) (भा. स्टैं. टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण काल तथा बाद में क्या करें ?—ग्रहण के सूतक और ग्रहण काल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र-जप, मन्त्र सिद्धि, तीर्थ-स्नान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादान करना कल्याणकारी होता है। धार्मिक लोगों को ग्रहण काल अथवा 31 दिसंबर के सूर्यास्त के बाद अपनी राश्यानुसार अथवा ब्राह्मण के परामर्श अनुसार दान योग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिए तथा अगले दिन प्रात: 1 जनवरी, 2010 ई० को प्रात: सूर्योदय के समय पुन: स्नान करके संकल्पपूर्वक योग्य ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

सूतक एवं ग्रहण काल में मूर्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैल, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूट-कपटादि, वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग से परहेज़ करना चाहिए। क्योंकि 31 दिसंबर को नववर्ष 2010 ई० की पूर्वसन्ध्या में सूतक का भी विचार होगा। इसलिए सूझवान लोगों को इस दिन नाच-गाना, टी.वी. देखना, मदिरा आदि सेवन से तो अवश्य परहेज़ करना ही चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में दोष नहीं।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव—यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण आर्द्रा नक्षत्र तथा मिथुन राशि में घटित हो रहा है। इसलिए इस राशि एवं नक्षत्र में उत्पन्न जातकों को चन्द्रमा तथा राशिस्वामी बुध का जप, दान करना कल्याणकारी रहेगा। बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन लाभ	धन हानि	दुर्घटना शरीर कष्ट	धन हानि	लाभ उन्नति	रोग कष्ट भय	चिन्ता, संतान को कष्ट	शत्रु भय, साधारण लाभ	स्त्री कष्ट	रोग, गुप्त चिन्ता	खर्च अधिक कार्य-विलम्ब	कार्य सिद्धि

ग्रहण का लोक-भविष्य एवं प्रभाव—यह ग्रहण आर्द्रा नक्षत्र तथा मिथुन राशि में पौष मास में घटित हो रहा है। ब्राह्मणों, क्षत्रियों, कला के क्षेत्र से सम्बन्धित लोगों, सत्य बोलने वालों तथा पवित्र रहने वालों, चोर आदि लोगों को कष्ट एवं पीड़ा रहे। पाकिस्तान, मुस्लिम देशों, केन्द्रीय सत्ता (यमुना निकट) के लिए कठिन एवं चुनौतीपूर्ण समय होगा। कहीं अल्प वर्षा, राज्य-परिवर्तन तथा प्राकृतिक प्राकोपों से व्यापक जन-धन की हानि होगी।

(3) कंकण सूर्यग्रहण (15 जनवरी, 2010 ई., माघी अमावस, शुक्रवार)—इस सूर्यग्रहण की कंकणाकृति सम्पूर्ण अफ्रीका, उत्तरी श्रीलंका, दक्षिणी-पूर्वी बांगलादेश तथा भारत के सुदूर दक्षिणी भाग-रामेश्वरम्, कन्याकुमारी तथा तिरूवनन्तपुरम् (केरल, तामिलनाडू के दक्षिणी भागों में) आदि कुछ नगरों में ही दिखाई देगा।

शेष सारे भारत में यह सूर्यग्रहण खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा। पृथ्वी पर इस कंकण ग्रहण का प्रारम्भ इस-प्रकार होगा—

		भा. स्टै. टा.
ग्रहण प्रारम्भ	—	9-35
ग्रास प्रारम्भ	—	10-48
ग्रास समाप्त	—	14-25
ग्रहण समाप्त	—	15-38

(ग्रहण का ग्रासमान = 91 प्रतिशत)

भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में इसे खण्डग्रास रूप में देखा जा सकेगा। ग्रहण चित्र (3) में इस ग्रहण का विभिन्न भारतीय स्थलों पर स्पर्श, मोक्षकाल (भा. स्टै. टा.) बतलाने वाली वक्र रेखाएँ 5-5 मिनटों के अन्तर पर दी गई हैं। नगर के अक्षांश, रेखांशों द्वारा इस चित्र में नगर का स्थान अंकित कर आप अपने अभीष्ट नगर में इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल (भा. स्टै. टा.) आसानी से जान सकते हैं।

आगे पृष्ठ 19 पर भारत के प्रसिद्ध नगरों में इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल (भा. स्टै. टा.) दिया गया है।

ग्रहण का ग्रासमान—क्योंकि भारत में यह कंकण सूर्यग्रहण खण्डग्रास रूप में दिखायी देगा। दक्षिणी भारत में इस ग्रहण का सबसे अधिक ग्रासमान होगा। ज्यों-ज्यों हम उत्तर भारत की ओर बढ़ते जाएंगे, ग्रहण का ग्रासमान अर्थात् परम-ग्रास उतना ही कम होता जाएगा। श्रीनगर में सबसे कम ग्रासमान लगभग 40% रहेगा। कन्याकुमारी में सबसे अधिक ग्रासमान लगभग 94 प्रतिशत रहेगा। (कंकण सूर्यग्रहण का)

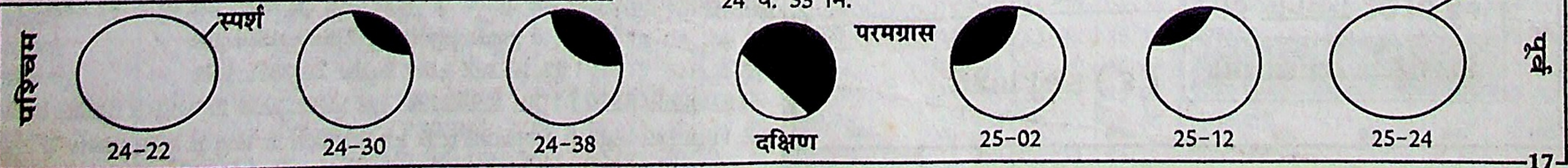
ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 14 जनवरी की रात्रि से प्रारम्भ हो जाएगा। पृष्ठ-पर दिए भारत के विभिन्न नगरों के ग्रहण आरम्भ से ठीक 12 घण्टे पहले ग्रहण-सूतक का प्रारम्भ-काल जानें। जैसे-हरिद्वार में ग्रहण-आरम्भ 11 घं. 58 मिं. पर होगा, तो हरिद्वार में ग्रहण का सूतक 14 जनवरी, 2010 ई० की रात्रि 23 घं. 58 मिं. पर प्रारम्भ होगा।

ग्रहण के समय क्या करें-क्या न करें ?—जब ग्रहण का प्रारम्भ हो तो स्नान, जप, मध्यकाल में होम, देव पूजा और ग्रहण का मोक्ष समीप में होने पर दान तथा पूर्ण मोक्ष होने पर स्नान करना चाहिए।

स्पर्शे स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुराचर्नम्।
मुच्यमाने सदा दानं विमुक्तौ स्नानमाचरेत्॥ (ज्ये. नि.)

ग्रहणकाल में भगवान् सूर्य की पूजा, आदित्यहृदय स्तोत्र, सूर्याष्टक स्तोत्र आदि स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए। पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्ज़ी ग्रहणकाल में दूषित हो जाते हैं, उन्हें नहीं रखना चाहिए। परन्तु तेल, घी, दूध, दही, लस्सी, मक्खन, पनीर, आचार,

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (31 दिसम्बर, 2009 ई.)



चटनी, मुरब्बा आदि में तिल या कुशा रख देने से ये ग्रहणकाल में दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों में तिल या कुशा डालने की आवश्यकता नहीं। (मन्वर्थ मुक्तावली)—

यथा— **अन्नं पक्वमिह त्याज्यं स्नानं सवसनं ग्रहे।**
वारितक्रारनालादि तिलैदंर्भैर्न दुष्यते॥

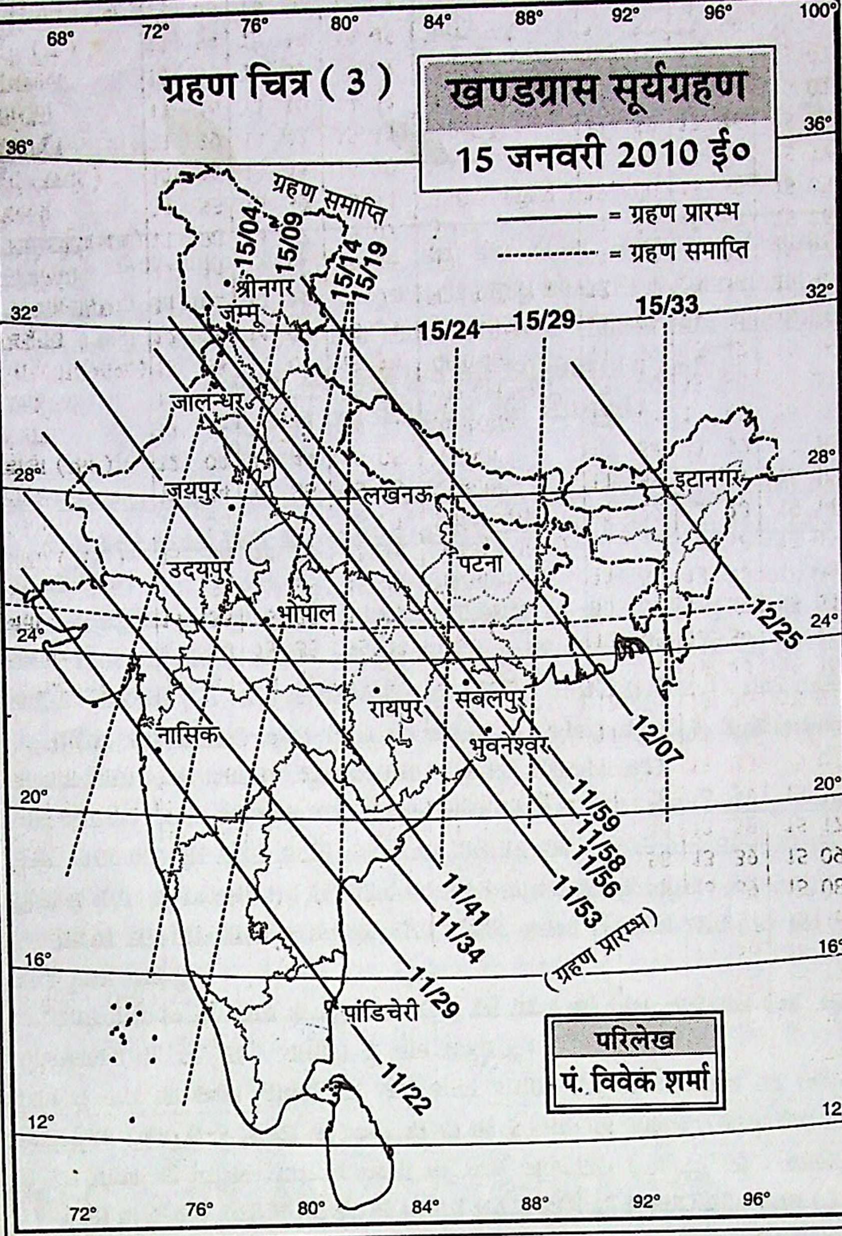
ध्यान रहे, ग्रस्त सूर्य विम्ब की नंगी आंखों से कदापि न देखें। वैल्डिंग वाले काले ग्लास में से इसे देख सकते हैं। ग्रहण के समय तथा ग्रहण की समाप्ति पर गर्म पानी से स्नान करना निषिद्ध है।—**न स्नायादुष्णतोयेन नास्पृशं स्पर्शयेत्तथा॥** रोगी या वृद्ध के लिए निषेध नहीं है। ग्रहणकाल में सोना, खाना, पीना, तैलमर्दन, मैथुन, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग निषिद्ध है। नाखून भी नहीं काटने चाहिए।

माघ (मौनी) अमावस और ग्रहण-सूतक—यह ग्रहण 15 जनवरी माघ (मौनी) अमावस के दिन घटित हो रहा है। 14 जनवरी से हरिद्वार में कुम्भ महापर्व के स्नान का माहात्म्य भी प्रारम्भ हो रहा है। अतएवं 15 जन. को माघ (मौनी) अमावस के दिन ग्रहण भी घटित होने से हरिद्वार, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थ स्थानों पर अनुष्ठान, तर्पण, श्राद्ध-क्रिया का अनन्त कोटि माहात्म्य रहेगा। परन्तु 15 जन. को ग्रहणसूतक में भोजन निषिद्ध होने से ब्राह्मणों को श्राद्ध भोजन नहीं खिलाया जा सकता, अतएवं मौनी अमावस का ब्राह्मण भोजन ब्राह्मणों को अपक्व अन्न (सूखा) देना चाहिए अथवा 14 जनवरी को श्राद्ध-समय (मध्याह्न/अपराह्ण) में ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण मकर राशि तथा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में होगा, अतएव इस राशि, नक्षत्र में उत्पन्न लोगों के लिए यह विशेष अशुभ है। अत: इस राशि वालों को ग्रहण-दान, पाठ, आदित्यहृदय स्तोत्रों, सूर्याष्टक स्तोत्रों का पाठ विशेष रूप से करना चाहिए। स्मृति निर्णय में कहा है कि सूर्यग्रहण में सूर्य का जप व दान और चन्द्रग्रहण में चन्द्र तथा राहु का जप व दान करना चाहिए विभिन्न राशि वाले जातकों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे दिया जा रहा है—

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	रोग, कष्ट भय	गुप्त चिन्ता	सौख्य लाभ	स्त्री पति कष्ट	रोग, कष्ट भय	मान-हानि, खर्च	कार्य सिद्धि	धन लाभ	धन हानि	चोट, दुर्घटना, भय	धन हानि	धन लाभ

ग्रहण का अन्यफल एवं लोकभविष्य—यह सूर्यग्रहण माघ मास, शुक्रवार, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र एवं मकरराशि में घटित हो रहा है। मातृ-पितृ भक्त, वेदपाठी, ब्राह्मणों, विद्यार्थियों तथा धर्मात्माओं को कष्ट एवं परेशानी, दक्षिण दिशा के देशों/प्रदेशों में रहने वालों को कष्ट रहे। तीर्थ-स्थानों पर उपद्रव एवं अराजकता रहे। चाँदी, रूई, सोने में तेज़ी बनेगी। कृषि उद्योग से सम्बन्धित लोगों के मनमाना आचरण से महँगाई में वृद्धि होगी।



खण्डग्रास सूर्यग्रहण (15 जनवरी, सन् 2010 ई., शुक्रवार)

[भारत के विभिन्न नगरों में खण्ड सूर्यग्रहण का प्रारम्भ, परमग्रास तथा समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)]

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं.	मिं.	परम ग्रास घं.	मिं.	ग्रहण समाप्त घं.	मिं.
अमृतसर	11	56	13	35	15	03
अजमेर	11	42	13	31	15	07
अगरतला	12	16	14	03	15	32
अयोध्या	12	00	13	41	15	20
अम्बाला	11	58	13	39	15	09
अलवर	11	48	13	30	15	10
अर्की (हि.प्र.)	12	00	13	40	15	08
अल्मोड़ा(उत्तरा)	12	00	13	43	15	13
अहमदाबाद	11	27	13	22	15	04
अलीगढ़	11	52	13	38	15	12
आगरा	11	51	13	38	15	13
अबोहर	11	51	13	32	15	02
आबू (राज.)	11	32	13	24	15	03
आनन्दपुर सा.	11	58	13	39	15	07
आईज़ोल	12	20	14	05	15	33
ईटानगर	12	26	14	08	15	33
इलाहाबाद	11	57	13	48	15	21
इम्फाल	12	24	14	07	15	34
इन्दौर	11	38	13	34	15	13
उज्जैन (म.प्र.)	11	36	13	31	15	11
उदयपुर (राज.)	11	34	13	27	15	06
ऊना (हि.प्र.)	11	58	13	40	15	07
ऊधमपुर (का.)	11	59	13	35	15	02
कपूरथला	11	55	13	36	15	04
कठुआ	11	58	13	35	15	03
कन्नौज (उ.प्र.)	11	58	13	45	15	17
कोलकाता	12	07	13	58	15	29
करनाल	11	54	13	35	15	10
करतारपुर	11	54	13	35	15	04
कटक (उड़ी.)	11	57	13	52	15	26
कांगड़ा	12	00	13	41	15	07
कानपुर	11	57	13	45	15	18

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं.	मिं.	परम ग्रास घं.	मिं.	ग्रहण समाप्त घं.	मिं.
कोल्हापुर	11	15	13	19	15	07
कालका (ह.)	11	59	13	40	15	09
किश्तवाड़ (का.)	12	00	13	36	15	04
कुराली	11	57	13	39	15	08
कुरुक्षेत्र	11	54	13	36	15	09
कुर्नूल (आ.प्र.)	11	25	13	29	15	14
कोचीन	11	06	13	15	15	06
कुल्लू	12	01	13	40	15	07
कैथल	11	54	13	36	15	09
कोटखाई(हि.प्र.)	11	59	13	40	15	08
कावारट्टी	10	55	13	05	15	00
कोहिमा	12	25	14	08	15	34
कावलूर	11	20	13	26	15	13
कोटकपूरा (पं.)	11	53	13	34	15	04
कूचबिहार(बंगा.)	12	16	14	02	15	30
*कन्याकुमारी	11	06	13	15	15	06
कैनानोर (केर.)	11	07	13	16	15	06
खन्ना	11	55	13	36	15	05
खरड़	11	57	13	38	15	08
खुर्जा (उ.प्र.)	11	53	13	39	15	12
गंगटोक	12	16	14	01	15	29
गाज़ियाबाद	11	54	13	40	15	12
ग्वालियर	11	48	13	35	15	13
गुड़गांव	11	52	13	38	15	11
गुवाहाटी	12	21	14	05	15	32
गोइंदवाल	11	57	13	35	15	03
गोराया	11	55	13	36	15	06
गांधीनगर (गु.)	11	28	13	23	15	04
गया	12	03	13	53	15	26
चम्बा (हि.प्र.)	12	01	13	40	15	07
चण्डीगढ़	11	58	13	39	15	09
चन्दौसी (उ.प्र.)	11	59	13	40	15	14

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं.	मिं.	परम ग्रास घं.	मिं.	ग्रहण समाप्त घं.	मिं.
चमौली (उत्तरां)	12	01	13	41	15	12
चेन्नई	11	25	13	31	15	15
छिन्दवाड़ा	11	40	13	36	15	17
जालन्धर	11	55	13	36	15	04
जम्मू	11	58	13	35	15	02
जयपुर	11	46	13	35	15	09
जबलपुर (म.प्र.)	11	48	13	39	15	16
जलगांव (म.)	11	28	13	23	15	09
जैसलमेर (रा.)	11	32	13	32	15	02
जीन्द	11	54	13	36	15	10
जोगिन्द्रनगर	11	59	13	40	15	07
जोधपुर	11	40	13	33	15	03
जैतों	11	53	13	35	15	03
जीरा	11	53	13	35	15	03
झांसी (उ.प्र.)	11	46	13	36	15	16
झुझुनूं	11	50	13	37	15	07
टोहाना	11	54	13	36	15	08
डोडा (का.)	12	01	13	41	15	05
तंजौर	11	17	13	24	15	11
डलहौज़ी	11	59	13	38	15	07
तैमनलोंग(मणि.)	12	23	14	07	15	33
डिब्रूगढ़	12	29	14	09	15	34
*तिरूवन्तपुरम	11	05	13	15	15	06
दार्जिलिंग	12	14	14	00	15	29
*तिरुनेलवेली(ता.ना.)	11	08	13	17	15	07
दिल्ली	11	53	13	39	15	11
दुर्ग (छत्ती.)	11	46	13	43	15	20
देहरादून	11	59	13	42	15	11
द्वारिका	11	16	13	10	14	54
धर्मशाला	11	59	13	39	15	07
धूरी (पं.)	11	54	13	35	15	05
नवलगढ़ (राज.)	11	48	13	34	15	07

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं.	मिं.	परम ग्रास घं.	मिं.	ग्रहण समाप्त घं.	मिं.
नकोदर	11	55	13	35	15	04
नरवाना (ह.)	11	54	13	36	15	08
नैलोर	11	28	13	32	15	16
नवांशहर	11	58	13	39	15	08
नंगल (पं.)	11	58	13	39	15	09
नागपुर	11	40	13	38	15	17
नाहन (हि.प्र.)	11	58	13	39	15	10
नासिक (म.)	11	22	13	23	15	07
नालागढ़(हि.प्र.)	11	59	13	40	15	08
नौशेहरा (ज.का.)	12	01	13	36	15	02
नालगौंडा	11	30	13	33	15	16
पटना	12	05	13	54	15	26
पठानकोट	11	59	13	39	15	04
पटियाला	11	56	13	37	15	08
पणजी (गोआ)	11	11	13	16	15	06
पाण्डिच्चेरी	11	22	13	28	15	14
पंचकूला	11	58	13	39	15	10
पानीपत	11	54	13	39	15	10
पिथौरागढ़	12	01	13	43	15	13
पुँछ (ज.का.)	12	00	13	36	15	01
पीलीभीत	11	59	13	42	15	16
पोर्ट-ब्लेयर	12	05	13	54	15	24
पालमपुर(हि.प्र.)	12	01	13	38	15	07
पूना	11	19	13	21	15	07
पुरी	11	56	13	51	15	26
पपरौला (हि.प्र.)	12	00	13	38	15	08
फरुखाबाद	11	58	13	44	15	17
फगवाड़ा	11	55	13	36	15	05
फरीदकोट	11	52	13	32	15	02
फाज़िल्का	11	51	13	31	15	02
फरीदाबाद	11	52	13	39	15	12
फतेहाबाद (ह.)	11	53	13	39	15	08

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मिं.	परम ग्रास घं. मिं.	ग्रहण समाप्त घं. मिं.
वड़ोदरा (गुज.)	11 27	13 23	15 05
वाराणसी	11 59	13 50	15 23
विजयवाड़ा	11 34	13 36	15 18
बटाला	11 57	13 35	15 04
बंगा (पं.)	11 56	13 35	15 05
बलाचौर (पं.)	11 57	13 37	15 08
बरनाला	11 51	13 33	15 03
बिजनौर	11 58	13 38	15 12
बुलन्दशहर	11 53	13 39	15 12
बरेली	12 00	13 48	15 14
बारामूला (का.)	12 02	13 36	15 00
बनिहाल (का.)	12 01	13 35	15 01
बल्लभगढ़ (हरि.)	11 53	13 39	15 11
बीकानेर (राज.)	11 48	13 34	15 04
बागपत	11 59	13 44	15 17
बैजनाथ (हि.प्र.)	12 00	13 40	15 08
बिलासपुर (हि.प्र.)	12 00	13 41	15 09
बैंगलौर	11 17	13 24	15 11
भठिण्डा (पं.)	11 52	13 34	15 03
भद्रवाह	12 00	13 35	15 01
भिवानी	11 51	13 34	15 09
भागलपुर (बि.)	12 09	13 57	15 28
भोपाल	11 41	13 36	15 14
भुवनेश्वर	11 57	13 51	15 26
मोगा	11 53	13 34	15 04
*मदुरई	11 12	13 20	15 09
मोहाली	11 58	13 38	15 08
मैसूर	11 12	13 20	15 09
मेरठ	11 54	13 39	15 12
मुर्शीदाबाद(बं.)	12 10	13 59	15 29
मंगलौर	11 07	13 15	15 06
मुक्तसर (पं.)	11 51	13 32	15 02
मन्दसौर (म.प्र.)	11 34	13 37	15 08
मण्डी (हि.प्र.)	12 00	11 40	15 07
मनीकरण	12 01	11 41	15 09

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मिं.	परम ग्रास घं. मिं.	ग्रहण समाप्त घं. मिं.
मुम्बई	11 17	13 18	15 05
मुज़फ्फरपुर	12 06	13 55	15 26
मिदनापुर	12 05	13 56	15 28
यमुनानगर	11 54	13 38	15 10
रामपुरबुशैहर	11 59	13 40	15 09
रोहड़ू (हि.प्र.)	11 59	13 40	15 07
रोपड़	11 58	13 36	15 08
रोहतक	11 53	13 39	15 10
रिवाड़ी	11 51	13 37	15 10
रामबन (का.)	12 00	13 35	15 01
रियासी (का.)	12 00	13 35	15 01
रामनगर (का.)	12 00	13 35	15 01
रतलाम (म.प्र.)	11 31	13 34	15 08
राँची (झार.)	12 01	13 53	15 26
राजौरी (का.)	12 01	13 36	15 00
रायपुर (छत्ती.)	11 47	13 44	15 21
राजकोट (गु.)	11 20	13 16	14 59
रूड़की	11 57	13 42	15 12
राजामुन्दरी(आध्रां)	11 38	13 39	15 20
लखनऊ	11 58	13 46	15 19
लुधियाना	11 55	13 36	15 05
लाडवा	11 53	13 38	15 08
शिमला	11 59	13 40	15 09
शाहाबाद (ह.)	11 55	13 37	15 09
शिलांग (मेघा.)	12 20	14 05	15 32
शाहजहांपुर	12 00	13 48	15 15
श्रीनगर	12 02	13 36	15 00
संगरूर	11 54	13 35	15 06
सरहिन्द	11 56	13 37	15 06
सपाटू (हि.प्र.)	11 59	13 38	15 09
सहारनपुर	11 58	13 39	15 11
सरकाघाट	12 00	13 41	15 08

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मिं.	परम ग्रास घं. मिं.	ग्रहण समाप्त घं. मिं.
सुन्दरनगर	12 00	13 41	15 07
सरींगेरी (कर्ना.)	11 10	13 18	15 08
सुनाम (पं.)	11 53	13 34	15 05
सम्बलपुर	11 54	13 49	15 24
सोलन	11 59	13 40	15 09
सिलीगुड़ी	12 14	14 00	15 29
सिरसा	11 50	13 31	15 06
सिलचर(आसाम)	12 21	14 06	15 33
सोनीपत	11 53	13 39	15 11
सिलवासा(गुज.)	11 21	13 20	15 05
हमीरपुर	11 59	13 40	15 08
हरिद्वार	11 58	13 42	15 12
हज़ारीबाग	12 02	13 53	15 26
हनुमानगढ़	11 50	13 30	15 02
होशियारपुर	11 57	13 37	15 05
हैदराबाद	11 29	13 32	15 15
हाँसी	11 51	13 37	15 09
हाटकोटी(हि.प्र.)	11 59	13 40	15 09
हिसार	11 51	13 36	15 08
हुबली (कर्ना.)	11 41	13 20	15 08

भारत के मुख्य शहर जहाँ कंकणकृति दिखाई देगी

नगर	कंकण प्रारम्भ घं. मिं.	कंकण समाप्त घं. मिं.	कंकण की अवधि घं. मिं.
कन्याकुमारी	13 10	13 20	9 58
मदुरूई	13 19	13 22	2 58
तिरूवन्तपुरम	13 11	13 18	7 15
तिरूनेलवेली	13 12	13 21	8 46

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं पाया विचार सं. २०६६ (सन् 2009-10 ई०)

गतवर्ष से शनि सिंह राशि में संचार कर रहा है। आगामी वर्ष **8 सितम्बर, 2009 ई.** तक शनि इसी राशि में ही संचार करेगा। नौ (9) सितम्बर की रात्रि को भरणी नक्षत्र एवं मेष के चन्द्रमाकालीन **बुधवार को रात के 11 बजकर 55 मिनट** पर (अतिचार गतिवश) **कन्या** (Virgo) **राशि में प्रवेश** करेगा। सम्वत् के अन्त (15 मार्च सन् 2010 ई०) तक कन्या राशि में संचरित रहेगा।

वर्षारम्भ से 16 मई, 2009 ई० तक शनि वक्री अवस्था में रहेगा। 17 मई से शनि **मार्गी** होकर 12 जन. 2010 ई. तक मार्गी रहेगा। ता. 13 जन. 2010 ई. से पुन: वक्री होगा। **ध्यान रहे शनि, भौम आदि क्रूर ग्रह जब गोचरवश वक्री होकर संचार** करते हैं, तो प्रजा में अशान्ति, विग्रह, आवश्यक वस्तुओं की कमी, मंहगाई, व्याधिभय, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), भूकम्प, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, हिंसक घटनाएं आदि घटित होती हैं।

शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक को परिवारिक एवं आर्थिक उलझनें, रोग-कष्ट एवं निकट बन्धुओं से विरोध, आय के साधनों में अड़चनें, आकस्मिक खर्च आदि अशुभ फलघटित होते हैं।

गतवर्ष की पंचाँग दिवाकर में सिंह राशि में शनि के संचार का फल विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं। यहाँ संक्षेप में पुन: दिया जा रहा है—

सिंह राशिकालीन शनि की साढ़ेसति एवं ढैय्या विचार-सं. २०६६
(वर्षारम्भ से 8 सितम्बर, 2009 ई. तक)

मेष—मेष राशि को शनि पंचमस्थ होगा, इसका पाया 'लोह' होने से विघ्न बाधाओं के बाद सफलता, परिवारिक उलझनें व आय वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी बहुत बढ़ेंगे।

वृष—शनि की ढैय्या का प्रभाव 8 सितम्बर तक रहेगा, जिससे गुप्त चिन्ताएँ, अपव्यय एवं गृह सम्बन्धी परेशानियाँ होंगी। परन्तु पाया ताम्र होने से कुछ बिगड़े काम बनेंगे तथा लाभ के अवसर भी प्राप्त होंगे।

मिथुन—तृतीयस्थ शनि शुभ होगा। लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। 22 मार्च से 5 अप्रैल के मध्य आय कम खर्च अधिक रहें। चाँदी का पाया होने से उत्तरार्ध भाग में शुभफल प्राप्त होंगे।

कर्क—शनि का पाया सुवर्ण होने से आय कम व खर्चों में अधिकता रहे। व्यवसाय में अड़चनें पड़े। गुरु की दृष्टि होने से धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी।

सिंह—केन्द्रस्थ शनि होने से साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा। आमदन में विघ्न बाधाएँ व खर्च बढ़ेंगे। पाया लोहा है। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। **1 मई के बाद** में पुरुषार्थ से लाभ होगा। धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी।

कन्या—आय कम व खर्च अधिक होंगे। बनते कामों में अड़चनें रहें। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें तथा पाया सुवर्ण होने के कारण मानसिक तनाव हो। साढ़ेसाती का प्रभाव 9 सितम्बर के बाद बढ़ेगा।

तुला—एकादशस्थ शनि तथा पाया ताम्र होने से वर्ष के पूर्वार्द्ध में धन लाभ एवं उच्च प्रतिष्ठित लोगों के सम्पर्क-सूत्र बनेंगे। किसी मंगल कार्य का आयोजन होगा।

बृश्चिक—शनि का संचार दशमस्थ होने से व्यवसाय में अड़चनें हो। खर्च भी बढ़ें, परन्तु शनि का पाया रजत होने से विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य साधन बनेंगे।

धनु—नवम स्थान में शनि होने से लाभ व उन्नति में विघ्न पड़ें, शरीर कष्ट एवं खर्च अधिक हों। शनि का पाया लौह होने से आर्थिक परेशानियों के कारण तनाव हो।

मकर—अष्टमस्थ शनि होने से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। शरीर कष्ट, परिवारिक उलझनें एवं खर्चों की अधिकता रहे। पाया ताम्र एवं गुरू के कारण आकस्मिक धन लाभ के अवसर भी प्राप्त होंगे।

कुम्भ—शनि सप्तमस्थ व पाया लोहा होने से शरीर कष्ट, धन लाभ अल्प परन्तु खर्चों की अधिकता रहेगी। 1 मई से 29 जुला. के मध्य गुरू का संचार होने से शुभ फल भी घटित होंगे। गृह में किसी मंगल कार्य का प्रसंग होगा।

मीन—शनि षष्ठ स्थानगत होने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन के साधन बनते रहेंगे। परन्तु राशि स्वामी गुरु नीचस्थ होने से बहुत अधिक संघर्ष करने पर भी पर्याप्त धन लाभ न हो पाए, खर्च भी बहुत अधिक होंगे।

9 सितम्बर, बुधवार को शनि भरणी नक्षत्र एवं मेष राशि के चन्द्रमाकालीन, रात्रि 11 बजकर 55 मिनट से कन्या राशि में प्रवेश होगा, जिससे विभिन्न राशियों पर इसका प्रभाव इस प्रकार से होगा—

कन्या राशिकालीन शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या फल-२०६६
(9 सितम्बर, 2009 ई० से 15 मार्च, 2010 ई० तक)

● **साढ़ेसाती—सिंह, कन्या व तुला राशि के जातक शनि की साढ़ेसाती** के अशुभ प्रभाव में आएँगे.

● **ढैय्या—मिथुन एवं कुम्भ राशि वालों को शनि की ढैय्या** का अशुभ प्रभाव शुरु होगा।

विभिन्न राशियों पर कन्या राशिस्थ शनि का फल सं० २०६६

मेष—शनि षष्ठ स्थान में संचार होने से तथा पाया सुवर्ण होने के कठिन परिस्थितियों का सामना रहेगा। परन्तु पूर्वार्द्ध में मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

वृष—शनि पंचमस्थ होने से कार्य-व्यवसाय या उच्च विद्या में विघ्न-बाधाएँ हों। पाया लोहा होने से परिवारिक परेशानियों एवं आर्थिक उलझनों का भी सामना रहे।

मिथुन—शनि चतुर्थ होने से शनि की ढैय्या प्रारम्भ होगी। आवास एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियां बढ़ें। ता. 9 सितं. से पाया भी सुवर्ण होने से आकस्मिक व्यय व तनाव बढ़ेंगे।

कर्क—शनि साढ़साती का अशुभ प्रभाव समाप्त होगा। पाया भी ताम्र होगा। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। 5 अक्तू० से मंगल का संचार होने से खर्च, तनाव व उत्तेजना बढ़ेगी।

● **सिंह**—शनि दूसरे स्थान पर राशि बदलेगा। साढ़ेसाती के कारण धन सम्बन्धी उलझनें एवं तनाव बढ़ेगे। परन्तु इस राशि को शनि का पाया रजत होने के कारण बीच-बीच धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

● **कन्या**—इस राशि में शनि प्रवेश होने से शनि साढ़ेसाती का प्रभाव बढ़ेगा। शनि का पाया भी लोहा होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। ऋण लेने की सम्भावना बनेगी।

● **तुला**—राशि को शनि साढ़ेसाती प्रारम्भ होगी, घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। परन्तु इस राशि को शनि का पाया 'ताम्र' होने से आकस्मिक लाभ व कुछ बिगड़े कामों में सुधार भी होगा।

वृश्चिक—इस राशि पर एकादशस्थ शनि की तीसरी शत्रु दृष्टि होगी। परिवारिक चिन्ताएं बढ़ेंगी। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से आर्थिक परेशानियां बढ़ेंगी।

धनु—दशमस्थ शनि होने से व्यवसाय एवं गृह सम्बन्धी अत्यन्त कठिन आर्थिक परिस्थितियों का सामना होगा। परन्तु पाया चांदी होने से विविध अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मकर—राशि को शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति व धन लाभ के मार्ग में अड़चनें पैदा हों। निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मतान्तर हों। शनि का **पाया लोहा** होने से आय के साधन सीमित, परन्तु खर्चों में वृद्धि रहे, मानसिक तनाब भी बढ़े।

कुम्भ राशि—शनि अष्टमस्थ होने से शनि की ढैय्या प्रारम्भ होगी। व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। खर्च भी अधिक होंगे। शनि का पाया ताम्र होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे तथा कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

मीन—शनि सप्तमस्थ होकर मीन राशि पर दृष्टि करेगा। जिससे आय सीमित तथा खर्च अधिक रहेंगे। तनाव व गुप्त चिन्ताएं होंगी। शनि का पाया चांदी होने से धन लाभ के अवसर भी प्राप्त होंगे।

शनि–साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी उपाय

शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—*''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः ॥''* जप संख्या 23 हज़ार

शनि का वैदिक मन्त्र—

''ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्त्रवन्तु नः ॥ शं नमः ॥''

सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र—

''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥'' (धर्मसिन्धु)

गुरू का शुभाशुभ गोचर फल संवत् २०६६
(सन् 2009-10 ई०)

वर्षारम्भ में गुरू मकर राशि में संचार कर रहा है। ता० 30 अप्रैल तक मकर में ही संचार करेगा। ता० 1 मई से गुरू अतिचार गति से कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। 15 जून, 2009 ई० को वक्री होगा। वक्री गुरू **ता० 30 जुलाई से पुनः मकर राशि** में संचार करेंगे। ता० 13 अक्तूबर से गुरू मार्गी होंगे तथा 19 दिसम्बर की रात्रि 12 बजकर, 13 मिनट पर पुनः कुम्भ राशि में संचार करेंगे।

ध्यान रहे, **1 मई, शुक्रवार को गुरू जब अतिचार गति से** आगामी राशि (कुम्भ) में प्रवेश करेगा उस समय क्रूरग्रह शनि वक्र-गति से सिंह राशि में संचार कर रहा होगा। गोचरवश इस ग्रह स्थिति का फल अशुभ माना गया है—

यदा क्रूरग्रहो वक्री ह्यातिचारी तु सौम्यकः।
पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्॥

अर्थात् जब कोई क्रूर ग्रह वक्री हो और सौम्य ग्रह अतिचार गति में आ जाए, तो समाज में सत्ता परिवर्तन, विग्रह, व्याधि, दुर्भिक्ष, हिंसक घटनाएँ, जरूरी वस्तुओं में कमी, मंहगाई अशुभ फल घटित होते हैं।

मकर राशि में संचरणकाल शुभाशुभ गोचरफल यद्यपि गतवर्षीय पंचांग में लिख चुके हैं। पाठकों की सुविधा के लिए पुनः लिख रहे हैं—

मकर राशिस्त गुरू का शुभाशुभ फल

(वर्षारम्भ से 30 अप्रैल तक एवं 30 जुलाई से 19 दिसम्बर तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय कम व खर्च अधिक, परिवार में मन मुटाव तनाव व परेशानी हो।	योजना में कुछ सफलता भूमि, वाहनादि सुख मिलें प्रिय-बन्धु सुख	आय कम खर्च अधिक ऋण-रोग एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। आकस्मिक खर्च बढ़े।	विघ्नों के बाद कार्य सिद्धि धन-लाभ भाग्य में उन्नति के योग हैं।	आय कम खर्च अधिक हों। रोग व शत्रु भय, बन्धु से विरोध रहे।	भूमि-वाहनादि सुख हों धन लाभ धर्म-कर्म में रुचि गृह में शुभ कार्य पर खर्च हो।	कार्यों में विघ्न-बाधाएं व खर्च अधिक स्वास्थ्य हानि व घरेलु उलझनें।	धन लाभ, किसी प्रिय-बन्धु का सुख, पदोन्नति, विदेश यात्रा के चांस हों।	अचानक धन लाभ के चांस हों भाग्य वृद्धि हो किसी प्रिय व श्रेष्ठ जन से सम्पर्क।	संघर्ष से निर्वाह योग्य धन-लाभ, खर्चों की अधिकता परिवार में वैमनस्य हो।	धन-लाभ, अल्प धर्म-कर्म में रूझान शुभ कार्यों पर खर्च अधिक।	धन-सम्पदा सवारी आदि का सुख हों, भाग्य उन्नति प्रिय-मिलन व्यय अधिक।

कुम्भ राशिस्थ संचरण काल में गुरू का शुभाशुभ गोचरफल

(1 मई से 29 जुला. ई० फिर 19 दिसं. रात्रि से संवत् के अंत तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन. सम्पदा व सवारी आदि का सुख हो, भाग्य में उन्नति प्रिय मिलन, व्यय अधिक	आय कम व खर्च अधिक रहे, परिवार में कलह-क्लेश एवं उलझनें मिलाप	बिगड़े कामों में कुछ सुधार भूमि, वाहनादि का सुख मिले। किसी प्रिय बन्धु से मिलाप।	आय कम व खर्च अधिक हों, ऋण व रोग का भय घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।	धन लाभ व भाग्य में विघ्नों के बाद सिद्धि हो यात्रा के विचार बनेंगे।	आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। रोग व शत्रु भय निजबन्धु से विरोध रहे।	भूमि-वाहनादि सुख हों धन-लाभ, धर्म में रुचि, गृह में शुभ कार्य पर खर्च हों।	बनते कामों में बाधाएँ, खर्च अधिक, शरीर-कष्ट गृह कलह-क्लेश हो, द्वितीय भाग शुभ रहेगा।	प्रियबन्धु से मेल, धन लाभ, अच्छा पदोन्नति विदेश यात्रा के योग हैं।	अचानक धन लाभ के अवसर मिलें भाग्य में वृद्धि किसी श्रेष्ठजन से मेल विदेश यात्रा के योग।	संघर्ष के बा-वजूद निर्वाह योग्य धन लाभ पर, खर्चों में अधिकता परिवार में क्लेश हो।	धन लाभ अल्प रहे धर्म-कार्यों में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च विशेष अधिक रहे।

गुरु का कारकत्व—गुरु पति सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है।

हमारे कार्यालय से छपी ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग I में **गोचर विचार** पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति—अथवा गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मन्त्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मन्त्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

***गुरु गायत्री मन्त्र*—**''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्''

***गुरु बीज मन्त्र*—**''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः॥''

राहु का शुभाशुभ गोचर फल-संवत् २०६६

वर्षारम्भ से 16 नवम्बर, 2009 तक राहु **मकर राशि** में ही संचार करेगा। ता० **17 नवम्बर** से राहु **दुपैहर 11 बजकर 41 मिनट पर धनु राशि** में संचार करेगा। वर्ष के शुरू से 30 अप्रैल, 2009 तक तथा फिर 30 जुलाई से 16 नवम्बर तक राहु का गुरु के साथ योग सम्बन्ध होने से गतवर्ष की अपेक्षा कुछ शुभ फल प्राप्त होंगे।

मकर राशिस्थ राहु का गोचर फल

(वर्षारम्भ से 16 नवम्बर, 2009 ई० तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय अल्प किन्तु खर्च बहुत रहें। कार्य-व्यवसाय में उल-झनें व तनाव बढ़े।	व्यव-साय में संघर्ष एवं अड़चनें रहें, बड़ी कठिनत से निर्वाह योग्य आय बनें।	धन लाभ व उन्नति के चांस प्राप्त होंगे शुभ कार्यों पर खर्च होंगे। शुभ समाचार मिले।	बनते कामों में अड़चनें, लाभ कम तथा खर्च अधिक रहें, गुप्त चिन्ता हो।	आर्थिक उलझनें बढ़ें, विशेष संघर्ष के बाद भी बाद भी आय कम व खर्च अधिक रहें।	किसी निकट बन्धु से मन-मुटाव आय में कमी व खर्च बढ़ें परिवारिक उलझनें बढ़ें।	कार्य-व्यवसाय में विघ्नों के बाद सफलता मिले आय के साथ-साथ खर्च भी बहुत हों।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि शुभ यात्रा धन व उन्नति के चांस बनेंगे। परन्तु खर्च भी बढ़ेंगे।	घरेलू कलह-क्लेश हो, वृथा खर्च बढ़े, शरीर कष्ट व तनाव बढ़े। रोग भय।	किसी बन्धु से बिगाड़ हो, रोग व शत्रु भय हो, खर्चों में वृद्धि हो, लंबी यात्रा के योग हैं।	बनते कामों में विघ्न वृथा दौड़-धूप व खर्च अधिक रहे। तनाव बढ़े।	बिगड़े कामों में कुछ सुधार, भूमि-वाहन आदि सुख व धन लाभ हो। खर्च भी बढ़ें।

धनु राशिस्थ राहु का गोचर फल (संक्षेप में)

(17 नवम्बर से 15 मार्च 2010 ई० तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
बिगड़े कामों में सुधार हो, वाहन आदि के सुख हों, खर्च बढ़ेंगे।	कार्य व्यव-साय में विघ्नों के बाव जूद निर्वाह योग्य आय साधन बनें।	बनते, कामों में विघ्न लाभ कम व खर्च अधिक रहेंगे। किसी प्रिय बंधु से तकरार हो।	विशेष परिश्रम के बाद भी आय कम व खर्च अधिक रहें।	भाग्य-उन्नति में विघ्न बाधाएँ हों, आर्थिक उलझनों के कारण गुप्त चिन्ताएँ।	निकट बन्धु से तनाव बढ़ें। आय में कमी व खर्च बढ़ेंगे। निकट बंधु से तनाव हो।	धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त विदेश यात्रा के चाँस बनेंगे। कोई खुश-खबरी मिले।	कार्य व्यवसाय में विघ्नों के बाद सफलता मिले-खर्च भी बढ़ेंगे।	किसी प्रिय बन्धु से तकरार लाभ कम तथा खर्च अधिक होंगे।	अड़चनें रहें, पर गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहें।	धन-लाभ व उन्नति के चाँस, विदेश यात्रा के योग, खर्च भी बढ़ेंगे।	बनते कामों में विघ्न रहें वृथा दौड़-धूप व खर्च हो सुख में कमी हो।

केतु का कर्कराशिस्थ गोचर फल संवत् २०६६

(वर्षारम्भ से 16 नवम्बर 2009 ई. तक

वर्षारम्भ से 16 नवम्बर, 2009 तक केतु कर्क राशि में ही संचार करेगा। **17 नवम्बर से केतु दुपैहर 11 बजकर 41 मिनट पर मिथुन राशि में संचार करेगा।**

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आर्थिक संकट के कारण घरेलू झंझट व अशान्ति रहे।	बिगड़े कामों में सुधार परिश्रम से [illegible] लाभ अच्छा वाहन सुख मिले।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम व खर्च अधिक रहे। तनाव हो।	शरीर कष्ट व तनाव रहे, बनते कामों में विघ्न, खर्च ज्यादा हो।	रोग व शत्रु भय अपने परायों जैसा व्यवहार रखें। खर्च अधिक रहेंगे।	धन लाभ साधारण वाहन, भूमि आदि साधनों की प्राप्ति संघर्ष अधिक रहे।	लाभ अल्प व खर्च अधिक रहे। गृह में कोई मंगल कार्य हो। विदेश यात्रा योग बने।	भाग्य उन्नति में विघ्न, वृथा खर्च बढ़े, दुर्घटना से चोट आदि का भय।	धन-हानि, रोग व शत्रु भय विद्या में विघ्न परिवार सम्बन्धी चिन्ता खर्च अधिक रहें।	कुटुम्ब में किसी प्रियजन से वैम-नस्य, खर्च अधिक, किसी से धोखा मिले।	पराक्रम से धन लाभ हो बिगड़े कामों में सुधार, खुश-खबरी मिले।	घरेलू कलह-क्लेश मन अशान्त लाभ कम खर्च अधिक।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र—

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र—

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाश्य पुस्तक अनिष्ट ग्रह शान्ति और उपयोगी उपाय मँगवाकर पढ़ें। **—सम्पादक**

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योग-वि. संवत् २०६६ (सन् 2009-10)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों** में स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग** की उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो '**रवि योग**' अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं।

गुरुपुष्य योग—गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरू धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल में, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना प्रशस्त होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्तों में ही करने कल्याणकारी होंगे**। ध्यान रहे, 14 दिसं. से 8 फर. (2010) तथा 16 फर. से 21 मार्च तक गुरु अस्त रहेगा। पण्डित विवेक शर्मा, पंचाँगकर्त्ता।

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2009 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2009 ई.	घं. मिं.
27 मार्च	5 41	28 मार्च	सू. उ.
30 मार्च	25 53	31 मार्च	सू. उ.
1 अप्रै.	सू. उ.	1 अप्रै.	23 07
2 अप्रै.	21 46	3 अप्रै.	20 29
8 अप्रै.	15 56	9 अप्रै.	सू. उ.
11 अप्रै.	सू. उ.	11 अप्रै.	16 56
13 अप्रै.	सू. उ.	13 अप्रै.	20 20
18 अप्रै.	7 53	19 अप्रै.	सू. उ.
23 अप्रै.	14 43	25 अप्रै.	सू. उ.
27 अप्रै.	9 08	28 अप्रै.	सू. उ.
30 अप्रै.	सू. उ.	1 मई	सू. उ.
6 मई	सू. उ.	6 मई	22 51
15 मई	15 38	16 मई	18 34
19 मई	24 04	20 मई	सू. उ.
21 मई	सू. उ.	22 मई	22 36
25 मई	सू. उ.	26 मई	सू. उ.
28 मई	सू. उ.	29 मई	सू. उ.
1 जून	4 01	1 जून	सू. उ.
12 जून	सू. उ.	12 जून	25 34
16 जून	8 18	17 जून	सू. उ.
18 जून	सू. उ.	19 जून	8 32

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2009 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2009 ई.	घं. मिं.
21 जून	5 01	21 जून	सू. उ.
22 जून	सू. उ.	22 जून	23 45
25 जून	सू. उ.	22 जून	15 30
28 जून	10 30	29 जून	सू. उ.
3 जुला	14 25	4 जुला	सू. उ.
5 जुला	19 31	6 जुला	सू. उ.
10 जुला	सू. उ.	10 जुला	7 43
14 जुला	सू. उ.	14 जुला	16 25
16 जुला	सू. उ.	16 जुला	17 05
18 जुला	14 53	19 जुला	सू. उ.
20 जुला	सू. उ.	20 जुला	10 25
26 जुला	सू. उ.	27 जुला	सू. उ.
30 जुला	20 26	31 जुला	22 45
2 अग.	सू. उ.	3 अग.	4 31
9 अग.	20 44	10 अग.	सू. उ.
15 अग.	सू. उ.	15 अग.	21 35
23 अग.	सू. उ.	23 अग.	26 20
26 अग.	27 38	28 अग.	5 35
30 अग.	सू. उ.	30 अग.	11 05
6 सितं.	सू. उ.	6 सितं.	27 55
8 सितं.	सू. उ.	9 सितं.	5 10

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2009 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2009 ई.	घं. मिं.
14 सितं.	23 44	15 सितं.	सू. उ.
20 सितं.	सू. उ.	20 सितं.	12 18
23 सितं.	12 10	24 सितं.	13 39
27 सितं.	21 37	28 सितं.	सू. उ.
28 सितं.	24 44	29 सितं.	सू. उ.
4 अक्तू	सू. उ.	4 अक्तू	10 45
6 अक्तू	सू. उ.	6 अक्तू	11 13
7 अक्तू	10 52	8 अक्तू	सू. उ.
12 अक्तू	6 01	13 अक्तू	4 37
13 अक्तू	सू. उ.	13 अक्तू	27 08
25 अक्तू	सू. उ.	26 अक्तू	सू. उ.
26 अक्तू	8 46	27 अक्तू	सू. उ.
1 नवं.	19 32	2 नवं.	सू. उ.
3 नवं.	18 22	5 नवं.	सू. उ.
8 नवं.	11 22	9 नवं.	9 59
15 नवं.	5 06	15 नवं.	सू. उ.
17 नवं.	5 53	17 नवं.	सू. उ.
22 नवं.	सू. उ.	22 नवं.	16 49
23 नवं.	सू. उ.	23 नवं.	19 58
28 नवं.	4 49	28 नवं.	सू. उ.
29 नवं.	सू. उ.	30 नवं.	5 02
1 दिसं.	सू. उ.	1 दिसं.	26 36

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2009-10	घं. मिं.	समाप्ति काल 2009-10	घं. मिं.
2 दिसं.	सू. उ.	3 दिसं.	सू. उ.
4 दिसं.	20 24	5 दिसं.	सू. उ.
6 दिसं.	सू. उ.	6 दिसं.	16 14
12 दिसं.	11 15	13 दिसं.	सू. उ.
14 दिसं.	12 52	15 दिसं.	सू. उ.
19 दिसं.	24 16	20 दिसं.	सू. उ.
25 दिसं.	13 47	26 दिसं.	सू. उ.
27 दिसं.	सू. उ.	27 दिसं.	15 12
29 दिसं.	सू. उ.	29 दिसं.	13 29
30 दिसं.	सू. उ.	31 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2010 ई.)			
1 जन.	6 43	1 जन.	27 56
6 जन.	17 22	7 जन.	सू. उ.
9 जन.	सू. उ.	9 जन.	17 21
11 जन.	सू. उ.	11 जन.	20 18
16 जन.	6 54	17 जन.	सू. उ.
21 जन.	21 06	23 जन.	सू. उ.
25 जन.	23 40	26 जन.	सू. उ.
27 जन.	सू. उ.	27 जन.	15 27
28 जन.	18 14	29 जन.	20 37
3 फर.	सू. उ.	3 फर.	24 21

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2010 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2010 ई.	घं. मिं.
12 फर.	13 03	13 फर.	16 11
16 फर.	24 43	17 फर.	सू. उ.
18 फर.	सू. उ.	20 फर.	6 21
22 फर.	7 30	23 फर.	सू. उ.
25 फर.	सू. उ.	26 फर.	सू. उ.
3 मार्च	सू. उ.	3 मार्च	10 21
12 मार्च	सू. उ.	12 मार्च	22 33

अमृत सिद्धि योग

27 मार्च	सू. उ.	28 मार्च	5 11
24 अप्रै.	सू. उ.	24 अप्रै.	13 58
30 अप्रै.	25 54	1 मई	सू. उ.
25 मई	16 04	26 मई	सू. उ.
28 मई	8 50	29 मई	सू. उ.
21 जून	5 01	21 जून	सू. उ.
22 जून	सू. उ.	22 जून	23 45
25 जून	सू. उ.	25 जून	15 30
18 जुला	14 53	19 जुला	सू. उ.
20 जुला	सू. उ.	20 जुला	10 25
26 जुला	17 50	27 जुला	सू. उ.
11 अग.	23 15	12 अग.	सू. उ.

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2009 ई.	घं.	मिं.	2009 ई.	घं.	मिं.
15 अग.	सू.	उ.	15 अग.	21	35
23 अग.	सू.	उ.	23 अग.	26	20
26 अग.	27	38	27 अग.	सू.	उ.
8 सितं.	सू.	उ.	9 सितं.	5	10
20 सितं.	सू.	उ.	20 सितं.	12	18
23 सितं.	12	10	24 सितं.	सू.	उ.
6 अक्तू.	सू.	उ.	6 अक्तू.	11	13
21 अक्तू	सू.	उ.	21 अक्तू	22	29
28 नवं.	4	49	28 नवं.	सू.	उ.
25 दिसं.	13	47	26 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2010 ई.)					
22 जन.	सू.	उ.	22 जन.	22	48
25 फर.	26	20	26 फर.	सू.	उ.

रवि योग (2009-10 ई.)

29 मार्च	4	19	29 मार्च	27	11
30 मार्च	25	53	31 मार्च	11	22
31 मार्च	24	30	1 अप्रै.	23	07
3 अप्रै.	20	29	5 अप्रै.	18	10
7 अप्रै.	16	26	8 अप्रै.	15	56
15 अप्रै.	25	47	17 अप्रै.	4	52
27 अप्रै.	9	08	27 अप्रै.	16	33
28 अप्रै.	7	10	29 अप्रै.	5	14
29 अप्रै.	27	27	30 अप्रै.	25	54
2 मई	23	38	4 मई	22	36
6 मई	22	51	7 मई	23	32
15 मई	15	38	16 मई	18	34
27 मई	11	04	28 मई	8	50
29 मई	6	57	30 मई	5	30
1 जून	4	01	3 जून	4	31
5 जून	6	52	6 जून	8	40
14 जून	4	21	15 जून	6	39
25 जून	15	30	26 जून	13	18
27 जून	11	36	28 जून	10	30
30 जून	10	13	2 जुला	12	29
4 जुला	16	48	5 जुला	19	31
5 जुला	27	24	6 जुला	22	28

रवि योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2009 ई.	घं.	मिं.	2009 ई.	घं.	मिं.
13 जुला	15	01	14 जुला	16	25
24 जुला	20	51	25 जुला	19	02
26 जुला	17	50	27 जुला	17	22
29 जुला	18	42	31 जुला	22	45
4 अग.	7	39	5 अग.	10	45
11 अग.	23	15	12 अग.	23	42
22 अग.	27	26	23 अग.	26	20
24 अग.	25	58	25 अग.	26	24
28 अग.	5	35	30 अग.	11	05
2 सितं.	20	13	3 सितं.	22	47
10 सितं.	5	11	11 सितं.	4	49
21 सितं.	11	32	22 सितं.	11	28
23 सितं.	12	10	24 सितं.	13	39
26 सितं.	18	34	29 सितं.	27	40
2 अक्तू.	8	18	3 अक्तू.	9	48
9 अक्तू.	9	26	10 अक्तू	8	26
10 अक्तू	17	48	11 अक्तू.	7	17
20 अक्तू	21	21	21 अक्तू	22	29
22 अक्तू	24	19	23 अक्तू	26	46
24 अक्तू	4	14	25 अक्तू	5	39
27 अक्तू	11	50	29 अक्तू	16	49
31 अक्तू	19	18	1 नवं.	19	32
8 नवं.	11	22	9 नवं.	9	59
19 नवं.	8	45	19 नवं.	18	29

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2009-10	घं.	मिं.	2009-10	घं.	मिं.
20 नवं.	11	01	20 नवं.	13	46
22 नवं.	16	49	23 नवं.	19	58
25 नवं.	25	34	28 नवं.	4	49
30 नवं.	5	02	30 नवं.	28	05
7 दिसं.	14	29	8 दिसं.	13	03
19 दिसं.	24	16	20 दिसं.	27	25
22 दिसं.	6	34	23 दिसं.	9	28
25 दिसं.	13	47	27 दिसं.	15	12
30 दिसं.	11	39	31 दिसं.	9	20
(सन् 2010 ई.)					
5 जन.	18	36	6 जन.	17	22
18 जन.	13	09	19 जन.	16	07
20 जन.	18	49	21 जन.	21	06
23 जन.	23	51	24 जन.	8	21
24 जन.	24	08	26 जन.	22	28
28 जन.	18	14	29 जन.	15	27
3 फर.	24	21	4 फर.	23	37
16 फर.	24	43	17 फर.	27	01
19 फर.	4	55	19 फर.	16	01
20 फर.	6	21	21 फर.	7	14
23 फर.	7	08	25 फर.	4	29
26 फर.	23	45	27 फर.	20	54
6 मार्च	8	11	7 मार्च	9	09

≈ज्वालामुखी योग≈

ज्वालामुखी योग अनिष्टकारी योगों में से एक माना गया है। इसमें आरम्भ किए कार्य में बार–बार विघ्न पड़ते हैं। इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित लोकोक्ति का प्रचलन है–जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गांव, नारी पहने चूड़ियाँ, पुरुष विहीनी होय। बोवे तो काटे नहीं, कुएँ उपजे न नीर॥

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल			प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
3 फर.	15	47	3 फर.	15	55	13 अक्तू.	4	37	13 अक्तू.	21	07
1 मार्च	22	00	2 मार्च	5	24	16 दिसं.	17	32	17 दिसं.	18	34
4 अप्रै.	19	16	5 अप्रै.	3	08	(सन् 2010 ई.)					
13 अग.	23	34	14 अग.	11	45	21 फर.	18	27	22 फर.	7	30
9 सितं.	5	10	9 सितं.	22	55	22 फर.	17	48	23 फर.	7	08

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2009-10 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे–ज़मीन–जायदाद, हीरे–जवाहरात, स्वर्ण–चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय–भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। तो त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2009-10	घं.	मिं.	2009-10	घं.	मिं.
17 जन.	11	46	17 जन.	19	50
27 जन.	15	22	28 जन.	सू.	उ.
23 मार्च	2	02	23 मार्च	सू.	उ.
16 मई	18	34	16 मई	23	57
26 मई	सू.	उ.	26 मई	11	03
19 जुला	12	52	19 जुला	18	51
28 जुला	सू.	उ.	28 जुला	15	27
20 सितं.	12	18	20 सितं.	19	58
10 अक्तू	सू.	उ.	10 अक्तू	8	26
24 नवं.	सू.	उ.	24 नवं.	13	56
17 जन.	10	02	17 जन.	18	05
26 जन.	24	49	27 जन.	सू.	उ.

(रवि पुष्य योग)

11 जन.	18	55	12 जन.	सू.	उ.
8 फर.	सू.	उ.	8 फर.	27	28
8 मार्च	सू.	उ.	8 मार्च	12	41
12 अक्तू	6	01	12 अक्तू	सू.	उ.
8 नवं.	11	22	9 नवं.	सू.	उ.
6 दिसं.	सू.	उ.	6 दिसं.	16	14

(गुरु पुष्य योग)

30 अप्रै.	25	54	1 मई	सू.	उ.
28 मई	8	50	29 मई	सू.	उ.
25 जून	सू.	उ.	25 जून	15	30
25 फर.	26	20	26 फर.	सू.	उ.

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2009-10	घं.	मिं.	2009-10	घं.	मिं.
3 जन.	सू.	उ.	3 जन.	10	20
15 फर.	22	59	16 फर.	सू.	उ.
21 फर.	12	50	21 फर.	26	19
3 मार्च	सू.	उ.	3 मार्च	20	21
11 अप्रै.	16	56	11 अप्रै.	20	27
21 अप्रै.	14	07	22 अप्रै.	सू.	उ.
26 अप्रै.	11	02	27 अप्रै.	सू.	उ.
5 मई	9	37	5 मई	22	34
20 जून	7	05	20 जून	11	02
23 जून	21	22	24 जून	सू.	उ.
28 जून	10	30	29 जून	सू.	उ.
22 अग.	सू.	उ.	22 अग.	9	22
26 अग.	3	59	26 अग.	सू.	उ.
1 सितं.	सू.	उ.	1 सितं.	15	31
5 सितं.	22	42	5 सितं.	26	39
20 अक्तू	सू.	उ.	20 अक्तू	21	21
25 अक्तू	सू.	उ.	25 अक्तू	16	52
3 नवं.	23	08	4 नवं.	सू.	उ.
13 दिसं.	11	50	13 दिसं.	14	36
29 दिसं.	सू.	उ.	29 दिसं.	9	22
(सन् 2010 ई.)					
6 जन.	6	20	6 जन.	सू.	उ.
16 फर.	सू.	उ.	16 फर.	13	09
21 फर.	7	14	21 फर.	18	27
2 मार्च	सू.	उ.	2 मार्च	12	29

द्वादश संक्रान्तियों का प्रवेश फल—सन् 2009-10 ई.

सूर्य जिस राशि पर संचार कर रहा हो, उसे छोड़कर जब वह दूसरी राशि में प्रवेश करे, उस समय का नाम **संक्रान्ति** है। **संक्रान्ति** के पुण्यकाल में स्नान, दान, जप-पाठ, श्राद्ध, हवनादि शुभ कृत्य करने से विशेष पुण्यों की प्राप्ति होती है तथा मनुष्य धन-धान्यादि एवं पारिवारिक सुखों से सम्पन्न रहता है।

माघ संक्रान्ति—13 जन. 2009 ई., मंगलवार की अर्द्धरात्री के बाद 30 घं. 27 मिनट पर, अर्थात् 14 जन. बुधवार की प्रातः 6/27 (घं.मिं.) पर मकर संक्रान्ति का प्रवेश होगा। यह संक्रान्ति 30 मुहूर्ति है। स्नानदानादि का पुण्यकाल 14 जन. सूर्योदय से दुपैहर तक रहेगा। इस मास में गंगाजल आदि पवित्र तीर्थ-जलों से स्नान उपरान्त भगवान श्री विष्णु सहित पंचदेव पूजन, पुरुषसूक्त, सूर्याष्टक स्तोत्र, अर्घ्य, देव स्तुति, पितृ तर्पण तथा तिल सहित सामग्री द्वारा हवन करके ब्राह्मणों को खीर सहित भोजन, गर्म वस्त्र, फलादि एवं तिलों का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। यह संक्रान्ति मेष, वृष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक एवं कुम्भ राशि के वालों के लिए लाभदायक होगी।

माघ मास में श्रीगणेश संकट चौथ, षटतिला एकादशी, सोमवती मौनी अमा. (26 जन.), बसन्त पंचमी (31 जन.), रथ सप्तमी (2 फर.) आदि मुख्य पर्व होंगे।

फाल्गुन संक्रान्ति—12 फर. 2009 ई., गुरुवार, 19 घं. 24 मिं. पर प्रवेश होगा। यह संक्रान्ति 45 मुहूर्ति है। इसका पुण्यकाल मध्याह्न (दुपै.) के बाद से प्रारम्भ होगा। इस मास में 23 फर० कोश्री महाशिवरात्रि का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेघ यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। गुरूवार की संक्रान्ति होने से धान्य, अनाजादि के मूल्यों में तेज़ी रहे। पृथ्वी में धर्मकर्म के आचरण अधिक होने से प्रजा में सुख साधन बढ़ेंगे। मेष, वृष, कन्या, तुला, धनु एवं मीन राशि वालों के लिए यह संक्रान्ति लाभदायक रहेगी। होलाष्टक (4 मार्च, फा. पूर्णिमा, होली 11 मार्च को होगी)।

चैत्र संक्रान्ति—14 मार्च 2009 ई. शनिवार, चैत्रकृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को 16 घं. 16 मि. पर प्रवेश करेगी। संक्रान्ति 15 मुहूर्ति है। इसका पुण्यकाल प्रातः 9/52 से प्रारम्भ होगा। इस मास में शीतलाष्टमी व्रत, पापमोचनी एकादशी व्रत और चैत्र शुक्ल पक्ष में श्री दुर्गा जी का विशेष (नवरात्रों में) पूजन करने का विधान है। चैत्र संक्रान्ति शनिवार को होने से सर्वप्रकार के अनाज तेज भाव होंगे।

वैशाख संक्रान्ति—यह संक्रान्ति 13 अप्रैल, सोमवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् रात्रि 12 बजकर 47 मिनट पर ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करेगी। इस संक्रान्ति के स्नान, दान आदि का विशेष पुण्यकाल 14 अप्रैल, मंगलवार को प्रातः 7 बजकर 11 मिनट तक होगा। वैशाख मास में जो व्यक्ति नित्य प्रति प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व शुद्ध जल में, धर्म स्थान पर या तीर्थस्थान पर अथवा घर में गंगाजल मिश्रित पवित्र जल से स्नान-जपादि करके यथाशक्ति अनाज, वस्त्रों, फलादि का दान करता है। उसके रोग-शोक दूर होते हैं तथा उसे आरोग्य, विवाह, धन-सम्पदादि सुखों की प्राप्ति होती है। इस मास में तुलसीदल, पुष्पों एवं तीर्थ जल से भगवान श्रीविष्णु की पूजा करके नित्य **वैशाख माहात्म्य, विष्णुसहस्रनाम एवं ''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय''**—मंत्र का पाठ करने का विशेष विशेष माहात्म्य होता है। इस मास में **अक्षया तृतीया (27 अप्रै.)** को जप, पूजन, होमादि करने का पुण्य होता है। इस दिन ब्राह्मण को अनाज, दूध-दही, बर्फी, जलापूरित घड़ा, छाता, फल आदि एवं नव संवत पंचांग का दान करना पुण्यप्रद होता है। यह संक्रान्ति 15 मुहूर्ति होने से गेहूँ, चने, धान्यादि सब प्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, कुंभ व मीन राशि वालों को संक्रान्ति का फल शुभ होगा।

ज्येष्ठ संक्रान्ति—यह संक्रान्ति 14 मई, गुरुवार को रात्रि 9 बजकर 40 मिनट पर उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करेगी। इसका पुण्यकाल, स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य दुपैहर से होगा। इस मास में भी श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ, नारायण कवच एवं कमलनेत्र स्तोत्र आदि का पाठ करके भगवान श्री विष्णु जी का पूजन करने से धन सम्पत्ति, विवाह,सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। संक्रान्ति 45 मुहूर्त्ति होने से चीनी, चावल, शक्कर, हल्दी, दूध आदि पेय-जल वस्तुओं में विशेष तेज़ी होगी। इस मास में अष्टमी, एकादशी, गंगादशहरा एवं निर्जला एकादशी आदि पर्वों पर श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा (पात्र), गेहूँ, चावल, सत्तु, आदि, वस्त्र, छाता, पंखा, आम्र, खरबूजे आदि मौसमी फल दूध चीनी एवं ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं के दान करने का विशेष माहात्म्य है।

आषाढ़ संक्रान्ति—14 जून, रविवार को शतभिषा नक्षत्र कालीन अर्द्ध-रात्रि के बाद प्रातः 4 बजकर 17 मिनट (28/17 घं.मिं.) पर प्रवेश करेगी। अतएव स्नान-दान, जपादि का **पुण्यकाल 15 जून,** सोमवार को सूर्योदय से प्रातः 10 बजकर 41 मिनट तक रहेगा। इस संक्रान्ति के पुण्यकाल में स्नानोपरान्त भगवान श्रीविष्णु जी की लक्ष्मी सहित पूजार्चना के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति फल, आँवला, आम, छाता, जलापूरित घड़ा पात्र, वस्त्रादि का दान करना पुण्यप्रद होता है। यह संक्रान्ति 15 मुहूर्त्ति होने से सर्वप्रकार के अनाज, खलबिनौला, सोना-चांदी आदि तेज भाव होंगे।

श्रावण संक्रान्ति—16 जुलाई, गुरूवार को नवमी तिथि एवं अश्विनी नक्षत्रकालीन दोपहर 3 बजकर 8 मिनट (15/08) से प्रारम्भ होगी। इस का स्नान-दान, जपादि का

पुण्यकाल प्रातः 8 बजकर 44 मिनट से शुरू होगा। श्रावण संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति है। श्रावण मास में भगवान शंकर की पूजा का विशेष महत्त्व है। प्रतिदिन श्रावण माहात्म्य, श्री शिवमहापुराण एवं श्री शिव स्तोत्रों का विधिपूर्वक पाठ करके दूध-गंगाजल, बिल्वपत्र, फलादि सहित शिवलिङ्गका पूजन "ॐ नमः शिवाय" मंत्र का जप करते हुए करना चाहिए।

इस मास में 22 जुला. (अमावस) को खण्डग्रास सूर्यग्रहण होने से कुरूक्षेत्र, गंगादि, तीर्थों पर स्नान दान आदि का विशेष माहात्म्य है। परन्तु राजनीतिक क्षेत्रों में विशेष उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे। सर्वप्रकार के अनाज एवं खाद्य तेलों में तेज़ी होगी।

भाद्रपद संक्रान्ति—16 अगस्त, रविवार को 15 मुहूर्त्ति तथा रात्रि 23/29 (भा.स्टैं.टा.) पर प्रवेश करेगी। इस का पुण्यकाल दोपहर बाद एवं अगले दिन सूर्योदय से होगा। भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना पुण्यप्रद एवं विशेष रूप से संतानादि सुखों के लिए करना शुभ है। यह संक्रान्ति—मेष, वृष, कन्या, तुला, धनु व कुम्भ राशि वालों के लिए लाभदायक रहेगी।

आश्विन संक्रान्ति—16 सितम्बर, बुधवार, मघा नक्षत्रकालीन रात्रि 23/23 घं. मि., त्र्योदशी तिथि को प्रवेश करेगी। यह संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति है। इसका स्नान-दानादि का माहात्म्य 16 सितं. दोपहर से तथा अगलते दिन सूर्योदय पर होगा। इसी दिन मघा त्र्योदशी एवं गजच्छाया योग सायं 19/36 के बाद होने से इस पर्व का स्नान-दान एवं पितरों का श्राद्ध, तर्पण आदि का विशेष महत्त्व है। इस योग में खीर में शहद मिलाकर ब्राह्मण को भोजन करवाने से पितर तृप्त होकर आशीर्वाद देते हैं। इस मास में 19 सितं. से शरद् नवरात्रों में दुर्गापूजन का विशेष महत्त्व होता है। संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति होने से गेहूँ, चना, चीनी, मैदा, सरसों, घी, खाद्य तेलों आदि तेज़ भाव होंगे।

कार्तिक संक्रान्ति—17 अक्तूबर, शनिवार को हस्त नक्षत्रकालीन, चतुर्दशी तिथि को 11 बजकर 20 मिनट पर प्रवेश करेगी। इसी दिन शनिवार को प्रदोषव्यापिनी अमावस को ही दीपावली का महापर्व होगा। संक्रान्ति का पुण्यकाल सूर्योदय से होगा। प्रदोषकाल से लेकर मध्यरात्रि के बीच श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपमाला, मन्त्र, जप-अनुष्ठानादि करने का विशेष माहात्म्य है। इस मास में प्रतिदिन कार्तिक माहात्म्य का पाठ तथा नित्य श्री भगवान विष्णु का पूजन, तुलसी पूजा, तुलसी व पीपल के मूल पर दीपक जलाने का विशेष माहात्म्य है। अमावस के दिन शनिवार को ही कार्तिक संक्रान्ति होने से आगामी दिनों में सर्वप्रकार के अनाज, जनोपयोगी व आवश्यक वस्तुओं के भाव तेज़ होंगे। इसी मास में अक्षया नवमी, देवप्रबोधिनी एकादशी, तुलसी विवाह एवं कार्तिक पूर्णिमा को विशेष रूप से दीपदान करने का विशेष महत्त्व होता है।

मार्गशीर्ष संक्रान्ति—16 नवम्बर, सोमवार, अमावस तिथि को विशाखा नक्षत्र में प्रातः 11 बजकर 11 मिनट पर प्रवेश करेगी । यह संक्रान्ति 45 मुहूर्त्ति है तथा इसका पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से होगा। यह संक्रान्ति सोमवार को अमावस तिथि में होने से इस दिन हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग आदि तीर्थों में स्नान, दान-जपादि का माहात्म्य विशेष रूप से होगा। तीर्थस्थल पर न जा सकने की स्थिति में अपने घर पर ही गंगाजल एवं तीर्थ जल सहित स्नान-दानादि करके भगवान श्री विष्णु जी का पूजन एवं नित्य प्रति श्री मद्भागवत पुराण का पाठ करना चाहिए। इस मास में 28 नवं. को मोक्षदा एकादशी का व्रत करना विशेष शुभ होता है। इस मास में महंगाई में तेज़ी विशेष रूप से होगी। रसदार वस्तुओं में भी तेज़ी हो। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि से आम लोगों में गहरा असंतोष रहे।

पौष संक्रान्ति—15 दिसं. मंगलवार को 15 मुहूर्त्ति, रात्रि 1/51 घं. मि. (25/51) से प्रवेश होगा। इस संक्रान्ति का पुण्यकाल आगामी दिवस (16 दिसं.) बुधवार की प्रातः 8 बजकर 15 मिनट तक विशेष रूप से होगा। इस मास भगवान श्री विष्णु जी का पूजन, जप-दानादि करना शुभ रहेगा। इस मास में 28 दिसं. को पुत्रदा एकादशी व्रत रखकर यथाशक्ति दान करने से मनोवांछित पुत्र सन्नतति की प्राप्ति होती है। 31 दिसं., बृहस्तपतिवार, पौष पूर्णिमा से तीर्थों पर माघ स्नान का पुण्य पर्व आरम्भ होगा। पौष संक्रान्ति मंगलवार को होने से अनाज, कैमिकल, रसदार वस्तुएँ, गेहूँ, चावल, चीनी, खल बिनौले, तैलादि पदार्थ तेज़ भाव होंगे।

माघ-संक्रान्ति—14 जनवरी, 2010 ई०, वीरवार, माघ कृष्ण पक्ष में, 12/38 घं. मि. पर प्रवेश होगा। इस का पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से होगा। इस दिन कुम्भ स्नान माहात्म्य भी प्रारम्भ होने से इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। गंगादि तीर्थों पर स्नान का दान का विशेष माहात्म्य है। नित्य प्रति भगवान् विष्णु का पूजन, माघ माहात्म्य का पाठ एवं हवन करने का विशेष माहात्म्य है।

फाल्गुन संक्रान्ति—12 फर. 2010 ई., शुक्रवार, फाल्गुन कृष्ण पक्ष में चतुर्दशी तिथि को रात्रि 25/38 घं. मि. पर प्रवेश होगा। यह संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति है। श्रीमहाशिवरात्रि के दिन ही अर्द्धरत्रि उपरान्त फाल्गुन संक्रान्ति का प्रवेश होने से आगामी दिन शनिवार (13 फर.) को (प्रातः 8/02 घं. मि. तक पुण्यकाल है) स्नान-दान-तर्पण एवं जपादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति होने से अत्यधिक महंगाई, जनोपयोगी वस्तुओं में तेज़ी एवं सामान्य लोगों में भय और असंतोष व्याप्त हो।

चैत्र संक्रान्ति—14 मार्च 2010 ई., रविवार को 15 मुहूर्त्ति, रात्रि 22/30 घं. मि. पर प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल दुपैहर से प्रारम्भ होगा। ता. 15 मार्च (चैत्र अमावस) को सोमवती अमावस होने से तीर्थादि स्नान करने का विशेष महत्त्व है। रविवार संक्रान्ति होने से गेहूं, चने, चावल, खल-बिनौले, खाद्य तेल आदि के भाव तेज़ होंगे। सामान्य लोगों में भय, दुःख व परेशानियां बढ़ें।

रूद्राक्ष की महिमा एवं महत्त्व (रुद्राक्ष धारण एवं जप-पूजन विधि सहित)

शिवपुराण, लिङ्गपुराण एवं स्कन्द आदि पुराणों में **रूद्राक्ष के महत्त्व एवं माहात्म्य** का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। रूद्राक्ष को साक्षात् शिवस्वरूप कहा गया है। रूद्राक्ष भगवान् शिव को अति प्रिय है। रूद्राक्ष के दर्शन, स्पर्श तथा उस पर जप करने से समस्त पापों का हरण करने वाला माना गया है।

रूद्राक्ष की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा जाता है कि भगवान् शंकर जी के मनोहर नेत्रपुरों से जल एवं अश्रुओं की बूंदे गिरने से पृथ्वी पर रूद्राक्ष नामक वृक्ष पैदा हुआ। **''रूद्रस्य अक्षि रूद्राक्षः, अक्ष्युपलक्षितम् अश्रु, तज्जन्यः वृक्षः॥''**—श्री मद्देवीभागवत में इस संदर्भ में एक कथा उपलब्ध है—एक बार आशुतोष भगवान् शंकर ने देवताओं एवं मनुष्यों के हित की भावना से त्रिपुरासुर का वध करना चाहा और एक सहस्र वर्षों तक तपस्या को तथा अघोरास्त्र का चिन्तन किया, भगवान् की आँखों से अश्रुविन्दु गिरे, उन्हीं अश्रुओं से रूद्राक्ष के महान् वृक्षों की उत्पत्ति हुई।

भोग और मोक्ष की इच्छा रखने वाले चारों वर्णों के लोगों और विशेषतः शिव भक्तों को शिवपार्वती की प्रसन्नता के लिए रूद्राक्ष के फलों को अवश्य धारण करना चाहिए। आंवले के फल के बराबर जो रूद्राक्ष हो, वह श्रेष्ठ एवं समस्त अरिष्टों का विनाश करने वाला होता है। जो रूद्राक्ष बेर के फल के समान होता है, वह छोटा होने पर भी सुख-सौभाग्य की वृद्धि करने वाला होता है। रूद्राक्ष को मन्त्रपूर्वक धारण करने से वह पापों का नाश करने वाला तथा अभीष्ट मनोरथों का साधक माना गया है। रूद्राक्ष की माला शिवपुराण के अनुसार शुद्ध रूद्राक्ष मनकों की माला को धारण करना, ऐसी माला से जप करने से विशेष फल प्राप्त होते हैं। रूद्राक्ष के दाने समान आकार-प्रकार वाले चिकने, मजबूत, स्थूल, कण्टकयुक्त (उभरे हुए छोटे-छोटे दाने) और सुन्दर रूद्राक्ष अभिलाषित पदार्थों के दाता तथा भोग-मोक्ष प्रदान करने वाले होते हैं। जिस रूद्राक्ष में अपने आप ही डोरा पिरोने के योग्य छिद्र हो, वही उत्तम माना गया है। जिसमें मनुष्य के प्रयत्न से छेद किया गया हो, वह मध्यम श्रेणी का होता है। रूद्राक्ष धारण करने का अधिकार सभी आश्रमों, समस्त वर्णों, स्त्रियों और शूद्रों को भगवान शिव की आज्ञा से सदैव रूद्राक्ष धारणा करना चाहिए—

सर्वाश्रमाणां वर्णानां स्त्रीशूद्राणां शिवाज्ञया।
धार्याः सदैव रूद्राक्षाः, रुद्ररूप समाहिताः॥

(शिवपुराण, विश्वे २५/४७) रुद्राक्ष को शुभ मुहूर्त्त में मन्त्रपूर्वक धारण करें।

रुद्राक्ष धारण का शुभ मुहूर्त्त—मेष संक्रान्ति, पूर्णिमा, अक्षय तृतीया, दीपावली, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, शिवरात्रि दिवस, विजयादशमी, अयन परिवर्तन काल, ग्रहणकाल, गुरुपुष्य, रविपुष्य, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग आदि शुभ मुहूर्त्त में धारण करने से सद्यः सम्पूर्ण पापों से निवृत्ति हो जाती है। शास्त्रों में रूद्राक्ष के एक मुख से चौदह मुख तक का वर्णन किया गया है। इन रूद्राक्षों का स्वरूप एवं धारण मन्त्र इस प्रकार हैं—

(1) एकमुखी रुद्राक्ष—साक्षात् शिवस्वरूप है और ब्रह्महत्यादि पापों को दूर करता है। इसको **''ॐ ह्रीं नमः''** मन्त्र उच्चारण से धारण करना चाहिए।

(2) दो मुखी रुद्राक्ष—देवी-देवता स्वरूप है और पापों को दूर करता है। यह अर्द्धनारीश्वर रूप है और इसे धारण करने से अर्धनारीश्वर प्रसन्न होते हैं। **''ॐ नमः''** इस मन्त्र से द्विमुखी रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

(3) त्रिमुखी रुद्राक्ष—अग्नि रूप है तथा नारी हत्या पाप को दूर करता है। तेज़ और शौर्य को बढ़ाने वाला है। तीन मुख वाले रूद्राक्ष को धारण करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। **''ॐ क्लीं नमः''** यह त्रिमुखी रूद्राक्ष धारण करने का मन्त्र है।

(4) चतुर्मुखी रुद्राक्ष—यह साक्षत् ब्रह्मा जी का स्वरूप है। इस रूद्राक्ष के स्पर्श, दर्शन मात्र से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। धारण करने से संतति की प्राप्ति होती है। इसे धारण करने का मन्त्र **''ॐ ह्रीं नमः''** है।

(5) पंचमुखी रुद्राक्ष—पञ्चदेवों (विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और देवी) का स्वरूप है— **''पञ्चवक्त्रं तु रूद्राक्षं पञ्चब्रह्मस्वरूपकम्''** इसके धारण करने से नर हत्या के पाप से प्राणी मुक्त हो जाता है। यह रूद्राक्ष कालाग्नि रूद्र स्वरूप भी है और अभक्ष्य-भक्षण और आगम्य गमन पापों को दूर करता है। मोक्षप्रदायक होता है। पंचमुखी रूद्राक्ष को **''ॐ ह्रीं नमः''** इस मन्त्र से धारण करना चाहिए।

(6) छः मुखी रुद्राक्ष—साक्षात् स्वामी कार्तिकेय स्वरूप है और दक्षिणकर में धारणीय है तथा ब्रह्महत्याधि पापों को दूर करता है। इसके धारण करने से श्री एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। **''ॐ ह्रीं नमः''** मन्त्र से इसे धारण करना चाहिए।

(7) सप्तमुखी रुद्राक्ष—सप्तमुखी रूद्राक्ष अनङ्ग नाम वाला और साक्षात् कामदेव स्वरूप है। अत्यन्त भाग्यशाली और स्वर्ण चोरी के पाप को दूर करता है। **''ॐ हुं नमः''** यह धारण करने का मन्त्र है।

(8) अष्टमुखी रुद्राक्ष—यह रूद्राक्ष साक्षात् साक्षी विनायक देव है। इसके धारण करने से पञ्चपातकों का विनाश होता है। **''ॐ हुं नमः''** इस मन्त्र से धारण करने से परमपद की प्राप्ति होती है।

(9) नवमुखी रुद्राक्ष—भैरव तथा कपिल मुनि का प्रतीक माना गया है अथवा नौ रूप धारण करने वाली महेश्वरी दुर्गा उसकी अधिष्ठात्री देवी मानी गयी है। जो मनुष्य भक्तिपरायण हो अपने बायें हाथ व भुजा में नवमुखी रूद्राक्ष को करता है, उस पर नवशक्तियां प्रसन्न होती हैं तथा वह शिवजी के समान बली है। इसे **''ॐ ह्रीं हुं नमः''** मन्त्र से धारण करना चाहिए।

(10) दशमुखी रूद्राक्ष—साक्षात् भगवान जनार्दन है। इसके धारण करने से ग्रह, पिशाच, बेताल, ब्रह्मराक्षस और नागादि का भय दूर हो जाता है। **''ॐ ह्रीं नमः''** इन मन्त्र से धारण करने पर साधक की पूर्णायु होती है और वह शान्ति प्राप्त करता है।

(11) एकादशमुखी रूद्राक्ष—साक्षात् एकादश रूद्र स्वरूप है और शिखा पर धारण करने से पुण्यफल, सहस्त्रयज्ञों के फल के समान इसका फल है। एकादशमुखी रूद्राक्ष **''ॐ ह्रीं हुं नमः''** इस मन्त्र से धारण करना चाहिए। धारक साक्षात् रूद्ररूप होकर सर्वत्र विजयी होता है।

(12) द्वादश मुखी रूद्राक्ष—साक्षात् महाविष्णु का स्वरूप है। **''ॐ क्रौं क्षौं रौं नमः''** इस मन्त्र से धारण करके धारक साक्षात् विष्णु को ही धारण करता है। इसे कान में धारण करने से द्वादशआदित्य भी प्रसन्न होते हैं और अश्वमेघादि को प्राप्त होता है। इसे द्वादश आदित्य स्वरूप भी माना जाता है।

(13) तेरहमुखी रूद्राक्ष—तेरहमुखी रूद्राक्ष कामदेश स्वरूप है। समस्त कामनाओं की सिद्धि कराने में समर्थ तथा सभी प्रकार के भोगों की प्राप्ति होती है। **''ॐ ह्रीं हुं नमः''** इस मन्त्र से धारण करना चाहिए।

(14) चौदरहमुखी रूद्राक्ष—चतुर्दशमुखी रूद्राक्ष रूद्र की अक्षि से उत्पन्न हुआ, वह भगवान् का नेत्र स्वरूप है। **''ॐ नमः''** इस मन्त्र से धारण करने पर मनुष्य शिव रूप हो जाता है और सभी व्याधियों का हरण करके परमगति को पाता है।

रुद्राक्ष को धारण करने की सरल विधि—यदि किसी कारणवश रूद्राक्ष के विशेष रूद्राक्ष मन्त्रों से धारण न कर सके तो इस सरल विधि का प्रयोग करके धारण कर लें। रूद्राक्ष के मनकों को शुद्ध लाल धागे में माला तैयार करने के बाद पंचामृत (गंगाजल मिश्रित विशेष रूप से) और पंचगव्य को मिलाकर स्नान करवाना चाहिए और प्रतिष्ठा के समय **''ॐ नमः शिवाय''** इस पंचाक्षर मन्त्र को पढ़ना चाहिए। उसके पश्चात् पुनः गंगाजल में शुद्ध करके निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए चंदन, बिल्वपत्र, लालपुष्प, धूप, दीप द्वारा पूजन करके अभिमंत्रित करें—

''ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्॥'' इससे अभिमंत्रित करके धारण करना चाहिए।

शिवपूजन, मन्त्र, जप, उपासना आरम्भ करने से पूर्व ऊपरलिखी विधि के अनुसार रूद्राक्ष माला को धारण करने एवं एक अन्य रूद्राक्ष की माला का पूजन करके जप करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नीचे लिखी सावधानियों का भी ध्यान रखना चाहिए।

(1) जो रूद्राक्ष कीड़ों ने दूषित किया हो, जो टूटा-फूटा हो, जिसमें उभरे हुए दाने न हो, जो व्रणयुक्त हो तथा पूरा-पूरा गोल न हो, इन पांच प्रकार के रूद्राक्षों को धारण नहीं करना चाहिए।

(2) जो रूद्राक्ष छिद्र करते हुए फट गये हों और जो शुद्ध रूद्राक्ष जैसे न हो, उन्हें धारण न करें।

(3) धारण करने से पहले परीक्षण कर लें कि रूद्राक्ष असली है या नकली। नकली रूद्राक्ष पानी में तैरने लगेगा और असली रूद्राक्ष पानी में डूब जायेगा।

(4) जो रूद्राक्ष गोल, चिकना, मोटा, कांटेदार हो, उसे ही खरीदना चाहिए।

(5) एकमुखी रूद्राक्ष को किसी पीतल के बर्तन में रख दें। उसके ऊपर से 108 बिल्वपत्र लेकर चंदन से **''ॐ नम शिवाय''** मन्त्र लिखकर सबसे नीचे रूद्राक्ष रखकर रात्रि में रख दें। प्रातः रूद्राक्ष बिल्वपत्र के ऊपर विराजित होगा तो वह शुद्ध रूद्राक्ष होगा।

(6) एकमुखी रूद्राक्ष को ध्यानपूर्वक देखने पर त्रिशूल या नेत्र का निशान कहीं न कहीं अवश्य ही दिखाई देता है।

(7) रूद्राक्ष के दानों को तेज़ धूप में छः घण्टे तक रखने से अगर रूद्राक्ष चटकें (टूटे नहीं) तो असली माने जाते हैं।

(8) रूद्राक्ष धारण करने पर मद्य, मांस, लहसुन, प्याज, सहजन, लिसोडा और विड्वराह (ग्राम्यसूयकर) इन पदार्थों का परित्याग करना चाहिए।

(9) जप आदि कार्यों में छोटा रूद्राक्ष ही विशेष फलदायक होता है और बड़ा रूद्राक्ष रोगों पर विशेष फलदायी माना जाता है।

(10) रूद्राक्ष शिवलिंग से अथवा शिव प्रतिमा से स्पर्श कराकर धारण करना चाहिए।

(11) रूद्राक्ष धारण करने के उपरान्त सुबह-सायं भगवान् शंकर का पूजन और **''ॐ नमः शिवाय''** मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए।

रूद्राक्ष मन्त्रपूर्वक धारण करने से अनेक अनिष्टों के निवारक के साथ-साथ बहुत से क्लिष्ट रोगों में रामबाण औषधि के रूप में सहायक होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र के साथ-साथ इसका (रूद्राक्ष) औषधि के रूप में प्रयोग का भी विशेष महत्त्व है। रोगनिवारण हेतु निम्नलिखित ढंग से रूद्राक्ष का प्रयोग करना चाहिए—

(1) एकमुखी रूद्राक्ष—धारण करने से स्त्री सम्बन्धी रोग, हृदय रोग, त्वचा रोग तथा उदर सम्बन्धी रोगों की शान्ति की शान्ति में सहायक होता है।

(2) द्विमुखी रूद्राक्ष—मस्तिष्क, गुर्दा, फेफड़े एवं पाचनक्रिया से सम्बन्धित रोग शान्ति के लिए द्विमुखी रूद्राक्ष धारण करना शुभ है।

(3) त्रिमुखी रूद्राक्ष—विशेषरूप से रक्तविकार, रक्तचाप, शक्तिक्षीणता और स्त्रीयों को मासिक धर्म सम्बन्धी रोगों के निवारण में लाभप्रद होता है।

(4) चतुर्मुखी रूद्राक्ष—को धारण करने से मानसिक रोग, पक्षाघात, पीत, ज्वर, दमा-श्वास, यौन विकार आदि रोगों में शान्ति के लिए शुभ है। मन्दबुद्धि बच्चों को तथा वाक शक्ति कमज़ोर हो, उनको अवश्य ही धारण करना चाहिए।

(5) पंचमुखी रूद्राक्ष—को धारण करने से मधुमेह, यौनव्याधियों, उच्चरक्तचाप, बालग्रह आदि रोगों की शान्ति होती है.

(6) छः मुखी रूद्राक्ष—नेत्र रोग, दृष्टि दोष, नपुंसकता, प्रदरादि रोगों के निवारण में विशेष लाभकारी है।

(7) सप्तमुखी रूद्राक्ष—दुर्बलता, लकवा, अस्थिदुर्बलता एवं अस्थिक्ष्मा तथा मिरगी आदि रोग होने पर धारण करना शुभ होता है।

(8) अष्टमुखी रूद्राक्ष—चमड़ी सम्बन्धी रोग, सर्पदंश का भय, शीघ्रपतन, नपुंसकता एवं ल्यूकोरिया आदि रोगों को शान्त करने में लाभकारी सिद्ध होता है।

(9) ***नवमुखी रूद्राक्ष***—हिस्टीरिया, माहवारीदोष, मानसिक रोग, बच्चों में देर से चलना, देर से बोलना, आंखों में दृष्टि दोष, अपस्मार आदि के रोगी को धारण करने से लाभ होता है।

(10) ***दशमुखी रूद्राक्ष***—धारण करने से दमा, गठिया, सायटिका, जलोदर, मन्दाग्नि एवं नेत्र दोष आदि शान्त हो जाते हैं।

(11) ***एकादशमुखी रुद्राक्ष***—हृदयस्थ विकार, उच्चरक्तचाप, मधुमेह आदि के रोगियों को अवश्य धारण करना चाहिए।

(12) ***द्वादशमुखी रुद्राक्ष***—कुष्टरोग, हैजा, अतिसार, पाण्डुरोग, रंतौधी, भगन्दर दोष आदि सभी प्रकार के दोषों की शान्ति में सहायक सिद्ध होता है।

(13) ***त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष***—को आयुर्वेद की संजीवनी की संज्ञा दी गई है। इसके साथ ही चतुर्दशमुखी रूद्राक्ष के धारण करने वाले प्राणी सभी प्रकार की महामारियों से सुरक्षित रहते हैं। अर्थात् यह रूद्राक्ष कवच का कार्य करते हैं। पाण्डुरोग (पीलिया), रक्तविकार और स्त्रीविकार और स्त्रीरोग में धारण करने से चमत्कारिक प्रभाव होता है।

इसके अतिरिक्त ऐसे दुर्लभ रूद्राक्ष भी पाए जाते हैं जिनके आश्चर्यजनक एवं चमत्कारिक प्रभाव मिलते हैं। रूद्राक्ष धारण करने के साथ-साथ अगर शिवपूजन, रूद्राक्ष की माला से **"ॐ नमः शिवाय"** का जप भी किया जाए तो अत्यन्त शुभ फल प्राप्त होते हैं।

भगवान् शिव की जटाओं में गङ्गा रहस्य

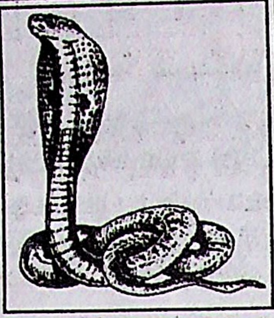


देव नदी गङ्गा का जल शारीरिक एवं मानसिक क्लेशों को दूर करने वाला है। गङ्गा वस्तुतः लोकमाता एवं विश्वपावनी है। गङ्गा के आश्रय से मानव भौतिक उन्नति ही नहीं, अपितु आध्यात्मिक पीयूष को भी ग्रहण करता है। इसके दर्शन, स्मरण, पान एवं स्नान से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। भगवान् शंकर की जटाओं में चन्द्रमणियों की भान्ति सुशोभित होने वाली मां गङ्गा का सम्बन्ध ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों से माना गया है। वह पहले ब्रह्म जी के कम्मलु में समाई रहीं, फिर भगवान् विष्णु के चरणोदक रूप से प्रवाहित हुई और तदनन्तर महादेव जी की जटाओं में सुशोभित हुईं।

वाल्मीकि रामायण में गंगा को त्रिपथगा एवं त्रिपथगामिनी कहा गया है अर्थात् पहले यह आकाश मार्ग में गईं थीं, उसके बाद देवलोक में गईं, फिर जल रूप में भूतल पर पहुँची। भगवान् विष्णु के तीन पाद (पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक) की भान्ति माँ गंगा का क्षेत्र भी तीन लोक हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार गङ्गा की उत्पत्ति

हिमालय पत्नी मैना से बतायी गयी है। गङ्गा उमा से ज्येष्ठ थीं। पूर्वजों के उद्धार के लिए भागीरथ ने अत्यधिक कठोर तप किया। ब्रह्मा जी भागीरथ की तपस्या से प्रसन्न हो गये और वर मांगने के लिए कहा। भागीरथ ने अपने पूर्वज सागर-पुत्रों के उद्धार के लिए गंगावतरण का वर मांगा, जो उन्होंने सहर्ष प्रदान किया। गंगा जी का वेग सहन करने की शक्ति भगवान शिव के अतिरिक्त किसी में नहीं थी। गङ्गा को धारण करने के लिए भागीरथ ने अपने तप से भगवान शंकर को संतुष्ट किया। अन्त में प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने जटा से गङ्गा धारा को छोड़ा। देवनदी गङ्गा भागीरथ के पीछे-पीछे कपिल मुनि के आश्रम तक पहुंची जहां भागीरथ के पूर्वज भस्म हुए थे। पावनमयी गंगा जल से स्पर्श करते ही शाप-ग्रस्त सगर पुत्रों की अस्थियों का उद्धार हो गया। इसके साथ ही भूलोक पर गंगावतरण से भूलोक वासियों का अनन्तकाल के लिए कल्याण हो गया। ऋषि भागीरथ जी के अथक प्रयासों एवं तप के फलस्वरूप ही गंगा का स्वर्ग से भूलोक पर अवतरण हुआ। इसी कारण उनका एक नाम भागीरथी भी है। इनका अवतरण वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि को माना जाता है।

भगवान् शिव के अङ्गभूत सर्प एवं नाग देवता



भगवान् शिव/शङ्कर के गले एवं अन्य अंगों में लिपटे सर्प तमोगुण के प्रतीक हैं। जैसे प्रकृति में सत्व, रज और तम-तीनों गुणों का मिश्रण रहता है, उसी भान्ति भगवान् शिव ने भी तीनों गुणों की प्रतीकात्मक वस्तुएँ धारण कर रखी हैं, परन्तु भगवान् स्वयं प्रकृति जन्य इन तीनों गुणों से **अप्रभावित एवं परे रहते हैं**। काल और अमृत (**मृत्यु एवं जीवन**) दोनों तत्त्व **भगवान शिव** के आधीन हैं। जीवनामृत के रूप में भगवान् शिव ने शिर पर पावन गङ्गा धारण की है तथा मृत्यु एवं काल के रूप में विषैले सर्पों को भी धारण कर रखा है। जैसे पिता अपने क्रोधी एवं क्रूर लड़कों को भी अपने साथ लिपटाए रखते हैं। ऐसे ही भगवान् शिव अपने विषैले, क्रूर एवं दुष्ट जीवों से भी घृणा नहीं करते हैं, बल्कि करूणा भाव रखते हुए गले में लिपटाए रखते हैं। शिव सब प्राणियों के दुःख-दर्द रूपी विषों को ग्रहण कर पी जाते हैं। इसी कारण वह **नीलकण्ठ** कहलाए।

योगशास्त्र में सर्पों को क्रिया शक्ति का प्रतीक भी माना गया है। ये ही शिव के आभूषण, श्री विष्णु की शय्या या कालान्तर में पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग के रूप में चित्रित किए गए हैं। हठ योग तन्त्रानुसार शिव के गले में लिपटे सर्प शरीर में स्थित मूलाधार चक्र में **कुण्डलिनी शक्ति** के प्रतीक हैं, जो स्वयंभूत लिङ्ग के पास अपनी पूंछ को मुख में डालकर सुप्तावस्था में रहती है तथा वह ध्यानादि कठिन साधनों द्वारा मूलाधार चक्र से उठकर षट्चक्रों को वेंधती हुई सहस्रार में शिव स्वरूप से जा मिलती है। भगवान् विष्णु की शय्या भी नागराज अनन्त की बनी हुई है। भगवान् शंकर के अतिरिक्त श्रीगणेश भी सित सर्प विभूषित हैं—(सत सर्प विभूषिताय) भगवान् सूर्य के रथ में बारहों मास नाग बदल-बदल कर उनके रथ का वहन करते हैं—ऐसा पुराणों में वर्णन मिलता है। विभिन्न देवताओं ने भी सर्प नाग रूपों को धारण कर रखा है, जिससे वे देव रूप हैं, ऐसी मान्यताएं अनेक शास्त्रों में वर्णित मिलती हैं। सर्प-नाग वायु पान करते हैं। काश्मीर, बिहार, बंगाल, आसाम आदि प्रदेशों में नागादि देवताओं की आज भी बड़ी प्रतिष्ठा की जाती है। अनन्त, वासुकि, शेष पद्नाभं, तक्षक, कंबल, शंखपाल, धृतराष्ट्र और कालिए आदि नव नाग देवता हैं। नित्य प्रातः सायं स्मरणीय माने जाते हैं। नित्यप्रति इनका उच्चारण करने से **मनुष्य को नाग विष का भय नहीं रहता** और सर्वत्र विजय होती है—

नवनाग स्तोत्रम् : **अनन्तं वासुकिं शेषं, पद्नाभं च कम्बलम्।**
शङ्खपालं धृतराष्ट्रं, तक्षकं कालियं तथा॥१॥
एतानि नवनामानि, नागानां च महात्मनाम्।
सायंकाले पठेन्नित्यं, प्रातःकाले विशेषतः॥२॥
तस्मै विषभयं नास्ति, सर्वत्र विजयी भवेत् ॥३॥

अर्थात्-अनन्त, वासुकि, शेषनाग, पद्मनाभ, कम्बल, शंखपाल, धृतराष्ट्र, तक्षक और कालिय। ये महान् आत्मा वाले नौ नागों के नाम हैं जो लोग नित्य ही सायंकाल और विशेष रूप से प्रातःकाल इन नामों का उच्चारण करते है, उन्हें सर्प और विष से कोई भय नहीं रहता तथा उनकी सब जगह विजयी होती है अर्थात् सफलता मिलती है॥१-३॥ (यह स्तोत्र **कालसर्प दोष निवारण** हेतु भी जपनीय है)

नाग गायत्री मन्त्रः, **ॐ नव कुलाय विद्महे, विष दन्ताय धीमहि। तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥** इसके साथ ही शिवलिंग पर चांदी का सर्प युगल-नाग स्तोत्र एवं नाग पूजादि करके चढ़ाना विशेष फलप्रद होता है।

प्रत्येक शनिवार को एक नारियल लें। उस पर मौली लपेटें, काले तिल व सरसों के तेल का तिलक लगावें। इसको सात बार जातक के सिर पर घुमायें। घुमाते समय '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का सात बार उच्चारण करें तथा शीघ्र से शीघ्र उसे चलते पानी में बहा दें। कालसर्प दोष निवारण हेतु उत्तम उपाय है।

✦डमरू और मन्त्रशास्त्र✦

भगवान् शिव के द्वारा धारण किए गए डमरू, त्रिशूल, सर्पादि आभूषण प्रतीकात्मक रहस्यों की अभिव्यक्ति करते हैं। भगवान् शिव के बाएँ हाथ में प्रायः डमरू दर्शाया जाता है। डमरू के चौदह नादों से ही मूल चौदह माहेश्वर अर्थात् (१४) **शिव सूत्रों** का प्राकट्य हुआ। इन मूल शिव सूत्रों के आधार पर ही पाणिनि मुनि द्वारा व्याकरण शास्त्र की रचना की गई। इस सम्बन्ध में पुराणों में यह आख्यान प्रसिद्धि है कि एक समय भगवान् शंकर आनन्दमय होकर नृत्य कर रहे थे और डमरू बजाते हुए वे ताण्डव नृत्य में समाधिस्थ हो गए। उस समय उनके डमरू की **नाद-ध्वनि** से अ इ उ ण, ऋ लृ क्, ए ओ ङ् ओ च् .... इत्यादि चौदह शिव सूत्रों का प्रस्फुटन हुआ। इसी स्फोट से शब्दों के अर्थ का ज्ञान सुस्पष्ट हुआ— **स्फुटति अर्थ यस्मात् स स्फोटः॥**

इन्हीं माहेश्वर (शिव) सूत्रों के आधार पर ऋषि पाणिनि ने व्याकरण शास्त्र (अष्टाध्यायी) की रचना की, जो आगे चलकर समस्त वाङ्गमय संस्कृत साहित्य के विस्तार का आधार बना। इन्हीं सूत्रों के आधार पर दिव्य मन्त्र शास्त्र का अविर्भाव हुआ। '**अ**'- आदि निर्गुण ब्रह्म का वाचक है और '**उ**' सगुण ब्रह्मा का। '**इ**' चित्त-शक्ति की बोधक है। जब **अ** (अर्थात् निर्गुण ब्रह्म) '**इ**' (माया रूपी चिद्शक्ति) के साथ सम्पर्क में आता है, तो वह '**उ**' अर्थात् सगुण ब्रह्म हो जाता है। शिवसूत्र अक्षर ब्रह्म के स्वरूप ओ३म् को भी प्रतिध्वनित करते हैं। योग साधना अनुसार **डमरू, शंख** आदि के नाद भीतरी अनाहत नाद को भी प्रतिध्वनित करते हैं।

अधिक एवं विस्तृत जानकारी के लिए भक्तिप्रदायन मनुष्यों को '**शिव-मन्त्रावली**' पुस्तक का अवश्य अध्ययन करना चाहिए।

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दाने के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मनःशिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—**(खैर की लकड़ी से)** "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—**(अपामार्ग की समिधा से)** ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—**(पीपल)** ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—**(गूलर)** **ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः** ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—**(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥**

राहु मन्त्र—**(दूर्वा)** ॐ कयानश्चित्र आ भुवदृती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—**(कुशा से)** ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृह राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, बृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व—उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। '**मूल**' का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। '**जीव**' का अर्थ प्राणी—स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**—मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा—ऐसा कहना चाहिए। जैसे—यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

अरिष्ट ग्रहों के दान, पूजा एवं उपाय

[पं. विवेक शर्मा (एम.ए., एल.एल.बी.)]

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए ज्योतिष शास्त्र में अनेक प्रकार के उपाय बतलायें गए हैं—जैसे मंत्रजाप-हवन, दान, ग्रह औषाधि स्नान, तीर्थ-स्नान, व्रत रखना, नग एवं यंत्र धारण करना इत्यादि। पाठकों के लाभार्थ, आगे कुछ उपायों का संक्षिप्त विवरण लिखा जाता है। **ध्यान रहे,** सूर्य चन्द्रादि ग्रहों की उपासना के माध्यम से हम सर्वपिता परमात्मा की ही उपासना करते हैं। क्योंकि विश्व के सभी सौरपिण्डों के द्वारा ईश्वर की असीम शक्ति की ही सतत अभिव्यक्ति हो रही है।

पूर्वा जन्मों में कृत शुभाशुभ कर्मों के अनुसार एवं ग्रहों के द्वारा अनुप्रेरित होकर मनुष्य ऐहिक जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि, इष्ट-अनिष्टादि फल प्राप्त करता है। जन्मपत्री एवं वर्ष कुण्डली में पड़े क्रूर ग्रह मनुष्य को प्रतिकूल एवं कठिन समस्याएं उत्पन्न करवाते हैं, जबकि शुभ एवं योगकारक ग्रह अनुकूल व सौभाग्यवर्द्धक परिस्थितियां बनाने में सहायक होते हैं।

यदि अशुभ ग्रहों के प्रभावस्वरूप बार-बार प्रयत्न करने पर भी जीवन में विघ्नों एवं विफलताओं का सामना पड़े और भाग्य साथ न देता हो, तो अशुभ ग्रहों की अनुकूलता हेतु ज्योतिष आचार्यों द्वारा प्रतिपादित अनिष्ट ग्रहों के उपायों को अपनाकर जीवन को स्वस्थ, खुशहाल एवं सुखी बनाने का प्रयास करना चाहिए।

परन्तु जन्मकुण्डली में किसी ग्रह का शुभाशुभ निर्णय करना सरल कार्य नहीं। किसी जातक की कुण्डली में यदि मंगल आदि कोई ग्रह नीचादि अशुभ अवस्था में स्थित होने पर भी तुरन्त एकदम अशुभ फल नहीं कह देना चाहिए। देखना चाहिए कि विचारणीय ग्रह किस भाव का स्वामी होकर नीचावस्था में बैठा है। नीचस्थ मंगल पर यदि गुरु की पंचम/नवमादि शुभ दृष्टि पड़ रही हो अथवा यदि नवांश कुण्डली में मंगल मित्र या उच्च राशि में पड़ा हो, अथवा मंगल स्थित राशि (कर्क) का स्वामी ग्रह चन्द्रमा मित्र या उच्चादि राशि में स्थित हो अथवा मंगल, चन्द्रमा, गुरु आदि शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो, तो ऐसी स्थिति में मंगल विशेष अधिक अशुभ फल नहीं करेगा। इसके अतिरिक्त विचारणीय भाव के कारक ग्रह की भी शुभाशुभ स्थिति का भी विचार कर लेना चाहिए।

◆सूर्य शान्ति के लिए उपाय◆

यदि किसी जातक की जन्म अथवा वर्ष कुंडली में सूर्य अशुभ कारक हो तो उसको निम्नलिखित मन्त्र की (अपनी सामर्थ्यानुसार) कम-से-कम 7000 की संख्या में जप करना चाहिए। जप का आरम्भ शुक्लपक्षीय रविवार प्रातः सूर्योदय से करना चाहिए। पाठ करते समय समीप ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, ताण्डुल, लाल चन्दन, लाल पुष्प, गंगाजल, थोड़ा गुड़ डालकर पात्र को लाल वस्त्र, आम के पत्तों एवं नारियल द्वारा ढक लेना चाहिए। साथ ही दान योग्य वस्तुओं को संकल्पपूर्वक पहले से पास में रख लेनी चाहिएं।

बीज मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (जप संख्या 7000)

सूर्य दान हेतु वस्तुएँ—गेहूँ, लाल चन्दन, गुड़, लाल पुष्प, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण की गाय, सुवर्ण, माणिक्य, ताम्र बर्तन, नारियल आदि लाल फल, मिष्ठान, दक्षिणा आदि।

उपाय—(1) तांबे की अँगूठी में माणिक्य अथवा विधिवत् तैयार किया हुआ सूर्य-यन्त्र (ताम्र पत्र पर) धारण करें।

(2) खाना खाते समय सोने अथवा तांबे के चम्मच का प्रयोग करना तथा 11 रविवार तक सूर्य स्नान करना। जब जन्म या वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो—

(3) 108 रविवार तक ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य स्तोत्र का पाठ करना शुभ है।

(4) 40 या 43 दिन तक चलते पानी में गुड़ या तांबे के सिक्के बहाना शुभ होगा।

(5) सर्वप्रथम प्रातःकाल उठकर स्नान उपरान्त ताम्र कलश (गड़वी) में जल, दूध, पुष्प, गंध, लाल-चंदन आदि लेकर पूर्व दिशा में मुख करके गायत्री मंत्र तथा सूर्यार्घ्य मंत्र के उच्चारण से सूर्य को अर्घ्य प्रदान करना चाहिए।

(6) रविवार को नमक से परहेज़ रखें। लवणरहित सादा भोजन करें। ग्यारह रविवार पर्यन्त केवल दही और चावल का सेवन करना चाहिए।

(7) जिन जातकों का सूर्य नीच का हो, उन्हें कार्तिक मास में तुलसी पौधे पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए तथा पं. देवीदयालु कृत 'कार्तिक माहात्म्य' का पाठ करना चाहिए।

◆चन्द्रमा शान्ति के लिए उपाय◆

जब जन्म या वर्ष कुण्डली में चन्द्र ग्रह अशुभ कारक हो तो निम्नलिखित मन्त्र की 11 हज़ार की संख्या में जप करना और तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा। जप का आरम्भ पूर्णिमा या शुक्ल पक्ष के सोमवार से करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मंत्र—ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (जप संख्या 11,000)

दान योग्य वस्तुएँ—चावल, सफेद चन्दन, शंख, कपूर, घी, दही, चीनी या मिश्री, क्षीर, मोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत फल, चांदी, मिठाई और दक्षिणा। **उपाय=**

(1) चांदी के बर्तनों का प्रयोग करना एवं चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाना।

(2) सफेद मोतियों की माला अथवा चांदी की अँगूठी में मोती धारण करना।

यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभ हो, तो चन्द्रमा के अशुभत्व के निवारण हेतु उपाय—

(3) शीशे के गिलास में दूध, पानी आदि पीने से परहेज़ रखना तथा चाँदी के बर्तनों में दूध, पानी पीना शुभ होगा।

(4) पानी में कच्चा दूध मिलाकर चन्द्रमा का बीज मन्त्र पढ़ते हुए पीपल को डालना।

(5) लगातार 16 सोमवार व्रत रखकर सायंकाल सफेद वस्तुओं का दान करना चाहिए तथा पाँच छोटी कन्याओं को क्षीर सहित भोजन कराना चाहिए।

(6) सोमवार को ही प्रातःकाल स्नानादि करके ताम्र बर्तन में कच्ची लस्सी (जल तथा थोड़ा सा दूध) भगवान् की मूर्त्ति या शिवलिंग पर चढ़ाना चाहिए।

(7) चांदी का कड़ा, चैनी या सिक्का धारण करना चाहिए।

◆मंगल शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में मंगल अशुभकारक एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्र की कम-से-कम 10 हज़ार संख्या में शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ करें।

तन्त्रोक्त मंगल मन्त्र—ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (जप संख्या 10,000)

दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, मसूर, लाल बैल, घी, गुड़, सुवर्ण, मसूर, मूंगा, ताम्र बर्तन, कनेर पुष्प, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, केशर, लाल फल, नारियल, मीठी चापाती, गुड़ से निर्मित रेवड़ियां, दक्षिणा आदि। मंगल का दान युवा ब्राह्मण को करना शुभ है।

उपाय—जब कुण्डली में मंगल शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फल न करता हो तो निम्नलिखित उपाय शुभ होंगे—

(1) तांबे की अँगूठी में मूँगा धारण करना अथवा तांबे का कड़ा पहनना।

(2) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगाना तथा 108 दिन तक रात को तांबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर घर में लगाए हुए गुलाब के पौधे को वहीं पानी डालना।

(3) मंगलवार का व्रत रखकर 27 मंगल किसी अपाहज को मीठा विशेषकर गुड़ से निर्मित भोजन खिलाना।

(4) नारियल को तिलक करके तथा लाल कपड़े में लपेटकर लगातार 3 मंगलवार चलते पानी में बहाएँ।

(5) लाल रंग की गाय या लाल वर्ण के कुत्ते को भोजन खिलाना शुभ होगा।

(6) मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। विशेषकर उन कन्याओं को जिनकी कुण्डली में मंगल मंगलीक योग बनकर विवाह में बाधा, विलम्ब उत्पन्न कर रहा हो—उन्हें मंगलागौरी का व्रत लगातार 7 मंगलवार रखना चाहिए।

◆बुध शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में बुध ग्रह अशुभफली हो तो भगवान् विष्णु का ध्यान करके शुक्ल पक्ष के बुधवार को आरम्भ करके 9000 की संख्या में बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (जप संख्या 9000)

दान योग्य वस्तुएँ—मूंगी, 5 हरे फल, चीनी, हरे पुष्प, हरी इलायची, कांस्य-पत्र, पन्ना, सोना, हाथी का दांत, षड्रसों से युक्त भोजन हरी सब्ज़ी, हरा कपड़ा, दक्षिणा सहित दान करें।

उपाय—कुंडली में बुध शुभ होता हुआ भी फलकारक न हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे—

(1) हरे रंग का पन्ना बुधवार को सोने की अँगूठी में धारण करना। हरे रंग के वस्त्रों को पहनना तथा हरे रंग के पर्दे लगाना शुभ होगा। हरे रंग की गाड़ी, स्कूटर या साईकिल आदि का प्रयोग करें। परन्तु यदि बुध अशुभ हो, तो हरे वस्त्र कदापि न पहनें।

(2) बुधवार को चाँदी या कांस्य के गोल टुकड़े को हरे रंग के कपड़े में लपेट कर जेब में रखें या भुजाओं के साथ बांधें।

यदि बुध अशुभ हो तो—(3) मूंगी साबत के सात दाने, हरा पत्थर, कांसे का गोल टुकड़ा, हरे वस्त्र में लपेट कर बुधवार को चलते पानी में बहाना शुभ होगा। पानी में बहाते समय कम-से-कम 7 बार बुध का बीज मन्त्र पढ़ें।

(4) हरे रंग के वस्त्र (परिधान) किसी हिजड़े को बुधवार के दिन शुभ होगा।

(5) बुधवार के दिन 6 इलायची हरे रूमाल में लपेटकर अपने पास रखें तथा इसके पश्चात् एक इलायची व तुलसीपत्र का सेवन करना शुभ रहेगा।

◆गुरु शान्ति के लिए उपाय◆

जब किसी व्यक्ति की जन्म या वर्ष कुंडली में गुरु शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो उसे शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार को, शुभ मुहूर्त्त में निम्नलिखित मन्त्र का 19,000 की संख्या में पाठ करना तथा तदोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः (जप संख्या 19,000)

गुरु दान की वस्तुएं—पीले चावल, पुखराज, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला कपड़ा, पीले पुष्प व पीले फल (जैसे—आम, केले आदि), कांस्यपात्र, घोड़ा, लवण, शक्कर, घी, धर्मग्रन्थ, सुवर्ण, पीली मिठाई, दक्षिणा आदि।

उपाय—जन्म कुंडली में बृहस्पति शुभ व योगकारक होता हुआ भी शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

(1) सोने या चांदी की अँगूठी में तर्जनी अंगुली में तथा शुभ मुहूर्त्त में पुखराज धारण करें।

(2) 27 गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले रंग के कपड़े या कागज़ में अपने पास रखना शुभ होगा।

गुरु के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय करें—

(3) चलते पानी में बादाम एवं नारियल पीले कपड़े में लपेटकर बहाना शुभ होगा।

(4) पीपल के वृक्ष को गुरुवार एवं शनिवार को गुरु का बीज मन्त्र एवं गुरु गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए जल दें।

(5) वृद्ध ब्राह्मण को यथाशक्ति पीली वस्तुएँ, जैसे—चने की दाल, लड्डू, पीले वस्त्रों, शहदादि का दान करना चाहिए।

◆शुक्र शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में शुक्र अशुभकारक हो तो शुभ मुहूर्त्त में निम्न मन्त्र का 16,000 की संख्या में जाप करना तथा तदुपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (जप संख्या 16,000)

शुक्रदान की वस्तुएँ—चाँदी, चावल, सुवर्ण, दूध, दही अथवा दुग्ध निर्मित वस्तुएँ, मिश्री, श्वेत चन्दन, श्वेत घोड़ा, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थ।

उपाय—कुंडली में यदि शुक्र शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फलीभूत न हो रहा हो तो निम्न उपाय कल्याणकारी रहेंगे—

(1) चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा रखकर सोने वाले कमरे में रखे चन्दन की अगरबत्ती जलाना शुभ होगा।

(2) घर में तुलसी का पौधा लगाना, सफेद गाय रखना, सफेद पुष्प लगवाना शुभ होगा तथा क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवाकर विधिपूर्वक अपने पास रखें।

शुक्र अशुभ प्रभावी होने की स्थिति में नीचे लिखे उपाय कल्याणकारी होंगे—

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएँ देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

(4) सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहा देना या चांदी के टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवा कर रेशमी क्रीम रंग के वस्त्र में लपेट कर शुक्रवार को नीम के वृक्ष के नीचे दबाना।

(5) शुक्रवार का विधिवत् व्रत रखना चाहिए तथा पाँच शुक्रवार पाँच कन्याओं का पूजन कर उन्हें मिश्री सहित श्वेत वस्तुओं की भेंट देनी चाहिए।

◆शनि शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुण्डली में शनि अशुभ फल प्रदायक हो तो किसी शुभ मूहूर्त्त में आरम्भ करके निम्न मन्त्र का श्रद्धापूर्वक भगवान् शंकर का एवं शनि के रूप का ध्यान करते हुए 23 हज़ार संख्या पूर्ण करने के पश्चात् उसी मन्त्र सहित दशांश की संख्या में हवन करने से शुभ प्रभाव पड़ता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (जप संख्या 23,000)

शनि के दान योग्य वस्तुएँ—नीलम, लोहा, तिल, उड़द (माश), सरसों का तेल, काला वस्त्र, काली गाय, कुल्थी, लौह निर्मित पात्र, जूता, भैंस, कस्तूरी, सुवर्ण, नारियल, काले अथवा नीले पुष्प, फल, दक्षिणा इत्यादि।

उपाय—शनि शुभ होता हुआ भी शुभफल प्रकट न कर रहा हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे—

(1) सोने की अँगूठी में नीलम धारण करें। उसके अभाव में नाव के कील की अँगूठी अथवा काले घोड़े के नाल (खुरों) की अँगूठी बनवाकर मध्यमा अंगूली में धारण करें।

(2) घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना और स्वयं भी बहुधा नीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना शुभ होगा। जब कुण्डली में शनि नीच या अरिष्टकर फल प्रकट कर रहा हो तो निम्न उपाय करें—

(3) शनिवार का व्रत और दशरथकृत 'शनि स्तोत्र' का पाठ करें।

(4) स्टील या लोहे की कटोरी में तेल का छाया-पात्र करके तेल पाँच शनिवार तक आक के पौधे पर अथवा '**शनि मन्दिर**' में डालना शुभ होगा। 5वें शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल वाली कटोरी को वही दबा देना या वही चढ़ा देना शुभ होगा। तेल चढ़ाते समय शनि का बीज मन्त्र पढ़ें।

◆राहु शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में राहु अशुभ फलदायक हो तो निम्नलिखित मन्त्र का 18,000 की संख्या में जाप करके दशमांश का हवन करें—

मन्त्र—ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (जप संख्या 18,000)

राहु दान योग्य वस्तुएँ—सप्तधान्य, गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तिल, तैल, सोने या चाँदी का सर्प, उड़द, खड़ग (तलवार), कवच, नीला वस्त्र, काले रंग के पुष्प, नारियल, दक्षिणा आदि।

उपाय—अशुभ राहु या राहु की महादशा या अन्तर्दशा में निम्नलिखित उपाय करें—

(1) काले व नीले वस्त्र पहनने से परहेज़ करें तथा चाँदी की चेनी व लॉकिट पहनना शुभ होगा।

(2) चापाती को खीर लगाकर कौओं को एवं काले रंग की गाय को खिलाएँ।

(3) काले तिल, कच्चा कोयला, नीले रंग के ऊनी कपड़े में बाँधकर शनिवार अथवा राहु के नक्षत्रों में घर के आंगन में दबाना शुभ होगा। अथवा नीले वस्त्र के बांधे रूमाल को राहु मन्त्र पढ़ते जल में प्रवाह कर देवें।

◆केतु शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुण्डली में केतु अशभु फलकारी हो तो किसी शुभ मुहूर्त्त में नीचे लिखे मन्त्र की 17 हज़ार की संख्या में जाप करें तथा दशमांश का हवन करें।

मन्त्र—ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः (जप संख्या 17,000)

केतु की दान योग्य वस्तुएँ—लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसा) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित।

उपाय—(1) केतु की शान्ति के लिए श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखें तथा श्रीगणेश पूजन तथा लड्डुओं का भोग लगाना शुभ होगा।

(2) काले वस्त्र में बाँधकर काले व सफेद तिल चलते पानी में बहाना।

(3) रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय की सेवा करना एवं रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती (Bread) डालना।

विविध समस्याओं के उपयोगी उपाय एवं टोटके

(1) शीघ्र विवाह के लिए—

यदि किसी जातक / जातिका के विवाह में विलम्ब हो रहा है अथवा हर बार विवाह की बात चलने पर कोई न कोई बाधा उपस्थित हो जाती है, तो सप्तम भाव, सप्तमेश ग्रह सम्बन्धी सम्यक विचार करके तत् ग्रह सम्बन्धी उपाय करने चाहिए, जिसका सविस्तार वर्णन हम अपने गतवर्षीय पंचांग के लेख 'वैवाहिक विलम्ब के कारण एवं निवारण' में लिख आए हैं। आगे कुछ उपयोगी उपाय दे रहे हैं, जिन्हें प्रयोग में करके आप इसका प्रभाव शीघ्र अनुभव करेंगे—

(i) जिस कन्या के विवाह कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएँ पड़ रही हों, उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षय तृतीया, श्रावण मास में, वसन्त पंचमी अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का पाठ आरम्भ करके यथेष्ठ संख्या में 51 हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है—

ॐ ह्रीं गौर्य नमः
हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरू कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

(हे गौरि, शंकर की अर्द्धाङ्गिनी ! जिस प्रकार तुम शंकर की प्रिया हो, उसी प्रकार हे कल्याणी ! मुझ कन्या को दुर्लभ वर प्रदान करो।)

(ii) जिन लड़कों के विवाह में विलम्ब हो रहा हो अथवा मनोवांछित स्त्री से विवाह हेतु निम्न मन्त्र की प्रातःकाल शुद्ध होकर दुर्गाजी के चित्रपट या मूर्ति पर लाल पुष्प समर्पित करें। दीप प्रज्वलित करके षोडशोपचार पूजन करें तथा निम्न मन्त्र की कम-से-कम 5 माला प्रतिदिन जप करें। साथ ही दुर्गासप्तशती का इसी मन्त्र से सम्पुट करके 18 पाठ करना या कराना चाहिए।

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥ (दुर्गा सप्त. २४)

(iii) शीघ्र विवाह के लिए शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार को भगवान् शंकर का व्रत रखे और श्वेतार्क के वृक्ष के समीप धूप-दीप कर जल अर्पित करें और हाथ धोकर 8 पत्ते तोड़कर लाए। 7 पत्तों की पत्तल बनाएं और 8वें पत्ते पर अपना नाम लिखकर भगवान शंकर को अर्पित करें। जब तक वैवाहिक सम्बन्ध न बन जाए, प्रत्येक सोमवार को यह क्रिया करें।

(iv) कन्या के रिश्ते की बात करने जब उसके पिता या भाई आदि जाने वाले हों तो कन्या लाल वस्त्र धारण कर एवं खुले बाल रखकर उन्हें अपने हाथों कोई मिठाई खिलाकर विदा करें। इससे उसका रिश्ता अवश्य तय होने की सम्भावना बढ़ जाएगी।

(v) जिस युवक के विवाह में विलम्ब हो रहा हो, वह 21 मंगलवार को संध्या समय किसी भी हनुमान मन्दिर में जाकर उनके माथे से थोड़ा-सा सिंदूर लेकर उसी मन्दिर में राम-सीता की मूर्ति के चरणों में लगा दें और शीघ्र विवाह हेतु उनसे निवेदन करें।

(vi) पूर्णिमा को वटवृक्ष की 108 परिक्रमा करने वाली कन्या का विवाह शीघ्र होता है।

(vii) शीघ्र विवाह के लिए सोमवार को 1200 ग्राम चने की दाल व सवा लीटर कच्चा दूध दान करें। जब तक विवाह न हो, तब तक यह प्रयोग करते रहें।

(2) सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए उपाय—

(i) यदि पति और पत्नी दोनों एक-दूसरे के मनोभावों को नहीं समझते, छोटी-छोटी बातों से वैमनस्य एवं अशान्ति पैदा हो रही हों, तो प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करके किसी मन्दिर में जाकर शिवलिंग की पूजा करके निम्न मन्त्र की पाँच माला करें—

ॐ नमः संभवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय
च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

(ii) शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ कर यह प्रयोग लगातार 7 या 11 मंगलवार करें। यदि सम्भव हो, तो प्रतिदिन करें। हनुमान जी की प्रतिमा लेकर चन्दन, पीला सिन्दूर और देसी घी से तिलक लगाएं। श्री हनुमान जी से इसी बात की प्रार्थना करती है कि जिस प्रकार आपने सीता और श्रीराम का मिलन करवाया था, उसी प्रकार मुझे मेरे पति की प्राप्ति कराएं।

दारिद्रदुःखदहनं विजयं विवादे, कल्याण साधनमंगलवारणं च।
दाम्पत्यदीर्घसुख सर्वमनोरथाप्ति, श्री मारुतेः स्तवमहो नितरां तनोति॥

हर बार मन्त्र उच्चारण के पश्चात् ललाट से पूँछ तक तिलक लगाएं, तत्पश्चात् पूंछ से ललाट तक पुनः यही क्रिया सम्पन्न करें। प्रतिदिन कम-से-कम 21 बार अवश्य इस मन्त्र का जप करें। प्रति मंगलवार एक माला का पाठ करें। मन्त्र जप करते हुए मन ही मन हनुमान जी से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे हनुमान ! जिस प्रकार आपने माता सीता को उनके अधीष्ठ राम से मिलवाया था, उसी प्रकार मेरे मार्ग की सभी बाधाओं तथा विपदाओं का शमन कर मुझे मेरे पति से मिलवाने की कृपा करें।

(iii) दाम्पत्य जीवन में प्रेम की वृद्धि के लिए पति द्वारा भोजन करने के बाद उसके बचे भोजन में से एक निवाला पत्नी अवश्य खाएं, किन्तु अपने बचे भोजन में से उसे न खाने दें।

(iv) जो स्त्री शनिवार को चमेली के तेल का दीप जलाकर श्रीसुन्दरकाण्ड का पाठ करती है, उसका दाम्पत्य जीवन सुखों से युक्त रहता है।

(3) सन्तान प्राप्ति के लिए—

(i) सन्तान प्राप्ति के लिए, विशेष रूप से पुत्र प्राप्ति के लिए सबसे प्रमुख उपाय 'सन्तान गोपाल मन्त्र' का है। निम्न मन्त्र के पाठ के साथ सन्तान गोपाल स्तोत्र का भी पाठ कर लेना चाहिए।

मन्त्र— **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,**
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

भगवान कृष्ण के बालरूप का चित्र अपने कक्ष में लगा लें। प्रातःकाल 108 बार मन्त्र का पाठ एक वर्ष तक लगातार करें। पति-पत्नी दोनों में से कोई एक अथवा दोनों जाप करें, तो ओर भी अधिक ठीक होगा।

(ii) सन्तान-प्राप्ति के लिए श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के दिन व्रत का संकल्प लेकर प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर श्वेत वस्त्र धारण करें। पत्नी लाल वस्त्र पहनें और घर के पूजा-स्थल में श्रीकृष्ण के बालरूप का चित्र व सन्तान गोपाल यन्त्र को स्थापित करें। घी का दीपक जलाएं तथा एक सेब, मक्खन, शहद, शिवलिंगी के 6 बीज और नागकेशर के 21 दाने एवं दोनों हाथों पर बांधने के लिए लाल रेशमी धागे अर्पित करें। फिर तुलसी की माला से '**ॐ कृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्**' का एक माला जाप करें। इसके स्थान पर 'सन्तान गोपात्र मन्त्र' का भी पाठ कर सकते हैं। जाप के बाद सन्तान प्राप्ति के लिए निवेदन करें। लाल धागों को पत्नी बाएं और पति दाएं हाथ में बांध लें और भोग को प्रसाद रूप में ग्रहण करें।

(iii) सन्तान न होने के कारण सदा चिंतित रहने वाले दम्पत्ति को चाहिए कि वे बागवानी करें, एक फलदार पौधा लगाकर नित्य उसकी देखभाल करें, उसे फलने-फूलने दें।

(iv) पुत्रदा एकादशी का व्रत (पौष शुक्ल एकादशी) रखने से भी दम्पत्ति की सन्तान मनोकामना पूर्ण होती है।

(v) जब गर्भधारण हो गया हो, तो एक चाँदी की बांसुरी बनाकर राधा-कृष्ण के मन्दिर में पति-पत्नी दोनों गुरुवार के दिन चढ़ाएं, तो गर्भपात नहीं होगा।

(4) अच्छे स्वास्थ्य के लिए

(i) **सिर दर्द**—शनिवार एवं मंगलवार को हनुमान जी के पैरों पर लगे सिंदूर का तिलक लगाते रहने से सिर दर्द की शिकायत काफी कम हो जाती है।

(ii) **उच्च रक्तचाप**—एक बार रक्तचाप बढ़ जाए तो उसका पूर्ण इलाज औषध विज्ञान में नहीं हो पाता। दवा लेते रहने पर यह केवल नियन्त्रण में रहता है। अतः उच्च रक्तचाप से मुक्ति के लिए रुद्राक्ष की माला काले धागे में पिरोकर पहनें। काला धागा लेना ज़रूरी है। विशेष लाभ हेतु तांबे का कड़ा पहनें तथा '**ॐ भौमाय नमः**' मन्त्र का नित्य जप करें। मन्त्र जप जब तक करें, भोजन में नमक की मात्रा कम रखें।

(iii) यदि छोटा बालक बीमार हो, तो उसके वज़न के बराबर बाजरा लें, उसमें से 7 मुट्ठी बाजरा प्रतिदिन बालक पर से 1 बार वार कर, छोटी-छोटी चिड़ियों को सूर्योदय से पहले डालें, आराम मिलेगा।

(iv) **नेत्र रोगों के लिए**—नेत्र ज्योति कम हो जाने, दृष्टि में दोष आ जाने, फूला, चौंधिया या आधा शीशी आदि से नेत्रों में खराबी आ जाने आदि की निवृत्ति के लिए 'नेत्रोपनिषद स्तोत्र' के एक हज़ार पाठ करवाकर सूर्य नारायण की उपासना और रविवार का व्रत करना चाहिए।

(5) आर्थिक समृद्धि एवं सम्पन्नता के लिए उपाय—

(i) कोई भी जातक यदि श्री 'श्रीयन्त्र' के सामने नियमित रूप से अथवा प्रत्येक शुक्रवार को श्री 'श्रीसूक्त' तथा बीजयुक्त 'लक्ष्मी सूक्त' का पाठ कर सकें तो कभी भी आर्थिक समस्या से ग्रस्त नहीं रहेंगे। इसका प्रभाव आप स्पष्ट रूप से सात शुक्रवार के पाठ से ही देखने लगेंगे।

(ii) आर्थिक सम्पन्नता बनाए रखने के लिए दीपावली पूजन के समय चाँदी की एक डिब्बी के साथ थोड़ी-सी नागकेशर व शहद का पूजन करें। अगले दिन प्रातः चाँदी की डिब्बी में नागकेशर के साथ सहद को भी चाँदी की डिब्बी में रखकर और उसे लाल वस्त्र में बांधकर धन रखने के स्थान पर रख दें।

(iii) भोजन करने से पहले गाय, कुत्ते और कौए के लिए एक-एक रोटी निकाल दें। इस क्रिया से कभी भी आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

(iv) शुक्लपक्ष के पहले शुक्रवार से लगातार 3 शुक्रवार तक लक्ष्मीनारायण मन्दिर परिसर में संध्याकाल में 9 वर्ष से कम आयु की 11 कन्याओं को खीर के साथ मिश्री का भोजन कराएं तथा विदा करते समय लाल वस्त्र भेंट स्वरूप प्रदान करें। इस उपाय से सम्पन्नता आती है।

(v) प्रत्येक शनिवार को संध्याकाल में पीपल के वृक्ष को मीठा जल और आटे का दीपक बनाकर, सरसों का तेल, एक लोहे की कील व साबुत उड़द के 11 दाने डालकर धूप-दीप के साथ अर्पित करें तथा बाएं हाथ से पीपल वृक्ष की जड़ को स्पर्श करके माथे से लगाएं व सात परिक्रमा करें (स्त्रियां परिक्रमा न करें) तो कुछ ही समय में आर्थिक तंगी दूर हो जाती है।

(6) ऋण (कर्ज़) मुक्ति के लिए उपाय—

सदैव अपनी आर्थिक एवं समर्थता को देखते हुए बैंक या किसी व्यक्ति से कर्ज़ लेना चाहिए। द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर-योगों में भी कभी कर्ज़ न लें। निम्न उपाय करने से अवश्य कष्ट में कमी आएगी—

(i) निम्न स्तोत्रों में से किसी का भी नियमित पाठ करने से आय के साधनों में वृद्धि, यदि कोई धन दबाकर बैठ गया हो, तो वह लौटाने को भी विवश हो सकता है—श्रीकनकधारा स्तोत्र, ऋणहर्ता गणपति स्तोत्र, ऋणमोचक मंगल स्तोत्र, श्रीसूक्त पाठ, गजेन्द्र मोक्ष, कुबेर मन्त्र का पाठ करें।

(ii) ऋण-मुक्ति के लिए बुधवार को गाय को हरी घास अवश्य खिलायें। यदि ऋण मुक्त होने के बाद भी खिलाते रहेंगे-तो आपका व्यवसाय और अधिक उन्नति करेगा।

(iii) प्रत्येक बुधवार को किसी श्रीगणेश मन्दिर में जाकर मोदक का भोग अर्पित करें तथा 11 परिक्रमा दें। परिक्रमा करते समय 'ॐ गं गणपत्यै नमः' का जप करें।

(iv) जब तक आपका ऋण पूर्ण रूप से समाप्त न हो जाए तब तक नियमित रूप से पीपल वृक्ष को जल अर्पित करें और उसकी गीली मिट्टी से तिलक करें। इसके प्रभाव से भी आप शीघ्र कर्ज़ मुक्त होंगे।

(7) बालक के अस्वस्थ होने पर—

यदि पैदायश के तुरन्त बाद बालक/बालिका अस्वस्थ हो जाए अथवा 1 वर्ष के भीतर बालक किसी गम्भीर रोग से पीड़ित हो, तो बालक की माता या पिता को षष्ठी देवी स्तोत्र का पाठ एवं षष्ठी देवी पूजन करना चाहिए। इसके लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित 'जन्मदिन पूजा पद्धति' का अवलोकन भी अवश्य करें।

वर-कन्या का मेलापक—आधुनिक सन्दर्भ में

भारतीय जीवन पद्धति में नर-नारी का विवाह-संस्कार विशेष महत्त्व रखता है। सुखी वैवाहिक जीवन पर ही मनुष्य के भावी जीवन की सफलता/असफलता, सुख-दुःख, लाभ-हानि, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन निर्भर करता है। महर्षि कश्यप अनुसार विवाह संस्कार ही गृहस्थाश्रम की आधारशिला है, क्योंकि इसी आश्रम के माध्यम से मनुष्य देव, ऋषि एवं पितृ—इन तीनों ऋणों से उऋण होकर धर्म, अर्थ और कामार्थ अभीष्टों की पूर्ति करता है—

गृहस्थाश्रममुत्तमम् च आधारोऽन्याश्रमाणां भूतानां प्राणिनां तथा—(कश्यप)॥

वसिष्ठानुसार गृहस्थाश्रम के समान कोई उत्तम धर्म नहीं—

''कश्चिद् गृहस्थाश्रम समो न परोऽस्तिधर्मः।''

इस प्रकार विवाह एक उच्चकोटि का पवित्र पर्व एवं धार्मिक सम्बन्ध है। बौद्धिक एवं वैज्ञानिक रूप से यद्यपि आधुनिक मानव स्वयं को अत्यन्त उन्नत एवं बुद्धिमान मानने लगा है। बौद्धिक एवं भौतिक रूप से सम्पन्न होते हुए भी, ऐसा प्रायः देखने को मिलता है कि अधिकांश विवाहित दम्पत्तियों के वैवाहिक एवं गृहस्थ जीवन में सामञ्जस्य की कमी एवं असन्तोष बना रहता है। कुछ सम्बन्धों में तो नौबत तलाक तक पहुँच जाती है। ईश्वर की विराट शक्ति के समक्ष मनुष्य की सीमित बुद्धि नितान्त पंगु दिखती है। लाख सतर्कता बरतने के बावजूद मनुष्य के द्वारा किए गए निर्णय एवं निष्कर्ष कई बार त्रुटिपूर्ण एवं असफल सिद्ध हो जाते हैं। हमारे वैदिक साहित्य, महाकाव्यों एवं पौराणिक ग्रन्थों में तो वर-कन्या का चुनाव अधिकांशतः उनके वैयक्तिक एवं परिवारिक गुणों तथा बाह्य आकर्षण पर ही आधारित पाया गया है। वर के गुणों में श्रेष्ठ कुल, गोत्र, अच्छा स्वास्थ्य, अच्छी शिक्षा, अच्छा चरित्र, कन्या के अनुरूप अवस्था, गृहस्थी चलाने योग्य आजीविका, सिर पर किसी वृद्ध या गणमान्य की छाया आदि प्रमुख गुण विचारणीय होते थे। जबकि कन्या के गुणों में आकर्षक नयन नक्श, अच्छा स्वास्थ्य, शालीन स्वभाव, समुचित शिक्षा, भाग्यशालिनी, पतिव्रता, सन्तति सुख आदि के गुण विशेषतः विचारणीय होते हैं।

प्राचीनकाल एवं पौराणिक युग में समृद्ध लोग अपने कुल पुरोहित की सहायता अथवा उनके निर्देशानुसार अपने लड़के या कन्या के उपयुक्त साथी का चयन करने की परम्परा थी। कुछ उत्कृष्ट राजवंशों में **स्वयंवरों** की भी प्रथा थी। इसी कारण हमारे शास्त्रों में **१. बाह्म, २. दैव, ३. आर्ष, ४. प्रजापत्य, ५. असुर, ६. गान्धर्व, ७. राक्षस, ८. पैशाच** आदि आठ प्रकार के विवाह प्रणालियों के वर्णन मिलते हैं। **स्वयंवर प्रथा** गान्धर्व विवाह के अन्तर्गत ही आती थी। रामायण, महाभारत महाकाव्यों में तथा शिवपुराण, नारद-पुराण, स्कन्द, श्री भागवत, विष्णु आदि पुराणों में स्वयंवर प्रथा के विशद वर्णन मिलते हैं। ऐतिहासिक युग में पृथ्वीराज चौहान के काल में स्वयंवर प्रथा प्रत्यक्ष साक्ष्य है।

कालान्तर में वसिष्ठ, नारद आदि आचार्यों तथा मुहूर्त चिन्तामणि, मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह-वृन्दावन, ज्योतिर्निबन्ध आदि ग्रंथाकारों द्वारा मेलापक में **वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों** के आधार पर मुख्यतः मिलान किया जाता है। नक्षत्र मिलान के अन्तर्गत अष्टकूटों (आठ तत्त्वों) पर विशेषतया विचार किया जाता है। अष्टकूट (8 तत्त्व) इस प्रकार से हैं—(१) वर्ण, (२) वश्य, (३) तारा, (४) योनि, (५) ग्रह मैत्री, (६) गण, (७) भकूट, (८) नाड़ी।

प्रत्येक कूट (तत्त्व) का क्रम अनुकूल होने पर अपने-अपने गुणों का द्योतक है। वर्णादि अष्टकूटों में उनके क्रमानुसार ही गुणों की संख्या की गणना की जाती है, जैसे—**वर्ण का १, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रह मैत्री के ५, गण मैत्री के ६, भकूट के ७, और नाड़ी के ८ गुण** माने जाते हैं। वर्णादि सभी अष्टकूटों का जोड़ (१+२+३+४+५+६+७+८ = कुल जोड़ **३६ गुण बनता** है। यद्यपि प्रत्येक कूट (तत्त्व) का अपना-अपना महत्त्व है। परन्तु इनमें से **ग्रह मैत्री, गण, भकूट** एवं **नाड़ी** दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है।

३६ गुणों में से 16-17 गुण मिलते हों, तो **निम्न कोटि** का मिलान, **18 से 21** तक गुण हों, तो **मध्यम कोटि** का तथा **22 से 28 तक** गुण प्राप्त हों, तो **उत्तम कोटि** का और **29 से 35** तक गुण मिलते हों, तो **सर्वोत्तम कोटि** का मिलान माना जाता है। **अष्टकूटों पर आधारित विस्तृत स्पष्टीकरण इसी पंचाँग के अन्यत्र (मेलापक सारिणी से पूर्व) पृष्ठों पर देखें।**

परम्परया गुण मिलान के पश्चात् सामान्य दैवज्ञों द्वारा वर-कन्या की कुण्डलियों में **मंगलीक दोष** पर विचार किया जाता है। यदि वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में मंगलीक दोष (1-4-7-8 या 12वें भावों में मंगल होना) पाया जाए, तो 18 या उससे अधिक गुणों के मिल जाने पर सामान्यतः विवाह कर दिया जाता है।

अनेक वर-कन्या की कुण्डलियों के अध्ययन से, हमारे अनुभव में आया है कि उपरोक्त स्थूल रूप से मिलान की गई कुण्डलियों के पश्चात् भी जातक/जातिका का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहा। कई बार तो मिलान के बाद बात सम्बन्ध-विच्छेद (Divorce) तक जा पहुँचती है।

हमारे मतानुसार वर-कन्या के गुण मिलान एवं **मंगलीक दोष** पर अन्तिम निर्णय करते समय ज्योतिष सम्बन्धी अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्वों एवं तथ्यों पर भी ध्यान देना चाहिए। जैसे—मंगलीक दोष सम्बन्धी शास्त्रोक्त परिहार वाक्य, सप्तम, द्वितीय (कुटुम्ब), अष्टम एवं द्वादश भावों में (मंगल के अतिरिक्त) अन्य शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एवं उनकी दृष्टि का विचार, **सप्तमेश, द्वितीयेश, लग्नेश** व **भाग्येश** आदि ग्रहों की स्थिति, विवाह-सुख कारक ग्रहों

जैसे—शुक्र, चन्द्र एवं गुरु आदि ग्रहों की स्थिति, वर-कन्या की **शुभाशुभ ग्रह दशा,** नवमांश आदि षडवर्गों में लग्नेश, सप्तमेश एवं कारक ग्रहों की स्थिति, चलित-कुण्डलियों में सप्तमेश एवं भौमादि ग्रहों की स्थिति पर भी विचार करना आवश्यक होता है।

आधुनिक युग में जबकि लड़की का सामाजिक, शैक्षणिक एवं वैयक्तिक स्तर बढ़ चुका है। अतएव वर-कन्या के विवाह से पूर्व अष्टकूट गुण-मिलान के अतिरिक्त अन्य तत्त्वों पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए। जैसे **राशियों के तत्त्व-विचार** मेष, सिंह व धनु राशियाँ **अग्नि तत्त्व** राशियाँ कहलाती हैं।

वृष, कन्या एवं मकर **पृथ्वी तत्त्व,** मिथुन, तुला व कुम्भ राशियाँ **वायु तत्त्व** तथा कर्क, वृश्चिक व मीन राशियाँ **जल तत्त्व** वाली राशियाँ कहलाती हैं।

(*i*) **पृथ्वी तत्त्व** की राशियों वाले जातकों/जातिका की मित्रता पृथ्वी तत्त्व, अग्नि तत्त्व, तथा वायु तत्त्व वाले जातक/जातिका के साथ रहती है। परन्तु पृथ्वी और अग्नि तत्त्व के मध्य (*ii*) जल और अग्नि तत्त्व के बीच (*iii*) जल तत्त्व और वायु तत्त्व वाली राशि जातकों के मध्य शत्रुता एवं वैमनस्य भाव होगा।

वर-कन्या की कुण्डलियों में मंगलीक दोष के अतिरिक्त अन्य अशुभ योगों का भी विचार करना चाहिए क्योंकि शनि, सूर्य, राहु, केतु अथवा अशुभ गुरु या पापी चन्द्र भी वैवाहिक जीवन में कष्टकारी हो सकता है—

लग्नेपापा व्यये पापाः पाताले च सप्तने तथा।
भार्या भर्तृ विनाशाय भर्ता भार्या विनाशयेत्॥

आधुनिक सन्दर्भ में सुखकारी एवं मंगलकारी भावी वैवाहिक सम्बन्धों के लिए वर-कन्या **दोनों के परिवारों की पृष्ठ भूमि,** वर-कन्या का **आर्थिक स्तर**—अर्थात् लड़का व लड़की-दोनों सर्विस में या व्यवसाय में कार्यरत हों तो अच्छा है।

वर-कन्या—दोनों का **आर्थिक स्तर** अर्थात् यदि लड़का व लड़की दोनों सर्विस में या व्यवसाय में कार्यरत हों तो अच्छा है।

वर-कन्या दोनों का **शैक्षणिक स्तर वर-कन्या के निवास का प्रादेशिक समानता** या **अन्तर**। वर-कन्या की **बौद्धिक समानता**—वर कन्या की **व्यावसायिक प्रतिष्ठा** (**Professional Status**)— इत्यादि बहुत से पहलू हैं जिन पर विचार करने की आवश्यकता होनी चाहिए।

आजकल बदलते परिवेश वर-कन्या के मिलान के लिए सामाजिक, स्थानिक, वैचारिक आदि धारणाओं को ध्यान में रखते हुए विवाह का अन्तिम निर्णय करना उचित होगा। अधिक विवरण के लिए हमारी प्रकाशनाधीन पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

—शुभ चिन्तक
पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी
गणितकर्त्ता

सन्तान सुख बाधाकारक योग एवं निवारण

ज्योतिष शास्त्र में संतान सम्बन्धी विशेष योग एवं विचार के लिए पति-पत्नी दोनों की वृहद-जन्मपत्रियों का होना आवश्यक है। दोनों की जन्मकुंडली, चंद्रकुंडली के पंचम स्थान से विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रहमैत्री, नवमांश, चलित की स्थिति सप्तमांश कुंडली, पंचम भावस्थ ग्रह, पंचमेश एवं पंचम भावस्थ ग्रह के राशिस्वामी आदि ग्रहों एवं उनकी दृष्टियों अष्टकवर्ग में ग्रहों के बलाबल का विचार करना आवश्यक होता है।

विशेष रूप से बृहस्पति को संतानकारक ग्रह माना गया है। पंचम भाव, पंचमेश, ग्रह एवं बृहस्पति का जन्म कुंडली में स्थान आदि से सन्तान सम्बन्धी विशेष योग आदि का निर्णय किया जाता है। ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टि से नीचे दिए गए योग जातक/जातिका की जन्मकुंडली में हो तो सन्तान योग बनता है।

सन्तान योग

(क) स्त्री की कुण्डली में उपचय स्थान (3, 6, 10 एवं 11 वें) में गोचरवश बलवान् चन्द्र व मंगल आ जावे अथवा स्वराशि या स्वनवांश में आने पर उस मास एवं उस दिन में स्त्री को गर्भ स्थिति होनी सम्भव होती है।

(ख) पंचम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो उस स्त्री को पुत्र सन्तान अधिक होती है।

(ग) पंचम भाव में चन्द्र, शुक्र या शनि हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(घ) पंचम में जितने ग्रह हों और इस स्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो, उतनी संख्या में सन्तान संख्या जाननी चाहिए। पुरुष ग्रहों के योग और दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहों के योग और दृष्टि से कन्या सन्तति की संख्या का अनुमान करना चाहिए।

(ङ) सूर्य, गुरु, मंगल तथा पंचमेश ग्रह- ये चारों पुरुष राशि के नवांश में हों अथवा कुण्डली में पुरुष ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो पुत्रों की संख्या अधिक होती है।

(च) पंचम में स्त्री ग्रह हों अथवा पंचमेश स्त्री ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, नवम् में भी शुक्र हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(छ) पंचम, अष्टम या 12 वें भावों में पापग्रह हों, तो सन्तान सुख में कमी होती है। *लग्न में चन्द्र-गुरु का योग हो और सातवें भाव में शनि या मंगल हो तो सन्तान अभाव का योग होता है।

* सातवें भाव में बुध-शुक्र, चतुर्थ भाव में पाप ग्रह और पंचम भाव में अकेला गुरु हो, तो सन्तान प्रतिबन्धक योग होता है।

* लग्नेश, पंचमेश और नवमेश-ये तीनों ग्रह शुभग्रह से युक्त होकर 6, 8, 12वें भाव में पड़े हों, तो विलम्ब से सन्तान होती है।

* पंचमेश, पंचमेश द्वारा ग्रहीत राशि का स्वामी, पंचमेश द्वारा अधिष्ठित नवांश राशि का स्वामी अथवा गुरु स्थित राशि के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में पुत्र सन्तान प्राप्ति के योग होते हैं।

नोट—और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए विवाह एवं सन्तान सम्बन्धी हमारी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली ''सुत भाव प्रकाश'' फलित नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

सन्तान सुख में बाधाकारक अनिष्ट ग्रह

(क) सूर्य पंचम भाव में नीच (तुला) राशि का होकर पड़ा हो, तथा नवांश कुण्डली में सूर्य शनि की राशि में होकर पाप पीड़ित हो, अथवा सूर्य अष्टम भाव में, शनि पंचम में तथा पंचमेश राहु से युक्त हो, अथवा गुरु सिंह राशि में हो, पंचम भाव में पाप ग्रह हों तथा पंचमेश सूर्य के साथ हो, तो पितृ श्राप दोष के कारण सन्तान सुख में कमी होती है।

(ख) सूर्य, गुरु एवं पंचमेश राहु, शनि, केतु आदि पाप ग्रहों से युक्त या आक्रान्त हों, तो भी पितृ दोष के कारण सन्तानाभाव या सुख में कमी होती है।

(ग) पंचमेश, पंचम या नवम भाव में चन्द्रमा राहु, शनि या मंगल आदि पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मातृ-श्राप के कारण सन्तान प्रतिबन्धक योंग होता है।

(घ) निष्कर्षतः—सन्तान बाधाकारक **सूर्य हो,** तो भगवान् शंकर और गरुड़ के क्रोध के कारण अथवा पितरों के श्राप का फल है। यदि सन्तान में प्रतिबन्धक **चन्द्रमा है,** तो माता या किसी अन्य स्त्री के चित्त को दुःख पहुँचाने के कारण या भगवती का शाप या (अनादर) सन्तान सुख में बाधाकारक होता है—

द्रोहात् शंभु सुपर्णयो हि सुतः शापात् पितृणां रवेः,
इन्दोः मातृ सुवासिनी भगवती कोपात् मनोदोषतः। फलदीपिका॥

यदि मंगल सन्तान बाधक हो, तो ग्राम देवता, भगवान् कार्तिकेय स्वामी की अवज्ञा करने से अथवा भाई बन्धुओं के श्राप से या शत्रुओं के दुष्ट व्यवहार से सन्तान सम्बन्धी कष्ट होता है।

● यदि बुध सन्तान सुख में बाधक हो, तो बिल्ली को मारने, मछलियों या किसी अन्य प्राणियों के अण्डों को नष्ट करने या छोटे बालक, बालिका के श्राप से या भगवान विष्णु के कोप से सन्तान कष्ट होता है।

● यदि कुण्डली में गुरु (बृहस्पति) सन्तान सुख में बाधाकारक हो, तो यह समझना चाहिए कि जातक ने पिछले जन्म अपने कुल गुरु या कुल पुरोहित से द्रोह किया है पूर्व जन्म में फलदार वृक्षों को काटा है। शेष पृष्ठ 75 पर देखें

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयरों में मन्दा-तेज़ी-सन् 2009 ई०

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव हर वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेज़ी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाज़िर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विंशोंन्तरी ग्रह दशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म / वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रहदशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रह दशा अकस्मात् धन हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी कि हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गत् संवत 2063, 2064, 2065 में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रह स्थिति एवं तेजी-मन्दी के चांसों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए।

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेज़ी की विशेष लाइनों एवं तूफ़ानी तेज़ी आदि का विवरण लिख रहे हैं। यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेज़ी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाज़िर बाज़ार का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 551 रु., 2 मास की फीस 1000 रु० होगी। पूरी फीस अग्रिम भेजें। रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें—

—पं० विवेक शर्मा C/o पं० देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब) फोन 0181-2457959

● **जनवरी**—31 दिसम्बर की रात्रि को शनि वक्री होने से सोयाबीन, तेल, तिलहन, सोना, चांदी, क्रूयड-आयल, शेयरों में आयल तथा एनर्जी सेक्टर में विशेष तेजी देखने को मिलेगी। 3 जन. तक अच्छी घटाबढ़ी रहेगी। 4 जन. को शुक्र शतभिषा तथा बुध श्रवण नक्षत्र में आने से गेहूँ, गुड़, खांड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चांदी, अलसी, चना में तेजी बनेगी।

5 जन. को मंगल पू.षा में आने से घी, तेल, सोना, चांदी, चावल, सरसों, रुई, कपास, सन् में तेजी बनेगी। 6 जन. को केतु पुष्य में आने से लोहा, सरसों तथा अन्य तिलहनों में तेज़ी बनेगी। 8 जन. को गुरु उ.षा.(4) में आने से गुड़, चीनी, ग्वार के भावों में तेजी बनेगी। गुरु की अतिचारी गति के कारण रुई, चने, ग्वार में जोरदार तेजी बन सकती है।

10 जन. को सूर्य उ.षा. में आने से उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खांड, शक्कर, सरसों, सोयाबीन, लाल-मिर्च, रूई में तेजी बनेगी।

11 जन. को बुध वक्री तथा गुरु पश्चिम में अस्त होने से रुई, घी, गुड़, शेयर बाज़ार (बैंकिंग सेक्टर), खाण्ड, शक्कर, चने में तेजी, सोना, चांदी, उड़द में कुछ मन्दी बनेगी।

13 जन., मंगलवार को सूर्य मकर राशि में आकर बुध, गुरु एवं राहु के साथ मेल करेगा। मकर संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति है। मंगल एवं गुरु-दोनों अतिचारी हैं तथा अस्त भी हैं। अफवाहों का बाज़ार गर्म रहे। **घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, रूई, खाण्ड और शेयरों में तेजी की लाईन बने।** सोना, चांदी, अनाज, बारदाना, मूँगफली में तेजी बनकर अचानक मन्दी का रुख बनेगा। **14 जन. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चांदी, रूई, घी में अच्छी तेजी बनेगी।**

16 जन. को शुक्र पू.भा में तथा 17 जन. को बुध उ.षा में आने से रुई, घी में तेजी, अनाज, गेहूँ में मन्दी बनेगी।

22 जन. को गुरु श्रवण में आने से गुड़, खांड, सोना, चांदी, रूई, घी, चावल तथा अनाजों के भावों में मन्दी बनेगी।

23 जन. को सूर्य श्रवण में आने से गेहूँ, जौं, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चांदी, गुड़, खांड, अलसी, सुपारी, लौंग, लाल-मिर्च में तेजी बने। 24 जन. को मंगल उ.षा. में आने से रुई में विशेष तेजी, धान्य, घी, तेल, सरसों, उड़द में भी तेजी रहेगी।

26 जन. को वक्री बुध धनु राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा तथा इसी दिन कंकण सूर्यग्रहण दक्षिण भारत में दिखाई देगा। घी, गुड़, सोना, चांदी, खाण्ड, शक्कर, कॉपर, लाल मिर्च, गेहूँ, उड़द में विशेष तेज़ी बनेगी। इसी दिन वक्री बुध पूर्व में उदय होने से गेहूँ, चना, चावल, तिलहन, खाद्य तेल, कपास, खल-बिनौला तथा शेयरों में भी तेजी बनेगी।

27 जन. को मंगल मकर राशि में आकर सूर्य, गुरु एवं राहु के साथ मेल करेगा। मंगल एवं गुरु अतिचारी हैं। रूई, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी, लाल-मिर्च

में तेजी तथा चना, अनाजों (गेहूँ, चावल) में मन्दी बनेगी। इसी दिन शुक्र मीन राशि में जाने से चांदी में पहले मन्दी का झटका लगने के बाद ही तेजी बनेगी। ताजा मशवरा प्राप्त करें।

30 जन. को शुक्र उ.भा. में आने से चावल, मोती, चांदी, कपूर, नमक, खांड, रूई, कपास, चीनी, घी में मन्दी का रुख बनेगा।

शेयर-बाज़ार—इस मास की 1, 2, 10, 12, 13, 14, 20, 21, 26, 27, 28 तारीखें विशेष तेजीकारक रहेंगी।

● **फरवरी**—1 फर. को बुध मार्गी होने से रूई में पहले मन्दी बाद में तेजी रहे। सोने-चांदी, कॉपर में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी। तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चंदन में मन्दी बनेगी। शेयरों में तेजी बनेगी।

5 फर. को सूर्य धनिष्ठा में, गुरु श्रव (2) में तथा वक्री शनि पू.फा. (4) में आने से सोना, सरसों, गेहूँ, जौं, चना, उड़द, मूंग, तिल, मूंग, मसूर में तेजी बनेगी। रुई में घटाबढ़ी रहेगी।

7 फर. को बुध मकर राशि में आकर सूर्य, मंगल, गुरु एवं राहु के साथ मेल करेगा। इस पंचग्रही योग के प्रभावस्वरूप तथा मंगल उदय होने से रूई, उड़द, तिल, तेल, सोना, चांदी, गुड़ में अच्छी तेजी बनेगी।

9 फर. को मंगल श्रवण में आने से जौं, चना, तिल, कॉपर, सोना, चांदी, सोयाबीन में तेजी बनेगी। 10 फर. को गुरु उदय होने से चांदी, चना, उड़द में तेजी, सोने में घटाबढ़ी के बाद मामूली मन्दी बनेगी।

12 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में तथा 13 फर. को नैपच्यून भी कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएंगे। घी, गेहूँ, सरसों, सोयाबीन, क्रूड-आयल, सोना, चांदी, कॉपर, मूंगफली, खाद्य-तेल, सोयाबीन, अलसी, शक्कर, खाण्ड, तेल-तिलहन आदि में अच्छी तेजी बनेगी। शेयर-बाज़ार में विशेष घटाबढ़ी होगी।

18 फर. को बुध श्रवण तथा शुक्र रेवती में आने से गुड़, खांड, अलसी, चना, चावल में तेजी बनेगी, चांदी, रूई में मन्दी बने।

19 फर. को सूर्य शतभिषा में आने से सोना, चांदी, सूत, सन, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, हल्दी, लाल-मिर्च, गेहूँ, गुड़ में तेजी बनेगी।

20 फर. को गुरु श्रव.(3) में आने से गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी तथा अनाजों के भावों में मन्दी बनेगी।

24 फर. को भौमवती अमावस्या भी लगभग सभी व्यापारिक जिन्सों में तेजीकारक रहेगी। 26 फर. को मंगल धनिष्टा में आने से राई, जौं, पीपल, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, जिस्त, लोहा तेज होगा, गुड़, शक्कर, खांड, घी, रूई, कपास अनाज में मन्दी बनेगी।

28 फर. को बुध धनिष्ठा में आकर चावल, घी में तेजी, सोना, चांदी में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी करेगा।

शेयर बाज़ार—इस मास की 1, 2, 7, 8, 12, 18, 19, 24 तारीखें शेयर मार्किट के लिए तेजीकारक रहेंगी।

● **मार्च**—मासारम्भ में वायदा एवं हाजिर बाज़ार में अच्छी घटाबढ़ी रहेगी। 4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आने से सोना, चांदी, कॉपर, क्रूड-आयल, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, सोयाबीन, तिल, तेल, गुड़, खांड में तेजी बनेगी। रात्रि बाद बुध भी कुम्भ राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। रूई, चांदी, घी, गुड़, खांड में अच्छी झटके के साथ तेजी लाएगा। यहां सूर्य-बुध का शनि के साथ सप्तम दृष्टि सम्बन्ध चल रहा है।

6 मार्च को शुक्र वक्री होने तथा गुरु श्रव (4) में आने से रुई में पहले तेजी, फिर मन्दी, घी, तेल, गुड़, चीनी, शक्कर, चना, गेहूँ और जौं में तेजी बनेगी। अलसी, सोयाबीन, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी चलेगी।

7 मार्च को मंगल कुम्भ राशि में आकर सूर्य, बुध के साथ मेल करेगा। सू.,बु.,मं. का शनि के साथ समसप्तक योग बनेगा। सोना, चाँदी, कॉपर, गुड़, सोयाबीन, गेहूँ, उड़द, चना, क्रूड-आयल में अच्छी तेजी बनेगी।

9 मार्च को बुध शतभिषा में आने से सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी। 10 मार्च को राहु श्रवण(1), केतु पुष्य(3) में आने से गेहूँ, अलसी, सोयाबीन में तेजी रहेगी।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रूई, सोना, कॉपर में तेज़ी बने। गेहूँ, चावल आदि सब अनाजों में पहले तेज़ी, बाद में मन्दी बनेगी। चाँदी में मामूली मन्दी बनेगी।

15 मार्च, को मंगल शतभिषा में आने से रूई, सोना, चाँदी, घी, जिस्त, कॉपर में पहले मन्दी बनकर, बाद में तेजी बनेगी।

16 मार्च को बुध पूर्व में अस्त होने से अनाज, घी में मन्दी; रूई में घटाबढ़ी रहेगी। सोना, चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में तथा बुध पू.भा. में आने से चावल, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूँ, तेल में तेजी तथा सोना, चांदी, तांबा, लोहा तथा अनाज में मन्दी और रूई में घटाबढ़ी होगी।

22 मार्च को बुध मीन राशि में सूर्य एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इसी दिन गुरु धनिष्टा में, वक्री शुक्र उ.भा. में तथा शनि पू.फा.(3) में आएगा। व्यापारिक वस्तुओं, जिन्सों में विशेष उथल-पुथल के योग हैं। सोना, चांदी, कॉपर में पहले तेजी के बीच अच्छी घटाबढ़ी रहे, बाद में अचानक मन्दी का रुख बने। रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, चावलादि अनाज, मूँग, उड़द, तिल, तेल, तिलहन में अच्छी घटाबढ़ी के बाद मामूली तेज़ी बनेगी।

24 मार्च को बुध उ.भा. में आने तथा शुक्र पश्चिम में अस्त होने से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जिस्त, हींग, केसर में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। रूई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूँ आदि में मन्दी बनेगी।

28 मार्च, शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से रूई, सूत, चांदी, सोना, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन में अच्छी तेजी बनेगी। 30 मार्च को शुक्र पूर्व में उदय होने से रूई, घी, सूत, चांदी, चावल में तेजी आएगी।

31 मार्च को सूर्य रेवती में तथा बुध भी रेवती नक्षत्र में आने से अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, रूई, गेहूँ, जौं, चना, चावल, केसर, मजीठ, लाल-चन्दन, लाल मिर्च आदि लाल वस्तुओं में तेजी बनेगी।

शेयर बाज़ार—इस मास की 4, 6, 7, 15, 22, 23, 31 मार्च को विशेष तेजी बनेगी।

● **अप्रैल**–2 अप्रैल को मंगल पू.भा. में आने से तिल, तेल, मूँगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, रूई, सूत, कपास, सोना, चांदी में तेजी बनेगी।

6 अप्रैल को बुध मेष राशि में आने से सोना, चांदी, कॉपर, गेहूँ, चना, जौं आदि अन्न, तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़, चीनी में मन्दी बनेगी।

9 अप्रै. को गुरु धनि. (2) में आने से गेहूँ, चावल जौं, चना आदि में मन्दी और रूई में घटाबढ़ी होगी।

12 अप्रै. को बुध पश्चिम में उदय होने से गेहूँ, चने, खल-बिनौले, गुड़, सोना, चाँदी, तांबा, पीतल, लोहादि धातुओं में तेजी बने।

13 अप्रैल को सूर्य मेष राशि में बुध के साथ मेल करेगा। वैशाख संक्रान्ति 15 मुहूर्ति है। रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी, सोना तेज होंगे। गेहूँ, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं, मटर आदि में मन्दी बनेगी।

14 अप्रैल को मंगल मीन राशि में आएगा। सोना, रूई, लाल मिर्च, चना, तांबा, जिस्त, अरहर में तेजी बनेगी। चांदी में पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी। 17 अप्रैल को शुक्र मार्गी होने से रूई में मन्दी, सोना, चांदी, मोती, धान्य, गुड़, घी, चीनी में आगे जाकर अच्छी तेजी बनेगी।

19 अप्रैल को मंगल उ.भा. में आने से सोना, चाँदी, रूई, गेहूँ, जौं, चना, लाल-मिर्च, चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ भी तेज होंगे। 21 अप्रैल को बुध कृतिका में आने से चाँदी, घी, अफीम, कपास, चना में घटाबढ़ी होकर मन्दी बने, रूई में तेजी बनेगी।

24 अप्रैल को बुध वृष राशि में तथा 25 ता. को शनिवासरी अमावस भी तेजीकरक रहेगी। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, तिल, तेल आदि में तेजी बनेगी।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी में आने से रूई, अलसी में मन्दी, सोना, चाँदी, ताँबा, मूँगा, पीतल, लोहा-चादर आदि गेहूँ, जौं, चना, चावल, मोंठ, अलसी, रूई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेज़ी बनेगी।

शेयर बाज़ार—इस मास की 13, 14, 27, 28 तारीखें शेयर बाज़ार में विशेष तेज़ीकारक रहेंगी।

● **मई**–मासारम्भ ता. 1 मई को गुरु कुम्भ राशि में आने से सोना, ताँबा, कांसा, पीतल, लोहा, चना, रूई, घी, कपास में पहले मन्दी बनकर फिर तेज़ी बनेगी। बाज़ार के रुक को देखकर धीरे-दीरे आगे बढ़ें।

6 मई को मंगल रेवती में आने से गेहूँ, चना, मूँग, मोठ, जौं, ज्वार, बाजरा में मन्दी रहेगी। रूई, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

9 मई को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी, घी में अच्छी तेजी, रूई, शेयर-बाज़ार में घटाबढ़ी के बाद तेजी, अलसी, चने, बिनौले भी तेज़ हों।

11 मई को सूर्य कृतिका में आने से घी, रूई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनेगी। 12 मई को राहु उ.षा.(4) तथा केतु पुष्य(2) में आने से अलसी, सरसों, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, कॉपर में अच्छी तेज़ी बने। जौं, चना, चावल में पहले तेज़ी बनकर फिर मन्दी बनेगी।

17 मई को शनि मार्गी होने से रूई में मन्दी के अच्छे झटके आएंगे, बाद में साधारण तेज़ी बने। सोना, चांदी, क्रूड-आयल, तिल, तेल, सरसों, हींग, सोयाबीन, मिर्च में झटके की तेज़ी बनेगी। परन्तु अचानक मन्दे का रुख भी बन सकता है। सावधानीपूर्वक कार्य करें।

23 मई को मंगल मेष राशि में प्रवेश करेगा। सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातु, ऊन, रूई, कपास, वारदाना तथा गुड़, रसादि पदार्थों में तेज़ी आएगी।

25 मई को सूर्य रोहिणी में तथा वक्री बुध मेष राशि में मंगल के साथ मेल करेगा। तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, मिर्च, सुपारी, राई, सोना, चाँदी, कॉपर में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। 26 मई को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से गेहूँ, चना, चावल, तिलहन, घी, खाद्य-तेल, रूई, कपास, खल-बिनौला, चाँदी तथा शेयरों में तेजी बने।

30 मई को शुक्र मेष राशि में मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। जौं, चना, गेहूं आदि अन्न, घी, सोना, चाँदी, कॉपर, गुड़, शक्कर, बारदाना में अच्छी तेज़ी बनेगी। ऊन, तिल, तेल, सरसों, अलसी, सोयाबीन में घटाबढ़ी रहेगी।

31 मई को बुध मार्गी होने से बैंकिंग शेयर्ज़, रूई, सोना, चाँदी, कॉपर, गेहूँ, जौं, चना, अनाज में तेज़ी बनेगी। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, चन्दन में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

शेयर बाज़ार—इस मास की 1, 2, 9, 11, 14, 17, 25, 29, 30, 31 विशेष तेज़ीकारक रहेंगी।

● **जून**–मासारम्भ में हाजिर बाज़ार में प्राय: सब वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी। 5 जून को बुध वृष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल, सोने में तेज़ी बनेगी।

7 जून को सूर्य मृगशिर में आने से रूई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, चना, बाजरा, अलसी, नारियल, कॉपर, जिस्त में तेजी बनेगी।

10 जून को मंगल भरणी में आने से सोना, चाँदी, कॉपर, जिंक, गेहूँ आदि अनाज, लाल मिर्च में तेजी बनेगी। 13 जून को शुक्र भरणी में आने से सोना, चाँदी, लाल-चन्दन, सरसों,

तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में मन्दी, चना, मूँग, रूई, चीनी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

14 जून, रविवार को सूर्य मिथुन राशि में आएगा। 15 मुहूर्त्ति ज्येष्ठ संक्रान्ति तेज़ीकारक रहेगी। रूई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल, बारदाना, सोना, चाँदी में तेज़ी बनेगी।

15 जून को गुरु वक्री होने से रूई, गेहूँ, जौं, चना, चावल, अलसी, और घी में मन्दी बनेगी। सोना, चाँदी, कॉपर में तेज़ी बनेगी। 17 जून को बुध रोहिणी में आने से रूई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खांड, कॉपर में तेज़ी आएगी। राई, रूई, कपास, घी में पहले तेज़ी फिर मन्दी बनेगी।

21 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आने से रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चाँदी में तेजी बनेगी। सोना, कॉपर, जिस्त, जिंक में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

26 जून को बुध मृगशिर में तथा शुक्र कृतिका में आने से जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, चाँदी, सोना, हीरा, कॉपर, मोती आदि जवाहारात में मन्दी बने।

29 जून को मंगल कृतिका नक्षत्र में आएगा। शुक्र वृष राशि में जाकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। सोना, चाँदी, कॉपर, सरसों, सोयाबीन, तिल, तेल, सोयाबीन, मूँग, चावल में अच्छी तेजी बनेगी। रूई, कपास में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

30 जून को बुध मिथुन राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, कॉपर, सरसों, तारामीरा, शेयरों में घटबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

शेयर रुख—ता० 5, 6, 10, 14, 21, 29 तेज़ीकारक रहेंगी।

● **जुलाई**—2 जुला. को बुध पूर्व में अस्त होने से घी, चावल में मन्दी, सोना, चाँदी, रूई, शेयरों में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। **3 जुला. को मंगल वृष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। लाल मिर्च, सोयाबीन, सोना, कॉपर, जिंक, तेल तिलु, शेयरों** (आयल, सोफ्टवेयर सेक्टर) **में विशेष तेजी देखने को मिलेगी।**

4 जुला. को बुध आर्द्रा में आने से गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ में मन्दी बनेगी। 5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु में आने से रूई, सोना, चाँदी, गुड़, खांड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, तिल, चावल, नमक, हरड़, उड़द, गुग्गुल आदि सुगन्धित किरयाना पदार्थों में तेजी बनेगी।

8 जुला. को शुक्र रोहिणी में आने से सोना, चाँदी, कॉपर, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, नारियल में मन्दी बनेगी। 10 जुला. को बुध पुनर्वसु तथा शनि पू.फा. (4) में आने से चाँदी, रूई, कपास, सूत, सन में मन्दी, गेहूँ, जौं, उड़द, मूँग, सरसों, तिल में तेज़ी बनेगी।

14 जुला. को राहु उ.षा.(3), केतु पुष्य (1) में आने से लोहा, सरसों, खाद्य-तेल में तेज़ी बनेगी। 15 जुला. को बुध कर्क राशि में प्रवेश करेगा। चाँदी, सोना, सरसों,. सोयाबीन, गुड़, तेल, मूँगफली, में घटबढ़ी के मध्य पहले तेज़ी फिर मन्दी बनेगी।

16 जुला. को सूर्य भी कर्क राशि में प्रवेश कर बुध एवं केतु के साथ मेल करेगा। रूई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, सोयाबीन, सोना, चाँदी आदि तेज़ होंगे। इसी दिन रात को बुध पुष्य में आने से रात को सोना, चाँदी में मन्दी का झटका भी सम्भव है। सावधानीपूर्वक आगे बढ़ें।

17 जुला. को मंगल रोहिणी में आने से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाला-मिर्च, हींग तथा शेयरों में तेज़ी बनेगी।

19 जुला. को सूर्य पुष्य में आने से तिल, तेल, सरसों, खांड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, हींग, सिक्का, सोना, चाँदी, कॉपर तेज़ होंगे। रूई में पहले तेजी, फिर मन्दी बने।

20 जुला. को शुक्र मृगशिर में आने से गेहूँ चना, ज्वार में मन्दी तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बनेगी। 22 जुला. को ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण भी गुड़, सोने, तांबे में तेजीकारक रहेगा।

23 जुला. को बुध आश्लेषा में आने से तिल, तेल, सरसो, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेज़ी बनेगी। 26 जुला. को शुक्र मिथुन में प्रवेश करेगा। इस पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। रूई, कपास, सूत, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मन्दी और अलसी, गुड़, घी, में अच्छी घटबढ़ी होगी। गेहूँ, चना, जौं, चावलों में तेज़ी बनेगी। इसी दिन बुध पश्चिम में उदय होने से गेहूँ, चने, खल-बिनौले, गुड़, सोना, चाँदी, तांबा, पीतल, लोहादि धातुओं में तेज़ी बने।

30 जुला. को बुध सिंह राशि में प्रवेश कर शनि के साथ मेल करेगा। इसी दिन वक्री गुरु मकर राशि में राहु के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, सूत, रुई, सरसों, चना, जौं, खाद्य-तेलों में अच्छी तेजी का रुख रहे। तेजी में तुरन्त मुनाफा लेकर सौदा कर लें। अचानक मन्दी का रुख बन सकता है।

शेयर बाज़ार—ता० 2, 3, 5, 16, 17, 20, 21, 22, 26, 29, 30, 31 तेजीकारक रहेंगी।

● **अगस्त**—ता०1 को शुक्र आर्द्रा में आने से अचानक चना, गेहूँ, चावल, उड़द, बाजरा आदि में मन्दी का वातावरण बनेगा।

2 अग. को सूर्य आश्लेषा में आने से सोना, चाँदी, रूई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, श्क्कर, घी, तिल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च में तेज़ी बनेगी।

6 अग. को मंगल मृगशिर में आने से तिल, चाँदी, घी में तेज़ी, रूई में पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी। 7 अग. को बुध पू.फा. में आने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चने में मन्दी बनेगी।

12 अग. को शनि उ.फा. में आने से घी, शक्कर, सरसों, कपास, रूई, सोयाबीन में तेज़ी बनेगी। 13 अग. को शुक्र पुनर्वसु में आने से सोना, चाँदी, रूई, कपास, सूत, चावल, घी मे मन्दी बनेगी।

16 अग. रविवार को सूर्य सिंह राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। मंगल भी मिथुन राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सोयाबीन, लाल-मिर्च, कॉपर में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। शेयरों, अनाज में तेजी बनकर मन्दी बनेगी। (इस तेजी के दौर में अवश्य लाभ उठा लें)

17 अग. को बुध उ.फा. में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी बनेगी। रूई में घटाबढ़ी होकर मन्दी बने, चाँदी में भी मन्दी बनेगी। 19 अग. को बुध कन्या राशि में प्रवेश करेगा। इस पर मंगल एवं गुरु की दृष्टि रहेगी। रूई, चाँदी, घी, कपास, चना में मन्दी बनेगी। गेहूँ, जौं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, सरसों, सोयाबीन, बैंकिंग शेयर्ज में तेजी बनेगी।

21 अग. को शुक्र कर्क राशि में केतु के साथ मेल करेगा तथा गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग बनेगा। रूई में पहले अच्छी मन्दी बाद में तेज़ी बने। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, शक्कर में तेज़ी तथा चाँदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में मन्दी बने।

24 अग. को शुक्र पुष्य में आने से रूई, सूत, सन, चाँदी, रेशम, ऊन व धान्य में तेज़ी और लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी।

25 अग. को वक्री गुरु धनि(1) में आने से चावल, जौं, चना में मन्दी और रूई में घटबढ़ी रहेगी।

26 अग. को मंगल आर्द्रा में आने से रूई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक, सोयाबीन में तेज़ी और चाँदी में मन्दी बने।

30 अग. को सूर्य पू.फा. में आने से जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, रूई, सूत में तेज़ी, चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी।

31 अग० को बुध हस्त में आएगा। इसी दिन शनि पश्चिम में अस्त होगा। रूई, सोने, क्रूड-आयल, शेयरों में मन्दी बनकर तेज़ी बनेगी।

शेयर-बाज़ार—ता० 2, 6, 16, 17, 19, 21, 26, 30 को तेज़ी बने।

● **सितम्बर**—मासारम्भ में क्रूड-आयल, सोने, आयल-गैस के शेयरों पर सावधानीपूर्वक छोटे-छोटे सौदे करते हुए आगे बढ़ें।

4 सितं. को शुक्र आश्लेषा में आने से रूई, चावल, घी,चने में मन्दी बनेगी।

7 सितं. को बुध वक्री होने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोने, चाँदी, कॉपर, शेयरों में तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चने में मन्दी का रुख रहेगा।

9 सितं. को शनि कन्या राशि में प्रवेश करेगा। इस पर गुरु एवं मंगल की विशेष दृष्टियां रहेंगी। रूई, गुड़, सोयाबीन, सरसों, सोयाबीन, क्रूड-आयल, सोना, चाँदी में प्रारम्भ में तेजी का झटका लगने के बाद मन्दी बनेगी।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. में तथा वक्री बुध भी उ.फा. में आने से रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, घी, तेल, अलसी, लोहा, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द में पहले तेजी बनकर बाद में थोड़ा मन्दा बने।

15 सितं. को शुक्र सिंह राशि में आने से सोना, ताम्बा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, लाल-मिर्च, अन्य लाल रंग की वस्तुओं, घी, ज़िंक में तेज़ी बनेगी।

16 सितंबर, बुधवार को सूर्य कन्या राशि में बुध एवं शनि के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। रूई, नारियल, तिल, तेल, सोयाबीन, लाल-मिर्च, क्रूड-आयल, शेयरों, सोने व चाँदी में पहले तेज़ी बनकर फिर मन्दी का रुख शुरु हो सकता है। इसलिए थोड़ी तेज़ी बनते ही मुनाफा काट लें।

17 सितं. को मंगल पुनर्वसु में आने से रूई, चाँदी, नमकथ खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन में तेज़ी बनेगी।

20 सितंबर, रविवार को कन्या राशिस्थ चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना, चाँदी में तेज़ी तथा रूई में घटाबढ़ी होगी।

24 सितं. को वक्री बुध सिंह राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। चाँदी, सोना, कॉपर, सूत, रूई, सोयाबीन में तेज़ी बनेगी, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि में मन्दी बनेगी।

26 सितं. को सूर्य हस्त में तथा शुक्र पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, नमक, हरड़, हींग, हल्दी में तेजी बनेगी। उड़द, मूँग, चना में कुछ मन्दी बने।

27 सितं. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से गेहूँ, चना, चावल, तिलहन, घी, खाद्य-तेल, रूई, कपास, खल-बिनौला, चाँदी में तेज़ी बने। शेयरों में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

29 सितं. को बुध मार्गी होने से सोना, चाँदी, गेहूँ, जौं, चना, अनाज में घटाबढ़ी होकर तेजी बने, रेशम, तेल अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला में मन्दी बनेगी।

● **अक्तूबर**—3 अक्तू. को वक्री गुरु श्रवण में आने से गुड़, चीनी, सोना, चाँदी तथा अनाजों के भावों में मन्दी बनेगी। 4 अक्तू. को बुध कन्या राशि में सूर्य एवं शनि के साथ मेल करेगा । गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, चीनी, हल्दी, रूई, चाँदी, तेल, सरसों, सोयाबीन में तेज़ी बनेगी ।

5 अक्तू. को मंगल कर्क राशि में केतु के साथ मेल करेगा तथा गुरु के साथ समसप्तक योग भी बनेगा। इसी दिन शनि पूर्व में उदय होने से शेयर-बाज़ार, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली, रूई में मन्दी, गुड़, शक्कर, सोना, तांबा, चीनी, चावल, जिस्त में अच्छी तेज़ी बने । 6 अक्तू. को शनि उ.फा.(3) में आने से रूई में घटाबढ़ी, तेल, अनाज तेज़ होंगे।

10 अक्तू. को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आएगा। इसी दिन शुक्र कन्या राशि में आकर बुध एवं शनि के साथ मेल करेगा। रूई, सूत, सोना, चाँदी, कॉपर, क्रूड-आयल, गुड़, चीनी, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, केसर, कपूर, लाल-मिर्च, चावल में तेज़ी बनेगी। 11 अक्तू. को मंगल पुष्य में आने से रूई, चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी। सोने में विशेष तेज़ी बनेगी। 12 अक्तू. को बुध हस्त में आने से गेहूँ, चना में मन्दी बनेगी।

13 अक्तू. को गुरु मार्गी होने से रूई में मन्दी होकर फिर तेज़ी बने। चाँदी में मन्दी, चावल, अलसी, सरसों, गुड़ में तेज़ी बनेगी।

17 अक्तू. को सूर्य तुला राशि में शनिवार को प्रवेश करेगा। 30 मुहूर्त्ति संक्रान्ति है। सूर्य पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, तांबा, सुपारी, लाल-मिर्च, रूई में तेज़ी रहेगी। रूई, चाँदी, घी में मन्दी बनेगी। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त होने से शेयरों, चावल में भी मन्दी बने।

20 अक्तू. को मंगलवारी चन्द्रदर्शन तथा बुध चित्रा में आने से वायदा बाज़ार में तेज़ी का रुख रहे। सोना, चाँदी, रूई, गुड़, सरसों, मूँगफली में तेज़ी बनेगी।

23 अक्तू. को सूर्य स्वाती में आने से रूई, सूत, सन, रेशम, कपड़ा, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, हींग में तेज़ी बनेगी।

24 अक्तू. को बुध तुला राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि रहेगी। रूई, गुड़, चीनी, सोना, चाँदी में तेज़ी बनेगी। सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली, सोयाबीन में घटा-बढ़ी के बाद कुछ तेज़ी बनेगी।

28 अक्तू. को बुध स्वाती तथा शुक्र चित्रा में आने से रूई में मन्दी, सोना, चाँदी, सोयाबीन, साफ्टवेयर तथा बैंकिंग शेयर्ज़ में विशेष घटा-बढ़ी रहने के बाद भाव सम रहेंगे।

शेयर-बाज़ार—ता. 4, 5, 9, 10, 17, 18, 20, 25, 26, 30 तेज़ीकारक रहेंगी।

● **नवम्बर**–3 नवं. को शुक्र तुला राशि में सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। इन पर पहले ही मंगल की दृष्टि है। रूई, चाँदी, घी, सोना, गुड़, चीनी, सरसों, सोयाबीन में अच्छी तेज़ी बनेगी।

5 नवं. को बुध विशाखा में आने से रूई, कपास, घी, चीनी, चावल में मन्दी बनेगी।

8 नवं. को शुक्र स्वाती में आने से गुड़, चीनी, सरसों, सोयाबीन में तेज़ी बने। 9 नवं. को मंगल आश्लेषा में आने से चाँदी, रूई, घी, चावल, चना में अच्छी मन्दी बने।

12 नवं. को बुध वृश्चिक राशि में आकर शनि द्वारा दृष्ट रहेगा। घी, तेल, सरसों, रूई, चाँदी, सोना, सोयाबीन, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेज़ी बनेगी। 14 नवं. को बुध अनुराधा में आने से रूई, सन, सूत, सोना, चाँदी में मन्दी बनेगी।

16 नवं. सोमवती अमावस के दिन सूर्य वृश्चिक राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। **शनि की इन पर दृष्टि रहेगी। रूई, सोना, चाँदी, कॉपर, ऊन, क्रूड-आयल में तेज़ी बने,** गुड़, लाल-मिर्च में मन्दी बन सकती है।

17 नवं. को राहु धनु तथा केतु मिथुन राशि में आने से रूई, घी, चावल, चाँदी, चना में घटा-बढ़ी के बाद मन्दी का रुख रहेगा। 18 नवं. बुधवार को वृश्चिक राशिकालीन चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, सूत, सन्, नारदाना, जूट, गुड़, शक्कर, चीनी में मन्दी, घी में तेज़ी बनेगी।

19 नवं. को सूर्य अनुराधा तथा शुक्र विशाखा में आने से जौं, चना, सोना, चाँदी, कॉपर में घटा-बढ़ी होकर तेज़ी बने, गेहूँ, अलसी, मिर्च में तेज़ी होकर मन्दी बनेगी।

22 नवं. को बुध ज्येष्ठा में आने से घी, गुड़, खाण्ड, चावल, सोने में तेज़ी बनेगी।

27 नवं. को शुक्र वृश्चिक राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। रूई, शेयरों, चाँदी, अफीम में पहले मन्दी फिर तेज़ी बनेगी। गुड़, गेहूँ, जौं, उड़द, मूँग, मोंठ, बाजरा आदि अनाजों में तेज़ी बनेगी। 28 नवं. को बुध पश्चिम में उदय होने से खल-बिनौले, गुड़, सोना, चाँदी, तांबा, पीतल आदि धातुओं में तेज़ी होगी।

29 नवं. को शुक्र अनुराधा में आने से गुड़, चीनी, चावल, नमक, सरसों में मन्दी बने, घी, चाँदी में तेज़ी बनेगी।

शेयर बाज़ार—ता. 3, 9, 12, 16, 17, 21, 22, 23, 27, 28 विशेष तेज़ीकारक रहेंगी।

● **दिसम्बर**–1 दिसं. को बुध धनु राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। अकेला बुध यद्यपि मन्दीकारक होता है। परन्तु राहु के साथ होने के कारण यहाँ मन्दी न बनकर तेज़ी बनेगी। रूई, कपास, वस्त्र, सूत, चाँदी, सोना, ग्वार, सोयाबीन में तेज़ी बनेगी।

2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आने से सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुड़, चीनी में तेज़ी बने। रूई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी बने।

(ता. 3 से 9 दिसं. तक तेज़ी का माहौल रहेगा। वायदा एवं हाजिर बाज़ार में तेज़ी का रुख रहेगा।)

10 दिसं. को बुध पू.षा. तथा शुक्र ज्येष्ठा में आने से सोना, चाँदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में मन्दी बने।

13 दिसं. को शुक्र पूर्व में अस्त होने से सोना, चाँदी, ताम्बा, पीतल, जिस्त, हींग, पारा, केसर, सूरजमुखी, सोयाबीन में तेज़ी बने, रूई में मन्दी बनेगी।

15 दिसं., मंगलवार को सूर्य धनु राशि में बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। रूई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चाँदी, कॉपर में तेज़ी बनेगी।

17 दिसं. को शनि हस्त नक्षत्र में आने से कपास रूई, हल्दी, ग्वार, चने में मन्दी बनेगी। 18 दिसं. शुक्रवार को धनु राशिकालीन चन्द्रदर्शन होने से सोने, सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, ऊन में मन्दी तथा रूई, चाँदी, सोना में घटाबढ़ी होकर बाद में तेज़ी बने।

19 दिसं. को गुरु कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। मंगल की गुरु पर दृष्टि है। सोना, तांबा, कांसा, पीतल, लोहा में तेज़ी बनेगी।

20 दिसं. को मंगल वक्री होगा तथा शुक्र धनु राशि में आकर सूर्य, बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। रूई, चाँदी, सोना, अलसी, चना, चीनी, चावल, जौं, लाल-मिर्च, तांबा, तथा शेयरों में भी अच्छी तेज़ी बनेगी।

22 दिसं. को बुध उ.षा. में आने से गेहूँ, चना, चावल में अचानक थोड़ी मन्दी बनेगी।

26 दिसं. को बुध वक्री होने से घी, गुड़, चीनी, शक्कर, शेयरों में तेज़ी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना में मन्दी बने।

28 दिसं. को सूर्य पू.षा. में आने से तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, हल्दी, चाँदी, गुग्गुल में तेज़ी बनेगी।

30 दिसं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा तथा पू.षा. नक्षत्र में भी प्रवेश करेगा। रूई, शेयरों में मन्दी, चाँदी, घी में अच्छी तेज़ी, अलसी, चना, बिनौला, सोना, कॉपर में भी घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

31 दिसं. को शुक्र पू.षा. में आने से मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक में मन्दी बनेगी। इसी दिन खण्ड-चन्द्रग्रहण चाँदी, घी, सोने में विशेष घटाबढ़ी करेगा।

नोट—ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें तथा तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से ताज़ा मशवरा प्राप्त करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम ज़िम्मेवार न होंगे।

—पं. विवेक शर्मा, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-0181-2457959

अङ्गारक चतुर्थी व्रत

(भौम दोष, मंगलीकादि दोष निवारण में विशेष लाभप्रद)

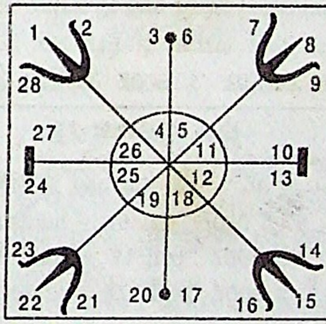
अङ्गारक चतुर्थी—जिस गणेश चतुर्थी को मंगलवार का समावेश हो, उसे अङ्गारक गणेश चतुर्थी कहते हैं। अङ्गारक चतुर्थी के व्रत से बड़ी-बड़ी विघ्न-बाधाएँ, पारिवारिक क्लेश, वाद-विवाद, मनमुटाव आदि समस्याओं से मुक्ति मिलती है। श्री गणेश पुराण के अनुसार पृथ्वी देवी ने महामुनि भारद्वाज मुनि के जपापुष्प-तुल्य अरुण पुत्र का पालन करके सातवर्ष की आयु में महर्षि के पास पहुँचा दिया। महर्षि ने सविधि पुत्र का उपनयन संस्कार करके उसे वेद-शास्त्रादि का अध्ययन करवाया। अपने पुत्र को महर्षि ने गणपति मन्त्र देकर श्री गणेश जी की आराधना करके प्रसन्न करने की आज्ञा दी। उस बालक ने निराहार रहकर सहस्रवर्ष तक श्रीगणेश जी के ध्यान के साथ मन्त्र जप किया। श्रीगणेश जी ने माघ कृष्ण चतुर्थी को चन्द्रोदय होने पर दिव्य स्वरूप अष्टभुज चन्द्रभाल श्री गणेश जी ने प्रकट होकर दर्शन दिये। उन्होंने तपस्वी मुनिपुत्र को प्रसन्न होकर इच्छित वर दिया। पृथ्वी पुत्र ने अत्यन्त विनयपूर्वक श्रीगणेश जी की स्तुति की, जो कि समय पश्चात् अङ्गारक स्तोत्र के नाम से प्रसिद्ध हुये। श्रीगणेश जी ने अरुण पुत्र का नाम मङ्गल रखा। श्री सर्वसिद्धि प्रदायक गणेश जी ने उसे वरदान दिया—

"मेदिनीनन्दन ! तुम देवताओं के साथ सुधापान करोगे। तुम्हारा मङ्गल सर्वत्र विख्यात होगा। तुम धरणी के पुत्र हो और तुम्हारा रंग लाल है, अतः तुम्हारा 'अङ्गारक' नाम भी प्रसिद्ध होगा। यह तिथि **अङ्गारक चतुर्थी** के नाम से प्रख्यात होगी। पृथ्वी पर जो भी कोई इस व्रत को करेगा, उन्हें वर्ष पर्यन्त चतुर्थी व्रत करने का फल प्राप्त होगा। निश्चय ही उनके किसी कार्य में विघ्न उपस्थित नहीं होगा।"

तभी से यह व्रत अङ्गारक चतुर्थी व्रत के नाम से प्रख्यात हुआ है। यह पुत्र-पौत्रादि एवं समृद्धि प्रदान कर समस्त कामनाओं को पूर्ण करती है। **नारद-विष्णु पुराण** के अनुसार भी जिस किसी मास में भी चतुर्थी तिथि रविवार या मंगलवार से युक्त हो तो विशेष-फलदायिनी होती है। उसे भी अङ्गारक चतुर्थी कहते हैं। उसदिन कन्याओं द्वारा श्री मंगलमूर्ति गणेश जी का पूजन एवं व्रत करके **अङ्गारक स्तोत्र** का पाठ करना, **मंगल देवता** का पूजन करने से **मंगलीक दोष** निवारण के लिए भी शुभ होता है।

आगामी वर्ष चार अङ्गारक चतुर्थ व्रत आ रहे हैं—(1) ज्येष्ठ—12 मई (मंगलवार), (2) आश्विन—8 सितंबर, (3) माघ शुक्ल (तिल चतुर्थी)—19 जन., 2010 ई., (4) फाल्गुन—2 फरवरी (2010 ई.)।

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?



जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पूफा आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पूफा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उषा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

◎ चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र ◎

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देनी वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है—

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना भी अधिक जप, होम तथा शारीरिक प्रयास किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों के मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे-गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी प्रकाशित पुस्तक **'शिव मन्त्रावली'** में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल—सन् 2009-10 ई.

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2009-10 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
19 जन.	कुम्भ	28-10	18 की रात्रि 22/10 से 19 की प्रातः 10/10 तक
18 फर.	मीन	18-16	दोपहर 12/16 से रात्रि 24/16 तक
20 मार्च	मेष	17-14	दोपहर 11/14 से रात्रि 23/14 तक
19 अप्रैल	वृष	28-14	रात्रि 22/14 से 20 ता. की प्रातः 10/14 तक
20 मई	मिथुन	27-21	रात्रि 21/21 से 21 ता. की प्रातः 9/21 तक
21 जून	कर्क	11-16	प्रातः 5/16 से सायं 17/16 तक
22 जुलाई	सिंह	22-06	सायं 16/06 से 28/06 तक
22 अगस्त	कन्या	29-09	रात्रि 23/09 से 23 की प्रात 11/09 तक
22 सितम्बर	तुला	26-49	रात्रि 20/49 से 23 ता. की प्रातः 8/49 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	12-14	प्रातः 6/14 से सायं 18/14 तक
22 नवम्बर	धनु	9-53	प्रातः 3/53 से दोपहर 15/53 तक
21 दिसम्बर	मकर	23-17	सायं 17/17 से 22 की प्रातः 5/17 तक
20 जन (10)	कुम्भ	9-58	प्रातः 3/58 से दोपहर 15/58 तक
18 फरवरी	मीन	24-06	सायं 18/06 से 30/06 तक
20 मार्च	मेष	23-02	सायं 17/02 से 29/02 तक

क्रान्तिसाम्य काल—2009-10 ई.

यहां नीचे सूर्य-चन्द्र का सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। (महापात गणित द्वारा) विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को वर्जित किया गया है। इस समय विवाह आदि शुभ मुहूर्त के लिए अशुभ परन्तु मंत्र-यन्त्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ समय होता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
6 जन.	26	12	7 जन.	7	29
19 जन.	6	49	19 जन.	12	57
1 फर.	27	40	2 फर.	8	30
13 फर.	26	15	14 फर.	6	48
27 फर.	19	02	27 फर.	23	13
11 मार्च	21	18	11 मार्च	25	13
25 मार्च	9	53	25 मार्च	13	59
6 अप्रै.	14	30	6 अप्रै.	18	33
19 अप्रै.	24	09	19 अप्रै.	28	50
2 मई	5	50	2 मई	10	28
15 मई	13	24	15 मई	19	46
27 मई	27	18	28 मई	9	20
10 जून	11	48	10 जून	20	55
23 जून	17	43	23 जून	25	20
2 जुला.	22	34	3 जुला.	7	30
16 जुला.	27	24	17 जुला.	9	40
28 जुला.	25	26	29 जुला.	7	28
11 अग.	25	09	12 अग.	6	00
23 अग.	22	29	23 अग.	26	44
6 सितं.	15	00	6 सितं.	19	24
18 सितं.	19	33	18 सितं.	23	20
1 अक्तू.	27	30	2 अक्तू.	7	52
14 अक्तू.	13	36	14 अक्तू.	17	40
27 अक्तू.	13	42	27 अक्तू.	19	05
8 नवं.	27	56	9 नवं.	8	50
21 नवं.	24	28	22 नवं.	7	40

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2009-10	घं.	मिं.	2009-10	घं.	मिं.
4 दिसं.	24	29	5 दिसं.	7	46
17 दिसं.	25	37	18 दिसं.	12	21
28 दिसं.	18	20	28 दिसं.	26	58
(सन् 2010 ई.)					
9 जन.	22	02	10 जन.	6	37
23 जन.	24	38	24 जन.	6	39
4 फर.	18	14	4 फर.	23	31
18 फर.	13	44	18 फर.	18	39
2 मार्च	14	17	2 मार्च	18	19
वारुणी पर्व (सन् 2009 ई.)					
24 मार्च	3	54	24 मार्च	21	57

सूर्यग्रहण-चन्द्रग्रहण

(1) सूर्यग्रहण = 22 जुलाई, 2009 ई.

(2) चन्द्रग्रहण = 31 दिसं., 2009 ई.

(3) सूर्यग्रहण = 15 जन., 2010 ई.

पर्वकाल के लिए देखें पृष्ठ नं. 10 से 19

दीपावली पर्व

17 अक्तूबर, 2009 ई. शनिवार को दीपावली पर्व होने के कारण यन्त्र-मन्त्र अनुष्ठान, साधना के लिए विशेष सिद्धिदायक होगा। स्थानीय नगर का निशीथ, महानिशीथ काल जानने के लिए देखें पृष्ठ—83

≈ धन वृद्धि हेतु पद्मावती प्रयोग ≈

मन्त्र = 'ॐ' नमो भगवती पद्मावत्यै ओं ह्रीं श्रीं पूर्वाय, दक्षिणाय पश्चिमाय उत्तराय अन्नपूर्णास्ति सर्वं मम वश्यं करोति स्वाहा।''

यह प्राकृत मन्त्र है, यद्यपि संस्कृत में हैं फिर भी प्राकृत की श्रेणी में ही आता है, इसलिए इसके ऋषि, छन्द, न्यास आदि नहीं है। इसे करने के लिए पुरश्चरण करने का निर्देश भी नहीं हैं।

विधि—प्रातःकाल शैय्या त्यागने के पश्चात् हाथ में पीली सरसों लेकर इस मन्त्र को 105 बार पढ़ें और इन सरसों के दानों को कमरे में, घर के आंगन आदि में चारों दिशाओं में बिखेर दें। कमरे का आशय उस कमरे से है जिसमें सोये थे और जहां यह प्रयोग किया गया था। इन सरसों के दानों का यह विचार न करें कि बाद में ये पैरों में आयेंगे, क्योंकि प्रयोग करने के बाद ये निर्माल्य की तरह हो जाते हैं। हां, इतनी अधिक मात्रा में न हों कि प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि में आते रहें।

≈ धन-वैभव प्रदायक कुबेर मन्त्रप्रयोग ≈

भगवान शिव की साधना करने के पश्चात् रावण को इस मन्त्र का ज्ञान भगवान शिव ने कराया था। यह कुबेर मन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली तथा त्वरित फलप्रदायक है। इस मन्त्र की 11 माला जप 11 दिन अर्थात् 1100 बार जप प्रतिदिन करने से यह प्रयोग पूर्ण हो जाता है तथा धन प्राप्ति का उद्देश्य पूर्णता की ओर प्रशस्त होता है। कुबेर मन्त्र का निर्माण किसी तांबे, चांदी या स्वर्ण पत्र पर कराकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा संस्कार करने के पश्चात् यदि इस मन्त्र का जप किया जाए, तो अधिक धन-प्राप्ति सम्भव होगी। इस मन्त्र प्रयोग से अपार धन, वैभव, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, सुख, विलासिता तथा भवन, वाहन, आभूषण आदि प्राप्त होते हैं। मन्त्र प्रयोग से पूर्व गणेश साधना षोडशोपचार से करने के पश्चात् गणपति अथर्वशीर्ष का पाठ करना चाहिए अथवा गणपति के मन्त्र ''**ॐ गम् गणपतये नमः**'' का एक माला मन्त्र जप करना चाहिए।

कुबेर मन्त्र— ''यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतयो
धनधान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।''

विनियोग—अस्य श्री कुबेर मन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः बृहती छन्दः शिवमित्र धनेश्वरो देवता ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः। न्यास-विश्रम ऋषये नमः शिरसि, बृहती छन्दसे नमः मुखे, शिवमित्र धनेश्वर देवतायै नमः हृदये, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

हृदयादि न्यास—यक्षाय हृदयाय नमः, कुबेराय शिरसे स्वाहा, वैश्रवणाय शिखायै वषट्, धनधान्याधिपतये कवचाय हुम्, धनधान्य समृद्धि मे नेत्रत्रयाय वौषट्, देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट्।

करन्यास—यक्षाय अंगुष्ठाभ्यां नमः, कुबेराय तर्जनीभ्यां नमः, वैश्रवणाय मध्यमाभ्यां नमः, धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां नमः, धनधान्यसमृद्धिं मे कनिष्ठिकाभ्यां नमः, देहि दापय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान— मनुजवाह्य विमानवरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुन्दिलनम्॥

≈ श्रीगणेश गायत्री मन्त्र ≈

ॐ लम्बोदराय विद्महे महोदराय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥ (अग्नि पुराण)

इस मन्त्र को 51,000 की की संख्या में जप विधान है। यह मन्त्र सम्पूर्ण अभीष्टार्थों को सिद्ध करने वाला है। जपानुष्ठान के अन्तर्गत गणपति, गणाधिप, गणेश, गजनायक, गणक्रीड, वक्रतुण्ड, एकदंष्ट्र, महोदर, गजवक्त्र, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, धूम्रवर्ण तथा इन्द्र आदि दिक्पाल-इन सबका गणपति की पूजा में अंगरूप में पूजन करें।

अङ्गन्यास—गणजयाय स्वाहा (हृदय), एकदंष्ट्राय हुं फट् (सिर), अचल कर्णिके नमो नमः (शिखा), गजवक्त्राय नमो नमः, कवच, महोदराय चण्डाय नमः—नेत्र एवं सुदण्ड हस्ताय हुं फट्-अस्त्र हैं।

नव पीठ शक्तियों की पूजा—तीव्रा ज्यालिनी, नन्दा, भोगदा, कामरुपिणी, उग्रा, तेजोवती सत्या एवं विघ्ननाशिनी। फिर लाल चन्दन के चूर्ण का आसन समर्पित करके निम्न ध्यान मन्त्र पढ़ने के पश्चात् जपारम्भ करें।

ध्यान मन्त्र— गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थजम्बूफल चारुभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम्॥

ध्यान मन्त्र पढ़कर फिर पुष्पाक्षत व जल लेकर जप के अन्त में निम्न मन्त्र पढ़ते हुए अर्घ्य देवें—

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाय नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि। (अर्घ्य देवें)

'शिव-मन्त्रावली' पुस्तक का अध्ययन करें।

≈ ''सर्व कल्याणकारी गायत्री मन्त्र'' ≈

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अर्थ—परमात्मा (ॐ) के सत् (भूः) चित् (भुवः) व आनन्द (स्वः) स्वरूप, सृष्टिकर्त्ता दिव्य-प्रकाशमान ईश्वर के उस श्रेष्ठ वरणीय तेज का ध्यान करते हैं, जो (वह) परमात्मा हमारी बुद्धि रूपी वृत्तियों एवं कर्मों को (सत् की ओर) प्रेरित करें।

गायत्री मन्त्र से बढ़कर पवित्र एवं परमकल्याणकारी कोई मन्त्र नहीं है। स्कन्दपुराणानुसार समस्त मन्त्रों में प्रणव (ॐ) से युक्त गायत्री दुर्लभ है। तीनों वेदों में गायत्री से बढ़कर और कोई मन्त्र नहीं है। रुद्रगायत्री में लिखा है कि वह गायत्री महेशानी (शिव की शक्ति) और परब्रह्मस्वरूपा कही गई है। ऋषि विश्वामित्र के अनुसार समस्त वेद, यज्ञ, दान, तप आदि गायत्री मन्त्र के सोलहवें हिस्से के बराबर भी नहीं कहे गए। गायत्री मन्त्र जप से पहले षडङ्गन्यास करने का विधान है।

षडङ्गन्यास = ॐ हृदयाय नमः (हृदय का स्पर्श करें), ॐ भू-शिरसे स्वाहा (मस्तक), ॐ भुवः शिखाये वषट् (शिखा-प्रदेश), ॐ स्वः कवचाय हुम् (दाएं कंधे का), ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्रभ्यां वौषट् (नेत्रों का) ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् (बाएं हाथ की हथेली पर दाएं हाथ को सिर से घुमाकर मध्यमा और तर्जनी से ताली बजाएं)

ध्यान— **ॐ श्वेतवर्णा समुदिदष्टा कौशेयवसना तथा।**
श्वेतैः विलेपनैः पुष्पैः अलंकारैश्च भूषिता॥
आदित्य मण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥

अर्थात् जो श्वेतवर्ण कही गयी हैं, सफेद रेशम का वस्त्र धारण किए हुए हैं, सफेद पुष्प, चन्दन आदि अनुलेपन से युक्त तथा श्वेत आभूषणों से सुशोभित हैं, हाथ में रुद्राक्ष की माला लिए पद्मासन से बैठी हुई है और जो सूर्यमण्डल में अथवा ब्रह्मलोक में स्थित हैं, ऐसी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

विनियोग—ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, शुक्लो वर्णः, गायत्री जपे विनियोगः। ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः ऋषिः गायत्र्युष्णिक् अनुष्टुभश्छन्दांसि अग्नि वायु सूर्या देवताः, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।' (अधिक जानकारी के लिए पुस्तक 'शिव-मन्त्रावली' अथवा 'गायत्री मन्त्र शक्ति एवं उपासना' पढ़ें।

≈ ''गृह कलह एवं अशान्ति निवारण मन्त्र'' ≈

कुछ परिवारों में छोटी-छोटी बातों को लेकर गृह-कलह होती है। साधन-सम्पन्न एवं सुविधाएँ होते हुए भी अशान्त वातावरण रहता है। निम्न मंत्र का पति-पत्नी में से कोई भी यदि जाप करें तो किसी एक को बुद्धि आ जाएगी। घर में शान्ति का वातावरण बनेगा—

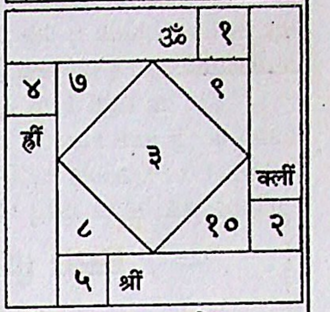
मंत्र—धां धीं धूं धूर्जटेः। पत्नी वां वीं बूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि। शां शीं शूं मे शुभं कुरु।

(यदि लड़की यह प्रयोग कर रही हैं तो पत्नी की जगह पति शब्द का उल्लेख करें)

विधि—प्रातः स्नान करके काली या मां दुर्गा के चित्र पर लाल पुष्प चढ़ाएं, दीप या अगरबत्ती जला दें। किसी भी माला से 108 बार जाप करें। 21 दिनों में प्रभाव हो जाएगा। यह जाप नियमित रूप से करने से भी परिवार में सुख-शांति का वातावरण बनेगा। एक प्याले में थोड़े से मूंग रख लें। अब ऊपर लिखित मंत्र का जाप 108 बार करें। प्रत्येक मंत्र के साथ एक मूंग उठाकर अन्य पात्र में रखते जाएं। 108 मंत्र हो जाने पर इन मूंगों को मुट्ठी में लेकर प्रार्थना करें कि मेरा वैवाहिक जीवन प्रसन्नता एवं खुशहाली से परिपूर्ण हो।

शीघ्र मकान-सुख प्राप्ति मन्त्र

शीघ्र मकान सुख प्राप्ति यंत्र



कुछ लोगों को स्वयं का घर निर्माण करने में विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं तथा अनावश्यक विलम्ब उत्पन्न होता है। मकान बनाने हेतु भूमि की व्यवस्था, निर्माण हेतु धन की व्यवस्था, बन जाने के बाद सुख-शान्ति व स्मृद्धि प्राप्त करने के लिए इस यंत्र-मंत्र का प्रयोग उस व्यक्ति को कर लेना चाहिए तो मकान बनाने का इच्छुक हो। यह प्रयोग दीपावली, क्रान्तिसाम्य काल, सूर्यग्रहण कालादि में करने पर विशेष प्रभावी होता है। दीपावली या शुभ मुहूर्त्त की पूर्व रात्रि पर भोजपत्र पर निम्न यंत्र का लेखन केसर के लेप से व चमेली वृक्ष की टहनी की कलम द्वारा करना चाहिए। यंत्र लेखन के पश्चात् धूप-दीप, पुष्पादि से पूजन करना चाहिए। पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र का 11000 जाप कमलगट्टे की माला से करना चाहिए। अगले दिन दीपावली या मुहूर्त पर इस यंत्र को समस्त सामग्री सहित किसी नदी-तालाब में प्रवाहित कर देना चाहिए। आपकी स्वयं के मकान की इच्छा अवश्य शीघ्र पूर्ण होगी।

मंत्र— ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणि गणपते वांछितार्थ।
पुष्य लक्ष्मीदायक लक्ष्मीदायक ऋद्धि वृद्धि कुरु-कुरु
सर्वसौख्य सौभाग्यं कुरु-कुरु श्री ह्रीं स्वाहा॥
ॐ ह्रीं क्लीं भगवती मम वांछित देहि-देहि स्वाहा॥

≈ घरेलू उपयोगी टोटके ≈

(1) दाम्पत्य सुख के लिए—श्रीगणेश जी और शक्ति की उपासना करें। सोते समय पूर्व की ओर सिरहाना होना चाहिए। चींटियों को शक्कर डालना चाहिए। भोजपत्र पर लाल कलम से पति का नाम लिखकर तथा **'हं हनुमते नमः'** का 21 बार उच्चारण करें। उसे शहद में डुबोकर, अच्छी प्रकार से बन्द करके, घर के किसी कोने में रख दें जहां पर किसी की दृष्टि न पड़े। धीरे-धीरे कलहपूर्ण वातावरण दूर होगा। कुछ ही दिनों में परस्पर सौहार्द, प्रेम-प्रीति में वृद्धि हो जाएगी।

(2) सन्तान प्राप्ति के लिए—चार बृहस्पतिवार को 900 ग्राम जौं चलते जल में बहाएं। बृहस्पतिवार का व्रत भी रखना शुभ रहेगा। राधाकृष्ण जी के मन्दिर में शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार या जन्माष्टमी को चांदी की बांसुरी चढ़ाएं। लाल या भूरी गाय को आटे का पेड़ा व पानी दें। उपाय श्रद्धापूर्वक करने से मनोकामना पूर्ण होगी।

(3) इंटरव्यू में सफलता के लिए—इंटरव्यू या किसी प्रतियोगिता आदि में सफलता के लिए पांच अभिमंत्रित कौड़ियां लें और उन पर हल्दी का तिलक लगाकर उन्हें अपने ऊपर से नौ बार उतारें, इस समय मन में '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' का जाप करते रहें। कौड़ियां पीपल के वृक्ष के नीचे या मंदिर में रख आएं, इंटरव्यू में सफलता अवश्य मिलेगी।

(4) विदेश यात्रा के लिए—प्रत्येक व्यक्ति की मन ही मन इच्छा रहती है कि वह विदेश यात्रा अवश्य करे। कुछ जातकों की कुंडली में विदेश योग तो होता है परन्तु ग्रह-दशा अथवा अन्य कारणों से विघ्न उत्पन्न होते रहते हैं। **विधि**—किसी सूर्य/चन्द्रग्रहण काल में घर में पूर्व दिशा की ओर गोबर से लीप कर अष्टदल बनाये और लकड़ी की टुकड़े पर लाल वस्त्र बिछाकर ९०० ग्राम लाल मसूर की दाल की ढेरी बनायें। उस पर अभिमंत्रित हनुमान यंत्र को स्थान दें। पहले यंत्र को कच्चे दूध से स्नान करायें, फिर स्थान देकर रोली से तिलक करें। कलावे के रूप में वस्त्र व लाल पुष्प अर्पित करें। गुड़ का भोग लगाएं। फिर प्रभु से अपनी कार्य सिद्धि के लिए मूंगे की माला से '**ॐ पवन पुत्राय महाशाबरी शक्ति मम अरिष्ट निवाराय निवाराय मम विदेश यात्रा सिद्धकरिष्ये कुरु कुरु स्वाहा।**' का 11 माला जाप करें। जाप के बाद सारी सामग्री को लाल वस्त्र में बांधकर किसी भी हनुमान मन्दिर में छोड़ आएं। वापसी में बन्दरों को चने, गुड़ अवश्य खिलायें। विदेश यात्रा में विघ्न दूर होंगे।

≈ मंगलीक दोष निवारक मंगल चण्डिका स्तोत्र ≈

किसी कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष प्रबल हो, अथवा मंगल दशाऽन्तर्दशा के कारण विवाह में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों, यदि जन्माङ्ग में पार्थक्य अथवा वैधव्य की संभावना हो तो निम्न मंगल चण्डिका स्तोत्र का पाठ करने से दाम्पत्य जीवन के समस्त उपद्रवों का शमन होता है। सुखमय वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रही महिलाएं भी यदि मंगल चण्डिका स्तोत्र का नियमित पाठ करें, तो दाम्पत्य सुख में वृद्धि होती है। मंगल चण्डिका पार्वती देवी का ही रूप है। अतः पार्वती देवी या माता गौरी का षोडशोपचार या पंचोपचार पूजन करने के उपरान्त शुभ मुहूर्त में मंगल चण्डिका मन्त्र एवं स्तोत्र का पाठ करना शीघ्र मनोकामना पूर्ण करता है। कम से कम जप संख्या सवा लाख है।

विधि—शुद्ध एवं पवित्र होकर प्रातःकाल लाल ऊनी आसन पर लाल वस्त्र पहनकर सामने घी का दीपक तीन या पांच बत्ती वाला प्रज्वलित करें, देवी का ध्यान करते हुए मंत्र का जाप 21 या 108 बार करें। तत्पश्चात् स्तोत्र का सहस्र संख्या में पाठ करना चाहिए। अनुष्ठान के नियमों का पालन करें, लाल वस्तुओं का दान करें। जप संख्या पूर्ण होने पर हवन कर ब्राह्मण भोजन कराएं। मंगलवार के दिन ही प्रारम्भ करके, मंगलवार को ही समाप्त करें। मूल मंत्र के सवा लाख जाप से भी लाभ होता है।

मंगल चण्डिका स्तोत्रम्—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगल चण्डिके।
ऐं क्रूं फट् स्वाहेत्येवं चाप्येकविंशाक्षरो मनुः॥ १॥

मूलमन्त्र—"**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगल चण्डिके ऐं क्रूं फट् स्वाहा॥**"

पूज्यः कल्पतरुश्चैव भक्तानां सर्वकामदः।
दश लक्ष जपेनैव मन्त्र सिद्धिर्भवेन्नृणाम॥ २॥
मंत्र सिद्धिर्भवेद् यस्य स विष्णुः सर्वकामदः।
ध्यानं च श्रूयतां ब्रह्मन् वेदोक्तं सर्व सम्मतम्॥ ३॥

ध्यानम्—देवीं षोडशवर्षाढ्यां शश्वत्सुस्थिर यौवनाम्।
सर्वरूप गुणाढ्यां च कोमलाङ्गीं मनोहराम्॥ ४॥
श्वेत चम्पक वर्णाभां चन्द्रकोटि समप्रभाम्।
वन्हि शुद्धांशुकाधानां रत्नभूषण भूषिताम्॥ ५॥
विभ्रतीं कबरीभार मल्लिकामाल्य भूषितम्।
बिम्बोष्ठीं सुदतीं शुद्धां शरत्पद्म निभाननाम्॥ ६॥
ईषद्धास्य प्रसन्नास्यां सुनीलोत्पल लोचनाम्।
जगद्धात्रीं च दात्रीं च सर्वेभ्यः सर्वसम्पदाम्॥ ७॥
संसार सागरे घोरे पोतरूपां वरांभजे॥ ८॥
देव्याश्च ध्यानमित्येवं स्तवनं श्रूयतां मुने।
प्रयतः संकटग्रस्तो येन तुष्टाव शंकरः॥ ९॥

स्तोत्रम्— शंकर उवाच

**रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगल चण्डिके।
हारिके विपदां राशेर्हर्षमंगल कारिके॥ १०॥
हर्ष मंगल दक्षे च हर्ष मंगल चण्डिके।
शुभे मंगल दक्षे च शुभ मंगल चण्डिके॥ ११॥
मंगले मंगलार्हे च सर्व मंगल मंगले।
सतां मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये॥ १२॥
पूज्या मंगलवारे च मंगलाभीष्ट दैवते।
पूज्ये मंगल भूपस्य मनु वंशस्य संततम्॥ १३॥
मंगलाधिष्ठात् देवि मंगलानां च मंगले।
संसार मंगलाधारे मोक्ष मंगलदायिनि॥ १४॥
सारे च मंगलाधारे पारे च सर्व कर्मणाम्।
प्रतिमंगलवारे च पूज्ये च मंगलप्रदे॥ १५॥
स्तोत्रेणानेन शम्भुश्च स्तुत्वा मंगल चण्डिकाम्।
प्रति मंगलवारे च पूजां कृत्वा गतः शिवः॥ १६॥
देव्याश्च मंगल स्तोत्रं यः श्रृणोति समाहितः।
तन्मंगलं भवेच्छश्वन्न भवेत् तदमंगलम्॥ १७॥**

भगवान् सूर्य के जपनीय मन्त्रः

भगवान् सूर्य का सर्वदेवात्मक रूप प्रसिद्ध है, इनकी उपासना से सभी देवों की पूजा हो जाती है— **एष ब्रह्मा च विष्णुश्च रूद्र एव हि भास्करः।**
त्रिमूर्त्यात्मा त्रिवेदात्मा सर्वदेवमयो हरिः॥

अर्थात् यह सूर्य ही ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं तथा त्रिमूर्ति आत्मक और त्रिवेदात्मक सर्वदेवमय हरि हैं।

'साक्षात् देवो दिवाकरः' के अनुसार भगवान-सूर्य प्रत्यक्ष देवता हैं-यह संसार के समक्ष अपने देवत्वरूप प्रत्यक्ष प्रकट करते हैं तथा समस्त संसार का सब प्रकार से कल्याण करते हैं। सूर्यवंश में स्वयं भगवान् राम का अविर्भाव हुआ था। महाभारत काल में महावीर कर्ण को अभय कवच-कुण्डल तथा वनवास काल में सूर्य की उपासना से युधिष्ठर को एक **अक्षय पात्र** प्राप्त हुआ था। श्री कृष्ण पुत्र साम्ब को कुष्ट रोगों से निवृत्ति भी सूर्योपासना से प्राप्त हुई थी।

सूर्योपासना से दुर्घटना, रोग-संकट, आधि-व्याधि, दुःस्वप्नादि ग्रह-जनित अनिष्टों का निवारण होता है। सूर्योपासना हृदयरोग, कुष्ट, पीलिया, चक्षुरोग, अग्निमन्दता आदि रोग दूर होकर अरोग्यता, धन सम्पदा एवं विवाह, सन्तान आदि सुख प्राप्त होते हैं।

भगवान् सूर्य आदि देव हैं—उनकी उपासना अनादिकाल से प्रचलित हैं। सूर्यवंशी भगवान राम, चन्द्रवंशी श्री कृष्ण, भीष्म, धर्मराज युधिष्ठर, कर्ण, महर्षि व्यास, विश्वामित्र, नारद, कपिल आदि तपस्वी सूर्य की उपासना करते थे। लिंग पुराण आदि सभी पुराणों में उनकी उपासना का उल्लेख है। सूर्य गायत्री मन्त्र, सूर्याष्टक, आदित्य हृदय स्तोत्र, सूर्य-द्वादशनाम्, सूर्य सम्बन्धी विशेष उपास्य मन्त्र एवं स्तोत्र हैं। पंचदेवों (भगवान शिव, विष्णु, गणेश, श्रीदुर्गा व सूर्य) की पूजा एवं समस्त कर्मकाण्ड में सूर्य की पूजा भी आवश्यक मानी जाती है। आगे दिए जा रहे सूर्य मन्त्रों में किसी भी मन्त्र का श्रद्धापूर्वक सुनिश्चित संख्या में जप करने से विशेष लाभ होता है। जपारम्भ करने से पूर्व सूर्य पूजन अवश्य करना चाहिए। मन्त्रों के जपोपरान्त मन्त्र सहित अर्घ्य प्रदान अवश्य करें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। (जप संख्या ७०००)

पौराणिक मन्त्र : जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

अष्टाक्षर महामन्त्र— ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्॥

विनियोग : अस्य श्री सौर मन्त्रस्य देव भाग ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता तत्प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः देवभाग ऋष्ये नमः। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। सूर्य देवतायै नमो हृदये। विनियोगाय नमः-सर्वाङ्गे। ॐ लगाकर 'कर' एवं हृदयादि न्यास करें।

ध्यान मन्त्र : पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः॥

● **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना याति भुवनानि पश्यन्॥**

● **ॐ आदित्याय विद्महे, भास्कराय धीमहि, तन्नो भानु प्रचोदयात्॥**

● **नमो धर्मविधानाय नमस्ते कर्मसाक्षिणे।**
नम प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः॥

● **ॐ विश्वानि देव सवितः दुरितानि परासुव।**
यद् भद्रं तन्न आ ऽऽ सुव॥

(हे परब्रह्म स्वरूप सविता देव ! आप हमारी सभी बुराईयों को दूर करें। जो भी हमारे लिए कल्याणकारी श्रेयस्कर एवं मंगलमय हो, वही हमें प्रदान करो)

इन मन्त्रों के अतिरिक्त सूर्य भगवान् के २१ नाम, १२ नाम से युक्त स्तोत्र का पाठ या सूर्यसहस्रनाम, आदि स्तोत्रों का पाठ करना शुभ होगा। हमारी प्रकाशित पुस्तक 'कार्तिक स्त्री-प्रसूता का भी अवलोकन करना चाहिए।'

प्रतिदिन निश्चित संख्या में जप करने के पश्चात् ताम्र बर्तन में जल, लाल पुष्प या लाल चन्दन डालकर सूर्याभिमुख होकर निम्न मन्त्र पढ़कर तीन बार अर्घ्य देना चाहिए-

ॐ ऐहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर नमोऽस्तुते॥

● **लघु अर्घ्य मन्त्र—ॐ घृणि सूर्याय नमः**

(१) नेत्र रोग से बचने के और अंधेपन से रक्षा के लिए नेत्रोपनिषद् का पाठ प्रतिदिन करके सूर्यदेव को अर्घ्य देकर प्रणाम करना तथा उसके पश्चात् सूर्य गायत्री का पाठ करना शुभ होगा। इसके अतिरिक्त सूर्याष्टक स्तोत्र का पाठ करना भी शुभ होगा।

(२) रविवार का व्रत रखकर उस दिन तेल, नमक और अदरक के सेवन से परहेज करें और न किसी को खिलावे। पूरा दिन व्रत न रख सकें तो एकभुक्त खाना ग्रहण करें। ब्रह्मचर्य व्रत का भी पालन करें।

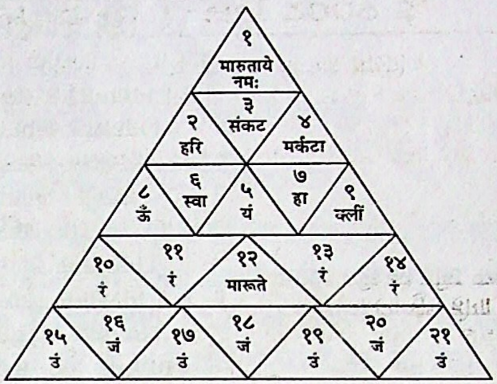
(३) उदय और अस्त होते हुए सूर्य की उपासना करने वाला विद्वान् ब्राह्माण सब प्रकार के कल्याण को प्राप्त करता है।

वाहन दुर्घटनानाशक मारूति यन्त्र

दुर्घटनानाशक इस शाबर यन्त्र का प्रयोग अमोघ है। नया वाहन खरीदते ही लोग इसे अपने वाहन (ट्रक, बस, कार, स्कूटर) के अगले हिस्से में लगाते हैं तथा उनकी यह मान्यता है कि वायुपुत्र हनुमान की कृपा से उनके वाहन अचानक दुर्घटनाग्रस्त नहीं होते, आई विपत्ति टल जाती है तथा वाहन ठीक समय पर लक्षित स्थान पर पहुंच जाता है।

यह तो सर्व विदित है कि महाभारत में वीरवार अर्जुन के रथ के अग्र भाग पर हनुमान ध्वज व ऐसा ही कोई यन्त्र रहा होगा जिसके कारण सम्पूर्ण युद्ध के दौरान अर्जुन का रथ जरा-सा भी क्षतविक्षत नहीं हो पाया।

ॐ श्रीरामदूत, पवनपूत, वेग चलो
जैसे राम चन्द्र के काज संवारे वैसे काज हमारे संवारो



विधि—किसी भी मंगलवार के दिन हनुमान मन्दिर में जाकर इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से बनावें या ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करावें। इस यन्त्र के मूलमन्त्र का 1008 जप करें। गुड़ या नैवेद्य का भोग हनुमान जी को लगावें। सिन्दूर व लाल पुष्प यन्त्र पर चढ़ावें। तत्पश्चात् श्रेष्ठ चौघड़िये में यन्त्र को अपने वाहन पर लगावें एवं इसका चमत्कार देखें।

मूलमन्त्र : ॐ मारुतात्मने नमः हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा,
ॐ क्लीं रं रं मारुते रं रं उं जं उं जं उं जं उं।

इस प्रकार से यह यन्त्र वाहन के लिए कवच का काम करता है क्योंकि इसके लगने से वाहन अभिमन्त्रित व सुरक्षित होकर अनुकूल लाभ देने लग जाता है, यह बात पूर्णतः परीक्षित व सत्य है।

मेषादि राशियों का ग्रहगोचर विचार संवत् २०६६ (सन् 2009-10 ई.)

राशिफल-जनवरी-सन् 2009 ई.

मेष—मासारम्भ से राशि स्वामी मंगल अस्तंगत होकर भाग्यस्थान में होने से अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आमदन के कुछ साधन बनते रहेंगे। घरेलू उलझनें व खर्च भी अधिक होंगे। 27 जन. से मंगल उच्चस्थ रहने से धन लाभ एवं कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

वृष—मासारम्भ से इस राशि पर यद्यपि शनि की ढैय्या होने से मानसिक तनाव व पारिवारिक उलझनों के बावजूद बिगड़े कामों में कुछ सफलता मिलेगी। पारिवारिक एवं व्यवसायिक स्थिति संघर्षपूर्ण बनेगी। आकस्मिक खर्च भी अधिक रहेंगे। 14 जन. मकर संक्रान्ति को माघ माहात्म्य का पाठ तथा अनाज, फल और गर्म वस्त्र का दान करना शुभ रहेगा।

मिथुन—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य एवं मंगल की दृष्टियाँ पड़ने से स्वभाव में क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु मासान्त में हालात में सुधार एवं शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे।

कर्क—मासारम्भ से इस राशि पर केतु का संचार चल रहा है। इसके अतिरिक्त शनि साढ़ेसती का प्रभाव भी होने से घरेलू उलझनें एवं व्यवसायिक परेशानियों के कारण तनाव रहेगा। धन सम्बन्धी परेशानी एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। गुरु की भी दृष्टि होने से धर्म कर्म में रूझान रहेगा।

सिंह—मासारम्भ से शनि का संचार है परन्तु राशिस्वामी सूर्य मित्रग्रह के साथ पंचम भाव में शुभस्थ है। जिससे विविध उलझनों के बावजूद कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेलजोल बढ़ेंगे। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे परन्तु खर्च अधिक होंगे।

कन्या—इस राशि पर शनि साढ़ेसती का प्रभाव अभी रहेगा। मासारम्भ से राशिस्वामी बुध पंचम भाव में गु. व रा. के साथ है। गुरू की विशेष दृष्टि भी होने से अत्याधिक परिश्रम के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। धार्मिक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। राहु के कारण खर्च भी अधिक होंगे। अचानक वृथा यात्रा होने के संकेत हैं।

तुला—मासारम्भ से इस राशि पर शनि की दृष्टि तथा राशिस्वामी शुक्र पंचम भाव में होने से व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्बन्ध बनेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में भाग्यवश आकस्मिक धन लाभ एवं भाई-बन्धु सुख मिलेगा। परन्तु खर्च भी अधिक रहेंगे।

वृश्चिक—27 जन. तक राशिस्वामी मंगल धनु राशि में संचार करने से कुछ आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। बनते कामों में विघ्न और विलम्ब होगा। ता. 28 से मंगल तृतीय स्थान पर आने से दीर्घ यात्रा के योग हैं। सवारी आदि पर खर्च होगा।

धनु—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य-मंगल की स्थिति एवं द्वितीय भाव में राशिस्वामी गुरू नीचराशि में बुध-राहु युक्त है। ग्रहस्थिति अनुसार व्यवसाय में आंशिक सफलता एवं विलासादि कार्यों पर धन का खर्च होगा। ता. 14 से सूर्य गुरू के साथ द्वितीयस्थ संचार करने से धन का खर्च अधिक होने से उलझनों का सामना रहेगा।

मकर—मासारम्भ में इस राशि पर गुरु, बुध व राहु का संचार है। जिससे संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। बड़ी कठिनता से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। कार्य व्यवसाय में अनिश्चितता का माहौल बनेगा। अत्यधिक खर्चों के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी। ता. 14 से माघ माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ—मासारम्भ में इस राशि पर शुक्र का संचार तथा शनि की दृष्टि पड़ रही है, जिससे अड़चनों के बावजूद धन प्राप्ति के सांधन बनते रहेंगे। किसी श्रेष्ठ जन से सम्पर्क बढ़ेंगे। सवारी आदि सुख साधनों पर विशेष खर्च होने के संकेत मिलते हैं। विदेश यात्रा का भी विचार बनेगा।

मीन—राशिस्वामी गुरू लाभ स्थान पर (नीचस्थ) बुध-राहु युक्त होने से अत्यन्त कठिन परिश्रम से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्चों की अधिकता से मानसिक तनाव रहे। उत्तरार्द्ध भाग में धन लाभ एवं किसी मित्र की सहायता से कोई रुका हुआ कार्य बनेगा। परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे॥

मेष राशि (Aries)

(चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)



ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 6 फर. तक राशिस्वामी मंगल अस्त है, परन्तु वर्षारम्भ से भाग्य स्थान (धनु) में तथा 27 जन. से 6 मार्च के मध्य मंगल उच्चस्थ होने से शुभ होगा। 24 मई से 2 जुला. तक मंगल इसी राशि में संचार करेगा। ता. 5 अक्तू. से वर्ष के अन्त तक राशिस्वामी मंगल नीच राशि (कर्क) में रहेगा। वर्ष का उत्तरार्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण रहेगा।

वृष राशि (Taurus)

(इ, उ, ए, ओ, व, वि, वृ, वे, वो)



राशिफल-फरवरी-सन् 2009 ई.

मेष—मासारम्भ से इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। विदेश यात्रा का भी विचार बनेगा। मंगल-राहु का योग होने से कार्यों में अड़चनों के बाद सफलता मिलेगी। खर्च अधिक रहेंगे।

वृष—मासारम्भ से राशिस्वामी शुक्र लाभ स्थान (उच्चराशि) में होने से कुछ रूके हुये कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चप्रतिष्ठित व्यक्तियों से मेलजोल बढ़ेगा। परन्तु मास के अन्त में व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। खर्चों की अधिकता रहेगी।

मिथुन—इस मास में हालात में विशेष परिवर्तन होंगे। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। ता. 16 के पश्चात् आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने में कुछ विलम्ब होगा। ता. 22 के पश्चात् अप्रत्याशित लाभ एवं मनोरंजन कार्यों पर खर्च होगा। सुख साधनों में वृद्धि होगी।

कर्क—इस मास में संतान सम्बन्धी चिन्ता और संतान के कैरियर सम्बन्धी नई-नई योजनाएँ बनेगी। उत्साह में वृद्धि और धन लाभ के अवसर मिलेंगे। परन्तु उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य ढीला, अत्यधिक खर्च तथा वृथा भाग-दौड़ रहेगी। विद्यार्थियों का अधिकतर समय मित्रों और सम्बन्धियों में व्यतीत होगा।

सिंह—मासारम्भ में मिश्रित प्रभाव होंगे। अपने अफसरों से मधुर सम्बन्ध बनाने का प्रयास लाभकारी रहेगा। परिवार में सुखद माहौल के बावजूद कुछ वैचारिक मतभेद रहेंगे। उत्तरार्द्ध में किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु स्वास्थ्य ढीला, अनावश्यक तकरार एवं शत्रु सरगर्म रहेंगे।

कन्या—ग्रहस्थिति के अनुसार कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी। किसी नवीन कार्य की योजना भी बनेगी। परन्तु ता. 20 के पश्चात् व्यर्थ के वाद-विवाद और तकरार की सम्भावना है। खर्च की अधिकता से मन परेशान रहेगा। स्वास्थ्य भी कुछ ढीला रहेगा।

तुला—मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र उच्च स्थिति में होने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में कमी होगी। परन्तु नए-नए मित्रों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। उत्तरार्ध भाग में धन लाभ, भूमि, वाहनादि पर खर्च होगा। किसी शुभ कार्य पर भी खर्च होगा। किन्तु परिवार मे वृथा तकरार एवं व्यर्थ दौड़धूप अधिक रहे।

वृश्चिक—मासारम्भ में तृतीय स्थान पर मं. सू. गु. राहु आदि ग्रहों का योग होने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि तथा परिवार में शुभ मंगल कार्य होने के योग हैं। ता. 13 से वृथा दौड़-धूप, आय कम, खर्च अधिक और धन का लेने-देन करते समय धोखे की सम्भावना बनी रहेगी। मासान्त में अकस्मात् धन लाभ परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च होगा।

धनु—मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार और प्रगति होगी। कारोबार की स्थिति मध्यम रहे। ता. 12 से सूर्य तृतीयस्थ होने के कारण अकस्मात् यात्रा होने के संकेत है। उत्तरार्द्ध भाग में किसी विशिष्ट व्यक्ति से तकरार व मनमुटाव होगा। क्रोध पर नियन्त्रण रखें। कोई विशेष कार्य बिगड़ सकता हैं।

मकर—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल उच्च स्थिति में है। कार्येश शुक्र भी उच्चस्थ है, जिससे विघ्न बाधाओं के बावजूद कार्यों में सफलता मिलेगी। धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मनोरंजन कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे।

कुम्भ—मासारम्भ में राशि स्वामी शनि वक्री है, परन्तु स्वगृही दृष्टि होने से कुछ अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 12 से सूर्य का संचार एवं शनि की वक्री दृष्टि होने से विशेष परिश्रम और भागदौड़ से अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी। अकस्मात् यात्रा में परेशानी रहे।

मीन—राशिस्वामी गुरु एवं मंगल का योग लाभ स्थान पर तथा शुक्र इसी राशि में संचार करने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। धन लाभ के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में वाहनादि पर धन का खर्च और विदेशी कार्यो में सफलता के आसार बढ़ेंगे। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी होंगे।

राशिफल—मार्च—सन् 2009 ई.

मेष राशि—शुरू में मंगल उच्च का होने से धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात भी होगी। ता. 7 से मंगल व शनि में क्रूर दृष्टि होने से कार्यों में संघर्ष के हालात होंगे। आय कम व खर्च बढ़ेंगे।

वृष—लाभस्थान पर शुक्र होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। प्रिय-बन्धु से मुलाकात होगी। परिवार में कोई मंगल कार्य भी होगा। परन्तु शनि की ढैय्या होने से मानसिक तनाव अधिक होगा। मासान्त में वाहनादि पर धन का खर्च अधिक होगा।

मिथुन—मासारम्भ में ता. 5 से बुध भाग्य स्थान पर होने से उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बनेंगे। भाग्यवृद्धि एवं परिवार में खुशी के अवसर भी मिलेंगे। किसी नये कार्य की योजना बनेगी। ता० 22 से बुध नीचावस्था में होने से बनते कामों में अड़चने, तनाव, घरेलू एवं व्यसायिक उलझनें बढ़ेंगी।

कर्क—मासारम्भ में धन लाभ व उन्नति के पर्याप्त अवसर मिलेंगे परन्तु मंगल की नीच दृष्टि होने से समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। शनि साढ़ेसति के कारण मानसिक तनाव, स्वास्थ्य ढीला, उदरविकार से परेशानी का भय रहेगा। मासान्त में कोई बिगड़ा काम बनेगा।

सिंह—इस मास में आर्थिक हालात आगे से बेहतर होंगे। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। सांझेदारी के कार्यों में हानि हो। उत्तरार्द्ध भाग में परिवार सम्बन्धी विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। मानसिक तनाव एवं धन का खर्च अधिक रहेगा।

कन्या—मासारम्भ में ही राशिस्वामी बुध पंचम भाव में गुरु, मंगल व राहु युक्त है जिससे कैरियर सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। शुक्र की दृष्टि के कारण वृथा कार्यों पर खर्च भी अधिक होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य कुछ ढीला, पारिवारिक परेशानी और संतान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। परिश्रम एवं पुरुषार्थ से कुछ व्यवसायिक कार्यों में सफलता के आसार बढ़ेंगे।

तुला—राशिस्वामी शुक्र छटे स्थान पर तथा चतुर्थ भाव में बु. गु. मं. राहु आदि ग्रहों का योग बना हुआ है। जिससे आकस्मिक धन लाभ हो। देशविदेश में सम्पर्क सूत्र बढ़ेंगे। परिवार में शुभ मंगलकार्य भी होने के योग है। परन्तु उत्तरार्द्ध भाग में शुक्र वक्री होने से शत्रु हानि पहुंचाने की चेष्टा करेंगे। वृथा भागदौड़ भी रहेगी।

वृश्चिक—मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल उच्चस्थ होने से अकस्मात् लाभ एवं विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु खर्च को अधिकता से मन परेशान रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में मानप्रतिष्ठा में वृद्धि, धन लाभ एवं किसी विशेष कार्य में विघ्नों के रहते सफलता के आसार बढ़ेंगे। वाद-विवाद से बचें।

धनु—पूर्वार्द्ध भाग में अकस्मात् यात्रा, व्यवसाय में संघर्षपूर्ण हालात के बावजूद गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 14 से सूर्य मीन राशिगत संचार करने से घरेलू एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में परिवर्तन के संकेत हैं। राशिस्वामी गुरू नीच राशिगत होने से घर-परिवार की ओर से कोई चिन्ता रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा।

मकर—मासारम्भ में इस राशि पर चारग्रही योग बना हुआ है, जिससे समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन लाभ के अवसर मिलेंगे परन्तु व्यवसाय एवं घरेलू कार्यों में आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण मानसिक तनाव व उलझनें बढ़ेंगी।

कुम्भ—इस मास में शनि की स्वगृही दृष्टि होने से किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। धन लाभ के भी योग है। ता. 7 से मंगल इसी राशि में संचार करने से वृथा खर्च, मानसिक तनाव और पारिवारिक परेशानी रहेगी। स्वास्थ्य भी ढीला रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

मीन—इस राशि पर शुक्र उच्च स्थिति में संचरित हो रहा है। जिससे धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। वाहनादि संसाधनों पर खर्च भी बढ़ेंगे। ता. 14 से सूर्य भी इसी राशि में संचार करने से क्रोध व उत्तेजना अधिक रहे। परिवार में कुछ मतान्तर एवं आंखों में कष्ट की सम्भावना रहेगी।

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 8 सितं. तक शनि की ढैय्या रहेगी, परन्तु बीच-2 में राशिस्वामी शुक्र की स्थिति शुभ होने से शुभ फल घटित होंगे। ता. 27 जन. से 30 मई तक शुक्र उच्च (मीन) में होगा। 29 जून से 26 जुलाई तक शुक्र वृष में संचार करेगा। ता. 10 अक्तू. से 2 नवंबर के मध्य शुक्र नीच राशि (कन्या) में रहेगा।

मिथुन राशि (Gemini)

(क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)



ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 26 जन. तक इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि रहेगी। ता. 26 जन. से 6 फरवरी तक बुध की स्वगृही दृष्टि पड़ने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। 22 मार्च से 5 अप्रैल तक राशिस्वामी बुध नीचावस्था में, 14 अप्रै. से 22 मई तक मंगल की दृष्टि तथा 16 अग. से 4 अक्तू. के बीच मंगल का संचार होने से अशुभ फल होंगे। 9 सितं. के बाद शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव पड़ेगा।

राशिफल–अप्रैल–सन् 2009 ई.

मेष—मास के पूर्वार्द्ध में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। भाग-दौड़ के बाद भी आय कम तथा खर्च अधिक होंगे। उत्तरार्द्ध में कार्य स्थिति में सुधार के योग, निर्वाह योग्य आय के स्रोत बनें, कोई शुभ समाचार मिलेंगे।

वृष—मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र वक्री होकर लाभस्थान में है। जिससे कुछ सोची हुई योजना में विघ्नों उपरान्त सफलता मिलेगी। किसी प्रिय व्यक्ति से सम्पर्क होगा। उत्तरार्द्ध भाग में किसी मंगल कार्य का आयोजन एवं सुख साधनों पर खर्च अधिक होगा। मनोरंजन आदि कार्यों में रूझान अधिक रहे।

मिथुन—मासारम्भ में गृहस्थ जीवन में परेशानी एवं तनाव रहेगा। परन्तु 6 से 23 अप्रै. के मध्य हालात में सुधार एवं निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। कुछ रूके हुये कार्यों में प्रगति होगी। मासान्त में लेन-देन करते समय धोखे की सम्भावना रहेगी। सावधानी बरतें।

कर्क—घर-परिवार की ओर से कोई शुभ-समाचार मिलेगा। कैरियर के सम्बन्ध में उत्साहवर्धक गतिविधियां बनेंगी। ता. 13-14 से सूर्य मेष राशिगत होने से घरेलू एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में परिवर्तन के संकेत हैं। मासान्त में कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। किसी श्रेष्ठ पदाधिकारी से सम्पर्क लाभकारी रहेगा।

सिंह—पूर्वार्द्ध भाग में किसी से अनावश्यक झगड़ा व विवाद आदि परेशानी का विशेष कारण बनेगा। मानसिक तनाव व धन सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। ता. 13 से सूर्य (उच्चराशि) भाग्यस्थ संचार करने से धन लाभ एवं पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। देश विदेश से लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। नवीन योजना भी बने।

कन्या—मासारम्भ में स्वास्थ्य ढीला और नज़दीकी बन्धुओं से तनाव की स्थिति रहे। आराम कम और दौड़-धूप अधिक रहे। ता. 6 के पश्चात् सोची योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। ता. 14 के बाद परिवार में कोई खुशी का समागम होगा।

तुला—मासारम्भ में स्वास्थ्य कुछ ढ़ीला, शत्रु भय और व्यवसाय में भी विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 13 से सूर्य तथा 15 से मंगल की अशुभ दृष्टि रहने से घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। परिश्रम व दौड़धूप अधिक रहेगी। गुस्सा ज्यादा और आंखों में कष्ट की सम्भावना बनी रहेगी।

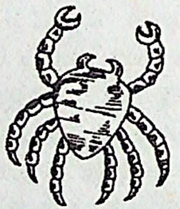
वृश्चिक—पूर्वार्द्ध भाग में किसी श्रेष्ठ व्यक्ति के साधनों द्वारा व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि, वाहनादि का क्रय विक्रय भी होगा। उत्तरार्द्ध में व्यावसाय सम्बन्धी विभिन्न तरीकों से प्रयास करने पर आय होगी। नए-नए मित्रों से सम्पर्क बढ़ेगा परन्तु क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना कार्य बिगड़ जाएगा। सावधानी बरतें।

धनु—इस मास में मिश्रित प्रभाव होगा। विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुजारे लायक धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। धर्म-कर्म में रूझान रहे। उत्तरार्द्ध भाग में यद्यपि अकस्मात् किसी बिगड़े हुए कार्य के बन जाने से खुशी का माहौल बनेगा परन्तु परिवार में विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ता रहेगी।

मकर—पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ के आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे, किसी

कर्क राशि (Cancer)

(हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो)



ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 6 मार्च तक इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि रहेगी। परन्तु वर्षारम्भ से 30 अप्रैल तक गुरु की शुभ दृष्टि भी रहेगी। जिससे मिश्रित प्रभाव रहेगें।

शनि साढ़ेसाती का प्रभाव भी 8 सितं. तक रहेगा। 23 मई से 2 जुला. तक मंगल की चतुर्थ (नीच) दृष्टि पड़ेगी। 30 जुला. से 18 दिसं. तक गुरु की उच्च एवं शुभ दृष्टि रहेगी। 5 अक्तू. से वर्षान्त तक मंगल का संचार रहेगा।

सिंह राशि (Leo)

(म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे)



उच्चधिकारी के साथ विरोध होगा, मानसिक तनाव भी रहें। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। उत्तरार्ध भाग में स्थिति में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे।

कुम्भ—मासारम्भ में शनि-मंगल के मध्य समसप्तक योग होने से आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होगी। मन उदासीन रहेगा। परिवार में भी विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। उत्तरार्द्ध में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि, शुभ कार्यों पर धन का खर्च एवं विदेशी कार्यों में प्रगति के योग हैं।

मीन—मासारम्भ में सूर्य-शुक्र-बुध आदि ग्रहों का सम्बन्ध बना हुआ है। जिससे कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। ता. 14 के पश्चात् परिवार में शुभ मंगल कार्य सम्पन्न होंगे। धन लाभ के अवसर भी मिलेंगे। वैशाख माहत्म्य का पाठ करना शुभ रहेगा।

राशिफल–मई–सन् 2009 ई.

मेष—विघ्नों के बावजूद धन प्राप्ति के साधनों में वृद्धि होगी, परन्तु आकस्मिक खर्चों के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी। ता. 24 मई के बाद इस राशि पर मंगल का संचार होने से रुके हुए कार्यों में कुछ सफलता मिलेगी।

वृष—मासारम्भ में इस राशि पर बुध का संचार है। जिससे व्यवसायिक एवं घरेलू उलझनें बढ़ेगी। मंगल-शुक्र का योग होने से किसी प्रिय एवं उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्बन्ध बनेंगे। निर्वाह योग्य आय के साधनों के साथ-साथ खर्चों में भी वृद्धि होगी।

मिथुन—पूर्वार्द्ध भाग में धन का खर्च अधिक परन्तु निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के योग बनेंगे। ता-7 से बुध वक्री होने के कारण खर्च में वृद्धि, मानसिक तनाव, कार्य-व्यवसाय में उलझनें बढ़ेगी। अत्यधिक क्रोध एवं उत्तेजना से कार्य बिगड़ने के योग हैं। स्वास्थ्य भी कुछ ढीला रहेगा।

कर्क—मासारम्भ परिश्रम व दौड़धूप अधिक रहेगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क रहेंगे। किन्तु ता. 23 से मंगल की अशुभ दृष्टि होने से वृथा भागदौड़, शत्रु सरगर्म रहेंगे। धन का अपव्यय होगा।

सिंह—पूर्वार्द्ध भाग में नौकरी व व्यापार में उन्नति के लिए उच्च व प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सम्पर्क तथा सहयोग लाभकारी रहेगा। विदेश गमन की योजना भी बनेगी। परन्तु शनि साढ़ेसती के प्रभाव से बनते कामों में विलम्ब, मानसिक तनाव, सांझेदारी के कार्यों में हानि और धन का अपव्यय होगा।

कन्या—मासारम्भ से राशिस्वामी बुध भाग्यस्थान में वक्री होने से विशेष परिश्रम एवं भागदौड़ के पश्चात् सोचे हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। भूमि, वाहनादि कार्यों से लाभ एवं सुख मिलेगा। यद्यपि निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे किन्तु खर्चों की अधिकता के कारण मन अशान्त रहेगा।

तुला—इस मास शुक्र छटे स्थान पर एवं सूर्य की नीचदृष्टि होने से परिवार में वाहनादि सुख-साधनों पर खर्च होगा। परन्तु व्यवसाय में कई प्रकार के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेगी। उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य ढीला, बनते कामों में विघ्न, खर्च अधिक और परिवार में विघ्न बाधाओं के रहते शुभ कार्य पर खर्च होगा।

वृश्चिक—प्रयास करने पर इस मास लाभ के अवसर पहले से बेहतर होंगे। किसी महत्त्वपूर्ण कार्य में व्यस्त रहेंगे। ता.14 से सूर्य की मित्र दृष्टि रहेगी। जिससे व्यवसाय में संघर्ष के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। विशिष्ट लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे। ता. 23 से राशिस्वामी मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से भूमि सम्बन्धी कार्यों से लाभ रहेगा।

धनु—ता. 1 मई से राशिस्वामी गुरु कुम्भ राशि में जाने से मिला-जुला फल प्राप्त होगा। व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी में परिवर्तन का विचार भी बनेगा। मासान्त में शरीर कष्ट, पेट व लीवर में खराबी और परिवार में मनमुटाव के योग हैं। परन्तु उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल लाभ के संकेत करता है।

मकर—मासारम्भ में राशि स्वामी शनि अष्टम भाव में वक्री हुआ है। जिससे आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ मन-मुटाव पैदा होंगे। अनावश्यक दौड़ धूप एवं खर्चों में वृद्धि होने से परेशानी हो।

कुम्भ—इस मास मिश्रित फल प्राप्त होंगे। ता. 10 से कुछ बिगड़े कामों में सुधार और शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 16 के पश्चात् स्वास्थ्य कुछ ढीला और मानसिक तनाव रहेगा। व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव का सामना रहे परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मीन—इस राशि पर शुक्र उच्चस्थ में संचार करने से व्यवसाय की दृष्टि से पूर्वार्द्ध भाग शुभ रहेगा। भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध में सोची योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य कुछ ढीला, वृथा कार्यों में अधिक समय नष्ट होगा। आकस्मिक खर्च भी बहुत बढ़ेंगे।

राशिफल–जून–सन् 2009 ई.

मेष—राशि स्वामी मंगल इसी राशि में होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे, परन्तु दूसरे स्थान में सूर्य होने से धन के आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। 15 जून के बाद पुरुषार्थ में वृद्धि के साथ-साथ निर्वाह योग्य आय धन के साधन बनेंगे।

वृष—राशिस्वामी शुक्र द्वादश भाव में होने से आकस्मिक खर्चों में वृद्धि होगी। पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिन समस्याओं का सामना रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ एवं चिन्ताओं में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध भाग में कोई बिगड़ा कार्य बन जाने से हालात में परिवर्तन होगें। खुशी के अवसर भी मिलेंगे।

मिथुन—मासारम्भ में अत्यधिक परिश्रम के करने से ही निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। परन्तु ता. 5 से बुध द्वादश भाव में आने से लेन-देन के कार्यों में परेशानी एवं खर्च भी बढ़-चढ़ कर होगा। उत्तरार्ध में कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी। परन्तु स्वास्थ्य ढीला एवं गुप्त चिन्ता रहे।

कर्क—मंगल की अशुभ दृष्टि इस राशि पर होने से बनते कार्यों में विघ्न, घरेलू एवं आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। परिवार में मनमुटाव रहे। स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता रहे। परन्तु ता. 21 के बाद अकस्मात् धन लाभ की सम्भावनाएं होंगी। संतान से शुभ सूचना एवं विदेशी सम्पर्क सूत्र बनेंगे।

सिंह—अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के योग हैं। शुभ मंगल कार्यों पर खर्च होगा। पारिवारिक सहयोग से किसी विशेष कार्य में सफलता मिले। परन्तु उत्तरार्द्ध भाग में कुछ व्यवसायिक उलझनों का सामना रहेगा। किसी नवीन कार्य योजना को कार्यरूप देने का प्रयास लाभकारी होगा।

कन्या—शनि साढ़ेसती के कारण बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होंगी। व्यवसाय में संघर्ष एवं कठिन हालात के बावजूद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में भूमि-जायदाद सम्बन्धी सुखों पर खर्च अधिक और स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

तुला—मासारम्भ से शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने से सुख साधनों पर खर्च तथा अत्यधिक परिश्रम करने पर आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु गुरु की भी नवम दृष्टि होने से घरेलू हालात में सुखद परिवर्तन होंगे। किन्तु संतान सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। ता. 22 के पश्चात् विदेशी कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक—इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से व्यवसाय में लाभ और स्वास्थ्य में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। शुभ समाचार मिलेगा। उत्तरार्द्ध भाग में शुभ कार्यों पर खर्च होगा। अकस्मात् मन में उचाटता, उदासीनता एवं परिवार में मतभेद भी उत्पन्न होंगे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

धनु—राशिस्वामी गुरु कुम्भ राशि में संचार कर रहा है, जिससे पारिवारिक परेशानी और कलह के योग है। व्यर्थ के कार्यों में समय नष्ट होगा। लेन-देन के कार्यों में जल्दबाजी से धन हानि के योग हैं। उत्तरार्द्ध भाग में व्यवसाय में छोटे-छोटे कार्य निपटाने से अवश्य ही लाभ होगा। परिश्रम से किए गए प्रयास सार्थक सिद्ध होंगे।

मकर—गृह में मंगल कार्य पर खर्च होगा। समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। निकटस्थ व्यक्ति द्वारा सम्मान प्राप्त होगा। रुका हुआ धन मिलने के आसार बढ़ेंगे। आर्थिक परेशानियों के कारण उलझनें बढ़ेंगी।

कुम्भ :—इस राशि पर गुरु का संचार होने से विशेष रूप से स्वास्थ्य परेशानी, मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न एवं धन का खर्च अधिक रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। अकस्मात् धन लाभ के भी अवसर मिलेंगे। खर्च भी अधिक रहे।

मीन—मासारम्भ में शुक्र मेष राशि (द्वितीय) में संचार कर रहा है जिससे आकस्मिक खर्च में वृद्धि और गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाव में कार्यव्यवस्थाएँ एवं उत्साह में वृद्धि होगी। कुछ वृथा यात्रा के कारण परेशानी हो। स्वास्थ्य ढीला एवं आंखों में कष्ट के योग हैं।

राशिफल–जुलाई–सन् 2009 ई.

मेष—विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। लाभ के साथ-साथ खर्च भी बढ़ेंगे। घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान होगा। मासान्त में कोई बिगड़ा हुआ काम बनेगा।

वृष—मासारम्भ से राशिस्वामी, शुक्र इसी राशि में संचार कर रहा है। जिससे समाज में मान सम्मान में वृद्धि तथा धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

ग्रहगोचर : इस राशि पर शनि का संचार 8 सितंबर तक रहेगा। परन्तु शनि साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव वर्ष भर रहेगा। वर्षारम्भ में पंचम भाव में सूर्य मंगल का योग बनना शुभ होगा। ता. 13 अप्रैल से 14 मई के मध्य राशिस्वामी सूर्य उच्च स्थिति (मेष) में होगा। 16 अग. से 15 सित., तक सूर्य इसी राशि तथा **17 अक्तू. से 15 नवं.** के मध्य नीच राशि में संचार करेगा।

कन्या राशि (Virgo)

(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)



ग्रहगोचर : पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव वर्षभर रहेगा। 7 मार्च से 23 मई के मध्य मंगल की दृष्टि 22 मार्च से 5 अप्रैल तक राशिस्वामी बुध नीच राशि (मीन) में संचार करेगा। ता० 20 अग० से 23 सित० के बीच तथा 5 अक्तू. से 24 अक्तू. के मध्य बुध इसी राशि (कन्या) में उच्च स्थिति में होगा। 9 सित. से वर्षान्त तक शनि का संचार रहेगा।

विदेशादि जाने की योजना बनेगी। शनि ढैय्या के कारण मानसिक तनाव, स्वास्थ्य ढीला और आंखों में कष्ट के योग हैं।

मिथुन—मासारम्भ से बुध मिथुन में संचार कर रहा है जिससे व्यवसायिक क्षेत्रों में धन लाभ, आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च अधिक रहेगा। दूरस्थ यात्राएँ होंगी। ता. 15 से दौड़धूप अधिक, आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। जमीन-जायदाद सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होंगी।

कर्क—इस मास में मिला-जुला प्रभाव होगा। आय कम और खर्च अधिक होगा। वृथा भागदौड़ एवं खर्चों की अधिकता से मन परेशान होगा। ता. 16 से सूर्य इस राशि पर होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, पेट विकार तथा निकट-बन्धुओं से मनमुटाव एवं विरोध बढ़ेंगे।

सिंह—इस मास यद्यपि व्यावसायिक क्षेत्रों में स्थिति पहले से बेहतर रहेगी। रिश्तेदारों से मेल-जोल बढ़ेगा। सुख साधनों पर खर्च होगा। परन्तु शनि लग्नस्थ होने के कारण बनते कामों में विघ्नों का सामना रहेगा। वृथा विवाद से मानसिक तनाव व हानि होगी। शरीर कष्ट एवं चोटादि का भय रहेगा।

कन्या—बुध दशमस्थान में हैं। कार्य व्यवसाय सम्बन्धी नवीन योजना बनेगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। घर-परिवार में मंगल कार्य का आयोजन होने के संकेत हैं। ता. 15 से बुध लाभ स्थान एवं कर्क राशि में होगा। मान सम्मान में वृद्धि एवं धन लाभ के साधन बनेंगे परन्तु खर्च भी बढ़ेंगे।

तुला—इस मास मिला-जुला प्रभाव होगा। कुछ सोची योजनाओं में सफलता के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ेगा। यद्यपि व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे परन्तु किसी विशेष से धोखे की सम्भावना भी बनी रहेगी। मासान्त में विभिन्न अड़चनों के बावजूद दैनिक कार्यों में सफलता मिलेगी। संतान सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी।

वृश्चिक—इस मास राशिस्वामी मंगल की विशेष दृष्टि इस राशि पर होने से मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में संतान सम्बन्धी एवं विद्या के क्षेत्र में चिन्ता बनी रहेगी। बनते कामों में विघ्न और किसी विशेष से धोखे की संभावना बनी रहेगी।

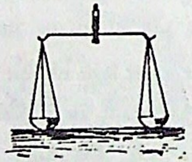
धनु—राशिस्वामी गुरु वक्री होने के कारण व्यवसाय में धन लाभ एवं उन्नुति के अवसर तो मिलेंगे परन्तु मान-प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। ता. 3 से मंगल की सप्तम दृष्टि पड़ने से स्वभाव में क्रोध रहे, मासान्त में खर्च भी बढ़-चढ़ कर होगा।

मकर—मासारम्भ में इस राशि पर राहु का संचार है। क्रोध की मात्रा अधिक हो। मानसिक तनाव रहेगा। पारिवारिक उलझनें व समस्याएं उभरेंगी। स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी बरतें। संघर्ष व परिश्रम के उपरान्त गुजारे लायक धन की प्राप्ति होगी और उलझा हुआ कार्य बनेगा। शुभ समाचार मिलने के संकेत मिलते हैं।

कुम्भ—मासारम्भ में कार्यक्षेत्र में स्थिति अनुकूल रहेगी। शुभ कार्यों पर व्यय अधिक होगा। स्त्री एवं परिवार सम्बन्धी सुखों में वृद्धि होगी। नवीन कार्य की योजना बनेगी। किसी प्रिय एवं श्रेष्ठ जनों के साथ सम्पर्क स्थापित होगा।

तुला राशि (Libra)

(रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते)



ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 9 सितम्बर तक इस राशि पर शनि की उच्च एवं शुभ दृष्टि रहेगी। 27 जन० से 30 मई के बीच राशि स्वामी शुक्र उच्च राशि (मीन) में होगा। 13 अप्रैल से 14 मई के बीच सूर्य की तथा 15 अप्रै० से 2 जुलाई के बीच मंगल की अशुभ दृष्टि होगी। 31 मई से 29 जून के मध्य इस राशि पर शुक्र की स्वगृही दृष्टि होगी। 9 सितम्बर से तुला राशि पर शनि की साढ़ेसाती प्रारम्भ होगी।

वृश्चिक राशि (Scorpio)

(तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)



मासान्त में छोटे-छोटे कार्य निपटाने से लाभ होगा। श्रावण में सोमवार के व्रत और भगवान शिव की अर्चना का विशेष महत्त्व है।

मीन—इस मास कार्य व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर मिलेंगे। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम और संघर्ष का सामना रहेगा। ता. 20 के पश्चात् अत्यधिक भाग-दौड़ के उपरान्त निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। मानसिक तनाव एवं खर्च में वृद्धि होगी। श्रावण माहात्म्य का पाठ एवं शिवपूजन करना शुभ रहेगा।

राशिफल–अगस्त–सन् 2009 ई.

मेष—मास के शुरू में राशिस्वामी मंगल दूसरे तथा शुक्र तीसरे स्थान पर है जिससे धन सम्बन्धी परेशानियां बढ़ेगी। आराम कम और संघर्ष अधिक रहेगा। भागदौड़ अधिक करने पर भी लाभ कम और खर्च अधिक रहेंगे। 17 अगस्त के पश्चात् हालात में कुछ सुधार के योग बनेंगे।

वृष—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल का संचार होने से पूर्वार्द्ध भाग में शरीर कष्ट, बनते कामों में विघ्न, गुस्सा ज्यादा और मित्र वर्ग से कुछ परेशानी रहेगी। उत्तरार्द्ध में धन लाभ के अवसर मिलते रहेंगे। विदेशी कार्यों में प्रगति व सफलता के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

मिथुन—पूर्वार्द्ध में गुजारे योग्य धन की प्राप्ति होगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा होते हुए भी सामाजिक कार्यों में विघ्न रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में विघ्न बाधाओं के बावजूद कुछ कार्यों में सफलता मिलेगी। ता. 20 के पश्चात् परिवार में शुभ मंगल कार्यों पर धन खर्च होगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं गुस्सा ज्यादा आयेगा।

कर्क—पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त परिश्रम के बाद गुजारे योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। स्वास्थ्य में विकास एवं घरेलू उलझनों के कारण परेशानियां बढ़ेंगी। उत्तरार्ध में कुछ रूके कुछ कार्यों में सुधार एवं विदेश यात्रा सम्बन्धी योजना बनेगी। परन्तु मानसिक तनाव एवं भाई-बन्धु का सहयोग कम होगा।

सिंह—मासारम्भ में विघ्न बाधाओं के रहते निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। व्यर्थ की भागदौड़ और योजनाओं को कार्य-रूप देने में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 16 से सूर्य इसी राशि में संचार करने से व्यवसाय में धन लाभ व उन्नति के योग हैं। परन्तु वृथा मानसिक तनाव और पारिवारिक चिन्ता रहे।

कन्या—मासारम्भ में राशिस्वामी बुध द्वादश स्थान में होने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 11 के पश्चात् विदेशी सम्बन्धों से कुछ लाभ होने के संकेत हैं। ता. 20 से राशिपति बुध कन्या राशि में ही संचार करने से व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यशैली में परिवर्तन से लाभ के अवसर मिलेंगे। परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। सोच-विचार कर धन का खर्च करें।

तुला—शनि की उच्चदृष्टि इस राशि पर होने से व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। सोची हुई कार्य योजनाओं में कुछ लाभ होगा। ता. 16 से कोई रुका हुआ कार्य बनेगा। अकस्मात् विशिष्ट जनों से सम्पर्क बढ़ेगा। खर्च की अधिकता से मन कुछ परेशान होगा परन्तु पारिवारिक हालात पहले से बेहतर होंगे।

वृश्चिक—इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि 15 अगस्त तक रहने से मान-सम्मान में वृद्धि, धार्मिक कार्यों की ओर अभिरूचि बढ़ेगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 16 से मंगल अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ एवं अड़चनें रहेंगी।

धनु—राशिस्वामी गुरु वक्री होकर मकर राशि में संचार कर रहा है जिससे अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। भाग-दौड़ अधिक और सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। परन्तु ता० 16 से सूर्य सिंह राशिगत संचार करने से मान-सम्मान में वृद्धि होगी। नौकरी आदि में आर्थिक पक्ष सुदृढ़ होगा।

मकर—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। मानसिक चिन्ताएं व फिजूलखर्ची बढ़ेगी। भाग-दौड़ अधिक रहेगी। व्यापार नौकरी में बाधाएं उत्पन्न होंगी। धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति रखने से कल्याण होगा।

कुम्भ—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा। उत्तरार्द्ध में, बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। धन हानि, घरेलू व व्यवसायिक उलझनों के कारण मन अशांत रहेगा। श्रावण मास का पाठ करना शुभ होगा।

मीन—गुरु-राहु का योग होने से विघ्नों बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के साधनो में कुछ बढ़ौतरी होगी। मानसिक तनाव एवं आवेश से बचें। उत्तरार्द्ध में पारिवारिक मित्रों का सहयोग मिलेगा परन्तु कार्यक्षेत्र में स्थिति असंतोषजनक रहेगी। आय कम व खर्च अधिक होंगे।

राशिफल–सितम्बर–सन् 2009 ई.

मेष—पुरुषार्थ एवं परिश्रम करने पर निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। वृथा दौड़-धूप अधिक रहेगी और खर्चों में वृद्धि होगी। मासान्त में कुछ धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार की ओर से कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा।

वृष—ता. 15 तक मंगल केतु का योग होने से वृथा वाद-विवाद में परेशानी, धन हानि और शरीर कष्ट के योग हैं। परन्तु उत्तरार्द्ध भाग में किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। किसी प्रियजन की सहायता से व्यवसायिक क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। पारिवारिक सुखों में वृद्धि परन्तु खर्च अधिक रहेंगे।

मिथुन—इस राशि पर मंगल का संचार होने से निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ मनमुटाव एवं कलह क्लेश रहेगा। ता. 9 सितं. से इस राशि पर शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। जिससे गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे। उत्तरार्द्ध में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता रहे।

कर्क—पूर्वार्द्ध भाग में आराम कम, संघर्ष व दौड़-धूप अधिक रहेगी। आवास व रहन-सहन में परिवर्तन के योग है। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। उत्तरार्द्ध में गुरु की दृष्टि होने से कोई शुभ कार्य पर खर्च होगा। धैर्य और साहस से कार्य करने पर सफलता मिलेगी।

सिंह—मासारम्भ में सूर्य का संचार इसी राशि में होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, धन लाभ एवं कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। जमीन-जायदाद अथवा

ग्रहगोचर : 28 जन. से 6 मार्च तक राशि स्वामी मंगल अपनी उच्च राशि (मकर) में संचार करेगा। 23 मई से 15 अगस्त तक इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि रहेगी। ता. 9 सितं से साल के अन्त तक शनि की विशेष (दूरी) दृष्टि होगी। ता० 5 अक्टू० से वर्षान्त तक राशिस्वामी मंगल नीच राशि में संचार करेगा।

धनु राशि
(Sagittarius)

(ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)



ग्रहगोचर : वर्ष के आरम्भ से 30 अप्रैल तक, पुनः (फिर) 30 जुला० से 19 दिसं० तक राशि स्वामी गुरु धनु नीच राषि (मकर) में संचार करेगा 15 जून से 12 अक्तूबर तक राशि स्वामी गुरू वक्री रहेगा। ता. 17 नंव. से वर्ष के अन्त तक राहु धनु राशि में ही संचार करेगा।

वाहनादि का क्रय-विक्रय होगा। उत्तरार्द्ध भाग में अकारण ही परिवार में विरोध और तनाव उत्पन्न हो। स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें। गुस्सा ज्यादा आयेगा।

कन्या—मासारम्भ में सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। ता. 3-4 को सन्तान सम्बन्धी कैरियर पर खर्च होंगे। नए लोगों से मेल और व्यवसाय में नवीन योजनाएँ विचाराधीन रहेंगी परन्तु सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। किसी पर भी अधिक भरोसा न करें। मानसिक तनाव व अत्यधिक खर्च भी बढ़ेंगे। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें।

तुला—मासारम्भ से ही राशिस्वामी शुक्र दशम में होने से आय कम तथा व्यर्थ के कार्यों पर खर्च होगा। आर्थिक प्रयासों में सफलता के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ेगा। ता. 9 से इस राशि पर शनि की साढ़ेसती का प्रभाव शुरू होने से मानसिक तनाव व घेरलू उलझनें बढ़ेंगी। कारोबारी परेशानी भी रहे।

वृश्चिक—पूर्वार्द्ध भाग में घेरलू परेशानियों के कारण मन व्यथित रहेगा। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। तारीख 9 से शनि की तृतीय दृष्टि होने से व्यवसाय में संघर्ष एवं कठिन परिस्थितियों का सामना रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में विरोधियों द्वारा निर्मूल शंकाओं को बढ़ावा देने से कार्य क्षेत्र में परेशानी रहेगी। दिमागी तनाव तथा खर्च अधिक रहेगा।

धनु—इस मास राशिस्वामी गुरु तृतीय में संचार कर रहा है और मंगल की सप्तम दृष्टि भी रहेगी। गृह स्थिति अनुसार, वृथा यात्रा, भाग-दौड़ के उपरान्त भी गुजारे योग्य धन प्राप्ति में विलम्ब हो एवं स्वास्थ्य भी कुछ ढीला रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में भूमि-सवारी आदि सुखों पर खर्च अधिक होंगे।

मकर—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक रहेगा। किसी निकटस्थ मित्र से मतभेद उत्पन्न होंगे। पुरुषार्थ और परिश्रम करने पर गुजारे लायक धन की प्राप्ति होगी। अकस्मात् विशिष्ट जनों से सम्पर्क बढ़ेगा। घरेलू कार्यों पर एवं वाहन आदि पर खर्चों में बहुलता रहे। शिव उपासना का करना शुभ रहे।

कुम्भ—मासारम्भ में कठिन परिश्रम से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे, परन्तु ता. 9 से राशिस्वामी शनि अष्टमस्थ से कार्य-व्यवसाय की स्थिति अनिश्चित होगी। आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। आय के सम्बन्ध में विघ्न पैदा होंगे। मंगलवार के व्रत और श्रीहनुमान उपासना करना शुभ रहेगा।

मीन—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। व्यवसाय में व्यर्थ की परेशानियां होंगी। परिवार सम्बन्धी विशेष चिन्ता रहेगी। किसी विशेष व्यक्ति के सम्पर्क साधनों से बिगडे कार्य में सुधार होगा। मासान्त में धर्म-कर्म में रुझान और पराक्रम में वृद्धि होगी।

राशिफल–अक्तूबर–सन् 2009 ई.

मेष—मंगल पर गुरु की दृष्टि होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुजारे लायक धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी उच्चाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। घर परिवार की ओर से खुशी का समाचार मिलेगा। परन्तु मासान्त में निकट बन्धुओं से कलह एवं धन का खर्च अधिक रहे।

वृष—मास के शुरू में कुछ बनते कामों में विघ्नों के बावजूद कार्य सिद्धि

कुछ विलम्ब से होगी। आय के साधन निर्वाह योग्य बनते रहेंगे। ता. 10 से शुक्र नीच राशि (कन्या) में प्रवेश होने से कारोबार में व्यवस्ताएँ बढ़ेगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहे। वृथा दौड़ धूप एवं घरेलू उलझनें रहेंगी

मिथुन—आय मध्यम व खर्च अधिक रहेगा। तारीख 5 से हालात में सुधार और कार्य-व्यवसाय में उन्नति के योग हैं। क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ परन्तु शत्रु भय बना रहेगा। ता. 19 से अचानक धन के खर्च बढ़ेंगे। मनोरंजन व व्यर्थ के कामों में समय व्यतीत होगा। ता. 17 अक्तूबर से पं. देवी दयालु कृत कार्तिक माहात्म्य का पाठ करना शुभ रहेगा।

कर्क—धन लाभ साधारण रहेगा। कार्यक्षेत्र में दौड़ धूप अधिक, वृथा तनाव और खर्च ज्यादा रहेगा। ता. 5 से मंगल का संचार होने से नौकरी आदि में परेशानी तथा क्रोध एवं उत्तेजना से किसी बने कार्य में स्थिति बिगड़ सकती है। गुरू की दृष्टि होने से शुभ एवं धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी।

सिंह—विशिष्ट जनों से सम्पर्क व मेल-जोल बढ़ने से व्यवसाय में उन्नति और साधनों में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ कार्य की योजना भी बनेगी। परन्तु ता. 17 से राशिस्वामी सूर्य नीच रहने से क्रोध अधिक, घरेलू उलझनें तथा कारोबार में रुकावटें रहेंगी। शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे।

कन्या—राशिस्वामी बुध बारहवें होने से व्यवसाय में अड़चनें व खर्च भी अधिक रहेंगे। आर्थिक व घरेलू परेशानियों के कारण मन अशान्त रहेगा। आकस्मिक खर्च भी अधिक रहेंगे। यात्रा के भी योग है। विदेशी कार्यों में प्रगति होंगी। प्रिय बन्धु से मुलाकात और धार्मिक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी।

तुला—इस मास में अत्यधिक संघर्ष के बावजूद कुछ कार्यों में सफलता मिलेगी। धन और सुख साधनों में वृद्धि होगी। विदेशी मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। परन्तु शनि साढ़ेसती के प्रभाव से मानसिक तनाव एवं बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। उत्तरार्द्ध में इस राशि पर सूर्य बुध का योग होने से मंगल कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा।

वृश्चिक—मासारम्भ से मंगल अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, घरेलू एवं व्यावसायिक चिन्ता रहेगी। सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। ता. 5 से मंगल-केतु का योग कर्क राशि में होने से आय की अपेक्षा खर्च अधिक, मानसिक तनाव, निकट बन्धुओं से मनमुटाव एवं स्वास्थ्य में खराबी के योग हैं।

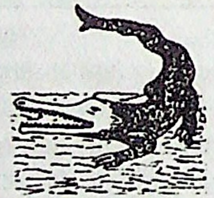
धनु—पूर्वार्द्ध भाग में संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रूके हुए कार्य बनेंगे। ता. 5 से मंगल-केतु अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट, व्यवसाय में परेशानियां और आय में कमी रहे। ता. 13 से गुरु मार्गी होने से हालात में सुधार और परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे।

मकर—कार्यक्षेत्र में व्यवस्ताएं बढ़ेंगी यद्यपि व्यवसाय में उन्नति के कुछ अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु घरेलू उलझनों के कारण लाभ प्राप्त नहीं होगा। किसी प्रियजन से मुलाकात होगी। उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य में हानि। लाभ कम खर्च अधिक रहे। परन्तु कोई बिगड़ा काम बनेगा। धन लाभ हो। प्रियबन्धु से मुलाकात हो।

कुम्भ—इस मास मिश्रित फल होंगे। नौकरी व व्यवसाय में यद्यपि उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु पारिवारिक व्यवस्था के कारण विशेष लाभ नहीं होगा।

मकर राशि (Capricorn)

(भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी)



ग्रहगोचर : वर्ष के आरम्भ से 8 सितं. तक इस राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव तथा वर्षारम्भ से 16 नवम्बर तक इस राशि पर राहु का संचार रहेगा। ता. 28 जन. से 6 मार्च के बीच मंगल इस राशि पर उच्च स्थिति में रहेगा। वर्षारम्भ से 30 अप्रै. तक तथा फिर 30 जुला. से 18 दिसं. तक गुरु का संचार मकर में रहेगा। 5 अक्तूबर से वर्षान्त तक मंगल की उच्च दृष्टि होगी।

कुम्भ राशि (Aquarius)

(गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द)



गुज़ारे योग्य आय होगी। ता. 26-27 से परिवार में कुछ तनाव और उलझनें उत्पन्न होंगी। आर्थिक क्षेत्र में परेशानी बढ़ेगी। मंगल स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

मीन—बिगड़े कामों में सुधार होगा। मान-सम्मान में बढ़ौतरी और परिवार में अकस्मात् खुशी का वातावरण होगा। ज़मीन-जायदाद तथा वाहनादि का क्रय-विक्रय होगा। नए से मेल-जोल बढ़ेगा। विघ्नों के बावजूद कार्य व्यवसाय में उन्नति का योग है, स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें।

राशिफल—नवम्बर—सन् 2009 ई.

मेष—मंगल नीच राशिगत होने से अत्यधिक संघर्ष के पश्चात् निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। परिवार में किसी विशेष सदस्य के सम्बन्ध में चिन्तित रहेंगे। ता. 17 के पश्चात् वृथा भागदौड़, आंखों में कष्ट, बनते कामों में विलम्ब तथा मानसिक तनाव रहेगा।

वृष—इस मास में मिला-जुला प्रभाव होगा। पूर्वार्द्ध में कोई बिगड़ा काम बनेगा। आय से खर्च अधिक रहे। उत्तरार्द्ध में किसी प्रिय-बन्धु से मुलाकात एवं परिवार में शुभ मंगल कार्य पर खर्च होगा। परन्तु वृथा वाद-विवाद, मानसिक तनाव एवं संतान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

मिथुन—इस राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव चल रहा है जिससे मानसिक तनाव, मनमुटाव, वृथा भाग-दौड़, अपने ही लोगों से मतभेद और वृथा खर्च होगा। ता. 19 के पश्चात् मनोरंजन आदि के अवसर मिलेंगे और धार्मिक अनुष्ठान भी होंगे। विद्या में सफलता एवं उत्साह में वृद्धि होगी।

कर्क—इस राशि पर गुरू की उच्चदृष्टि होने से व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। परन्तु मंगल-केतु का संचार ता. 17 तक रहने से मानसिक तनाव तथा उत्तेजना अधिक बढ़ेगी। शरीर कष्ट एवं धन का खर्च अधिक रहेगा। मासान्त में परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे।

सिंह—सूर्य नीच राशिगत संचार करने से पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। कुछ बनते कामों में आशानुकूल प्रगति नहीं होगी। गुस्सा ज्यादा, मन उचाट एवं स्वास्थ्य चिन्ता रहे। परन्तु उत्तरार्ध में सोचे हुए कार्यों में कुछ सफलता और अकस्मात् धार्मिक प्रवृत्ति बनेगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में भी कुछ सफलता की सम्भावना होगी।

कन्या—मासारम्भ में बुध द्वितीय भावस्थ होने से कार्यक्षेत्र में व्यवस्ताएँ बनी रहेगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। विदेश सम्बन्धियों की सहायता से विदेशी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु इस राशि पर शनि का संचार होने से आराम कम व संघर्ष रहेगा। वृथा भागदौड़ और स्वभाव में तेजी एवं गुस्सा ज्यादा आयेगा।

तुला—पूर्वार्द्ध भाग में सूर्यबुध आदि ग्रहों का संचार होने से अत्यधिक संघर्ष, परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। ता. 3 से 27 के मध्य शुक्र स्वराशिगत होने से मान प्रतिष्ठा में वृद्धि, अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के योग है। खर्च की भी अधिकता रहेगी।

वृश्चिक—राशिस्वामी मंगल नीचराशिगत केतु युक्त होने से बनते कामों में विघ्न, पारिवारिक परेशानी, स्वास्थ्य ढीला रहे परन्तु धर्म-कर्म की ओर रूझान

एवं विदेशी सम्बन्धियों से लाभ के योग हैं। ता. 16 के पश्चात् हालात में सुधार एवं विशिष्ट जनों के सम्पर्क से लाभ के अवसर मिलेंगे। वृथा झगड़े से बचें।

धनु—मंगल-केतु अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, बनते कामों में विघ्न, आय से खर्च अधिक रहेगा। ता. 17 के पश्चात् हालात में कुछ परिवर्तन एवं स्थिति पहले से बेहतर बनेगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति एवं परिवार में खुशी के अवसर भी मिलेंगी परन्तु राहु के कारण मानसिक तनाव रहे।

मकर—कारोबार मध्यम रहेगा। विघ्न बाधाओं के बावजूद धन की प्राप्ति होगी। विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। घर-परिवार की तरफ से चिन्ता उत्पन्न होगी। कुछ घरेलू परेशानियां, मानसिक तनाव उत्पन्न करेंगी। शरीर कष्ट का भय होगा। ता. 19 से स्थिति में सुधार होगा। निर्वाह योग्य साधन बनेंगे।

कुम्भ—मंगल अशुभ होने से आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। व्यावसायिक एवं घरेलू उलझनों के कारण तनाव अधिक रहेंगे। ता. 19-20 को धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी प्रिय-बन्धु से मुलाकात होगी। इस राशि की स्त्रियों को अधिक खर्च और गृह कलह से सावधान रहना होगा।

मीन—मासारम्भ में गुरु की नीच स्थिति रहेगी। अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ सामान्य रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर में विकार एवं आंखों में कष्ट का भय होगा। धन का अपव्यय बढ़ेगा। किसी मित्र की सहायता से बिगड़े काम बनेंगे।

राशिफल–दिसम्बर–सन् 2009 ई.

मेष—इस मास में अत्यधिक भागदौड़ और परिश्रम करने से ही धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। अचानक किसी मंगल कार्य पर खर्च होगा। कुछ रूके हुए कार्यों में विघ्नों के रहते प्रगति होगी। परन्तु जल्दबाजी में किये गए कार्यों में हानि एवं परिवार में संतान के कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

वृष—मासारम्भ से इस राशि पर शुक्र की स्वगृही दृष्टि हने से कुछ बिगड़े काम बनेंगे। नये मित्रों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। मंगल नीचराशिस्थ धन लाभ मध्यम रहेगा। व्यवसाय में दौड़धूप व संघर्ष अधिक रहेंगे। खर्च बढ़ेंगे।

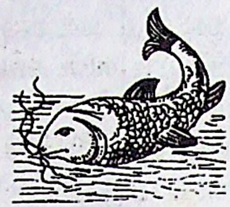
मिथुन—इस राशि पर केतु का संचार होने से दौड़धूप अधिक, धन लाभ में कमी, पारिवारिक एवं व्यावसायिक उलझनों का सामना रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ बनते कामों में सुधार एवं माता पिता की ओर से सहयोग मिलेगा। परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें। चोटादि का भय रहेगा।

कर्क—इस मास में गत किए गए प्रयास फलीभूत होंगे। परिवार में शुभ मंगल कार्य सम्पन्न होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल एवं मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परन्तु मानसिक तनाव, वृथा वाद-विवाद और परिवार में वैचारिक मतभेद रहेंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें।

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 8 सितं. तक राशि स्वामी शनि की कुम्भ पर स्वगृही दृष्टि रहेगी। 7 मार्च से 14 मई तक मंगल का संचार तथा 1 मई से 29 जुलाई के मध्य गुरु का संचार होगा। तथा 19 दिसं॰ के बाद पुनः गुरु का संचार होगा 9 सितं. से वर्षान्त तक शनि का ढैय्या रहेगी।

मीन राशि (Aquarius)

(दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)



ग्रहगोचर : वर्ष के आरम्भ से 30 अप्रैल तक तथा 30 जुलाई से 18 दिसं. तक राशि स्वामी गुरु नीच राशि में संचार करेगा वर्षारम्भ से 27 जन. तक मंगल की मीन दृष्टि होगी और 15 अप्रैल से 23 मई तक मंगल का संचार रहेगा। 9 सित. से शनि की सप्तम दृष्टि रहेगी।

सिंह—पूर्वार्द्ध भाग में आराम कम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। व्यापार व कारोबार मध्यम रहेगा। परन्तु निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। सांझेदारी के कार्यों में लाभ कम होगा। उत्तरार्द्ध में यद्यपि किसी नए कार्य के लिए योजना बनेगी। परन्तु अचानक खर्च में वृद्धि और शरीर कुछ अस्वस्थ रहेगा। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहे।

कन्या—आकस्मिक धन लाभ के साथ खर्च में वृद्धि होगी। व्यवसायिक क्षेत्रों में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धु का सहयोग मिलेगा। परन्तु शनि का संचार होने से दाम्पत्य जीवन में कुछ वैचारिक मतभेद, क्रोध ज्यादा, गुप्त चिन्ता और मानसिक तनाव रहे। बुध वक्री होने से स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

तुला—पूर्वार्द्ध भाग में कुछ रूके हुये कार्यों में प्रगति होगी। मित्रों और सम्बन्धियों के सहयोग से धन प्राप्ति के योग हैं। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी होंगे। ता. 19 से गुरु कुम्भ राशि में आकर तुला पर दृष्टि रखेगा। जिससे विद्यार्थी वर्ग में विद्या में विघ्न, संघर्ष और प्रतिकूल वातावरण का सामना रहेगा। वृथा खर्च में वृद्धि होगी।

वृश्चिक—राशिस्वामी मंगल नीच राशिगत होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तन। स्वास्थ्य में खराबी, मानसिक चिन्ता एवं शत्रु भय बना रहेगा। ता. 20 से मंगल वक्री होने से अकारण क्रोध, उत्तेजना, व्यर्थ की भागदौड़ लगी रहेगी। यात्रा में चोटादि का भय रहेगा।

धनु—इस राशि पर राहु का संचार होने से बनते कामों में विघ्न, संतान सम्बन्धी चिन्ता और पारिवारिक मतभेद रहेंगे। ता. 19 से गुरु कुम्भ राशि में संचार करने से शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। मान प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। आँखों में कष्ट एवं सिर में पीड़ा रहे।

मकर—गुरु शुभ होने के कारण गृह में मांगलिक एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। नए-नए मित्रों से मेल-मिलाप होगा। उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी। पदोन्नति व धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। शिव उपासना करनी शुभ होगी। धन के व्यर्थ खर्च करने से परहेज करें।

कुम्भ—आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। ता. 20 से गुरु कुम्भ राशि में ही संचार करेंगे। जिससे आय के क्षेत्र में धीरे-धीरे सुधार होना शुरु होगा। धर्म कार्यों में रूचि बढ़ेगी। आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे। श्री दुर्गा पाठ करना शुभ होगा।

मीन—मासारम्भ में बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार होगा। स्त्री व सन्तान के सम्बन्ध में कोई शुभ समाचार मिलेगा। किसी नवीन उद्योग की योजना बनेगी। विद्यार्थी वर्ग को यह मास संघर्षपूर्ण होगा। उत्तरार्ध में, आय कम व खर्च अधिक रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। परिश्रम करने पर भी आशानुकूल लाभ नहीं होगा। शिव उपासना करना शुभ होगा।

वि. संवत् २०६६ में सम्वत्सर, राजा-मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्री गणेशाय नमः। अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्-चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवी दयालु स्व प्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुख सम्पत्ति हेतवे। **शुभकृत्** नामक नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे चर्तुत्रिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१३४) वर्ष प्रवेशे पं. पन्नालाल अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, स्वपुत्रा सहिताहं कूर्वे **पंचांग दिवाकरम्॥**

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,११० के अन्तर्गत, श्रीविक्रमी संवत् २०६६, कलि (कल्कि) संवत् ५११०, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२४५, सप्तर्षि संवत् ५०८५, श्रीबुद्ध संवत् २६३२/३३, श्रीमहावीर निर्वाण संवत् २५३४/३५, शक संवत् १९३१, हिजरी सन् १४३०-३१, इंगलिश सन् २००९-१० ई., खालसा संवत् ३११, नानकशाही सम्वत् ५४१, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

—नया शुभकृत् नामक सम्वत्सर का फल—

बार्हस्पत्यमान से एवं विष्णु विंशति का १६ वाँ शुभकृत् नाम का नया २०६६ वाँ **विक्रमी सम्वत्सर** चैत्र शुक्लप्रतिपदा, तदनुसार 27 मार्च (प्रविष्टे १४ चैत्र), शुक्रवार सन् 2009 ई. से प्रारम्भ होगा। यहाँ से शुभ संकल्प एवं धार्मिक अनुष्ठान आदि कर्मों में 'शुभकृत' नामक सम्वत् का ही प्रयोग होगा। शास्त्रों में इस सम्वत्-का फल इस प्रकार वर्णित है-

शुभकृत्वत्सरे पृथ्वीराजते विविधोत्सवैः। आतंक चोराभयदा राजानः समरोत्सुकाः॥

अर्थात् 'शुभकृत' नामक सम्वत्सर का आगमन हो तो उस वर्ष पृथ्वी पर नाना प्रकार के उत्सव होवें। चोर, लुटेरे आदि दुष्ट लोग भयभीत रहें। विभिन्न राजा (प्रशासक) एवं राजनीतिक पार्टियाँ परस्पर विरोध एवं विवादों में संलिप्त रहें।

'नारदसंहिता' अनुसार शुभकृत् सम्वत्सर होने से सब प्रकार की फसलों की पैदावार अधिक होती है, तथा राजाओं और प्रजा के मध्य परस्पर प्रेम भावनाएँ बढ़ती हैं-

शुभकृत्वत्सरे सर्व सस्यानामति वृद्धयः। नृपाणां स्नेहमन्योऽन्यं प्रजानां च परस्परम्।

● **रोहिणी का वास**—संवत् २०६६ में रोहिणी का वास 'समुद्र' में है,

''समुद्रे तु महावृष्टि'' अन्यत्र फल इस प्रकार से कहा है-

यदा पयोनिधि स्थलेगतो विरंचिभं तदा। अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्यवर्धनम्॥

अर्थात् 'रोहिणी' का वास समुद्र पर होने से वर्षा अत्यधिक होती है तथा सभी प्रकार के खाद्यान्न (धान्यादि) वृक्ष, पौधे आदि की पैदावार अच्छी होगी। कुछ प्रदेशों में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ादि का प्रकोप हो। राजस्थान आदि के कुछ क्षेत्रों में भी वर्षा के संकेत हैं।

● **सम्वत् का वास—माली के घर होगा।**

सर्ववस्तुसमर्घं स्यात् गृहेऽब्दके। मालिने प्रचुरा वृष्टिः॥

अर्थात् सम्वत्-का वास माली के घर में होने से वर्षा अधिक होगी। सर्व प्रकार के अनाज यथा-गेहूँ, चने, चावल, धान्य, उड़द, दालें, सब्ज़ियां, घृतादि खाद्य वस्तुएँ तथा सुवर्ण, ताम्र, लौहादि धातुएँ और अधिक तेज़ भाव होंगी।

● **सम्वत् का वाहन**—नव सम्वत् का राजा शुक्र होने से सम्वत् का वाहन दादुर-अर्थात् मेंढक रहेगा, जिसके फलस्वरूप साल में विपुल वर्षा होने के संकेत हैं। परन्तु असमान (खण्ड) वर्षा होने से कुछ प्रदेशों में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ादि से हानि के भी योग हैं॥

(१) वर्ष के राजा शुक्र का फल-

शुक्रस्य राज्येवहुसस्यसंकुला सुतीव्र वेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः।
फलन्ति वृक्षा वहुगोप्रसूतिः वसुन्धरा पार्थिव सौख्य संयुता॥

वर्ष का राजा शुक्र हो, तो उस वर्ष अनाज आदि कृषि और मौसमी फलों आदि की पैदावार अच्छी हो, नदियाँ तीव्र वेग से बहें अर्थात् वर्षा अच्छी हो, पेड़-पौधे आदि अधिक लगें। गाय-भैंस आदि चौपायों की पैदावार अधिक हो। राजा लोग (प्रशासक वर्ग) सुख-साधनों से सम्पन्न हों। पुरुष व स्त्रियों के बीच प्रेमाकर्षण अधिक बढ़ें। राग-रंग गायन-उत्सवादि अधिक हों, लड़कियों की पैदायश अधिक हो। व्यापारिक वर्ग फायदे में रहे।

(२) वर्ष के मन्त्री चन्द्र का फल-

शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपिधरा रमते सुखमण्डिता।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि सुशोभिताः॥

चन्द्रमा को मन्त्री पद प्राप्त हो तो उस वर्ष वर्षा अधिक होती है। गेहूँ, धान्य, सरसों, चावल, मक्की आदि की पैदावार अच्छी रहे। रूई, कपास, चाँदी, गुड़, शक्कर, चीनी आदि सफेद वस्तुओं की पैदावार भी अच्छी हो और उनके व्यापार से अधिक लाभ रहे और अन्य प्रकार के सुख-साधनों में अधिक वृद्धि हो।

(३) सस्येश गुरू का फल-

कणपतौ सुरराज पुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहुनिवसूनि वै॥

गुरू (बृहस्पति) सस्येश हो, तो वेद विहित धर्म मार्ग का अनुसरण करने से ही लोगों को सुख-शान्ति एवं कल्याण की प्राप्ति हो। वर्षा अधिक हो। अन्न, धान्य, ईख, गोरस, दूध आदि का उत्पादन अधिक होगा। कृषि आदि की पैदावार भी अच्छी रहेगी।

(४) धान्येश मंगल का फल-

भूमिजे ग्रीष्मधान्येशे ग्रष्मिधान्यं महर्घम्। शालिक्षु घृत तैलादि महर्घाणि भवन्ति च॥

धान्यादि फसल का स्वामी मंगल होने से ग्रीष्म काल की फसलें–जैसे गूहँ, चने, ज्वार आदि फसलों में कमी एवं महँगे हों, चावल, धान्य, ईख, घृत–तैलादि स्निग्ध पदार्थों की पैदावार में भी कमी एवं मूल्यों में तेजी हो। हिंसा, चोरी एवं डकैती की घटनाएँ अधिक हों।

(५) मेघेश सूर्य का फल–

जलदपे यदिवासरपे तदासरसि वै रमते जनता रसम्।
यव चणेक्षु निवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुवि वर्तते॥

यदि मेघेश (वर्षा का स्वामी) सूर्य हो, तो जौं, चने, ईख, बाजरा, नीवारू, चावलों आदि की पैदावार अच्छी हो। पृथ्वी पर सुख के साधनों का प्रसार रहे।

(६) रसेश शनि का फल–

रविसुते रसपेरससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अज गवां गजवाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युताः॥

रसों का स्वामी शनि होने से वर्ष में अनुकूल वर्षा की कमी रहेगी। गाय, भैंस, बकरी, हाथी, घोड़े, ऊँट आदि चौपायों की संख्या में कमी हो, इसके फलस्वरूप रसदार वस्तुओं जैसे–ईख, गुड़, चीनी, दूध, घी, मक्खन आदि वस्तुओं की कमी से महँगाई और तेज होगी। अन–उपयोगी वर्षा से रोगादि का भय हो। अधिकांश लोगों में परस्पर प्रेमभाव न रहे। सामान्यतः लोगों के व्यवहार में बनावटीपन अधिक रहे।

(७) नीरसेश गुरू का दान–

हरिद्रापीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा॥

नीरसेश (ठोस) पदार्थों का स्वामी गुरू (बृहस्पति) होने से हल्दी, पीले वस्त्र, पीतल, स्वर्ण आदि पीले वर्ण की वस्तुओं के प्रति लोगों की रुचि विशेष अधिक रहें। अर्थात् इन वस्तुओं की माँग अधिक रहने से पीले वर्ण की वस्तुओं के मूल्यों में विशेष वृद्धि हो। लोगों में धर्म–कर्म के प्रति अभिरूचि बढ़ेगी।

(८) फलेश सूर्य का फल–

द्रुमवतीवरपुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोगविशेषता।
बहुजलं जलदोभुवि मुंचति क्वचिदपिप्रमितं फलपो रविः॥

सम्वत् में सूर्य फलेश हो, तो अनेक प्रकार के फल और फूलों तथा वृक्षों से पृथ्वी सुशोभित हो। सुख व आराम के साधनों में विस्तार हो। वर्षा कहीं पर बहुत अधिक और कहीं पर कम हो। कहीं पर पेयजल की कमी हो।

(९) धनेश बुध का फल–

द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविधासंग्रह वस्तु फलार्थदा।
द्विजवरा जययज्ञसु संयुता कृषिविशेष विशेषित मानसाः॥

कोश का स्वामी बुध होने से अनाजसहित नानाविध वस्तुओं के संग्रह एवं उनके व्यापार द्वारा विशेष लाभ रहे। ब्राह्मण आदि धर्म परायण लोग जप, यज्ञादि शुभ कार्यों में निरत रहें। कृषक लोग खेती के कार्यों में विशेष नवीन प्रणालियों का विकास करें।

(१०) दुर्गेश सूर्य का फल–

नय–विशेषकरस्तरणिस्तदा गतभयानरराज पुरोगमाः।
समधिको न तदानृपजोन्यजः स्वपथजं व्रजतां न भयं क्वचित्॥

सूर्य दुर्ग (सेना) का स्वामी हो, तो प्रशासक वर्ग (राजादि) न्याय करने में उत्सुक हों। राज दरबार (सरकार) से सम्बद्ध लोग निर्भय होकर रहें। राजवर्ग के लोग तथा प्रजा के मध्य मेल–जोल बढ़े। अपने कर्त्तव्य में निरत एवं अपने नियत मार्ग से चलने वालों को कुछ भी भय नहीं हो। अधिकांश देश परोक्ष रूप में परमाणु हथियारों के संग्रह में संलग्न रहेंगे।

नवमेघों में 'द्रोण' नामक मेघ का फल—

महीशाः स्वसंपति वृद्धयासमेताः समस्तामहीभूरिधान्येनयुक्ता।
यदा जायते द्रोण नामापयोदस्तदा देवराजो भवेत्सत्पयोदः॥

अर्थात् द्रोण नामक मेघ हो, तो पृथ्वी पर धन–धान्य की पैदावार उत्तम हो। इन्द्र देव मेघों द्वारा जल अधिक बरसायेंगे। उच्च–अधिकारिक लोगों तथा सरकार के कोष (खज़ाने) भरपूर रहेंगे। धन का प्रसार अधिक रहेगा।

द्वादश नागों में 'संुबुध्न' नाम के नाग का फल—

नृणां सुबुद्धिकर्तास्यान्मध्य वृद्धि प्रदायकः॥

'सुबुध्न' नामक नाग राजा होने से मनुष्यों एवं जनता में सुबुद्धि रहे तथा वर्षा मध्यम होगी।

शनि की दृष्टि– आगामी संवत् २०६६ में ४ सितंबर, 2009 ई. तक शनि सिंह राशि में संचार करेगा। इस राशि में संचार–कालीन शनि वृष, तुला व कुम्भ राशियों पर विशेष दृष्टियां रखेगा तथा कर्क, सिंह व कन्या राशि वाले जातकों व राष्ट्रों पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। सिंह राशि में संचरण काल के समय गतवर्ष भी वृष, तुला एवं कुम्भ राशि से प्रभावित भारत के राज्यों (जैसे—बिहार, सिक्किम, सूरत (वृष), गुजरात, राजस्थान, काश्मीर (तुला) तथा उत्तर प्रदेश, रूस, बलूचिस्तान (कुम्भ) में प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, आतंकवादी, विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ घटित हुईं, जिसके बारे में गतवर्ष की पंचांग में पहले ही इसी कॉलम के अन्तर्गत लिखा गया था। आगे भी आगामी वर्ष 9 सितंबर तक इस राशि वाले राज्यों तथा कर्क, सिंह एवं कन्या राशि वाले राज्यों एवं देशों को विशेष सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। (हैदराबाद, महाराष्ट्र, कश्मीर, मुम्बई, पाकिस्तान, राजस्थान) आदि।

9 सितंबर से शनि कन्या राशि में प्रवेश कर मिथुन, वृश्चिक एवं मीन राशियों पर दृष्टि तथा सिंह, कन्या एवं तुला राशि वाले जातकों, देशों एवं भारत के राज्यों पर साढ़ेसति का प्रभाव करेगा, अतएवं इन राशियों से प्रभावित राज्यों, नगरों तथा देशों में प्राकृतिक प्रकोपों, अग्निकाण्ड, आतंकवादी घटनाएँ एवं विस्फोट, भूकम्प, राजनैतिक क्षेत्रों में उथल–पुथल होने की व्यापक सम्भावनाएं होंगी।

● जल आदि चार स्तम्भों का फल-संवत् २०६६ ●

(१) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क 63.4% प्रतिशत हुआ है। फलस्वरूप आगामी वर्ष कुछ राज्यों में मध्यम से कुछ अधिक स्तर पर वर्षा होगी। गतवर्ष की भान्ति बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, असम, हि.प्र., पंजाब आदि राज्यों में समुचित वर्षा होगी। परन्तु कुछ राज्यों में खण्ड वर्षा से फसलों को हानि होगी। चावल, गन्ना, रूई का उत्पादन अच्छा हो। कहीं बाढ़ से क्षति, तो कहीं पेयजल सम्बन्धी समस्याओं एवं अनाज की कमी के कारण संकट तथा महँगाई दर में विशेष वृद्धि होगी।

(२) तृण स्तम्भ—वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क 80% प्रतिशत है। फलस्वरूप घास, तृण, बांस, जड़ी-बूटियों, पौधों एवं वनस्पतियों की फसल पहले से ओर बढ़ेगी। पशुचारा, घास एवं धान्यादि की फसल भी जल स्तम्भ की सहायता से अच्छी होगी। आयुर्वेदिक दवाईयों के दाम विशेष नहीं बढ़ेंगे।

(३) वायु स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र के सम्पर्क का अभाव है। वायु-स्तम्भ का बिल्कुल अभाव होना चिन्ताजनक परिस्थितियां उत्पन्न करेगा। कुछ क्षेत्रों में अपूर्व वायु-वेग, भूकम्प आदि से व्यापक हानि तथा कुछ क्षेत्रों में गर्मी, आर्द्रता बढ़ेगी। मेघों का संचालन अव्यवस्थित होने से कहीं व्यापक वर्षा, तो कहीं कम वर्षा से कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त भी रहेंगे।

(४) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क मात्र 2% प्रतिशत है। गेहूँ, चने, मक्की, दालवाना, मूँग, मोंठ की फसल ठीक नहीं रहेगी। व्यापारी लोग कम पैदावार का अनुमान लगाकर तेज़ी का व्यापार करेंगे, जिससे महँगाई ओर बढ़ेगी। सरकार को विशेष अन्न नीति बनानी पड़ेगी।

ऊपर लिखित चार स्तम्भ किसी भी देश की आर्थिक स्थिति को समझने एवं मापने में विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से इन चार स्तम्भों पर ही निर्भर रहती है।

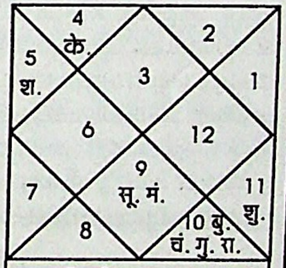
≈ वर्षादि के विश्वामान ≈

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा १ से २० अंकों के मध्य जितने अधिक (२० अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०६६ में धान्य के विश्वे ११ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन मध्यमस्तरीय होगा।

वर्षा १३, धान्य ११, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ५, क्षुधा ९, तृषा ७, निद्रा ३, आलस्य १३, उद्यम ५, शान्ति १५, क्रोध १३, दंभ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ९, उग्रता ९, पाप ७, पुण्य ११, व्याधि ९, व्याधिनाश ५, आचार ३, अनाचार ७, मृत्यु ३, जन्म ११, देश उपद्रव १७, देश-स्वास्थ्य ५, चोरभय ११, चोरनाश ३, अग्नि १७, अग्निशान्त ३, उद्भिज ७, जरायुज ३, अंडज १३, स्वेदज ९, टिड्डी १९, तोता ११, मूषक १५, सोना ११, तांबा ९, स्वचक्र ७, परचक्र ९, वृष्टि ११, अनावृष्टि १९॥

≈ गुर्रा फल विचार (सन् 2009-10 ई.) ≈

इस्लामी नववर्ष कुण्डली
(सन् 2009 ई.)

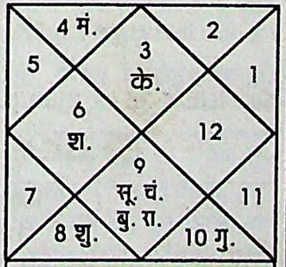


हिजरी सन् 1430

गत् संवत् २०६५ वि. में पौष शुक्ल तृतीया, मंगलवार तदनुसार 30 दिसम्बर, सन् 2008 ई. को 1 मुहर्रम (यकम) को हिजरी सन् 1430 प्रारम्भ हुआ था। मंगलवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से **सन् 2009 ई. में वर्ष का बादशाह मंगल (मरीख) होगा।** 1 मुहर्रम से एक दिन पूर्व चन्द्रदर्शन वाले दिन 29 दिसंबर, सन् 2008 ई., को सूर्यास्त के समय 17 घं. 31 मिं. पर मिथुन लग्न में मुस्लिम मतानुसार नववर्ष का उदय होगा। मिथुन लग्न राशि पर मंगल की विशेष अशुभ दृष्टि पड़ रही है।

सन् 2009 ई. के प्रारम्भ से ही मुस्लिम देशों में अग्निकाण्ड, उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं अधिक होंगी। कहीं अप्रत्याशित रूप से सत्ता-परिवर्तन के भी योग हैं। गर्मी, खुश्की व त्वचा के रोग अधिक होंगे। गुरु-शनि के मध्य षडाष्टक योग होने से पाक, अफ़गानिस्तान आदि बहु-मुस्लिम राष्ट्रों में सत्तारूढ़ सरकारों को ज़बरदस्त राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा। महंगाई, मुद्रा-स्फीति, आदि में वृद्धि तथा आतंकवादी घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि होगी।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली
(सन् 2009-10 ई.)



हिजरी सन् 1431

संवत् २०६६ वि. में पौष शुक्ल तृतीया तदनुसार 19 दिसंबर, सन् 2009 ई., शनिवार को 1 मुहर्रम (यकम) को हिजरी सन् 1431 प्रारम्भ होगा। शनिवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से 19 दिसं., 09 से दिसं., 10 ई. तक वर्ष का बादशाह शनि होगा। गुरु-शनि के मध्य नवपंचम तथा मंग.-गु. के मध्य समसप्तक योग बना हुआ है। ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, ईराक, इरान, सूडान आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में अत्यन्त गम्भीर राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। पाक, ईराक, अफ़गानिस्तान आदि कुछ कट्टरपंथी देशों में अनेक स्थलों पर विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। अमरीकी दबाव एवं आक्रामक रुख के चलते पाकिस्तान की गठबन्धन सरकार को विशेष सुधारात्मक पग उठाने पड़ेंगे तथा भारत के साथ वार्ता का दौर भी नए स्तर से प्रारम्भ होगा। दोनों देशों के मध्य नवीन समझौते तथा घोषणाएँ होंगी ; विशेषकर काश्मीर को लेकर। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रधान नेता के लिए विशेष संकट भरी स्थिति बन सकती है।

◆ वि. संवत् 2066 में लाभ-हानि चक्र ◆

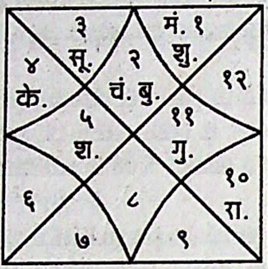
(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खचे हो, आर्थिक समस्याएं उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। जमीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
हानि	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

● सूर्य आर्द्रा प्रवेश फल—संवत् २०६६ ●

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली
21-06-2009 ई.



वि. संवत् २०६६ में सूर्यदेव आषाढ़ कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, रविवार तदनुसार 21 जून, 2009 ई. को मृगशिर नक्षत्र, गंड योग एवं वृष राशिस्थ चन्द्रकालीन रात्रि 27 घं. 51 मिं. (22 जून की प्रातः 03 घं. 51 मिं.) पर वृष लग्न कालीन आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

सूर्यदेव का आर्द्रा प्रवेश पृथ्वी तत्त्व प्रधान लग्न एवं राशि (वृष) में हुआ है। लग्नेश तथा जल तत्त्व प्रधान ग्रह शुक्र द्वादश (व्यय) भाव में मंगल के साथ है। लगभग सभी ग्रह अग्नि एवं वायु तत्त्व प्रधान राशियों में विराजमान है। जल स्तम्भ भी मध्यम से कुछ अधिक 63% है। फलस्वरूप सम्पूर्ण देश में खण्ड वर्षा के ही योग हैं। कहीं अत्यधिक वर्षा से बाढ़, आँधी से जन, धन एवं कृषि को हानि तथा कई भागों में अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी के कारण कृषि उत्पादन कम होगा। सूर्य का आर्द्रा प्रवेश चतुर्दशी तिथि में होने से सम्पूर्ण धान्य, वस्त्र तथा अन्य दैनिक उपयोगी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होगी।

यथा—समस्त धान्यवासांसि महर्घाणि भवतिहि॥

आर्द्रा प्रवेश मृगशिर नक्षत्र में होने के कारण धान्य, अनाज, वस्त्र, घी, रूई महँगे होंगे। महँगाई में अचानक बहुत वृद्धि होगी।

यथा—यदि रौद्रं प्रविष्टोर्कोमृगांके मृगगेसति। धान्यां बरघृतादीनां प्राबल्यं तर्हिजायते।

आर्द्रा प्रवेश आधी रात से पर भाग में होने से प्रजा में दुःख एवं परेशानियां फैले। **दुःखमतोऽपरत्रा।** परन्तु वृद्धि नामक योग में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होने से निकट भविष्य में जनसंख्या में विशेष वृद्धि हो और यज्ञ, हवन आदि शुभ कर्म होंगे।

तरणिर्यदि रौद्रर्क्षं प्रविशेद् वृद्धि योगके।
पुत्रपौत्राभिवृद्धिः स्यात्तर्हि यज्ञादि कर्मच॥

✪ आर्षमान द्वारा रक्षा फल विचार ✪

आर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले) एवं समृद्धि का प्रतीक माना जाता है—

(१) **प्रथम आर्ष**—गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का स्पर्श लगभग 92 प्रतिशत है।

(२) **द्वितीय आर्ष**—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र 75% है।

(३) **तृतीया आर्ष**—श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र 74 प्रतिशत है।

(४) **चतुर्थ आर्ष**—कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का अभाव है।

इस वर्ष रक्षा के तीन दुर्ग बली तथा एक दुर्ग बिल्कुल शुन्य है। फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों, परमाणु ऊर्जा तथा अन्य ऊर्जा एवं सुरक्षा के क्षेत्र में भारत उल्लेखनीय प्रगति करेगा। परन्तु सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ तथा आतंकवादी घटनाओं, आन्तरिक सुरक्षा के क्षेत्र में देश की सुरक्षा ऐजन्सीयों को विशेष प्रयास करने की आवश्यकता रहेगी।

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यवाणियाँ संवत् २०६६ (सन् 2009-10 ई.)

☞ नया 'शुभकृत' नामक सम्वत् होने से सम्पन्न लोग अधिकांशतः क्रय-विक्रय के कार्यों, प्रदर्शनों व उत्सवों में संलग्न रहेंगे। भारत के राजनैतिक पटल पर विशेष उतार-चढ़ाव होंगे। विभिन्न राजनेताओं और राजनीतिक पार्टियों में परस्पर टकराव, विरोध तथा कहीं नए गठबन्धन बनेंगे।

☞ राजा शुक्र तथा मन्त्री चन्द्रमा होने से लोग ऐश्वर्य-परस्ती, धन और समय का अधिक अपव्यय करेंगे। राजनीति एवं समाज के हर क्षेत्र में स्त्रियों का प्रभाव एवं वर्चस्व बढ़ेगा। कन्या सन्तति की सँख्या अधिक बढ़ेगी।

☞ रसेश शनि होने से घी, तेल, अनाजादि तथा पेयजल में कमी हो। सामान्य जनपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेज़ी होने से लोगों में गहरा आक्रोश एवं असन्तोष व्याप्त होगा। भारत सहित दक्षिण एशिया के देशों में अग्निकाण्ड, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ तथा भूकम्प, भूस्खलन-बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों का भय रहे।

☞ अत्यधिक महँगाई, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, पेयजल एवं विद्युत् संकट और राज्यों में खाद्यान्न व आवश्यक वस्तुओं में कमी होने की ज्वलन्त समस्याओं का सामना रहेगा। सम्भावित चुनावों में महँगाई एवं भ्रष्टाचार मुख्य मुद्दे रहेंगे।

☞ आगामी लोकसभा चुनावों का परिणाम 'त्रिशंकु लोकसभा' के रूप में ही सामने आएगा। प्रान्तीय एवं छोटे दलों का सहयोग लोकसभा चुनावों में निर्णायक सिद्ध होगा। उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, दिल्ली, उत्तराखण्ड, गुजरात में भाजपा को गत चुनावों की अपेक्षा अधिक सीटें प्राप्त होंगी, परन्तु कुछ अन्य राज्यों में निराशा का सामना करना पड़ेगा।

☞ प्रधानमन्त्री डा० मनमोहन सिंह की मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्व में अन्तर्राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय तौर पर वृद्धि होगी। परन्तु परमाणु करार समझौते एवं उससे होने वाले लाभ को साधारण जनता तक नहीं पहुँचाया जा सकेगा। जिसका परिणाम कांग्रेस पार्टी को आगामी लोकसभा चुनावों में देखने को मिलेगा। परन्तु कांग्रेस की राजस्थान, मध्य प्रदेश, मिज़ोरम, हरियाणा में स्थिति सुदृढ़ होगी।

☞ 9 सितम्बर से शनि कन्या राशि में आने से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा आदि में आकस्मिक बाढ़, भूस्खलन, प्राकृतिक प्रकोपों के कारण जन, कृषि व धन हानि के संकेत हैं। कश्मीर, असम आदि प्रदेशों में विदेशी घुसपैठ एवं आतंकवादी विस्फोटों के कारण दुर्भाग्यशाली हिंसक एवं विस्फोटक दुर्घटनाओं का भय रहेगा। आतंकवादियों के बढ़ते कदम और गगन चुम्बी महँगाई देश के समक्ष प्रमुख मुद्दे बने रहेंगे॥

☞ 17 अक्तूबर को खप्पर योग के प्रभावस्वरूप दूध, घी, अनाजादि खाद्य वस्तुओं में गगनचुम्बी महँगाई, राजनैतिक अस्थिरता, हिंसा व तोड़फोड़ की घटनाएँ घटित होंगी।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥

अनादिकाल से मानव अज्ञात एवं अगोचर को जानने के लिए संवेदनशील एवं जिज्ञासु रहा है। उसकी इसी जिज्ञासा प्रवृत्ति के कारण चिन्तनशील प्रबुद्ध मनुष्यों ने अपने परिवेश से सहस्रों मील दूर संचरणशील ग्रह, नक्षत्र एवं ताराओं के स्वरूप एवं उनके पारस्परिक प्रभावों का गहन निरीक्षण, अध्ययन एवं चिन्तन करना प्रारम्भ कर दिया था।

मानव कल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए एवं मानव जीवन को स्वस्थ, सुव्यवस्थित एवं नियमित रूप प्रदान करने के लिए ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने अध्यात्म एवं वैदिक ज्ञान, दर्शनशास्त्र, संगीत, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि शास्त्रों का प्रणयन किया। ज्योतिष शास्त्र का एक अन्य नाम ज्योति:शास्त्र भी आता है, जिसका अर्थ प्रकाश देने वाला अथवा प्रकाश के सम्बन्ध में ज्ञान करवाने वाला शास्त्र होता है—अर्थात् जिस शास्त्र से संसार का मर्म, जीवन-मृत्यु का रहस्य और जीवन के सुख-दुख के सम्बन्ध में प्रकाश मिले, वह **ज्योतिषशास्त्र** है। ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल की साकार कहानी है। मनुष्य के संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण (वर्तमान) कर्मों एवं उनके शुभाशुभत्व का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य के भूत-भविष्य सम्बन्धी शुभाशुभ घटनाएं, सुख-दु:ख, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, मान-अपमान, भाग्योदय के कालादि का ज्ञान भी इसी शास्त्र द्वारा किया जा सकता है। जातक के जन्म समय सौर-मण्डल एवं जन्मकुण्डली में जिस प्रकार के ग्रहों की स्थिति होती है, उसी के अनुसार मनुष्य (जीव) का बाह्य एवं अभ्यान्तरिक जीवन प्रभावित होता रहता है—

ग्रहाधीनं जगत्सर्वम् ग्रहाधीना नरावरा:। सृष्टि रक्षण-संहारा: सर्वे चापि ग्रहानुगा:। (बृह.)

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **''पंचांगदिवाकर'', 'मुफीद आलम जन्त्री'** (उर्दू—हिन्दी—पंजाबी) **एवं तिथ पत्रिका** (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०६६ (2009-10 ई.) में **गौरवशाली 134 वर्ष** हो जाएंगें। इस पंचांग समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे पूज्य पितामह विश्व विख्यात **मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी** (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई— वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में **हमारी पंचांग, जन्त्री** एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्रकाशनों की निरन्तर अग्रसर ख्याति को देखकर कुछ दुष्ट प्रकृति के धन लोलुप एवं लालची प्रकाशक हमारे टाईटल से मिलता-जुलता टाईटल व नाम रखकर विषय-सामग्री को तोड़-मरोड़ कर छापते हैं। इस प्रकार लोगों को गुमराह व धोखा देने की कुचेष्टा करते रहे हैं। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक **पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका, मुफीद आलम जन्त्री तथा हमारी नव प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग'** (संवत् २००१ से २०६० तक) खरीदते समय प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए., पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल.एल.बी.) व पंकज शर्मा (एम.कॉम.), जालन्धर के नाम अवश्य देख लिया करें।

≈गतर्षीय पंचांगदिवाकर में चामत्कारिक भविष्यवाणियां≈

ईश्वर की कृपा से हमारी गतवर्षों की पंचांगों एवं जन्त्रियों से उल्लिखित **अनेकशः भविष्यवाणियां** ठीक निकलती आ रही हैं। **उदाहरणस्वरूप** जैसे—भारत का स्वतन्त्र होना (सं. 1947 ई.), बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, कांग्रेस (ई) की पराजय, पुनः सत्ता में आना, ईरान-ईराक युद्ध (२०३९), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४१), पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४८), सन् १९९८ में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (२०५५) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि आगे संवत् २०५७ से २०६५ तक की कुछ प्रमुख भविष्यवाणियां ही उद्धृत हैं, जो ईश्वर कृपावश चामत्कारिक रूप से सत्य एवं सही निकली हैं। **उदाहरणार्थ—**

संवत् २०५७ के पंचांग में—**पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलट तथा आपात् स्थिति का लगना एवं शासन परिवर्तन, छत्रभंग, उपद्रव, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएं होना** (पृष्ठ 51 —कालम I व II)

सं. २०५८ के पंचांगदिवाकर पृष्ठ 56 (कालम II) पर जगत लग्न में कालसर्प योग के कारण मिथुन व धनु राशि वाले देशों में विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी जैसा कि **अमरीका में दुखद त्रासदी घटी। २०५९** में पृष्ठ ५६ (कालम I) में पढ़ें—''अफ़गानिस्तान में नया राजनैतिकग्रुप उभर कर सामने आएगा तथा तालिबान अमरीकी युद्ध शक्ति के सामने अधिक देर तक टिक नहीं पाएँगे।'' पृष्ठ 60 (का. I) पर पंजाब के शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें—''आगामी विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ बादल सरकार को काफ़ी कम सीटें तथा कांग्रेस पार्टी का मुख्य पार्टी के रूप में उभरकर आना।'' अमेरिका व ईराक युद्ध होना पृष्ठ 58.

संवत् २०६० में **ईराक में सत्ता परिवर्तन** के योग के बारे में स्पष्टतः पढ़ें पृष्ठ 63.।

सम्वत् २०६१ की पंचांगदिवाकर में स्पष्टतः पढ़ें—**आगामी लोकसभा चुनावों में श्रीमती सोनिया गाँधी तथा कांग्रेस पार्टी भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेगी।** पृष्ठ 67 कालम I, राजस्थान के संदर्भ में पृष्ठ 68 पर पढ़ें। चुनावों में कांग्रेस को हार का सामना रहेगा।

संवत् २०६२ (2005-06) की पंचांग में ''पाकिस्तान और भारत के मध्य दोस्ती और शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ना (पृष्ठ 56 का. II, पृष्ठ 60-I) **हरियाणा** की प्रान्तीय चौटाला सरकार के वर्चस्व को गहरी ठेस पहुँचना (पृष्ठ 59 का. II) ''हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार आदि प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग''—अस्थिरता के बावजूद मनमोहन सरकार का अस्तित्व 2007 तक अवश्य बना रहेगा—पृष्ठ 60 का. I)

संवत् २०६३ (2006-07) की पंचांग में मुस्लिम राष्ट्रों के कारण डीज़ल-पैट्रोल के मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी के कारण मुद्रा-स्फीति दर में वृद्धि होगी। (पृष्ठ 53), पंजाब, बिहार में नेतृत्व परिवर्तन की प्रबल संभावना (पृष्ठ 53) **7 फरवरी, 2007 ई. तक यू. पी. ए. सरकार के वर्चस्व को कोई खतरा नहीं** (पृष्ठ 53) 24 मई से 12 जुलाई के मध्य मंगल-शनि योग के कारण काश्मीर, महाराष्ट्र, उ. प्र. आदि प्रदेशों में उपद्रव, हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं (जैसा कि मुम्बई में 11 जुलाई को भयानक बम विस्फोट हुए) पृ. 58 का. I)

संवत् २०६४ (2007-08 ई.) के (पृष्ठ 59 का. II) में आप स्पष्ट पढ़ सकते हैं— 'पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात अत्यन्त विक्षुब्ध रहेंगे। 29 जुला. से 15 सितम्बर तक की अवधि पाक सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण व अग्निपरीक्षा के होंगे।' जैसा कि मुशर्रफ सरकार को प्रधान न्यायाधीश व नवाज़ शरीफ के विरोध का सामना करना पड़ा।

संवत् २०६४ में पृष्ठ 56 पर मुख्य बाक्स की अन्तिम पंक्ति पर स्पष्टतः पढ़ें— ''उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब आदि प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग होंगे।'' नतीजे आपके सामने थे। पृष्ठ 63 कालम II उ.प्र. शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें—''नेतृत्व परिवर्तन के प्रबल योग हैं।'' जैसा कि समाजवादी पार्टी के साथ हुआ।

गतवर्ष संवत् २०६५ (2008-09) के पृष्ठ 59 पर मुख्य बाक्स में आप स्पष्टतः पढ़ें—''**यू.पी.ए. के घटक दलों में आपसी समन्वय का अभाव रहेगा तथा परमाणु करार मुद्दे पर लेफ्ट व कांग्रेस के सम्बन्ध विच्छेद किसी भी समय सम्भव जैसाकि 20 जुलाई, 2008 ई. को लेफ्ट सरकार से अलग हो गई।** इसी 59 पृष्ठ पर स्पष्ट पढ़ें— **'गुजरात में अनेक आन्तरिक एवं कांग्रेसी विरोध के बावजूद भाजपा विजयी होगी'** दिसंबर, 07 में ही **मोदी सरकार** का बनना इस तथ्य को सत्य प्रामाणिक किया। पृष्ठ 59

पर ही **'हि.प्र., कर्नाटक आदि कुछ प्रदेशों सत्ता परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं'** पृष्ठ 59 पर ही स्पष्ट पढ़ें—'29 अग. से 10 अक्तू. के मध्य कालसर्प योग पड़ने से भारत सहित पाकिस्तान, नेपाल आदि देशों में राजनीतिक संकट, संविधान और सरकार के बीच टकराव पैदा होंगे। पृष्ठ 64 पर कालम I पर पढ़ें—**'21 जून से 9 अग. तक शनि-मंग. योग तथा 29 अग. से 12 सितं. मध्य कालसर्प योग बनने से उ.प्र., म.प्र., बिहार, उड़ीसा, बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में अनाज की कमी, अथवा उपद्रव, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोप घटित होंगे।'** संयोगवश यह दुखद भविष्यवाणी सत्य साबित हुई। कोसी नदी में आई बाढ़ के कारण व्यापक जन-धन की हानि हुई। पृष्ठ 64 कालम II पर हिमाचल प्रदेश शीर्षक के नीचे स्पष्ट पढ़ें—**'भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा तथा भाजपा शक्तिशाली पार्टी के रूप में उभरकर सामने आएगी।'** वामदलों का गठबन्धन तोड़ना तथा डॉ. मनमोहन सिंह का अस्थिरता के बाद पुनः सशक्त रूप में उभरना तथा अपना कार्यकाल पूरा करना (देखें पृष्ठ 66-67) पंचाँग दिवाकर वि. २०६५

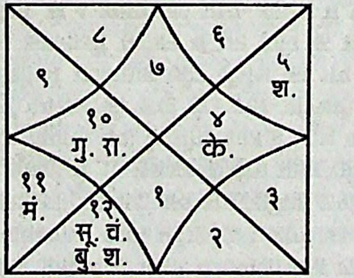
≈सं. २०६६ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल≈

विक्रमी संवत् २०६६ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के **दश अधिकारों** में से **पाँच अधिकार** शुभ एवं सौम्य ग्रहों को तथा **पांच अधिकार** क्रूर एवं उग्र ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। **राजा** का मुख्य अधिकार सौन्दर्य-प्रिय **दैत्य गुरू शुक्र** को प्राप्त हुआ है, जबकि **मन्त्री** के अधिकार सौम्यग्रह **चन्द्रमा** को मिला है। फलस्वरूप सम्वत् में वर्षा अच्छी होगी। सुख-साधनों से सम्पन्न लोग ऐश्वर्य-परस्ती एवं अपना धन और समय का अधिक व्यय करेंगे। राजनीति एवं समाज के हर क्षेत्र में स्त्रियों का प्रभाव एवं वर्चस्व बढ़ेगा। लड़कियों की संख्या में विशेष वृद्धि होगी। **मन्त्री चन्द्रमा** एवं कृषि स्वामी व धातुओं का स्वामी गुरुं (बृहस्पति) होने से गेहूँ, धान्य, सरसों, चावलों आदि की पैदावार अच्छी होगी। अनाज, सुवर्ण, ताम्बा, पीतल, दुग्धादि कार्यों में संलग्न व्यापारी लोग अच्छा मुनाफा उठा पाएँगे। सुख के साधनों में विस्तार होगा। **धनेश** बुध के कारण कृषि आदि किसान तथा फुटकर उपयोगी वस्तुओं का संग्रह करने वाले व्यापारी अच्छा लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

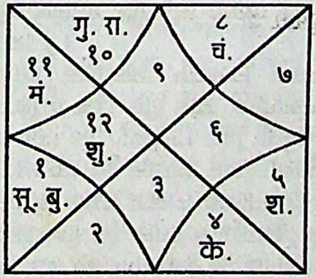
शुभकृत् नामक सम्वत्सर का आगमन होने से सम्पन्न लोग अधिकांशतः क्रय-विक्रय के कार्यों में तथा विविध प्रदर्शनों, पार्टियों एवं उत्सवों में संलग्न रहेंगे। विभिन्न राजनेता और राजनीतिक पार्टियाँ परस्पर टकराव, विरोध एवं निजस्वार्थ में लगे रहेंगे। किंवा प्रजा की भलाई के कामों में कम ध्यान देंगे। **धान्येश मंगल** होने से गेहूँ, चने, ज्वार, धान्य, चावल, ईख, घृत-तैलादि स्निग्ध पदार्थों की पैदावार में कमी एवं मूल्यों में अत्यधिक तेजी होगी। चोरी, ठगी, डकैती एवं हिंसा की घटनाएँ अधिक होंगी। **रसाधिपति शनि** होने से अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी, रसदार वस्तुओं जैसे—ईख, दूध, घी, तैल, मक्खन, खाण्ड, गुड़ आदि तथा पेयजल में कमी हो। इन सामान्य जनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में जबरदस्त तेजी होने से लोगों में गहरा आक्रोश एवं असंतोष व्याप्त होगा। **लोगों में परस्पर प्रेम भाव एवं भाईचारे की विशेष कमी रहेगी। सूर्यदेव को वर्षा**, फल और दुर्ग (रक्षा)—**ये तीन अधिकार प्राप्त** होने से पृथ्वी पर यद्यपि कृषि, फल, परमाणु सौर ऊर्जा एवं सैन्य संसाधनों में उल्लेखनीय उन्नति होगी, परन्तु विश्व के अधिकांश देशों के राष्ट्राध्यक्ष विशेपकर मुस्लिम बाहुल्य देशों के प्रमुख अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए विश्व की बढ़ी शक्तियों से लोहा लेने से नहीं कतराएँगे। शनि की दृष्टि के प्रभावस्वरूप भारत सहित दक्षिण एशिया के कुछ देशों जैसे—पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, नेपाल आदि देशों में कहीं अग्निकाण्ड, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ तथा भूकम्प, भूस्खलन-बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय होगा। अत्यधिक महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पेयजल एवं विद्युत् संकट और कहीं राज्यों में खाद्यान्न व आवश्यक वस्तुओं में कमी होने की ज्वलन्त समस्याओं का सामना रहेगा।

वर्ष प्रवेश कुं. तथा जगत् लग्न कुण्डली अनुसार विश्व का भविष्यफल संवत् २०६६

नववर्ष प्रवेश कुं. ३७/५०



जगत् लग्न कुण्डली ४६/४०

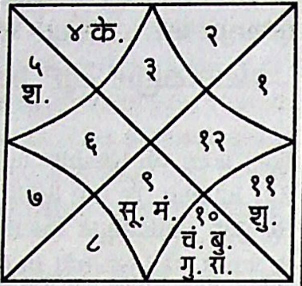


वि. सम्वत् २०६६ का नववर्ष प्रवेश 26 मार्च (प्रविष्टे १३ चैत्र) गुरुवार, चैत्र अमावस की समाप्ति पर रात्रि 9 बजकर 36 मिनट पर, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र कालीन तुला लग्न में प्रविष्ट होगा। वर्ष लग्नेश (नेतृत्व-भावेश) शुक्र उच्च राशि का होकर षष्ठ भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध ग्रहों के साथ अस्तंगत होकर **चतुर्ग्रही योग** बना रहा है। षष्ठ भाव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष शत्रुओं, ऋण एवं विदेशी सहायता को अभिव्यक्त करता है। जबकि राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति का स्वामी मंगल पंचम में स्थित होकर शुभग्रह शनि द्वारा दृष्ट है। दशम भाव (प्रशासनिक प्रबन्धन) में केतु की अशुभ स्थिति है, परन्तु गुरु की शुभ दृष्टि पड़ रही है। राशि स्वामी चन्द्र भी षष्ठ भाव में निर्बल स्थिति में है। ग्रहस्थिति के अनुसार **विश्व के अधिकांश देशों में परमाणु हथियारों** के निर्माण की प्रतिस्पर्धा एवं होड़ बढ़ेगी। अधिकतर देश प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपना वर्चस्व बनाने के लिए परमाणु ईंधन एवं संहारक हथियारों का संग्रह करने में संलिप्त रहेंगे। **शनि-मंगल** के मध्य परस्पर दृष्टियाँ एवं समसप्तक योग होने से दक्षिण एशिया के कुछ देशों के आन्तरिक भागों में कहीं अग्निकाण्ड, हिंसक आंदोलन, विस्फोटक घटनाएँ घटित होने से अशान्ति फैलेगी। विश्वव्यापी व्यापारिक

क्षेत्रों में आर्थिक मन्दी के कारण पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, बंगलादेश भारत सहित अनेक विकासशील देश आर्थिक मन्दी की लपेट में आ जाएँगे। राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में विश्व के प्रमुख देशों जैसे—अमरीका, भारत, चीन, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, कैनेडा आदि देशों के मध्य नए समीकरण बनेंगे। **भारत-पाकिस्तान सहित विश्व की प्रमुख शक्तियों** के सामने आतंकवाद से निपटना प्रमुख मुद्दा बना रहेगा।

जगत् लग्न कुण्डली में धनु लग्न उदित हुआ है। लग्न का स्वामी गुरु कोश भाव में राहु युक्त होकर दशमभाव को देख रहा है। चन्द्र अष्टमेश होकर द्वादश भाव (गुप्त शत्रुओं के) भाव में नीच राशि (वृश्चिक) का होकर पड़ा है। जगत् लग्न कुण्डली में भी शनि-मंगल क्रूर ग्रहों के मध्य समसप्तक का अनिष्ट योग बना हुआ है। प्रस्तुत ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व का राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध, तनावपूर्ण एवं अशान्त रहेगा। विश्व के प्रमुख देश और अन्य विकासशील देश अपनी सामरिक (युद्ध) शक्ति बढ़ाने के लिए अत्याधुनिक परमाणु हथियार बनाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। परन्तु बाह्य तौर पर विश्व के प्रमुख देशों के सामने आतंकवाद प्रमुख मुद्दा बनकर उभरेगा। गुरु-राहु का योग होने से विश्व के बहुत से देशों को आर्थिक संकट का सामना रहेगा। विशेषकर मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर व कुम्भ राशि के देश एवं नगर विशेष रूप से प्रभावित होंगे। इन राशियों के अन्तर्गत उ. अमरीका, इंग्लैण्ड, अफ्रीका, स्काटलैण्ड, कैनेडा, चीन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, टर्की, तिब्बत, अल्जीरिया, स्पेन, बंगलादेश, श्रीलंका, रूस आदि देश विशेष रूप से प्रभावित होंगे। कुछ देश विकट आर्थिक मन्दी का शिकार होंगे।

मुस्लिम देशों की नववर्ष कुं.



हिजरी सम्वत् 1430 के मतानुसार यकम मुर्हरम मंगलवार को सायं 17-31 घंटा-मिंट पर मिथुन लग्न में दाखिला साल होगा। बादशाह साल **मंगल** की लग्न भाव पर विशेष सातवीं नज़र पड़ रही है। अष्टम भाव में नीचस्थ गुरु के साथ चतुर्ग्रही योग बना हुआ है। ग्रहस्थिति के अनुसार मुस्लिम बाहुल्य राष्ट्रों की कूटनीति विशेष तौर पर प्रभावित रहेगी। कुछ इस्लामिक देश अमेरिका की साम्राज्यवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए विश्वस्तरीय गठजोड़ बनाने के लिए प्रयास करेंगे। इस्लामी गठजोड़ के राष्ट्रों में विशेषकर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, ईरान, बंगलादेश, सूडान, साऊदी अरब, लैबनान, टर्की आदि मुस्लिम राष्ट्र अपने वर्चस्व के लिए विश्वस्तरीय संगठन की बुनियाद रखेंगे। पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों के भीतरी भागों तथा सीमावर्ती सरहदी इलाकों पर पाक हकूमत और मुजाहिरीन एवं दहशतगर्द ग्रुपों के मध्य हिंसक व विस्फोटक घटनाओं का क्रम जारी रहने के योग बनते हैं। पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान आदि मुस्लिम देशों के आन्तरिक, सामाजिक व राजनीतिक हालात अस्थिर एवं असमंजस पूर्ण रहेंगे। सरकारी तन्त्र और दहशतगर्द ग्रुपों के टकराव बढ़ेंगे।

≈ सन् 2009 में ग्रहगोचर और विश्व के हालात् ≈

वर्ष के आरम्भ में ही 28 जन. से 6 मार्च के मध्य **शनि-मंगल** के मध्य षडाष्टक योग तथा मंगल-राहु का योग बना हुआ है, जिसके फलस्वरूप भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफ़गानिस्तान, ईराक आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में कहीं अग्निकाण्ड विस्फोट एवं हिंसक घटनाएँ होने के योग हैं। कहीं छत्रभंग होने के भी संकेत हैं। **7 मार्च से 13 अप्रैल** के बीच **शनि-मंगल** के मध्य सम-सप्तक योग बनने से कहीं राजनैतिक टकराव, जातीय दंगे-फिसाद और कहीं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। वर्षारम्भ से शनि भी 16 मई तक वक्री होने से कहीं विरोधी देशों में टकराव एवं युद्ध के समाचार मिलेंगे—

''**शनि वक्रे दुर्भिक्षं राजां युद्धं परस्परम्॥** रुण्ड मुण्ड च........मेदिनी॥''

खप्पर योग—आगे चांद्र वैशाख, ज्येष्ठ एवं आषाढ़ मासों में क्रमशः **पाँच शनिवार, पाँच रविवार एवं** पाँच मंगलवारों का समावेश होने से **10 अप्रैल से 7 जुलाई** तक की अवधि में **खप्पर** नामक अनिष्टकारी अशुभ योग बन रहा है जिसका फल शास्त्रकारों ने अशुभ माना है।

शनि भानु कुजे वारे बहवः संक्रमा—मासा यदाः। तदामहर्घं अनिलं कुर्वते रोग विग्रहम्॥

अर्थात् तीनों चान्द्र मासों में क्रमशः जब शनि, रवि एवं मंगलवारों का आगमन हो, तो इनके प्रभावस्वरूप देशमें महँगाई बढ़े, रोगों का प्रकोप भी बढ़े, लोगों व प्रशासकों में विग्रह हो। जनांदोलनों, विवादों एवं साम्प्रदायिक उपद्रवों के कारण प्रजा में अशान्ति हो।

30 जुलाई से 16 नवंबर के बीच मकर राशि पर गुरु-राहु का योग मकर राशि में संचार होने से अनुपयोगी वर्षा के योग बनते हैं। दूध की कमी और पृथ्वी पर कहीं दुर्भिक्ष का भय तथा कहीं पेयजल की कमी हो। उत्तर-पश्चिमी देशों में कहीं अति वृष्टि, बाढ़प्रकोप, पूर्व-दक्षिण देशों में राजविग्रह और दुर्भिक्ष का भय होगा। कहीं बाढ़, भूस्खलन, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं से जन व धन हानि के संकेत हैं।

5 सितं. से 4 अक्तू. का मध्य-अवधि में पाँच शनिवार और पाँच रविवार होने से, इस अवधि में विश्व के अनेक स्थलों पर बाढ़ादि का प्रकोप, रोगोत्पात, उपद्रव, जातीय एवं साम्प्रदायिक दंगे-फिसाद व अनाज के दामों में तोजी होगी। (ईशान कोण) में कहीं छत्र भंग, उपद्रव, विस्फोट व अग्निकाण्ड की वारदातें हों—

शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणीः। ईशान देश भङ्गश्च वह्णि दाहो महर्घता॥

मार्गशीर्ष मास (3 नवं. से 2 दिसं.) के **मध्य पाँच मंगलवार** होने से कहीं युद्धभय, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ एवं **छत्रभङ्ग** (सत्ता परिवर्तन) के योग हों। किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के भी संकेत हैं।

उपरोक्त गोचरस्थ कुछ अशुभ ग्रह योगों एवं अवरोधों के बावजूद वर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली में शुक्र उच्चस्थ होने से विभिन्न देशों के मध्य शैक्षणिक व सांस्कृतिक मूल्यों का आदान प्रदान बढ़ेगा। अमेरिका, यूरोपीय एवं एशियाई देशों के मध्य वैज्ञानिक, व्यापारिक, सामाजिक एवं राजनैतिक एवं आर्थिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी। दूरसंचार, कम्पयूटरर्ज एवं मनोरंजन क्षेत्र, ऊर्जा क्षेत्र, परमाणु अनुसन्धान (न्यूकलियर साईंस) एवं नाभकीय क्षेत्रों में उल्लेखनीय उन्नति होगी। वैश्विक स्तर पर विश्व के लोग और पास आएँगे और विश्व-शान्ति की स्थापना हेतु संयुक्त राष्ट्र संस्था द्वारा भी विशेष प्रयोग किए जाएँगे।

विश्व के कुछ अन्य देश

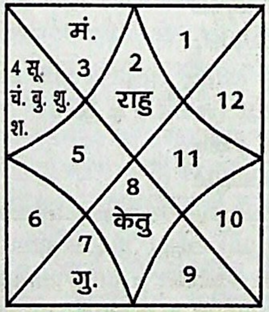
अमेरिका (America)—इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। वर्षप्रवेश कुं. में मिथुन राशि का भाग्य भाव में तथा जगत् लग्न कुं. में सप्तम भाव पर आधिपत्य है। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी राष्ट्रपति चुनाव में डैमोक्रेट प्रत्याशी बराक ओबामा को संघर्षपूर्ण हालात के बाद सफलता प्राप्ति की संभावना बनती है। **नया परमाणु करार** भारत और अमरीका के मध्य मैत्री के सेतु का काम करेगा। इस बात की पुष्टि होने के बाद कि पाकिस्तान अल कायदा, तालिबान तथा अन्य कट्टरपंथी आतंकवादियों का शरण स्थल बन गया है, अमरीका द्वारा पाकिस्तान पर फौजी तथा आर्थिक दबाव बढ़ाएगा। अमरीकी कांग्रेस द्वारा परमाणु करार को स्वीकृति देकर भारत के साथ नए सामरिक, आर्थिक समझौते किए जाएंगे। अमरीका की आर्थिक मन्दी का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर देखने को मिलेगा। नए राष्ट्रपति ओबामा द्वारा नई नीतियों की घोषणा से भारत के साथ सम्बन्ध सुदृढ़ होंगे जबकि आतंकवाद एवं पाकिस्तान के खिलाफ शिकंजा और कसेगा।

पाकिस्तान (Pakistan)—इसकी प्रभावराशि कन्या पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। 9 सितं. से शनि का संचार भी रहेगा। नवनियुक्त राष्ट्रपति जरदारी को बहुमुखी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। पाकिस्तान हकूमत को दहशतगर्द एवं कट्टरवादी तत्त्वों से निपटने के लिए कठोर पग उठाने की संकल्प शक्ति को बढ़ाना होगा। इसके लिए हकूमत को अमरीका और भारत सरकार के विश्वास को भी प्राप्त करने की आवश्यकता रहेगी। सरहदी और कबायली इलाकों में पाक और अमरीका के खिलाफ ज़बरदस्त/आन्दोलन हिंसक घटनाएं घटित होंगी। जरदारी सरकार आगामी वर्ष भारत की नवनिर्वाचित सरकार के साथ कई नए समझौते भी करेगी तथा ऊपरी तौर पर आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध की सयुंक्त घोषणा की जाएगी। नवाज़ शरीफ की पार्टी [पी. एम. एल. (एन.)] के साथ गठबन्धन अधिक देर तक नहीं चल पाएगा। 9 सितंबर के बाद की अवधि पाक-हकूमत के लिए अत्यंत चुनौतिपूर्ण एवं अग्निपरीक्षा वाली होगी। राजनीतिक संकट, उपद्रव, अग्निकाण्ड, छत्रभङ्ग, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं। पाक के अन्दरूनी एवं राजनीतिक हालात अस्थिर, विषम, अनिश्चित एवं अशान्त बने रहेंगे।

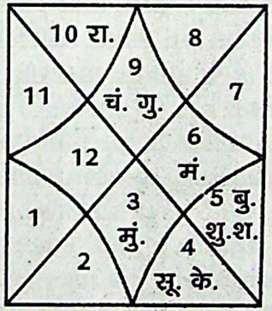
वि. संवत् २०६६ में ग्रहस्थिति और भारत

गणतन्त्र दिवस के 60वें वर्ष की वर्षकुण्डली में भारत 26 जन. 2009 ई. को दुपैहर 1 बजकर 20 मिनट पर माघ की अमावस तिथि, सोमवार को वृष लग्न में प्रवेश करेगा। लग्नेश शुक्र दशम (संसदीय) भाव में उच्चाभिलाषी अवस्था में मुथा मुक्त होकर कुम्भ राशि में बैठा है। शनि जो मुंथा स्वामी भी है, उसकी मुंथा पर स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। भारत की प्रभाव राशि **मकर** पर भी सूर्य, चन्द्र, गुरु, बुध, राहु सहित **पंचग्रही योग** बना हुआ है। **ग्रह स्थिति** के अनुसार वर्षारम्भ के **प्रथम तीन** मास भारत सरकार के लिए विशेष संघर्षपूर्ण

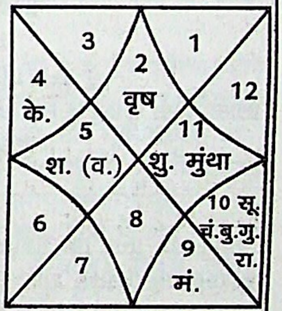
कुं. स्वतंत्र भारत
15 अग., 1947, रात्रि 12 बजे
गुरुवार



स्वतन्त्र भारत का 62वाँ वर्ष
15 अग., 2008-09 ई.
८।०°।१०′।१३″



गणतंत्र दिवस का 60वाँ वर्ष
26 जन., 2009 ई. १५/१०
(13/20 घं. मिं.)

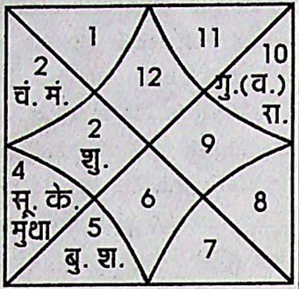


एवं चुनौतियों से भरे होंगे। वर्षारम्भ के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के कुछ प्रदेशों में विधानसभा के चुनाव तथा लोकसभा के चुनाव घटित होने की सम्भावनाएं होंगी। **गणतन्त्र कुं.** में चतुर्थ भाव (सामान्य प्रजा की प्रसन्नता का भाव) में शनि वक्री होकर शत्रु-राशि में पड़ा है, उसकी लग्न भाव पर गुप्त शत्रु दृष्टि एवं लग्नेश शुक्र पर प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि पड़ रही है। जिसके प्रभावस्वरूप वर्ष के प्रारम्भिक महीनों के दौरान देश का राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण अत्यन्त विक्षुब्ध, अशान्त, तनावपूर्ण एवं अनिश्चित रहेगा। विभिन्न पार्टियों के मध्य नए राजनीतिक समीकरण बनेंगे। जोड़-तोड़ की राजनीति पुन: सक्रिय होगी। कांग्रेस भाजपा-दो प्रमुख पार्टियों के सदृश एक तृतीय गठबन्धन राजनीतिक पार्टी अस्तित्व में आएगी। राजनीतिक प्रभुसत्ता प्राप्त करने के लिए कुछ पार्टियां अपने संगठन को मज़बूत करने के लिए नए-नए कुटिल हथकण्डे अपनाने से भी गुरेज़ नहीं करेंगी। राजनीतिक टकराव, आरोप-प्रत्यारोप एवं कहीं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। **गणतन्त्र** कुं. में मुंथेश शनि की मुंथा पर स्वगृही दृष्टि पड़ने तथा नवम (भाग्य) स्थान पर सूर्य, चन्द्र सहित पंचग्रही योग होने से भारत के विकास कार्यों, जैसे अन्तरिक्ष विज्ञान क्षेत्र, शिक्षा, कम्पयूटर्ज़, साईंस एवं टैक्नालोजी, इंजीनियरिंग, सूचना एवं संचार (Information Technology) परिवहन सड़क व भवन निर्माण के क्षेत्रों में उल्लेखनीय उन्नति होगी।

स्वतन्त्र भारत के 62वें वर्ष (15 अग० 2008 ई०) की वर्ष-कुण्डली में धनु लग्न उदित हुआ था। यह लग्न शून्यांश व 10 कला का होने से सन्धिगत कहा जा सकता है, परन्तु लग्न भाव में चन्द्र-गुरु का शुभ योग होने पर भी सप्तम भाव में मुंथा होना, अष्टम स्थान पर सूर्य-केतु का योग तथा **लग्न पर** मंगल की गुप्त शत्रु-दृष्टि पड़ने से भारत की विकास योजनाओं एवं विकास कार्यों में अगस्त 2008 ई. के पश्चात् केन्द्रिय सरकार एवं भारतीय जनता को गम्भीर आर्थिक संकट एवं बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारतीय जन-साधारण को

आतंकवाद एवं नक्सलवादी हिंसक घटनाओं का भय, कहीं जातीय व साम्प्रदायिक जनान्दोलन, विद्युत् संकट, औद्योगिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में मन्दी, आकाश को छूती-मंहगाई, भ्रष्टाचार, बेमौसमी एवं अत्याधिक वर्षा से आई प्रलयंकारी बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से अनेक प्रदेशों में करोड़ों की फसलों, धन-सम्पदा एवं लोगों की क्षति का होना, देश के उत्तर-पूर्वी भागों जैसे उ.प्र., म.प्र., बिहार, उड़ीसा आदि प्रदेशों में कहीं दुर्भिक्ष, महामारी, क्लिष्ट रोग, लूटमार, चोरी, एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण लोगों की आकस्मिक मृत्यु का भय हो। कुछ राज्यों में बिगड़ती कानून और व्यवस्था की समस्या, बेरोज़गारी, राजनेताओं में परस्पर टकराव एवं अस्थिरताओं का दौर रहेगा।

कुं स्वतन्त्र भारत 63वाँ वर्ष
15 अग. 2008 ई.
21/27 घं. मिं.



स्वतन्त्र भारत के 63वें वर्ष की कुण्डली में मीन लग्न उदित हुआ है। लग्नाधिपति **गुरु** वक्री एवं नीच राशिस्थ होकर राहु के साथ 11वें भाव में पड़ा है, तथा उच्चदृष्टि से पंचम भावस्थ मुंथा को देख रहा है। पंचमभाव की मुंथा और मुंथेश चन्द्र का उच्चराशिस्थ होकर भाग्येश मंगल के साथ तीसरे स्थान में होने से आगामी वर्ष के उत्तरार्ध भाग (विशेषकर 15 अग. के बाद) में केन्द्रिय सरकार औद्योगिक एवं आर्थिक क्षेत्र में विशेष उन्नति करेगी। नए-नए उद्योगों की स्थापना के फलस्वरूप रोज़गार व उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। अमेरिका के साथ परमाणु करार का सफलता पूर्वक पारित हो जाने से भारत के अमरीका के साथ व्यापारिक, आर्थिक एवं औद्योगिक सम्बन्ध और अधिक मज़बूत होंगे। अमेरिका के अतिरिक्त यूरोपीय व अन्य देशों जैसे कैनेडा, इंगलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, जापान, पाकिस्तान, ईरान, रूस....... आदि विश्व के अन्य देशों के साथ भी मुक्त व्यापारिक व सांस्कृतिक सम्बन्धों में बेहतरी होगी। राजनीतिक देश में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

≈आगामी लोकसभा चुनावों में गठबन्धन सरकार के योग≈

वर्ष प्रवेश कुण्डली में चतुर्थ भाव पर **भारत** की प्रभाव राशि **मकर** पर **गुरू**-राहु का अशुभ योग बना है। स्वतन्त्र भारत के 62वें वर्ष की कुं. में दूसरे भाव में राहु की स्थिति होने से यही संकेत मिलते हैं कि आगामी वर्ष चुनावों में किसी भी राजनीतिक पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं प्राप्त होगा। लोकसभा चुनावों में भाजपा की स्थिति गतवर्षों की अपेक्षा बेहतर होगी। पुनः गठबन्धन सरकार के ही योग हैं। नवनिर्वाचित केन्द्रिय सरकार के लिए **आगामी वर्ष गम्भीर चुनौतियों एवं कठिन परीक्षा का समय होगा।** जगत-कुं. और स्वतन्त्र भारत के 63वें वर्ष मकर राशि पर **गुरु-राहु** का योग होने से देश की उपयोगी योजनाओ के निर्माण एवं क्रियान्वन में अवरोध पैदा होंगे। गेहूं, धान्य आदि अनाज के मूल्यों में और तेजी होगी। राजा और प्रजा में भयोत्पादक व कष्टकारी घटनाएं घटित हों। राजनेताओं एवं सामान्य प्रजा के **नैतिक एवं-चरित्रिक मूल्यों में** भी कमी आएगी। **अमीरों और गरीबों** के मध्य खाई और अधिक बढ़ेगी। बेईमानी, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, धन लोलुपता एवं भोगवादिता की प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलेगा। विरोधी पार्टियों और **जन साधारण लोगों के सामने गगन चुम्बी मंहगाई और बढ़ता भ्रष्टाचार मुख्य मुद्दा रहेगा।**

सम्वत् २०६६ में ग्रह गोचर और भविष्य फल

वर्ष के आरम्भ भारत की प्रभाव राशि मकर पर गुरु नीच राशिस्थ होकर राहु युक्त होकर संचार कर रहा है, जो कि 30 अप्रैल तक सम्बन्ध रहेगा। राशिस्वामी **शनि** पहले से वक्री होकर सिंह राशिस्थ है और वह गुरु के साथ षडाष्टक स्थिति में है। फलस्वरूप सब प्रकार के अनाज, जैसे—गेहूं, धान्य, चावल, चने, सर्वप्रकार की दालें तेज़ भाव होंगे। राजनेताओं एवं प्रशासक वर्ग में भय और अशान्ति का वातावरण बने।

गुरु-राहु यदैकग भवेतां सहितौ यदा। सर्वधान्य महर्घत्वं राजानो भय विह्वलाः।

14 जन. से 11 फर. तक मकर राशि पर सूर्य-राहु का योग बनना, फिर **28 जन.** से **6 मार्च** तक **मंगल-राहु** का योग तथा चतुर्ग्रही व पंचग्रही योग बनने से सामाजिक व राजनीतिक हालात अनिश्चित व अशान्तपूर्ण रहेंगे। कहीं जनान्दोलन, विग्रह एवं राजनीतिक पार्टियों में टकराव व हिंसा के समाचार प्राप्त होंगे।

एक राशौ यदा यान्ति पंचखेचरा :। प्लावयन्ति महीं सर्वा रूधिरेण जलेन वा॥

8 मार्च से 13 मार्च के मध्य शनि और मंगल ग्रहों के मध्य **समसप्तक** योग बनेगा, जिसके प्रभावस्वरूप उत्तर-प्रदेश, मध्य-प्रदेश, बिहार, असम एवं जम्मू-कश्मीर के पूर्वोत्तर भाग में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक तनाव, विस्फोट एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं—

यदा सौरि भौमे सुरराज मन्त्री, भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्या मध्यदेशे लंकापुरे, पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति॥

10 अप्रैल से 9 मई तक की अवधि में चान्द्र वैशाख मास में **पाँच शनिवार** पड़ने से सामान्य लोगों में आवश्यक वस्तुओं—जैसे दूध, ईंधन, सब्जियाँ आदि वस्तुओं के भावों में अत्यधिक तेज़ी, क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति, लोगों में पारस्परिक सौहार्द्र की कमी, राजनीतिक गठबन्धनों में परिवर्तन व साम्प्रदायिक टकराव हो—

शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्।
महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी॥

10 मई से 7 जून की अवधि (ज्येष्ठ मास) में **पाँच रविवार** होने से देश में कहीं अनाज की कमी से दुर्भिक्ष, महंगाई हो, और **सत्ता परिवर्तन** के भी योग बनते हैं—

यत्रमासे रविवाराः जायन्ते पंच सततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभङ्गं स्यात् दास्ते च महद्भयम्॥

आगे **आषाढ़ मास** (8 जून से 7 जुला. पर्यन्त) में पाँच मंगलवार होने से छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन), राजनीतिक अस्थिरता, जातीय एवं हिंसक टकराव, अग्निकाण्ड, उपद्रव एवं आतंकवादी घटनाओं तथा किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु के भी योग होंगे—

यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेता॥

चान्द्रमासों में क्रमानुसार ५ शनि, ५ रवि एवं ५ मंगलवार पड़ने से खप्पर योग के अनिष्टकारी योग का अशुभ प्रभाव सम्भव है।

आगे 22 जुलाई को **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** घटित होने से राजनीतिक क्षेत्र में विशेष उतार चढ़ाव होंगे। किसी विशेष नेता के अपदस्थ होने के योग हैं।

भाद्रपद संक्रान्ति **16 अग. रविवार** को होने से तथा **सूर्य-शनि** का योग (16 अग. से 8 सितं.) तक रहेगा। नेताओं में परस्पर टकराव एवं विरोध हो। सीमाओं पर कहीं युद्ध के समाचार मिलें। कश्मीर घाटी में हिंसक वारदातें हों, अनाज आदि आवश्यक वस्तुओं में तेजी के कारण साधारण प्रजा दुःखी हो।

30 जुला. से 16 नवं. तक **गुरु-राहु** का योग मकर राशि पर तथा 5 अक्तू. से 16 नवं. तक मंगल-केतु का योग सत्तारूढ़ सरकार के लिए कठिन चुनौतियाँ लेकर आएगा। अवसरवादी नेता दल परिवर्तन करने में देरी नहीं करेंगे।

21 अग. से 19 दिसं. के मध्य गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग कश्मीर, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली आदि प्रदेशों के लिए अनिष्टकार एवं विशेष घटनाप्रद होगा।

≈कन्या राशिस्थ शनि का फल≈

9 सितम्बर से शनि कन्या राशि में प्रवेश करेगा, जिससे अफ़गानिस्तान, पाक तथा भारत में कश्मीर, महाराष्ट्र, मुम्बई, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, दिल्ली आदि विशेष रूप से प्रभावित होंगे। कहीं आकस्मिक बाढ़ादि, भूस्खलन, प्राकृतिक प्रकोपों के कारण जन, कृषि व धन हानि के संकेत हैं। कश्मीर, असम आदि प्रदेशों में विदेशी घुसपैठ एवं आतंकवादी विस्फोटों के कारण दुर्भाग्यशाली हिंसक दुर्घटनाओं का भय रहेगा—

काश्मीरं याति नाशंहयरवदलितं विग्रहं तत्र कुर्यात्
रत्नस्थं धातुरूप्यं गजहय वृषभं छागलं माहिषं च।
मंजिष्ठाकुंकुमाद्यंरसकस सहितं यान्तिसर्वे समर्घं,
कन्यायां सूर्यपुत्रे सकल सुखं संग्रहेसर्वधान्यम्॥

उपरोक्त प्रदेशों में कहीं जनांदोलन, विग्रह, साम्प्रदायिक टकराव, हिंसक वारदातों एवं विस्फोटक घटनाओं के घटित होने का भय होगा। सोना, चाँदी, सर्वप्रकार के रत्न, हाथी, घोड़े, भैंस, गाय आदि चौपाय, मंजीठ, केशर, पैट्रोलियम पदार्थ, खाद्य तैल, चावल, गेहूँ, दालें (धान्यादि) तेज़ भाव होंगे। इन सब का संग्रह करने वाले व्यापारी लाभान्वित होंगे।

खप्पर-योग—17 अक्तू. शनिवार के दिन कार्तिक **अमावस** है तथा इसी दिन **कार्तिक संक्रान्ति** होने से **खप्पर योग** बना है, जिसके फलस्वरूप बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि धन-जन की हानि, दूध, घी, अनाजादि खाद्य वस्तुओं में गगनचुम्बी महंगाई, राजनैतिक अस्थिरता, हिंसा व तोड़फोड़ की घटनाएँ घटित होंगी।

3 नवं. से 2 दिसं. के मध्य पुनः **पाँच मंगलवार** होने से केन्द्रीय सरकार के नेतृत्व के सम्बन्ध में गम्भीर राजनैतिक संकट उत्पन्न होंगे।

पौष मास (3 दिसं. से 31 दिसं.) के मध्य ५ गुरुवार होने से देश के पश्चिमी भागों (जैसे पाक सीमाओं एवं काश्मीरादि) में कहीं उपद्रव, राजनीतिक टकराव, विग्रह, विस्फोट एवं युद्ध जैसे हालात बनेंगे। महँगाई और भ्रष्टाचार के कारण सामान्य लोगों में क्रोध, असन्तोष एवं विक्षोभ की भावना होगी।

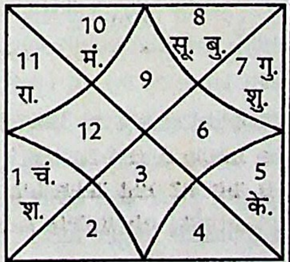
माघ मास (1 जन. से 30 जन., 2010 ई. तक)—पाँच शुक्रवार तथा पाँच शनिवार होने से एवं इसी मध्य खण्ड सूर्यग्रहण के प्रभाव के कारण मिश्रित प्रभाव होंगे। जनसंख्या में वृद्धि, धन-सम्पदा का प्रसार बढ़ेगा। पाँच शनिवार होने से जातीय उत्पात और साम्प्रदायिक दंगे-फसाद बढ़ेंगे। कहीं विस्फोटक घटनाएं घटेंगी, जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं मूल्यों में तेज़ी का रुझान रहेगा। केन्द्रीय सरकार के घटक दलों में तनाव एवं आरोप-प्रत्यारोप रहेंगे।

फाल्गुन मास (31 जन. से 28 फर., 2010 ई.) तक पाँच रविवार होना भी शुभ नहीं है। देश के कुछ राज्यों में अनाज की कहीं, दुर्भिक्ष भय, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, जातीय हिंसा, अग्निकाण्ड, जनांदोलन एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं।

आगामी लोकसभा निर्वाचन एवं प्रमुख राजनैतिक दल

कांग्रेस पार्टी

कुण्डली कांग्रेस पार्टी



कांग्रेस कुण्डली में धनु लग्न उदित है। वर्षारम्भ से ही लग्नेश गुरु नीच राशिगत संचार करेगा। 27 जन. से राशि स्वामी मंगल उच्च राशिगत संचार करने से यदि फरवरी मास में कुछ राज्यों (राजस्थान, म. प्र., मिज़ोरम) में विधानसभा चुनाव हुए, तो कांग्रेस को उनमें लाभ प्राप्त हो सकता है। परन्तु 7 मार्च के बाद मंगल के कुम्भ राशिगत संचार करने तथा ग्रहस्थिति अनुसार आगामी लोकसभा चुनावों में यद्यपि भाजपा के साथ एक प्रमुख पार्टी के रूप में रहेगी। परन्तु यूपीए घटक के कुछ प्रमुख दलों में परस्पर वैचारिक मतभेद उभरकर आने की सम्भावना है। कांग्रेस के क्षेत्रीय पार्टियों के साथ नए गठबन्धन होंगे। आगामी विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों में कई प्रदेशों में कांग्रेस की प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुँचेगी तथा उनकी आशा के विपरीत कम सीटों पर ही विजय प्राप्त होगी।

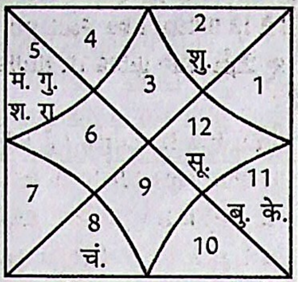
भारतीय जनता पार्टी

भाजपा की स्थापना कुण्डली में मिथुन लग्न उदित है। चन्द्रमा यद्यपि षष्ठस्थ नीच राशिगत है, परन्तु उस पर मंगल की स्वक्षेत्री शुभ दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष भाजपा पार्टी के लिए भी कठिन चुनौतियों एवं विषम परिस्थितियों से भरा होगा। कुछ

राज्यों के विधानसभा चुनावों जैसे—छत्तीसगढ़, दिल्ली, राजस्थान में कुछ सफलता परन्तु म.प्र. तथा अन्य कुछ राज्यों में असफलताएं भी प्राप्त हो सकती है।

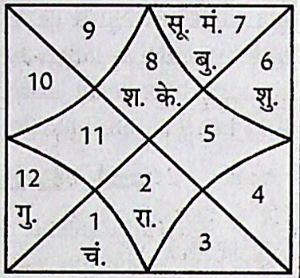
लोकसभा के चुनावों में कुछ स्थलों पर आश्चर्यजनक एवं आकस्मिक सफलताएं भी मिलेंगी परन्तु स्वतन्त्र रूप से सरकार बनाने का दावा फिर भी नहीं बन पाएगा। प्रान्तीय एवं छोटे दलों का सहयोग लोकसभा चुनावों में निर्णायक सिद्ध होगा। अगले लोकसभा चुनावों के परिणाम त्रिशंकु लोकसभा के रूप में ही सामने आएंगे। आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा उ.प्र., हि.प्र., हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, दिल्ली, बिहार, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड से गत चुनावों की अपेक्षा अधिक सीटें प्राप्त करेगी, परन्तु कुछ राज्यों से हानि का सामना भी करना पड़ेगा। फरवरी, 09 ई. के पश्चात् पार्टी नेतृत्व में भी परिवर्तन सम्भव है।

कुं. भारतीय जनता पार्टी



कुं. श्रीलालकृष्ण अडवानी

8-11-1927, 9:16 प्रातः सिन्ध



श्री लालकृष्ण अडवानी की यथोपलब्ध कुं. में वृश्चिक लग्न उदित है। अष्टमेश बुध की व्यय भाव में स्थिति विपरीत राजयोग व्यक्त करती है। भाग्येश चन्द्र लग्नस्थ केतु के नक्षत्र एवं नक्षत्र नवांश है सप्तमस्थ राहु भाग्येश चन्द्र भी राजनैतिक सफलतादायक बनाता है। आगामी लोकसभा चुनावों में श्री अडवानी तथा उनकी पार्टी के सदस्य कांग्रेस की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेंगे।

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

हिमाचल प्रदेश—प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कर्क है। 60वें वर्ष के गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी, 2009 ई.) की कुण्डली में राशिस्वामी गुरु नीच राशिगत भाग्य स्थान में तथा कर्क राशि पर केतुका संचार कुछ विषम परिस्थितियों का संकेत कर रहे हैं। ध्यान रहे, गतवर्ष इसी कालम के अन्तर्गत पृष्ठ 64 पर राज्य के विधानसभा चुनावों सम्बन्धी भविष्यवाणी स्पष्टतः पढ़ें, जो अक्षरशः सत्य साबित हुई—"**कांग्रेस को अपेक्षाकृत कम सीटें प्राप्त होंगी। प्रदेश में भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा, भाजपा शक्तिशाली पार्टी के रूप में उभरकर सामने आएगी।**"

आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों में दोनों मुख्य पार्टियों में कांटे की टक्कर के बाद भाजपा को सफलता प्राप्त होगी। सत्तारुढ़ मुख्यमन्त्री प्रो. प्रेमकुमार धूमल जी को गम्भीर चुनौतियों का सामना रहेगा, गुरु के मकर राशिस्थ संचारकालीन (वर्षारम्भ से 1 मई तक तथा फिर 30 जुला. से 18 दिसं. तक) विशेष उथल-पुथल वाले रहेंगे, **महंगाई, पेयजल की कमी आदि समस्याएं यथापूर्व गम्भीर बनी रहेंगी।** वर्षारम्भ जन. में तथा अग., सितं. के महीनों में ओलावृष्टि, भूस्खलन, अतिवृष्टि, वायु विस्फोट आदि प्राकृतिक प्रकोपों एवं सड़क/वाहनादि दुर्घटनाओं के कारण कृषि, जन-धन आदि की हानि होने के संकेत हैं। यद्यपि चुनावों से पूर्व प्रादेशिक सरकार द्वारा कई **लोकभावन योजनाओं की घोषणा** की जाएगी। गगनचुम्बी मंहगाई के कारण जन-साधारण लोगों में असंतोष, बेचैनी व विक्षोभ पैदा होंगे।

पंजाब—इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कन्या है। गणतन्त्र दिवस तथा नववर्ष प्रवेश कुं. में ग्रहस्थिति अनुसार वर्तमान गठबन्धन सरकार को विशेष आर्थिक समस्याओं व चुनौतियों का सामना रहेगा। लोकसभा चुनावों से पूर्व यद्यपि बादल सरकार कई प्रोजेक्टों तथा लोकभलायी योजनाओं की घोषणा करेगी परन्तु ऊर्जा (बिजली) के क्षेत्र में मांग एवं सप्लाई का असन्तुलन होने के कारण साधारण जनता तथा औद्योगिक क्षेत्र से विरोध का सामना करना पड़ेगा। अत्यधिक महंगाई, टैक्स, बिजली (उर्जा) समस्या के कारण गहन असन्तोष रहे। चोरी, लूट, उपद्रव आदि घटनाओं में वृद्धि होगी। आगामी लोकसभा चुनावों में कांग्रेस के साथ कांटे की टक्कर के बाद मध्यम रुपेण सफलता ही प्राप्त होगी।

हरियाणा—प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि मिथुन है। कर्क राशि पर केतु का संचार 17 नवं., 2009 ई. तक रहेगा। तदुपरान्त मिथुनमें रहेगा। सतारूढ़ कांग्रेस की हुड्डा सरकार के समक्ष अनेक चुनौतियां एवं समस्याएं रहेंगी। **यद्यपि कांग्रेस सरकार विद्युत्, कृषि, इंजीनियरिंग, शिक्षा, चिकित्सा, जल-संसाधनों, पेयजल, रोज़गार, आवास, निर्माण आदि की समस्याओं से निपटने के लिए बहुमुखी विकास**योजनाएं तैयार करेगी। परन्तु विरोधी पार्टियां लोकसभा चुनावों से पूर्व इन समस्याओं से लाभ लेने के प्रयास में रहेंगी। चुनाव पूर्व भाजपा, चौटाला जी की 'इनैलो', कुलदीप विश्नोई को 'हजकां', बसपा, कांग्रेस के कुछ बागी सांसदों के मध्य नए राजनीतिक गठजोड़ बनेंगे। इन सबसे कांग्रेस पार्टी की स्थिति कुछ कमज़ोर होती दिखेगी। परन्तु शेष सीटें विभिन्न पार्टियों में बंट जाएंगी। कांग्रेस पार्टी का प्रभाव कुछ कमज़ोर होता दिखेगा।

दिल्ली—नई गणतन्त्र दिवस कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि मकर पर सू., चं., बु., गु., रा. का पंचग्रही योग बना हुआ है। फलस्वरूप **राजनीतिक गतिविधियों** का केन्द्र बना रहेगा। लोकसभा चुनावों से पूर्व तथा बाद में भी राजनीतिक पार्टियों के मध्य नए-नए समीकरण एवं गठजोड़ बनेंगे। दिल्ली राज्य में सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार को काफी कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। दिल्ली राज्य में भाजपा सशक्त पार्टी के रूप में उभरेगी। आतंकवादी संगठनों एवं विदेशी ताकतों द्वारा दिल्ली में विस्फोट, उपद्रव करने के

प्रयास होंगे। राज्य सरकार को इस सम्बन्धी विशेष सावधान रहने की आवश्यकता होगी। प्रदेश की कुछ मौलिक समस्याओं जैसे विद्युत्, महंगाई, आवास, पेयजल आदि से साधारण जन ग्रस्त रहेंगे।

उत्तर-प्रदेश—प्रभावराशि धनु तथा नाम राशि वृष है। आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों से पूर्व प्रदेश में विभिन्न दलों के मध्य चुनाव गठजोड़ होंगे। चुनावोंमें बसपा, कांग्रेस तथा भाजपा का प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा। सत्तारूढ़ बसपा सरकार भी चुनावों से पूर्व कई क्रान्तिकारी एवं प्रगतिपद योजनाओं की घोषणाएं करेंगी। परन्तु विपक्षी दल बिजली, पानी, कृषि, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं से सत्तारूढ़ सरकार की आलोचना कर लाभ प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

जम्मू-कश्मीर—नाम राशि मकर तथा प्रभाव राशि तुला है। 60वें वर्ष की गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में पंचग्रही योग बना हुआ है। राशिस्वामी शनि का 9 सितं. तक शत्रु राशिगत (सिंह) संचार अशुभ घटनाओं की ओर संकेत कर रहा है। आगामी विधानसभा तथा लोकसभा चुनावों में श्रीफारुख अब्दुल्ला के नैशनल फ्रंट गठबन्धन का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। जम्मू क्षेत्र में भाजपा पुनः विजयी होने के संकेत हैं। परन्तु कश्मीर घाटी में पी. डी.पी. तथा कांग्रेस पार्टी का प्रभाव कमज़ोर होगा। नई सरकार को अनेक आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक संकट का सामना करना पड़ेगा। शान्ति प्रयासों को विफल बनाने के लिए आतंकवादी कश्मीर घाटी में अनेक विध्वंसक एवं उपद्रवी कार्यवाहियां करने की कुचेष्टाएँ करेंगे। नयी सरकार को भी पर्यटन, पेयजल आपूर्ति तथा अमरनाथ यात्रा हेतु भूमि-विवाद सम्बन्धी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

राजस्थान—प्रभावराशि कर्क तथा नामराशि तुला है। प्रभावराशि पर केतु का संचार प्रधान नेता श्रीमती सिंधिया जी के लिए समय शुभ नहीं है। भाजपा को विधानसभा चुनावों में कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। कांग्रेस के प्रभाव में वृद्धि होगी। गुर्जर आदि कुछ क्षेत्रीय एवं किसानों के दल भी उभरकर आंशिक सफलता प्राप्त करेंगे तथा निर्णायक तत्त्व भी साबित हो सकते हैं। लोकसभा चुनावों में यद्यपि भाजपा को मध्यम रूपेण सफलता प्राप्त होगी। आगामी वर्ष राज. में विषम, खण्ड वर्षा के संकेत हैं। भूमिगत जल में कमी, पेयजल सम्बन्धी समस्याएं भी मुख्य चुनावी मुद्दा बनेंगी।

उपरोक्त भविष्यवाणियाँ गोचर ग्रहों के संचार संकेतों के आधार पर अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता एवं सर्वज्ञ स्वयं विधाता ही है।

फलानि ग्रहसंचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना॥

लेख लिपिबद्धम्— **शुभचिन्तकः**

भाद्र शुक्ल पूर्णिमा पं. पन्ना लाल ज्योतिषी M.A.

तदनुसार, 15 सितम्बर, सन् 2008 ई., सोमवार जालन्धर। फोन : 0181-2457959

यदि जन्म कुण्डली में शुक्र के कारण सन्तान सुख में बाधा हो, तो उस व्यक्ति ने किसी फूलों वाले वृक्षों को कटवाया है, या गाय के प्रति कोई पाप किया है, अथवा किसी साध्वी स्त्री के श्राप से ऐसा हुआ है। ऐसी स्थिति में प्रायः यक्षिणी का श्राप समझना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में सन्तान भाव शनि के कारण दूषित हुआ है, तो समझिए कि जातक/जातिका ने पीपल के पेड़ कटवाए हैं और यमराज, प्रेत, पिशाच आदि के श्राप से सन्तान कष्ट हुआ है।

यदि **पंचम में राहु** हो, या वह पंचमेश को दूषित करता हो, और उसके कारण सन्तान सुख में बाधा हो रही है, तो सर्प के शाप का प्रभाव समझें। यदि केतु के कारण सन्तान सुख में कमी हो, तो उसमें हेतु ब्राह्मण का शाप समझना चाहिए। जिस ग्रह के कारण सन्तान सुख में कमी आती हो, उस ग्रह सम्बन्धी जप, दान एवं सम्बन्धित दोष का प्रतिकार करना चाहिए। जैसे सूर्य सन्तान सुख में बाधक हो, तो अपने पित्तरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पण, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए।

विशेष उपाय—सन्तान सम्बन्धी अनिष्ट ग्रहों का निर्णय करने के उपरान्त ही निम्न उपायों में से चयन करके शुभ मुहूर्त्त एवं शुभ मास आदि में विधिपूर्वक व्रत-अनुष्ठान, मंत्र जपादि करना विशेष कल्याणकारी रहेगा।

1. **सन्तान गोपाल स्तोत्र,** श्री गोपाल सहस्त्रणाम एवं **श्री हरिवंश पुराण** का विधिपूर्वक पाठ करके सवत्सा गाय का दान करना।
2. पुत्रदा एकादशी व्रत पति-पत्नी द्वारा करना।
3. सोमवती अमावस्या एवं अमावस्या को तीर्थ स्नान, गंगा-प्रयागादि में स्नानोपरान्त पितृ-तर्पण, ब्राह्मण भोजन एवं अन्य शुभ कार्य करने का विधान है।
4. श्री महालक्ष्मी व्रत (भादो शु॰ अष्टमी) करना, विधिपूर्वक 16 दिनों का अनुष्ठान करके श्री महालक्ष्मी जी का पूजन करना सन्तान सुख में वृद्धि करता है।
5. वंशवृद्धि के लिए श्री वंशकवच एवं स्तोत्र का पाठ विधिपूर्वक करना।
6. सन्तान रक्षा एवं वृद्धि के लिए सन्तान गणपति स्तोत्र का पाठ तथा श्री गणेश चतुर्थी व्रत करना।
7. वेदोक्त श्री चरणव्यूह का पाठ भी शुभ रहता है।
8. सन्तान प्राप्ति हेतु षष्ठी देवी स्तोत्र का पूजन एवं नित्य पाठ करना शुभ है।

इसके अतिरिक्त विशेष जानकारी के लिए हमारी पुस्तक '**अनिष्ट ग्रह और उपाय**' का अवलोकन करें एवं अपनी समस्या के लिए समाधान हेतु विशेष परामर्श प्राप्त करें।

पता—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी
पं॰ देवी दयालु ज्यो॰ एंड सन्ज़
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं.मिं.) (सन् 2009-10 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश (वर्ष के आरम्भ में धनु राशि में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	6/27	16 सितं.	कन्या	23/23
12 फर.	कुम्भ	19/24	17 अक्टू.	तुला	11/20
14 मार्च	मीन	16/16	16 नवं.	वृश्चिक	11/11
13 अप्रै.	मेष	24/47	15 दिसं.	धनु	25/51
14 मई	वृष	21/40	14 जन. 2010	मकर	12/38
14 जून	मिथुन	28/17	12 फर.	कुम्भ	25/38
16 जुला.	कर्क	15/08	14 मार्च	मीन	22/30
16 अग.	सिंह	23/29			

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

14 अप्रै.	मीन	25/31	5 अक्टू.	कर्क	9/20
23 मई	मेष	27/00	20 दिसं.	वक्री	18/55
3 जुला.	वृष	21/13	(सन् 2010 ई.)		
16 अग.	मिथुन	15/27	10 मार्च	मार्गी	22/40

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

6 अप्रै.	मेष	21/23	24 सितं.	व. सिंह	8/20
24 अप्रै.	वृष	5/46	29 सितं.	मार्गी	18/44
7 मई	वक्री	10/34	4 अक्टू.	कन्या	27/41
25 मई	व. मेष	15/27	24 अक्टू.	तुला	26/17
31 मई	मार्गी	6/49	12 नवं.	वृश्चिक	10/10
5 जून	वृष	18/19	1 दिसं.	धनु	22/03
30 जून	मिथुन	22/38	26 दिसं.	वक्री	20/04
15 जुला.	कर्क	8/24	15 जन. 2010	मार्गी	22/32
30 जुला.	सिंह	15/54	6 फर.	मकर	5/15
20 अग.	कन्या	5/23	26 फर.	कुम्भ	5/46
7 सितं.	वक्री	10/10	14 मार्च	मीन	20/39

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मकर में)

1 मई	कुम्भ	18/44	13 अक्टू.	मार्गी	10/02
15 जून	वक्री	13/19	19 दिसं.	कुम्भ	24/15
30 जुला.	व. मकर	19/52	संवतान्त तक कुम्भ में रहेगा।		

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में वक्री)

6 मार्च	वक्री	22/45	26 जुला.	मिथुन	25/07
17 अप्रै.	मार्गी	24/55	21 अग.	कर्क	20/14
31 मई	मेष	5/01	15 सितं.	सिंह	20/38
29 जून	वृष	24/36	10 अक्टू.	कन्या	7/56

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
3 नवं.	तुला	10/44
27 नवं.	वृश्चिक	8/57
21 दिसं.	धनु	5/23
13 जन. 2010	मकर	25/37
6 फर.	कुम्भ	22/49
2 मार्च	मीन	22/30

शनि राशि प्रवेश

(संवतारम्भ से सिंह में वक्री)

17 मई	मार्गी	7/36
9 सितं.	कन्या	23/58
13 जन. 2010	वक्री	21/27

राहु (संवतारम्भ से मकर में)

17 नवं.	धनु	12/20

केतु (संवतारम्भ से कर्क में)

17 नवं.	मिथुन	12/20

यूरेनस

6 अप्रै.	मीन	23/41
1 जुला.	वक्री	13/06
3 अक्टू.	व. कुम्भ	22/52
1 दिसं.	मार्गी	25/56
27 जन. (10)	मीन	13/02

नैपच्यून

(संवतारम्भ से कुम्भ में)

29 मई	वक्री	10/00
1 अक्टू.	व. मकर	28/50
4 नवं.	मार्गी	23/42
7 दिसं.	कुम्भ	26/11

संवतान्त तक कुम्भ में रहेगा।

प्लूटो

सम्पूर्ण संवत् धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री–मार्गी

मंगल

20 दिसं.	वक्री	18/55
10 मार्च (10)	मार्गी	22/40

बुध

7 मई	वक्री	10/34
31 मई	मार्गी	6/49
7 सितं.	वक्री	10/10
29 सितं.	मार्गी	18/44
26 दिसं.	वक्री	20/04
15 जन. (10)	मार्गी	22/32

गुरु

15 जून	वक्री	13/19
13 अक्टू.	मार्गी	10/02

शुक्र

6 मार्च	वक्री	22/45
17 अप्रै.	मार्गी	24/55

शनि

(संवतारम्भ में वक्री)

17 मई	मार्गी	7/36
13 जन. (10)	वक्री	21/27

यूरेनस

1 जुला.	वक्री	13/06
1 दिसं.	मार्गी	25/56

नैपच्यून

29 मई	वक्री	10/00
4 नवं.	मार्गी	23/42

प्लूटो

4 अप्रै.	वक्री	23/09
11 सितं.	मार्गी	22/28

ग्रहों का उदय-अस्त-2009-10

मंगल

7 फर.	पूर्वोदय	21/15

बुध

14 जन.	व.पश्चिमास्त	24/30
26 जन.	व. पूर्वोदय	9/54
17 मार्च	पूर्वेस्त	4/32
12 अप्रै.	पश्चिमोदय	17/01
10 मई	व. पश्चिमास्त	4/18
26 मई	व. पूर्वोदय	22/05
2 जुला.	पूर्वास्त	25/13
26 जुला.	पश्चिमोदय	12/34
14 सितं.	व. पश्चिमेऽस्त	11/23
27 सितं.	व. पूर्वोदय	8/31
17 अक्टू.	पूर्वेऽस्त	9/46
28 नवं.	पश्चिमोदय	25/47
30 दिसं.	व.पश्चिमास्त	11/10
(सन् 2010 ई.)		
10 जन.	व. पूर्वोदय	15/25
26 फर.	पूर्वेऽस्त	18/55

गुरु

11 जन.	पश्चिमास्त	24/10
10 फर.	पूर्वोदय	4/32
(सन् 2010 ई.)		
16 फर.	पश्चिमास्त	26/48
22 मार्च	पूर्वोदित	19/37

शुक्र

24 मार्च	पश्चिमास्त	7/28
30 मार्च	पूर्वोदय	27/15
14 दिसं.	पूर्वेस्त	5/18
9 फर.(10)	पश्चिमोदय	6/48

शनि

31 अग.	पश्चिमास्त	6/31
5 अक्टू.	पूर्वोदय	11/15

❖ ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् २०६६ वि. (सं. 2009-10 ई.) ❖

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
27 मार्च	उ.भा. (4)	
31 मार्च	रेव. (1)	11/22
3 अप्रै.	रेव. (2)	
7 अप्रै.	रेव. (3)	
10 अप्रै.	रेव. (4)	
13 अप्रै.	अश्वि(1) मेष	24/47
17 अप्रै.	अश्वि (2)	
20 अप्रै.	अश्वि (3)	
24 अप्रै.	अश्वि (4)	
27 अप्रै.	भर. (1)	16/33
30 अप्रै.	भर. (2)	
4 मई	भर. (3)	
7 मई	भर. (4)	
11 मई	कृति (1)	10/46
14 मई	कृति 2 वृष	21/40
18 मई	कृति (3)	
21 मई	कृति (4)	
25 मई	रोहि. (1)	6/58
28 मई	रोहि. (2)	
1 जून	रोहि. (3)	
4 जून	रोहि. (4)	
7 जून	मृग (1)	28/50
11 जून	मृग (2)	
14 जून	मृग(3) मिथु.	28/17
18 जून	मृग (4)	
21 जून	आर्द्रा(1)	27/51
25 जून	आर्द्रा (2)	
28 जून	आर्द्रा (3)	
2 जुला.	आर्द्रा (4)	
5 जुला.	पुर्न (1)	27/24
9 जुला.	पुर्न (2)	
12 जुला.	पुर्न (3)	
16 जुला.	पुर्न 4 कर्क	15/08
19 जुला.	पुष्य(1)	26/57

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
23 जुला.	पुष्य (2)	
26 जुला.	पुष्य (3)	
30 जुला.	पुष्य (4)	
2 अग.	आश्ले. (1)	25/46
6 अग.	आश्ले. (2)	
9 अग.	आश्ले. (3)	
13 अग.	आश्ले. (4)	
16 अग.	मघा 1 सिंह	23/29
20 अग.	मघा (2)	
23 अग.	मघा (3)	
27 अग.	मघा (4)	
30 अग.	पू.फा. (1)	19/22
3 सितं.	पू.फा. (2)	
6 सितं.	पू.फा. (3)	
9 सितं.	पू.फा. (4)	
13 सितं.	उ.फा. (1)	13/18
16 सितं.	उ.फा.2 कन्या	23/23
20 सितं.	उफा. (3)	
23 सितं.	उफा. (4)	
26 सितं.	हस्त (1)	28/42
30 सितं.	हस्त (2)	
3 अक्तू.	हस्त (3)	
7 अक्तू.	हस्त (4)	
10 अक्तू.	चित्रा (1)	17/48
13 अक्तू.	चित्रा (2)	
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	11/20
20 अक्तू.	चित्रा (4)	
23 अक्तू.	स्वा. (1)	28/14
27 अक्तू.	स्वा. (2)	
30 अक्तू.	स्वा. (3)	
2 नवं.	स्वा. (4)	
6 नवं.	विशा. (1)	12/28
9 नवं.	विशा. (2)	

2009-10 ई.	नक्षत्र	चरण
12 नवं.	विशा. (3)	
16 नवं.	विशा. 4 वृश्चि.	11/11
19 नवं.	अनु. (1)	18/29
22 नवं.	अनु. (2)	
26 नवं.	अनु. (3)	
29 नवं.	अनु. (4)	
2 दिसं.	ज्ये. (1)	
6 दिसं.	ज्ये. (2)	22/49
9 दिसं.	ज्ये. (3)	
12 दिसं.	ज्ये. (4)	
15 दिसं.	मूल 1 धनु	25/51
19 दिसं.	मूल (2)	
22 दिसं.	मूल (3)	
25 दिसं.	मूल (4)	
28 दिसं.	पू.षा. (1)	28/04
(सन 2010 ई.)		
1 जन.	पू.षा.(2)	
4 जन.	पू.षा. (3)	
7 जन.	पू.षा. (4)	
11 जन.	उ.षा. (1)	6/07
14 जन.	उ.षा. 2 मक.	12/38
17 जन.	उषा. (3)	
20 जन.	उषा. (4)	
24 जन.	श्रव. (1)	8/21
27 जन.	श्रव. (2)	
30 जन.	श्रव. (3)	
2 फर.	श्रव. (4)	
6 फर.	धनि. (1)	11/35
9 फर.	धनि. (2)	
12 फर.	धनि.(3) कुंभे	25/38
16 फर.	धनि. (4)	
19 फर.	शत. (1)	16/01
22 फर.	शत. (2)	
26 फ़र.	शत. (3)	
1 मार्च	शत. (4)	

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2010 ई.	नक्षत्र	चरण
4 मार्च	पू.भा. (1)	22/22
8 मार्च	पू.भा. (2)	
11 मार्च	पू.भा. (3)	
14 मार्च	पू.भा. 4 मीन	22/30
18 मार्च	उ.भा. (1)	6/46
21 मार्च	उ.भा. (2)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवत् के आरंभ में शत (3) में)

28 मार्च	शत. (4)	23/27
2 अप्रै.	पू.भा. (1)	5/45
6 अप्रै.	पू.भा. (2)	
10 अप्रै.	पू.भा. (3)	
14 अप्रै.	पूभा. 4 मीन	25/31
19 अप्रै.	उ.भा. (1)	8/26
23 अप्रै.	उ.भा. (2)	
27 अप्रै.	उ.भा. (3)	
2 मई	उ.भा. (4)	
6 मई	रेव. (1)	14/50
10 मई	रेव. (2)	
15 मई	रेव. (3)	
19 मई	रेव. (4)	
23 मई	अश्वि 1 मेष	27/00
28 मई	अश्वि (2)	
1 जून	अश्वि (3)	
6 जून	अश्वि (4)	
10 जून	भर. (1)	23/12
15 जून	भर. (2)	
19 जून	भर. (3)	
24 जून	भर. (4)	
29 जून	कृति (1)	5/37
3 जुला.	कृति 2 वृष	21/13
8 जुला.	कृति (3)	
13 जुला.	कृति (4)	
17 जुला.	रोहि. (1)	25/14

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2009-10 ई.	नक्षत्र	चरण
22 जुला.	रोहि. (2)	
27 जुला.	रोहि. (3)	
1 अग.	रोहि. (4)	
6 अग.	मृग. (1)	13/34
11 अग.	मृग. (2)	
16 अग.	मृग 3 मिथुन	15/27
21 अग.	मृग. (4)	
26 अग.	आर्द्रा (1)	23/44
1 सितं.	आर्द्रा (2)	
6 सितं.	आर्द्रा (3)	
11 सितं.	आर्द्रा (4)	
17 सितं.	पुर्न (1)	17/31
23 सितं.	पुर्न. (2)	
29 सितं.	पुर्न. (3)	
5 अक्तू.	पुर्न 4 कर्के	9/20
11 अक्तू.	पुष्य (1)	15/54
18 अक्तू.	पुष्य (2)	
24 अक्तू.	पुष्य (3)	
1 नवं.	पुष्य (4)	
9 नवं.	आश्ले. (1)	14/46
18 नवं.	आश्ले. (2)	
30 नवं.	आश्ले. (3)	
20 दिसं.	वक्री	18/55
(सन 2010 ई.)		
8 जन.	व. श्ले. (2)	
19 जन.	व. आश्ले. (1)	5/28
27 जन.	व. पुष्य (4)	20/54
5 फर.	व. पुष्य (3)	
14 फर.	व. पुष्य (2)	
3 मार्च	व. पुष्य (1)	
10 मार्च	मार्गी	22/40
18 मार्च	पुष्य (2)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

26 मार्च	उभा. (2)	
28 मार्च	उभा. (3)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
29 मार्च	उभा. (4)	
31 मार्च	रेव. (1)	10/08
1 अप्रै.	रेव. (2)	
3 अप्रै.	रेव. (3)	
5 अप्रै.	रेव. (4)	
6 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	21/23
8 अप्रै.	अश्वि. (2)	
9 अप्रै.	अश्वि. (3)	
11 अप्रै.	अश्वि. (4)	
13 अप्रै.	भर. (1)	13/27
15 अप्रै.	भर. (2)	
17 अप्रै.	भर. (3)	
19 अप्रै.	भर. (4)	
21 अप्रै.	कृति. (1)	14/59
24 अप्रै.	कृति. 2 वृष	5/46
27 अप्रै.	कृति. (3)	
2 मई	कृति. (4)	
7 मई	वक्री	10/34
12 मई	व. कृति (3)	
18 मई	व. कृति. (2)	
25 मई	व. कृति. 1 मेष	15/27
31 मई	मार्गी	6/49
5 जून	कृति. 2 वृष	18/19
11 जून	कृति. (3)	
14 जून	कृति (4)	
17 जून	रोहि. (1)	24/17
20 जून	रोहि. (2)	
22 जून	रोहि. (3)	
25 जून	रोहि. (4)	
27 जून	मृग (1)	5/09
28 जून	मृग. (2)	
30 जून	मृग. 3 मिथुन	22/38
2 जुला.	मृग (4)	
4 जुला.	आर्द्रा (1)	8/40

बुध नक्षत्र प्रवेश

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
5 जुला.	आर्द्रा (2)	
7 जुला.	आर्द्रा (3)	
8 जुला.	आर्द्रा (4)	
10 जुला.	पुर्न (1)	16/56
12 जुला.	पुर्न (2)	
13 जुला.	पुर्न. (3)	
15 जुला.	पुर्न 4 कर्के	8/24
16 जुला.	पुष्य (1)	22/05
18 जुला.	पुष्य (2)	
19 जुला.	पुष्य (3)	
21 जुला.	पुष्य (4)	
23 जुला.	आश्ले. (1)	11/08
25 जुला.	आश्ले. (2)	
26 जुला.	आश्ले. (3)	
28 जुला.	आश्ले. (4)	
30 जुला.	मघा 1 सिंहे	15/54
1 अग.	मघा (2)	
3 अग.	मघा (3)	
5 अग.	मघा (4)	
7 अग.	पू.फा. (1)	19/28
9 अग.	पू.फा. (2)	
12 अग.	पू.फा. (3)	
14 अग.	पू.फा. (4)	
17 अग.	उ.फा. (1)	10/20
20 अग.	उफा. 2.कन्या	5/23
23 अग.	उ.फा. (3)	
26 अग.	उ.फा. (4)	
31 अग.	हस्त (1)	9/23
7 सितं.	वक्री	10/10
13 सितं.	व. उ.फा. (4)	20/38
17 सितं.	व. उफा. (3)	
20 सितं.	व. उफा. (2)	
24 सितं.	व. उफा 1 सिंह	8/20
29 सितं.	मार्गी	18/44
4 अक्टू.	उफा. 2 कन्या	27/41
8 अक्टू.	उ.फा. (3)	

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
10 अक्टू.	उ.फा. (4)	
12 अक्टू.	हस्त (1)	26/22
14 अक्टू.	हस्त (2)	28/51
17 अक्टू.	हस्त (3)	5/29
19 अक्टू.	हस्त (4)	
20 अक्टू.	चित्रा (1)	28/14
22 अक्टू.	चित्रा (2)	
24 अक्टू.	चित्रा(3)तुला	26/17
26 अक्टू.	चित्रा (4)	
28 अक्टू.	स्वा. (1)	25/11
30 अक्टू.	स्वा. (2)	
1 नवं.	स्वा. (3)	
3 नवं.	स्वा. (4)	
5 नवं.	विशा. (1)	27/45
8 नवं.	विशा. (2)	5/29
10 नवं.	विशा. (3)	
12 नवं.	विशा. 4 वृशि.	10/10
14 नवं.	अनु. (1)	13/01
16 नवं.	अनु. (2)	
18 नवं.	अनु. (3)	
20 नवं.	अनु. (4)	
22 नवं.	ज्ये. (1)	27/27
25 नवं.	ज्ये. (2)	
27 नवं.	ज्ये. (3)	
29 नवं.	ज्ये. (4)	
1 दिसं.	मूल (1) धनु	22/03
3 दिसं.	मूल (2)	
6 दिसं.	मूल (3)	
8 दिसं.	मूल (4)	
10 दिसं.	पू.षा. (1)	25/35
13 दिसं.	पू.षा. (2)	
15 दिसं.	पू.षा. (3)	
18 दिसं.	पू.षा. (4)	
22 दिसं.	उ.षा. (1)	28/39

2009-10 ई.	नक्षत्र	चरण
26 दिसं.	वक्री	20/04
30 दिसं.	व. पू.षा. (4)	5/59
(सन 2010 ई.)		
2 जन.	व. पूषा(3)	
5 जन.	व. पूषा. (2)	
7 जन.	व. पूषा. (1)	
10 जन.	व मूल (4)	27/13
15 जन.	मार्गी	22/32
21 जन.	पू.षा. (1)	7/33
25 जन.	पू.षा. (2)	
28 जन.	पू..षा. (3)	
31 जन.	पू.षा. (4)	
3 फर.	उषा. (1)	15/14
6 फर.	उ.षा. (2) मक.	5/15
8 फर.	उ.षा. (3)	
10 फर.	उ.षा. (4)	
13 फर.	श्रव. (1)	9/38
15 फर.	श्रव. (2)	
17 फर.	श्रव. (3)	
19 फर.	श्रव. (4)	
21 फर.	धनि. (1)	
24 फर.	धनि. (2)	
26 फर.	धनि. 3 कुंभ	5/46
28 फर.	धनि. (4)	5/30
1 मार्च	शत. (1)	28/16
3 मार्च	शत. (2)	
5 मार्च	शत. (3)	
7 मार्च	शत. (4)	
9 मार्च	पू.भा. (1)	14/44
11 मार्च	पू.भा. (2)	
12 मार्च	पू.भा. (3)	
14 मार्च	पूभा 4 मीन	20/39
16 मार्च	उभा. (1)	13/26
18 मार्च	उ.भा. (2)	
19 मार्च	उ.भा. (3)	

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में धनि. (1) में)

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
22 मार्च	धनि. (1)	25/41
9 अप्रै.	धनि. (2)	20/11
1 मई	धनि. 3 कुम्भ	18/44
15 जून	वक्री	13/19
30 जुला.	व. धनि (2)	19/52
25 अग.	व. धनि. (1)	20/41
3 अक्टू.	व. श्रव. (4)	11/10
13 अक्टू.	मार्गी	10/02
23 अक्टू.	धनि. (1)	8/08
29 अक्टू.	धनि. (2)	12/32
19 दिसं.	धनि. 3 कुंभे	24/15
(सन 2010 ई.)		
5 जन.	धनि. (4)	23/26
21 जन.	शत. (1)	7/16
4 फर.	शत. (2)	18/01
18 फर.	शत. (3)	17/45
4 मार्च	शत. (4)	13/14
18 मार्च	पू.भा. (1)	10/11

शुक्र नक्षत्र चरण प्रवेश

(संवतारम्भ में वक्री उभा (4) में)

27 मार्च	व. उभा (3)	22/27
2 अप्रै.	व. उभा. (2)	10/01
9 अप्रै.	व. उभा. (1)	14/08
17 अप्रै.	मार्गी	24/55
26 अप्रै.	उ.भा. (2)	21/20
4 मई	उभा. (3)	
10 मई	उभा. (4)	
14 मई	रेव. (1)	28/21
19 मई	रेव. (2)	
23 मई	रेव. (3)	
27 मई	रेव. (4)	
31 मई	अश्वि (1) मेष	5/01
3 जून	अश्वि. (2)	
7 जून	अश्वि. (3)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
10 जून	अश्वि (4)	
13 जून	भर. (1)	25/01
17 जून	भर. (2)	
20 जून	भर. (3)	
23 जून	भर. (4)	
26 जून	कृति. (1)	21/42
29 जून	कृति (2) वृष	24/36
2 जुला.	कृति. (3)	
5 जुला.	कृति. (4)	
9 जुला.	रोहि. (1)	5/21
12 जुला.	रोहि. (2)	5/48
15 जुला.	रोहि. (3)	5/43
18 जुला.	रोहि. (4)	5/12
20 जुला.	मृग. (1)	28/12
23 जुला.	मृग. (2)	
26 जुला.	मृग 3 मिथु.	25/07
29 जुला.	मृग. (4)	
1 अग.	आर्द्रा (1)	20/44
4 अग.	आर्द्रा (2)	
7 अग.	आर्द्रा (3)	
10 अग.	आर्द्रा (4)	
13 अग.	पुर्न (1)	8/20
15 अग.	पुर्न (2)	
18 अग.	पुर्न (3)	
21 अग.	पुर्न 4 कर्के	20/14
24 अग.	पुष्य (1)	15/45
27 अग.	पुष्य (2)	
30 अग.	पुष्य (3)	6/09
1 सितं.	पुष्य (4)	
4 सितं.	आश्ले. (1)	19/42
7 सितं.	आश्ले. (2)	
10 सितं.	आश्ले. (3)	
12 सितं.	आश्ले. (4)	
15 सितं.	मघा 1 सिंह	20/38
18 सितं.	मघा (2)	

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
21 सितं.	मघा (3)	
23 सितं.	मघा (4)	
26 सितं.	पू.फा. (1)	18/56
29 सितं.	पू.फा. (2)	
2 अक्टू.	पू.फा. (3)	5/19
4 अक्टू.	पू.फा. (4)	
7 अक्टू.	उ.फा. (1)	15/10
10 अक्टू.	उफा 2 कन्या	7/56
12 अक्टू.	उ.फा. (3)	
15 अक्टू.	उ.फा. (4)	
18 अक्टू.	हस्त (1)	9/33
20 अक्टू.	हस्त (2)	
23 अक्टू.	हस्त (3)	
26 अक्टू.	हस्त (4)	
28 अक्टू.	चित्रा (1)	26/36
31 अक्टू.	चित्रा (2)	
3 नवं.	चित्रा 3 तुले	10/44
5 नवं.	चित्रा (4)	
8 नवं.	स्वा. (1)	18/38
11 नवं.	स्वा. (2)	
13 नवं.	स्वा. (3)	
16 नवं.	स्वा. (4)	
19 नवं.	विशा. (1)	9/50
21 नवं.	विशा. (2)	
24 नवं.	विशा. (3)	
27 नवं.	विशा. 4 वृशि.	8/57
29 नवं.	अनु. (1)	24/36
2 दिसं.	अनु. (2)	
5 दिसं.	अनु. (3)	
7 दिसं.	अनु. (4)	
10 दिसं.	ज्ये. (1)	15/06
13 दिसं.	ज्ये. (2)	
15 दिसं.	ज्ये. (3)	
18 दिसं.	ज्ये. (4)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2009-10 ई.	नक्षत्र	चरण
21 दिसं.	मूल (1) धनु	5/23
23 दिसं.	मूल (2)	
26 दिसं.	मूल (3)	
28 दिसं.	मूल (4)	
31 दिसं.	पूषा. (1)	19/38
(सन 2010 ई.)		
3 जन.	पूषा. (2)	
5 जन.	पूषा. (3)	
8 जन.	पूषा. (4)	
11 जन.	उषा. (1)	10/00
13 जन.	उषा. 2 मकर	25/37
16 जन.	उ.षा. (3)	
19 जन.	उ.षा. (4)	
21 जन.	श्रव. (1)	24/28
24 जन.	श्रव. (2)	
27 जन.	श्रव. (3)	
29 जन.	श्रव. (4)	
1 फर.	धनि. (1)	15/15
4 फर.	धनि. (2)	
6 फर.	धनि. 3 कुंभ	22/49
9 फर.	धनि. (4)	
12 फर.	शत. (1)	6/28
14 फर.	शत. (2)	
17 फर.	शत. (3)	
20 फर.	शत. (4)	
22 फर.	पू.भा. (1)	22/12
25 फर.	पू.भा. (2)	
28 फर.	पू.भा. (3)	
2 मार्च	पूभा 4 मीन	22/30
5 मार्च	उ.भा. (1)	14/43
8 मार्च	उ.भा. (2)	
10 मार्च	उ.भा. (3)	
13 मार्च	उ.भा. (4)	
16 मार्च	रेव. (1)	8/03

शनि नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से वक्री सिंह में)

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
22 मार्च	व. पूफा. (3)	13/14
17 मई	मार्गी	7/36
10 जुला.	पू.फा. (4)	19/40
12 अग.	उ.फा. (1)	28/41
9 सितं.	उफा. 2 कन्या	23/58
6 अक्तू.	उ.फा. (3)	21/33
5 नवं.	उ.फा. (4)	5/22
17 दिसं.	हस्त (1)	22/40
(सन 2010 ई.)		
13 जन.	वक्री	21/27
9 फर.	व. उफा. (4)	25/30

राहु नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में श्रव. (1) में)

10 मार्च	श्रव. (1)	22/07
12 मई	उ.षा. (4)	18/40
14 जुला.	उ.षा. (3)	16/59
15 सितं.	उ.षा. (2)	14/51
17 नवं.	उषा. (1) धनु	12/20
(सन 2010 ई.)		
19 जन.	पू.षा. (4)	10/22
23 मार्च	पू.षा. (3)	7/50

केतु नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में पुष्य 3 में)

10 मार्च	पुष्य (3)	22/07
12 मई	पुष्य (2)	18/29
14 जुला.	पुष्य (1)	16/59
15 सितं.	पुर्न (4)	14/51
17 नवं.	पुर्न 3 मिथुन	12/20
(सन 2010 ई.)		
19 जन.	पुर्न (2)	10/00
23 मार्च	पुर्न (1)	7/50

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में पूभा 3 में)

2009-10 ई.	नक्षत्र	चरण
6 अप्रै.	पूभा 4 मीन	23/41
1 जुला.	वक्री	13/06
3 अक्तू.	पूभा 3 कुंभ	22/52
1 दिसं.	मार्गी	25/56
(सन 2010 ई.)		
27 जन.	पूभा 4 मीन	13/02
30 मार्च	उभा. (1)	23/59

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में धनि. 3 में)

29 मई	वक्री	10/00
1 अक्तू.	व धनि. 2 मक.	28/50
4 नवं.	मार्गी	23/42
7 दिसं.	धनि. 3 कुंभ	26/11
(सन 2010 ई.)		
19 मार्च	धनि. 4	12/13

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में मूल 3 में)

4 अप्रै.	वक्री	23/09
6 सितं.	व. मूल (2)	5/39
11 सितं.	मार्गी	22/28
15 सितं.	मूल (3)	21/43
(सन 2010 ई.)		
19 जन.	मूल (4)	25/10

कुछ नवीन प्रकाशन

ग्रहों की अंशात्मक युतियां
(सन् 2009-10 ई.)

20 जनवरी	सूर्य-बुध (मकर)
24 जनवरी	सूर्य-गुरु (मकर)
29 जनवरी	सूर्य-राहु (मकर)
11 फरवरी	गुरु-राहु (मकर)
15 फरवरी	मंगल-राहु (मकर)
17 फरवरी	मंगल-गुरु (मकर)
25 मार्च	मंगल-शुक्र (कुम्भ)
31 मार्च	सूर्य-बुध (मीन)
22 अप्रैल	मंगल-शुक्र (मीन)
18 मई	सूर्य-बुध (वृष)
14 जुलाई	सूर्य-बुध (मिथुन)
17 सितंबर	सूर्य-शनि (कन्या)
20 सितंबर	सूर्य-बुध (कन्या)
22 सितंबर	बुध-शनि (कन्या)
8 अक्तू.	बुध-शनि (कन्या)
13 अक्तू.	शुक्र-शनि (कन्या)
5 नवंबर	सूर्य-बुध (तुला)
(सन् 2010 ई.)	
12 जनवरी	सूर्य-शुक्र (धनु)
2 फरवरी	बुध-राहु (धनु)
17 फरवरी	गुरु-शुक्र (कुम्भ)
28 फरवरी	सूर्य-गुरु (कुम्भ)
8 मार्च	बुध-गुरु (कुम्भ)
14 मार्च	सूर्य-बुध (मीन)

चतुर्ग्रही योग—सन् 2009-10

28 जन. से 12 फर.	सू + मं. + गु. + रा. (मकर)
13 फर. से 4 मार्च	मं. + बु. + गु. + रा. (मकर)
10 अक्तू. से 17 अक्तू.	सू + बु. + शु. + श. (कन्या)
20 दिसं. से 13 जन.	सू. + बु. + शु. + रा. (धनु)
25 फर. से 2 मार्च	सू. + बु. + गु. + शु. (कुंभ)

ग्रहों के द्विग्रही योग
(सन् 2009-10 ई.)

गुरु-राहु	1 जन. से 30 अप्रै. (मकर)
सूर्य-राहु	14 जन. से 11 फर. (मकर)
मंग.-राहु	28 जन. से 6 मार्च (मकर)
सूर्य-मंग.	28 जन. से 11 फर. (मकर)
बुध-राहु	8 फर. से 4 मार्च (मकर)
मंग.-बुध	8 फर. से 4 मार्च (मकर)
सूर्य-बुध	22 मार्च से 6 अप्रै. (मीन)
सूर्य-शुक्र	15 मार्च से 13 अप्रै. (मीन)
मंग.-शुक्र	14 अप्रै. से 23 मई (मीन)
मंग.-बुध	25 मई से 5 जून (मेष)
मंग.-शुक्र	31 मई से 29 जून (मेष)
मंग.-शुक्र	4 जुला. से 26 जुला. (वृष)
गुरु-राहु	30 जुला. से 16 नवं. (मकर)
मंग.-केतु	5 अक्तू. से 16 नवं. (कर्क)
सूर्य-शनि	16 सितं. से 16 अक्तू. (कन्या)
शुक्र-शनि	10 अक्तू. से 3 नवं. (कन्या)
सूर्य-शुक्र	27 नवं. से 15 दिसं. (वृश्चिक)
सूर्य-राहु	15 दिसं. से 14 जन. (धनु)
सूर्य-बुध	15 दिसं. से 14 जन. (धनु)
सूर्य-शुक्र	14 जन. से 6 फर. (मकर)
सूर्य-गुरु	12 फर. से 14 मार्च (कुम्भ)
गुरु-शुक्र	6 फर. से 1 मार्च (कुम्भ)

✪ समसप्तक योग (2009-10 ई.) ✪

- सूर्य-शनि ➽ 13 फर. से 13 मार्च
- मंग.-शनि ➽ 8 मार्च से 13 अप्रै.
- गुरु-शनि ➽ 1 मई से 30 जुला.
- मंग.-गुरु ➽ 5 अक्तू. से 19 दिसं.
- सूर्य-मंग. ➽ 14 जन. से 12 फर. (2010)
- सूर्य-शनि ➽ 14 मार्च से 13 अप्रै.
- शुक्र-शनि ➽ 2 मार्च से संवतान्त तक

✪ षडाष्टक योग ✪

मंग.-शनि ➽ 28 जन. से 6 मार्च
मंग.-शनि ➽ 14 अप्रै. से 23 मई
मंग.-शनि (४-१०)-3 जुला. से 15 अग.

≈सम्वत्सर का फल और माहात्म्य≈

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को नवीन सम्वत्सर का प्रारम्भ होता है। इस दिन धर्मपरायण लोगों द्वारा श्रीगणेश जी के मंगल चिन्ह से अंकित ध्वज को अपने-अपने घरों पर लगाना चाहिए। तोरणादि से अपने घरों को सजावें। उस दिन मंगल स्नान कर अपने इष्टदेवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। पुरुष, स्त्रियाँ, शिशु आदि वस्त्राभूषणादि परिधान धारण कर उत्सव मनावें तथा ज्योतिषी जी अथवा विद्वान ब्राह्मण का सत्कार करके उनसे पंचांगदिवाकर में से सम्वत् का नाम, सम्वत् का वास, सवारी, राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना चाहिए। चैत्र प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान् विष्णु, शिव एवं श्रीदुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करने का विधान है। नए संवत्सर का फल श्रवण करें। पंचागस्थ श्री गणेश जी और ब्राह्मण, ज्योतिषी आदि की पूजा कर उन्हें मिष्टान्न युक्त भोजन करवाकर उन्हें नववर्ष का पंचांग, वस्त्र, फल मिठाई आदि दक्षिण सहित यथाशक्ति देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करके सारा दिन भजन-कीर्तन, कथा श्रवणादि सत्कर्मों एवं मंगल कार्यों में व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष सुखपूर्वक एवं आनन्दमय बीतता है।

इसी दिन प्रातः कालीन कटु नीम की कोमल पत्तियाँ और पुष्प लेकर, उनमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, अजवायन, जीरा और शक्करया चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनावें कुछ इमली भी मिलाकर भक्षण करने से वर्ष पर्यन्त अनेक रक्त विकारादि गुप्त रोगों का भय नहीं रहता है।

≈सृष्टिक्रम और चतुर्युगों का वर्णन≈

श्रीमद्भागवत के अनुसार सृष्टि (समस्त जगत) की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण ब्रह्मा ही हैं। एक सृष्टि की समयावधि को कल्प कहते हैं। ब्रह्मा के एक दिन के बराबर एक कल्प तथा ३६० कल्पों में ब्रह्मा का एक वर्ष होता है। ऐसे ही ३६००० कल्पों में ब्रह्मा की आयु का प्रमाण होता है। भारतीय परम्परानुसार सतयुग आदि चार युगों का १महायुग और एक हज़ार महायुगों का एक कल्प होता है। तथा ७१ महायुगों का एक मन्वन्तर कहलाता है। ब्रह्मा के एक दिन में १४ मन्वंतर होते हैं। उन में से १ स्वयांभुव, २ स्वरोचिष, ३ उत्तम, ४ तामसे, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ये छः मन्वंतर बीत चुके हैं। अब सातवां वैवस्वत नामक मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ महायुग गत होकर २८वें महायुग के तीन युग सतयुग, त्रेता, द्वापर व्यतीत हो गए हैं और अब यह कलियुग प्रारम्भ हो चुका है।

ज्यतिष सिद्धान्तानुसार ४३, २०,०००००० सौर वर्षों का १ कल्प ४३, २०,००० सौर वर्षों का एक महायुग होता है। तथा प्रत्येक महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग-इन चारों युगों का अनुक्रम चलता है। अधिक विस्तृत जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से 'ज्योतिष तत्त्व' पुस्तक मंगवाकर अध्ययन करें।

≈चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन≈

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को हुई। इसकी आयु १७२८००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म्म, वाराह, नृसिंह—ये चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, वाराह जी ने जलोद्वार किया, कूर्म जी ने पृथ्वी की रक्षा की और उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे, शाप और वरदान देने में समर्थ थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा थी, फसलें अच्छी होती थी। स्त्रियां पद्मिनी थीं, गौवें दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायु : १००००० वर्ष, बाल्यावस्था १०००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०००० चन्द्र ग्रहण २००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया, सोमवार को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी। इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, श्री रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप कर राजा बली को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायु : १०,००० वर्ष, बाल्यावस्था १००० थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किचिन्नयून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रणी पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का था। सूर्य ग्रहण २०००० और चन्द्र ग्रहण ३०००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ७६,४००० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १००० वर्ष थी, बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्य ग्रहण २४०००, चन्द्र ग्रहण ३६००० थे। स्त्रियां शांखिनी एवं शीलयुक्ता होती थी।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३, रविवार आधी रात को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४३२००० वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार है, उनका काम धर्मका उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष, बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान ३११ हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे हैं, गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख, तप, यज्ञादि धर्म कर्म से विमुख, शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६००० होंगे। सं. २०६५ में कलियुग के ५१०९ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४२६८९१ वर्ष रहे हैं। कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारिणी स्त्रियां अपने को सति कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ ब्राह्मण की हत्या से भी भय नहीं करेंगे। सन्तान का माता-पिता के साथ स्वार्थ के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। श्रीगंगा मुख्य तीर्थ होगी। शासन प्रबन्ध में धर्म का स्थान नगण्य होगा। स्त्रियाँ शांखिनी होंगी।

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि. २०६६

≈श्री दुर्गा अष्टमी (3 अप्रैल, शुक्रवार, सन् 2009)≈

चैत्र शुक्लाष्टमी, 3 अप्रैल शुक्रवार को सूर्योदयकालिक, प्रात: 7/02 (घं.मिं.) तक व्याप्त है, तदुपरान्त नवमी का स्पर्शारम्भ होगा। अतएव शास्त्रवाक्यानुसार 3 अप्रैल, शुक्रवार को ही श्रीदुर्गाष्टमी एवं भवान्युत्पत्ति पर्व होगा—

चैत्र शुक्लाष्टमी भवान्युत्तपत्ति॥ तत्र नवमी युता ग्राह्या॥ (धर्मसिंधु)

≈श्री रामनवमी (3 अप्रैल, शुक्रवार, 2009 ई.)≈

प्रस्तुत वर्ष, नवमी तिथि का क्षय हुआ है। तथापि शास्त्रवाक्यानुसार नवमी मध्याह्न युता एवं पुनर्वसु नक्षत्र युक्त ही प्रशस्त मानी जाती है—

अष्टमी नवमी युक्ता, नवमी च अष्टमी युतेति॥
अन्येऽपि—चैत्रशुक्ला तु नवमी पुनर्वसु युता यदि।
सैव मध्याण्हयोगेन महापुण्यफल प्रदा॥ (वामन पु.)

उपरोक्त शास्त्रवचनों अनुसार प्रस्तुत वर्ष 3 अप्रैल, शुक्रवार को ही प्रशस्त होगी।

≈श्रावण पूर्णिमा; रक्षबन्धन (5 अग., बुधवार)≈

रक्षाबन्धन भाई-बहन के पवित्र स्नेह का प्रतीक यह पर्व, मध्याह्न एवं अपराह्न व्यापिनी श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह पर्व भद्रा रहित काल में मनाने की शास्त्राज्ञा है—

"भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा"

प्रस्तुत वर्ष पूर्णिमा तिथि की वृद्धि होने से 5 अग. को पूर्णिमा पूरा दिन तथा 6 अगस्त को मात्र १ घड़ी, २८ पल तदनुसार प्रात: 6 बजकर 25 मिनट तक है। जबकि मध्याह्न व्यापिनी पूर्व दिन, बुधवार को रहेगी। सायं 5 बजकर 12 मिनट तक भद्रा व्याप्त है।

अतएव सर्वाधिक उत्तम काल तो शाम के 5/12 के बाद ही होगा, परन्तु आजकल की व्यवस्थाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रात: उत्तराषाढ़ा नक्षत्र काल (प्रात: 10.45 भौमवेध, राहुयुति) को छोड़कर श्रवण नक्षत्र में **कन्या लग्न** काल (10/45 बाद) तथा अभिजित मुहूर्त (लगभग दुपै. 11-30 से 12/30 तक) में रक्षाबन्धन का पवित्र त्यौहार मना सकते हैं। वैसे इस दिन चन्द्रमा मकर राशि में होने से भद्रा अधोमुखी एवं पाताल में होने से शुभ एवं ग्राह्य मानी जाती है।

फिर भी, यदि विचार हो तो, कुशा निर्मित भद्रा की मूर्ति, चन्दन का तिलक लगाकर पुष्प सहित निम्न मंत्र पढ़कर चलते पानी में बहा देवें तथा ब्राह्मण को यथाशक्ति, वस्त्र, फल, मिष्ठान्न, दक्षिणा सहित दान करके शुभ कार्य करें—

मन्त्र— **छाया सूर्य सुते देवि विष्टिरिष्टार्थदायिनी।**
पूजितासि यथाशक्त्या भद्रे भद्रप्रदा भव॥

इसके अतिरिक्त भद्रा के निम्न द्वादश नामों का पाठ करने से भी ग्रह अनुकूल फल प्रदान करते हैं तथा कार्यों में विघ्न नहीं होते।

भद्रा के बारह नाम—(1) धान्या, (2) दधिमुखी, (3) भद्रा, (4) महामारी, (5) खराननना, (6) कालरात्रि, (7) महारूद्रा, (8) विष्टि, (9) कुलपुत्रिका, (10) भैरवी, (11) महाकाली, (12) असुरक्षयकरी॥

≈श्री कृष्ण जन्माष्टमी (13-14 अगस्त, 2009 ई.)≈

गत वर्ष की भान्ति आगामी वर्ष भी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतादि का पर्व **स्मार्त्त और वैष्णव** भेद से दो दिन पड़ रहा है। **स्मार्त्त लोग** (सामान्य गृहस्थी) अपनी कुल परम्परानुसार सप्तमी युक्ता मध्याह्न 12/57 के बाद **अष्टमी तिथ्यारम्भ** अर्द्धरात्रि युक्ता कृतिका नक्षत्र, परन्तु मेष राशिस्थ योग में व्रत का आरम्भ, जप, पाठादि करके आगामी दिवस (14 अग., शुक्रवार) को व्रत का पारण एवं जन्मोत्सव मनाएँगे। शास्त्रानुसार भी—

कृष्ण जन्माष्टमी निशीथ व्यापिनी ग्राह्या॥ पूर्व दिन एवं निशीथ योगे पूर्वा॥

वैष्णव सम्प्रदाय मतावलम्बी **14 अगस्त, शुक्रवार** के दिन ही (उदय कालिक अष्टमी में) व्रत का संकल्प, व्रत, जपानुष्ठान करके, मध्यरात्रि कालीन **रोहिणी नक्षत्र**, वृषस्थ चन्द्रमा में व्रत, जपानुष्ठान एवं जन्मोत्सव मनाया जाएगा। चूंकि वैष्णव सम्प्रदाय से जुड़े लोग उदयकालिक अष्टमी, जो कि नवमी युता भी हो, उसी को प्राथमिकता देते हैं—

वैष्णवास्तु अर्धरात्रि व्यापिनी अपि रोहिणी
युताबपि सप्तमी विद्धां परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या॥ (तिथि निर्णय)

ध्यान रहे, केन्द्रिय सरकार अर्ध रात्रि कालिक अष्टमी की उपेक्षा करके प्राय: उदयकालिक अष्टमी (नवमीयुता) को ही सरकारी अवकाश घोषित करते है तथा मथुरा आदि के मन्दिरों में प्राय: उदय-कालिक वाली श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पुण्य पर्व मनाया जाता है। हमारे मतानुसार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन एवं पुण्य अवसर खोना नहीं चाहिए। एक व्रतानुष्ठान करके दूसरे दिन उदयकालिक अष्टमी में हिण्डोले, उत्सवादि मनाए जाने चाहिएँ।

≈भ्रातृदूज (भाई दूज) (19 अक्तू., सोमवार)≈

कार्तिक शुक्ला की द्वितीया तिथि (पूर्व विद्धा) एवं मध्याह्न व्यापिनी तिथि ग्रहण करनी चाहिए—

"यमद्वितीया मध्याह्न व्यापिनी पूर्व विद्धा चेति॥" **(निर्णय सिंधु)**

'निर्णयामृत' अनुसार यह प्रतिपदा युक्ता और अपराह्न व्यापिनी लेनी चाहिए—

"यम द्वितीया तु प्रतिपद् युता ग्राह्या।
कार्तिक शुक्ल द्वितीया यमद्वितीया॥ सा अपराह्न व्यापिनी ग्राह्या॥" **(व्रतराज)**

प्रस्तुत वर्ष 19 अक्तूबर, सोमवार को कार्तिक शुक्ला द्वितीया प्रतिपदा युक्त और अपराह्न व्यापिनी होने से इसी दिन भ्रातृ-दूज (भाई दूज) का पावन पर्व होगा। इस दिन प्रात: 9/58 तक प्रतिपदा तदुपरान्त मध्याह्न एवं अपराह्न काल तक द्वितीया रहेगी।

20 अक्तू., मंगलवार को द्वितीया तिथि तो विद्यमान है, परन्तु वह प्रात: 9/28 तक ही वर्तमान है। इस दिन मध्याह्न एवं अपराह्न काल में द्वितीया तिथि का अभाव रहेगा।

शास्त्र नियमानुसार **19 अक्तू. सोमवार को ही भ्रातृदूज प्रशस्त होगी।**

करवाचौथ के दिन मुख्य नगरों का चन्द्र-उदय

(7 अक्तूबर, 2009 ई. बुधवार)

पंचांगदिवाकर के पाठक सम्पूर्ण भारत में है। ग्रह-स्पष्ट तथा पक्ष वाले पृष्ठों पर केवल जालन्धर के चन्द्रोदयास्त दिए रहते हैं। 'पंचांगदिवाकर' के पाठकों लाभार्थ भारत के प्रमुख नगरों के करवा-चौथ (7 अक्तू.) वाले दिन का चन्द्रोदय दे रहे हैं।

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	नगर	चंद्रोदय घं. मिं.
अमृतसर	19-56	जीन्द (हरि.)	19-58	बिलासपुर (हि.प्र.)	19-50
अम्बाला	19-52	जोधपुर	20-20	भठिण्डा	20-00
अर्की (हि.प्र.)	19-49	जगाधरी (हरि.)	19-51	भुवनेश्वर	19-43
अहमदाबाद (गु.)	20-28	टोहाना (हरि.)	19-56	भिवानी (हरि.)	19-59
अगरतला	19-11	डोडा (का.)	19-49	मण्डी (हि.प्र.)	19-46
आगरा	19-56	डलहौज़ी (हि.प्र.)	19-48	मलेरकोटला	19-54
अबोहर (पं.)	20-03	दार्जिलिंग (बं.)	19-16	मुम्बई	20-34
इलाहाबाद	19-46	दिल्ली	19-55	मुगलसराय (उ.प्र.)	19-47
इटावा (उ.प्र.)	19-53	देहरादून	19-48	मेरठ	19-52
इन्दौर (म.प्र.)	20-17	दुर्ग (छत्ती.)	20-00	मोगा (पं.)	19-56
अखनूर (का.)	19-53	दीनानगर (पं.)	19-52	मुक्तसर	20-02
उज्जैन	20-17	धर्मशाला (हि.प्र.)	19-48	मोहाली	19-49
उधमपुर (का.)	19-51	धूरी (पं.)	19-57	रामपुरबुशैहर	19-45
ऊना (हि.प्र.)	19-50	नागपुर (महा.)	20-08	रायपुर (छत्ती.)	19-58
कठुआ (का.)	19-52	नाभा (पं.)	19-55	रिवाड़ी (हरि.)	19-59
कपूरथला	19-55	नाहन (हि.प्र.)	19-49	रोपड़ (पं.)	19-51
करतारपुर	19-55	नारनौल (हरि.)	20-01	रोहतक	19-56
कलकत्ता	19-22	नालागढ़ (हि.प्र.)	19-52	लखनऊ	19-45
कांगड़ा	19-49	नैनीताल (उत्तरा.)	19-45	लुधियाना	19-53
कालका (हरि.)	19-49	नवांशहर (पं.)	19-52	लाडवा (हरि.)	19-52
किश्तवाड़ का.)	19-48	नंगल (पं.)	19-51	वाराणसी	19-43
कुराली	19-51	पठानकोट	19-51	शिमला	19-48
कुरुक्षेत्र (हरि.)	19-53	पटियाला	19-54	श्रीनगर	19-49
कुल्लू (हि.प्र.)	19-45	पंचकूला (हरि.)	19-49	संगरूर	19-56
कैथल (हरि.)	19-54	पानीपत	19-55	सहारनपुर	19-50
कोटखाई (हि.प्र.)	19-47	पिहोवा (हरि.)	19-54	सोलन (हि.प्र.)	19-48
खन्ना (पं.)	19-52	पटना	19-31	सुनाम (पं.)	19-57
गाज़ियाबाद	19-53	पालमपुर (हि.प्र.)	19-48	सोनीपत	19-55
गुड़गांव (हरि.)	19-57	पुँछ (का.)	19-51	सरकाघाट (हि.प्र.)	19-49
गुरदासपुर	19-52	फगवाड़ा	19-54	सुन्दरनगर	19-47
गुवाहाटी	19-05	फरीदकोट	19-58	हमीरपुर (हि.प्र.)	19-49
चण्डीगढ़	19-51	फिरोज़पुर	19-58	हरिद्वार	19-47
चम्बा (हि.प्र.)	19-47	फाज़िल्का	20-04	हैदराबाद	20-25
चमौली (उत्तरां.)	19-43	फरीदाबाद	19-56	होशियारपुर	19-51
चेन्नई	20-15	बटाला	19-53	हिसार	20-00
जम्मू	19-51	बरेली (उ.प्र.)	19-47	हाथरस	19-54
जयपुर	20-06	बैंगलोर	20-40	हनुमानगढ़	20-04
				हांसी (हरि.)	19-59

दीपावली (श्रीमहालक्ष्मी पूजन)

(17 अक्तूबर, शनिवार)

श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपदानादि के लिए कार्तिक अमावस में प्रदोष काल एवं अर्धरात्रि व्यापिनी, हो तो विशेषतया प्रशस्त माना गया है—

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।
तस्यां सम्पूज्येत् देवी भोगमोक्ष प्रदायिनीम्॥

प्रस्तुत वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस का संयोग दो दिन हो रहा है। **17 अक्तू. शनिवार** को चतुर्दशी दुपैहर 12 घं. 37 मिनट तक है, तत्पश्चात् अमावस अपरान्ह्न एवं सायं एवं प्रदोष व्यापिनी होगी। अर्द्धरात्रि व्यापिनी अमावस भी इसी दिन होने से **दीपावली पर्व 17 अक्तू., शनिवार** को होगी। 18 अक्तू. रविवार को अमा.प्रातः 11 घं. 03 मिं. तक रहेगी। उसके पश्चात् प्रतिपदा (रात्रि पर्यन्त) होने से **अन्नकूट व गोवर्धन** पूजा का पर्व 18 अक्तू. को प्रशस्त होगा।

17 अक्तू. शनिवार को ही **कार्तिक संक्रान्ति** होने से इस दिन दीवाली को स्नान, दान, जपानुष्ठान, मन्त्र पाठ, श्रीलक्ष्मी/विष्णु पूजन का माहात्म्य और भी बढ़ जाएगा।

सामान्यतः शास्त्रों में **शनिवारी अमावस** एवं **शनिवारी संक्रान्ति** का फल अच्छा नहीं लिखा गया है। इसके फलस्वरूप समाज में अनाज, धान्य आदि आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी हो, कहीं दुर्भिक्ष का सामना हो, कुछ स्थानों पर लोगों को कष्टकारी एवं भयंकर परिस्थितियों का सामना हो। प्रजा में रोग, कष्टों, दुःखों एवं असन्तोष की वृद्धि हो—

दुर्भिक्षं रौखं घोरं महादुखं महद् भयम्
पराङ्गमुखाः पितुः पुत्रा व्यसनं शनिवासरे।
सौरेश्च वारे रवि संक्रमश्चेद् दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्।
पृथ्वी सरोगानृपतेः प्रजासुभवेत् महायुद्धभयंतदानीम्।

दीपावली के दिन प्रदोषकाल से लेकर मध्यरात्रि के बीच श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपमाला, मन्त्र-जप-अनुष्ठानादि करने का विशेष माहात्मय होता है। प्रदोषकाल में श्रीगणेश पूजन, कलश षोडशमातृका, ग्रह-पूजन एवं भगवान श्री विष्णु, भगवती लक्ष्मी सहित षोडशोपचार पूजन, कुबेरपूजन चतुर्मुखी दीप प्रज्जवलित करना, जप-ध्यानादि करने का विशेष माहात्म्य रहता है। दीपावली को रात्रि-जागरण करते हुए श्रीविष्णुसहस्त्रनाम, श्री लक्ष्मीसूक्त, श्रीसूक्त, पुरूषसूक्त आदि एवं श्री रामरक्षास्तोत्र का पाठ करना प्रशस्त होता है।

प्रस्तुत वर्ष **दीपावली का पर्व 17 अक्तूबर, शनिवार** की अमावस एवं हस्त नक्षत्र, परन्तु प्रदोष काल के बाद रात्रि को चित्रा नक्षत्र कालीन, वैधृति योग में होगा। शनिवार की दीवाली मन्त्र-जाप, सिद्धि एवं तांत्रिक प्रयोगों के लिए विशेष रूप से ग्राह्य मानी जाती है। दीपावली में हस्त, चित्रा, अमावस तिथि, प्रदोष काल, निशीथकाल एवं महानिशीथकाल विशेष महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

● **प्रदोष काल**—17 अक्तूबर को जालन्धर में सूर्यास्त से लेकर 2 घण्टे 33 मिं. पर्यन्त प्रदोष काल रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान के अनुसार इसका काल निर्धारण करें—

देखें पृष्ठ 230) जालन्धर में प्रदोषकाल सायं 5 घं. 51 मिं. (17/51) से रात्रि 8 बजकर 24 मिनट (20/24) तक रहेगा।

सायं 7 घं. 21 मिं. तक मेष लग्न, तदुपरान्त 7 घं. 22 मिं. से रात्रि 9 घं. 16 मिं. तक वृष लग्न विशेषतः प्रशस्त रहेगा। इसी समय 19 घं. 27 मिं. से 21 घं. 01 मिं. तक रात्रि की उद्वेग की चौघड़ियां रहेंगी।

प्रदोष काल में, वृष लग्न, हस्त नक्षत्र, तुला का सूर्य तथा लाभ की चौघड़ियां रहेंगी।

अतएवं 19 घं. 22 मिं. से 19 घं. 27 मिं. के मध्य मन्दिर में दीप प्रज्वलित करना, रात्रि 21 घं.02 मिं. से 21घं.16मिं. के मध्य श्रीलक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करें। इस योग में दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी पूजन व गणेश पूजन, कुबेर पूजन, बही-खाता पूजन, धर्म एवं गृह स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा अपने आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बांटना शुभ होगा।

17 अक्तू. को चौघड़ियां मुहूर्त्त

दिन की चौघड़ियां (घं. मिं.)		रात्रि की चौघड़ियां (घं. मिं.)	
काल	6:35 से 7:59 तक	लाभ	17:51 से 19:27 तक
शुभ	8:00 से 9:23 तक	उद्वेग	19:28 से 21:01 तक
रोग	9:24 से 10:47 तक	शुभ	21:02 से 22:38 तक
उद्वेग	10:48 से 12:12 तक	अमृत	22:39 से 24:15 तक
चर	12:13 से 13:37 तक	चर	24:16 से 25:51 तक
लाभ	13:38 से 15:01 तक	रोग	25:52 से 27:25 तक
अमृत	15:02 से 16:26 तक	काल	27:26 से 29:01 तक
काल	16:27 से 17:50 तक	लाभ	29:02 से 30:36 तक

नोट—(1) चर, लाभ, अमृत और शुभ ग्राह्य चौघड़ियां हैं।

(2) 25 बजे का अर्थ अर्द्धरात्रि 1 बजे से है तथा 30 बजे का अर्थ अगले दिन प्रातः 6:00 बजे से है।

अपने स्थानीय नगर में चौघड़ियां मुहूर्त्त जानने के लिए देखें पृष्ठ 231

● **निशीथ काल**—17 अक्तू. शनिवार को जालन्धर में निशीथ काल रात्रि 20 घं. 24 मिं. से 22 घं. 56 मिं. तक रहेगा। इस दौरान 21 घं. 16 मिं. तक वृष लग्न विशेष रूप से प्रशस्त रहेगा।

21 घं. 02 मिं. से 22 घं. 38 मिं. तक शुभ चौघड़ियां, तदुपरान्त 22 घं. 39 मिं. से 24.15 तक अमृत चौघड़ियां रहने से इस समयावधि में पूजन आरम्भ करना शुभ होगा।

इस अवधि में श्रीमहालक्ष्मी पूजन, महाकाली पूजन, लेखनी पूजन, कुबेरादि पूजन, श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त, पुरुषसूक्त तथा अन्य मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिए।

● **महानिशीथकाल**—रात्रि 22 घं. 57 मिं. से अर्द्धरात्रि 1 घं. 30 मिं. तक महानिशीथ काल रहेगा। इस समयावधि में अमृत की चौघड़ियां भी रहेंगी। इस दौरान 23 घं. 30 मिं. से 25/53 तक कर्क लग्न भी प्रशस्त रहेगा। सिंह लग्न महानिशीथ काल व्याप्त न होने से ग्राह्य नहीं होगा। महानिशीथ काल में श्रीमहालक्ष्मी, महाशक्ति काली उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि क्रियाएं, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र अनुष्ठान व यज्ञादि किए जाते हैं।

भारत के मुख्य नगरों में महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त काल दे रहे हैं।

दीपावली पूजा एवं मन्त्र साधना हेतु शुभ मुहूर्त्त—17 अक्तूबर, शनिवार

नगर	वृष लग्न (प्रदोष व्याप्त)	कर्क लग्न (महानिशीथ-काल व्याप्त)	नगर	वृष लग्न (प्रदोष व्याप्त)	कर्क लग्न (महानिशीथ-काल व्याप्त)
अमृतसर	19-23 से 21-28	23-33 से 25-56	नादौन	19-18 से 21-13	23-27 से 25-49
अम्बाला	19-16 से 21-11	23-25 से 25-50	पटियाला	19-18 से 21-14	23-28 से 25-50
अजमेर	19-33 से 21-28	23-43 से 26-05	पठानकोट	19-17 से 21-13	23-27 से 25-51
अबोहर (पं.)	19-26 से 21-21	23-35 से 25-59	पानीपत	19-15 से 21-10	23-24 से 25-47
अलवर (राज.)	19-24 से 21-20	23-34 से 25-54	पुँछ	19-20 से 21-15	23-30 से 25-55
आगरा	19-17 से 21-14	23-28 से 25-47	प्रयाग (उ.प्र.)	19-05 से 21-02	23-16 से 25-35
ऊना (हि.प्र.)	19-18 से 21-13	23-27 से 25-50	पटना	18-52 से 20-50	23-07 से 25-23
उदयपुर (रा.)	19-40 से 21-37	23-50 से 26-08	पालमपुर	19-15 से 21-10	23-24 से 25-48
उज्जैन (म.प्र.)	19-34 से 21-32	23-44 से 26-01	फरीदकोट	19-24 से 21-20	23-34 से 25-56
करनाल	19-16 से 21-15	23-25 से 25-48	फाज़िल्का	19-26 से 21-21	23-36 से 25-59
कोलकाता	18-45 से 20-44	22-55 से 25-13	फिरोज़पुर	19-25 से 21-20	23-35 से 25-57
कपूरथला	19-22 से 21-17	23-30 से 25-53	फगवाड़ा	19-20 से 21-15	23-29 से 25-52
कानपुर	19-10 से 21-07	23-20 से 25-39	फरीदाबाद	19-18 से 21-14	23-28 से 25-50
कांगड़ा	19-16 से 21-11	23-25से 25-49	वाराणसी	19-01 से 21-00	23-14 से 25-30
कुरुक्षेत्र	19-17 से 21-13	23-27 से 25-49	बटाला	19-22 से 21-17	23-31 से 25-55
कुल्लू (हि.प्र.)	19-14 से 21-09	23-21 से 25-47	बिलासपुर(हि.प्र.)	19-16 से 21-11	23-25 से 25-49
कठुआ	19-19 से 21-14	23-28 से 25-52	बरेली (उ.प्र.)	19-10 से 21-06	23-20 से 25-40
खन्ना (पं.)	19-19 से 21-13	23-27 से 25-51	बैंगलोर	19-42 से 21-45	23-57 से 26-06
गुरदासपुर	19-20 से 21-15	23-29 से 25-53	बुलन्दशहर	19-16 से 21-12	23-25 से 25-47
गुड़गाँव	19-20 से 21-15	23-29 से 25-50	बड़ौदा (गु.)	19-57 से 21-46	23-59 से 26-16
गाज़ियाबाद	19-19 से 21-15	23-29 से 25-51	बरनाला (पं.)	19-20 से 21-15	23-28 से 25-52
गंगानगर	19-27 से 21-22	23-36 से 26-00	भटिण्डा	19-24 से 21-19	23-33 से 25-56
ग्वालियर	19-19 से 21-17	23-30 से 25-48	भरतपुर	19-19 से 21-16	23-30 से 25-50
चण्डीगढ़	19-16 से 21-12	23-26 से 25-48	भुवनेश्वर(उड़ी.)	18-58 से 20-59	23-11 से 25-25
चेन्नई (मद्रास)	19-31 से 21-35	23-46 से 25-55	भोपाल	19-27 से 21-26	23-39 से 25-55
चम्बा	19-15 से 21-15	23-25 से 25-48	मण्डी (हि.प्र.)	19-15 से 21-09	23-24 से 25-47
जम्मू	19-20 से 21-15	23-29 से 25-53	मथुरा	19-19 से 21-16	23-29 से 25-49
जयपुर	19-28 से 23-38	23-37 से 25-57	मलेरकोटला	19-20 से 21-25	23-29 से 25-52
जोधपुर	19-40 से 21-37	23-50 से 26-09	मेरठ	19-16 से 21-13	23-24 से 25-48
जैसलमेर	19-47 से 21-44	23-57 से 26-16	मुरादाबाद	19-13 से 21-09	23-23 से 25-45
जीन्द (हरि.)	19-21 से 21-18	23-31 से 25-52	मुम्बई	19-52 से 21-53	24-05 से 26-18
झांसी	19-19 से 21-17	23-30 से 25-47	रोपड़	19-17 से 21-13	23-27 से 25-49
दिल्ली	19-19 से 21-15	23-29 से 25-51	रोहतक	19-20 से 21-17	23-31 से 25-51
देहरादून	19-11 से 21-17	23-21 से 25-44	लुधियाना	19-19 से 21-14	23-29 से 25-51
दुर्ग (छत्तीस)	19-15 से 21-16	23-28 से 25-43	शिमला	19-15 से 21-11	23-24 से 25-47
धर्मशाला	19-16 से 21-11	23-24 से 25-48	सोलन	19-15 से 21-11	23-24 से 25-47
नाहन (हि.प्र.)	19-15 से 21-10	23-24 से 25-48	सोनीपत	19-19 से 21-14	23-28 से 25-51
नंगल	19-18से 21-13	23-27 से 25-49	सहारनपुर	19-15 से 21-10	23-25 से 25-48
नागपुर (महा.)	19-24 से 21-25	23-41 से 25-53	हरिद्वार	19-13 से 21-09	23-23 से 25-44
नाभा (पं.)	19-19 से 21-15	23-29 से 25-51	हमीरपुर(हि.प्र.)	19-16 से 21-11	23-26 से 25-49
नैनीताल	19-08 से 21-05	23-18 से 25-39	हिसार	19-23 से 21-20	23-33 से 25-54

सूर्य, चन्द्र-भौमादि ग्रहों का प्रवेश काल घण्टा/मिनटों में

आजकल भारत और विदेशों में ज्योतिष एवं अन्य क्षेत्रों में सर्वत्र घण्टा/मिनटों का ही प्रचलन हो चुका है। यद्यपि हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ. प्र., म. प्र., जम्मू-कश्मीर, राजस्थान आदि प्रदेशों में आजकल भी **हस्तलिखित जन्मपत्रिकाओं में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्र, योग, करणदि** के पंचांग एवं **भयात् भभोगादि का वर्णन** घड़ी/पलों में ही किया जाता है। इसी कारण **'पंचाँग दिवाकर'** के सुविज्ञ पाठकों की सतत मांग, अनुरोध एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत वर्ष (संवत् २०६६) के **पंचाँग दिवाकर** में (पक्ष वाले पृष्ठों में) **तिथि, नक्षत्र, योगादि** से समाप्तिकाल **घड़ी/पलों के** साथ-साथ **घण्टों मिनटों में भी दिए** जा रहे हैं। तथा **चन्द्र-राशि संचार एवं सूर्य, मंगलादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र के प्रवेश काल,** और **भद्रा-पंचाकादि के प्रारम्भ व समाप्ति** काल, ग्रहों के उदय-अस्त **काल-सभी घण्टा/मिनटों** में भारतीय स्टै. टाईमानुसार दिए जा रहे हैं।

इस सम्बन्ध में सुविज्ञ पाठकों के अमूल्य सुझाव आमन्त्रित हैं।

तिथि, नक्षत्र, योग, करणादि के नामों की तालिका

पंचांग में ग्रह गणित, व्रत-त्यौहार आदि विविध विषयों के अतिरिक्त उसके पाँच अंगों का मुख्यतः उल्लेख रहता है। ''तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। यत्रैतत् पंचाङ्गं स्पष्टं तदुदीरितम्॥'' अर्थात् तिथि, वार, नक्षत्र, योग और कारण—इन पाँचों के स्पष्ट मान की गणना जिसमें हो, उसे पंचांग कहते हैं।

नक्षत्र (२७)	योग (२७)
१. अश्विनी	१. विष्कुम्भ
२. भरणी	२. प्रीति
३. कृतिका	३. आयुष्मान
४. रोहिणी	४. सौभाग्य
५. मृगशिर	५. शोभन
६. आर्द्रा	६. अतिगंड
७. पुनर्वसु	७. सुकर्मा
८. पुष्य	८. धृति
९. आश्लेषा	९. शूल
१०. मघा	१०. गण्ड
११. पूर्वाफाल्गुनी	११. वृद्धि
१२. उत्तराफाल्गुनी	१२. ध्रुव
१३. हस्त	१३. व्याघात
१४. चित्रा	१४. हर्षण
१५. स्वाती	१५. वज्र
१६. विशाखा	१६. सिद्धि
१७. अनुराधा	१७. व्यतीपात
१८. ज्येष्ठा	१८. वरीयान्
१९. मूल	१९. परिघ
२०. पूर्वाषाढ़ा	२०. शिव
२१. उत्तराषाढ़ा	२१. सिद्ध
२२. श्रवण	२२. साध्य
२३. धनिष्टा	२३. शुभ
२४. शतभिषा	२४. शुक्ल
२५. पूर्वाभाद्रपद	२५. ब्रह्म
२६. उत्तराभाद्रपद	२६. ऐन्द्र
२७. रेवती	२७. वैधृति

करण

प्रत्येक तिथि में दो करण बीतते हैं। शुक्ल प्रतिपद से बव नामक करण का प्रारम्भ होता है। इसके पश्चात् द्वितीया के पूर्वार्द्ध से बालव तथा उत्तरार्द्ध से कौलव का प्रारम्भ होता है। चतुर्थी तक विष्टि करण रहकर पंचमी से पुनः बवादि ७ करणों की पुनरावृत्ति होती है।

शुक्ल पक्ष			कृष्ण पक्ष		
तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध	तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध
१.	किंस्तुघ्न	बव	१.	बालव	कौलव
२.	बालव	कौलव	२.	तैतिल	गर
३.	तैतिल	गर	३.	वणिज	विष्टि
४.	वणिज	विष्टि	४.	बव	बालव
५.	बव	बालव	५.	कौलव	तैतिल
६.	कौलव	तैतिल	६.	गर	वणिज
७.	गर	वणिज	७.	विष्टि	बव
८.	विष्टि	बव	८.	बालव	कौलव
९.	बालव	कौलव	९.	तैतिल	गर
१०.	तैतिल	गर	१०.	वणिज	विष्टि
११.	वणिज	विष्टि	११.	बव	बालव
१२.	बव	बालव	१२.	कौलव	तैतिल
१३.	कौलव	तैतिल	१३.	गर	वणिज
१४.	गर	वणिज	१४.	विष्टि	शकुनी
१५.	विष्टि	बव	३०.	चतुष्पद	नाग

वि. संवत् २०६६,	चैत्र शुक्ल पक्ष	शाक: १९३१	तारीखें	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	सन् 2009 ई. (ता. 27 मार्च से 9 अप्रैल तक) सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु	भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	घंटे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	घंटे	मिनट	योग	समाप्ति काल घंटे	मिनट	करण	घटी	पल	चैत्र शक	रबि. मु.	मार्च	चैत्र	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	ग्रह दर्शन–31 मार्च से शुक्र प्रातः पूर्व में दृश्य, मंग. पूर्व क्षितिज पर तथा उससे गुरु दिखाई देगा। सायं शनि पूर्वकाल में दिखाई देगा।	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३०.३२	१	शुक्र	३५	२०	20	35	रेव	५६	५०	29	11	ब्रह्म	12	37	किं	६	३५	६	१९	27	१४	मे. 29/11	**चैत्र नवरात्रे प्रारम्भ, नव संवत्सर २०६६ आरम्भ,** घटस्थापन, **A**	६	२७	१८	४०
३०.३५	२	शनि	३१	४५	19	08	अश्वि	५४	१८	28	19	ऐंद्र	10	26	बा	३	३२	७	२०	28	१५	मेष	चंद्रदर्शन, मु. ३०, **पंचक समा.** 5/11	६	२६	१८	४०
३०.४१	३	रवि	२७	२८	17	23	भर	५१	५८	27	11	वैधृ विष्क	7 29	58 17	ग	२७	२८	८	रबि	29	१६	मेष	भ. 28/24 से, **गणगौरी तृतीया,** मत्स्य जयन्ती, रबि-उल्सानी **B**	६	२४	१८	४१
३०.४५	४	चंद्र	२२	३५	15	25	कृति	४८	४५	25	53	प्रीति	26	30	वि	२२	३५	९	२	30	१७	वृ. 8/52	भ. 15/25 तक, **शुक्र पूर्व से उदय** 27/15,	६	२३	१८	४१
३०.५०	५	मंग	१७	२५	13	20	रोहि	४५	२०	24	30	आयु	23	39	बा	१७	२५	१०	३	31	१८	वृष	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, स्कन्द षष्ठी व्रत, सूर्य रेव. में 11/22, बुध **C**	६	२२	१८	४२
३०.५७	६	बुध	१२	१३	11	13	मृग	४१	५८	23	07	सौभा	20	47	तै	१२	१३	११	४	अप्रै	१९	मि. 11/49	मंगल पू.भा. में 29/45, अप्रैल मास प्रारम्भ, स. सि. योग	६	२०	१८	४३
३१.०३	७	गुरु	६	५८	9	06	आर्द्रा	३८	३८	21	46	शोभ	17	57	व	६	५८	१२	५	2	२०	मिथुन	भ. 9/06 से 20/04 तक,	६	१९	१८	४३
३१.०५	८	शुक्र	१	५०	7	02	पुर्न	३५	२८	20	29	अति	15	10	ब	१	५०	१३	६	3	२१	क. 14/48	**श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, श्रीरामनवमी** (देखें पृष्ठ 81), अशोकाष्टमी	६	१८	१८	४४
अवम्	९	शुक्र	५६	५३	29	03	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**नवमी तिथि का क्षय** ०० (मेला बाहूफोर्ट 3 अप्रैल)	०	०	०	०
३१.१०	१०	शनि	५२	८	27	08	पुष्य	३२	२८	19	16	सुक	12	26	तै	२४	३१	१४	७	4	२२	कर्क	गण्डमूल 19/16 से, प्लूटो वक्री 23/09	६	१७	१८	४५
३१.१३	११	रवि	४७	४३	25	21	श्ले	२९	४५	18	10	धृति	9	48	व	१९	५६	१५	८	5	२३	सिं. 18/10	भ. 14/15 से 25/21 तक, **कामदा एकादशी व्रत,** गण्डमूल	६	१६	१८	४५
३१.१८	१२	चंद्र	४३	४०	23	43	मघा	२७	२३	17	12	शूल गंड	7 28	15 51	ब	१५	३७	१६	९	6	२४	सिंह	**बुध अश्वि (1) मेष में 21/23,** गंडमूलादि 17/12 तक	६	१५	१८	४६
३१.२३	१३	मंग	४०	१०	22	18	पू.फा.	२५	३०	16	26	वृद्धि	26	38	कौ	११	५५	१७	१०	7	२५	कं. 22/17	भौम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, **श्रीमहावीर जयन्ती** (जैन)	६	१४	१८	४७
३१.२८	१४	बुध	३७	२५	21	11	उ.फा.	२४	१८	15	56	ध्रुव	24	40	गर	८	४८	१८	११	8	२६	कन्या	भ. 21/11से प्रारम्भ	६	१३	१८	४८
३१.३०	१५	गुरु	३५	३५	20	26	हस्त	२४	०	15	48	व्या.	23	01	वि	६	३०	१९	१२	9	२७	तु. 27/53	भ. 8/49 तक, **चैत्र पूर्णिमा** स्नानदान, वैशाखस्नान प्रारम्भ, **श्रीहनुमान D**	६	१२	१८	४८

शुभकृत नामक नया सम्वत्सर A वर्षफलश्रवण, पंचक समाप्त 29/11, स. सि. योग **B** (मुस्लिम), प्रारम्भ **C** रेव. में 10/08, **D** जयन्ती (दक्षिण भारत), गुरु धनि (2) में 20/11, श्रीसत्यनारायण व्रत,

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ १९ २३ १०	२ २४ ३३ ५०	१० २० ४६ २३	११ २२ २५ १४	९ २५ २९ ०१	११ ०९ ३२ ४३	४ २२ २९ ५२	९ १२ ०५ ५४	३ १२ ०५ ५४
59 7	843 29	46 52	124 4	11 00	32 12	3 57	3 11	3 11
रेव १	पुर्न २	पू.भा १	रेव २	धनि १	उ.भा २	पू.फा ३	श्रव १	पुष्य ३
०	मा	मा	मा	मा	व	व	अ	व
०	ठ	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ २५ १७ २२	५ १७ ३६ ४०	१० २५ २७ २२	० ०४ ४७ ५०	९ २६ ३३ ३६	११ ०६ ४७ १२	४ २२ ०७ १०	९ ११ ४६ ३९	३ ११ ४६ ३९
58 54	796 42	46 46	121 20	10 25	20 14	3 36	3 11	3 11
रेव ३	हस्त ३	पू.भा २	अश्वि २	धनि १	उ.भा २	पू.फा ३	श्रव १	पुष्य ३
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	ठ	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



नोट—ऊपर लिखे सभी ग्रह संचार घण्टा-मिनटों में हैं।

चैत्र शुक्ल पक्षफल–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से **शुभकृत नाम का संवत्सर, 27 मार्च, शुक्रवार** से प्रारम्भ होगा। नए सम्वत् काल में व्रत, अनुष्ठान, **संकल्पादि शुभ कार्यों** में इसी नाम का प्रयोग होगा। नए सम्वत् का **राजा शुक्र** तथा **मन्त्री चन्द्रमा** है। सम्वत् आदि का फल किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण या गुरु मुख से श्रद्धापूर्वक सम्वत्सर के पूजनोपरान्त श्रवण करना चाहिए। सम्वत् आदि के फल श्रवण के पश्चात् प्रतिपदा को **श्रीदुर्गा जी** की मूर्ति एवं घटस्थापन करके श्री मूर्ति के सम्मुख प्रतिपदा से नवमी तक नित्य प्रति घी की ज्योत जलाकर श्री दुर्गा पूजा एवं श्री **दुर्गासप्तशती** का पाठ करना चाहिए। इसी दिन को ताम्र या मिट्टी के पात्र में जौं, गेहूँ आदि के बीज बोकर ॐकार सहित श्री गणेश, विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्यादि पंचदेवों की पूजा-अर्चना कराने का विधान है। पूजार्चन के पश्चात् ब्राह्मणों का भोजन तथा वस्त्र, फल, अन्न, दक्षिणा आदि द्वारा अभिनन्दन करना चाहिए। **नवीन पंचाँग** सहित कोई धर्म-ग्रन्थ, मिष्ठान्न , फल-वस्त्रादि का दान करना भी शुभ होता है। **नवरात्रों** में नीम के कोमल पत्तों, कोंपलों का चूर्ण बनाकर उसमें सेंधा नमक, हींग, जीरा, अजवायन, पीसी हुई काली मिर्च एवं मिश्री (या शक्कर) बराबर मात्रा में चूर्ण बनाकर भोग लगाकर सेवन करने से वर्ष में रक्त विकार, ज्वर, कुष्टादि रोगों का भय नहीं रहता। **शुभकृत** नामक सम्वत्सर तथा राजा शुक्र व मन्त्री चन्द्र के फलस्वरूप पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के उत्सवों का प्रदर्शन रहे। चोर लुटेरों, बेईमान आदि दुष्टों से सामान्य लोग भयभीत रहें। राजनेताओं में परस्पर विरोध बढ़े। **राजा शुक्र** के कारण राग-रंग उत्सवादि अधिक हों। **मन्त्री चन्द्र** के प्रभावस्वरूप कन्याओं की पैदायश अधिक रहे। व्यापारिक क्षेत्रों का विस्तार हो। चावल, चीनी, रूई, कपास, कागज़, चांदी आदि वस्तुओं के व्यापारी विशेष लाभान्वित हों। **आकाश लक्षण**—पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणा के उत्तरी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६६, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक: १९३१ तारीखें

सन् 2009 ई. (ता. 10 अप्रैल से 25 अप्रैल तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल और शुक्र पूर्व क्षितिज में पास-पास दिखाई देंगे, गुरु पूर्व कपाल में इनसे काफ़ी ऊपर होगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिन्ट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिन्ट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिन्ट	करण	घड़ी	पल	चैत्र शक	रविअं. मुं.	अंग्रेज़ी	चैत्र	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३१.३७	१	शुक्र	३५	००	20	10	चित्रा	२४	५०	16	06	हर्ष	21	45	बा	५	१८	२०	१३	10	२८	तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुड फ्राइडे (क्रिश्चियन)	६	१०	१८	४९
३१.४३	२	शनि	३५	४५	20	27	स्वा	२६	५८	16	56	वज्र	20	55	तै	५	२३	२१	१४	11	२९	तुला	स. सि. योग 16/56 तक	६	९	१८	५०
३१.४५	३	रवि	३८	००	21	20	विशा	३०	३०	18	20	सिद्धि	20	34	व	६	५३	२२	१५	12	३०	बृ. 11/56	भ. 8/54 से 21/20 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय 21/54, **A**	६	८	१८	५०
३१.५०	४	चंद्र	४१	४५	22	49	अनु	३५	३३	20	20	व्य.	20	40	ब	९	५३	२३	१६	13	वैशा	बृश्चिक	**सूर्य अश्वि (1) मेष में 24/47, वैशाख संक्रान्ति,** मु. १५, पुण्यकाल **B**	६	७	१८	५१
३१.५३	५	मंग	४६	५०	24	50	ज्ये	४१	५५	22	52	वरी	21	12	कौ	१४	१८	२४	१७	14	२	ध. 22/52	**मंगल मीन में 25/31, डॉ. अम्बेदकर जयंती**	६	६	१८	५१
३१.५७	६	बुध	५२	५५	27	15	मूल	४९	१५	25	47	परि	22	02	गर	१९	५३	२५	१८	15	३	धनु	भ. 27/15 से प्रारम्भ	६	५	१८	५२
३२.०३	७	गुरु	५९	२५	29	50	पू.षा.	५७	००	28	52	शिव	23	03	वि	२६	१०	२६	१९	16	४	धनु	भ. 16/33 तक,	६	४	१८	५३
३२.१०	८	शुक्र	६०	००	पूरा	दिन	उ.षा.	६०	००	पूरा	दिन	सिद्ध	24	02	बा	३२	३७	२७	२०	17	५	म. 11/38	**शुक्र मार्गी 24/55,**	६	२	१८	५४
३२.१३	८	शनि	५	४८	8	20	उ.षा.	४	४०	7	53	साध्य	24	49	कौ	५	४८	२८	२१	18	६	मकर	स. सि. योग 7/53 से प्रा.	६	१	१८	५४
३२.१७	९	रवि	११	१०	10	28	श्रव	११	२५	10	34	शुभ	25	14	गर	११	१०	२९	२२	19	७	कुं. 23/42	भ. 23/15 से, **पंचक प्रारम्भ** 23/42, मंगल उ.भा. में 8/26, सूर्य **C**	६	०	१८	५५
३२.२३	१०	चंद्र	१५	०८	12	02	धनि	१६	४५	12	41	शुक्ल	25	08	वि	१५	०८	३०	२३	20	८	कुम्भ	भ. 12/02 तक, अगस्त्य अस्त	५	५९	१८	५६
३२.२५	११	मंग	१७	१५	12	52	शत.	२०	२३	14	07	ब्रह्म	24	26	बा	१७	१५	वैशा	२४	21	९	कुम्भ	**वरूथिनी एकादशी** व्रत, बुध कृति. में 14/59, शक वैशाख **D**	५	५८	१८	५६
३२.३०	१२	बुध	१७	२८	12	56	पूभा	२२	०५	14	47	ऐंद्र	23	08	तै	१७	२८	२	२५	22	१०	मी. 8/41	प्रदोष व्रत, **D** प्रारम्भ, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	५	५७	१८	५७
३२.३३	१३	गुरु	१५	४३	12	13	उभा	२१	५८	14	43	वैधृ	21	14	व	१५	४३	३	२६	23	११	मीने	भ. 12/13 से 23/32 तक, **बुध वृष में 29/46,**	५	५६	१८	५७
३२.३७	१४	शुक्र	१२	१८	10	50	रेव	२०	०८	13	58	विष्क	18	50	श	१२	१८	४	२७	24	१२	मे. 13/58	**पंचक समाप्त** 13/58, **अमावस (पितृकार्येषु)**	५	५५	१८	५८
३२.४३	३०	शनि	७	२८	8	53	अश्वि	१७	००	12	42	प्रीति	16	01	ना	७	२८	५	२८	25	१३	मेषे	**वैशाख शनिवारी अमावस** स्नान, दानादि	५	५४	१८	५९

A (जालन्धर) बुध पश्चिम में उदय 17/01, **B** सं. अगले दिन प्रातः 7/11 तक, बुध भर. में 13/27, अनुसूया जयंती, स. सि. यो. **C** सायन वृष में 28/14, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ

नोट—ऊपर लिखे सभी ग्रह-संचार, घण्टा-मिन्टों में हैं।

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	८	११	०	९	११	४	९	३
०३	२६	०१	१९	२७	०५	२१	११	११
०७	५८	४१	५५	५३	१३	४०	२१	२१
४५	५३	०३	०८	५१	१८	५९	१३	१३
58 40	710 30	46 38	99 21	9 32	0 45	2 55	3 11	3 11
अश्वि १	उषा १	पूभा ४	भर २	धनि २	उभा १	पूफा ३	श्रव १	पुष्य ३
०	मा	मा	मा	मा	व/मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

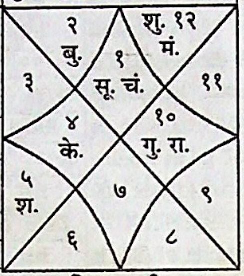
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	११	१	९	११	४	९	३
१०	०९	०७	०१	२९	०६	२१	१०	१०
५६	०५	५३	०६	०६	११	२०	५५	५५
१७	०२	२३	४३	३९	०४	१२	४७	४७
57 26	855 57	46 25	62 25	8 31	16 45	2 11	3 11	3 11
अश्वि ४	अश्वि ३	उभा २	कृति २	धनि २	उभा १	पूफा ३	श्रव १	पुष्य ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



वैशाख कृष्ण पक्षफल—वैशाख मास के प्रारम्भ में चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक किसी पवित्र तीर्थ स्थान पर किंवा पवित्र नदी अथवा अपने गृह स्थान पर ही तीर्थजल सहित शुद्ध जल से नियमित रूप से विधिपूर्वक स्नान, आचमन एवं मार्जन आदि करना अत्यन्त पुण्यप्रद होता है। सूर्योदय से लगभग डेढ़ घड़ी पूर्व नक्षत्र साक्ष्य काल में स्नान उत्तम माना जाता है। तदुपरान्त सूर्योदय काल श्रेष्ठ है। **वैशाख संक्रान्ति** एवं वैशाख मास में अन्नदान, जलदान, वस्त्रदान, घटदान, छत्रदान, फल-मिष्टान्न आदि व्यंजन-दक्षिणा सहित दान करने का विशेष महत्त्व है। इस मास में तुलसीदल, पुष्पों एवं तीर्थ जल से **भगवान विष्णु** की पूजा करके नित्य **वैशाख माहात्म्य,** विष्णु सहस्रनाम एवं **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** इस मन्त्र का पाठ करना चाहिए। इससे अनेक जन्मों के पापों की शान्ति होती है। **वैशाख संक्रान्ति** 13 अप्रैल सोमवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् रात्रि 12 बजकर 47 मिनट ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करेगी। इस संक्रान्ति के स्नान, दान आदि का विशेष पुण्यकाल 14 अप्रैल की प्रातः 7/11 (घं.मिं.) तक रहेगा। वैशाख संक्रान्ति 15 मुहूर्त्ति होने से गेहूँ, चने, धान्यादि सब प्रकार के अनाज तेजभाव होंगे। **वैशाख मास** में शनिवार की अमावस्या एवं पाँच शनिवार होने से सामान्य लोगों में आवश्यक वस्तुओं की कमी, अत्यधिक मँहगाई, क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति, लोगों में सौहार्द्र की कमी, राजनीतिक समीकरणों में परिवर्तन व साम्प्रदायिक टकराव रहे—**शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी। आकाश लक्षण**—वैशाख मास में सूर्य आगे और मंगल पीछे होने से वर्षाकाल में अच्छी बारिश के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६६, वैशाख शुक्ल पक्ष शाकः १९३१ तारीखें

सन् 2009 ई. (ता. 26 अप्रैल से 9 मई तक)
सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल	वैशा. शक	रविअं. मु.	अप्रैल	वैशा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	ग्रह दर्शन—प्रातः मं. और शु. पूर्व क्षितिज पर तथा इनके ऊपर चमकता हुआ गु. होगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त में होगा। इस समय बु. पश्चिम क्षितिज पर होगा। 9 मई से बु. अस्त होगा।	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२.४७	१	रवि	१	३५	6	31	भर	१२	५३	11	02	आयु	12	54	ब	१	३५	६	२९	26	१४	वृ. 16/34	चंद्रदर्शन, मु. ३०, शिवाजी जयन्ती,	५	५३	१९	०
अवम्	२	रवि	५५	००	27	53	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
३२.५०	३	चंद्र	४८	१०	25	08	कृति	८	१०	9	08	सौभा	9	36	तै	२१	३५	७	जम	27	१५	वृष	**अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती,** सूर्य भर. में 16/33, **A**	५	५२	१९	०
३२.५५	४	मंग	४१	२०	22	23	रोहि मृग	३ ५८	१८ २८	7 29	10 14	शोभ अति	6 26	14 55	व	१४	४५	८	२	28	१६	मि. 18/11	भ. 11/46 से 22/23 तक,	५	५१	१९	१
३३.००	५	बुध	३४	५०	19	46	आर्द्रा	५४	०३	27	27	सुक	23	43	ब	८	१५	९	३	29	१७	मिथुन	आद्यगुरु **श्रीशंकराचार्य जयन्ती,**	५	५०	१९	२
३३.०३	६	गुरु	२८	५३	17	22	पुर्न	५०	१३	25	54	धृति	20	41	कौ	१	५२	१०	४	30	१८	क. 20/16	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,स. सि. योगः	५	४९	१९	२
३३.०८	७	शुक्र	२३	३०	15	12	पुष्य	४७	०३	24	37	शूल	17	53	व	२३	३०	११	५	मई	१९	कर्क	भ. 15/12 से 26/17 तक, **गुरु** धनि. 3 **कुम्भ में 18/44, श्रीगंगा B**	५	४८	१९	३
३३.१३	८	शनि	१८	५५	13	21	श्ले	४४	३८	23	38	गंड	15	18	ब	१५	५५	१२	६	2	२०	सिं. 23/38	गण्डमूलादि	५	४७	१९	४
३३.१७	९	रवि	१५	०३	11	47	मघा	४३	००	22	58	वृद्धि	12	59	कौ	१५	०३	१३	७	3	२१	सिंह	**श्रीसीता नवमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती,** गण्डमूल	५	४६	१९	५
३३.२२	१०	चंद्र	१२	००	10	33	पूफा	४२	०८	22	36	ध्रुव	10	55	ग	१२	००	१४	८	4	२२	कं. 28/34	भ. 22/05 से प्रारम्भ	५	४५	१९	१६
३३.२८	११	मंग	९	४३	9	37	उफा	४२	०५	22	34	व्या	9	07	वि	९	४३	१५	९	5	२३	कन्या	भ. 9/37 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत**	५	४४	१९	७
३३.३५	१२	बुध	८	१८	9	01	हस्त	४२	५३	22	51	हर्ष	7	34	बा	८	१८	१६	१०	6	२४	कन्या	प्रदोष व्रत, मंगल रेव. में 14/50, स. सि. योग	५	४२	१९	८
३३.३८	१३	गुरु	७	४५	8	47	चित्रा	४४	३८	23	32	वज्र सिद्धि	6 29	18 21	तै	७	४५	१७	११	7	२५	तु. 11/09	**श्रीनृसिंह जयन्ती,** टैगोर जयन्ती, बुध वक्री 10/34	५	४१	१९	८
३३.४०	१४	शुक्र	८	०८	8	56	स्वा	४७	१८	24	36	व्य.	28	44	व	८	०८	१८	१२	8	२६	तुला	भ. 8/56 से 21/14 तक, **कूर्म जयन्ती,** श्रीसत्यनारायण व्रत	५	४१	१९	९
३३.४३	१५	शनि	९	३८	9	32	विशा	५१	०८	26	08	वरी	28	30	ब	९	३८	१९	१३	9	२७	वृ. 19/43	**वैशाख पूर्णिमा** स्नानदानादि, बुद्ध जयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त, **C**	५	४१	१९	१०

A स.सि.यो. 9/08 से, जमादिउल्लावल (मु.) प्रारम्भ, केदारबद्री यात्रा प्रा. **B** जयंती, मई मास प्रारम्भ **C** वक्री बुध पश्चिम में अस्त 28/18, टैगोर जयंती (मतान्तरे)

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	१	१०	११	४	९	३
१७	१९	१३	०६	०	०८	२१	१०	१०
४४	३०	१७	३३	०३	४६	०६	३३	३३
३८	४१	३७	१५	२८	१३	५७	३२	३२
58 12	831 27	46 10	25 9	7 34	28 48	1 29	3 11	3 11
भर २	अश्ले १	उभा ४	कृति ३	धनि ३	उभा २	पूफा ३	श्रव १	पुष्य ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	१	१०	११	४	९	३
२४	२२	१८	०७	००	१२	२०	१०	१०
३१	३४	४०	३७	५३	३७	५८	११	११
२१	३३	०६	०३	२२	०९	३६	१७	१७
57 59	749 45	45 55	11 10	6 32	38 6	0 47	3 11	3 11
भर ४	विशा १	रेव १	कृति ४	धनि ३	उभा ३	पूफा ३	श्रव १	पुष्य ३
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ/अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



वैशाख शुक्ल पक्षफल--

27 अप्रैल, सोमवार को **अक्षय तृतीया** और श्री परशुराम की पुण्य जयन्ती है। इस तिथि काल में किए गए शुभकार्यों जैसे स्नान, दान, जप-तप, होम, देव-पितृ-तर्पण आदि शुभ कर्मों का फल **अनन्त होता** है। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में की जाती है, क्योंकि सत्युग (कल्पभेद से त्रेतायुग) का शुभारम्भ इसी तिथि से हुआ था। इस तिथि में नर-नारायण, परशुराम और हयग्रीव—ये तीन मुख्य अवतार हुए थे। **अक्षया तृतीया** बड़ी पवित्र, स्वयं सिद्ध एवं सुख-सौभाग्य देने वाली तिथि मानी जाती है। इस दिन सोमवार को प्रातः 9 बजकर 08 मिनट के बाद **रोहिणी** नक्षत्र एवं शोभन योग होने से स्नान, दान जपादि का विशेष महत्त्व होगा। इस दिन व्रत रखकर श्री गंङ्गा, यमुना आदि तीर्थ स्नान के बाद गेहूं, चने, चावल आदि अनाज, दूध, दही, बर्फी आदि जलापूरित घड़ा, छाता, (पात्र), फल, वस्त्र, नव सम्वत् की पंचाँग का दान एवं. ब्राह्मण भोजन सहित करवाना चाहिए। इस दिन स्त्रियाँ एवं कन्याएँ गौरी पूजन करके जलपूरित कलश, भीगे हुए चने, फल, मिष्टान्न, वस्त्रादि का दान सौभाग्य वृद्धि के लिए करती हैं। ता. 1 मई को **गंगा जयन्ती** के दिन पुष्य योग होने से हरिद्वार, प्रयाग, काशी आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जपादि का विशेष माहात्म्य होगा। ता. 5 को शक्तिरूपा बगुलामुखी देवी की पूजार्चन करने से रोग व शत्रु का भय नहीं रहता। **वैशाख पूर्णिमा** को तीर्थजल में स्नान भगवान् विष्णु का ध्यान व स्मरण करते हुए करना एवं जप, दानादि करने का विशेष माहात्म्य होता है।

लोक भविष्य–इस पक्ष में शनिवार की शुक्लाष्टमी, 5 शुक्रवार और 5 शनिवार होने से राजनीतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं टकराव रहे। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक तेजी होने से आम लोगों में बेचैनी व क्रोध रहे। **आकाश लक्षण**–पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर के उत्तरी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ खण्ड वर्षा होगी।

वि. संवत् २०६६, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष — शाकः १९३१

सन् 2009 ई. (ता. 10 मई से 24 मई तक)
सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः मंगल पूर्व में, शुक्र इससे ऊपर होगा। प्रातः गु. और सायं शनि–दोनों याम्योत्तरवृत्तासन्न होंगे। बुधास्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घटी	पल	तारीखें वैशा. शक	जमा. मु.	मई	वैशा. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३.४८	१	रवि	१२	२०	10	36	अनु	५६	१३	28	09	परि	28	38	कौ	१२	२०	२०	१४	10	२८	वृश्चिक	**ज्येष्ठ कृष्ण पक्षारम्भ**	५	४०	१९	११
३३.५०	२	चंद्र	१६	१५	12	09	ज्ये	६०	००	पूरा	दिन	शिव	29	07	ग	१६	१५	२१	१५	11	२९	वृश्चिक	भ. 25/09 से, सूर्य कृति. में 10/46, श्रीनारद जयन्ती, वीणादान **A**	५	३९	१९	११
३३.५३	३	मंग	२१	१५	14	09	ज्ये	२	२३	6	36	सिद्ध	पूरा	दिन	वि	२१	१५	२२	१६	12	३०	ध. 6/36	भ. 14/09 तक, **अंगारकी गणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय 22/25, **B**	५	३९	१९	१२
३३.५८	४	बुध	२७	१३	16	31	मूल	९	३०	9	26	सिद्ध	5	55	बा	२७	१३	२३	१७	13	३१	धनु	गण्डमूलादि 9/26 तक	५	३८	१९	१३
३४.००	५	गुरु	३३	४०	19	05	पू.षा.	१७	१५	12	31	साध्य	6	56	तै	०	२७	२४	१८	14	ज्ये	म. 19/18	**सूर्य वृष में 21/40, ज्येष्ठ संक्रान्ति,** मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न **C**	५	३७	१९	१३
३४.०५	६	शुक्र	४०	०८	21	39	उषा	२५	०५	15	38	शुभ	8	01	ग	६	५४	२५	१९	15	२	मकर	भ. 21/39 से प्रारम्भ	५	३६	१९	१४
३४.०८	७	शनि	४५	५५	23	57	श्रव	३२	२८	18	34	शुक्ल	9	00	वि	१३	०२	२६	२०	16	३	मकर	भ. 10/48 तक,	५	३५	१९	१४
३४.१३	८	रवि	५०	३०	25	46	धनि	३८	४८	21	05	ब्रह्म	9	43	बा	१८	१३	२७	२१	17	४	कुं. 7/53	**पंचक प्रारम्भ 7/53, शनि मार्गी 7/36,**	५	३४	१९	१५
३४.१५	९	चंद्र	५३	२०	26	54	शत	४३	२८	22	57	ऐंद्र	10	00	तै	२१	५५	२८	२२	18	५	कुम्भ		५	३४	१९	१६
३४.२०	१०	मंग	५४	१०	27	13	पूभा	४६	१८	24	04	वैधृ	9	43	व	२३	४५	२९	२३	19	६	मी. 17/52	भ. 15/04 से 27/13 तक,	५	३३	१९	१७
३४.२३	११	बुध	५२	५३	26	42	उभा	४७	००	24	21	विष्क	8	47	ब	२३	२२	३०	२४	20	७	मीन	**अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी (पं.),** सूर्य सायन **D**	५	३३	१९	१८
३४.२५	१२	गुरु	४९	३५	25	22	रेव	४५	४५	23	50	प्रीति आयु	7 28	11 57	कौ	२१	१४	३१	२५	21	८	मे. 23/50	**पंचक समाप्त 23/50,** स. सि. योग सू. उ. से,	५	३२	१९	१८
३४.२८	१३	शुक्र	४४	३०	23	20	अश्वि	४२	४०	22	36	सौभा	26	09	ग	१७	०३	ज्ये.	२६	22	९	मेष	भ. 23/20 से, प्रदोष व्रत, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	५	३२	१९	१९
३४.३०	१४	शनि	३८	००	20	43	भर	३८	१०	20	47	शोभ	22	54	वि	११	१५	२	२७	23	१०	वृ. 26/15	भ. 10/02 तक, **मंगल अश्वि (1) मेष में** 27/00, सावित्री चौदश	५	३१	१९	१९
३४.३३	३०	रवि	३०	२५	17	41	कृति	३२	३५	18	33	अति	19	18	च	४	१३	३	२८	24	११	वृष	भावुका ज्येष्ठ अमावस, वट सावित्री व्रत (राज.), शनैश्चर जयन्ती	५	३१	१९	२०

A गण्डमूलादि प्रातः 4/09 से प्रा. **B** राहु उ.षा. (4) केतु पुष्य (2) में 18/40, **C** बाद, शुक्र रेव. में 28/21, **D** मिथुन में 27/21

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	११	१	१०	११	४	९	३
२	२८	२४	०४	०१	१८	२०	०९	०९
१४	४८	४६	२५	४१	११	५५	४५	४५
३४	१२	२४	३९	१५	३४	१२	५१	५१
57 49	729 51	45 36	34 32	5 15	46 5	0 2	3 11	3 11
कृति (२)	धनि २	रेव ३	कृति ३	धनि ३	रेव १	पूफा ३	उषा ४	पुष्य २
०	मा	मा	व	मा	मा	व/मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

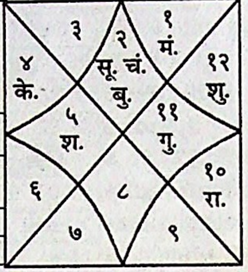
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	०	१	१०	११	४	९	३
०८	०१	००	००	०२	२३	२०	०९	०९
५८	५९	०४	३५	१४	५०	५७	२३	२३
४९	०४	४२	०४	३०	२०	४०	३८	३८
57 41	887 19	45 17	25 42	4 4	51 13	0 46	3 11	3 11
कृति (४)	कृति २	अश्वि १	कृति २	धनि ३	रेव ३	पूफा ३	उषा ४	पुष्य २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—

ज्येष्ठ मास में संक्रान्ति, एकादशी, अष्टमी, गंगा दशहरा, निर्जला एकादशी आदि पर्वों पर श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा (पात्र), गेहूँ, चावल, सत्तु आदि अनाज, दूध, चीनी, वस्त्र, छाता, पँखा, आम्र, खरबूजे आदि मौसमी फल दूध, चीनी एवं अन्य ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं के दान करने का विशेष महत्त्व होता है। इस मास के पर्वों में जितेन्द्रिय रहकर, अल्पाहार करते हुए सादा एवं सात्विक भोजन करना चाहिए। व्रत के दिन भूमि पर शयन करना एवं सत्याचरण करते हुए भगवान् विष्णु का षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का जाप एवं **श्रीविष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्र,** नारायण कवच, कमलनेत्र-हरिहर स्तोत्र आदि स्तोत्रों का पाठ करने से धन-सम्पत्ति, विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य आदि की प्राप्ति होती है। **ज्येष्ठ संक्रान्ति** 14 मई, गुरुवार को 45 मुहूर्त्ति है। रात्रि 9/40 पर प्रवेश काल होने से स्नान-दानादि का पुण्यकाल दुपैहर से प्रारम्भ होगा। ता. 20 मई को **अपरा एकादशी** (भद्रकाली) का विधिवत व्रत करने से पापों का क्षय तथा पुण्यों में वृद्धि होती है। **लोक भविष्य**–इस पक्ष के आरम्भ में **शनि-मंगल** के मध्य **षडाष्टक** योग (23 मई तक) बना हुआ है, इसके अतिरिक्त ज्येष्ठ मास में **पाँच रविवार** पड़ रहे हैं, जिससे सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध एवं अशान्त रहेगा। कहीं अनाज की कमी से दुर्भिक्ष एवं भय की स्थिति बने, अत्यधिक मँहगाई हो और कहीं सत्ता परिवर्तन के योग बनेंगे—**यत्रमासे रविवाराः जायन्ते पँच सततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंग स्यात् दास्ते च महद्भयम्। आकाश लक्षण**–इस पक्ष में गर्मी के कारण कहीं गर्म हवाओं का प्रकोप बढ़ेगा।

वि. संवत् २०६६, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९३१																			तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल				नक्षत्र	समाप्ति काल				योग	समाप्ति काल						ज्ये. शुक्ल	रबिउ. मु.	मई	ज्ये. प्रवि.	
			घटी	पल	घण्टे	मिन्ट		घटी	पल	घण्टे	मिन्ट		घण्टे	मिन्ट	करण	घटी	पल						
३४.३५	१	चंद्र	२२	१५	14	24	रोहि	२६	२५	16	04	सुक	15	31	ब	२२	१५		४	२९	25	१२	मि. 26/48
३४.३८	२	मंग	१३	५३	11	03	मृग	२०	०५	13	32	धृति	11	41	कौ	१३	५३		५	जमा	26	१३	मिथुन
३४.४३	३	बुध	५	४०	7	45	आर्द्रा	१३	५८	11	04	शूल गंड	7 28	54 17	ग	५	४०		६	२	27	१४	क. 27/22
००.००	४	बुध	५७	५८	28	40	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	००
३४.४५	५	गुरु	५१	००	25	53	पुर्न	८	२३	8	50	वृद्धि	24	56	ब	२४	२९		७	३	28	१५	कर्क
३४.४५	६	शुक्र	४५	०८	23	32	पुष्य	३	४०	6	57	ध्रुव	21	56	कौ	१८	०४		८	४	29	१६	कर्क
३४.४८	७	शनि	४०	२३	21	38	श्ले मघा	० ५७	०३ ०३	5 28	30 30	व्या	19	18	ग	१२	४६		९	५	30	१७	सिं. 5/30
३४.५०	८	रवि	३६	५५	20	14	पूफा	५६	२३	28	01	हर्ष	17	05	वि	८	३९		१०	६	31	१८	सिंह
३४.५०	९	चंद्र	३४	४३	19	21	उफा	५६	२३	28	01	वज्र	15	16	बा	५	४९		११	७	जून	१९	कं. 9/58
३४.५३	१०	मंग	३३	४३	18	57	हस्त	५७	३८	28	31	सिद्धि	13	51	तै	४	१३		१२	८	2	२०	कन्या
३४.५५	११	बुध	३३	५८	19	02	चित्रा	६०	००	पूरा	दिन	व्य	12	49	व	३	५१		१३	९	3	२१	तु. 16/56
३४.५८	१२	गुरु	३५	१७	19	34	चित्रा	०	०३	5	28	वरी	12	10	ब	४	३८		१४	१०	4	२२	तुला
३५.००	१३	शुक्र	३७	४३	20	32	स्वा	३	३३	6	52	परि	11	51	कौ	६	३०		१५	११	5	२३	वृ. 26/11
३५.००	१४	शनि	४१	१०	21	55	विशा	८	०३	8	40	शिव	11	52	ग	९	२७		१६	१२	6	२४	वृश्चिक
३५.००	१५	रवि	४५	३८	23	42	अनु	१३	३३	10	52	सिद्ध	12	11	वि	१३	२४		१७	१३	7	२५	वृश्चिक

सन् 2009 ई. (ता. 25 मई से 7 जून तक) सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, ग्रीष्म ॠतु	भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
ग्रहदर्शन–प्रातः मं. और शु. पूर्व में पास-पास होंगे तथा इनसे कुछ ऊपर बुध होगा। गुरु याम्योत्तर वृत्तासन्न दीखेगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर होगा।	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
चंद्रदर्शनम, मु. ३०, सूर्य रोहिणी में 6/58, **वक्री बुध** कृति 1 **मेष A**	५	३०	१९	२०
रम्भा तृतीया व्रत, जमादि-उल्सानी (मुस्लिम) प्रारम्भ, **वक्री बुध B**	५	३०	१९	२१
भ. 18/13 से 28/40 तक, प्रताप जयन्ती (राज.)	५	२९	१९	२२
चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
सर्वार्थ सिद्ध योग:	५	२९	१९	२३
गण्डमूल 6/57 से प्रा., नैपच्यून वक्री 10/00	५	२९	१९	२३
भ. 21/38 से, **शुक्र** अश्वि (1) **मेष में 29/01**, गं.मू. 28/30 तक	५	२९	१९	२४
भ. 8/56 तक, बुध मार्गी 6/49, **श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, **C**	५	२८	१९	२४
जून मास प्रारम्भ	५	२८	१९	२४
श्रीगंगा दशहरा पर्व (हरिद्वार)	५	२८	१९	२५
भ. 7/00 से 19/02 तक, **निर्जला एकादशी व्रत**	५	२७	१९	२५
चम्पक द्वादशी	५	२७	१९	२६
प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ, **बुध वृष में 18/19**,	५	२७	१९	२७
भ. 21/55 से प्रा.	५	२७	१९	२७
भ. 10/49 तक, **ज्येष्ठ पूर्णिमा**, वट सावित्री व्रत, सूर्य मृग. में **D**	५	२७	१९	२७

A में 15/27, स. सि. यो. सू. उ. से **B** पूर्व से उदय 22/05 **C** मेला क्षीर भवानी (काश्मीर) **D** 28/50, सन्त **कबीर जयन्ती**, श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 10/52 से

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 31 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ १५ ४२ ०३	४ १३ ५४ ३४	० ५ २० ३६	० २८ ५२ ३३	१० ०२ ३९ ०९	० ०० ०१ ०३	४ २१ ०५ १४	९ ०९ ०१ २२	३ ०९ ०१ २२
57 31	815 40	44 55	1 59	2 48	55 6	1 29	3 10	3 10
रोह (२)	पूफा १	अश्वि २	कृति १	धनि ३	अश्वि १	पूफा ३	उषा ४	पुष्य २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

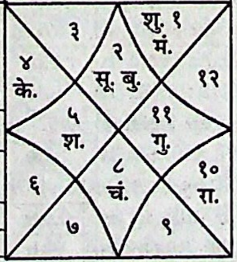
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २२ २४ १३	७ १३ ५७ ०७	० १० ३३ ५०	१ ०० ३९ ५७	१० ०२ ५४ ५०	० ०६ ३६ २०	४ २१ १७ ४५	९ ०८ ३९ ०७	३ ०८ ३९ ०७
57 23	724 19	44 32	32 46	1 30	58 11	2 11	3 11	3 11
रोह ४	अनु ४	अश्वि ४	कृति २	धनि ३	अश्वि २	पूफा ३	उषा ४	पुष्य २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में रम्भा तीज (26 मई) का व्रत रखने से विवाह, सन्तान एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। अष्टमी (31 मई), अष्टमी देवी माता के मन्दिर में खीर सहित विविध पकवानों से भोग लगाने का विधान है। **2 जून, मंगलवार** के दिन स्नानादि के बाद गङ्गा दशहरा के अवसर पर श्री गंगा जी का पूजन चन्दन, पुष्प, ताण्डुल, धूप-दीप, नारियल, गुड़ आदि द्रव्यों सहित करना चाहिए। इस दिन गंगा-स्नान पूजनादि करने से कायिक, वाचिक व मानसिक सभी प्रकार के पापों का क्षय होता है।

निर्जला एकादशी का विधि अनुसार व्रत रखने से अन्य सभी एकादशियों के व्रत का पुण्य लाभ भी प्राप्त हो जाता है। इस दिन निराहार व्रत रखकर, स्नानादि के पश्चात् संकल्पपूर्वक अनाज, फल, जलापूरित पात्रादि का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है। **ज्येष्ठ संक्रांति**–गुरुवार को उ.षा. नक्षत्र काल में प्रवेश होने से चीनी, चावल, शक्कर, हल्दी, दूध आदि पेय जल की वस्तुओं में विशेष तेजी होगी। ज्येष्ठ में पांच रविवार होने से कहीं अनाज, पेयजल, दाल आदि आवश्यक वस्तुओं में कमी एवं उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में खास वृद्धि हो। राजनेताओं में टकराव, कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव एवं हिंसक व उग्र घटनाएं और सत्ता परिवर्तन, राजनीतिक अस्थिरता, भय अशान्ति बढ़ने के योग हैं। **संक्रांति फल**– मेष, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुंभ व मीन राशि वालों को इस संक्रांति का फल कुछ शुभ दायक रहेगा। मास में 5 रविवारों के कारण अन्न, अलसी, हरी सब्जियां, दालें खल-बिनौले, सुवर्णादि में तेजी हो। **आकाश लक्षण**–पक्ष में गर्म हवाएं व तेज़ आँधियां अधिक चलेंगी। बिजली की किल्लत के कारण सामान्य लोग विक्षुब्ध रहें।

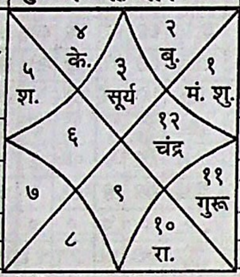
वि. संवत् २०६६, आषाढ़ कृष्ण पक्ष							शाकः १९३१											तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	सन् 2009 ई. (ता. 8 जून से 22 जून तक) सूर्य उत्तर-दक्षिणायने, उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु	भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल	शक ज्ये.	जमा.	जून	प्रवि.		ग्रह दर्शन–प्रातः बुध पूर्वी क्षितिज, इससे कुछ ऊपर मं. एवं शु. होंगे तथा गुरु पश्चिमी कपाल में दिखाई देगा। सायं श. पश्चिमी कपाल में होगा।	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५.०३	१	चंद्र	५०	५५	25	49	ज्ये	१९	५८	13	26	साध्य	12	47	बा	१८	१७	१८	१४	8	२६	ध. 13/26	आषाढ़ कृष्ण पक्षारम्भ, गंडमूल	५	२७	१९	२८
३५.०४	२	मंग	५६	५५	28	13	मूल	२७	०५	16	17	शुभ	13	39	तै	२३	५५	१९	१५	9	२७	धनु	गण्डमूल 16/17 तक,	५	२७	१९	२८
३५.०५	३	बुध	६०	००	पूरा	दिन	पू.षा.	३४	४८	19	21	शुक्ल	14	40	व	३०	०९	२०	१६	10	२८	म. 26/08	भ. 17/30 से, मंगल भर. में 23/12	५	२६	१९	२८
३५.०८	३	गुरु	३	२३	6	47	उ.षा.	४२	४०	22	30	ब्रह्म	15	47	वि	३	२३	२१	१७	11	२९	मकर	भ. 6/47 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय रात्रि 22/23 (जालंधर)	५	२६	१९	२९
३५.०८	४	शुक्र	९	५०	9	22	श्रव	५०	२०	25	34	ऐंद्र	16	52	बा	९	५०	२२	१८	12	३०	मकर	स. सि. योग: सू. उ. से,	५	२६	१९	२९
३५.१०	५	शनि	१५	५०	11	46	धनि	५७	१८	28	21	वैधृ	17	46	तै	१५	५०	२३	१९	13	३१	कुं. 15/01	पंचक प्रारम्भ 15/01, शुक्र भर. में 25/01	५	२६	१९	३०
३५.१०	६	रवि	२०	५५	13	48	शत	६०	००	पूरा	दिन	विष्क	18	21	व	२०	५५	२४	२०	14	आ.	कुम्भ	भ. 13/48 से 26/32 तक, **सूर्य मिथुन में 28/17, आषाढ़ A**	५	२६	१९	३०
३५.१०	७	चंद्र	२४	३५	15	16	शत	३	०३	6	39	प्रीति	18	29	ब	२४	३५	२५	२१	15	२	मी. 25/58	पुण्यकाल संक्रां. 10/41 तक, **गुरु वक्री 13/19,**	५	२६	१९	३०
३५.१०	८	मंग	२६	२८	16	01	पूभा	७	१०	8	18	आयु	18	03	कौ	२६	२८	२६	२२	16	३	मीन	स. सि. यो. 8/16 से प्रारम्भ	५	२६	१९	३०
३५.१३	९	बुध	२६	२०	15	58	उभा	९	२५	9	12	सौभा	16	58	ग	६	२०	२७	२३	17	४	मीन	भ. 27/32 से, बुध रोहि. में 24/17	५	२६	१९	३१
३५.१३	१०	गुरु	२४	८	15	05	रेव	९	३५	9	16	शोभ	15	13	वि	२४	०८	२८	२४	18	५	मे. 9/16	भ. 15/05 तक, **पंचक समाप्त** 9/16, स. सि. यो.	५	२६	१९	३१
३५.१३	११	शुक्र	१९	५३	13	24	अश्वि	७	४३	8	32	अति	12	49	बा	१९	५३	२९	२५	19	६	मेष	**योगिनी एकादशी व्रत,** गण्डमूल 8/32 तक,	५	२७	१९	३१
३५.१३	१२	शनि	१३	५८	11	02	भर / कृति	४ / ५८	०५ / ५५	7 / 29	05 / 01	सुक	9	51	तै	१३	५८	३०	२६	20	७	वृ. 12/37	शनि प्रदोष व्रत	५	२७	१९	३२
३५.१३	१३	रवि	६	३५	8	05	रोहि	५२	४०	26	31	धृति / शूल	6 / 26	25 / 36	व	६	३५	३१	२७	21	८	वृष	भ. 8/05 से 18/24 तक, **सूर्य आर्द्रा में 27/51,** सूर्य सायन कर्क **B**	५	२७	१९	३२
००.००	१४	रवि	५८	८	28	42	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
३५.१३	३०	चंद्र	४९	५	25	05	मृग	४५	४५	23	45	गंड	22	34	च	२३	३७	आ	२८	22	९	मि. 13/09	सोमवती अमावस (स्नानदान देव, पितृकार्येपु), शक आषाढ़ प्रारंभ, स.सि.यो.	५	२७	१९	३२

A संक्रान्ति, मु. १५, पुण्यकाल संक्रां. अगले दिन 10/41 तक **B** में 11/16, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	०	१	१०	०	४	९	३
०१	०१	१७	०७	०३	१५	२१	०८	०८
००	५१	१२	५७	०१	३२	४०	१०	१०
१४	२५	३५	२५	२५	४७	४९	३०	३०
57 18	768 15	44 1	-67 -13	0 13	61 14	3 2	3 11	3 31
मृग ३	पूभा ४	भर २	कृति ४	धनि ३	भर १	पूफा ३	उपा ४	पुष्य २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

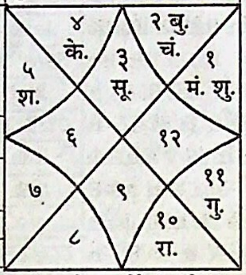
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



चंद्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	०	१	१०	०	४	९	३
०६	२५	२१	१५	०२	२१	२२	०७	०७
४३	११	३५	३२	५७	४४	००	५१	५१
५७	५१	४४	०३	०९	१९	२१	२६	२६
57 16	906 4	43 38	87 28	1 23	62 50	3 34	3 11	3 11
आर्द्रा १	मृग १	भर ३	रोहि २	धनि ३	भर ३	पूफा ३	उपा ४	पुष्य २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति श्री सहित भगवान् विष्णु की पूजार्चन के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर संहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति छाता, जूते, आँवले, आम, खरबूज़े जलापूरित घड़ा पात्र, वस्त्रादि का दान करना पुण्यप्रद होता है। **स्वास्थ्य**—आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। इस मास शीतल जल का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है। **आषाढ़ संक्रान्ति** 14 जून, रविवार को शतभिषा नक्षत्र कालीन अर्द्ध-रात्रि के बाद प्रातः 4 बजकर 17 मिंट पर लगेगी, अतएव स्नान-दान, जपादि का **पुण्यकाल 15 जून सोमवार को सूर्योदय से प्रातः** 10 बजकर 41 मिंट तक रहेगा। यह **संक्रान्ति १५ मुहूर्त्ति रविवार** को लगने से सर्व प्रकार के अनाज जैसे—गेहूँ, जौं, चना, चावल, मैदा, मक्का एवं सरसों, चीनी, घृत, मूंग, उड़द, खल-बिनौले, सोना-चाँदी आदि तेज भाव होंगे। रविवार की **संक्रान्ति** होने से राजनेताओं में परस्पर टकराव एवं विग्रह रहे। सीमावर्ती प्रदेशों काश्मीर, पाक आदि देशों में कहीं आतंकवादी, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं। लोगों को दुख पीड़ा एवं भयकारक हालात का सामना रहे—**संक्रान्तिरादित्य दिने न शस्ता करोति युद्धं नृपतेरतीव। धान्यं महर्घ प्रतिरौद्रवार्ता प्रजा भवेद् दुःखित हीनदीन॥** सूर्य द्वारा आर्द्रा प्रवेश चतुर्दशी तिथि एवं रविवार को होने से गेहूँ, चने, धान्य, चावल, चौपाय, दूध-दवाईयाँ, तैलादि तरल द्रव्य विशेष तेज भाव होंगे। **सं. राशिफल**–मेष, वृष, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ व मीन राशि वालों को संक्रान्ति राशि फल शुभ होगा। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष के उत्तरार्ध भाग में भारत के पूर्व-पश्चिमी क्षेत्रों में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६६, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाकः १९३१ तारीखें

सन् 2009 ई. (ता. 23 जून से 7 जुलाई तक)
सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः बु. पूर्व में, परन्तु 2 जुला. से अस्त होगा। मं. एवं शुक्र भी पूर्वी क्षितिज में होंगे। गुरु पश्चिमी कपाल में तथा सायं श. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल	आषा. शक	जमा. मु.	जून	आषा. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५.१२	१	मंग	३९	४५	21	22	आर्द्रा	३८	३०	20	52	वृद्धि	18	26	किं	१४	२५	२	२९	23	१०	मिथुन	आषाढ़ शुक्ल पक्षारम्भः	५	२८	१९	३२
३५.११	२	बुध	३०	४०	17	44	पुर्न	३१	३०	18	04	ध्रुव	14	21	बा	५	१३	३	३०	24	११	क. 12/45	**रथयात्रा** (श्रीजगन्नाथपुरी), पुष्य नक्षत्र 18/04 बाद, चन्द्रदर्शन, ३० मु.	५	२८	१९	३२
३५.१०	३	गुरु	२२	८	14	20	पुष्य	२५	०३	15	30	व्या.	10	27	ग	२२	०८	४	रज	25	१२	कर्क	भ. 24/49 से, रजब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, **गुरु पुष्य योग**	५	२९	१९	३२
३५.१०	४	शुक्र	१४	३०	11	17	श्ले.	१९	३३	13	18	हर्ष वज्र	6 27	49 35	वि	१४	३०	५	२	26	१३	सिं. 13/18	भ. 11/17 तक, बुध मृग. में 29/09, शुक्र कृति में 21/42	५	२९	१९	३३
३५.१०	५	शनि	८	५	8	43	मघा	१५	१८	11	36	सिद्धि	24	48	बा	८	०५	६	३	27	१४	सिंह	**स्कन्द षष्ठी**, कुमार षष्ठी	५	२९	१९	३३
३५.१०	६	रवि	३	८	6	44	पू.फा.	१२	३३	10	30	व्य.	22	32	तै	३	०८	७	४	28	१५	कं. 16/19	भ. 29/24 से, विवस्वत सप्तमी, स. सि. यो. 10/30 बाद	५	२९	१९	३३
००.००	७	रवि	५९	४८	29	24	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
३५.१०	८	चंद्र	५८	५	28	43	उ.फा.	११	२३	10	02	वरी	20	48	वि	२८	५७	८	५	29	१६	कन्या	भ. 17/04 तक, मंगल कृति. में 5/37, **शुक्र वृष में 24/36, श्रीदुर्गाष्टमी**	५	२९	१९	३३
३५.०९	९	मंग	५८	००	28	42	हस्त	११	४८	10	13	परि	19	36	बा	२८	०३	९	६	30	१७	तु. 22/34	भढली नवमी, **बुध मिथुन** में 22/38, मेला शरीक भवानी (काश्मीर)	५	३०	१९	३३
३५.०८	१०	बुध	५९	३०	29	18	चित्रा	१३	५३	11	03	शिव	18	55	तै	२८	४५	१०	७	जुला	१८	तुला	**जुलाई मास प्रारम्भ**, यूरेनस वक्री 13/06	५	३०	१९	३३
३५.०७	११	गुरु	६०	००	पूरा	दिन	स्वा.	१७	२८	12	29	सिद्ध	18	41	व	२९	५५	११	८	2	१९	तुला	भ. 17/53 से, **बुध पूर्व में अस्त 25/13**	५	३०	१९	३३
३५.०५	११	शुक्र	२	२०	6	27	विशा	२२	१५	14	25	साध्य	18	50	वि	२	२०	१२	९	3	२०	वृं. 7/54	भ. 6/27 तक, **देवशयनी एकादशी व्रत, मंगल वृष में 21/13, A**	५	३१	१९	३३
३५.०४	१२	शनि	६	२५	8	05	अनु	२८	१३	16	48	शुभ	19	20	बा	६	१५	१३	१०	4	२१	वृश्चिक	**शनि प्रदोष व्रत**, बुध आर्द्रा में 8/40, गण्डमूल 16/48 से प्रा.	५	३२	१९	३३
३५.०३	१३	रवि	११	२३	10	05	ज्ये.	३४	५८	19	31	शुक्ल	20	06	तै	११	२३	१४	११	5	२२	ध. 19/31	सूर्य पुर्न. में 27/24, गण्डमूलादि	५	३२	१९	३३
३५.०२	१४	चंद्र	१७	८	12	23	मूल	४२	२०	22	28	ब्रह्म	21	02	व	१७	०८	१५	१२	6	२३	धनु	भ. 12/23 से 25/37 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, **B**	५	३३	१९	३३
३५.००	१५	मंग	२३	१५	14	51	पूषा	५०	००	25	33	ऐंद्र	22	06	ब	२३	१५	१६	१३	7	२४	धनु	**आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, स्नानदानादि**	५	३३	१९	३३

A चातुर्मास्य व्रतादि नियम प्रा., B वायु परीक्षा, शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), अम्बिका व्रत.

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	०	१	१०	०	४	९	३
१३	०७	२६	२६	०२	२९	२२	०७	०७
२४	२८	३९	५१	४३	०८	२७	२९	२९
४०	००	४५	००	२६	४५	०७	११	११
57 13	797 44	43 9	109 12	2 43	64 20	4 9	3 11	3 11
आर्द्रा ३	पूफा ४	भर. ४	मृग २	धनि ३	कृति १	पूफा ३	उषा ४	पुष्य २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 जुलाई.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	१	२	१०	१	४	९	३
२१	१६	०२	१२	०२	०७	२३	०७	०७
०२	४८	२२	३४	१६	४८	०२	०३	०३
१३	१८	५९	४६	४४	३७	३३	४४	४४
57 11	708 13	42 35	126 50	4 8	65 47	4 46	3 10	3 10
पुर्न १	पूषा २	कृति २	आर्द्रा २	धनि ३	कृति ४	पूफा ३	उषा ४	पुष्य २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया तिथि को (24 जून) को पुष्य नक्षत्रकालीन सुभद्रा सहित भगवान श्री जगन्नाथ की रथयात्रा का भव्य उत्सव पुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य नगरों में बड़े उत्साह एवं श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। देवशयनी एकादशी (3 जुला.) से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी पर्यन्त धर्मपरायण तपस्वी लोग **चातुर्मास्य व्रतादि** नियमों का पालन करते हुये चार मास तक नित्य भगवान विष्णु स्तोत्रों सहित भगवान विष्णु के पूजन करने का विधान है। पूजनोपरान्त वेदपाठी ब्राह्मणों को दक्षिणा एवं मिष्ठान्न सहित भोजन करवाने से विशेष पुण्यों की प्राप्ति होती है। **गुरु पूर्णिमा** (7 जुला.) को भगवान विष्णु एवं **ऋषि वेदव्यास** की पूजार्चना करके अपने इष्ट गुरु के प्रति आस्था रखते हुए यथाशक्ति तन, मन, धनादि के दान द्वारा सेवा करने का विधान है। **आषाढ़ मास में पांच मंगलवारों** का समावेश होने से देश में कहीं छत्रभङ्ग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं अथवा युद्धभय होता है। साम्प्रदायिक दंगे व उपद्रवों का भय होता है। किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु एवं अपदस्थ होने के संकेत हैं। पक्षारम्भ से गुरु वक्री होकर कुम्भ राशि में संचरित है तथा ता. 3 जुला. से **मंगल वृष राशि में** प्रविष्ट होकर शनि के साथ परस्पर दृष्टिपात (४-१०) करेंगे, जिससे अनाज, चने, उड़द, गुड़, शक्कर, चीनी, खाद्य तेल, सरसों, सोना, चांदी आदि तेज़ होंगे। महंगाई की दर और तेज़ होगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष में भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में मानसून की व्यापक वर्षा प्रारम्भ होगी।

वि. संवत् २०६६,			श्रावण कृष्ण पक्ष					शाक: १९३१										तारीखें						चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	सन् 2009 ई. (ता. 8 जुलाई से 22 जुलाई तक) सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु	भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल				नक्षत्र	समाप्ति काल				योग	समाप्ति काल					आषा. शक	श्राव. मु.	जुलाई	आषा. प्र.				ग्रह दर्शन–प्रातः मं. और शु. पूर्व कपाल में तथा गु. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। शनि सायं श. पश्चिम कपाल में होगा। (ग्रह संचार = घण्टा–मिनटों में)	सूर्योदय		सूर्यास्त	
			घटी	पल	घण्टे	मिन्ट		घटी	पल	घण्टे	मिन्ट		घण्टे	मिन्ट	करण	घटी	पल									घं.	मिं.	घं.	मिं.
३४.५६	१	बुध	२९	३८	17	25	उ.षा.	५७	४८	28	41	वैधृ	23	12	कौ	२९	३८	१७	१४	8	२५			म. 8/20	चान्द्र श्रावण मासारम्भ, शुक्र रोहि में 29/21, अशून्यशयन व्रत **A**	५	३४	१९	३२
३४.५५	२	गुरु	३५	५८	19	57	श्रव	६०	००	पूरा	दिन	विष्क	24	16	तै	२	४८	१८	१५	9	२६			मकर	विष्णु–लक्ष्मी पूजन	५	३४	१९	३२
३४.५३	३	शुक्र	४१	४८	22	18	श्रव	५	२०	7	43	प्रीति	25	10	व	८	५३	१९	१६	10	२७			कुं. 21/10	भ. 9/08 से 22/18 तक, **पंचक प्रारम्भ** 21/10, बुध पुर्न में **B**	५	३५	१९	३२
३४.५२	४	शनि	४६	५८	24	22	धनि	१२	२५	10	33	आयु	25	51	ब	१४	२३	२०	१७	11	२८			कुम्भ	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय 21/55 (जालंधर), स्वर्णगौरी व्रत	५	३५	१९	३२
३४.४८	५	रवि	५१	००	26	००	शत	१८	३५	13	02	सौभा	26	11	कौ	१८	५९	२१	१८	12	२९			कुम्भ	नाग पंचमी (राज. व बंगाल), शुक्र रोहि (2) में 5/48	५	३६	१९	३१
३४.४५	६	चंद्र	५३	३८	27	04	पूभा	२३	३०	15	01	शोभ	26	04	ग	२२	१९	२२	१९	13	३०			मी. 8/34	भ. 27/04 से प्रारम्भ	५	३७	१९	३१
३४.४५	७	मंग	५४	३८	27	28	उभा	२७	००	16	25	अति	25	27	वि	२४	०८	२३	२०	14	३१			मीन	भ. 15/16 तक, राहु उ.षा. 3 केतु पुष्य (1) में 16/59, स. सि. यो.	५	३७	१९	३१
३४.४०	८	बुध	५३	४५	27	08	रेव	२८	४३	17	07	सुक	24	15	बा	२४	१२	२४	२१	15	३२			मे. 17/07	**बुध कर्क में 8/24, पंचक समाप्त 17/07,** शुक्र रोहि (3) में 5/43	५	३८	१९	३०
३४.४०	९	गुरु	५१	३	26	03	अश्वि	२८	३८	17	05	धृति	22	27	तै	२२	२४	२५	२२	16	श्रा.			मेष	**सूर्य कर्क में 15/08, श्रावण संक्रान्ति,** मु. ३०, पुण्यकाल संक्रां.**C**	५	३८	१९	३०
३४.३५	१०	शुक्र	४६	३३	24	16	भर	२६	४०	16	19	शूल	20	03	व	१८	४८	२६	२३	17	२			वृ. 22/01	भ. 13/10 से 24/16 तक, मंगल.रोहि. में 25/14,	५	३९	१९	२९
३४.३५	११	शनि	४०	२८	21	50	कृति	२३	०५	14	53	गंड	17	08	ब	१३	३१	२७	२४	18	३			वृष	**कामिका एकादशी व्रत,** शुक्र रोहि (4) में 5/12	५	३९	१९	२९
३४.३३	१२	रवि	३२	५८	18	51	रोहि	१८	००	12	52	वृद्धि	13	44	कौ	६	४३	२८	२५	19	४			मि. 23/41	**प्रदोष व्रत,** सूर्य पुष्य में 26/57	५	४०	१९	२९
३४.३०	१३	चंद्र	२४	३०	15	28	मृग	११	५३	10	25	ध्रुव	9	58	व	२४	३०	२९	२६	20	५			मिथुन	भ. 15/28 से 25/39 तक, शुक्र मृग. में 28/12, स.सि.यो. 10/25 तक	५	४०	१९	२८
३४.२८	१४	मंग	१५	२३	11	50	आर्द्रा पुर्न	४ ५७	५५ ३८	7 28	39 44	व्या हर्ष	5 25	57 47	श	१५	२३	३०	२७	21	६			क. 23/28	**भौमवासरी अमावस** (पितृतर्पण, स्नानदानादि पुण्यम्	५	४१	१९	२८
३४.२७	३०	बुध	६	००	8	05	पुष्य	५०	२५	25	51	वज्र	21	38	ना	६	००	३१	२८	22	७			कर्क	**हरियाली अमावस, सूर्यग्रहण** (देखें पृष्ठ 11-15),स्नानदानादि **D**	५	४१	१९	२८

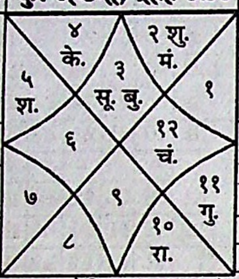
सूर्यग्रहण 22 जुलाई

A (चं. उ. व्या.) **B** 16/56, शनि पू.फा. (4) में 19/40, **C** प्रात: 8/44 बाद, स. सि. यो., बुध पुष्य में 22/05, **D** तीर्थेषु, सूर्य सायन सिंह में 22/06, मेला फाल्गु (कुरुक्षेत्र)

बुधै अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 15 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २८ ३९ ४९	११ २३ ४१ ०६	१ ०८ ०१ ३८	२ २९ ४४ २५	१० ०१ ३९ ०७	१ १६ ३९ २४	४ २३ ४२ ४२	९ ०६ ३८ १८	३ ०६ ३८ १८
57 14	789 26	42 1	127 51	5 24	67 2	5 20	3 11	3 11
पुर्न ३	रेव ३	कृति ४	पुर्न ३	धनि ३	रोह २	पूफा ४	उषा ३	पुष्य १
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	०	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30



बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 22 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ ०५ २० ४२	३ ०३ ४९ ०३	१ १२ ५४ ०१	३ १४ १४ ०४	१० ०० ५८ १७	१ २४ ३१ २९	४ २४ २१ २१	९ ०६ १६ ०३	३ ०६ १६ ०३
57 18	908 31	41 26	118 26	6 22	67 58	5 46	3 11	3 11
पुष्य १	पुष्य १	रोह १	पुष्य ४	धनि ३	मृग १	पूफा ४	उषा ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5.30



श्रावण कृष्ण पक्षफल–

श्रावण मास में आशुतोष भगवान् शंकर की पूजा का विशेष महत्त्व है, क्योंकि मासों में श्रावण मास भगवान् शंकर को विशेष प्रिय है। इस मास में जो व्यक्ति प्रतिदिन शिव पूजन, व्रतादि न कर सकें, उन्हें श्रावण के प्रत्येक सोमवार बिल्व, दूध, गंगाजल, पंचामृत सहित शिवलिङ्ग की षोडशोपचार पूजन, व्रत, **'ॐ नमः शिवाय'** मंत्र का जाप, श्रावण माहात्म्य और श्री शिवमहापुराण की कथा का श्रवण या पठन का विशेष महत्त्व होता है। इन दिनों किसी विद्वान ब्राह्मण से रूद्राभिषेक कराना भी शुभ होता है। श्रावण में ही प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत एवं पूजन व जप सहित अर्चना करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तानादि सौभाग्य की प्राप्ति होती है। **कामिका एकादशी** (18 जुलाई) संकल्पपूर्वक व्रत रखकर तुलसी सहित भगवान श्री कृष्ण–राधा की पूजा करके मन्दिर में सौभाग्य दीप जलाना चाहिए। **श्रावण संक्रान्ति** 16 जुलाई, गुरुवार को ३० मुहूर्ति, नवमी तिथि एवं अश्विनी नक्षत्र कालीन दोपहर 3 बजकर 8 मिनट से प्रारम्भ होगी। स्नान–दान, जपादि का पुण्य–काल प्रात: 8-44 से शुरू होगा।

लोक भविष्य–श्रावण संक्रा. से कर्क राशि पर सूर्य, बुध व केतु का सम्बन्ध होना तथा पक्षान्त में अमावस (22 जुला.) को **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** लगने से राजनीतिक क्षेत्रों में विशेष उतार–चढ़ाव देखने को मिलेंगे। किसी प्रमुख राजनेता के अपदस्थ या आकस्मिक निधन के भी योग हैं।

संक्रान्ति राशिफल–मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन व कुंभ राशि वालों को इसका फल लाभप्रद रहेगा।

आकाश लक्षण–पक्ष में अनेक प्रान्तों—उ.प्र., उड़ीसा, बिहार, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, पंजाब, हरियाणा में रुक–रुक कर व्यापक वर्षा के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६६, श्रावण शुक्ल पक्ष शाकः १९३१

सन् 2009 ई. (ता. 22 जुलाई से 6 अगस्त तक)
सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व में, उससे कुछ ऊपर मं. होगा, गु. पश्चिमी क्षितिज में डूबने को होगा। सायं बु. पश्चिम में तथा उससे काफी ऊपर शनि होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल	तारीखें श्रा. शुक्ल	रज्जब मु.	जुलाई	श्रा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
००.००	१	बुध	५६	४५	28	23	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	22	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
३४.२३	२	गुरु	४८	००	24	54	श्ले	४३	४०	23	10	सिद्धि	17	38	बा	२२	२३	१	२९	23	८	सिं. 23/10	चंद्रदर्शन, मु. १५, बुध आश्ले. में 11/08, **मेला छिन्नमस्तिका (A)**	५	४२	१९	२७
३४.२०	३	शुक्र	४०	१३	21	47	मघा	३७	५३	20	51	व्य.	13	53	तै	१४	०७	२	शव	24	९	सिंह	**मधुस्रवा तृतीया, हरियाली तीज,** शब्बान (मु.) प्रारम्भ, सिंघारातीज	५	४२	१९	२६
३४.१५	४	शनि	३३	३८	19	10	पूफा	३३	१८	19	02	वरी	10	31	व	६	५६	३	२	25	१०	कं. 24/40	भ. 8/29 से 19/10 तक, **वरद् चतुर्थी,** दूर्वा गणपति व्रत	५	४३	१९	२५
३४.१३	५	रवि	२८	४३	17	12	उफा	३०	१८	17	50	परि / शिव	7 / 29	38 / 18	ब	१	११	४	३	26	११	कन्या	**नाग पंचमी,** बुध पश्चिम में उदय 12/34, **शुक्र मिथुन में (B)**	५	४३	१९	२४
३४.१०	६	चंद्र	२५	३०	15	56	हस्त	२९	०५	17	22	सिद्ध	27	36	तै	२५	३०	५	४	27	१२	तु. 29/25	कल्कि जयंती (मतान्तरे)	५	४४	१९	२४
३४.०५	७	मंग	२४	१५	15	27	चित्रा	२९	४५	17	39	साध्य	26	30	व	२४	१५	६	५	28	१३	तुला	भ. 15/27 से 27/36 तक, गो. तुलसीदास जयन्ती,	५	४५	१९	२३
३४.०३	८	बुध	२४	५५	15	44	स्वा	३२	२०	18	42	शुभ	26	00	ब	२४	५५	७	६	29	१४	तुला	**श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-कांगड़ा-चामुण्डादेवी, बुधाष्टमी व्रत**	५	४६	१९	२३
३४.००	९	गुरु	२७	२५	16	44	विशा	३६	४०	20	26	शुक्ल	26	02	कौ	२७	२५	८	७	30	१५	बृ. 13/57	बुध मघा (1) **सिंह में 15/54, वक्री गुरु** धनि 2 **मकर में 19/52**	५	४६	१९	२२
३३.५५	१०	शुक्र	३१	२५	18	21	अनु	४२	२५	22	45	ब्रह्म	26	31	ग	३१	२५	९	८	31	१६	बृश्चिक	गण्डमूलादि रात्रि 10/45 उपरांत	५	४७	१९	२१
३३.५३	११	शनि	३६	४०	20	27	ज्ये.	४९	१८	25	30	ऐंद्र	27	18	व	४	०३	१०	९	अग	१७	ध. 25/30	भ. 7/24 से 20/27 तक, **पवित्रा एकादशी व्रत,** शुक्र आर्द्रा में **(C)**	५	४७	१९	२०
३३.५०	१२	रवि	४२	४०	22	52	मूल	५६	४८	28	31	वैधृ	28	18	ब	९	४०	११	१०	2	१८	धनु	सूर्य आश्ले. में 25/46, गण्डमूलादि, स. सि. योगः	५	४८	१९	१९
३३.४५	१३	चंद्र	४९	००	25	25	पूषा	६०	००	पूरा	दिन	विष्क	29	24	कौ	१५	५०	१२	११	3	१९	धनु	सोम प्रदोष व्रत	५	४९	१९	१९
३३.४३	१४	मंग	५५	२५	27	59	पूषा	४	३५	7	39	प्रीति	पूरा	दिन	ग	२२	१३	१३	१२	4	२०	म. 14/26	भ. 27/59 से प्रारम्भ	५	४९	१९	१८
३३.४०	१५	बुध	६०	००	पूरा	दिन	उषा	१२	१८	10	45	प्रीति	6	29	वि	२८	२७	१४	१३	5	२१	मकर	भ. 17/12 तक, **श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन** (देखें पृष्ठ 81) **D**	५	५०	१९	१८
३३.३८	१५	गुरु	१	२८	6	25	श्रव	१९	४०	13	42	आयु	7	27	ब	१	२८	१५	१४	6	२२	कु. 27/05	**श्रावण पूर्णिमा,** स्नानादि, पंचक प्रारम्भ 27/05, ऋग्वेदि उपाकर्म,**E**	५	५०	१९	१७

(A) (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ **(B)** 25/07, **श्रीकल्कि जयंती,** स. सि. यो. **(C)** 20/44, श्रीतिलक पुण्य तिथि, गण्डमूलादि, पुत्रदा एकादशी
D श्रीअमरनाथ गुफा दर्शन, गायत्री जयन्ती, श्रावणी उपाकर्म, यजु-अर्थ-उपाकर्म **E** मंगल मृग. में 13/34

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	१	३	१०	२	४	९	३
१२	१३	१७	२७	००	०२	२५	०५	०५
०२	०१	४२	२७	११	२९	०२	५३	५३
०१	२६	१९	५०	२३	३४	५६	४८	४८
57	756	40	106	7	68	6	3	3
22	50	50	35	7	44	9	11	11
पुष्य ३	स्वा २	रोह ३	श्ले ४	धनि ३	मृग ३	पूफा ४	उषा ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	१	४	९	२	४	९	३
१९	१९	२३	१०	२९	११	२५	०५	०५
४१	१६	०६	५३	१२	४२	५३	२८	२८
१३	१८	३३	३३	२५	२७	३४	२२	२२
57	716	39	93	7	69	6	3	3
28	24	59	13	39	35	35	11	11
श्ले १	श्रव ३	रोह ४	मघा ४	धनि २	आर्द्रा २	पूफा ४	उषा ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



श्रावण शुक्ल पक्षफल–

पक्षारम्भ से अष्टमी तक माता चिन्तपूर्णी (छिन्नमस्तिका) एवं चामुण्डा देवी (कांगड़ा) के दरबार में भगवती जागरण, कीर्तन, लंगर एवं भव्य मेलों का आयोजन होता है। इस वर्ष प्रतिपदा का क्षय एवं ग्रस्तोदित सूर्यग्रहण होने के कारण द्वितीया तिथि (23 जुलाई) से पर्व का शुभारम्भ होगा। परन्तु घटस्थापन, श्री दुर्गा पूजनादि शुभ कृत्यों का संकल्प तृतीया तिथि 24 (जुलाई) को करना प्रशस्त होगा। इसी दिन **हरियाली** तीज को नवविवाहिता स्त्रियाँ नए वस्त्राभूषण धारण करके झूलनोत्सव मनाती हैं। चतुर्थी (25 ता०) को **दूर्वागणपति** व्रत होता है। पंचमी को नागपंचमी (26 जुलाई) तिथि नागों की उत्पत्ति की तिथि है। इस दिन नागों की विशेष रूप से पूजा होती है। इससे नागों से भय नहीं रहता। विषदोष भी दूर हो जाता है। नाग भगवान् शंकर के आभूषणों के रूप में प्रतिष्ठित है। जो प्रकारान्तर से भगवान् शिव के पूजन का ही प्रतीक रूप है। सायं व्या० षष्ठी तिथि **श्रीकल्कि जंयती** भी 26 जुला. को ही रहेगी। श्री **दुर्गाष्टमी (चिन्तपूर्णी) का महापर्व** 29 जुला० को रहेगा। 1 अग० को **पवित्रा एका० पुत्रदा एकादशी** के नाम से भी प्रख्यात है। सोमप्रदोष (3 अग०) श्रावण का मुख्य व्रत/पर्व है। इस दिन सायंकाल को भगवान् शंकर की पूजा एवं स्तोत्रपाठ करना चाहिए। **श्रावण पूर्णिमा** (5 अगस्त) को भाई-बहन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक रक्षा बन्धन मनाया जाएगा। यद्यपि रक्षा बन्धन भद्रा रहित काल में प्रशस्त मानी जाती है, परन्तु आवश्यक परिस्थिति में भद्रा मुख काल छोड़कर रक्षा बन्धन कर सकते हैं। (देखें पृष्ठ—) इसी दिन धर्मपरायण लोग श्री अमरनाथ गुफा में भगवान शिवलिंग के दिव्य दर्शनों का लाभ उठाते हैं।

वि. संवत् २०६६,			भाद्रपद कृष्ण पक्ष									शाक: १९३१								तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	सन् 2009 ई. (7 अगस्त से 20 अगस्त तक) सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु	मा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल				नक्षत्र	समाप्ति काल				योग	समाप्ति काल					श्रा. शक	शब्बा. मु.	अगस्त	श्राव. प्र.		ग्रह दर्शन–प्रातः शु. पूर्व क्षितिज में, उससे ऊपर मं. होगा। सायं गु. पूर्व में तथा बु. एवं श. पश्चिम क्षितिज में होंगे।	सूर्योदय		सूर्यास्त	
			घड़ी	पल	घण्टे	मिनट		घड़ी	पल	घण्टे	मिनट		घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल							घं.	मिं.	घं.	मिं.
३३.३३	१	शुक्र	६	५५	8	37	धनि	२६	२३	16	24	सौभा	8	14	कौ	६	५५	१६	१५	7	२३	कुम्भ	बुध पू.फा. में 19/30,	५	५१	१९	१६
३३.२८	२	शनि	११	३५	10	30	शत	३२	१५	18	46	शोभ	8	47	ग	११	३५	१७	१६	8	२४	कुम्भ	भ. 23/15 से, कज्जली तीज	५	५२	१९	१५
३३.२५	३	रवि	१५	२०	12	00	पूभा	३७	१०	20	44	अति	9	02	वि	१५	२०	१८	१७	9	२५	मी. 14/17	भ. 12/00 तक, **श्रीगणेश संकष्ट (बहुला) चतुर्थी व्रतम्** **A**	५	५२	१९	१४
३३.२०	४	चंद्र	१७	५३	13	02	उभा	४०	५५	22	15	सुक	8	56	बा	१७	५३	१९	१८	10	२६	मीन		५	५३	१९	१३
३३.१५	५	मंग	१९	१०	13	34	रेव	४५	५३	23	15	धृति	8	27	तै	१९	१०	२०	१९	11	२७	मे. 23/15	**पंचक समाप्त 23/15, चन्दन षष्ठी व्रत,** चन्द्रोदय 21/52 (जालन्धर),	५	५४	१९	१२
३३.१२	६	बुध	१९	८	13	33	अश्वि	४४	३०	23	42	शूल	7	32	व	१९	०८	२१	२०	12	२८	मेष	भ. 13/33 से 25/15 तक, हल षष्ठी, शनि उ.फा. (1) में 28/41	५	५४	१९	११
३३.०७	७	गुरु	१७	३५	12	57	भर	४४	०८	23	34	गंड वृद्धि	6 28	09 18	ब	१७	३५	२२	२१	13	२९	वृ. 29/26	शीतला सप्तमी, **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त,** चन्द्रोदय रात्रि **B**	५	५५	१९	१०
३३.०२	८	शुक्र	१४	३५	11	45	कृति	४२	२०	22	51	ध्रुव	25	59	कौ	१४	३५	२३	२२	14	३०	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** (वैष्णव) चन्द्रोदय 23/58, गोकुलाष्टमी	५	५५	१९	८
३२.५७	९	शनि	१०	८	9	59	रोहि	३९	०८	21	35	व्या	23	13	ग	१०	०८	२४	२३	15	३१	वृष	भ. 20/51 से, **गुग्गा नवमी, भारत स्वतन्त्रता दिवस,** स. सि. योग:	५	५६	१९	७
३२.५३	१०	रवि	४	२३	7	42	मृग	३४	४०	19	49	हर्ष	20	02	वि	४	२३	२५	२४	16	भाद्र	मि. 8/45	भ. 7/42 तक, अजा एकादशी व्रत स्मार्त, **सूर्य सिंह में 23/29, C**	५	५७	१९	६
००.००	११	रवि	५७	२८	28	56	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
३२.५०	१२	चंद्र	४९	४०	25	49	आर्द्रा	२९	१३	17	38	वज्र	16	31	कौ	२३	३४	२६	२५	17	२	मिथुन	**अजा एकादशी व्रत वैष्णव, वत्स द्वादशी,** बुध उ.फा. में 10/20,	५	५७	१९	५
३२.४५	१३	मंग	४१	१३	22	27	पुर्न	२२	५८	15	09	सिद्धि	12	45	ग	१५	२७	२७	२६	18	३	क. 9/48	भ. 22/27 से, भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, कैलाश यात्रा प्रा.	५	५८	१९	४
३२.४३	१४	बुध	३२	३३	18	59	पुष्य	१६	२३	12	31	व्य पती	8 28	50 53	वि	६	५३	२८	२७	19	४	कर्क	भ. 8/48 तक, **बुध कन्या में 29/23, कुशाग्रहणी पिठौरी, D**	५	५८	१९	३
३२.३७	३०	गुरु	२३	५३	15	32	श्ले	९	४३	9	52	परि	25	01	ना	२३	५३	२९	२८	20	५	सिं. 9/52	**गुरुवारी अमावस** स्नान दान, देव पितृ आदि कार्येषु	५	५९	१९	२

A चन्द्रोदय 20/54 (जालंधर) **B** 23/09 (जालन्धर), (देखें पृष्ठ 81), शुक्र पुर्न में 8/20 **C** **भाद्रपद संक्रान्ति,** मु. १५, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद एवं अगले दिन सू.उ. से, **मंगल मिथुन में 15/27**
D अमावस 'ॐ हूँ फट् स्वाहा' इह मन्त्रेण कुशोत्पाटनम्, अघोरा चतुर्दशी

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	१	४	९	२	४	९	३
२७	००	२८	२२	२८	२१	२६	०५	०५
२१	०२	२५	३२	१०	०१	४७	०२	०२
२९	२०	०४	१०	१५	५४	०३	५६	५६
57 38	830 2	39 23	79 30	7 51	70 23	6 52	3 11	3 31
अश्ले ४	कृति २	मृग २	पूफा ३	धनि २	पुर्न १	उफा १	उषा ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

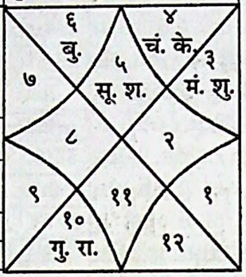
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	२	५	९	२	४	९	३
०३	२७	०२	००	२७	२८	२७	०४	०४
०७	१६	१९	००	२३	०५	२८	४३	४३
४१	५५	५५	१९	१३	२९	४४	५१	५१
57 47	894 40	38 47	67 28	7 46	70 54	7 4	3 11	3 11
मघा १	श्ले ४	मृग ३	उफा २	धनि २	पुर्न ३	उफा १	उषा ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में चतुर्थी **(बहुला चौथ)** 9 अगस्त को व्रत रखकर सायंकाल को श्रीगणेश जी का लड्डूओं सहित पूजन करे और चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने से अभीष्ट की प्राप्ति होती है। ता. 11 को **चन्दन षष्ठी** का व्रत रखकर सूर्य व चन्द्रमा की पूजा, व्रत करने से धन, सन्तति एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। 13 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत सप्तमी योगे एवं अर्द्धरात्रि को अष्टमी व्याप्त रहेगी। 14 अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी, शुक्रवार को अष्टमी दुपै. 11/45 तक होगी, परन्तु अर्द्धरात्रि नवमी में रोहिणी नक्षत्र व्याप्त रहेगा। ता. 16 अग. को **भाद्रपद संक्रांति** रविवार को १५ मुहूर्त्ति है। सिंह राशि पर सूर्य-शनि का योग रहेगा। फलस्वरूप राजनीतिक हालात अस्थिर होंगे। राजनेताओं में परस्पर टकराव एवं विग्रह पैदा होंगे। किसी प्रमुख नेता के वर्चस्व के लिए हानिकर होगा। सर्व प्रकार के अनाज तेज़ भाव होंगे। सामान्य लोगों में दुःख व भय के हालात् बनेंगे। ता. 17 को अजा एकादशी व्रत (वैष्णव) होगा। ता. 19 अग. को पिठोरी अमावस प्रदोष काल स्पर्श से कुशादि ग्रहण के लिए प्रशस्त होगी। ता. 20 को गुरूवासरी अमावस में तीर्थ स्थान पर स्नान, दान, जपादि कार्यों के लिए विशेष पुण्यप्रद होगी। **संक्रान्ति राशिफल**–मेष, वृष, कन्या, तुला, धनु व कुम्भ राशि वालों के लिए लाभदायक रहेगी। **आकाश लक्षण**–हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणादि प्रान्तों के उत्तरी भागों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं। शेयरों में मन्दी का माहौल बनेगा।

वि. संवत् २०६६,	भाद्रपद शुक्ल पक्ष									शाक: १९३१							तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	सन् 2009 ई. (21 अगस्त से 4 सितंबर तक) सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा/शरद् ऋतु	भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल	श्रा. शक	शाबा. मु.	अगस्त	भाद्रपद		ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज में, मं. उससे ऊपर दिखेगा। सायं गु. पूर्व में तथा बु. और श. पश्चिम क्षितिज की ओर होंगे। 31 अग. से शनि पश्चिम में लुप्त हो जाएगा।	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२.३५	१	शुक्र	१५	४३	12	16	मघा पूफा	३ ५७	२५ ५५	7 29	21 09	शिव	21	23	ब	१५	४३	३०	२९	21	६	सिंह	शुक्र कर्क राशि में 20/14,	५	५९	१९	१
३२.३३	२	शनि	८	२५	9	22	उफा	५३	३५	27	26	सिद्ध	18	05	कौ	८	२५	३१	३०	22	७	कं. 10/40	**चन्द्रदर्शन**, मु. ४५, सूर्य सायन कन्या में 29/09, **शरद् ऋतु (A)**	६	००	१९	१
३२.२८	३	रवि	२	२०	6	57	हस्त	५०	४८	26	20	साध्य	15	14	ग	२	२०	मा	रम	23	८	कन्या	भ. 18/05 से 29/12 तक, **हरितालिका तृतीया**, गौरी तृतीया, **(B)**	६	१	१९	००
००.००	४	रवि	५७	५८	29	12	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
३२.२३	५	चंद्र	५५	२३	28	11	चित्रा	४९	५०	25	58	शुभ	12	58	ब	२६	४१	२	२	24	९	तु. 14/03	शुक्र पुष्य में 15/45, **ऋषि पंचमी**, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)	६	२	१८	५९
३२.१८	६	मंग	५४	५३	27	59	स्वा	५०	५५	26	24	शुक्ल	11	19	कौ	२५	०८	३	३	25	१०	तुला	**सूर्य षष्ठी व्रत**, ललिता षष्ठी व्रत, वक्री गुरु धनि (1) में 20/41	६	२	१८	५७
३२.१३	७	बुध	५६	२३	28	36	विशा	५३	५८	27	38	ब्रह्म	10	19	ग	२५	३८	४	४	26	११	वृ. 21/15	भ. 28/36 से, मंगल आर्द्रा में 23/44, **मुक्ताभरण-सन्तान** सप्तमी व्रत	६	३	१८	५६
३२.०८	८	गुरु	५९	४५	29	58	अनु	५८	४८	29	35	ऐंद्र	9	57	वि	२८	०४	५	५	27	१२	वृश्चिक	भ. 17/17 तक, **राधाष्टमी**, **श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ**, **दूर्वाष्टमी**, **C**	६	४	१८	५५
३२.०५	९	शुक्र	६०	००	पूरा	दिन	ज्ये	६०	००	पूरा	दिन	वैधृ	10	08	बा	३२	१३	६	६	28	१३	वृश्चिक	**श्रीचन्द्र नवमी** (उदासीन सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह प्रारम्भ	६	४	१८	५४
३२.००	९	शनि	४	४०	7	57	ज्ये	५	०८	8	08	विष्क	10	47	कौ	४	४०	७	७	29	१४	ध. 8/08		६	५	१८	५३
३१.५५	१०	रवि	१०	४०	10	21	मूल	१२	३०	11	05	प्रीति	11	43	ग	१०	४०	८	८	30	१५	धनु	भ. 23/39 से, सूर्य पू.फा. में 19/22, स. सि. यो. 11/05 तक	६	५	१८	५१
३१.५०	११	चंद्र	१७	८	12	57	पूषा	२०	१८	14	13	आयु	12	48	वि	१७	०८	९	९	31	१६	म. 21/00	भ. 12/57 तक, **पद्मा एकादशी व्रत**, बुध हस्त में 9/23, **शनि (D)**	६	६	१८	५०
३१.४३	१२	मंग	२३	३०	15	31	उषा	२८	००	17	19	सौभा	13	51	बा	२३	३०	१०	१०	सितं.	१७	मकर	**भौम प्रदोष व्रत**, **वामन जयन्ती**, सितम्बर मास प्रारम्भ	६	७	१८	४८
३१.३८	१३	बुध	२९	२५	17	54	श्रव	३५	१३	20	13	शोभ	14	46	तै	२९	२५	११	११	2	१८	मकर		६	८	१८	४७
३१.३३	१४	गुरु	३४	२८	19	56	धनि	४१	३५	22	47	अति	15	26	ग	१	५७	१२	१२	3	१९	कुं. 9/33	भ. 19/56 से, **पंचक प्रारम्भ 9/33**, अनन्त चतुर्दशी व्रत, **(E)**	६	९	१८	४६
३१.२८	१५	शुक्र	३८	३०	21	33	शत	४६	३८	24	56	सुक	15	47	वि	६	२९	१३	१३	4	२०	कुम्भ	भ. 8/45 तक, **भाद्रपद पूर्णिमा**, प्रौष्ठपदी महालय श्राद्धारम्भ, **(F)**	६	९	१८	४४

(A) प्रारम्भ, श्रीवराह जयन्ती **(B)** सिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी (पत्थर ४), चन्द्रदर्शन निषेध [चन्द्रास्त रात्रि 20 घं. 35 मिं.] सामवेदि उपाकर्म, शक भाद्रपद प्रारम्भ, स. सि. यो., रमज़ान (मुस्लि.) प्रारम्भ **C** दधीची जयन्ती **D** पश्चिम में अस्त 6/31, **(E)** मेला बाबा सोढल (जालन्धर), अगस्त्य उदय **(F)** शुक्र आश्ले. में 19/42, श्रीसंत्यनारायण व्रत, कदली व्रत पूर्णिमा का श्राद्ध

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	२	५	९	३	४	९	३
०९	०४	०६	०७	२६	०६	२८	०४	०४
५२	१८	४९	००	२९	२३	१८	२१	२१
३८	३५	०५	२३	४८	२९	४४	३६	३६
57	738	38	48	7	71	7	3	3
56	51	00	43	24	27	15	11	11
मघा ३	अनु १	आर्द्रा १	उफा ४	धनि १	पुष्य ३	उफा १	उषा ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	२	५	९	३	४	९	३
१७	१०	११	११	२५	१५	२९	०३	०३
३६	०४	४९	४४	३३	५७	१७	५६	५६
४५	२६	५६	०३	०३	१६	१३	१०	१०
58	736	37	15	6	72	7	3	3
8	45	5	17	39	4	23	11	11
पूफा २	शत २	आर्द्रा २	हस्त १	धनि १	पुष्य ४	उफा १	उषा ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया को अखण्ड सुहाग की कामना से गौरी तृतीया (हरितालिका तीज) (23 अगस्त) का व्रत विशेषकर सुहागिन स्त्रियाँ करती हैं। 23 अग. को ही कलंक चतुर्थी (**पत्थर चौथ**) को चन्द्रदर्शन करने से व्यक्ति को मिथ्या कलंक लगने का भय रहता है। इसी दिन सिद्धि विनायक **श्रीगणेश** जी का व्रत रखकर लड्डुओं आदि का भोग लगाने का माहात्म्य है। ता. 1 सितं. को भगवान् विष्णु की अवतार **वामन जयन्ती** है। **अनन्त चतुर्दशी** (3 सितं.) को भगवान् श्री विष्णु की पूजा करने का विधान है। इसी दिन जालन्धर में (सोढल मन्दिर में) शेषनाग के अवतार बाबा सोढल का भव्य मेला लगता है। ता. 4 सितं. शुक्रवार को भाद्रपद पूर्णिमा है। इस दिन पूर्णिमा व्रत तथा इसी दिन पूर्णिमा का श्राद्ध होगा। **सूर्य-शनि का** योग अभी इस पक्ष में भी बना हुआ है। जिससे राजीतिक क्षेत्र में अस्थिरता का वातावरण होगा। राजनेताओं में परस्पर झगड़े, विद्वेष, दोषारोपण एवं टकराव रहे। किसी विशिष्ट नेता के अनाज आदि के मूल्यों में आकस्मिक तेजी हो। अत्यधिक महँगाई के कारण सामान्य लोग परेशान हों। भाद्रपद में **पाँच शुक्रवार** होने के कारण जनसंख्या में विशेष वृद्धि हो तथा सुख के साधनों का भी विस्तार हो–**शुक्रस्य पंचवारा यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्षं च सुखं तंत्र प्रवर्तते॥**

आकाश लक्षण–भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में उपयोगी वर्षा की कमी रहे। परन्तु बिहार, उड़ीसा, म.प्र. आदि में बाढ़ादि का प्रकोप हो।

वि. संवत् २०६६,	**आश्विन कृष्ण पक्ष**						शाक: १९३१										तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	सन् 2009 ई. (ता. 5 सितंबर से 18 सितंबर तक) सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, शरद् ऋतु	भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घंटे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घंटे	मिनट	योग	समाप्ति काल घंटे	मिनट	करण	घड़ी	पल	भाद्र. शक	मु. मास	सितंबर	भाद्र प्रवि.		ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, मं. पूर्व से याम्योत्तरवृत्त की ओर जाता दिखेगा। सायं गु. पूर्व में तथा बु. पश्चिम क्षितिज के पास होगा। 14 सितं. से बुध पश्चिम में लुप्त हो जाएगा।	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३१.२५	१	शनि	४१	२०	22	42	पूभा	५१	१३	26	39	धृति	15	47	बा	९	५५	१४	१४	5	२१	मी. 20/15	पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध	६	१०	१८	४४
३१.२३	२	रवि	४३	८	23	25	उभा	५४	२३	27	55	शूल	15	26	तै	१२	१४	१५	१५	6	२२	मीन	द्वितीया का श्राद्ध, स. सि. योग:	६	१०	१८	४३
३१.१५	३	चंद्र	४३	४३	23	40	रेव	५६	२५	28	45	गंड	14	43	व	१३	२६	१६	१६	7	२३	मे. 28/45	भ. 11/33 से 23/40 तक, **पंचक समाप्त 28/45, बुध वक्री A**	६	११	१८	४१
३१.१५	४	मंग	४३	१५	23	30	अश्वि	५७	२५	29	10	वृद्धि	13	40	ब	१३	२९	१७	१७	8	२४	मेष	**अंगारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय 20/31, चतुर्थी का श्राद्ध	६	१२	१८	४०
३१.०८	५	बुध	४१	४८	22	55	भर	५७	२८	29	11	ध्रुव	12	18	कौ	१२	३२	१८	१८	9	२५	मेष	शनि उ.फा. 2 **कन्या में 23/58,** पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध	६	१२	१८	३९
३१.०३	६	गुरु	३९	२०	21	57	कृति	५६	३०	28	49	व्या	10	35	ग	१०	३४	१९	१९	10	२६	वृ. 11/08	भ. 21/57 से, षष्ठी का श्राद्ध	६	१३	१८	३८
३०.५८	७	शुक्र	३५	५५	20	35	रोहि	५४	३८	28	04	हर्ष	8	35	वि	७	३८	२०	२०	11	२७	वृष	भ. 9/16 तक, सप्तमी श्राद्ध, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,** प्लूटो मार्गी 22/28	६	१३	१८	३६
३०.५३	८	शनि	३१	३३	18	51	मृग	५१	४८	26	57	वज्र सिद्धि	6 27	15 38	बा	३	४४	२१	२१	12	२८	मि. 15/33	**जीवित्पुत्रिका व्रत,** अशोकाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध	६	१४	१८	३५
३०.४८	९	रवि	२६	१८	16	45	आर्द्रा	४८	१०	25	30	व्य.	24	43	ग	२६	१८	२२	२२	13	२९	मिथुन	भ. 27/33 से, मातृ नवमी, सौभाग्यवती श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, **B**	६	१४	१८	३३
३०.४३	१०	चंद्र	२०	१३	14	20	पुर्न	४३	४३	23	44	वरी	21	34	वि	२०	१३	२३	२३	14	३०	क. 18/11	भ. 14/20 तक, दशमी श्राद्ध, **एकादशी का श्राद्ध** (दुपै. 14/20 बाद)**C**	६	१५	१८	३२
३०.३८	११	मंग	१३	३०	11	40	पुष्य	३८	४०	21	44	परि	18	12	बा	१३	३०	२४	२४	15	३१	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत, शुक्र मघा 1 सिंह में 20/38,** राहु **D**	६	१६	१८	३१
३०.३५	१२	बुध	६	२०	8	48	श्ले	३३	२०	19	36	शिव	14	43	तै	६	२०	२५	२५	16	आश्वि	सिं. 19/36	भ. 29/52 से, **सूर्य कन्या में 23/23, आश्विन संक्रान्ति** मु. ३०,**E**	६	१६	१८	३०
अवम्	१३	बुध	५९	००	29	52	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०
३०.२८	१४	गुरु	५१	१५	26	57	मघा	२७	५५	17	27	सिद्ध	11	12	वि	२५	०८	२६	२६	17	२	सिंह	भ. 16/25 तक, शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध, **F**	६	१७	१८	२८
३०.२८	३०	शुक्र	४४	५३	24	14	पूफा	२२	५०	15	25	साध्य शुभ	7 28	44 27	च	१७	३४	२७	२७	18	३	कं. 20/56	**सर्वपितृ श्राद्ध, आश्विन अमावस** स्नानदानादि, पितृ विसर्जनम् **G**	६	१७	१८	२८

A 10/10, तृतीया का श्राद्ध **B** सूर्य उ.फा. में 13/18, वक्री बुध उ.फा. (4) में 20/38 **C** वक्री बुध पशिचम में अस्त 11/23 **D** उ.षा. 2 केतु पुर्न 4 में 14/51, सन्यासीनां श्राद्ध, **द्वादशी श्राद्ध** **E** पुण्यकाल मध्याह्न बाद, **श्राद्ध त्रयोदशी,** मघा त्रयोदशी, गजच्छाया योग सायं 19/36 बाद, प्रदोष व्रत, **F** मंगल पुर्न में 17/31, मास शिवरात्रि व्रत, **G** चतुर्दशी/अमावस का श्राद्ध

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	२	५	९	३	५	९	३
२५	२४	१६	१०	२४	२५	००	०३	०३
२२	०९	४३	५९	४३	३५	१६	३०	३०
३८	३१	०८	५८	१८	५२	३८	४४	४४
58 23	840 11	36 5	34 19	5 37	72 39	7 28	3 11	3 11
पूफा ४	मृगा १	आर्द्रा ४	हस्त १	धनि १	श्ले ३	उफा २	उषा ३	पुष्य ३
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	२	५	९	४	५	९	३
०१	२०	२०	०६	२४	०२	०१	०३	०३
१३	३९	१७	०९	११	५२	०१	११	११
३०	५८	३२	०४	५२	४८	३०	३९	३९
58 35	868 36	35 14	62 53	4 41	73 3	7 29	3 10	3 10
उफा (२)	पूफा ३	पुर्न १	उफा ३	धनि १	मघा १	उफा २	उषा २	पुर्न ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



नोट—सभी ग्रह/नक्षत्र संचार के संचारकाल घंटा/मिन्टों में है।

आश्विन कृष्ण पक्षफल–इस पक्ष में अपने दिवंगत पितरों के निमित्त जो व्यक्ति तिल, जौं, अक्षत, कुशा एवं गंगाजल सहित पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्र आदि का दान करता है, उसके पितर संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन-यश-सम्पदा, आदि का आशीर्वाद देते हैं—"**आयु पुत्रान् यशः स्वर्ग कीर्ति पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्॥**" जो व्यक्ति जान-बूझकर श्राद्धकर्म नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं दुःखों से पीड़ित रहता है। इस पक्ष की अष्टमी तिथि (12 सितं.) को श्रीमहालक्ष्मी (जीवित्पुत्रिका) व्रत सौभाग्यवती स्त्रियां सन्तान की दीर्घायु की कामना से करती हैं। ता. 16 सितं. को **आश्विन संक्रान्ति बुधवार** को ३० मुहूर्त्ति हैं, परन्तु स्नान-दानादि का माहात्म्य 16 सितं. की मध्याह्न से तथा अगले दिन सूर्योदय पर होगा। सभी प्रकार के (ज्ञात-अज्ञात) पितरों का श्राद्ध आश्विन **अमावस तिथि** (18 सितं.) को किया जाता है। **व्यापारिक रुख**–पक्षारम्भ में ता. 9 सितं. को शनि **कन्या राशि में आकर सूर्य, बुध के साथ होगा,** गेहूं, चना, चीनी, शक्कर, मैदा, सरसों, घी, खाद्य-तेल, खल-बिनौले आदि तथा शेयरों में तेज़ भाव होंगे। **आश्विन मास में पाँच शनिवार व रविवार अशुभ होंगे।** राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध, परिवर्तनीय एवं उथल-पुथल वाला रहेगा। ता. 15 को शुक्र सिंह राशि में आने से खल-बिनौला, गेहूँ, चने, गुड़, लाल मिर्च, नारियल, चौपाय, सोना, पीतल आदि मूँगादि लाल रंग की वस्तुओं में तेजी आएगी।

संक्रांति राशिफल–वृष, सिंह, कन्या, धनु, मकर व कुम्भ राशि वालों को शुभ फल होगा। **आकाश लक्षण**–भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६६, आश्विन कृष्ण पक्ष शाकः १९३१ तारीखें

सन् 2009 ई. (ता. 19 सितंबर से 4 अक्तू. तक)
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः

मा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः बुध पूर्व क्षितिज में, इससे कुछ ऊपर शु. दिखाई देगा। मं. याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा। सायं गु. पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल	भा. शक	मु.	सितम्बर	आश्वि प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३०.२०	१	शनि	३८	५३	21	51	उ.फा.	१८	२३	13	39	शुक्ल	25	27	किं	११	५३	२८	२८	19	४	कन्या	**शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, घटस्थापन**, दुर्गा पूजन, महाराजा अग्रसेन **A**	६	१८	१८	२६
३०.१५	२	रवि	३४	८	19	58	हस्त	१४	५८	12	18	ब्रह्म	22	53	बा	६	३१	२९	२९	20	५	तु. 23/50	चंद्रदर्शन, मु. ३०, स. सि. यो. 12/18 तक	६	१९	१८	२५
३०.०८	३	चंद्र	३०	५८	18	42	चित्रा	१३	०३	11	32	ऐंद्र	20	49	तै	२	३३	३०	श	21	६	तुला	शव्वाल (मु.) मास प्रारम्भ,	६	१९	१८	२२
३०.०३	४	मंग	२९	३३	18	09	स्वा	१२	५०	11	28	वैधृ	19	21	व	०	१६	३१	२	22	७	वृ. 29/55	भ. 6/26 से 18/09 तक, सूर्य सायन तुला में 26/49, दक्षिण गोल प्रारंभ	६	२०	१८	२१
३०.००	५	बुध	३०	१३	18	25	विशा	१४	३५	12	10	विष्क	18	31	बा	३०	१३	आ	३	23	८	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता व्रत, शक आश्विन प्रारम्भ, स. सि. यो. 12/10 से,	६	२०	१८	२०
२९.५५	६	गुरु	३२	५०	19	29	अनु	१८	१५	13	39	प्रीति	18	18	कौ	१	३२	२	४	24	९	वृश्चिक	**वक्री बुध सिंह में 8/20,**	६	२१	१८	१९
२९.५३	७	शुक्र	३७	१३	21	14	ज्ये	२३	४३	15	50	आयु	18	36	ग	५	०२	३	५	25	१०	ध. 15/50	भ. 21/14 से, **भद्रकाली जयंती**, सरस्वती आवाहन	६	२१	१८	१८
२९.५०	८	शनि	४२	५८	23	32	मूल	३०	३३	18	34	सौभा	19	20	वि	१०	०६	४	६	26	११	धनु	भ. 10/23 तक, महाष्टमी, **श्रीदुर्गाष्टमी**, सरस्वती पूजन, **B**	६	२१	१८	१७
२९.४५	९	रवि	४९	२०	26	06	पू.षा.	३८	०८	21	37	शोभ	20	19	बा	१६	०९	५	७	27	१२	म. 28/24	**महानवमी, नवरात्रे समाप्त**, शस्त्रादि पूजा, सरस्वती बलिदान **C**	६	२२	१८	१६
२९.४३	१०	चंद्र	५५	५३	28	43	उ.षा.	४५	५५	24	44	अति	21	22	तै	२२	३७	६	८	28	१३	मकर	**विजयादशमी (दशहरा)**, अपराजिता पूजन, शस्त्र पूजा **(R)**	६	२२	१८	१५
२९.३५	११	मंग	६०	००	पूरा	दिन	श्रव	५३	१३	27	40	सुक	22	17	व	२८	४९	७	९	29	१४	मकर	भ. 17/55 से, **बुध मार्गी 18/44**, भरत मिलाप	६	२३	१८	१३
२९.३०	११	बुध	१	४५	7	06	धनि	५९	३५	30	14	धृति	22	56	वि	१	४५	८	१०	30	१५	कुं. 17/01	भ. 7/06 तक, **पंचक प्रारम्भ 17/01, पापांकुशा एकादशी व्रत,**	६	२४	१८	१२
२९.२५	१२	गुरु	६	४०	9	05	शत	६०	००	पूरा	दिन	शूल	23	13	बा	६	४०	९	११	अक्तू	१६	कुम्भ	प्रदोष व्रत, अक्तूबर प्रारम्भ, वक्री नैपच्यून मकर में 28/50	६	२५	१८	१०
२९.२०	१३	शुक्र	१०	१५	10	31	शत	४	४३	8	18	गंड	23	03	तै	१०	१५	१०	१२	2	१७	मी. 27/29	**महात्मा गांधी जयन्ती,**	६	२५	१८	९
२९.१५	१४	शनि	१२	२३	11	23	पू.भा.	८	२५	9	48	वृद्धि	22	26	व	१२	२३	११	१३	3	१८	मीन	भ. 11/23 से 23/32 तक, **शरद् पूर्णिमा व्रत**, कोजागर व्रत, **D**	६	२६	१८	८
२९.१३	१५	रवि	१३	५	11	40	उ.भा.	१०	४८	10	45	ध्रुव	21	23	ब	१३	०५	१२	१४	4	१९	मीन	**आश्विन पूर्णिमा** स्नानदानादि, **महर्षि वाल्मीकि जयन्ती**, स.सि.यो. **E**	६	२६	१८	७

A जयन्ती, मातामह (नाना) का श्राद्ध, **B** सूर्य हस्त में 28/42, शुक्र पू.फा. में 18/56 **C** वक्री बुध पूर्व में उदय 8/31
(R) सरस्वती विसर्जन **D** श्रीसत्यनारायण व्रत, वक्री गुरु श्रव. (4) में 11/10, वक्री यूरेनस कुम्भ में 22/52 **E कार्तिक स्नान प्रारम्भ, बुध कन्या में 27/41**

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	२	४	९	४	५	९	३
०९	०६	२४	२८	२३	१२	०२	०२	०२
०३	५०	५५	४०	३९	३८	०१	४६	४६
०६	४९	०५	०५	१८	४८	१७	१३	१३
58	713	33	30	3	73	7	3	3
40	30	59	14	15	30	26	11	11
उफा ४	मूल ३	पुर्न २	उफा १	धनि १	मघा ४	उफा २	उषा २	पुर्न ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	२	४	९	४	५	९	३
१६	१३	२९	२९	२३	२२	०३	०२	०२
५४	५०	२२	१६	१८	२८	००	२०	२०
३६	१५	१२	००	३३	१५	२७	४७	४७
59	782	32	47	1	73	7	3	3
5	4	36	36	44	55	20	10	10
हस्त ३	उभा ४	पुर्न ३	उफा १	श्रव ४	पूफा ३	उफा २	उषा २	पुर्न ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



आश्विन शुक्ल पक्षफल–

आश्विन शुक्ल प्रति. (19 सितं.) से शारदीय नवरात्रों का शुभारम्भ होगा। इस दिन घटस्थापन, दीप प्रज्वलन एवं षोडशोपचार सहित दुर्गापूजन करके श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ प्रारम्भ किया जाता है। नवरात्रों में श्री दुर्गा पूजन, दुर्गा पाठ, कुमारी कन्या पूजन, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ निम्न मंत्र से पंचोपचार पूजन करके यथाविधि पाठारम्भ करे—**''नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥''** नवरात्र की समाप्ति (27 सितं.) पर क्षमा प्रार्थना मन्त्र पढ़ें—**मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदार्चितम्। पूर्णं भवतु तत् त्वत्प्रसादात् महेश्वरि॥** यह मन्त्र बोलकर एक पुष्प ईशान कोण में छोड़ दें और **ॐ दुर्गायै नमः**—यह मन्त्र बोलें। कुमारी पूजन में दो वर्ष से ले दस वर्ष तक की कन्याओं का पूजन प्रशस्त माना गया है। बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व **विजयादशमी** (28 सितं.) सायंकाल को श्रीराम की पूजार्चना के बाद बुराई के प्रतीक रावण दाह के साथ मनाया जाता है। ता. 29 सितं. को **भरत मिलाप** तथा 30 सितं. को पापांकुशा एकादशी का व्रत होगा। भविष्योत्तर पु. अनुसार यह पुत्र प्राप्ति व्रत भी कहलाता है। यहाँ से शुरू करके प्रतिमास १२ व्रत रखकर श्री विष्णु पूजन व स्तोत्र पाठ करने से दीर्घायु पुत्र प्राप्त होता है। **शरद् पूर्णिमा** (3 अक्तू.) की रात्रि को बादाम-मेवादि युक्त क्षीर को छिटकती चाँदनी में सुरक्षित रखकर दूसरे दिन भगवान् को भोग लगाकर तथा ब्राह्मण को भी खिलाकर स्वयं सेवन करने से अनेक प्रकार की मानसिक व शारीरिक रोगों की शान्ति होती है। आश्विन मास में ५ शनिवार एवं ५ रविवार पड़ने से आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि तथा समाज में गहन असंतोष और अशान्ति रहे। कही छत्रभंग (शासन परिवर्तन) एवं राजनीतिक अस्थिरता का माहौल बने।

वि. संवत् २०६६,	कार्तिक कृष्ण पक्ष	शाक: १९३१	तारीखें	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	सन् 2009 ई. (ता. 5 अक्तू. से 18 अक्तू. तक) सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः	भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन– 5 अक्तू. से श. प्रातः पूर्व में, इसके ऊपर शु. और बुध होंगे। 17 अक्तू. से बु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मं. तथा सायं गु. पूर्व से याम्योत्तरवृत्त की ओर होगा।

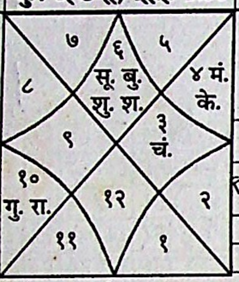
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिन्ट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिन्ट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिन्ट	करण	घड़ी	पल	आश्वि. शक	शव्वाल मु.	अक्टूबर	आश्वि. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२९.०८	१	चंद्र	१२	३०	11	27	रेव	११	५३	11	12	व्या	19	58	कौ	१२	३०	१३	१५	5	२०	मे. 11/12	**पंचक समाप्त 11/12, मंगल कर्क में 9/20, शनि पूर्व में उदय 11/15**	६	२७	१८	६
२९.०३	२	मंग	१०	५०	10	47	अश्वि	११	५५	11	13	हर्ष	18	13	ग	१०	५०	१४	१६	6	२१	मेष	भ. 22/17 से, शनि उ.फा. (3) में 21/33	६	२७	१८	४
२८.५८	३	बुध	८	१५	9	46	भर	११	००	10	52	वज्र	16	12	वि	८	१५	१५	१७	7	२२	वृ. 16/45	भ. 9/46 तक, **करक चतुर्थी, व्रत करवा चौथ,** चं.उ. रात्रि 19/55 **(Z)**	६	२८	१८	३
२८.५३	४	गुरु	४	५८	8	28	कृति	९	२८	10	16	सिद्धि	13	59	बा	४	५८	१६	१८	8	२३	वृष		६	२९	१८	२
२८.५०	५	शुक्र	१	१०	6	57	रोहि	७	२३	9	26	व्य.	11	35	तै	१	१०	१७	१९	9	२४	मि. 20/58	भ. 29/15 से, **स्कन्द षष्ठी,**	६	२९	१८	१
अवम्	६	शुक्र	५६	५५	29	15	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०
२८.४३	७	शनि	५२	१५	27	24	मृग	४	५०	8	26	वरी परि	9 30	04 24	वि	२५	०५	१८	२०	10	२५	मिथुन	भ. 16/20 तक, सूर्य चित्रा में 17/48, **शुक्र कन्या में 7/56,**	६	३०	१७	५९
२८.३८	८	रवि	४७	१५	25	25	आर्द्रा पुन	१ ५८	५५ ४५	7 30	17 01	शिव	27	38	बा	२०	१५	१९	२१	11	२६	क. 24/20	**अहोई अष्टमी व्रत,** मंगल पुष्य में 15/54, श्रीराधाष्टमी	६	३१	१७	५८
२८.३३	९	चंद्र	४१	५८	23	19	पुष्य	५५	१३	28	37	सिद्ध	24	47	तै	१४	३७	२०	२२	12	२७	कर्क	बुध हस्त में 26/22,	६	३२	१७	५७
२८.२८	१०	मंग	३६	२५	21	07	श्ले.	५१	२८	27	08	साध्य	21	51	व	९	१२	२१	२३	13	२८	सिं. 27/08	भ. 10/13 से 21/07 तक, **गुरु मार्गी 10/02,** स. सि. यो.	६	३३	१७	५६
२८.२३	११	बुध	३०	४८	18	52	मघा	४७	४०	25	37	शुभ	18	52	ब	३	३७	२२	२४	14	२९	सिंह	**रमा एकादशी व्रत,** कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	६	३३	१७	५४
२८.१८	१२	गुरु	२५	१३	16	39	पूफा	४३	५८	24	09	शुक्ल	15	54	तै	२५	१३	२३	२५	15	३०	कं. 29/47	प्रदोष व्रत, गोवत्स द्वादशी, **धन त्रयोदशी,** यमाय दीपदानं	६	३४	१७	५३
२८.१३	१३	शुक्र	१९	५०	14	31	उफा	४०	३५	22	49	ब्रह्म	13	01	व	१९	५०	२४	२६	16	३१	कन्या	भ. 14/31 से 25/34 तक, **धनवन्तरी जयन्ती, श्रीहनुमान जन्म A**	६	३५	१७	५२
२८.१०	१४	शनि	१५	५	12	37	हस्त	३७	५३	21	44	ऐंद्र	10	18	श	१५	०५	२५	२७	17	का	कन्या	**दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, सूर्य तुला में 11/20, कार्तिक B**	६	३५	१७	५१
२८.०५	३०	रवि	११	८	11	03	चित्रा	३६	०८	21	03	वैधृ विष्क	7 29	51 46	ना	११	०८	२६	२८	18	२	तु. 9/20	**कार्तिक अमावस** स्नानदानादि, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), **C**	६	३६	१७	५०

(Z) (जालं.), (देखें पृष्ठ 82), श्रीगणेश चतुर्थी व्रत **(A)** अर्द्ध रात्रि योगे, यमाय तर्पण दीपदानं च. **(B) संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से, बुध पूर्व में अस्त 9/46, श्रीहनुमान महोत्सव, नरक चौदश, काली पूजा, अमावस (पितृकार्येषु), कुबेर पूजा** (देखें पृष्ठ 82–83) **(C) बली पूजा, अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, विश्वकर्मा दिवस (पं.)**

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	३	५	९	५	५	९	३
२३	१८	०३	०७	२३	०१	०३	०१	०१
४८	५७	०६	११	१०	०६	५१	५८	५८
५५	१३	२८	५३	३६	४१	२०	३२	३२
59 20	844 51	31 15	88 27	0 21	74 15	7 10	3 11	3 11
चित्रा १	आर्द्रा ४	पुन ४	उफा ४	श्रव ४	उफा २	उफा ३	उषा २	पुन ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

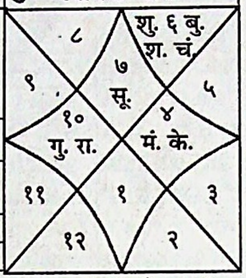
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	३	५	९	५	५	९	३
००	२७	०६	१८	२३	०९	०४	०१	०१
४५	४८	४०	२०	१२	४७	४०	३६	३६
०५	१४	४१	२८	२६	२२	५८	१७	१७
59 36	817 40	29 41	101 11	1 4	74 32	6 58	3 11	3 11
चित्रा ३	चित्रा २	पुष्य २	हस्त ३	श्रव ४	उफा ४	उफा ३	उषा २	पुन ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



कार्तिक कृष्ण पक्षफल–

कार्तिक कृष्ण पक्ष में करक चतुर्थी अर्थात् **करवा चौथ** (7 अक्तू.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। इस चौथ को केवल चन्द्र देवता की ही पूजा नहीं होती, बल्कि शिव-पार्वती और स्वामी कार्तिकेय की भी पूजा की जाती है। वैसे भी कुँआरी कन्याओं और विवाहिता स्त्रियों के लिए गौरी पूजन का विशेष माहात्म्य है। **अहोई अष्टमी** (11 अक्तू.) का भी व्रत एवं मातृ पूजन पति, सन्तानादि गृहस्थ सुख-शान्ति के लिए किया जाता है। **रमा एकादशी** (14 अक्तू.) का व्रत रखकर भगवान् लक्ष्मी-नारायण की पूजा करने से मनुष्य के पापों का क्षय और धन सम्बन्धी मनोरथों की पूर्ति होती है। **धन-त्र्योदश** (15 अक्तू.) को नवीन बर्तन का क्रय करना तथा अनाज, औषधियाँ एवं दीपदान करने से अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। श्रीहनुमान जी का जन्म यद्यपि अर्द्धरात्रि काल की चतुर्दशी को हुआ था, परन्तु परम्परागत उदय कालिक चौदश जन्म महोत्सव मनाते हैं। चतुर्दशी को भी सायंकाल को यम के लिए तर्पण एवं दीपदान करना चाहिए। ता. 17 अक्तू. को शनिवार प्रदोष व्यापिनी अमावस को ही दीपावली का महापर्व होगा। प्रदोषकाल से लेकर मध्यरात्रि के बीच श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपमाला, मन्त्र-जप-अनुष्ठानादि करने का विशेष माहात्म्य होता है।

लोक भविष्य–अमावस के दिन-शनिवार को ही कार्तिक संक्रान्ति होने से आगामी दिनों सर्व प्रकार के अनाज, जनोपयोगी व आवश्यक वस्तुओं के भाव तेज होंगे। कुछ राजनीतिक पार्टियों के मध्य विरोध, उपद्रव एवं टकराव पैदा होंगे। राजनीतिक स्थिति अस्थिर एवं असमंजसपूर्ण होगी। किसी प्रमुख नेता के लिए अनिष्ट होने के संकेत हैं। लोगों में विचित्र प्रकार के रोगोत्पत्ति हो। चोरी, डकैती की वारदातें [illegible] **आकाश लक्षण**–पंजाब, [illegible] कश्मीर, हि.प्र., हरियाणा के उत्तरी भागों में कहीं तेज तो कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं। ता. 18 अक्तू. को अन्नकूट व गोवर्धन पूजा का महोत्सव होगा।

वि. संवत् २०६६,			**कार्तिक शुक्ल पक्ष**												शाक: १९३१					तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2009 ई. (19 अक्तूबर से 2 नवम्बर तक) सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, शरद्–हेमंत ऋतु	भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान	तिथि	वार	समाप्ति काल				नक्षत्र	समाप्ति काल				योग	समाप्ति काल					शा. शक	हिजरी मु.	अक्तूबर	कार्ति. प्र.			प्रवेश	ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र एवं शनि पूर्व क्षितिज में, प्रातः मं. तथा सायं गु.–दोनों याम्योत्तर–वृत्तासन्न होंगे। बुध अभी अस्त है।	सूर्योदय		सूर्यास्त	
घटी/पल			घड़ी	पल	घण्टे	मिनट		घड़ी	पल	घण्टे	मिनट		घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल							घण्टे-मिन्ट		घं.	मिं.	घं.	मिं.
२८.००	१	चंद्र	८	२३	9	58	स्वा	३५	४०	20	53	प्रीति	28	08	ब	८	२३	२७	२९	19	३			तुला	भ्रातृ दूज (देखें पृष्ठ 81), यम द्वितीया, यमुना स्नान,	६	३७	१७	४९
२७.५८	२	मंग	७	८	9	28	विशा	३६	५०	21	21	आयु	27	01	कौ	७	०८	२८	३०	20	४			वृ. 15/10	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध चित्रा में 28/14, विश्वकर्मा जयंती	६	३७	१७	४८
२७.५३	३	बुध	७	३३	9	39	अनु	३९	३८	22	29	सौभा	26	27	ग	७	३३	२९	जि	21	५			वृश्चिक	भ. 22/06 से प्रा., 1 जिल्काद (मु.) प्रारम्भ, **दूर्वा गणपति** व्रत, **A**	६	३८	१७	४७
२७.४८	४	गुरु	९	४५	10	33	ज्ये	४४	१०	24	19	शोभ	26	25	वि	९	४५	३०	२	22	६			ध. 24/19	भ. 10/33 तक, गण्डमूल विचार	६	३९	१७	४६
२७.४३	५	शुक्र	१३	४३	12	09	मूल	५०	१५	26	46	अति	26	53	बा	१३	४३	का.	३	23	७			धनु	**ज्ञान पंचमी**, जया पंचमी, सूर्य स्वा. में 28/14, गुरु धनि (1) **(B)**	६	४०	१७	४५
२७.४०	६	शनि	१९	८	14	19	पूषा	५७	२८	29	39	सुक	27	41	तै	१९	०८	२	४	24	८			धनु	**बुध तुला में 26/17, सूर्य षष्ठी व्रत**	६	४०	१७	४४
२७.३५	७	रवि	२५	२८	16	52	उ.षा.	६०	००	पूरा	दिन	धृति	28	41	व	२५	२८	३	५	25	९			म. 12/25	भ. 16/52 से 30/12 तक,	६	४१	१७	४३
२७.३०	८	चंद्र	३२	५	19	32	उ.षा.	५	१०	8	46	शूल	29	40	ब	३२	०५	४	६	26	१०			मकर	**गोपाष्टमी,**	६	४२	१७	४२
२७.२५	९	मंग	३८	१८	22	02	श्रव	१२	४८	11	50	गंड	30	26	बा	५	१२	५	७	27	११			कुं. 25/15	**पंचक प्रा. 25/15, अक्षया नवमी, कूष्माण्ड नवमी,** आरोग्य व्रत	६	४३	१७	४१
२७.२३	१०	बुध	४३	३०	24	07	धनि	१९	४०	14	35	वृद्धि	पूरा	दिन	तै	१०	५४	६	८	28	१२			कुम्भ	बुध स्वा. में 25/11, शुक्र चित्रा में 26/36,	६	४३	१७	४०
२७.१८	११	गुरु	४७	१०	25	36	शत	२५	१३	16	49	वृद्धि	6	52	व	१५	२०	७	९	29	१३			कुम्भ	भ. 12/52 से 25/36 तक, **देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत, भीष्म C**	६	४४	१७	३९
२७.१३	१२	शुक्र	४९	८	26	24	पूभा	२९	०८	18	24	ध्रुव व्या.	6 30	48 12	ब	१८	०९	८	१०	30	१४			मी. 12/04	**तुलसी विवाह उत्सव**	६	४५	१७	३८
२७.०८	१३	शनि	४९	१५	26	28	उभा	३१	२०	19	18	हर्ष	29	02	कौ	१९	१२	९	११	31	१५			मीन	**शनि प्रदोष व्रत,** गण्डमूल 19/18 से, वैकुण्ठ चतु. (अरूणोदय व्या.)	६	४६	१७	३७
२७.०३	१४	रवि	४७	४५	25	53	रेव	३१	५३	19	32	वज्र	27	22	ग	१८	३०	१०	१२	नवं	१६			मे. 19/32	भ. 25/53 से, **पंचक समाप्त 19/32, वैकुण्ठ चतुर्दशी** (अर्द्धरात्रि व्या.)	६	४७	१७	३६
२७.००	१५	चंद्र	४४	५३	24	44	अश्वि	३१	००	19	11	सिद्धि	25	16	वि	१६	१९	११	१३	2	१७			मेष	भ. 13/19 तक, **कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, (D)**	६	४७	१७	३५

(A) गण्डमूल 22/29 से **(B)** में 8/08, **सूर्य सायन वृश्चिक** में 12/14, **हेमन्त ऋतु प्रारम्भ**, गण्डमूल 26/46 तक, शक कार्तिक प्रा. **(C) पंचक प्रारम्भ, चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त**
(D) भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, दीपदान, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्कर, **गण्डमूल 19/11 तक,** श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	३	६	९	५	५	९	३
०८	०८	१०	०१	२३	१९	०५	०१	०१
४२	२३	३१	५५	२६	४४	३५	१०	१०
४६	४९	११	१७	३३	३६	३८	५१	५१
59 50	708 42	27 38	101 19	2 39	74 47	6 40	3 11	3 11
स्वा १	उषा ४	पुष्य ३	चित्रा ३	धनि १	हस्त ३	उफा ३	उषा २	पुर्न ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



चंद्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	३	६	९	५	५	९	३
१५	०५	१३	१३	२३	२८	०६	००	००
४२	३५	३८	३६	४९	२८	२१	४८	४८
१३	०३	३९	०५	०९	४१	१४	३६	३६
60 2	819 25	25 36	98 24	3 59	74 58	6 19	3 11	3 11
स्वा ३	अश्वि २	पुष्य ४	स्वा ३	धनि १	चित्रा २	उफा ३	उषा २	पुर्न ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

'निर्णयसिन्धु' अनुसार यम द्वितीया एवं भ्रातृदूज कार्तिक शुक्ल मध्याह्न व्यापिनी पूर्व विद्धा ग्रहण करनी चाहिए। इस दिन यमुना स्नान शिव पार्वती पूजन एवं यम पूजन और बहन के घर भाई का भोजन करना विहित है। पूजनोपरान्त बहनें भाई की मंगल कामना हेतु केशर का तिलक लगाती हैं। भाई भी बहन को यथाशक्ति उपहार देते हैं। गोपाष्टमी (26 अक्तू.) को गौओं की सेवा तथा अक्षय नवमी (27 अक्तू.) को व्रत, पूजा, तर्पण और अन्नादि का दान करने से अनन्त फल होता है। देवप्रबोधिनी एकादशी (29 अक्तू.) को भगवान् विष्णु पूजा एवं चातुर्मास्त व्रत आदि नियमों की सम्पूर्ति की जाती है। इसी दिन से भीष्मपंचकों का समारम्भ होकर कार्तिक पूर्णिमा के दिन समाप्ति होती है। प्राचीन काल से ही भीष्म पंचकों के दौरान विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्यों का सम्पादन त्याज्य माना जाता रहा है। यदि विवाह का नक्षत्र उपलब्ध हो तो एकादशी के दिन ही **तुलसी विवाह** का पर्व सम्पादित किया जाता है, अन्यथा आगामी दिवस विवाह, के नक्षत्र कालीन इस पावन परम्परा को श्रद्धालुजनों द्वारा आयोजित किया जाता है। वैकुण्ठ चतुर्दशी को प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर रात्रि में भगवान् विष्णु की कमलापुष्पों से पूजा की जाती है। तत्पश्चात् भगवान् शिव की पूजा का विधान है। कार्तिक पूर्णिमा (2 नवं.) को कार्तिक स्नानादि का समापन होगा। इसी दिन संत गुरु नानक देव जी का जन्मोत्सव भी मनाया जाता है। इस दिन को सत्यनारायण का व्रत रखकर अनाज, गर्म वस्त्रों एवं फलों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। कार्तिक पूर्णिमा को ही मेला पुष्कर एवं मेला रामतीर्थ (अमृतसर) भव्य रूप से मनाया जाता है।

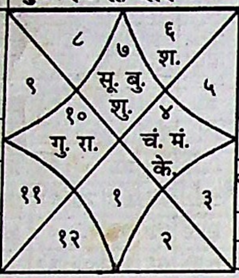
वि. संवत् २०६६,	**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष**										शाक: १९३१									तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2009 ई. (ता. 3 नवं. से 16 नवं. तक) सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः	भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिन्ट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिन्ट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिन्ट	करण	घड़ी	पल	कार्ति.	जिल्कद मु.	नवंबर	कार्ति प्र.	घण्टे-मिन्ट	ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज के पास, उससे काफी ऊपर शनि होगा। प्रातः मं. और सायं गु.–दोनों याम्योत्तरवृत्तासन्न होंगे।	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.५८	१	मंग	४०	५०	23	08	भर	२८	५५	18	22	व्य.	22	48	बा	१२	५२	१२	१४	3	१८	वृ. 24/06	**शुक्र तुला में 10/44,** मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	६	४८	१७	३५
२६.५३	२	बुध	३६	००	21	13	कृति	२५	५८	17	12	वरी	20	04	तै	८	२५	१३	१५	4	१९	वृष	नैपच्यून मार्गी 23/42	६	४९	१७	३४
२६.४८	३	गुरु	३०	४०	19	06	रोहि	२२	२८	15	49	परि	17	11	व	३	२०	१४	१६	5	२०	मि. 27/05	भ. 8/10 से 19/06 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत, चन्द्रोदय 19/37 **A**	६	५०	१७	३३
२६.४५	४	शुक्र	२५	८	16	53	मृग	१८	४५	14	20	शिव	14	13	बा	२५	०८	१५	१७	6	२१	मिथुन	सूर्य विशाखा में 12/28	६	५०	१७	३२
२६.४३	५	शनि	१९	३३	14	40	आर्द्रा	१४	५५	12	49	सिद्ध	11	13	तै	१९	३३	१६	१८	7	२२	क. 29/43		६	५१	१७	३२
२६.३८	६	रवि	१४	५	12	30	पुर्न	११	१५	11	22	साध्य शुभ	8 / 29	16 / 22	व	१४	०५	१७	१९	8	२३	कर्क	भ. 12/30 से 23/28 तक, शुक्र स्वा. में 18/38	६	५२	१७	३१
२६.३५	७	चंद्र	८	५५	10	26	पुष्य	७	४८	9	59	शुक्ल	26	35	ब	८	५५	१८	२०	9	२४	कर्क	**कालभैरवाष्टमी,** मंगल आश्ले. में 14/46	६	५२	१७	३०
२६.३०	८	मंग	३	५८	8	28	श्ले	४	३८	8	44	ब्रह्म	23	53	कौ	३	५८	१९	२१	10	२५	सिं. 8/44	गण्डमूलादि	६	५३	१७	२९
००.००	९	मंग	५९	२५	30	39	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	नवमी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
२६.३०	१०	बुध	५५	१५	28	59	मघा पू.फा.	१ / ५९	४८ / २३	7 / 30	36 / 38	ऐंद्र	21	18	व	२७	२०	२०	२२	11	२६	सिंह	भ. 17/49 से 28/59 तक, गण्डमूल 7/36 तक	६	५३	१७	२९
२६.२५	११	गुरु	५१	३३	27	31	उ.फा.	५७	२५	29	52	वैधृ	18	52	ब	२३	२४	२१	२३	12	२७	कं. 12/25	**उत्पन्ना एकादशी व्रत स्मार्त, बुध वृश्चिक में 10/10**	६	५४	१७	२८
२६.२३	१२	शुक्र	४८	२५	26	17	हस्त	५६	००	29	19	विष्क	16	36	कौ	१९	५९	२२	२४	13	२८	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रत वैष्णव**	६	५५	१७	२८
२६.१८	१३	शनि	४६	३	25	21	चित्रा	५५	२५	29	06	प्रीति	14	34	ग	१७	१४	२३	२५	14	२९	तु. 17/10	भ. 25/21 से, **शनि प्रदोष** व्रत, बुध अनु. में 13/01, **(B)**	६	५६	१७	२७
२६.१३	१४	रवि	४४	३५	24	48	स्वा	५५	४३	29	15	आयु	12	47	वि	१५	११	२४	२६	15	३०	तुला	भ. 13/05 तक, मास शिवरात्रि व्रत, मेला पुरमण्डल (जम्मू), **(C)**	६	५८	१७	२७
२६.०८	३०	चंद्र	४४	२३	24	44	विशा	५७	१५	29	53	सौभा	11	21	च	१४	२९	२५	२७	16	मा	वृ. 23/41	**सोमवती अमावस, सूर्य बृश्चिक में 11/11, मार्ग. संक्रांति D**	६	५९	१७	२६

A (जालन्धर), बुध विशा. में 27/45, सौभाग्य सुन्दरी व्रत **(B)** नेहरू जयन्ती (बाल दिवस) **(C)** देविका स्नान, श्रीबालाजी जयन्ती **(D)** 45 मुहूर्ति, पुण्य संक्रांति प्रातः सू. उ. से.

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	३	६	९	६	५	९	३
२३	२८	१६	२६	२४	०८	०७	००	००
४३	०६	५४	३१	२६	२९	१०	२३	२३
२६	४७	१५	३४	०८	०९	१६	०९	०९
60 18	899 57	22 53	95 13	5 26	75 10	5 53	3 10	3 10
विशा २	मूल. ४	अश्ले १	विशा २	धनि १	स्वा. १	उफा ४	उषा २	पुर्न ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

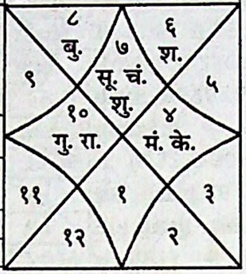
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



चंद्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	३	७	९	६	५	९	३
२९	२०	१९	०५	२५	१६	०७	००	००
४५	०८	०५	५८	०१	००	४४	०४	०४
४४	१३	४२	१५	१७	२७	३४	०५	०५
60 29	779 48	20 29	93 29	6 27	75 17	5 28	3 11	3 11
विशा ३	विशा १	अश्ले १	अनु १	धनि १	स्वा. ३	उफा ४	उषा २	पुर्न ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की अष्टमी तिथि को शिव मन्दिर में जाकर भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप **महाकाल भैरव** की पूजा, जप, जागरण एवं संकीर्तन करने का विशेष महत्त्व है। **उत्पन्ना एकादशी** (13 नवं.) का व्रत संकल्पपूर्वक करने से मनोवाँछित कार्यों की सिद्धि होती है। **शनि प्रदोष** (14 नवं.) का व्रत रखकर प्रदोष के समय शिव-पूजन एवं शिव कथा श्रवण करने से इच्छानुसार फल की प्राप्ति होती है। 16 नवं. को **सोमवती अमावस** और **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** होने से इस दिन हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग आदि तीर्थों में स्नान, दान जपादि का माहात्म्य विशेष रूप से बढ़ जाएगा। तीर्थ स्थल पर न जा सकने की स्थिति में अपने घर पर ही तीर्थ जल सहित स्नानदानादि करके प्रभु सिमरण एवं पाठ करना चाहिए। **संक्रान्ति** का स्नानदान आदि का पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से ही प्रारम्भ हो जाएगा। **राशिफल**—वृष, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर व मीन राशियों को इसका फल शुभ व लाभप्रद रहेगा। **लोक भविष्य–मार्गशीर्ष** मास में **पाँच मंगलवार** आ जाने से महँगाई में तेजी विशेष रूप से बढ़ेगी। कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), उपद्रव, आतंक एवं विस्फोटक घटनाएँ होने के संकेत हैं। कहीं साम्प्रदायिक दंगे एवं राजनीतिक अस्थिरता होगी। किसी प्रमुख राजनेता की आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं—**यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥** रसदार वस्तुओं में विशेष तेजी हो।

आकाश लक्षण–पंजाब, हि.प्र., हरियाणा, कश्मीरादि के उत्तरी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् २०६६, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाकः १९३१ तारीखें

सन् 2009 ई. (ता. 17 नवंबर से 2 दिसम्बर तक) सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घटी	पल	का. प्र.	जिल्हिज मु.	नवंबर	मार्ग. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट
२६.०३	१	मंग	४५	२८	25	11	अनु	६०	००	पूरा	दिन	शोभ	10	18	किं	१४	५६	२६	२८	17	२	वृश्चिक
२६.००	२	बुध	४८	३	26	14	अनु	०	०३	7	02	अति	9	40	बा	१६	४६	२७	२९	18	३	वृश्चिक
२५.५५	३	गुरु	५२	५	27	52	ज्ये	४	१८	8	45	सुक	9	29	तै	२०	०४	२८	जि	19	४	ध. 8/45
२५.५३	४	शुक्र	५७	२५	30	01	मूल	९	५५	11	01	धृति	9	45	व	२४	४५	२९	२	20	५	धनु
२५.५१	५	शनि	६०	००	पूरा	दिन	पू.षा.	१६	४८	13	46	शूल	10	23	ब	३०	३५	३०	३	21	६	म. 20/30
२५.४८	५	रवि	३	४५	8	34	उ.षा.	२४	२३	16	49	गंड	11	16	बा	३	४५	मा	४	22	७	मकर
२५.४५	६	चंद्र	१०	३०	11	17	श्रव	३२	१३	19	58	वृद्धि	12	17	तै	१०	३०	२	५	23	८	मकर
२५.४३	७	मंग	१७	०५	13	56	धनि	३९	४०	22	58	ध्रुव	13	13	व	१७	०५	३	६	24	९	कुं. 9/30
२५.४०	८	बुध	२२	५०	16	15	शत	४६	०८	25	34	व्या.	13	55	ब	२२	५०	४	७	25	१०	कुम्भ
२५.३८	९	गुरु	२७	१०	18	00	पू.भा.	५१	०५	27	34	हर्ष	14	12	कौ	२७	१०	५	८	26	११	मी. 21/07
२५.३३	१०	शुक्र	२९	४०	19	01	उ.भा.	५४	१०	28	49	वज्र	13	57	ग	२९	४०	६	९	27	१२	मीन
२५.३०	११	शनि	३०	१०	19	14	रेव	५५	२०	29	18	सिद्धि	13	06	व	३०	१०	७	१०	28	१३	मे. 29/18
२५.२९	१२	रवि	२८	४३	18	39	अश्वि	५४	४०	29	02	व्य	11	37	बा	२८	४३	८	११	29	१४	मेष
२५.२८	१३	चंद्र	२५	२३	17	20	भर	५२	१५	28	05	वरी / परी	9 / 30	33 / 57	तै	२५	२३	९	१२	30	१५	मेष
२५.२५	१४	मंग	२०	३०	15	24	कृति	४८	३०	26	36	शिव	27	56	व	२०	३०	१०	१३	दिसं.	१६	वृ. 9/45
२५.२३	१५	बुध	१४	२८	13	00	रोहि	४३	४५	24	43	सिद्ध	24	36	ब	१४	२८	११	१४	2	१७	वृष

तिथि	ग्रह दर्शन—प्रातः शु. पूर्व क्षितिज में बिल्कुल पास तथा श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व की ओर दिखाई देगा। प्रातः मं. तथा सायं गु. पश्चिम कपाल में होगा। 28 नवं. से बु. सायं पश्चिम में होगा।	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
१	राहु उ.षा. १ धनु में, केतु पुर्न ३ मिथुन में 12/20	७	०	१७	२५
२	**चन्द्रदर्शन** (मु. 15), पितृ पूजन	७	१	१७	२५
३	जिल्हेज (मु.) प्रा., सूर्य अनु. में 18/29, शुक्र विशाखा में 9/50, गं.मू.	७	२	१७	२४
४	भ. 16/57 से 30/01 तक, गंडमूलादि 11/01 तक	७	३	१७	२४
५	**श्रीरामविवाहोत्सव**, श्री पञ्चमी, नागपंचमी	७	३	१७	२४
५	नागपंचमी, बुध ज्येष्ठा में 27/27, सूर्य सायन धनु में 9/53, **A**	७	४	१७	२३
६	**स्कन्द षष्ठी**, चम्पक षष्ठी	७	५	१७	२३
७	भ. 13/56 से 27/06 तक, **पंचक प्रारम्भ 9/30**, मित्र सप्तमी	७	६	१७	२३
८	**श्रीदुर्गाष्टमी**, बुधाष्टमी	७	७	१७	२३
९		७	८	१७	२३
१०	भ. 31/08 से, **शुक्र वृश्चिक राशि** में 8/57, गंडमूल 28/49 से प्रा.	७	९	१७	२२
११	भ. 19/14 तक, **पंचक समा. 29/18, मोक्षदा एकादशी व्रत, (B)**	७	१०	१७	२२
१२	**अखण्ड द्वादशी**, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत, शुक्र अनु. में 24/36 **C**	७	१०	१७	२२
१३	**सोम प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 5/02 तक	७	११	१७	२२
१४	भ. 15/24 से 26/12 तक, **श्रीदत्तात्रेय जयं.**, पिशाचमोचन श्राद्ध **D**	७	१२	१७	२२
१५	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा**, स्नानदानादि, सूर्य ज्येष्ठा में 22/49	७	१३	१७	२२

A शक मार्गशीर्ष प्रा. **(B)** गीता जयंती, मौनी एकादशी, गंडमूल, बुध पश्चिम में उदय 25/47 **C** गुरु धनि. (2) में 12/32 **D** बुध मूले 1 धनु में 22/03, श्रीसत्यनारायण व्रत, यूरेनस मार्गी 25/56

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	३	७	९	६	५	८	२
०८	०९	२१	१९	२६	२७	०८	२९	२९
५०	५४	५३	५१	०५	१८	३१	३५	३५
५८	१५	५१	३९	१०	२२	२१	२८	२८
60 41	725 39	16 16	91 36	7 53	75 23	4 50	3 11	3 11
अनु २	श्रव १	आश्ले २	ज्ये. १	धनि १	विशा ३	उफा ४	उषा १	पुन ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	३	८	९	७	५	८	२
१५	११	२३	००	२७	०६	०९	२९	२९
५६	४४	३६	२७	०३	०६	०३	०३	०३
०६	२३	४६	५७	२१	०९	२८	१२	१२
60 49	869 57	12 30	89 44	8 52	75 25	4 15	3 10	3 10
अनु ४	रोहि १	आश्ले ३	मूल १	धनि २	अनु १	उफा ४	उषा १	पुन ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को श्री राम विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन कमलासन पर विराजित एवं कमल पुष्प लिए श्री लक्ष्मी की सुवर्णमयी मूर्ति (जिसको दो गजेन्द्र दोनों ओर से स्नानार्थ दूध या जल अर्पण करा रहे हों) को सुवर्णादि के कलश पर स्थापित कर गणपति पूजन, मातृका पूजन एवं पंचादि उपचारों से लक्ष्मी का पूजन कराके लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें, तदुपरांत ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ता. 28 को **मोक्षदा एकादशी** का श्रद्धापूर्वक व्रत रखने से मोहरूपी अज्ञान का निवारण होकर सुख की प्राप्ति होती है। **गीता जयन्ती** का पर्व उत्सव भी इसी दिन मनाया जाता है। इसी दिन भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। इस दिन भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके श्री मद्भगवतगीता का पाठ एवं अध्ययन करना चाहिए। ता. 1 दिसं. को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्री दत्तात्रेय की पूजा की जाती है। चंद्रोदय व्याप्त पूर्णिमा का व्रत भी इसी दिन रखना प्रशस्त होगा। **मार्गशीर्ष मास में पाँच मंगलवार** होने से करियाना आदि आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि से आम लोगों में गहरा असंतोष हो। कहीं विस्फोट, जनांदोलन एवं विस्फोटक घटनाएं हों। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के योग हैं—''यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥'' **आकाश लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्ध भाग में हि.प्र., पंजाब, कश्मीर के उत्तरी भागों में वर्षा के संकेत हैं। **शकुन**–मार्ग. पूर्णिमा बुधवार एवं रोहिणी नक्षत्र युक्त होने से आगामी अच्छी फसल होने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६६, पौष कृष्ण पक्ष शाकः १९३१

सन् 2009 ई. (3 दिसं. से 16 दिसंबर तक)
सूर्य दक्षिणायणे, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु

ग्रह दर्शन—प्रातः शु. पूर्व में, श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व की ओर तथा मं. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। 13 दिसं. से शु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा। सायं बुध पश्चिम में तथा उससे ऊपर गु. होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	नक्षत्र समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	योग समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घटी	पल	तारीखें मार्ग. शक	ज़िलहिज्ज	दिसम्बर	मार्गा.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		मा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.२२	१	गुरु	७	३८	10	17	मृग	३८	२५	22	36	साध्य	21	04	कौ	७	३८	१२	१५	3	१८	मि. 11/41	पौष कृष्ण प्रतिपदा	७	१४	१७	२२
२५.२२	२	शुक्र	०	२३	7	23	आर्द्रा	३२	५५	20	24	शुभ	17	27	ग	०	२३	१३	१६	4	१९	मिथुन	भ. 17/56 से 28/28 तक	७	१४	१७	२२
००.००	३	शुक्र	५३	५	28	28	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
२५.१८	४	शनि	४५	५५	25	37	पुर्न	२७	२८	18	14	शुक्ल	13	52	ब	१९	३०	१४	१७	5	२०	क. 12/46	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय 20/46 (जालन्धर),	७	१५	१७	२२
२५.१५	५	रवि	३९	१८	22	59	पुष्य	२२	२५	16	14	वृद्धि / ऐंद्र	10 / 31	23 / 06	कौ	१२	३७	१५	१८	6	२१	कर्क	गण्डमूल 16/14 से,	७	१६	१७	२२
२५.१३	६	चंद्र	३३	२०	20	37	श्ले.	१८	००	14	29	वैधृ	28	03	ग	६	१९	१६	१९	7	२२	सिं. 14/29	भ. 20/37 से प्रा., गंडमूल, नैपच्यून कुम्भ में 26/11	७	१७	१७	२२
२५.११	७	मंग	२८	१५	18	36	मघा	१४	२३	13	03	विष्क	25	18	वि	०	४८	१७	२०	8	२३	सिंह	भ. 7/37 तक, गंडमूल 13/03 तक	७	१८	१७	२२
२५.१०	८	बुध	२४	८	16	57	पू.फा.	११	४५	12	00	प्रीति	22	51	कौ	२४	०८	१८	२१	9	२४	कं. 17/47		७	१८	१७	२२
२५.०९	९	गुरु	२१	००	15	43	उ.फा.	१०	०३	11	20	आयु	20	44	ग	२१	००	१९	२२	10	२५	कन्या	भ. 27/19 से, बुध पू.षा. में 25/35, शुक्र ज्येष्ठा में 15/06	७	१९	१७	२२
२५.०८	१०	शुक्र	१८	५८	14	55	हस्त	९	२३	11	05	सौभा	18	56	वि	१८	५८	२०	२३	11	२६	तु. 23/07	भ. 14/55 तक, **पार्श्वनाथ जयन्ती** (जैन)	७	२०	१७	२३
२५.०६	११	शनि	१७	५८	14	32	चित्रा	९	४५	11	15	शोभ	17	29	बा	१७	५८	२१	२४	12	२७	तुला	**सफला एकादशी व्रत**, सुरूप द्वादशी	७	२१	१७	२३
२५.०४	१२	रवि	१८	०८	14	36	स्वा.	११	१३	11	50	अति	16	23	तै	१८	०८	२२	२५	13	२८	वृ. 30/34	प्रदोष व्रत, **शुक्र पूर्व में अस्त 29/18**	७	२१	१७	२३
२५.०३	१३	चंद्र	१९	२३	15	07	विशा	१३	४५	12	52	सुक	15	37	व	१९	२३	२३	२६	14	२९	वृश्चिक	भ. 15/07 से 27/37 तक, मास शिवरात्रि व्रत,	७	२२	१७	२३
२५.०३	१४	मंग	२१	५०	16	06	अनु	१७	२५	14	20	धृति	15	12	श	२१	५०	२४	२७	15	पौष	वृश्चिक	**सूर्य मूले 1 धनु में 25/51, पौष संक्रांति, 15 मु., पुण्यकाल A**	७	२२	१७	२४
२५.०३	३०	बुध	२५	२३	17	32	ज्ये.	२२	०८	16	14	शूल	15	08	ना	२५	२३	२५	२८	16	२	ध. 16/14	**पौष अमावस**, देव पितृ आदि कार्येषु,	७	२३	१७	२४

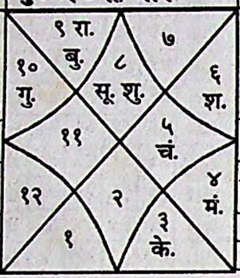
शुक्रास्त, 13 दिसं.
14 दिसं. की प्रातः 5/18

A सं. अगले दिन प्रातः 8/15 तक, गौरीतप व्रत

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	३	८	९	७	५	८	२
२३	२२	२४	१०	२८	१४	०९	२८	२८
०२	५४	५१	४४	०८	५४	३१	५०	५०
१३	०४	२९	५१	१४	१८	२७	५७	५७
60 57	827 32	8 7	85 1	9 47	75 29	3 38	3 11	3 11
ज्ये. २	पू.फा. ३	अश्ले. ३	मूल ४	धनि. २	अनु (४)	उ.फा. ४	उ.षा. १	पुन. ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

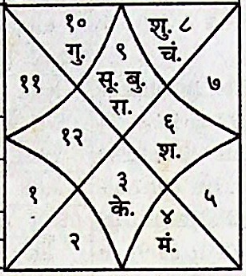
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	३	८	९	७	५	८	२
००	२४	२५	२०	२९	२३	०९	२८	२८
०९	३०	३३	०५	१९	४२	५४	२८	२८
१७	१८	३८	३७	१७	४८	५८	४२	४२
61 4	734 28	3 8	70 38	10 37	75 31	2 58	3 11	3 11
मूल १	ज्ये. ३	अश्ले. ३	पू.षा. ३	धनि. २	ज्ये. (३)	उ.फा. ४	उ.षा. ३	पुन. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



पौष कृष्ण पक्षफल—

पौष मास में धान्य, गेहूँ, चावल, चने आदि अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्टान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। सफला एकादशी (12 दिसं.) का व्रत विधिपूर्वक करने से सर्वप्रकार के पापों का क्षय होता है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए। **पौष संक्रान्ति** (15 दिंस.), मंगलवार को १५ मुहूर्ति, रात्रि 1/51 से प्रवेश होने से पौष संक्रान्ति का स्नानदानादि, पुण्यकाल आगामी दिवस (16 दिसं.) बुधवार की प्रातः 8 बजकर 15 मिं. तक विशेष रूप से होगा। **लोक भविष्य**—मंगलवार को पौष संक्रान्ति होने से रोग, शोक, राजनीतिक विग्रह, कहीं छत्रभंग, आन्दोलन तथा हिंसक घटनाएं बढ़ेंगी। राजनीतिक एवं शेयरों के हालात अस्थिर रहेंगे। कहीं राजनेता की पदच्युति एवं शासन परिवर्तन के संकेत हैं। सभी प्रकार के अनाज, कैमिकल, रसदार वस्तुएं, गेहूं, चावल, चीनी-खल-बिनौले, तैलादि पदार्थ और तेज भाव होंगे। **भौमस्य वारे यदि संक्रमश्च करोति पृथव्यामसुखं महर्घता।** लोगों में दुख, पीड़ा व कष्ट प्रदायक घटनाएं अधिक घटित हों। **पौष मास** में पाँच गुरुवार होने से देश के पश्चिमी भागों—जैसे कश्मीर, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात प्रदेशों में कहीं उपद्रव, हिंसा, आतंक आदि की विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं—**यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्धं च जायते॥ गौरीतप** व्रत विधिपूर्वक करने से स्त्रियों को सुतादि सुखों की प्राप्ति हो सकती है। **आकाश लक्षण**—भारत के पश्चिमी भागों के पहाड़ी एवं उत्तरी क्षेत्रों में कहीं शीत लहरें चलने लगेंगी। कहीं रुक-रुककर खण्ड वर्षा होगी।

वि. संवत् २०६६,			**पौष शुक्ल पक्ष**										**शाक: १९३१**					**तारीखें**				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2009 ई. (ता. 17 दिसं. से 31 दिसंबर तक) सूर्य दक्षिणे/उत्तरायणे, दक्षिण गोल, हेमंत/शिशिर ऋतुः	भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल				नक्षत्र	समाप्ति काल				योग	समाप्ति काल					मार्ग. शक	हिजरी	दिसंबर	पौष प्रवि.	घण्टे-मिन्ट	ग्रह दर्शन–प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त में तथा मं. पश्चिम में दीखेगा। सायं बु. पश्चिम में दिखेगा, परन्तु 30 दिसं. से अस्त, शुक्र भी अभी अस्त है।	सूर्योदय		सूर्यास्त	
			घटी	पल	घण्टे	मिनट		घटी	पल	घण्टे	मिनट		घण्टे	मिनट	करण	घटी	पल							घं.	मिं.	घं.	मिं.
२५.०२	१	गुरु	३०	५	19	25	मूल	२७	५८	18	34	गंड	15	24	ब	३०	०५	२६	२९	17	३	धनु	शनि हस्त (1) में 22/40	७	२३	१७	२४
२५.०२	२	शुक्र	३५	४५	21	42	पू.षा.	३४	४०	21	16	वृद्धि	15	58	बा	२	५५	२७	३०	18	४	म. 28/00	**चन्द्रदर्शन मु. (30), आरोग्य व्रत**	७	२४	१७	२५
२५.०२	३	शनि	४२	१३	24	17	उ.षा.	४२	१०	24	16	ध्रुव	16	47	तै	८	५९	२८	मुर्ह	19	५	मकर	1 मुहर्रम (मु.) हिजरी सं. 1431 शुरू, गुरू धनि. (3) कुम्भ **(A)**	७	२४	१७	२६
२५.०१	४	रवि	४९	३	27	02	श्रव	५०	००	27	25	व्या.	17	45	व	१५	२८	२९	२	20	६	मकर	भ. 13/40 से 27/02 तक, **मंगल वक्री 18/55, शुक्र मूला 1 B**	७	२५	१७	२६
२५.००	५	चंद्र	५५	५०	29	46	धनि	५७	५०	30	34	हर्ष	18	45	ब	२२	२७	३०	३	21	७	कुं. 17/00	**पंचक प्रारम्भ 17/00,** सूर्य सायन मकर में 23/17, सायन **C**	७	२६	१७	२६
२५.००	६	मंग	६०	००	पूरा	दिन	शत	६०	००	पूरा	दिन	वज्र	19	39	कौ	२८	५७	पौ	४	22	८	कुम्भ	बुध उ.षा. में 28/39, शक पौष प्रारम्भ	७	२६	१७	२७
२५.०१	६	बुध	२	०३	8	16	शत	५	०३	9	28	सिद्धि	20	18	तै	२	०३	२	५	23	९	मी. 29/22		७	२७	१७	२७
२५.०२	७	गुरु	७	८	10	18	पू.भा.	११	१३	11	56	व्य.	20	32	व	७	०८	३	६	24	१०	मीन	भ. 10/18 से 23/01 तक, **मार्तण्ड सप्तमी**	७	२७	१७	२८
२५.०२	८	शुक्र	१०	४०	11	43	उ.भा.	१५	५०	13	47	वरी	20	15	ब	१०	४०	४	७	25	११	मीन	**चन्द्रग्रहण 31 दिसं.**	७	२७	१७	२८
२५.०३	९	शनि	१२	१५	12	21	रेव	१८	३८	14	54	परि	19	21	कौ	१२	१५	५	८	26	१२	मे. 14/54	**पंचक समाप्त 14/54, बुध वक्री 20/04**	७	२७	१७	२९
२५.०३	१०	रवि	११	४५	12	10	अश्वि	१९	२०	15	12	शिव	17	48	ग	११	४५	६	९	27	१३	मेष	भ. 23/39 से,	७	२८	१७	२९
२५.०३	११	चंद्र	९	८	11	08	भर	१८	०५	14	43	सिद्ध	15	38	वि	९	०८	७	१०	28	१४	वृ. 20/28	भ. 11/08 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत,** सूर्य पू.षा. में 28/04	७	२९	१७	३०
२५.०५	१२	मंग	४	१३	9	22	कृति	१५	००	13	29	साध्य	12	51	बा	४	१३	८	११	29	१५	वृष	भौम प्रदोष व्रतम्, वक्री बुध पू.षा. (4) में 29/59	७	२९	१७	३१
००.००	१३	मंग	५८	३८	30	56	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०
२५.०५	१४	बुध	५१	१८	28	00	रोहि	१०	२५	11	39	शुभ शुक्ल	9 29	35 55	ग	२४	५८	९	१२	30	१६	मि. 22/32	भ. 28/00 से, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 11/10	७	२९	१७	३१
२५.०६	१५	गुरु	४३	०३	24	43	मृग आर्द्रा	४ ५८	३५ ०३	9 30	20 43	ब्रह्म	25	58	वि	१७	११	१०	१३	31	१७	मिथुन	भ. 14/22 तक, पौष पूर्णिमा, **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (देखें पृष्ठ—)**D**	७	३०	१७	३२

(A) में 24/15, गौरी पूजन **B** धनु में 29/23 **C** उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **D** **माघस्नान प्रारम्भ,** शुक्र पू.षा. में 19/38, शाकम्भरी जयंती, श्रीसत्यनारायण व्रत

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	३	८	१०	८	५	८	२
०९	१२	२५	२७	००	०५	१०	२८	२८
१९	२१	३३	३३	५८	०२	१८	००	००
१०	१३	४८	४६	४१	२६	०६	०५	०५
61 8	756 25	3 57	11 55	11 33	75 31	2 4	3 11	3 11
मूल ३	उषा ३	अश्ले ३	उषा १	धनि ३	मूल २	हस्त ४	उषा १	पुन ३
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	ठ	ठ	अ	ठ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 31 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	३	८	१०	८	५	८	२
१५	०४	२४	२५	०२	१२	१०	२७	२७
२५	१७	५७	५५	०९	३५	२८	४१	४१
५४	३६	४९	४१	२२	२७	५३	०१	०१
61 8	897 00	8 51	56 00	12 6	75 30	1 26	3 11	3 11
पूषा १	मृग ४	अश्ले ३	पूषा ४	धनि ३	मूल ४	हस्त १	उषा १	पुन ३
०	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	अ	ठ	अ	ठ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



पौष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके बालेन्दु (द्वितीया) के चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करे। स्वयं भूमि पर शयन करें। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। ता. 28 दिसं को पुत्रदा एकादशी का व्रत रखकर भगवान् विष्णु का पूजन, स्तोत्रपाठ, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से मनोवांछित पुत्र सन्तति की प्राप्ति होती है। ऋण से छुटकारा पाने एवं धन लाभ हेतु तथा शत्रु भय से राहत पाने हेतु भौम प्रदोष का व्रत रखकर सायंकाल को शिव पूजन करने का विधान है। ता. 31 दिसं. बृहस्पतिवार को पौष पूर्णिमा की मध्य रात्रि को रात्रि 12/23 पर **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** लगेगा। इस ग्रहण का सूतक भा. स्टैं. टा. के अनुसार दुपैहर 3 बजकर 22 मिनट से शुरु हो जाएगा। **पौष मास** में पांच गुरुवार होने से देश के पश्चिमी क्षेत्रों जैसे—राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, गुजरात आदि प्रदेशों में साम्प्रदायिक उपद्रव, टकराव एवं हिंसक घटनाएं होने के योग हैं। इस पक्ष में गुरु शीघ्र गति से **19 दिसं. शनिवार को कुम्भ**-राशि में प्रवेश करेगा जिससे देश के कुछ भागों में वर्षा की कमी, कृषि का नाश, दुर्भिक्ष एवं अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी का रुख बने—**कुम्भ राशिगते जीवे मेघः स्वल्पाम्बु वर्षति। कृषि नाशं च दुर्भिक्षं पूर्व देशे महर्घता॥** पौष पूर्णिमा से तीर्थों पर माघ स्नान का पुण्य पर्व आरम्भ होगा। गंगा, यमुना आदि पवित्र नदियों व तीर्थों पर स्नान-दान आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा।

वि. संवत् २०६६, माघ कृष्ण पक्ष शाक: १९३१

सन् 2010 ई. (ता. 1 जन. से. 15 जनवरी तक)

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

भा.स्टै.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन– 11 जन. से बु. पूर्व में दिखेगा। श. याम्योत्तर के आस-पास तथा मं. पश्चिमी क्षितिज में डूबने को होगा। सायं गु. पश्चिम कपाल में होगा। शुक्र अभी अस्त है।

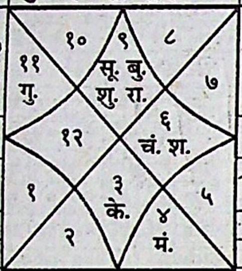
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिन्ट	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिन्ट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिन्ट	करण	घटी	पल	पौष शक	मुह.	जनवरी	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	तारीखें	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.०८	१	शुक्र	३४	२०	21	14	पुर्न	५१	०५	27	56	ऐंद्र	21	53	बा	८	४२	११	१४	1	१८	क. 22/38	जनवरी, सन् 2010 ई. प्रारम्भ, ग्रहणऽपर दिन	७	३०	१७	३३
२५.१०	२	शनि	२५	३५	17	44	पुष्य	४४	१५	25	12	वैधृ	17	46	तै	२५	३५	१२	१५	2	१९	कर्क	भ. 28/03 से प्रारम्भ	७	३०	१७	३४
२५.११	३	रवि	१७	०८	14	21	श्ले	३७	५०	22	38	विष्क	13	45	वि	१७	०८	१३	१६	3	२०	सिं. 22/38	भ. 14/21 तक, **श्रीगणेश संकट चौथ व्रत**, चन्द्रोदय, 20 घं. 48 मिं. **A**	७	३०	१७	३४
२५.१३	४	चंद्र	९	२०	11	14	मघा	३२	१५	20	24	प्रीति आयु	9 30	58 30	बा	९	२०	१४	१७	4	२१	सिंह		७	३०	१७	३५
२५.१५	५	मंग	२	३५	8	32	पू.फा.	२७	४५	18	36	सौभा	27	26	तै	२	३५	१५	१८	5	२२	कं. 24/14	भ. 30/20 से, गुरु धनि (4) में 23/26, **गु. गोबिन्द सिंह जयंती** (ना.शा.)	७	३०	१७	३६
००.००	६	मंग	५७	०५	30	20	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०
२५.१७	७	बुध	५३	०५	28	44	उ.फा.	२४	४०	17	22	शोभ	24	50	वि	२५	०५	१६	१९	6	२३	कन्या	भ. 17/32 तक, स्वामी विवेकानन्द जयंती (मतान्तरे)	७	३०	१७	३७
२५.१८	८	गुरु	५०	३५	27	45	हस्त	२३	००	16	43	अति	22	44	बा	२१	५०	१७	२०	7	२४	तु. 28/39		७	३१	१७	३८
२५.२०	९	शुक्र	४९	५०	27	27	चित्रा	२३	००	16	43	सुक	21	09	तै	२०	१३	१८	२१	8	२५	तुला		७	३१	१७	३९
२५.२१	१०	शनि	५०	३८	27	46	स्वा	२४	३५	17	21	धृति	20	03	व	२०	१४	१९	२२	9	२६	तुला	भ. 15/37 से 27/46 तक, स. सि. यो.	७	३१	१७	३९
२५.२३	११	रवि	५२	५५	28	41	विशा	२७	३८	18	34	शूल	19	26	ब	२१	४७	२०	२३	10	२७	वृ. 12/12	**षट्तिला एकादशी व्रत**, वक्री बुध पूर्व से उदय 15/25, वक्री बुध**B**	७	३१	१७	४०
२५.२५	१२	चंद्र	५६	३०	30	07	अनु	३१	५८	20	18	गंड	19	13	कौ	२४	४३	२१	२४	11	२८	वृश्चिक	सूर्य उ.षा. में 6/07, शुक्र उ.षा. में 10/00, तिल द्वादशी,	७	३१	१७	४१
२५.२८	१३	मंग	६०	००	पूरा	दिन	ज्ये	३७	२५	22	29	वृद्धि	19	22	ग	२८	५०	२२	२५	12	२९	ध. 22/29	**भौम प्रदोष व्रत**, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	७	३१	१७	४२
२५.३२	१३	बुध	१	१०	7	59	मूल	४३	५०	25	03	ध्रुव	19	48	व	१	१०	२३	२६	13	३०	धनु	भ. 7/59 से 21/06 तक, **शुक्र मकर में 25/37, लोहड़ी पर्व C**	७	३१	१७	४३
२५.३३	१४	गुरु	६	४५	10	12	पूषा	५०	५८	27	53	व्या	20	29	श	६	४५	२४	२७	14	माघ	धनु	**सूर्य मकर में 12/38, माघ संक्रान्ति**, पुण्यकाल सं. प्रातः सूर्योदय **D**	७	३०	१७	४३
२५.३५	३०	शुक्र	१२	५८	12	41	उ.षा.	५८	३०	30	54	हर्ष	21	19	ना	१२	५८	२५	२८	15	२	म. 10/37	**माघ (मौनी) अमावस**, खण्ड सूर्यग्रहण (देखें पृष्ठ 17–20) स्नान, **E**	७	३०	१७	४४

A गौरी चतुर्थी, सौभाग्य सुन्दरी व्रत **B** मूल (4) में 27/13 **C** (पंजाबादि), मास शिवरात्रि व्रत, शनि वक्री 21/27, मेरू त्रयोदशी (जैन) **D** से, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, कुम्भ स्नान माहात्म्य प्रारम्भ **(E)** दान, जपादि पर्व, मेला कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि तीर्थस्नान, बुध मार्गी 22/32

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	३	८	१०	८	५	८	२
२२	१६	२३	१७	०३	२१	१०	२७	२७
३३	५८	३८	२३	३५	२३	३६	१८	१८
५०	३१	४९	१८	४३	५२	३८	४५	४५
61 8	810 10	14 28	73 28	12 39	75 30	0 40	3 10	3 10
पूषा ३	हस्त ३	अश्ले ३	पूषा २	धनि ४	पूषा ३	हस्त १	उषा १	पुन ३
०	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	३	८	१०	९	५	८	२
००	२७	२१	११	०५	०१	१०	२६	२६
४३	२८	२२	३५	१८	२७	३८	५३	५३
००	१२	५५	१६	५४	४३	५६	१९	१९
61 7	710 23	19 57	1 46	13 11	75 27	0 12	3 11	3 11
उषा २	उषा १	अश्ले २	मूल ४	धनि ४	उषा २	हस्त १	उषा १	पुन ३
०	मा	व	व/मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



माघ कृष्ण पक्षफल–

पक्षारम्भ में प्रतिपदा (1 जन.) को ग्रहणऽपर दिवस होने पर इस दिन गंगा आदि तीर्थों पर स्नान दान आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा। ता. 3 जन. को श्रीगणेश **संकट चौथ** का व्रत एवं श्री गणेश पूजन व मंत्र जाप करके श्रीगणेश जी को चंद्रोदय होने पर तिल, फल व लड्डुओं आदि का भोग लगाने से सब प्रकार के ताप-पाप एवं दुख दूर होते हैं। **षट्तिला एकादशी** (10 जन.) को गंगाजल व तिलों सहित शुद्ध जल से स्नान करके व्रत रखकर **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।'** मन्त्र का जाप करने से अनेक ज्ञात, अज्ञात पापों का नाश होता है। ता० 13 को लोहड़ी पर्व पंजाब, हिमाचल, दिल्ली, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर में बड़े उल्लास से मनाया जाता है। **मकर संक्रान्ति** (14 जन.) को तीर्थ स्थल पर अथवा गृह में गंगा जलादि पवित्र तीर्थ जल से स्नानोपरान्त भगवान् विष्णु पूजन, पुरुष सूक्त, सूर्यादि अर्घ्य, तिल-सहित तर्पण, होम, ब्राह्मण भोजन एवं अनाज, वस्त्र, फलों आदि का दान व जपादि करने का विशेष माहात्म्य होता है। स्नान दान आदि का माहाम्य यद्यपि सूर्योदय से प्रारम्भ हो जाएगा, परन्तु प्रातः 10 बजकर 12 मिनट के बाद माघ अमावस का प्रारम्भ हो जाने से देव-पितृ आदि कार्यों हेतु तर्पण, स्नान दानादि का महत्त्व भी रहेगा। ता. 15 जन. को माघ मौनी अमावस दुपै. 12/41 तक रहेगी। इसी दिन मध्याह्न काल में खण्ड सूर्यग्रहण लगने से हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, काशी आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा।

संक्रान्ति राशिफल–वृष, मिथुन, सिंह, तुला, मकर व कुम्भ राशि वालों को माघ संक्रान्ति का फल शुभ एवं लाभदायक रहेगा। इस मास में पांच शुक्रवार एवं ५ शनिवार होने से धन का प्रसार तथा जनसंख्या का प्रसार बढ़ेगा और महंगाई भी और अधिक बढ़ने से लोगों में आक्रोश बढ़ेगा। **आकाश लक्षण**–पक्ष के पूर्वार्द्ध में शीत लहरों सहित कहीं खण्ड वर्षा के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६६, माघ शुक्ल पक्ष शाक: १९३१ तारीखें

सन् 2010 ई. (ता. 16 जन. से 30 जनवरी तक)

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः बु. पूर्व में, श. पश्चिम कपाल में, इसी समय मं. पश्चिमी क्षितिज में डूबने को होगा। सायं गु. पश्चिम में होगा।

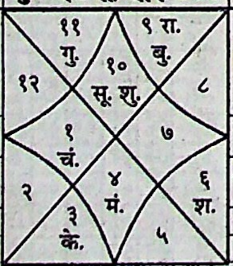
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिन्ट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिन्ट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिन्ट	करण	घड़ी	पल	पौष शक	मुहर्रम मु.	जनवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.३८	१	शनि	१९	३८	15	21	श्रव	६०	००	पूरा	दिन	वज्र	22	16	बव	१९	३८	२६	२९	16	३	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, स. सि. यो.	७	३०	१७	४५
२५.४०	२	रवि	२६	२८	18	05	श्रव	६	२०	10	02	सिद्धि	23	15	कौ	२६	२८	२७	सफ	17	४	कुं. 23/36	**पंचक प्रारम्भ 23/36, बाबा लाल जयन्ती,** सफर (मुस्लिम) प्रा.	७	३०	१७	४६
२५.४३	३	चंद्र	३३	८	20	45	धनि	१४	०८	13	09	व्य.	24	10	ग	३३	०८	२८	२	18	५	कुम्भ	वक्री मंगल आश्ले (1) में 29/28	७	३०	१७	४७
२५.४५	४	मंग	३९	२५	23	15	शत	२१	३३	16	07	वरी	24	56	व	६	१७	२९	३	19	६	कुम्भ	भ. 10/00 से 23/15 तक, **श्रीगणेश तिल चतुर्थी,** राहु पू.षा. (4),**A**	७	३०	१७	४८
२५.५३	५	बुध	४४	४८	25	24	पू.भा.	२८	२०	18	49	परि	25	27	ब	१२	०७	३०	४	20	७	मी. 12/11	**वसन्त पंचमी,** श्री ५, **सरस्वती जयन्ती,** सूर्य सायन कुम्भ में 9/58	७	२९	१७	५०
२५.५५	६	गुरु	४९	००	27	05	उ.भा.	३४	०३	21	06	शिव	25	37	कौ	१६	५४	मा	५	21	८	मीन	बुध पू.षा. में 7/33, गुरु शत. (1) में 7/16, शुक्र श्रव. में 24/28, शक माघ शुरु	७	२९	१७	५१
२६.०३	७	शुक्र	५१	४०	28	08	रेव	३८	२०	22	48	सिद्ध	25	19	ग	२०	२०	२	६	22	९	मे. 22/48	भ. 28/08 से, **पंचक समाप्त 22/48, रथ-आरोग्य सप्तमी, B**	७	२८	१७	५३
२६.०३	८	शनि	५२	३०	28	28	अश्वि	४०	५८	23	51	साध्य	24	28	वि	२२	३३	३	७	23	१०	मेष	भ. 16/18 तक, **भीष्माष्टमी,** नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती	७	२८	१७	५३
२६.०५	९	रवि	५१	२३	28	01	भर	४१	४०	24	08	शुभ	23	02	बा	२१	५७	४	८	24	११	वृ. 30/05	सूर्य श्रवण में 8/21,	७	२८	१७	५४
२६.०८	१०	चंद्र	४८	२०	26	47	कृति	४०	३३	23	40	शुक्ल	20	58	तै	१९	५२	५	९	25	१२	वृष		७	२७	१७	५४
२६.१०	११	मंग	४३	२५	24	49	रोहि	३७	३३	22	28	ब्रह्म	18	20	व	१५	५३	६	१०	26	१३	वृष	भ. 13/48 से 24/49 तक, **जया एकादशी व्रत, भारत गणतन्त्र दिवस**	७	२७	१७	५५
२६.१०	१२	बुध	३६	५३	22	12	मृग	३२	५५	20	37	ऐंद्र	15	08	ब	१०	०९	७	११	27	१४	मि. 9/37	भीष्म द्वादशी, वक्री मंगल पुष्य (4) में 20/54, यूरेनस मीन में 13/02	७	२७	१७	५५
२६.१५	१३	गुरु	२९	०५	19	04	आर्द्रा	२७	००	18	14	वैधृ	11	29	कौ	२	५९	८	१२	28	१५	मिथुन	प्रदोष व्रत	७	२६	१७	५६
२६.१८	१४	शुक्र	२०	१५	15	32	पुर्न	२०	०३	15	27	विष्क प्रीति	7 27	28 13	व	२०	१५	९	१३	29	१६	क. 10/11	भ. 15/32 से 25/40 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत	७	२६	१७	५७
२६.२३	१५	शनि	१०	५८	11	48	पुष्य	१२	३८	12	28	आयु	22	52	ब	१०	५८	१०	१४	30	१७	कर्क	माघ पूर्णिमा स्नानदानादि, माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयंती	७	२५	१७	५८

A केतु पुर्न (2) में 10/22, वरद् चौथ, कुन्द चतुर्थी, अङ्गारक चतुर्थी **B** पुत्र सप्तमी व्रत, अचला-भानु-सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	३	८	१०	९	५	८	२
०८	०३	१८	१४	०७	११	१०	२६	२६
५१	३१	२९	३८	०६	३१	३४	२७	२७
४३	४६	५०	५३	०६	११	१५	५३	५३
61	772	23	47	13	75	1	3	3
2	16	20	48	38	23	4	11	11
उषा ४	अश्वि २	अश्ले १	पूषा १	शत १	श्रव. १	हस्त १	पूषा ४	पुर्न २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	३	८	१०	९	५	८	२
१५	१२	१५	२१	०८	२०	१०	२६	२६
५८	१४	४३	२३	४२	१८	२४	०५	०५
३२	२०	२०	३७	३१	४१	३४	३७	३७
60	916	23	68	13	75	1	3	3
54	12	59	32	56	18	47	11	11
श्रव २	पुष्य ३	पुष्य ४	पूषा ३	शत १	श्रव ४	हस्त १	पूषा ४	पुर्न २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



माघ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **तिल चतुर्थी** (19 जन.) के दिन श्रीगणेश जी की कृपा प्राप्त करने के लिए व्रत एवं गणेश पूजन करके गर्म वस्त्र, फल, गुड़ व तिल के लड्डुओं आदि का भोग लगाकर प्रसाद बांटें तथा इस दिन लाल वस्त्र पहिने, उत्तराभिमुख होकर **'ॐ अंगारकाय भौमाय नमः'** मंत्र का जप करें। ता. 20 को **बसन्त पंचमी** के दिन भगवान् श्री विष्णु, श्री कृष्ण-राधा व **सरस्वती** की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य आदि द्वारा करके फिर पीले एवं मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का श्रद्धा से भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। रथ **सप्तमी** (22 जन.) भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। अतः यह सूर्य जयन्ती भी है। इस सप्तमी को भानु सप्तमी, आरोग्य, पुत्र सप्तमी, अचला सप्तमी आदि नामों से भी अभिहित किया जाता है। इस सप्तमी का विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **जया एकादशी** (26 जन.) का विधिवत् व्रत-पाठादि करने से पिशाचादि योनियों से छुटकारा मिलता है। **माघी पूर्णिमा** (30 जन.) को तीर्थ जल से स्नान करके देवताओं, पितरों आदि का तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने का विशेष फल प्राप्त होता है। **लोक भविष्य**–माघ मास में पांच शुक्र और पांच शनिवार होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। जनसंख्या में वृद्धि हो तथा धन-सम्पदा का प्रसार बढ़ेगा। ५शनिवार होने से जातीय उत्पात और साम्प्रदायिक दंगे फसाद बढ़ेंगे। कहीं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी का रूझान होगा। **शनिवाराः यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला पृथिवी॥**

आकाश लक्षण–पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में वायु वेग के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–बसन्त पंचमी को बादल चाल या बून्दाबांदी होना आगामी अच्छी फसल के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६६, फाल्गुन कृष्ण पक्ष | शाक: १९३१ | तारीखें

सन् 2010 ई. (31 जनवरी से 3 फरवरी तक)
सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः बु. पूर्व में तथा श. पश्चिम कपाल में होगा। सायं मं. पूर्व में तथा गु. को पश्चिम में देखिए। 8 फर. से शु. को भी पश्चिम में देखें।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घड़ी	पल	माघ शक	सौ. फा.	जनवरी	माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.२८	१	रवि	१	३०	8	00	श्ले मघा	५ ५७	०३ ४८	9 30	25 31	सौभा	18	34	कौ	१	३०	११	१५	31	१८	सिं. 9/25	फागुन कृष्ण पक्षारम्भ, गण्डमूलादि	७	२४	१७	५९
००.००	२	रवि	५२	२०	28	20	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०
२६.३०	३	चंद्र	४३	५३	24	57	पू.फा.	५१	२०	27	56	शोभ	14	26	व	१८	०७	१२	१६	फर	१९	सिंह	भ 14/39 से 24/57 तक, शुक्र धनि. में 15/15, **फरवरी, सन् (A)**	७	२४	१८	०
२६.३३	४	मंग	३६	३८	22	03	उ.फा.	४६	०५	25	50	अति सुक	10 31	36 13	ब	१०	१६	१३	१७	2	२०	कं. 9/21	अंगारकी **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय 21/50 (जालन्धर)	७	२४	१८	१
२६.३६	५	बुध	३०	५५	19	45	हस्त	४२	२५	24	21	धृति	28	22	कौ	३	४७	१४	१८	3	२१	कन्या	बुध उ.षा. में 15/14,	७	२३	१८	१
२६.३८	६	गुरु	२६	५८	18	10	चित्रा	४०	३५	23	37	शूल	26	08	व	२६	५८	१५	१९	4	२२	तु. 11/53	भ. 18/10 से 29/47 तक, गुरु शत. (2) में 18/01	७	२३	१८	२
२६.४३	७	शुक्र	२५	३	17	23	स्वा	४०	४५	23	40	गंड	24	31	ब	२५	०३	१६	२०	5	२३	तुला	**बुध मकर में 29/15,**	७	२२	१८	३
२६.४८	८	शनि	२५	१३	17	26	विशा	४२	५३	24	30	वृद्धि	23	33	कौ	२५	१३	१७	२१	6	२४	वृ. 18/13	सूर्य धनि. में 11/35, **शुक्र कुंभ में 22/49**	७	२१	१८	४
२६.५३	९	रवि	२७	२०	18	16	अनु	४६	५३	26	05	ध्रुव	23	10	ग	२७	२०	१८	२२	7	२५	वृश्चिक	भ. 31/02 से प्रा., गण्डमूल रात्रि 26/05 से प्रा.	७	२०	१८	५
२६.५८	१०	चंद्र	३१	१०	19	47	ज्ये	५२	२५	28	17	व्या	23	17	वि	३१	१०	१९	२३	8	२६	ध. 28/17	भ. 19/47 तक, स्वा. दयानन्द सरस्वती जयंती, **शुक्र पश्चिम में B**	७	१९	१८	६
२७.०३	११	मंग	३६	२३	21	51	मूल	५९	०८	30	57	हर्ष	23	48	ब	३	४७	२०	२४	9	२७	धनु	**विजया एकादशी व्रत,** वक्री शनि उ.फा. (4) में 25/30, गं.मू.	७	१८	१८	७
२७.०५	१२	बुध	४२	३०	24	18	पू.षा.	६०	००	पूरा	दिन	वज्र	24	36	कौ	९	२७	२१	२५	10	२८	धनु	गण्डमूलादि 6/57 तक	७	१८	१८	८
२७.०७	१३	गुरु	४९	१०	26	57	पू.षा.	६	३५	9	55	सिद्धि	25	33	ग	१५	५०	२२	२६	11	२९	म. 16/42	भ. 26/57 से, **प्रदोष व्रत,** शुक्र शत. में 30/28,	७	१७	१८	८
२७.१३	१४	शुक्र	५६	३	29	41	उ.षा.	१४	२८	13	03	व्य.	26	33	वि	२२	३७	२३	२७	12	फा.	मकर	भ. 16/19 तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, सूर्य कुम्भ में 25/38, C**	७	१६	१८	९
२७.१८	३०	शनि	६०	००	पूरा	दिन	श्रव	२२	२०	16	11	वरी	27	31	च	२९	२५	२४	२८	13	२	कुं. 29/44	**पंचक प्रारम्भ 29/44, शनिवारी फाल्गुन अमावस, बुध श्रव. D**	७	१५	१८	१०
२७.२३	३०	रवि	२	४७	8	21	धनि	३०	००	19	14	परि	28	23	ना	२	४७	२५	२९	14	३	कुम्भ	**अमावस स्नानदानादि**	७	१४	१८	११

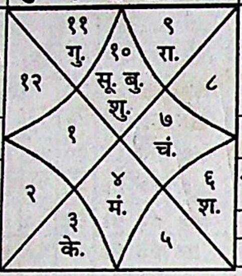
शुक्र उदय 8 फर.

A 2010 ई., गंडमूल प्रात: 6/31 तक **B** उदय 30/48 **C** फाल्गुन संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन प्रात: 8/02 तक, **'कुम्भ महापर्व' स्नान दानादि माहात्म्य प्रारम्भ** **D** में 9/38, स्नानदानादि का विशेष माहात्म्य

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 6 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	३	९	१०	९	५	८	२
२३	२३	१२	००	१०	२९	१०	२५	२५
०४	१०	५८	००	२०	०५	०९	४३	४३
३४	२२	४९	५०	५१	३८	५७	२२	२२
60 48	767 40	22 27	79 57	14 11	75 15	2 28	3 11	3 11
श्रव ४	विशा १	पुष्य ३	उषा २	शत २	धनि ३	हस्त १	पूषा ४	पुर्न २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

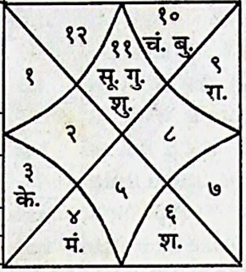
कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30



रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 14 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	३	९	१०	१०	५	८	२
०१	२९	१०	११	१२	०९	०९	२५	२५
१०	५३	१२	१२	१५	०७	४७	१७	१७
२९	१९	०६	३०	०३	१३	३९	५६	५६
60 39	711 37	18 21	88 40	14 23	75 9	3 11	3 11	3 11
धनि ३	धनि २	पुष्य ३	श्रव १	शत २	शत १	उफा ४	पूषा ४	पुर्न २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5.30



फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी (2 फर.) तिथि मंगलवार को होने से **अंगारकी गणेश चतुर्थी** कहलाएगी। अङ्गारक चतुर्थी का व्रत रखकर श्री गणेश पूजन, मंत्र जप (ॐ गम् गणपतये नमः) करने से विघ्न नष्ट होते हैं, मनोकामनाओं की पूर्ति तथा पुत्र-पौत्रादि की समृद्धि होती है। **विजया एकादशी** (9 फर) का व्रत विधिपूर्वक रखने से मनुष्य की विवाद आदि में विजय होती है। ता. 12 फर. को श्री महाशिवरात्रि का व्रत रखकर शिवपूजन, **'ॐ नमः शिवाय'** मन्त्र सहित शिव स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए। रात्रि को जागरण करते हुए चारों प्रहर में विधिपूर्वक शिवपूजन करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन, दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करना चाहिए। शिवरात्रि के दिन ही अर्द्धरात्रि उपरान्त 1 बजकर 38 मिनट पर **फाल्गुन संक्रान्ति** का प्रवेश होने से आगामी शनिवार दिवस (13 फर) स्नान-दान-तर्पण एवं जपादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। **संक्रान्ति फल**–यह संक्रान्ति वृष, सिंह, कन्या, मकर, कुंभ राशि वालों को शुभ रहेगी। **लोक भविष्य**–फाल्गुन मास में पांच रविवारों का समावेश होने से कुछ प्रदेशों में अनाज की कमी, दुर्भिक्ष भय, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), उपद्रव, जातीय हिंसा, अग्निकाण्ड, जनांदोलन एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। अत्यधिक महंगाई के कारण सामान्य लोगों में बेचैनी रहे। **आकाश-लक्षण**–इस पक्ष में भारत के उत्तर-पश्चिम पहाड़ी क्षेत्रों में कहीं तेज हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६६, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाकः १९३१ तारीखें

सन् 2010 ई. (ता. 15 फर. से 28 फरवरी तक) — सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोलार्ध, शिशिर/बसन्त ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः बुध, गु. पूर्व में तथा शनि पश्चिम कपाल में दिखायी देगा। सायं मंग. पूर्व में तथा गु. पश्चिम में दिखायी देगा। 16 फर. से गु. पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा। 26 फर. से बु. भी अस्त होगा।

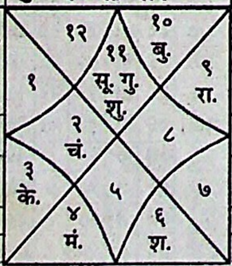
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घटी	पल	माघ शक	सफर मु.	फरवरी	फागु. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट		सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२७.२८	१	चंद्र	९	८	10	52	शत	३७	१३	22	06	शिव	29	06	ब	९	०८	२६	३०	15	४	कुम्भ	चंद्रदर्शनम्, मु. १५,	७	१३	१८	१२
२७.३३	२	मंग	१४	५३	13	09	पू.भा.	४३	४८	24	43	सिद्ध	29	36	कौ	१४	५३	२७	रबि	16	५	मी. 18/06	**गुरु पश्चिम में अस्त 26/48,** 1 रबि उल्लावल (मुस्लि.) प्रा., **A**	७	१२	१८	१३
२७.३८	३	बुध	१९	५०	15	07	उभा	४९	३५	27	01	साध्य	29	50	ग	१९	५०	२८	२	17	६	मीन	भ. 27/55 से प्रारम्भः, गण्डमूल 27/01 से	७	११	१८	१४
२७.४३	४	गुरु	२३	५३	16	43	रेव	५४	२३	28	55	शुभ	29	45	वि	२३	५३	२९	३	18	७	मे. 28/55	भ. 16/43 तक, **पंचक समाप्त 28/55,** गुरु शत. (3) में 17/45,**B**	७	१०	१८	१५
२७.४८	५	शुक्र	२६	४५	17	51	अश्वि	५८	००	30	21	शुक्ल	29	18	बा	२६	४५	३०	४	19	८	मेष	याज्ञवल्क्य जयंती, सूर्य शत. में 16/01, गण्डमूलादि	७	९	१८	१६
२७.५३	६	शनि	२८	१८	18	27	भर	६०	००	पूरा	दिन	ब्रह्म	28	25	तै	२८	१८	फा.	५	20	९	मेष	शक फाल्गुन प्रारम्भ, गण्डमूल प्रातः 6/21 तक	७	८	१८	१७
२७.५५	७	रवि	२८	२०	18	27	भर	०	१८	7	14	ऐंद्र	27	03	व	२८	२०	२	६	21	१०	वृ. 13/21	भ. 18/27 से 30/08 तक, बुध धनि. में 27/24	७	७	१८	१७
२८.००	८	चंद्र	२६	४५	17	48	कृति	१	००	7	30	वैधृ	25	10	ब	२६	४५	३	७	22	११	वृष	शुक्र पू.भा. में 22/12, **होलाष्टक प्रारम्भ,** अन्नपूर्णाष्टमी	७	६	१८	१८
२८.०५	९	मंग	२३	३०	16	29	रोहि मृग	२ ५७	१३ ३५	7 30	08 07	विष्क	22	45	कौ	२३	३०	४	८	23	१२	मि. 18/42		७	५	१८	१९
२८.०८	१०	बुध	१८	४०	14	32	आर्द्रा	५३	३३	28	29	प्रीति	19	50	ग	१८	४०	५	९	24	१३	मिथुन	भ. 25/16 से प्रारम्भ	७	४	१८	१९
२८.१३	११	गुरु	१२	२०	11	59	पुर्न	४८	१३	26	20	आयु	16	28	वि	१२	२०	६	१०	25	१४	क. 20/55	भ. 11/59 तक, **आमलकी एकादशी व्रत,** बुध कुम्भ में 29/46	७	३	१८	२०
२८.१८	१२	शुक्र	४	४५	8	56	पुष्य	४१	४८	23	45	सौभा	12	42	बा	४	४५	७	११	26	१५	कर्क	**प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी, बुध पूर्व में अस्त 18/55**	७	२	१८	२१
००.००	१३	शुक्र	५६	१०	29	30	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०
२८.२३	१४	शनि	४७	५	25	51	श्ले	३४	४३	20	54	शोभ अति	8 28	39 26	ग	२१	३८	८	१२	27	१६	सिं. 20/54	भ. 25/51 से प्रा., गण्डमूलादि	७	१	१८	२२
२८.२७	१५	रवि	३७	५०	22	08	मघा	२७	२३	17	57	सुक	24	11	वि	१२	२८	९	१३	28	१७	सिंह	भ. 12/00 तक, **फाल्गुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त,C**	७	०	१८	२३

A श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, **B** सूर्य सायन मीन में 24/06, **वसन्त ऋतु प्रारम्भ** **C** होलिका दहन (भद्रा बाद), चैतन्य महाप्रभु जयन्ती

चंद्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	३	९	१०	१०	५	८	२
०९	०८	०८	२३	१४	१९	०९	२४	२४
१४	५३	०४	२८	१०	०७	२०	५२	५२
५४	११	४८	१६	२८	४७	०३	३०	३०
60 25	810 47	12 35	96 13	14 29	74 59	3 46	3 11	3 11
शत १	कृति ४	पुष्य २	धनि १	शत ३	शत ४	उफा ४	पूषा ४	पुर्न २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	३	१०	१०	१०	५	८	२
१५	०५	०७	०३	१५	२६	०८	२४	२४
१६	२६	०१	२०	३७	३७	५६	३३	३३
५६	३६	०८	००	२४	१९	२९	२५	२५
60 13	911 25	7 51	102 4	14 29	74 50	4 8	3 11	3 11
शत ३	मघा २	पुष्य २	धनि ४	शत ३	पूभा २	उफा ४	पूषा ४	पुर्न २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

पक्षारम्भ में ता. 16 फर. की मध्यरात्रि से **गुरु अस्त** होगा, जिससे पक्षारम्भ से ही विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश आदि शुभ कार्यों का आरम्भ त्याज्य रहेगा। साथ ही ता. 22 फर से 28 ता. तक **होलाष्टक** रहेंगे। इन दिनों भी पंजाब आदि प्रदेशों में शुभ कृत्यों के आरम्भ निषेध माना गया है। इस पक्ष में **आमलकी एकादशी** 25 (फर.) का व्रत रखकर आंवले के वृक्ष के समीप बैठकर भगवान विष्णु का पूजन करके कथा श्रवण करें। रात्रि जागरण कर दूसरे दिन पारण करें। इससे पापों का क्षय तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है। फाल्गुण पूर्णिमा (28 फर.) रविवार को होली का त्यौहार समस्त भारत (विशेषकर मथुरा नगरी) में बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाई जाती है। परम्परावश कुछ लोग सायंकाल (प्रदोष काल) में होलिका दहन करके अग्निदेव की पूजा करके उत्सव मनाते हैं। इसी दिन परमभक्त चैतन्य महाप्रभु की जयन्ती भी मनाई जाती है। **लोक भविष्य**–फालगुन मास में पांच रविवार होने से देश में कहीं अनाज की कमी, आवश्यक वस्तुओं में अत्यधिक महंगाई, दुर्भिक्ष एवं कहीं अकाल जैसी स्थिति बने। सामान्य लोगों में भय और असंतोष व्याप्त हो। कहीं छत्रभंग या सत्ता परिवर्तन के योग बनेंगे। **आकाश लक्षण**–पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में देश के उत्तरी भागों में खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–चन्द्रदर्शन कुम्भ राशिकालीन होने से दालवाले अनाज, राजमाष, मूंग, मोंठ, उड़द, चना, अरहर, मसूर, खल-बिनौले, काली मिर्च-ये सब तेज़ हों।

वि. संवत् २०६६, चैत्र कृष्ण पक्ष शाक: १९३१ तारीखें

सन् 2010 ई. (ता. 1 मार्च से 15 मार्च तक)
सूर्य–उत्तरायण में, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	समाप्ति काल घण्टे	मिनट	करण	घटी	पल	फागु.	रविउ. मं.	मार्च	फागुन	चंद्र राशि प्रवेश घण्टे-मिन्ट	तिथि, नक्षत्र, योग व चन्द्र आदि ग्रह प्रवेश घण्टा–मिन्टों भी–ग्रह दर्शन–बु. एवं गुरु अस्त हैं। प्रातः शनि पश्चिम में दिखेगा। सायं मं. पूर्व में तथा शु. पश्चिमी क्षितिज के पास दिखाई देगा।	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२८.३३	१	चंद्र	२८	५५	18	32	पू.फा.	२०	१८	15	05	धृति	20	02	बा	३	२३	१०	१४	1	१८	कं.20/24	वसन्तोत्सव, धुलैण्डी, **होला मेला** (आनन्दपुर व पांओटा साहिब), **A**	६	५८	१८	२३
२८.३८	२	मंग	२०	४३	15	14	उ.फा.	१३	५०	12	29	शूल	16	10	ग	२०	४३	११	१५	2	१९	कन्या	भ. 25/50 से, सन्त तुकाराम जयन्ती, **शुक्र मीन में 22/30**	६	५७	१८	२४
२८.४३	३	बुध	१३	४३	12	25	हस्त	८	३३	10	21	गंड	12	42	वि	१३	४३	१२	१६	3	२०	तु. 21/30	भ. 12/25 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय 21/42, स. सि. यो.	६	५६	१८	२५
२८.४५	४	गुरु	१०	५०	10	15	चित्रा	४	४८	8	50	वृद्धि	9	45	बा	१०	५०	१३	१७	4	२१	तुला	सूर्य पू.भा. में 22/22, गुरु शत. (4) में 13/14	६	५५	१८	२५
२८.५०	५	शुक्र	४	५५	8	52	स्वा	२	५८	8	05	ध्रुव व्या.	7 29	25 47	तै	४	५५	१४	१८	5	२२	वृ. 26/05	शुक्र उ.भा. में 14/43, श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ)	६	५४	१८	२६
२८.५८	६	शनि	३	३८	8	20	विशा	३	१५	8	11	हर्ष	28	50	व	३	३८	१५	१९	6	२३	वृश्चिक	भ. 8/20 से 20/31 तक, एकनाथ षष्ठी	६	५३	१८	२७
२९.००	७	रवि	४	३५	8	42	अनु	५	४३	9	09	वज्र	28	32	ब	४	३५	१६	२०	7	२४	वृश्चिक	शीतला सप्तमी, गण्डमूल 9/09 उपरान्त	६	५२	१८	२७
२९.०५	८	चंद्र	७	४०	9	54	ज्ये.	१०	१०	10	54	सिद्धि	28	48	कौ	७	४०	१७	२१	8	२५	ध. 10/54	शीतलाष्टमी व्रत, गण्डमूलादि	६	५०	१८	२७
२९.१०	९	मंग	१२	२५	11	47	मूल	१६	१८	13	20	व्य	29	30	ग	१२	२५	१८	२२	9	२६	धनु	भ. 24/59 से, बुध पू.भा. में 14/44, गण्डमूल 13/20 तक	६	४९	१८	२८
२९.१३	१०	बुध	१८	२८	14	11	पू.षा.	२३	३५	16	14	वरी	30	27	वि	१८	२८	१९	२३	10	२७	म. 23/00	भ. 14/11 तक, **मंगल मार्गी 22/40**	६	४८	१८	२९
२९.१८	११	गुरु	२५	१३	16	52	उ.षा.	३१	२८	19	22	परि	पूरा	दिन	बा	२५	१३	२०	२४	11	२८	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत,**	६	४७	१८	३०
२९.२३	१२	शुक्र	३२	८	19	36	श्रव	३९	३०	22	33	परि	7	30	तै	३२	०८	२१	२५	12	२९	मकर	सर्वार्थ सिद्ध योग	६	४५	१८	३०
२९.२८	१३	शनि	३८	४०	22	12	धनि	४७	०८	25	35	शिव	8	32	ग	५	२४	२२	२६	13	३०	कुं. 12/05	भ. 22/12 से, **पंचक प्रारम्भ** 12/05, **शनि प्रदोष व्रत**, मास **B**	६	४४	१८	३१
२९.३०	१४	रवि	४४	३३	24	32	शत	५४	०५	28	21	सिद्ध	9	24	वि	११	३७	२३	२७	14	चैत्र	कुम्भ	भ. 11/22 तक, **सूर्य मीन में** 22/30, **चैत्र संक्रान्ति**, मु. १५, **C**	६	४३	१८	३१
२९.३५	३०	चंद्र	४९	३५	26	31	पू.भा.	६०	००	पूरा	दिन	साध्य	10	03	च	१७	०४	२४	२८	15	२	मी. 24/13	**सोमवती (चैत्र) अमावस** (देव, पितृादि कार्येषु), वि. सं. २०६६ पूर्ति	६	४१	१८	३१

A बुध शत. में 28/16 **B** शिवरात्रि व्रत, वारुणी पर्व **C** पुण्यकाल मध्याह्न बाद, **बुध मीन** में 20/39, मेला पिहोवातीर्थ (हरियाणा), मे. पृथूदक

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	३	१०	१०	११	५	८	२
२३	२७	०६	१७	१७	०६	०८	२४	२४
१८	१४	२०	२६	३३	३५	२२	०७	०७
००	०९	११	१४	१६	२४	०४	५९	५९
60 1	730 40	1 39	110 40	14 27	74 39	4 29	3 11	3 11
पू.भा. १	ज्ये. ४	पुष्य १	शत ४	शत ४	उ.भा. १	उ.फा. ४	पू.षा. ४	पुन. २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



चंद्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	३	११	१०	११	५	८	२
००	२०	०६	००	१९	१५	०७	२३	२३
१७	३४	२४	४३	१४	१७	५०	४५	४५
२९	३२	०६	०५	१२	३१	००	४४	४४
59 49	726 7	3 26	117 45	14 21	74 29	4 40	3 11	3 11
पू.भा. ४	पू.भा. १	पुष्य १	पू.भा. ४	शत ४	उ.भा. ४	उ.फा. ४	पू.षा. ४	पुन. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (1 मार्च) को होला-मेला, धुलैण्डी व वसन्त-उत्सव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। इसी दिन कई मन्दिरों या ठाकुर द्वारों में ध्वजारोहण भी किया जाता है। ता. 3 को **श्री गणेश चतुर्थी** का व्रत विधिपूर्वक रखने से अनिष्ट ग्रहों सम्बन्धी कष्टों से निवृत्ति होती है। इसी पक्ष में **पापमोचनी एकादशी** (11 मार्च) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 13 को शनि प्रदोष का व्रत रखकर सायं काल सूर्यास्त के समय स्नान करके भगवान् शंकर की पुष्प, बिल्वपत्रादि से पूजा करने का विशेष फल होता है। **चैत्र मास** की संक्रान्ति रविवार को १५ मुहूर्त्ति है। रात्रि को साढ़े दस बजे प्रवेश होने से स्नान दानादि का पुण्यकाल दुपैहर से प्रारम्भ होगा। ता. 15 मार्च को चैत्र मास की अमावस सोमवार होने के कारण इस दिन तीर्थादि स्नान पर प्रातः स्नान, दान, जप आदि करने से सूर्यग्रहण के समान पुण्य फल प्राप्त होते हैं–''**अमा सोमे शनौ भौमे गुरूवारे यदा भवेत्। तत्पर्वं पुष्करं नाम सूर्य पर्वशताधिकम्॥**'' **चैत्र संक्रान्ति** रविवार को होने से गेहूँ, चने, चावल आदि सब प्रकार के अनाज, खल-बिनौले, खाद्य तेल आदि के भाव और तेज होंगे। राजनीतिक अस्थिरता बने। नेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव बढ़ें। सामान्य लोगों में भय, दुःख व परेशानियाँ बढ़ें॥ **संक्रान्ति राशिफल**–वृष, सिंह, तुला, मकर, कुम्भ व मीन राशि वालों को व्यापार में लाभदायक होगी।

आकाश लक्षण-शकुन–चैत्र प्रति. को या सोमवती अमा. को वर्षा या बूंदा-बांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे। **इति शुभम् भयात्॥**

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2066 (सन् 2009-10 ई.)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
मार्च 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
20/21 मार्च	उ.षा.	20	45	3	30	10	11	16	54
21/22 मार्च	श्रव.	23	37	6	13	12	50	19	26
23/24 मार्च	धनि.	2	02	8	32	15	03	21	28
24/25 मार्च	शत.	3	54	10	12	16	31	22	49
25/26 मार्च	पूभा.	5	07	11	16	17	26	23	36
26/27 मार्च	उभा.	5	41	11	44	17	45	23	44
27 मार्च	रेवती	5	41	11	34	17	26	23	19
28 मार्च	अश्विनी	5	11	10	58	16	45	21	28
29 मार्च	भरणी	4	19	10	02	15	45	21	28
30 मार्च	कृति.	3	11	8	52	14	32	20	13
31 मार्च	रोहिणी	1	53	7	32	13	12	18	51
1 अप्रैल	मृग.	0	30	6	09	11	49	17	28
1/2 अप्रैल	आर्द्रा	23	07	4	47	10	27	16	06
2/3 अप्रैल	पुर्न	21	46	3	27	9	07	14	48
3/4 अप्रैल	पुष्य	20	29	2	11	7	52	13	34
4/5 अप्रैल	अश्ले.	19	16	1	00	6	43	12	27
5/6 अप्रैल	मघा	18	10	23	55	5	41	11	27
6/7 अप्रैल	पू.फा.	17	12	23	00	4	49	10	37
7/8 अप्रैल	उ.फा.	16	26	22	17	4	10	10	04
8/9 अप्रैल	हस्त	15	56	21	54	3	52	9	50
9/10 अप्रै.	चित्रा	15	48	21	50	3	53	10	01
10/11 अप्रै.	स्वा.	16	06	22	18	4	31	10	43
11/12 अप्रै.	विशा.	16	56	23	16	5	35	11	56
12/13 अप्रै.	अनु.	18	20	0	50	7	20	13	50
13/14 अप्रै.	ज्ये.	20	20	2	58	9	36	16	14
14/15 अप्रै.	मूल	22	52	5	36	12	20	19	03
16 अप्रैल	पू.षा.	1	47	8	33	15	20	22	06
17/18 अप्रै.	उ.षा.	4	52	11	38	18	24	1	08
18/19 अप्रै.	श्रव.	7	53	14	33	21	14	3	54
19/20 अप्रै.	धनि.	10	34	17	08	23	42	6	09

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
अप्रै. 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
20/21 अप्रै.	शत.	12	41	19	02	1	24	7	46
21/22 अप्रै.	पू.भा.	14	07	20	18	2	28	8	41
22/23 अप्रै.	उ.भा.	14	47	20	46	2	45	8	44
23/24 अप्रै.	रेवती	14	43	20	32	2	20	8	09
24/25 अप्रै.	अश्विनी	13	58	19	39	1	20	7	01
25/26 अप्रै.	भरणी	12	42	18	17	23	52	5	27
26/27 अप्रै.	कृति	11	02	16	34	22	05	3	36
27/28 अप्रै.	रोहि.	9	08	14	38	20	09	1	40
28 अप्रैल	मृग.	7	10	12	41	18	11	23	43
29 अप्रैल	आर्द्रा	5	14	10	47	16	21	21	54
30 अप्रैल	पुर्न	3	27	9	04	14	40	20	16
1 मई	पुष्य	1	54	7	35	13	15	18	56
2 मई	अश्ले.	0	37	6	22	12	08	17	53
2/3 मई	मघा	23	38	5	28	11	18	17	08
3/4 मई	पू.फा.	22	58	4	52	10	47	16	41
4/5 मई	उ.फा.	22	36	4	34	10	35	16	34
5/6 मई	हस्त	22	34	4	38	10	43	16	47
6/7 मई	चित्रा	22	51	5	01	11	09	17	20
7/8 मई	स्वा.	23	32	5	48	12	04	18	20
9 मई	विशा.	0	36	6	58	13	21	19	43
10 मई	अनु.	2	08	8	38	15	09	21	39
11 मई	ज्ये.	4	09	10	46	17	22	23	59
12/13 मई	मूल.	6	36	13	18	20	01	2	43
13/14 मई	पू.षा.	9	26	16	12	22	59	5	45
14/15 मई	उ.षा.	12	31	19	18	2	04	8	51
15/16 मई	श्रव.	15	38	22	22	5	06	11	50
16/17 मई	धनि.	18	34	1	12	7	53	14	28
17/18 मई	शत.	21	05	3	33	10	01	16	29
18/19 मई	पू.भा.	22	57	5	14	11	30	17	52
20 मई	उ.भा.	0	04	7	08	14	13	21	17

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
मई 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
21 मई	रेवती	0	21	6	13	12	06	17	58
21/22 मई	अश्विनी	23	50	5	31	11	13	16	54
22/23 मई	भरणी	22	36	4	09	9	41	15	14
23/24 मई	कृतिका	20	47	2	15	7	40	13	07
24/25 मई	रोहि.	18	33	23	56	5	18	10	41
25/26 मई	मृग.	16	04	21	26	2	48	8	10
26/27 मई	आर्द्रा	13	32	18	55	0	18	5	41
27/28 मई	पुर्न.	11	04	16	30	21	57	3	22
28/29 मई	पुष्य	8	50	14	22	19	53	1	25
29 मई	अश्ले.	6	57	12	35	18	14	23	52
30 मई	मघा	5	30	11	15	17	00	22	45
31 मई	पू.फा.	4	30	10	23	16	15	22	08
1 जून	उ.फा.	4	01	9	58	16	00	22	01
2 जून	हस्त	4	01	10	08	16	16	22	23
3 जून	चित्रा	4	31	10	44	16	56	23	13
4/5 जून	स्वा.	5	28	11	49	18	10	0	31
5/6 जून	विशा.	6	52	13	19	19	45	2	11
6/7 जून	अनु.	8	40	15	13	21	46	4	19
7/8 जून	ज्ये.	10	52	17	30	0	09	6	48
8/9 जून	मूल	13	26	20	09	2	51	9	34
9/10 जून	पूषा	16	17	23	03	5	49	12	35
10/11 जून	उषा	19	21	2	08	8	56	15	43
11/12 जून	श्रव.	22	30	5	16	12	02	18	48
13 जून	धनि.	1	34	8	17	15	01	21	40
14/15 जून	शत.	4	21	10	55	17	30	0	04
15/16 जून	पू.भा.	6	39	13	04	19	28	1	58
16/17 जून	उ.भा.	8	18	14	31	20	45	2	58
17/18 जून	रेवती	9	12	15	13	21	14	3	15
18/19 जून	अश्विनी	9	16	15	05	20	54	2	43
19/20 जून	भरणी	8	32	14	10	19	49	1	27

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
जून 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
20 जून	कृति.	7	05	12	37	18	03	23	32
21 जून	रोहि.	5	01	10	23	15	46	21	08
22 जून	मृग.	2	31	7	48	13	09	18	24
22/23 जून	आर्द्रा	23	41	4	59	10	16	15	34
23/24 जून	पुर्न	20	52	2	10	7	28	12	45
24/25 जून	पुष्य	18	04	23	25	4	47	10	09
25/26 जून	अश्ले	15	30	20	57	2	24	7	51
26/27 जून	मघा	13	18	18	52	0	27	6	01
27/28 जून	पूफा	11	36	17	19	23	03	4	46
28/29 जून	उफा	10	30	16	19	22	16	4	09
29/30 जून	हस्त	10	02	16	05	22	07	4	10
30/1 जुला.	चित्रा	10	13	16	24	22	34	4	49
1/2 जुला.	स्वा.	11	03	17	24	23	46	6	07
2/3 जुला.	विशा.	12	29	18	57	1	26	7	54
3/4 जुला.	अनु.	14	25	21	01	3	36	10	12
4/5 जुला.	ज्ये.	16	48	23	29	6	10	12	50
5/6 जुला.	मूल	19	31	2	15	9	00	15	44
6/7 जुला.	पू.षा.	22	28	5	14	12	01	18	47
8 जुलाई	उ.षा.	1	33	8	20	15	07	21	54
9/10 जुला.	श्रव.	4	41	15	26	18	12	0	57
10/11 जुला	धनि.	7	43	14	25	21	10	3	50
11/12 जुला	शत.	10	33	17	10	23	48	6	25
12/13 जुला	पू.भा.	13	02	19	33	2	02	8	34
13/14 जुला	उ.भा.	15	01	21	22	3	43	10	04
14/15 जुला	रेवती	16	25	22	35	4	46	10	57
15/16 जुला	अश्विनी	17	07	23	06	5	06	11	05
16/17 जुला	भरणी	17	05	22	53	4	42	10	30
17/18 जुला	कृति.	16	19	22	01	3	38	9	15
18/19 जुला	रोहि.	14	53	20	23	25	52	7	22
19/20 जुला	मृग.	12	52	18	15	23	41	5	02
20/21 जुला	आर्द्रा	10	25	15	43	21	02	2	20
21 जुलाई	पुर्न	7	39	12	55	18	12	23	28
22 जुलाई	पुष्य	4	44	10	01	15	17	20	34

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
जुला. 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
23 जुलाई	अश्ले.	1	51	7	11	12	31	17	51
23/24 जुला	मघा	23	10	4	35	10	01	15	26
24/25 जुला	पू.फा.	20	51	2	24	7	56	13	29
25/26 जुला	उ.फा.	19	02	0	40	6	25	12	08
26/27 जुला	हस्त	17	50	23	43	5	36	11	29
27/28 जुला	चित्रा	17	22	23	24	5	25	11	34
28/29 जुला	स्वाति	17	39	23	55	6	10	12	26
29/30 जुला	विशा.	18	42	1	08	7	34	13	57
30/31 जुला	अनु.	20	26	3	01	9	35	16	10
31 जु/1 अग.	ज्ये.	22	45	5	26	12	08	18	49
2 अगस्त	मूला	1	30	8	15	15	01	21	46
3/4 अगस्त	पूषा	4	31	11	18	18	05	0	52
4/5 अगस्त	उषा	7	39	14	26	21	13	3	58
5/6 अगस्त	श्रवण	10	45	17	29	0	14	6	58
6/7 अगस्त	धनि.	13	42	20	23	3	05	9	45
7/8 अगस्त	शत.	16	24	22	59	5	35	12	10
8/9 अगस्त	पू.भा.	18	46	1	15	7	46	14	17
9/10 अग.	उ.भा.	20	44	3	07	9	29	15	52
10/11 अग.	रेव	22	15	4	30	10	45	17	00
11/12 अग.	अश्वि.	23	15	5	22	11	28	17	35
12/13 अग.	भरणी	23	42	5	40	11	38	17	36
13/14 अग.	कृति.	23	34	5	26	11	13	17	02
14/15 अग.	रोहि.	22	51	4	32	10	13	15	54
15/16 अग.	मृग.	21	35	3	08	8	45	14	17
16/17 अग.	आर्द्रा	19	49	1	16	6	44	12	11
17/18 अग.	पुर्न	17	38	23	02	4	25	9	48
18/19 अग.	पुष्य	15	09	20	29	1	50	7	10
19/20 अग.	अश्ले.	12	31	17	51	23	12	4	32
20/21 अग.	मघा	9	52	15	14	20	37	1	59
21 अगस्त	पू.फा.	7	21	12	48	18	15	23	42
22 अगस्त	उ.फा.	5	09	10	40	16	16	21	51
23 अगस्त	हस्त	3	26	9	09	14	53	20	36
24 अगस्त	चित्रा	2	20	8	12	14	03	20	02

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
अग. 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
25 अगस्त	स्वाती	1	58	8	04	14	11	20	18
26 अगस्त	विशा.	2	24	8	42	14	58	21	15
27 अगस्त	अनु.	3	38	10	07	16	37	23	06
28/29 अग.	ज्ये.	5	35	12	13	18	52	1	30
29/30 अग.	मूल	8	08	14	52	21	37	4	21
30/31 अग.	पू.षा.	11	05	17	52	0	39	7	26
31 अग./1 सितं.	उ.षा.	14	13	21	00	3	46	10	32
1/2 सितं.	श्रव.	17	19	0	02	6	46	13	30
2/3 सितं.	धनि.	20	13	2	52	9	33	16	09
3/4 सितं.	शत.	22	47	5	19	11	52	18	24
5 सितंबर	पू.भा.	0	56	7	21	13	48	20	15
6 सितंबर	उ.भा.	2	39	8	58	15	17	21	36
7 सितंबर	रेवती	3	55	10	07	16	20	22	32
8 सितंबर	अश्वि.	4	45	10	51	16	58	23	04
9 सितंबर	भरणी	5	10	11	09	17	10	23	11
10 सितंबर	कृति.	5	11	11	08	17	01	22	55
11 सितंबर	रोहि.	4	49	10	38	16	26	22	15
12 सितंबर	मृग.	4	04	9	47	15	33	21	15
13 सितंबर	आर्द्रा	2	57	8	35	14	14	19	52
14 सितंबर	पुर्न	1	30	7	04	12	38	18	11
14/15 सितं.	पुष्य	23	44	5	14	10	44	16	14
15/16 सितं.	अश्ले.	21	44	3	12	8	40	14	08
16/17 सितं.	मघा	19	36	1	04	6	31	11	59
17/18 सितं.	पू.फा.	17	27	22	56	4	26	9	55
18/19 सितं.	उ.फा.	15	25	20	56	2	30	8	06
19/20 सितं.	हस्त	13	39	19	19	0	58	6	38
20/21 सितं.	चित्रा	12	18	18	04	23	50	5	40
21/22 सितं.	स्वा.	11	32	17	31	23	30	5	29
22/23 सितं.	विशा.	11	28	17	37	23	47	5	55
23/24 सितं.	अनु.	12	10	18	32	0	55	7	17
24/25 सितं.	ज्ये.	13	39	20	12	2	44	9	17
25/26 सितं.	मूल	15	50	22	31	5	12	11	53
26/27 सितं.	पू.षा.	18	34	1	20	8	05	14	51

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
सितं. 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
27/28 सितं.	उ.षा.	21	37	4	24	11	10	17	57
29 सितंबर	श्रव.	0	44	7	28	14	12	20	56
30 सितंबर	धनि.	3	40	10	19	17	01	23	36
1 /2 अक्तू.	शत.	6	14	12	45	19	16	1	47
2/3 अक्तू.	पू.भा.	8	18	14	41	21	05	3	29
3/4 अक्तू.	उ.भा.	9	48	16	02	22	17	4	31
4/5 अक्तू.	रेव.	10	45	16	52	22	58	5	05
5/6 अक्तू.	अश्वि.	11	12	17	12	23	13	5	13
6/7 अक्तू.	भरणी	11	13	17	08	23	02	4	57
7/8 अक्तू.	कृति.	10	52	16	45	22	35	4	26
8/9 अक्तू.	रोहि.	10	16	16	03	21	52	3	38
9/10 अक्तू.	मृग.	9	26	15	12	20	58	2	43
10/11 अक्तू.	आर्द्रा	8	26	14	09	19	51	1	34
11/12 अक्तू.	पुर्न	7	17	12	58	18	39	0	20
12 अक्तूबर	पुष्य	6	01	11	40	17	19	22	58
13 अक्तूबर	अश्ले.	4	37	10	15	15	52	21	30
14 अक्तूबर	मघा	3	08	5	38	14	23	20	00
15 अक्तूबर	पू.फा.	1	37	7	15	12	53	18	31
16 अक्तूबर	उ.फा.	0	09	5	47	11	27	17	08
16/17 अक्तू.	हस्त	22	49	4	33	10	16	16	00
17/18 अक्तू.	चित्रा	21	44	3	32	9	20	15	12
18/19 अक्तू.	स्वा.	21	03	3	01	8	59	14	56
19/20 अक्तू.	विशा.	20	53	2	59	9	05	15	10
20/21 अक्तू.	अनु.	21	21	3	39	9	56	16	13
21/22 अक्तू.	ज्ये.	22	29	4	56	11	24	17	51
23 अक्तूबर	मूल	0	19	6	56	13	32	20	09
24 अक्तूबर	पूषा	2	46	9	29	16	13	22	56
25/26 अक्तू.	उ.षा.	5	39	12	25	19	11	1	59
26/27 अक्तू.	श्रव.	8	46	15	32	22	18	5	04
27/28 अक्तू.	धनि.	11	50	18	32	1	15	7	54
28/29 अक्तू.	शत.	14	35	21	08	3	42	10	15
29/30 अक्तू.	पू.भा.	16	49	23	15	5	39	12	04
30/31 अक्तू.	उ.भा.	18	24	0	37	6	51	13	04

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
नवं. 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
31/1 नवंबर	रेव.	19	18	1	21	7	25	13	28
1/2 नवंबर	अश्वि	19	32	1	27	7	21	13	16
2/3 नवंबर	भरणी	19	11	0	59	6	46	12	34
3/4 नवंबर	कृति	18	22	0	06	5	49	11	30
4/5 नवंबर	रोहि	17	12	22	51	4	31	10	10
5/6 नवंबर	मृग.	15	49	21	27	3	05	8	43
6/7 नवंबर	आर्द्रा	14	20	19	57	1	35	7	12
7/8 नवंबर	पुर्न	12	49	18	27	0	05	5	43
8/9 नवंबर	पुष्य	11	22	17	01	22	40	4	21
9/10 नवं.	अश्ले.	9	59	15	40	21	22	3	03
10/11 नवं.	मघा	8	44	14	27	20	10	1	53
11/12 नवं.	पूफा	7	36	13	21	19	07	0	52
12/13 नवं.	उफा	6	38	12	25	18	14	0	03
13 नवंबर	हस्त	5	52	11	44	17	36	23	27
14 नवंबर	चित्रा	5	19	11	15	17	10	23	08
15 नवंबर	स्वा.	5	06	11	08	17	11	23	13
16 नवंबर	विशा.	5	15	11	23	17	33	23	41
17/18 नवं.	अनु.	5	53	12	10	18	28	0	45
18/19 नवं.	ज्ये.	7	02	13	28	19	53	2	19
19/20 नवं.	मूला	8	45	15	19	21	53	4	27
20/21 नवं.	पूषा	11	01	17	42	0	24	7	05
21/22 नवं.	उषा	13	46	20	30	3	15	10	02
22/23 नवं.	श्रव.	16	49	23	36	6	24	13	11
23/24 नवं.	धनि.	19	58	2	44	9	30	16	15
24/25 नवं.	शत.	22	58	5	37	12	16	18	55
26 नवंबर	पूभा	1	34	8	02	14	36	21	07
27 नवंबर	उभा	3	34	9	53	16	11	22	30
28 नवंबर	रेवती	4	49	10	56	17	04	23	11
29 नवंबर	अश्वि.	5	18	11	14	17	10	23	06
30 नवंबर	भरणी	5	02	10	48	16	33	22	19
1 दिसम्बर	कृति	4	05	9	45	15	20	20	58
2 दिसम्बर	रोहि.	2	36	8	08	13	39	19	11
3 दिसम्बर	मृग.	0	43	6	12	11	41	17	08

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
दिसं. 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
3/4 दिसंबर	आर्द्रा	22	36	4	03	9	30	14	57
4/5 दिसंबर	पुर्न	20	24	1	52	7	19	12	46
5/6 दिसंबर	पुष्य	18	14	23	44	5	14	10	44
6/7 दिसंबर	अश्ले.	16	14	21	48	3	21	8	55
7/8 दिसंबर	मघा	14	29	20	08	1	46	7	25
8/9 दिसंबर	पू.फा.	13	03	18	47	0	32	6	16
9/10 दिसं.	उ.फा.	12	00	17	47	23	38	5	30
10/11 दिसं.	हस्त	11	20	17	16	23	13	5	09
11/12 दिसं.	चित्रा	11	05	17	09	23	07	5	14
12/13 दिसं.	स्वा.	11	15	17	24	23	32	5	41
13/14 दिसं.	विशा.	11	50	18	04	0	20	6	34
14/15 दिसं.	अनु.	12	52	19	14	1	36	7	58
15/16 दिसं.	ज्ये.	14	20	20	49	3	17	9	45
16/17 दिसं.	मूल	16	14	22	49	5	24	11	59
17/18 दिसं.	पू.षा.	18	34	1	14	7	55	14	35
18/19 दिसं.	उ.षा.	21	16	4	00	10	45	17	31
20/21 दिसं.	श्रव.	0	16	7	03	13	51	20	38
21/22 दिसं.	धनि.	3	25	10	12	17	00	23	47
22/23 दिसं.	शत.	6	34	13	17	20	01	2	44
23/24 दिसं.	पू.भा.	9	28	16	06	22	43	5	22
24/25 दिसं.	उ.भा.	11	56	18	24	0	51	7	19
25/26 दिसं.	रेवती	13	47	20	04	2	20	8	37
26/27 दिसं.	अश्वि.	14	54	20	58	3	03	9	07
27/28 दिसं.	भरणी	15	12	21	05	2	57	8	50
28/29 दिसं.	कृति.	14	43	20	28	2	06	7	48
29/30 दिसं.	रोहि.	13	29	19	01	0	34	6	06
30/31 दिसं.	मृग	11	39	17	06	22	32	3	55
31 दिसं/1 जन. 2010	आर्द्रा	9	20	14	41	20	01	1	22
1 जनवरी	पुर्न	6	43	12	01	17	20	22	38
2 जनवरी	पुष्य	3	56	9	15	14	34	19	53
3 जनवरी	अश्ले.	1	12	6	33	11	55	17	16
3/4 जनवरी	मघा	22	38	4	04	9	31	14	57
4/5 जनवरी	पू.फा.	20	24	1	57	7	30	13	03

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जन.–फर.	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
5/6 जनवरी	उफा	18	36	0	14	5	58	11	39
6/7 जनवरी	हस्त	17	22	23	12	5	03	10	53
7/8 जनवरी	चित्रा	16	43	22	41	4	39	10	43
8/9 जनवरी	स्वा.	16	43	22	52	5	02	11	11
9/10 जन.	विशा.	17	21	23	38	5	56	12	12
10/11 जन.	अनु.	18	34	1	00	7	26	13	52
11/12 जन.	ज्ये.	20	18	2	51	9	23	15	56
12/13 जन.	मूल	22	29	5	07	11	46	18	24
14 जनवरी	पू.षा.	1	03	7	45	14	28	21	10
15/16 जन.	उ.षा.	3	53	10	37	17	23	0	09
16/17 जन.	श्रव.	6	54	13	41	20	38	3	15
17/18 जन.	धनि.	10	02	16	49	23	36	6	23
18/19 जन.	शत.	13	09	19	53	2	38	9	22
19/20 जन.	पू.भा.	16	07	22	48	5	29	12	11
20/21 जन.	उ.भा.	18	49	1	23	7	58	14	32
21/22 जन.	रेवती	21	06	3	31	9	57	16	22
22/23 जन.	अश्वि.	22	48	5	04	11	19	17	35
23/24 जन.	भरणी	23	51	5	55	12	00	18	04
25 जनवरी	कृति	0	08	6	05	11	57	17	48
25/26 जन.	रोहि.	23	40	5	22	11	04	16	46
26/27 जन.	मृग.	22	28	4	02	9	37	15	08
27/28 जन.	आर्द्रा	20	37	2	01	7	26	12	50
28/29 जन.	पुर्न	18	14	23	33	4	52	10	11
29/30 जन.	पुष्य	15	27	20	42	1	58	7	13
30/31 जन.	अश्ले.	12	28	17	42	22	57	4	11
31 जन./1 फर	मघा	9	25	14	41	19	58	1	14
1 फरवरी	पू.फा.	6	31	11	52	17	14	22	35
2 फरवरी	उ.फा.	3	56	9	21	14	51	20	21
3 फरवरी	हस्त	1	50	7	28	13	05	18	43
4 फरवरी	चित्रा	0	21	6	08	11	53	17	47
4/5 फर.	स्वा.	23	37	5	38	11	38	17	39
5/6 फर.	विशा.	23	40	5	51	12	02	18	13
7 फरवरी	अनु.	0	30	6	54	13	17	19	41

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
फर.–मार्च	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
8 फरवरी	ज्ये.	2	05	8	38	15	11	21	44
9/10 फर.	मूल	4	17	10	57	17	37	0	17
10/11 फर.	पू.षा.	6	57	13	41	20	26	3	10
11/12 फर.	उ.षा.	9	55	16	42	23	29	6	16
12/13 फर.	श्रव.	13	03	19	50	2	37	9	24
13/14 फर.	धनि.	16	11	22	59	5	44	12	28
14/15 फर.	शत.	19	14	1	57	8	40	15	23
15/16 फर.	पू.भा.	22	06	4	45	11	26	18	06
17 फरवरी	उ.भा.	0	43	7	17	13	52	20	26
18 फरवरी	रेवती	3	01	9	29	15	58	22	26
19 फरवरी	अश्वि	4	55	11	16	17	38	23	59
20/21 फर.	भरणी	6	21	12	34	18	48	1	01
21/22 फर.	कृति	7	14	13	21	19	23	1	26
22/23 फर.	रोहि.	7	30	13	24	19	19	1	13
23/24 फर.	मृग.	7	08	12	54	18	42	0	23
24 फरवरी	आर्द्रा	6	07	11	42	17	18	22	53
25 फरवरी	पुर्न	4	29	9	57	15	24	20	55
26 फरवरी	पुष्य	2	20	7	41	13	03	18	24
26/27 फर.	अश्ले.	23	45	5	02	10	20	15	37
27/28 फर.	मघा	20	54	2	10	7	25	12	41
28 फर./1 मार्च	पू.फा.	17	57	23	14	4	31	9	48
1/2 मार्च	उ.फा.	15	05	20	24	1	45	7	07
2/3 मार्च	हस्त	12	29	17	57	23	25	4	53
3/4 मार्च	चित्रा	10	21	15	59	21	30	3	10
4/5 मार्च	स्वा.	8	50	14	39	20	27	2	16
5/6 मार्च	विशा.	8	05	14	06	20	06	2	05
6/7 मार्च	अनु.	8	11	14	25	20	40	2	54
7/8 मार्च	ज्ये.	9	09	15	35	22	02	4	28
8/9 मार्च	मूल	10	54	17	30	0	07	6	43
9/10 मार्च	पू.षा.	13	20	20	03	2	47	9	30
10/11 मार्च	उ.षा.	16	14	23	00	5	47	12	35
11/12 मार्च	श्रव.	19	22	2	10	8	57	15	45
12/13 मार्च	धनि.	22	33	5	18	12	05	18	49
14 मार्च	शत.	1	35	8	16	14	58	21	39
15/16 मार्च	पू.भा.	4	21	10	59	17	36	24	13

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके ''महामृत्युञ्जय मन्त्र'' का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल
मस्तक (सिर)	राज्य लाभ
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति
नाक	सौभाग्य वृद्धि
दाहिना कान	आयु वृद्धि
बायां कान	भूषण लाभ
दाईं भुजा	मान-सम्मान
बाईं भुजा	धन-हानि, राज भय
कण्ठ	शत्रु नाश
पीठ के मध्य	क्लह-क्लेश
बाईं पीठ	रोग भय
दायीं पीठ	सुख लाभ
दायें कन्धे	विजय, सफलता
बायें कन्धे	दुश्मनों से भय
कमर	रोग भय
दाईं जाँघ	धन हानि
बाईं जाँघ	पुत्र से लाभ
दायें हाथ	धन लाभ

अंग	फल
बायें हाथ	धन हानि
नाभि	पुत्र प्राप्ति
हृदय	सुख-यश प्राप्ति
गुदा	रोग भय
गुप्तांग	मित्र से भेंट
दायें पाँव	यात्रा (भ्रमण)
बायें पाँव	रोग-क्लेश
पावों की उंगलियों	यात्रा
गर्दन	यश, लाभ

स्वप्न एवं अन्य शकुन सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से स्वप्न-ज्योतिष विज्ञान नामक पुस्तक मँगवाकर पढ़ें।

—जनरल बुक डिपो जालन्धर

अंगस्फुरण फल

सिर	पृथ्वी लाभ
माथा	स्थान लाभ
वामभुज	प्रिय प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शन
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन
कपोल	स्त्री सुख
नासा	गन्ध सुख
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन
कण्ठ	भूषण प्राप्ति
ग्रीवा	शत्रु भय
पीठ	पराजय
कन्धा	मित्र समागम
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति

बाहुमध्य	धनागमः
कर (हाथ)	धन प्राप्ति
छाती	विजय
पार्श्व	उत्तम प्रीति
नाभि	यात्रा से लाभ
उदर पेट	कोष प्राप्तिः
वृष्ण	पुत्र लाभ
जानु (घुटना)	रिपु (शत्रु) सन्धि
जंघा	हानिप्रद
चरण के ऊपर	स्थान प्राप्ति
चरण के नीचे	लाभप्रदः
दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
कण्ठे	शत्रुनाश

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं—मान लीजिए, आपको **5 अप्रैल, 2009 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **5 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट 11.21.21′.23″ राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (6) अप्रै. में से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59′.03″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.26) हुई, इसको **5 अप्रैल प्रातः सूर्य स्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11.21.39′.49″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिषी तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3′	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5′	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7′	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9′	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11′	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13′	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15′	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17′	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19′	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21′	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23′	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25′	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27′	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29′	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31′	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33′	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35′	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37′	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39′	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41′	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43′	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45′	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47′	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49′	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51′	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53′	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55′	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57′	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58′	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59′	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60′	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61′	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63′	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65′	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67′	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69′	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71′	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73′	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75′	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77′	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79′	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81′	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83′	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85′	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87′	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89′	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90′	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92′	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94′	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96′	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98′	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99′	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100′	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102′	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104′	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106′	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108′	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110′	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112′	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114′	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116′	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118′	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रात: 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2066 (सन् 2009-10 ई.)

नोट–अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। *(26 मार्च से 29 अप्रैल तक)* 1 अप्रैल, 2009 ई. को अयनांश 23°/59′/24″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
26	11 11 28 45	11 3 14 00	10 14 30 59	11 6 20 23	9 23 57 37	11 14 24 13	4 23 3 31	9 12 31 20	2 10	+2 26	5 55	18 36	26
27	11 12 28 11	11 16 34 02	10 15 17 57	11 8 17 20	9 24 9 21	11 13 46 39	4 22 59 8	9 12 28 9	2 34	8 20	6 25	19 38	27
28	11 13 27 35	0 0 10 52	10 16 4 54	11 10 15 27	9 24 21 1	11 13 8 54	4 22 54 47	9 12 24 58	2 57	13 57	6 59	20 43	28
29	11 14 26 56	0 14 1 25	10 16 51 51	11 12 14 43	9 24 32 34	11 12 31 16	4 22 50 30	9 12 21 47	3 21	18 58	7 37	21 50	29
30	11 15 26 15	0 28 1 45	10 17 38 47	11 14 15 4	9 24 44 3	11 11 53 56	4 22 46 16	9 12 18 37	3 44	23 00	8 20	22 59	30
31	11 16 25 33	1 12 8 2	10 18 25 43	11 16 16 24	9 24 55 25	11 11 17 13	4 22 42 5	9 12 15 26	4 07	25 42	9 11	24 04	31
अप्रै.	11 17 24 47	1 26 17 51	10 19 12 36	11 18 18 38	9 25 6 42	11 10 41 16	4 22 37 57	9 12 12 15	4 31	26 46	10 10	— —	अप्रै.
2	11 18 24 0	2 10 25 40	10 19 59 30	11 20 21 38	9 25 17 54	11 10 6 22	4 22 33 53	9 12 9 4	4 54	26 6	11 15	1 02	2
3	11 19 23 10	2 24 33 50	10 20 46 23	11 22 25 14	9 25 29 1	11 9 32 43	4 22 29 52	9 12 5 54	5 17	23 45	12 22	1 55	3
4	11 20 22 17	3 8 37 19	10 21 33 15	11 24 29 18	9 25 40 1	11 9 0 31	4 22 25 55	9 12 2 43	5 40	19 57	13 31	2 41	4
5	11 21 21 23	3 22 38 14	10 22 20 6	11 26 33 33	9 25 50 56	11 8 29 58	4 22 22 2	9 11 59 32	6 3	15 2	14 38	3 21	5
6	11 22 20 26	4 6 34 36	10 23 6 57	11 28 37 50	9 26 1 45	11 8 1 13	4 22 18 13	9 11 56 21	6 25	9 22	15 43	3 57	6
7	11 23 19 27	4 20 24 39	10 23 53 46	0 0 41 51	9 26 12 28	11 7 34 25	4 22 14 27	9 11 53 11	6 48	+3 18	16 47	4 29	7
8	11 24 18 25	5 4 6 14	10 24 40 34	0 2 45 17	9 26 23 5	11 7 9 42	4 22 10 46	9 11 49 50	7 10	–2 51	17 49	5 01	8
9	11 25 17 22	5 17 36 40	10 25 27 22	0 4 47 50	9 26 33 36	11 6 47 12	4 22 7 10	9 11 46 39	7 33	–8 47	18 50	5 33	9
10	11 26 16 16	6 0 53 22	10 26 14 8	0 6 49 10	9 26 44 1	11 6 26 58	4 22 3 37	9 11 43 28	7 55	–14 12	19 52	6 04	10
11	11 27 15 9	6 13 54 16	10 27 0 54	0 8 48 56	9 26 54 19	11 6 9 7	4 22 0 9	9 11 40 18	8 17	–18 53	20 54	6 40	11
12	11 28 14 0	6 26 38 19	10 27 47 38	0 10 46 46	9 27 4 31	11 5 53 40	4 21 56 45	9 11 37 7	8 39	–22 35	21 54	7 18	12
13	11 29 12 48	7 9 5 42	10 28 34 21	0 12 42 20	9 27 14 36	11 5 40 40	4 21 53 27	9 11 33 56	9 1	–25 9	22 51	8 02	13
14	0 0 11 35	7 21 18 5	10 29 21 4	0 14 35 16	9 27 24 35	11 5 30 7	4 21 50 12	9 11 30 45	9 23	–26 29	23 44	8 50	14
15	0 1 10 20	8 3 18 17	11 0 7 45	0 16 25 15	9 27 34 27	11 5 22 3	4 21 47 3	9 11 27 35	9 44	–26 32	— —	9 41	15
16	0 2 9 3	8 15 10 16	11 0 54 25	0 18 11 58	9 27 44 13	11 5 16 27	4 21 43 58	9 11 24 24	10 6	–25 22	0 31	10 36	16
17	0 3 7 45	8 26 58 53	11 1 41 3	0 19 55 8	9 27 53 51	11 5 13 18	4 21 40 59	9 11 21 13	10 27	–23 3	1 14	11 32	17
18	0 4 6 25	9 8 49 23	11 2 27 41	0 21 34 29	9 28 3 23	11 5 12 33	4 21 38 4	9 11 18 2	10 48	–19 46	1 51	12 29	18
19	0 5 5 3	9 20 47 17	11 3 14 17	0 23 9 46	9 28 12 47	11 5 14 11	4 21 35 15	9 11 14 52	11 9	–15 37	2 25	13 25	19
20	0 6 3 40	10 2 57 58	11 4 0 52	0 24 40 50	9 28 22 5	11 5 18 9	4 21 32 31	9 11 11 41	11 29	–10 47	2 55	14 22	20
21	0 7 2 15	10 15 26 16	11 4 47 25	0 26 7 27	9 28 31 14	11 5 24 24	4 21 29 52	9 11 8 30	11 50	–5 25	3 25	15 19	21
22	0 8 0 48	10 28 15 57	11 5 33 57	0 27 29 29	9 28 40 17	11 5 32 54	4 21 27 19	9 11 5 19	12 10	+0 18	3 53	16 18	22
23	0 8 59 19	11 11 29 15	11 6 20 27	0 28 46 47	9 28 49 12	11 5 43 32	4 21 24 51	9 11 2 9	12 30	+6 10	4 24	17 19	23
24	0 9 57 49	11 25 6 21	11 7 6 56	0 29 59 14	9 28 57 59	11 5 56 17	4 21 22 29	9 10 58 58	12 50	+11 56	4 56	18 23	24
25	0 10 56 17	0 9 5 2	11 7 53 23	1 1 6 43	9 29 6 39	11 6 11 4	4 21 20 12	9 10 55 47	13 10	17 14	5 32	19 31	25
26	0 11 54 43	0 23 20 59	11 8 39 48	1 2 9 8	9 29 15 10	11 6 27 49	4 21 18 1	9 10 52 36	13 29	21 41	6 15	20 40	26
27	0 12 53 7	1 7 48 8	11 9 26 11	1 3 6 25	9 29 23 33	11 6 46 28	4 21 15 56	9 10 49 26	13 49	24 53	7 4	21 49	27
28	0 13 51 30	1 22 19 52	11 10 12 32	1 3 58 29	9 29 31 49	11 7 7 0	4 21 13 57	9 10 46 15	14 8	26 27	8 2	22 54	28
29	0 14 49 50	2 6 50 0	11 10 58 51	1 4 45 15	9 29 39 56	11 7 29 17	4 21 12 3	9 10 43 4	14 26	26 12	9 6	23 51	29

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(30 अप्रैल से 4 जून तक) 1 मई, 2009 ई. को अयनांश 23°/59′/28″ 1 जून को अयनांश 23°/59′/33″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
30	0 15 48 7	2 21 13 41	11 11 45 9	1 5 26 39	9 29 47 55	11 7 53 18	4 21 10 15	9 10 39 53	14 45	24 12	10 15	— —	30
मई	0 16 46 24	3 5 27 45	11 12 31 24	1 6 2 40	9 29 55 46	11 8 18 57	4 21 8 33	9 10 36 43	15 3	20 40	11 22	0 40	मई
2	0 17 44 38	3 19 30 41	11 13 17 37	1 6 33 15	10 0 3 28	11 8 46 13	4 21 6 57	9 10 33 32	15 21	15 59	12 30	1 22	2
3	0 18 42 50	4 3 22 8	11 14 3 47	1 6 58 24	10 0 11 2	11 9 15 1	4 21 5 28	9 10 30 21	15 39	10 31	13 34	1 58	3
4	0 19 41 0	4 17 2 18	11 14 49 56	1 7 18 6	10 0 18 28	11 9 45 17	4 21 4 4	9 10 27 10	15 57	+4 37	14 36	2 31	4
5	0 20 39 8	5 0 31 31	11 15 36 2	1 7 32 23	10 0 25 44	11 10 17 0	4 21 2 46	9 10 24 00	16 14	−1 23	15 37	3 2	5
6	0 21 37 14	5 13 49 46	11 16 22 6	1 7 41 18	10 0 32 52	11 10 50 5	4 21 1 34	9 10 20 49	16 31	−7 15	16 38	3 32	6
7	0 22 35 18	5 26 56 49	11 17 8 8	1 7 44 57	10 0 39 51	11 11 24 30	4 21 0 29	9 10 17 38	16 48	−12 42	17 38	4 4	7
8	0 23 33 21	6 9 51 57	11 17 54 8	1 7 43 28	10 0 46 41	11 12 0 12	4 20 59 29	9 10 14 27	17 4	−17 31	18 38	4 38	8
9	0 24 31 21	6 22 34 33	11 18 40 6	1 7 37 3	10 0 53 22	11 12 37 9	4 20 58 36	9 10 11 17	17 20	−21 28	19 38	5 15	9
10	0 25 29 20	7 5 4 18	11 19 26 1	1 7 25 53	10 0 59 54	11 13 15 15	4 20 57 49	9 10 8 6	17 36	−24 21	20 36	5 57	10
11	0 26 27 18	7 17 21 27	11 20 11 54	1 7 10 17	10 1 6 17	11 13 54 30	4 20 57 8	9 10 4 55	17 52	−26 3	21 31	6 43	11
12	0 27 25 14	7 29 27 6	11 20 57 45	1 6 50 33	10 1 12 30	11 14 34 51	4 20 56 33	9 10 1 45	18 7	−26 28	22 25	7 33	12
13	0 28 23 9	8 11 23 26	11 21 43 34	1 6 27 6	10 1 18 35	11 15 16 15	4 20 56 4	9 9 58 34	18 22	−25 39	23 8	8 27	13
14	0 29 21 2	8 23 13 24	11 22 29 20	1 6 0 22	10 1 24 29	11 15 58 39	4 20 55 42	9 9 55 23	18 37	−23 40	23 46	9 23	14
15	1 0 18 54	9 5 1 0	11 23 15 3	1 5 30 51	10 1 30 14	11 16 42 2	4 20 55 26	9 9 52 12	18 51	−20 40	— —	10 19	15
16	1 1 16 45	9 16 50 48	11 24 0 45	1 4 59 5	10 1 35 49	11 17 26 21	4 20 55 15	9 9 49 2	19 5	−16 49	0 21	11 15	16
17	1 2 14 34	9 28 48 12	11 24 46 24	1 4 25 39	10 1 41 15	11 18 11 34	4 20 55 12	9 9 45 51	19 19	−12 15	0 52	12 11	17
18	1 3 12 23	10 10 58 3	11 25 32 0	1 3 51 7	10 1 46 30	11 18 57 39	4 20 55 14	9 9 42 40	19 32	−7 9	1 20	13 7	18
19	1 4 10 10	10 23 26 10	11 26 17 34	1 3 16 8	10 1 51 36	11 19 44 33	4 20 55 23	9 9 39 29	19 45	−1 40	1 48	14 3	19
20	1 5 7 56	11 6 16 48	11 27 3 5	1 2 41 18	10 1 56 31	11 20 32 14	4 20 55 38	9 9 36 19	19 58	+4 3	2 18	15 2	20
21	1 6 5 41	11 19 33 23	11 27 48 34	1 2 7 13	10 2 1 17	11 21 20 42	4 20 55 59	9 9 33 8	20 10	9 46	2 48	16 4	21
22	1 7 3 25	0 3 17 13	11 28 33 59	1 1 34 28	10 2 5 52	11 22 9 53	4 20 56 27	9 9 29 57	20 22	15 13	3 23	17 10	22
23	1 8 1 8	0 17 27 8	11 29 19 22	1 1 3 34	10 2 10 16	11 22 59 46	4 20 57 0	9 9 26 48	20 34	20 1	4 02	18 19	23
24	1 8 58 49	1 1 59 4	0 0 4 42	1 0 35 4	10 2 14 30	11 23 50 20	4 20 57 40	9 9 23 38	20 45	23 45	4 50	19 29	24
25	1 9 56 30	1 16 46 23	0 0 49 59	1 0 9 22	10 2 18 34	11 24 41 33	4 20 58 26	9 9 20 27	20 56	25 59	5 46	20 38	25
26	1 10 54 9	2 1 40 53	0 1 35 13	0 29 46 54	10 2 22 27	11 25 33 22	4 20 59 19	9 9 17 16	21 7	26 22	6 49	21 40	26
27	1 11 51 46	2 16 33 58	0 2 20 24	0 29 27 58	10 2 26 9	11 26 25 48	4 21 0 18	9 9 14 5	21 17	24 51	7 59	22 34	27
28	1 12 49 23	3 1 18 11	0 3 5 32	0 29 12 52	10 2 29 40	11 27 18 48	4 21 1 22	9 9 10 55	21 27	21 38	9 10	23 19	28
29	1 13 46 58	3 15 48 9	0 3 50 36	0 29 1 50	10 2 33 1	11 28 12 21	4 21 2 34	9 9 7 44	21 36	17 6	10 20	23 58	29
30	1 14 44 31	4 0 0 39	0 4 35 38	0 28 55 0	10 2 36 10	11 29 6 26	4 21 3 51	9 9 4 33	21 45	11 40	11 27	— —	30
31	1 15 42 3	4 13 54 34	0 5 20 36	0 28 52 33	10 2 39 9	0 0 1 3	4 21 5 14	9 9 1 22	21 54	+5 47	12 31	0 33	31
जून	1 16 39 34	4 27 30 14	0 6 5 31	0 28 54 32	10 2 41 57	0 0 56 9	4 21 6 43	9 8 58 12	22 3	−0 14	13 32	1 04	जून
2	1 17 37 4	5 10 48 51	0 6 50 22	0 29 0 59	10 2 44 33	0 1 51 44	4 21 8 19	9 8 55 1	22 11	−6 7	14 32	1 35	2
3	1 18 34 32	5 23 51 56	0 7 35 10	0 29 11 55	10 2 46 59	0 2 47 47	4 21 10 0	9 8 51 50	22 18	−11 36	15 32	2 6	3
4	1 19 31 59	6 6 41 4	0 8 19 55	0 29 27 20	10 2 49 14	0 3 44 16	4 21 11 48	9 8 48 39	22 25	−16 30	16 31	2 39	4

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(5 जून से 10 जुला. 2009 ई. तक)

1 जुलाई, 2009 ई. को अयनांश 23°/59′/38″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
5	1 20 29 24	6 19 17 33	0 9 4 37	0 29 47 11	10 2 51 17	0 4 41 13	4 21 13 41	9 8 45 29	22 32	–20 36	17 31	3 14	5
6	1 21 26 49	7 1 42 32	0 9 49 15	1 0 11 24	10 2 53 9	0 5 38 34	4 21 15 40	9 8 42 18	22 39	–23 43	18 29	3 54	6
7	1 22 24 13	7 13 57 7	0 10 33 50	1 0 39 57	10 2 54 50	0 6 36 20	4 21 17 45	9 8 39 7	22 45	–25 41	19 24	4 38	7
8	1 23 21 36	7 26 2 26	0 11 18 22	1 1 12 43	10 2 56 20	0 7 34 31	4 21 19 56	9 8 35 56	22 50	–26 26	20 16	5 27	8
9	1 24 18 58	8 7 59 52	0 12 2 51	1 1 49 40	10 2 57 38	0 8 33 4	4 21 22 13	9 8 32 46	22 55	–25 55	21 2	6 20	9
10	1 25 16 19	8 19 51 17	0 12 47 16	1 2 30 39	10 2 58 45	0 9 32 0	4 21 24 35	9 8 29 35	23 0	–24 13	21 43	7 15	10
11	1 26 13 39	9 1 39 7	0 13 31 37	1 3 15 39	10 2 59 40	0 10 31 17	4 21 27 3	9 8 26 24	23 5	–21 28	22 23	8 12	11
12	1 27 10 59	9 13 26 25	0 14 15 56	1 4 4 32	10 3 0 25	0 11 30 56	4 21 29 37	9 8 23 13	23 9	–17 49	22 51	9 7	12
13	1 28 8 19	9 25 16 51	0 15 0 11	1 4 57 12	10 3 0 57	0 12 30 54	4 21 32 17	9 8 20 3	23 12	–13 28	23 22	10 3	13
14	1 29 5 38	10 7 14 42	0 15 44 22	1 5 53 38	10 3 1 18	0 13 31 13	4 21 35 2	9 8 16 52	23 16	–8 34	23 49	10 58	14
15	2 0 2 56	10 19 24 38	0 16 28 30	1 6 53 43	10 3 1 28	0 14 31 51	4 21 37 53	9 8 13 41	23 18	–3 16	— —	11 53	15
16	2 1 0 14	11 1 51 25	0 17 12 35	1 7 57 25	10 3 1 25	0 15 32 47	4 21 40 49	9 8 10 30	23 21	+2 16	0 18	12 49	16
17	2 1 57 32	11 14 39 40	0 17 56 36	1 9 4 38	10 3 1 12	0 16 34 1	4 21 43 51	9 8 7 19	23 23	7 52	0 47	13 48	17
18	2 2 54 50	11 27 53 11	0 18 40 33	1 10 15 21	10 3 0 46	0 17 35 33	4 21 46 58	9 8 4 9	23 24	13 17	1 18	14 50	18
19	2 3 52 7	0 11 34 22	0 19 24 26	1 11 29 29	10 3 0 9	0 18 37 21	4 21 50 11	9 8 0 58	23 25	18 16	1 54	15 56	19
20	2 4 49 24	0 25 43 24	0 20 8 16	1 12 47 0	10 2 59 21	0 19 39 25	4 21 53 29	9 7 57 47	23 26	22 24	2 36	17 6	20
21	2 5 46 41	1 10 17 42	0 20 52 2	1 14 7 52	10 2 58 20	0 20 41 45	4 21 56 52	9 7 54 36	23 26	25 16	3 27	18 15	21
22	2 6 43 57	1 25 11 51	0 21 35 44	1 15 32 3	10 2 57 9	0 21 44 19	4 22 0 21	9 7 51 26	23 26	26 26	4 27	19 21	22
23	2 7 41 13	2 10 17 55	0 22 19 22	1 16 59 31	10 2 55 46	0 22 47 9	4 22 3 55	9 7 48 15	23 26	25 40	5 36	20 20	23
24	2 8 38 29	2 25 26 33	0 23 2 57	1 18 30 13	10 2 54 11	0 23 50 12	4 22 7 34	9 7 45 4	23 25	23 1	6 49	21 11	24
25	2 9 35 44	3 10 28 28	0 23 46 27	1 20 4 9	10 2 52 24	0 24 53 29	4 22 11 19	9 7 41 53	23 23	18 47	8 2	21 54	25
26	2 10 32 59	3 25 15 53	0 24 29 52	1 21 41 13	10 2 50 27	0 25 56 59	4 22 15 8	9 7 38 43	23 22	13 26	9 13	22 31	26
27	2 11 30 13	4 9 43 12	0 25 13 14	1 23 21 25	10 2 48 18	0 27 0 42	4 22 19 3	9 7 35 32	23 20	7 27	10 20	23 5	27
28	2 12 27 27	4 23 47 29	0 25 56 31	1 25 4 42	10 2 45 57	0 28 4 37	4 22 23 2	9 7 32 21	23 17	+1 16	11 24	23 37	28
29	2 13 24 40	5 7 28 0	0 26 39 45	1 26 51 0	10 2 43 26	0 29 8 45	4 22 27 7	9 7 29 11	23 14	–4 48	12 25	— —	29
30	2 14 21 53	5 20 45 44	0 27 22 54	1 28 40 12	10 2 40 43	1 0 13 5	4 22 31 16	9 7 26 0	23 11	–10 28	13 26	0 8	30
जुला	2 15 19 5	6 3 42 54	0 28 5 59	2 0 32 13	10 2 37 50	1 1 17 36	4 22 35 30	9 7 22 49	23 7	–15 33	14 26	0 40	जुला
2	2 16 16 17	6 16 22 13	0 28 48 59	2 2 26 56	10 2 34 45	1 2 22 19	4 22 39 49	9 7 19 38	23 3	–19 50	15 25	1 15	2
3	2 17 13 29	6 28 46 38	0 29 31 56	2 4 24 12	10 2 31 30	1 3 27 13	4 22 44 13	9 7 16 27	22 58	–23 9	16 23	1 54	3
4	2 18 10 40	7 10 58 53	1 0 14 48	2 6 23 49	10 2 28 4	1 4 32 18	4 22 48 41	9 7 13 17	22 53	–25 23	17 20	2 36	4
5	2 19 7 51	7 23 1 41	1 0 57 36	2 8 25 37	10 2 24 28	1 5 37 34	4 22 53 14	9 7 10 6	22 48	–26 24	18 12	3 23	5
6	2 20 5 2	8 4 57 27	1 1 40 19	2 10 29 21	10 2 20 41	1 6 43 0	4 22 57 51	9 7 6 55	22 42	–26 10	19 00	4 15	6
7	2 21 2 13	8 16 48 18	1 2 22 59	2 12 34 46	10 2 16 44	1 7 48 37	4 23 2 33	9 7 3 44	22 36	–24 45	19 42	5 9	7
8	2 21 59 24	8 28 36 31	1 3 5 34	2 14 41 36	10 2 12 36	1 8 54 24	4 23 7 19	9 7 0 34	22 29	–22 14	20 20	6 5	8
9	2 22 56 35	9 10 24 20	1 3 48 5	2 16 49 33	10 2 8 18	1 10 0 21	4 23 12 10	9 6 57 23	22 22	–18 47	20 53	7 2	9
10	2 23 53 46	9 22 14 11	1 4 30 31	2 18 58 19	10 2 3 51	1 11 6 29	4 23 17 4	9 6 54 12	22 15	–14 35	21 23	7 57	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (11 जुला. से 15 अग. 2009 ई. तक)

1 अगस्त, 2009 ई. को अयनांश 23°/59'/43''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
जुला	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
11	2 24 50 58	10 4 8 48	1 5 12 53	2 21 7 37	10 1 59 13	1 12 12 45	4 23 22 3	9 6 51 1	22 7	−9 48	21 55	8 52	11
12	2 25 48 10	10 16 11 15	1 5 55 11	2 23 17 9	10 1 54 26	1 13 19 11	4 23 27 7	9 6 47 50	21 59	−4 36	22 21	9 47	12
13	2 26 45 23	10 28 25 1	1 6 37 25	2 25 26 38	10 1 49 29	1 14 25 47	4 23 32 14	9 6 44 39	21 50	+0 50	22 48	10 42	13
14	2 27 42 36	11 10 53 43	1 7 19 34	2 27 35 49	10 1 44 23	1 15 32 31	4 23 37 26	9 6 41 29	21 41	+6 20	23 17	11 38	14
15	2 28 39 49	11 23 41 6	1 8 1 38	2 29 44 25	10 1 39 7	1 16 39 24	4 23 42 42	9 6 38 18	21 32	+11 42	23 50	12 37	15
16	2 29 37 3	0 6 50 32	1 8 43 39	3 1 52 16	10 1 33 43	1 17 46 26	4 23 48 2	9 6 35 7	21 23	+16 43	——	13 40	16
17	3 0 34 18	0 20 24 39	1 9 25 34	3 3 59 8	10 1 28 9	1 18 53 37	4 23 53 25	9 6 31 56	21 13	+21 3	0 28	14 46	17
18	3 1 31 33	1 4 25 37	1 10 7 25	3 6 4 52	10 1 22 27	1 20 0 51	4 23 58 53	9 6 28 46	21 2	24 21	1 14	15 54	18
19	3 2 28 49	1 18 49 38	1 10 49 11	3 8 9 21	10 1 16 37	1 21 8 23	4 24 4 24	9 6 25 35	20 52	26 12	2 8	17 00	19
20	3 3 26 6	2 3 36 23	1 11 30 53	3 10 12 25	10 1 10 38	1 22 15 57	4 24 10 0	9 6 22 24	20 40	26 17	3 11	18 3	20
21	3 4 23 24	2 18 38 53	1 12 12 29	3 12 14 1	10 1 4 32	1 23 23 40	4 24 15 38	9 6 19 14	20 29	24 26	4 22	18 57	21
22	3 5 20 42	3 3 49 3	1 12 54 1	3 14 14 4	10 0 58 17	1 24 31 29	4 24 21 21	9 6 16 3	20 17	20 49	5 36	19 45	22
23	3 6 18 0	3 18 57 34	1 13 35 27	3 16 12 30	10 0 51 55	1 25 39 27	4 24 27 7	9 6 12 52	20 5	15 48	6 50	20 26	23
24	3 7 15 19	4 3 55 22	1 14 16 49	3 18 9 17	10 0 45 26	1 26 47 31	4 24 32 57	9 6 9 41	19 53	9 53	8 00	21 2	24
25	3 8 12 39	4 18 34 46	1 14 58 5	3 20 4 24	10 0 38 50	1 27 55 42	4 24 38 49	9 6 6 31	19 40	+3 33	9 8	21 35	25
26	3 9 9 59	5 2 50 31	1 15 39 17	3 21 57 49	10 0 32 8	1 29 4 0	4 24 44 47	9 6 3 20	19 27	−2 48	10 12	22 8	26
27	3 10 7 19	5 16 40 0	1 16 20 23	3 23 49 32	10 0 25 19	2 0 12 24	4 24 50 46	9 6 0 9	19 14	−8 48	11 15	22 41	27
28	3 11 4 40	6 0 3 4	1 17 1 23	3 25 39 32	10 0 18 23	2 1 20 56	4 24 56 50	9 5 56 58	19 0	−14 13	12 17	23 15	28
29	3 12 2 1	6 13 1 26	1 17 42 19	3 27 27 50	10 0 11 23	2 2 29 34	4 25 2 56	9 5 53 48	18 46	−18 49	13 18	23 53	29
30	3 12 59 23	6 25 38 16	1 18 23 9	3 29 14 25	10 0 4 16	2 3 38 18	4 25 9 5	9 5 50 37	18 32	−22 27	14 17	——	30
31	3 13 56 46	7 7 57 28	1 19 3 54	4 0 59 19	9 29 57 5	2 4 47 9	4 25 15 18	9 5 47 26	18 17	−24 58	15 14	0 34	31
अग.	3 14 54 8	7 20 3 3	1 19 44 34	4 2 42 32	9 29 49 48	2 5 56 6	4 25 21 34	9 5 44 15	18 2	−26 17	16 8	1 20	अग.
2	3 15 51 32	8 1 59 5	1 20 25 9	4 4 24 4	9 29 42 28	2 7 5 10	4 25 27 52	9 5 41 5	17 47	−26 22	16 57	2 10	2
3	3 16 48 56	8 13 49 16	1 21 5 38	4 6 3 56	9 29 35 2	2 8 14 20	4 25 34 13	9 5 37 54	17 31	−25 14	17 41	3 4	3
4	3 17 46 21	8 25 36 59	1 21 46 1	4 7 42 7	9 29 27 33	2 9 23 36	4 25 40 38	9 5 34 43	17 16	−22 59	18 20	4 00	4
5	3 18 43 47	9 7 25 10	1 22 26 20	4 9 18 40	9 29 20 1	2 10 32 59	4 25 47 5	9 5 31 32	16 59	−19 45	18 55	4 56	5
6	3 19 41 13	9 19 16 18	1 23 6 33	4 10 53 33	9 29 12 25	2 11 42 27	4 25 53 34	9 5 28 22	16 43	−15 42	19 26	5 52	6
7	3 20 38 41	10 1 12 42	1 23 46 32	4 12 26 46	9 29 4 46	2 12 52 2	4 26 0 7	9 5 25 11	16 26	−11 1	19 56	6 47	7
8	3 21 36 10	10 13 16 20	1 24 26 19	4 13 58 20	9 28 57 4	2 14 1 43	4 26 6 42	9 5 22 0	16 10	−5 54	20 24	7 42	8
9	3 22 33 40	10 25 29 10	1 25 6 41	4 15 28 14	9 28 49 20	2 15 11 30	4 26 13 19	9 5 18 49	15 52	−0 30	20 54	8 37	9
10	3 23 31 11	11 7 53 9	1 25 46 33	4 16 56 27	9 28 41 34	2 16 21 23	4 26 19 59	9 5 15 39	15 35	+5 0	21 22	9 33	10
11	3 24 28 43	11 20 30 21	1 26 26 19	4 18 22 59	9 28 33 46	2 17 31 22	4 26 26 42	9 5 12 28	15 17	+10 23	21 52	10 31	11
12	3 25 26 17	0 3 22 54	1 27 6 0	4 19 47 48	9 28 25 56	2 18 41 27	4 26 33 26	9 5 9 17	15 0	+15 26	22 27	11 31	12
13	3 26 23 53	0 16 32 55	1 27 45 34	4 21 10 53	9 28 18 6	2 19 51 38	4 26 40 13	9 5 6 6	14 41	+19 53	23 9	12 34	13
14	3 27 21 29	1 0 2 20	1 28 25 4	4 22 32 10	9 28 10 15	2 21 1 54	4 26 47 3	9 5 2 56	14 23	23 26	23 58	13 39	14
15	3 28 19 7	1 13 52 22	1 29 4 27	4 23 51 40	9 28 2 24	2 22 12 17	4 26 53 55	9 4 59 45	14 4	25 43	——	14 44	15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(16 अगस्त से 20 सितंबर, 2009 ई. तक) 1 सितंबर, 2009 ई. को अयनांश $23^{\circ}/59'/48''$

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
16	3 29 16 47	1 28 3 14	1 29 43 45	4 25 9 19	9 27 54 32	2 23 22 44	4 27 0 49	9 4 56 34	13 46	26 26	0 54	15 47	16
17	4 0 14 28	2 12 33 35	2 0 22 57	4 26 25 5	9 27 46 41	2 24 33 18	4 27 7 44	9 4 53 23	13 27	25 23	2 00	16 43	17
18	4 1 12 11	2 27 20 1	2 1 2 2	4 27 38 52	9 25 38 50	2 25 43 56	4 27 14 42	9 4 50 13	13 7	22 33	3 11	17 33	18
19	4 2 9 55	3 12 16 56	2 1 41 2	4 28 50 39	9 27 31 1	2 26 54 40	4 27 21 42	9 4 47 2	12 48	18 10	4 24	18 17	19
20	4 3 7 41	3 27 16 55	2 2 19 55	5 0 0 19	9 27 23 13	2 28 5 29	4 27 28 44	9 4 43 51	12 28	12 37	5 36	18 55	20
21	4 4 5 28	4 12 11 35	2 2 58 42	5 1 7 47	9 27 15 27	2 29 16 23	4 27 35 48	9 4 40 40	12 8	+6 22	6 45	19 31	21
22	4 5 3 17	4 26 52 38	2 3 37 22	5 2 12 59	9 27 7 43	3 0 27 22	4 27 42 53	9 4 37 30	11 48	–0 6	7 53	20 2	22
23	4 6 1 7	5 11 13 15	2 4 15 57	5 3 15 46	9 27 0 1	3 1 38 26	4 27 50 0	9 4 34 19	11 28	–6 25	8 58	20 35	23
24	4 6 58 58	5 25 8 50	2 4 54 23	5 4 16 3	9 26 52 23	3 2 49 35	4 27 57 9	9 4 31 8	11 8	–12 14	10 2	21 10	24
25	4 7 56 50	6 8 37 30	2 5 32 44	5 5 13 41	9 26 44 47	3 4 0 48	4 28 4 19	9 4 27 57	10 47	–17 16	11 5	21 47	25
26	4 8 54 44	6 21 39 54	2 6 10 58	5 6 8 31	9 26 37 15	3 5 12 6	4 28 11 31	9 4 24 47	10 26	–21 19	12 7	22 28	26
27	4 9 52 38	7 4 18 35	2 6 49 5	5 7 0 23	9 26 29 48	3 6 23 29	4 28 18 44	9 4 21 36	10 5	–24 15	13 6	23 13	27
28	4 10 50 34	7 16 37 26	2 7 27 5	5 7 49 6	9 26 22 24	3 7 34 56	4 28 25 59	9 4 18 25	9 44	–25 57	14 2	——	28
29	4 11 48 32	7 28 41 12	2 8 5 0	5 8 34 31	9 26 15 5	3 8 46 28	4 28 33 14	9 4 15 14	9 23	–26 23	14 53	0 3	29
30	4 12 46 30	8 10 34 49	2 8 42 46	5 9 16 23	9 26 7 51	3 9 58 5	4 28 40 32	9 4 12 4	9 2	–25 35	15 39	0 57	30
31	4 13 44 30	8 22 23 8	2 9 20 26	5 9 54 28	9 26 0 42	3 11 9 46	4 28 47 50	9 4 8 53	8 40	–23 38	16 20	1 52	31
सितं.	4 14 42 32	9 4 10 40	2 9 58 0	5 10 28 34	9 25 53 38	3 12 21 32	4 28 55 9	9 4 5 42	8 18	–20 40	16 56	2 49	सितं.
2	4 15 40 35	9 16 1 20	2 10 35 25	5 10 58 21	9 25 46 40	3 13 33 22	4 29 2 29	9 4 2 31	7 57	–16 51	17 28	3 45	2
3	4 16 38 39	9 27 58 25	2 11 12 44	5 11 23 37	9 25 39 49	3 14 45 17	4 29 9 51	9 3 59 21	7 35	–12 20	17 58	4 41	3
4	4 17 36 45	10 10 4 26	2 11 49 56	5 11 44 3	9 25 33 3	3 15 57 16	4 29 17 13	9 3 56 10	7 13	–7 18	18 27	5 36	4
5	4 18 34 53	10 22 21 11	2 12 27 1	5 11 59 20	9 25 26 24	3 17 9 20	4 29 24 36	9 3 52 59	6 50	–1 56	18 55	6 31	5
6	4 19 33 2	11 4 49 47	2 13 3 59	5 12 9 13	9 25 19 52	3 18 21 28	4 29 32 0	9 3 49 48	6 28	+3 35	19 24	7 27	6
7	4 20 31 13	11 17 30 49	2 13 40 49	5 12 13 20	9 25 13 27	3 19 33 41	4 29 39 25	9 3 46 38	6 6	9 3	19 56	8 25	7
8	4 21 29 26	0 0 24 31	2 14 17 31	5 12 11 29	9 25 7 10	3 20 45 59	4 29 46 50	9 3 43 27	5 43	14 12	20 31	9 25	8
9	4 22 27 41	0 13 31 2	2 14 54 8	5 12 3 23	9 25 1 0	3 21 58 20	4 29 54 16	9 3 40 16	5 21	18 49	21 9	10 27	9
10	4 23 25 59	0 26 50 28	2 15 30 35	5 11 48 50	9 24 54 58	3 23 10 47	5 0 1 43	9 3 37 5	4 58	22 33	21 54	11 30	10
11	4 24 24 17	1 10 23 11	2 16 6 56	5 11 27 43	9 24 49 4	3 24 23 17	5 0 9 10	9 3 33 55	4 35	25 8	22 47	12 34	11
12	4 25 22 38	1 24 9 31	2 16 43 8	5 10 59 58	9 24 43 18	3 25 35 52	5 0 16 38	9 3 30 44	4 12	26 16	23 48	13 36	12
13	4 26 21 1	2 8 9 42	2 17 19 13	5 10 25 39	9 24 37 41	3 26 48 31	5 0 24 6	9 3 27 33	3 49	25 45	——	14 34	13
14	4 27 19 27	2 22 23 20	2 17 55 9	5 9 44 58	9 24 32 12	3 28 1 14	5 0 31 34	9 3 24 22	3 27	23 33	0 54	15 24	14
15	4 28 17 54	3 6 48 58	2 18 30 59	5 8 58 18	9 24 26 53	3 29 14 2	5 0 39 3	9 3 21 12	3 3	19 49	2 4	16 8	15
16	4 29 16 24	3 21 23 38	2 19 6 38	5 8 6 12	9 24 21 43	4 0 26 53	5 0 46 32	9 3 18 1	2 40	14 50	3 15	16 46	16
17	5 0 14 56	4 6 2 41	2 19 42 9	5 7 9 28	9 24 16 43	4 1 39 49	5 0 54 1	9 3 14 50	2 17	8 58	4 24	17 22	17
18	5 1 13 30	4 20 39 58	2 20 17 32	5 6 9 4	9 24 11 52	4 2 52 48	5 1 1 30	9 3 11 39	1 54	+2 40	5 31	17 54	18
19	5 2 12 5	5 5 8 34	2 20 52 46	5 5 6 11	9 24 7 11	4 4 5 51	5 1 8 59	9 3 8 29	1 31	–3 43	6 37	18 29	19
20	5 3 10 43	5 19 21 47	2 21 27 51	5 4 2 11	9 24 2 40	4 5 18 57	5 1 16 28	9 3 5 18	1 7	–9 47	7 42	19 3	20

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(21 सितंबर से 26 अक्तूबर 2009 ई. तक) 1 अक्तू., 2009 ई. को अयनांश 23°/59′/51″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	सितंबर
सितं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
21	5 4 9 23	6 3 14 17	2 22 2 47	5 2 58 34	9 23 58 21	4 6 32 7	5 1 23 57	9 3 2 7	0 44	–15 13	8 47	19 42	21
22	5 5 8 4	6 16 42 45	2 22 37 33	5 1 56 52	9 23 54 11	4 7 45 20	5 1 31 26	9 2 58 56	+0 21	–19 44	9 51	20 22	22
23	5 6 6 47	6 29 46 26	2 23 12 11	5 0 58 43	9 23 50 11	4 8 58 37	5 1 38 54	9 2 55 46	–0 3	–23 9	10 52	21 6	23
24	5 7 5 32	7 12 26 40	2 23 46 39	5 0 5 38	9 23 46 23	4 10 11 57	5 1 46 22	9 2 52 35	–0 26	–25 19	11 51	21 55	24
25	5 8 4 18	7 24 46 38	2 24 20 58	4 29 19 1	9 23 42 45	4 11 25 21	5 1 53 49	9 2 49 24	–0 49	–26 10	12 45	22 48	25
26	5 9 3 6	8 6 50 49	2 24 55 5	4 28 40 5	9 23 39 18	4 12 38 48	5 2 1 17	9 2 46 13	–1 13	–25 46	13 33	23 43	26
27	5 10 1 56	8 18 44 19	2 25 29 4	4 28 9 51	9 23 36 3	4 13 52 18	5 2 8 43	9 2 43 2	–1 36	–24 10	14 16	— —	27
28	5 11 0 48	9 0 32 38	2 26 2 53	4 27 49 7	9 23 32 58	4 15 5 51	5 2 16 9	9 2 39 52	–1 59	–21 31	14 54	0 40	28
29	5 11 59 41	9 12 21 7	2 26 36 32	4 27 38 20	9 23 30 5	4 16 19 27	5 2 23 34	9 2 36 41	–2 23	–17 58	15 28	1 36	29
30	5 12 58 37	9 24 14 41	2 27 10 0	4 27 37 48	9 23 27 24	4 17 33 6	5 2 30 58	9 2 33 30	–2 46	–13 41	15 59	2 32	30
अक्तू.	5 13 57 34	10 6 17 37	2 27 43 19	4 27 47 34	9 23 24 54	4 18 46 49	5 2 38 22	9 2 30 20	–3 9	–8 50	16 28	3 27	अक्तू.
2	5 14 56 32	10 18 33 14	2 28 16 27	4 28 7 26	9 23 22 35	4 20 0 35	5 2 45 45	9 2 27 9	–3 33	–3 34	16 56	4 22	2
3	5 15 55 33	11 1 3 48	2 28 49 25	4 28 37 4	9 23 20 28	4 21 14 23	5 2 53 7	9 2 23 58	–3 56	+1 56	17 25	5 19	3
4	5 16 54 36	11 13 50 15	2 29 22 12	4 29 16 0	9 23 18 33	4 22 28 15	5 3 0 27	9 2 20 47	–4 19	+7 27	17 56	6 16	4
5	5 17 53 41	11 26 52 19	2 29 54 48	5 0 3 36	9 23 16 49	4 23 42 10	5 3 7 47	9 2 17 37	–4 42	12 46	18 30	7 16	5
6	5 18 52 47	0 10 8 44	3 0 27 13	5 0 59 13	9 23 15 17	4 24 56 8	5 3 15 6	9 2 14 26	–5 5	17 35	19 8	8 19	6
7	5 19 51 56	0 23 37 32	3 0 59 27	5 2 2 7	9 23 13 57	4 26 10 8	5 3 22 23	9 2 11 15	–5 28	21 35	19 54	9 23	7
8	5 20 51 8	1 7 16 32	3 1 31 30	5 3 11 33	9 23 12 49	4 27 24 12	5 3 29 39	9 2 8 4	–5 51	24 28	20 44	10 28	8
9	5 21 50 21	1 21 3 41	3 2 3 21	5 4 26 49	9 23 11 53	4 28 38 19	5 3 36 54	9 2 4 54	–6 14	25 55	21 42	11 31	9
10	5 22 49 37	2 4 57 33	3 2 35 1	5 5 47 9	9 23 11 8	4 29 52 28	5 3 44 8	9 2 1 43	–6 37	25 46	22 46	12 29	10
11	5 23 48 55	2 18 57 13	3 3 6 28	5 7 11 53	9 23 10 36	5 1 6 41	5 3 51 20	9 1 58 32	–6 59	23 59	23 54	13 21	11
12	5 24 48 15	3 3 2 4	3 3 37 43	5 8 40 20	9 23 10 15	5 2 20 56	5 3 58 30	9 1 55 21	–7 22	20 42	— —	14 5	12
13	5 25 47 38	3 17 11 32	3 4 8 46	5 10 11 57	9 23 10 7	5 3 35 14	5 4 5 39	9 1 52 11	–7 44	16 11	1 02	14 44	13
14	5 26 47 3	4 1 24 18	3 4 39 36	5 11 46 11	9 23 10 11	5 4 49 35	5 4 12 47	9 1 49 0	–8 7	10 45	2 10	15 20	14
15	5 27 46 30	4 15 38 10	3 5 10 12	5 13 22 33	9 23 10 26	5 6 3 58	5 4 19 52	9 1 45 49	–8 29	+4 46	3 16	15 53	15
16	5 28 46 0	4 29 49 45	3 5 40 36	5 15 0 37	9 23 10 54	5 7 18 24	5 4 26 56	9 1 42 38	–8 51	–1 26	4 20	16 25	16
17	5 29 45 32	5 13 54 43	3 6 10 45	5 16 40 2	9 23 11 34	5 8 32 52	5 4 33 58	9 1 39 28	–9 13	–7 30	5 25	17 00	17
18	6 0 45 5	5 27 48 14	3 6 40 41	5 18 20 28	9 23 12 26	5 9 47 22	5 4 40 58	9 1 36 17	–9 35	–13 7	6 29	17 35	18
19	6 1 44 41	6 11 25 54	3 7 10 22	5 20 1 39	9 23 13 30	5 11 1 54	5 4 47 56	9 1 33 6	–9 57	–17 58	7 33	18 14	19
20	6 2 44 19	6 24 44 26	3 7 39 49	5 21 43 21	9 23 14 46	5 12 16 29	5 4 54 52	9 1 29 55	–10 19	–21 49	8 36	18 58	20
21	6 3 43 59	7 7 42 11	3 8 9 1	5 23 25 21	9 23 16 14	5 13 31 5	5 5 1 45	9 1 26 45	–10 40	–24 27	9 37	19 45	21
22	6 4 43 41	7 20 19 28	3 8 37 58	5 25 7 31	9 23 17 54	5 14 45 44	5 5 8 37	9 1 23 34	–11 1	–25 47	10 33	20 37	22
23	6 5 43 24	8 2 38 16	3 9 6 40	5 26 49 41	9 23 19 46	5 16 0 24	5 5 15 26	9 1 20 23	–11 22	–25 48	11 25	21 32	23
24	6 6 43 10	8 14 42 6	3 9 35 6	5 28 31 46	9 23 21 50	5 17 15 6	5 5 22 12	9 1 17 12	–11 43	–24 34	12 10	22 27	24
25	6 7 42 57	8 26 35 33	3 10 3 16	6 0 13 39	9 23 24 6	5 18 29 50	5 5 28 57	9 1 14 2	–12 4	–22 15	12 50	23 24	25
26	6 8 42 46	9 8 23 49	3 10 31 11	6 1 55 17	9 23 26 33	5 19 44 36	5 5 35 38	9 1 10 51	–12 25	–18 59	13 26	— —	26

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(27 अक्तू. से 1 दिसं. तक) 1 नवंबर, 2009 ई. अयनांश = 23°/59′/54″ 1 दिसंबर, 2009 ई. को अयनांश 23°/59′/59″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
अक्तू	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	अं.क.	अं.क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
27	6 9 42 36	9 20 12 31	3 10 58 49	6 3 36 36	9 23 29 12	5 20 59 23	5 5 42 18	9 1 7 40	–12 45	–14 58	13 59	0 19	27
28	6 10 42 27	10 2 7 9	3 11 26 10	6 5 17 33	9 23 32 3	5 22 14 12	5 5 48 54	9 1 4 29	–13 5	–10 21	14 27	1 14	28
29	6 11 42 21	10 14 12 53	3 11 53 15	6 6 58 7	9 23 35 6	5 23 29 3	5 5 55 28	9 1 1 19	–13 25	–5 17	14 56	2 10	29
30	6 12 42 17	10 26 34 3	3 12 20 3	6 8 38 16	9 23 38 19	5 24 43 55	5 6 1 59	9 0 58 8	–13 45	+0 5	15 24	3 7	30
31	6 13 42 14	11 9 13 57	3 12 46 33	6 10 17 59	9 23 41 45	5 25 58 49	5 6 8 27	9 0 54 57	–14 5	5 35	15 54	4 3	31
नवं.	6 14 42 12	11 22 14 17	3 13 12 45	6 11 57 16	9 23 45 21	5 27 13 44	5 6 14 52	9 0 51 47	–14 24	10 58	16 27	5 2	नवं.
2	6 15 42 13	0 5 35 3	3 13 38 39	6 13 36 5	9 23 49 9	5 28 28 41	5 6 21 14	9 0 48 36	–14 43	16 0	17 4	6 5	2
3	6 16 42 15	0 19 14 28	3 14 4 15	6 15 14 29	9 23 53 8	5 29 43 39	5 6 27 33	9 0 45 25	–15 2	20 20	17 47	7 9	3
4	6 17 42 19	1 3 9 2	3 14 29 32	6 16 52 26	9 23 57 18	6 0 58 39	5 6 33 49	9 0 42 14	–15 21	23 37	18 37	8 16	4
5	6 18 42 25	1 17 14 25	3 14 54 30	6 18 29 57	9 24 1 40	6 2 13 40	5 6 40 2	9 0 39 3	–15 39	25 30	19 37	9 21	5
6	6 19 42 33	2 1 26 0	3 15 19 8	6 20 7 4	9 24 6 12	6 3 28 43	5 6 46 12	9 0 35 52	–15 57	25 45	20 39	10 23	6
7	6 20 42 43	2 15 39 40	3 15 43 26	6 21 43 46	9 24 10 55	6 4 43 48	5 6 52 18	9 0 32 42	–16 15	24 18	21 47	11 18	7
8	6 21 42 55	2 29 52 15	3 16 7 23	6 23 20 4	9 24 15 48	6 5 58 54	5 6 58 21	9 0 29 31	–16 33	21 18	22 55	12 5	8
9	6 22 43 9	3 14 1 44	3 16 31 0	6 24 56 0	9 24 20 53	6 7 14 1	5 7 4 20	9 0 26 20	–16 50	17 2	— —	12 45	9
10	6 23 43 26	3 28 6 47	3 16 54 15	6 26 31 34	9 24 26 8	6 8 29 9	5 7 10 16	9 0 23 9	–17 7	+11 50	0 02	13 22	10
11	6 24 43 44	4 12 6 44	3 17 17 8	6 28 6 47	9 24 31 34	6 9 44 19	5 7 16 9	9 0 19 59	–17 24	+6 4	1 7	13 56	11
12	6 25 44 4	4 26 0 45	3 17 39 38	6 29 41 40	9 24 37 10	6 10 59 31	5 7 21 57	9 0 16 48	–17 40	+0 4	2 11	14 29	12
13	6 26 44 26	5 9 47 46	3 18 1 45	7 1 16 15	9 24 42 56	6 12 14 43	5 7 27 42	9 0 13 37	–17 56	–5 53	3 14	15 01	13
14	6 27 44 50	5 23 26 4	3 18 23 28	7 2 50 32	9 24 48 53	6 13 29 57	5 7 33 23	9 0 10 26	–18 12	–11 30	4 16	15 35	14
15	6 28 45 16	6 6 53 36	3 18 44 48	7 4 24 32	9 24 55 0	6 14 45 12	5 7 39 1	9 0 7 16	–18 28	–16 29	5 19	16 11	15
16	6 29 45 44	6 20 8 13	3 19 5 42	7 5 58 15	9 25 1 17	6 16 0 27	5 7 44 34	9 0 4 5	–18 43	–20 35	6 21	16 51	16
17	7 0 46 13	7 3 8 1	3 19 26 11	7 7 31 44	9 25 7 44	6 17 15 44	5 7 50 2	9 0 0 54	–18 58	–23 35	7 23	17 37	17
18	7 1 46 44	7 15 51 55	3 19 46 14	7 9 4 57	9 25 14 21	6 18 31 1	5 7 55 27	8 29 57 43	–19 12	–25 21	8 21	18 27	18
19	7 2 47 16	7 28 19 57	3 20 5 51	7 10 37 58	9 25 21 8	6 19 46 19	5 8 0 48	8 29 54 32	–19 26	–25 46	9 15	19 20	19
20	7 3 47 50	8 10 33 15	3 20 25 1	7 12 10 45	9 25 28 5	6 21 1 38	5 8 6 5	8 29 51 22	–19 40	–24 56	10 4	20 16	20
21	7 4 48 25	8 22 34 13	3 20 43 44	7 13 43 20	9 25 35 12	6 22 16 58	5 8 11 17	8 29 48 11	–19 54	–22 55	10 46	21 13	21
22	7 5 49 2	9 4 26 18	3 21 1 59	7 15 15 42	9 25 42 27	6 23 32 18	5 8 16 25	8 29 45 0	–20 7	–19 56	11 23	22 9	22
23	7 6 49 39	9 16 13 47	3 21 19 45	7 16 47 53	9 25 49 52	6 24 47 39	5 8 21 28	8 29 41 49	–20 19	–16 9	11 56	23 4	23
24	7 7 50 18	9 28 1 41	3 21 37 2	7 18 19 52	9 25 57 27	6 26 3 1	5 8 26 27	8 29 38 38	–20 32	–11 45	12 26	23 59	24
25	7 8 50 58	10 9 54 15	3 21 53 51	7 19 51 39	9 26 5 10	6 27 18 22	5 8 31 21	8 29 35 28	–20 44	–6 53	12 55	— —	25
26	7 9 51 39	10 21 59 54	3 22 10 7	7 21 23 15	9 26 13 3	6 28 33 45	5 8 36 11	8 29 32 17	–20 55	–1 42	13 23	0 54	26
27	7 10 52 21	11 4 20 40	3 22 25 54	7 22 54 38	9 26 21 4	6 29 49 8	5 8 40 56	8 29 29 6	–21 6	+3 39	13 52	1 49	27
28	7 11 53 4	11 17 1 53	3 22 41 10	7 24 25 47	9 26 29 15	7 1 4 31	5 8 45 36	8 29 25 55	–21 17	9 0	14 23	2 46	28
29	7 12 53 48	0 0 6 40	3 22 55 53	7 25 56 44	9 26 37 33	7 2 19 55	5 8 50 11	8 29 22 45	–21 28	14 7	14 57	3 46	29
30	7 13 54 33	0 13 36 18	3 23 10 5	7 27 27 26	9 26 46 1	7 3 35 19	5 8 54 42	8 29 19 34	–21 38	18 44	15 37	4 50	30
दिसं.	7 14 55 20	0 27 29 56	3 23 23 42	7 28 57 51	9 26 54 36	7 4 50 43	5 8 59 7	8 29 16 23	–21 47	22 27	16 25	5 56	दिसं.

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

[2 दिसंबर (09) से 6 जनवरी, सं. 2010 ई. तक] 1 जन., 2010 ई. को अयनांश 24°/00'/04"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	दिसंबर
दिसं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
2	7 15 56 6	1 11 44 23	3 23 36 46	8 0 27 57	9 27 3 21	7 6 6 9	5 9 3 28	8 29 13 12	–21 56	24 55	17 20	7 3	2
3	7 16 56 55	1 26 14 20	3 23 49 16	8 1 57 41	9 27 12 13	7 7 21 34	5 9 7 43	8 29 10 2	–22 5	25 46	18 24	8 9	3
4	7 17 57 45	2 10 53 14	3 24 1 10	8 3 27 2	9 27 21 14	7 8 37 0	5 9 11 54	8 29 6 51	–22 13	24 51	19 33	9 8	4
5	7 18 58 36	2 25 34 11	3 24 12 29	8 4 55 54	9 27 30 22	7 9 52 27	5 9 15 59	8 29 3 40	–22 21	22 12	20 46	10 00	5
6	7 19 59 28	3 10 10 56	3 24 23 11	8 6 24 13	9 27 39 39	7 11 7 54	5 9 19 59	8 29 0 29	–22 29	18 7	21 53	10 45	6
7	7 21 0 22	3 24 38 34	3 24 33 15	8 7 51 53	9 27 49 3	7 12 23 21	5 9 23 54	8 28 57 19	–22 36	12 59	23 00	11 24	7
8	7 22 1 16	4 8 53 52	3 24 42 42	8 9 18 49	9 27 58 35	7 13 38 49	5 9 27 43	8 28 54 8	–22 42	7 14	24 5	11 59	8
9	7 23 2 13	4 22 54 4	3 24 51 29	8 10 44 51	9 28 8 14	7 14 54 18	5 9 31 27	8 28 50 57	–22 48	+1 13	25 8	12 32	9
10	7 24 3 10	5 6 41 36	3 24 59 36	8 12 9 52	9 28 18 1	7 16 9 47	5 9 35 5	8 28 47 46	–22 54	–4 44	— —	13 5	10
11	7 25 4 8	5 20 13 31	3 25 7 2	8 13 33 39	9 28 27 56	7 17 25 16	5 9 38 38	8 28 44 36	–22 59	–10 22	2 9	13 38	11
12	7 26 5 8	6 3 31 15	3 25 13 47	8 14 56 1	9 28 37 58	7 18 40 46	5 9 42 6	8 28 41 25	–23 4	–15 25	3 11	14 13	12
13	7 27 6 9	6 16 35 21	3 25 19 50	8 16 16 42	9 28 48 7	7 19 56 16	5 9 45 27	8 28 38 14	–23 8	–19 40	4 13	14 52	13
14	7 28 7 11	6 29 26 15	3 25 25 10	8 17 35 26	9 28 58 23	7 21 11 46	5 9 48 43	8 28 35 3	–23 12	–22 54	5 14	15 35	14
15	7 29 8 13	7 12 4 24	3 25 29 46	8 18 51 52	9 29 8 47	7 22 27 17	5 9 51 53	8 28 31 53	–23 16	–24 58	6 12	16 23	15
16	8 0 9 17	7 24 30 18	3 25 33 38	8 20 5 37	9 29 19 17	7 23 42 48	5 9 54 58	8 28 28 42	–23 19	–25 46	7 8	17 15	16
17	8 1 10 21	8 6 44 46	3 25 36 46	8 21 16 15	9 29 29 54	7 24 58 19	5 9 57 56	8 28 25 31	–23 21	–25 16	7 58	18 10	17
18	8 2 11 26	8 18 48 59	3 25 39 7	8 22 23 15	9 29 40 38	7 26 13 50	5 10 0 49	8 28 22 20	–23 23	–23 35	8 42	19 6	18
19	8 3 12 31	9 0 44 45	3 25 40 43	8 23 26 4	9 29 51 28	7 27 29 21	5 10 3 35	8 28 19 10	–23 25	–20 51	9 21	20 3	19
20	8 4 13 37	9 12 34 29	3 25 41 33	8 24 24 0	10 0 2 25	7 28 44 52	5 10 6 16	8 28 15 59	–23 26	–17 16	9 56	20 58	20
21	8 5 14 43	9 24 21 18	3 25 41 35	8 25 16 24	10 0 13 28	8 0 0 23	5 10 8 50	8 28 12 48	–23 26	–13 2	10 27	21 52	21
22	8 6 15 50	10 6 8 54	3 25 40 51	8 26 2 26	10 0 24 37	8 1 15 54	5 10 11 18	8 28 9 37	–23 26	–8 19	10 55	22 45	22
23	8 7 16 56	10 18 1 36	3 25 39 18	8 26 41 17	10 0 35 52	8 2 31 25	5 10 13 41	8 28 6 27	–23 26	–3 16	11 23	23 38	23
24	8 8 18 3	11 0 4 6	3 25 36 57	8 27 12 1	10 0 47 14	8 3 46 56	5 10 15 57	8 28 3 16	–23 25	+1 57	11 51	— —	24
25	8 9 19 10	11 12 21 13	3 25 33 48	8 27 33 46	10 0 58 41	8 5 2 26	5 10 18 6	8 28 0 5	–23 24	7 12	12 20	0 34	25
26	8 10 20 18	11 24 57 38	3 25 29 51	8 27 45 39	10 1 10 14	8 6 17 57	5 10 20 10	8 27 56 54	–23 22	12 18	12 52	1 31	26
27	8 11 21 25	0 7 57 26	3 25 25 4	8 27 46 49	10 1 21 53	8 7 33 27	5 10 22 7	8 27 53 44	–23 20	17 1	13 28	2 31	27
28	8 12 22 32	0 21 23 29	3 25 19 29	8 27 36 40	10 1 33 37	8 8 48 58	5 10 23 58	8 27 50 33	–23 17	21 3	14 11	3 34	28
29	8 13 23 39	1 5 16 50	3 25 13 5	8 27 14 45	10 1 45 27	8 10 4 28	5 10 25 43	8 27 47 22	–23 14	24 3	15 1	4 40	29
30	8 14 24 47	1 19 36 12	3 25 5 51	8 26 40 59	10 1 57 22	8 11 19 57	5 10 27 21	8 27 44 11	–23 10	25 38	16 1	5 46	30
31	8 15 25 54	2 4 17 36	3 24 57 49	8 25 55 41	10 2 9 22	8 12 35 27	5 10 28 53	8 27 41 1	–23 6	25 29	17 9	6 50	31
जन.	8 16 27 2	2 19 14 36	3 24 48 58	8 24 59 41	10 2 21 28	8 13 50 57	5 10 30 19	8 27 37 50	–23 2	23 30	18 21	7 47	जन.
2	8 17 28 9	3 4 18 49	3 24 39 17	8 23 54 18	10 2 33 38	8 15 6 26	5 10 31 38	8 27 34 39	–22 57	19 51	19 34	8 36	2
3	8 18 29 17	3 19 21 24	3 24 28 48	8 22 41 25	10 2 45 53	8 16 21 55	5 10 32 51	8 27 31 28	–22 51	14 53	20 48	9 19	3
4	8 19 30 25	4 4 14 2	3 24 17 30	8 21 23 17	10 2 58 14	8 17 37 25	5 10 33 58	8 27 28 18	–22 45	9 5	21 53	9 58	4
5	8 20 31 33	4 18 50 14	3 24 5 24	8 20 2 27	10 3 10 39	8 18 52 54	5 10 34 57	8 27 25 7	–22 39	+2 54	22 59	10 33	5
6	8 21 32 41	5 3 5 42	3 23 52 30	8 18 41 36	10 3 23 9	8 20 8 23	5 10 35 51	8 27 21 56	–22 32	–3 17	— —	11 6	6

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (7 जन. से 11 फर. सन् 2010 ई. तक) 1 फरवरी, 2010 ई. को अयनांश 24°/00′/10″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	जनवरी
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
7	8 22 33 50	5 16 58 31	3 23 38 49	8 17 23 18	10 3 35 43	8 21 23 52	5 10 36 38	8 27 18 45	–22 25	–9 8	0 03	11 39	7
8	8 23 34 58	6 0 28 41	3 23 24 21	8 16 9 50	10 3 48 22	8 22 39 22	5 10 37 18	8 27 15 35	–22 17	–14 24	1 5	12 14	8
9	8 24 36 7	6 13 37 42	3 23 9 8	8 15 3 7	10 4 1 5	8 23 54 51	5 10 37 52	8 27 12 24	–22 9	–18 51	2 7	12 52	9
10	8 25 37 16	6 26 27 53	3 22 53 9	8 14 4 37	10 4 13 53	8 25 10 20	5 10 38 19	8 27 9 13	–22 0	–22 19	3 8	13 32	10
11	8 26 38 25	7 9 1 55	3 22 36 27	8 13 15 18	10 4 26 45	8 26 25 49	5 10 38 40	8 27 6 2	–21 51	–24 38	4 7	14 17	11
12	8 27 39 34	7 21 22 31	3 22 19 4	8 12 35 41	10 4 39 41	8 27 41 18	5 10 38 54	8 27 2 51	–21 42	–25 43	5 3	15 7	12
13	8 28 40 43	8 3 32 15	3 22 0 59	8 12 5 55	10 4 52 41	8 28 56 46	5 10 39 1	8 26 59 40	–21 32	–25 32	5 54	16 00	13
14	8 29 41 51	8 15 33 27	3 21 42 15	8 11 45 54	10 5 5 46	9 0 12 14	5 10 39 2	8 26 56 30	–21 22	–24 9	6 40	16 56	14
15	9 0 43 0	8 27 28 12	3 21 22 55	8 11 35 16	10 5 18 54	9 1 27 43	5 10 38 56	8 26 53 19	–21 11	–21 42	7 20	17 52	15
16	9 1 44 7	9 9 18 35	3 21 2 58	8 11 33 30	10 5 32 5	9 2 43 10	5 10 38 44	8 26 50 8	–21 0	–18 20	7 56	18 49	16
17	9 2 45 15	9 21 6 34	3 20 42 28	8 11 40 2	10 5 45 22	9 3 58 37	5 10 38 25	8 26 46 57	–20 48	–14 15	8 28	19 43	17
18	9 3 46 21	10 2 54 22	3 20 21 26	8 11 54 14	10 5 58 41	9 5 14 4	5 10 37 59	8 26 43 46	–20 36	–9 38	8 58	20 38	18
19	9 4 47 27	10 14 44 29	3 19 59 56	8 12 15 28	10 6 12 3	9 6 29 31	5 10 37 27	8 26 40 35	–20 24	–4 40	9 26	21 31	19
20	9 5 48 33	10 26 39 48	3 19 37 58	8 12 43 9	10 6 25 29	9 7 44 57	5 10 36 49	8 26 37 25	–20 11	+0 30	9 53	22 26	20
21	9 6 49 37	11 8 43 35	3 19 15 36	8 13 16 37	10 6 38 58	9 9 0 22	5 10 36 4	8 26 34 14	–19 58	+5 41	10 21	23 21	21
22	9 7 50 41	11 20 59 36	3 18 52 52	8 13 55 21	10 6 52 31	9 10 15 47	5 10 35 13	8 26 31 3	–19 45	10 45	10 51	— —	22
23	9 8 51 43	0 3 31 46	3 18 29 50	8 14 38 53	10 7 6 6	9 11 31 11	5 10 34 15	8 26 27 53	–19 31	15 29	11 24	0 18	23
24	9 9 52 45	0 16 24 2	3 18 6 30	8 15 26 41	10 7 19 44	9 12 46 34	5 10 33 11	8 26 24 42	–19 17	19 40	12 2	1 18	24
25	9 10 53 46	0 29 39 58	3 17 42 57	8 16 18 24	10 7 33 25	9 14 1 57	5 10 32 0	8 26 21 31	–19 2	23 0	12 48	2 21	25
26	9 11 54 45	1 13 22 10	3 17 19 13	8 17 13 37	10 7 47 9	9 15 17 19	5 10 30 43	8 26 18 20	–18 48	25 9	13 41	3 25	26
27	9 12 55 43	1 27 31 29	3 16 55 20	8 18 12 02	10 8 00 56	9 16 32 41	5 10 29 20	8 26 15 9	–18 32	25 46	14 43	4 28	27
28	9 13 56 41	2 12 6 35	3 16 31 22	8 19 13 20	10 8 14 45	9 17 48 1	5 10 27 51	8 26 11 58	–18 17	24 40	15 52	5 28	28
29	9 14 57 37	2 27 3 13	3 16 7 21	8 20 17 17	10 8 28 36	9 19 3 21	5 10 26 16	8 26 8 48	–18 1	21 48	17 5	6 21	29
30	9 15 58 32	3 12 14 20	3 15 43 20	8 21 23 37	10 8 42 31	9 20 18 41	5 10 24 34	8 26 5 37	–17 45	17 23	18 19	7 8	30
31	9 16 59 26	3 27 30 32	3 15 19 21	8 22 32 9	10 8 56 27	9 21 33 59	5 10 22 47	8 26 2 26	–17 28	11 48	19 30	7 50	31
फर.	9 18 0 20	4 12 41 37	3 14 55 28	8 23 42 42	10 9 10 26	9 22 49 17	5 10 20 53	8 25 59 15	–17 12	+5 33	20 41	8 28	फर.
2	9 19 1 12	4 27 37 59	3 14 31 42	8 24 55 6	10 9 24 27	9 24 4 35	5 10 18 54	8 25 56 5	–16 54	–0 53	21 50	9 3	2
3	9 20 2 4	5 12 12 3	3 14 8 7	8 26 9 15	10 9 38 30	9 25 19 52	5 10 16 48	8 25 52 54	–16 37	–7 7	22 54	9 38	3
4	9 21 2 55	5 26 19 23	3 13 44 44	8 27 24 59	10 9 52 35	9 26 35 8	5 10 14 37	8 25 49 43	–16 19	–12 48	23 57	10 13	4
5	9 22 3 44	6 9 58 27	3 13 21 38	8 28 42 12	10 10 6 42	9 27 50 23	5 10 12 20	8 25 46 32	–16 1	–17 39	— —	10 50	5
6	9 23 4 34	6 23 10 22	3 12 58 49	9 0 0 50	10 10 20 51	9 29 5 38	5 10 09 57	8 25 43 22	–15 43	–21 28	1 00	11 32	6
7	9 24 5 22	7 5 58 2	3 12 36 22	9 1 20 47	10 10 35 2	10 0 20 53	5 10 7 29	8 25 40 11	–15 24	–24 7	2 1	12 17	7
8	9 25 6 9	7 18 25 27	3 12 14 18	9 2 41 58	10 10 49 15	10 1 36 7	5 10 04 55	8 25 37 0	–15 6	–25 31	2 58	13 6	8
9	9 26 6 55	8 0 37 00	3 11 52 39	9 4 4 21	10 11 3 29	10 2 51 20	5 10 2 16	8 25 33 49	–14 47	–25 39	3 51	13 59	9
10	9 27 7 40	8 12 36 59	3 11 31 4	9 5 27 52	10 11 17 45	10 4 6 32	5 9 59 31	8 25 30 39	–14 27	–24 34	4 38	14 54	10
11	9 28 8 24	8 24 29 24	3 11 10 47	9 6 52 28	10 11 32 3	10 5 21 44	5 9 56 41	8 25 27 28	–14 8	–22 23	5 20	15 49	11

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (12 फर. से 20 मार्च, 2010 ई. तक)

1 मार्च, 2010 ई. को अयनांश 24°/00'/14"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (आ. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	फरवरी
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
12	9 29 9 7	9 6 17 45	3 10 50 39	9 8 18 8	10 11 46 22	10 6 36 55	5 9 53 45	8 25 24 17	–13 48	–19 15	5 57	16 45	12
13	10 0 9 49	9 18 4 55	3 10 31 4	9 9 44 49	10 12 0 42	10 7 52 4	5 9 50 44	8 25 21 6	–13 28	–15 22	6 31	17 40	13
14	10 1 10 29	9 29 53 19	3 10 12 6	9 11 12 30	10 12 15 3	10 9 7 13	5 9 47 39	8 25 17 56	–13 8	–10 53	7 1	18 34	14
15	10 2 11 8	10 11 44 56	3 9 53 45	9 12 41 10	10 12 29 26	10 10 22 22	5 9 44 28	8 25 14 45	–12 47	–5 59	7 29	19 28	15
16	10 3 11 45	10 23 41 28	3 9 36 3	9 14 10 47	10 12 43 49	10 11 37 29	5 9 41 12	8 25 11 34	–12 27	–0 52	7 57	20 20	16
17	10 4 12 20	11 5 44 38	3 9 19 2	9 15 41 22	10 12 58 14	10 12 52 35	5 9 37 52	8 25 8 23	–12 6	+4 20	8 25	21 16	17
18	10 5 12 55	11 17 56 11	3 9 2 43	9 17 12 53	10 13 12 39	10 14 7 40	5 9 34 27	8 25 5 13	–11 45	+9 25	8 54	22 12	18
19	10 6 13 27	0 0 18 13	3 8 47 7	9 18 45 20	10 13 27 6	10 15 22 43	5 9 30 58	8 25 2 2	–11 24	14 12	9 26	23 10	19
20	10 7 13 58	0 12 53 10	3 8 32 15	9 20 18 43	10 13 41 33	10 16 37 46	5 9 27 24	8 24 58 51	–11 2	18 29	10 1	——	20
21	10 8 14 27	0 25 43 50	3 8 18 9	9 21 53 2	10 13 56 00	10 17 52 47	5 9 23 45	8 24 55 40	–10 41	22 0	10 43	0 10	21
22	10 9 14 54	1 8 53 11	3 8 4 48	9 23 28 16	10 14 10 28	10 19 7 47	5 9 20 3	8 24 52 30	–10 19	24 28	11 31	1 12	22
23	10 10 15 19	1 22 23 58	3 7 52 13	9 25 4 29	10 14 24 57	10 20 22 46	5 9 16 17	8 24 49 19	–9 57	25 36	12 27	2 13	23
24	10 11 15 42	2 6 18 14	3 7 40 25	9 26 41 38	10 14 39 26	10 21 37 43	5 9 12 26	8 24 46 8	–9 35	25 12	13 30	3 12	24
25	10 12 16 3	2 20 36 37	3 7 29 25	9 28 19 45	10 14 53 55	10 22 52 39	5 9 8 32	8 24 42 57	–9 13	23 8	14 39	4 7	25
26	10 13 16 23	3 5 17 32	3 7 19 12	9 29 58 50	10 15 8 24	10 24 7 34	5 9 4 35	8 24 39 47	–8 50	19 30	15 51	4 56	26
27	10 14 16 40	3 20 16 36	3 7 9 46	10 1 38 55	10 15 22 54	10 25 22 27	5 9 0 33	8 24 36 36	–8 28	14 32	17 3	5 39	27
28	10 15 16 56	4 5 26 36	3 7 1 8	10 3 20 0	10 15 37 24	10 26 37 19	5 8 56 29	8 24 33 25	–8 5	8 37	18 14	6 19	28
मार्च	10 16 17 9	4 20 38 1	3 6 53 17	10 5 2 4	10 15 51 53	10 27 52 9	5 8 52 21	8 24 30 14	–7 43	+2 12	19 23	6 56	मार्च
2	10 17 17 21	5 5 40 27	3 6 46 13	10 6 45 11	10 16 6 22	10 29 06 58	5 8 48 10	8 24 27 4	–7 20	–4 16	20 33	7 32	2
3	10 18 17 32	5 20 24 27	3 6 39 56	10 8 29 21	10 16 20 52	10 0 21 45	5 8 43 56	8 24 23 53	–6 57	–10 22	21 42	8 8	3
4	10 19 17 40	6 4 43 5	3 6 34 27	10 10 14 34	10 16 35 21	11 1 36 32	5 8 39 39	8 24 20 42	–6 34	–15 44	22 46	8 46	4
5	10 20 17 47	6 18 32 36	3 6 29 44	10 12 0 51	10 16 49 50	11 2 51 17	5 8 35 19	8 24 17 31	–6 11	–20 5	23 48	9 27	5
6	10 21 17 53	7 1 52 32	3 6 25 47	10 13 48 13	10 17 4 19	11 4 6 00	5 8 30 57	8 24 14 20	–5 48	–23 13	——	10 12	6
7	10 22 17 58	7 14 45 3	3 6 22 36	10 15 36 40	10 17 18 48	11 5 20 43	5 8 26 32	8 24 11 9	–5 24	–25 3	0 49	11 01	7
8	10 23 18 00	7 27 14 9	3 6 20 11	10 17 26 14	10 17 33 16	11 6 35 24	5 8 22 4	8 24 7 59	–5 1	–25 34	1 44	11 53	8
9	10 24 18 1	8 9 24 49	3 6 18 32	10 19 16 54	10 17 47 43	11 7 50 3	5 8 17 35	8 24 4 48	–4 38	–24 48	2 34	12 48	9
10	10 25 18 00	8 21 22 19	3 6 17 38	10 21 8 38	10 18 2 10	11 9 4 42	5 8 13 3	8 24 1 37	–4 14	–22 55	3 19	13 43	10
11	10 26 17 58	9 3 11 51	3 6 17 28	10 23 1 28	10 18 16 36	11 10 19 19	5 8 8 30	8 23 58 26	–3 51	–20 2	3 57	14 39	11
12	10 27 17 53	9 14 58 11	3 6 18 3	10 24 55 21	10 18 31 1	11 11 33 54	5 8 3 55	8 23 55 16	–3 27	–16 22	4 32	15 34	12
13	10 28 17 48	9 26 45 22	3 6 19 21	10 26 50 17	10 18 45 26	11 12 48 28	5 7 59 18	8 23 52 6	–3 3	–12 3	5 3	16 28	13
14	10 29 17 39	10 8 36 40	3 6 21 22	10 28 46 13	10 18 59 49	11 14 3 00	5 7 54 40	8 23 48 55	–2 40	–7 17	5 32	17 22	14
15	11 0 17 29	10 20 34 32	3 6 24 6	11 0 43 5	10 19 14 12	11 15 17 31	5 7 50 0	8 23 45 44	–2 16	–2 14	6 00	18 16	15
16	11 1 17 18	11 2 40 39	3 6 27 32	11 2 40 50	10 19 28 33	11 16 32 00	5 7 45 20	8 23 42 33	–1 52	+2 58	6 28	19 10	16
17	11 2 17 4	11 14 56 8	3 6 31 39	11 4 39 23	10 19 42 54	11 17 46 28	5 7 40 39	8 23 39 22	–1 29	+8 6	6 57	20 6	17
18	11 3 16 49	11 27 21 38	3 6 36 27	11 6 38 36	10 19 57 13	11 19 00 54	5 7 35 57	8 23 36 12	–1 5	12 59	7 29	21 4	18
19	11 4 16 32	0 9 57 38	3 6 41 55	11 8 38 22	10 20 11 30	11 20 15 18	5 7 31 14	8 23 33 1	–0 41	17 23	8 3	22 4	19
20	11 5 16 12	0 22 44 54	3 6 48 2	11 10 38 31	10 20 25 46	11 21 29 40	5 7 26 30	8 23 29 50	–0 17	21 4	8 43	23 5	20

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रात: 5/30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. २०६६ (2009–10 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
25	10 29 17 43	10 1 24	8 9 17
28	10 29 27 58	10 1 29	8 9 18
31	10 29 37 48	10 1 34	8 9 18
अप्रै.	10 29 41 10	10 1 36	8 9 18
4	10 29 51 00	10 1 41	8 9 19
7	11 00 00 43	10 1 46	8 9 18
10	11 00 10 13	10 1 50	8 9 18
13	11 00 19 38	10 1 55	8 9 17
16	11 00 28 49	10 1 59	8 9 16
19	11 00 37 51	10 2 03	8 9 15
22	11 00 46 37	10 2 07	8 9 13
25	11 00 55 11	10 2 10	8 9 12
28	11 01 03 34	10 2 13	8 9 10
मई	11 01 11 29	10 2 16	8 9 07
4	11 01 19 15	10 2 19	8 9 05
7	11 01 26 43	10 2 21	8 9 02
10	11 01 33 51	10 2 23	8 8 59
13	11 01 40 39	10 2 25	8 8 56
16	11 01 47 08	10 2 26	8 8 52
19	11 01 53 20	10 2 27	8 8 49
22	11 01 59 06	10 2 28	8 8 45
25	11 02 04 34	10 2 29	8 8 41
28	11 02 09 28	10 2 29	8 8 37
31	11 02 14 10	10 2 29	8 8 33
जून	11 02 15 37	10 2 29	8 8 32
4	11 02 19 43	10 2 29	8 8 27
7	11 02 23 27	10 2 28	8 8 23
10	11 -2 26 39	10 2 27	8 8 18
13	11 02 29 35	10 2 26	8 8 14
16	11 02 32 00	10 2 24	8 8 09
19	11 02 34 05	10 2 22	8 8 05
22	11 02 35 27	10 2 20	8 8 00
25	11 02 36 43	10 2 18	8 07 55

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
28	11 02 37 29	10 2 15	8 07 51
1	11 02 37 40	10 2 12	8 7 46
4	11 02 37 28	10 2 09	8 7 42
7	11 02 36 52	10 2 06	8 7 37
10	11 02 35 51	10 2 03	8 7 33
13	11 02 34 22	10 1 59	8 7 28
16	11 02 32 35	10 1 56	8 7 24
19	11 02 30 17	10 1 51	8 7 20
22	11 02 27 28	10 1 47	8 7 16
25	11 02 24 27	10 1 43	8 7 12
28	11 02 21 00	10 1 38	8 7 08
31	11 02 17 12	10 1 34	8 7 05
अग.	11 02 15 45	10 1 32	8 7 04
4	11 02 11 27	10 1 27	8 7 01
7	11 02 06 46	10 1 23	8 6 58
10	11 02 01 45	10 1 18	8 6 55
13	11 01 56 28	10 1 13	8 6 52
16	11 01 51 06	10 1 08	8 6 50
19	11 01 45 04	10 1 03	8 6 48
22	11 01 39 00	10 00 58	8 6 46
25	11 01 32 40	10 00 53	8 6 44
28	11 01 26 10	10 00 48	8 6 43
31	11 01 19 27	10 00 43	8 6 41
सितं.	11 01 17 16	10 00 42	8 6 41
4	11 01 10 23	10 00 37	8 6 40
7	11 01 03 19	10 00 33	8 6 40
10	11 00 56 17	10 00 28	8 6 40
13	11 00 49 07	10 00 24	8 6 40
16	11 00 41 53	10 00 19	8 6 40
19	11 00 34 40	10 00 15	8 6 41
22	11 00 27 28	10 00 11	8 6 42
25	11 00 20 17	10 00 08	8 6 43
28	11 00 13 10	10 00 04	8 6 44

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
अक्तू.	11 00 06 12	10 00 01	8 6 46
4	10 29 59 23	9 29 58	8 6 48
7	10 29 52 35	9 29 55	8 6 50
10	10 29 46 05	9 29 52	8 6 53
13	10 29 39 42	9 29 50	8 6 56
16	10 29 33 35	9 29 48	8 6 59
19	10 29 27 41	9 29 46	8 7 02
22	10 29 22 06	9 29 45	8 7 06
25	10 29 16 45	9 29 43	8 7 10
28	10 29 11 44	9 29 43	8 7 14
31	10 29 07 10	9 29 42	8 7 18
नवं.	10 29 05 41	9 29 42	8 7 20
4	10 29 01 27	9 29 42	8 7 25
7	10 28 57 39	9 29 42	8 7 29
10	10 28 54 17	9 29 42	8 7 34
13	10 28 51 13	9 29 43	8 7 40
16	10 28 48 39	9 29 44	8 7 45
19	10 28 46 27	9 29 45	8 7 51
22	10 28 44 41	9 29 47	8 7 56
25	10 28 43 32	9 29 49	8 8 02
28	10 28 42 40	9 29 51	8 8 08
दिसं.	10 28 42 17	9 29 53	8 8 14
4	10 28 42 24	9 29 56	8 8 20
7	10 28 42 52	9 29 59	8 8 27
10	10 28 44 00	10 00 02	8 8 33
13	10 28 45 23	10 00 06	8 8 39
16	10 28 47 20	10 00 10	8 8 46
19	10 28 49 44	10 00 14	8 8 52
22	10 28 52 36	10 00 19	8 8 59
25	10 28 55 52	10 00 23	8 9 05
28	10 28 59 24	10 00 28	8 9 12
31	10 29 03 53	10 00 33	8 9 18
2010 जन.	10 29 05 17	10 00 35	8 9 21

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
4	10 29 10 06	10 00 40	8 9 27
7	10 29 15 12	10 00 46	8 9 33
10	10 29 20 48	10 00 52	8 9 40
13	10 29 26 43	10 00 57	8 9 46
16	10 29 33 00	10 01 04	8 9 52
19	10 29 39 39	10 01 10	8 9 58
22	10 29 46 46	10 01 16	8 10 04
25	10 29 54 08	10 01 22	8 10 10
28	11 00 01 45	10 01 29	8 10 16
31	11 00 09 41	10 01 36	8 10 21
फर.	11 00 12 30	10 01 38	8 10 23
4	11 00 20 47	10 01 45	8 10 28
7	11 00 29 22	10 01 51	8 10 33
10	11 00 38 16	10 01 58	8 10 38
13	11 00 47 18	10 02 05	8 10 43
16	11 00 56 34	10 02 12	8 10 48
19	11 01 06 08	10 02 19	8 10 52
22	11 01 15 40	10 02 25	8 10 56
25	11 01 25 30	10 02 32	8 11 00
28	11 01 35 23	10 02 39	8 11 03
मार्च	11 01 38 42	10 02 41	8 11 04
4	11 01 48 39	10 02 48	8 11 08
7	11 01 58 52	10 02 54	8 11 11
10	11 02 09 06	10 03 01	8 11 13
13	11 02 19 22	10 03 07	8 11 16
16	11 02 29 35	10 03 14	8 11 18
19	11 02 39 52	10 03 20	8 11 20
22	11 02 50 12	10 03 26	8 11 21
25	11 03 00 25	10 03 31	8 11 23
28	11 03 10 36	10 03 37	8 11 24
31	11 03 20 42	10 03 43	8 11 24

गणितकर्त्ता—पं. विवेक शर्मा

शुभ विवाह मुहूर्त्त बाबत वि. सम्वत् २०६६ (सन् 2009–10 ई.)

समय शुद्धि विचार

शुक्रास्त–24 मार्च, 2009 ई. से शुक्र पश्चिम में अस्त होकर 30 मार्च की मध्यरात्रि को 27/15 पर (अर्थात् 31 मार्च की प्रातः 3 बजकर 15 मिनट पर पूर्व में उदित होगा।

ग्रहण–22 जुलाई, बुधवार की प्रातः लगभग 5/35 पर ग्रस्तोदय **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** लगेगा। इसका **सूतक 12** घंटे पूर्व तथा कम-से-कम 24 घण्टे पश्चात् **ग्रहणशूल** का प्रभाव रहेगा। इस काल में शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध रहेगा।

श्राद्ध–4 सितम्बर से 18 सितम्बर तक श्राद्ध रहेंगे।

भीष्म पंचक–29 अक्तू. से 2 नवं. तक भीष्म पंचक होंगे। परम्परागत इन दिनों में यद्यपि विवाहादि शुभ कृत्यों का निषेध माना जाता रहा है, परन्तु आजकल अधिकांश विद्वान् शास्त्र प्रमाण का अभाव होने से इन दिनों विवाहादि कृत्यों के सम्पादन का निषेध नहीं मानते।

पौष मास–15 दिसं. से 13 जन. तक सूर्य धनु राशि में संचार करने से पौष मास होगा।

ग्रहण–31 दिसं. (09) ई. को खण्ड चन्द्रग्रहण तथा 15 जन. (2010) ई० को खण्ड सूर्य ग्रहण लगेगा।

गुरु/शुक्रास्त–14 दिसं. प्रातः (2009) से 8 फरवरी (2010 ई०) तक **शुक्रास्त** तथा 16 फर. से 20 मार्च (2010 ई०) तक गुरु अस्त रहेंगे। फलस्वरूप माघ व फाल्गुण मासों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों का अभाव रहेगा।

होलाष्टक–22 फर. से 28 फर. (2010) तक होलाष्टक रहेंगे।

ऊपर लिखित समय शुद्धि के काल को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त तारीखों में विवाहादि शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए गए।

स्पष्टीकरण–नीचे विवाह मुहूर्त्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्तिसाम्य (९), दग्धा तिथि (१०)—इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् **गुण की सूचक** है जबकि आड़ी रेखा (ऽ) **दोष की** सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। **परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। मुहूर्त्तों में सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।**

विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, **६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक,** ९ को धनु, १० को मकर, **११ को कुम्भ** तथा १२ की संख्या को **मीन लग्न** जानें॥

वैशाख मासे (अप्रैल–मई) सन् २००९ ई.

दि. ल. = दिन लग्न––रा. ल. = रात्रि लग्न

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
वैशा. कृष्ण ५, मंग.	14 अप्रै.	२ वैशा.	मूल	धनु	।।।।।।ऽऽ।ऽ	रा. ल. ८ (मं.-दा.) (वृश्चिक ल. रात 10/52 बाद), ९ (चं. दा. पूज्य वा.) धनु लग्न रात 12/30 तक, (आवश्यके) रात्रि 12/35 बाद मृत्युबाण दोष
वैशा. कृष्ण ६, बुध	15 अप्रै.	३ वैशा.	मूल	धनु	।।।।।।ऽ परि ऽ।ऽ	ल. गोधू., रा. ल. ८, ९ (चंद्र पूज्य दान वा, चन्द्र मित्र क्षेत्रे शुभः [दुपै. 13/39 तक मृत्युबाण दोषः] (परिघ योग परिहार)
वैशा. कृष्ण ८, शुक्र	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.षा.	ध./मक.	।।।।।ऽ नृ ऽ।।।	दि. ल. ३ (चं. गु. दान), गोधू. च., रात्रि ल. ८-९ (वृश्चिके व धनुषि चं. गु. दा.)
वैशा. कृष्ण ८, शनि	18 अप्रै.	६ वैशा.	उ.षा.	मकर	।।।।।ऽ नृ ऽ।।।	दि. ल. २ (वृष लग्न प्रातः 7/53 तक), अत्यावश्यके
वैशा. कृष्ण ९, रवि	19 अप्रै.	७ वैशा.	धनि.	मक/कुं.	ऽ बु ।।।।ऽ चो ।ऽ।।	दि. ल. ३ (चं. दा. अष्टम चंद्र परि., लग्न 10/34 के बाद), गोधूली। रा. ल. ८ (गु. दा.), ९ (धनु ल. रात 23/15 तक, तदुपरांत भद्रा दोष प्रारम्भ
वैशा. शुक्ल ३, सोम	27 अप्रै.	१५ वैशा.	रोहि.	वृष	।।।।।ऽ नृ ऽ।।।	दि. ल. ३ (चं. बु. गु. का दान, मिथुन ल. प्रातः 9/08 के बाद), गोधू. रा. ल. ८ (चं. बु. का दान), धनु लग्ने चन्द्र षष्ठे दोषः, पूज्यः वा (अक्षया तीज)
वैशा. शुक्ल ४, मंग.	28 अप्रै.	१६ वैशा.	मृग.	वृ./मिथु	।।।।।।ऽ ति ।।।	दि. ल. २, ३ (चं. बु. गु. दान), गोधू., रा. ल. ९ (धने चं. गु. का दान)
वैशा. शुक्ल ११, मंग.	5 मई	२३ वैशा	उ.फा.	कन्या	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. २, ३ (बु. चं. दान), भद्रा परिहार, गोधूली, रा. ल. ८ (बुध ७वें पूज्य दान वा)
वैशा. शुक्ल १२, बुध	6 मई	२४ वैशा	चित्रा	कन्या	।।।।ऽ मं ऽ नृ ऽ।।।	रात्रि ल. ९ (बु. दा. धनु लग्न रात्रि 10/51 उपरांत)
वैशा. शुक्ल १३, गुरु	7 मई	२५ वैशा	चित्रा	कं./तुला	।।।।ऽ मं ।ऽ।।।	दि. ल. २ (चं. दा.), ३ (चं. बु. दा.), गोधू, रा. ल. ८ (बु. चं. दा.), ९ (मं. बु. का दान)
वैशा.शु.१३/१४, गुरु	7 मई	२५ वैशा	स्वाती	तुला	।।।।।।।।ऽ।।	रात्रि लग्न धनु (मं. बु. का दान)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
वैशा. शुक्ल १४, शुक्र	8 मई	२६ वैशा.	स्वाती	तुला	।ऽ व्य ।।।ऽ चौ ।ऽ।।	दि. ल. ३ (बु. चं. दा.), गोधूली, रा. ल. ८ (चं., बु. दा. पू.), ९ (धनु लग्ने मं. बु. का दान), मिथुने व वृश्चिके भद्रा परिहारः
ज्येष्ठ कृष्ण ३, मंग.	12 मई	३० वैशा.	मूल	धनु	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ३ (चं. बु. का दान, भद्रा परि.), मिथुन ल. प्रातः 6/36 बाद, रात्रि 7/53 के बाद मृत्युबाण दोष

ज्येष्ठ मासे (मई–जून)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	विवरण
ज्येष्ठ कृष्ण ६, शुक्रे	15 मई	२ ज्येष्ठ	श्रवण	मकर	।।।।ऽके ।ऽ।ऽ।	ल. गोधू., रा. ल. ९ (चं. मं. का दान, धनु ल. रात 10/33 तक) भद्रा परिहार, रात्रि 10/34 के उपरांत मृत्युबाण दोष प्रारंभ
ज्ये. कृष्ण ७, शनि	16 मई	३ ज्ये.	धनि.	मकर	ऽ शु ।ऽ गु। ।ऽ अ ।।ऽ।	ल. गोधू., रा. ल. ९ (चं. मं. दान), १ (मेषे चं. मं. का दान)
ज्ये. कृष्ण ८, रवि	17 मई	४ ज्ये.	धनि.	कुम्भ	ऽ शु ।ऽ गु। ।ऽ अ ।।ऽ।	दि. ल. ३ (सू. बु. का दान, मिथुन ल. प्रातः 7/53 के बाद), गोधूली, रात्रौ लग्नाभावः
ज्ये. कृष्ण १०, मंग	19 मई	६ ज्ये.	उ.भा.	मीन	।।।।।।ऽ विष्क ऽ।।	रात्रि ल. १ (मेष लग्ने चंद्र, मंगल का दान)
ज्ये. कृष्ण ११, बुध	20 मई	७ ज्ये.	उ.भा.	मीन	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ३ (मिथुने सू. बु. का दान), गोधू., रा. ल. ९ (धने मं. बु. दान)
ज्ये. कृष्ण ११, बुध	20 मई	७ ज्ये.	रेवती	मीन	।।ऽ शु ।।ऽ चो ।ऽ।।	रात्रि ल. १ (मेषे चं., मं. का दान), पादेन शुक्र युति अभावः
ज्ये. कृष्ण १२, गुरु	21 मई	८ ज्ये.	रेवती	मीन	।।ऽ शु ।।ऽ चो ।ऽ।।	दि. ल. ३ (सू. बु. का दान), गोधू., रा. ल. ९ (मं. बु. दान), (पादेन शुक्र युत्यभावः)
ज्ये. शुक्ल ७, शनि	30 मई	१७ ज्ये.	मघा	सिंह	।।।ऽगु ऽ चो ऽ व्याऽ।।	दि. ल. ३ (सू. दा.), गोधू., रात्रि ल. ९ (धनु ल. रात 21/38 तक, भद्रा पूर्वे) व्याघात की प्रथम ९ घड़ियाँ वर्जित (९ घड़ियाँ = ३ घंटे ३६ मिनट ही त्याज्य माने जाते हैं)
ज्ये. शुक्ल ९, सोम	1 जून	१९ ज्ये.	उ.फा.	कन्या	।।।।।ऽ रो ऽ व ।।।	दि. ल. ३ (सू. दा.), गोधू., रा. ल. ९ (श. दा.), १२ (चं. गु. दा.)
ज्ये. शुक्ल १०, मंग	2 जून	२० ज्ये.	हस्त	कन्या	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ३ (सू. दा.), गोधू., रा. ल. ९ (श. दा.), १२ (मीने चं. गु. दा.)
ज्ये. शुक्ल १२, गुरु	4 जून	२२ ज्ये.	स्वाती	तुला	ऽ सू ।।।ऽ मं ऽ अ ।।।	दि. ल. ३ (सू. दा.), गोधूली, रा. ल. ९ (श. दा.)
ज्ये. शुक्ल १३, शुक्र	5 जून	२३ ज्ये.	स्वा.	तुला	ऽसूऽपरि। ।ऽ मं ।।।।।	दि. ल. ३ (मिथुन लग्न प्रातः 6/52 तक)-(परिघ योग का पूर्वार्ध त्याज्य)–आवश्यके
ज्ये. शु. १४/१५, शनि	6 जून	२४ ज्ये.	अनु.	वृश्चि.	।।।।ऽ बु ऽ नृ ।ऽ।।	ल. गोधू., रा. ल. ९ (चं. बु. दा.), १२ (मीने गु. दान), रात्रौ भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा
ज्ये. शुक्ल १५, रवि	7 जून	२५ ज्ये.	अनु.	वृश्चि.	।।।।ऽ बु ।।ऽ।।	दि. ल. ३ (मिथुने चंद्र–बुध दा.), चन्द्र षष्ठे परिहार, भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा
आषा. कृष्ण १, सोम	8 जून	२६ ज्ये.	मूल	धनु	।।।।ऽ सू ऽ चौ ऽऽ।।	ल. गोधूलि, रा. ल. १२ (मीने गुरु दान)
आषा. कृष्ण २, मंग.	9 जून	२७ ज्ये.	मूल	धनु	।।।।ऽ सू ऽ चौ ऽऽ।।	दि. ल. ३ (मिथुने चंद्र-बुध का दान)
आषा. कृ. ३/४, गुरु	11 जून	२९ ज्ये.	श्रवण	मकर	।।।।ऽ के ।ऽऽ।ऽ	रात्रि ल. १२ (मीने चन्द्र–गुरु–राहु का दान) दग्धातिथौ चन्द्र दान।
आषा. कृ. ४/५, शुक्र	12 जून	३० ज्ये.	श्रवण	मकर	।।।।ऽ के।ऽऽऽ।	दि. ल. ३ (चं. दा.-पूजा, चन्द्र ८वें परि-आवश्यके), रा. ल. १२ (चं.-गु. दान-मीन लग्न रात्रि 1/34 तक ग्राह्य

आषाढ़ मासे (जून–जुलाई)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	विवरण
आषा. कृष्ण ८, मंग.	16 जून	३ आषा	उ.भा.	मीन	।।।।।ऽऽऽ।ऽ	ल. गोधू., रा. ल. १२ (चं. गु. दा. चंद्र मित्र क्षेत्रे शुभः), २ (वृषे मं. शु. का दान) द. तिथि दोष परिहारः, (प्रातः 5/24 से सायं 18/00 तक मृत्युबाण दोष)
आषा. कृ.९/१०, बुध	17 जून	४ आषा	रेवती	मीन	।।।।।ऽ अ ।ऽ।।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (चं. गु. दा., चंद्र मित्रक्षेत्रे शुभः), वृष लग्ने भद्रा व्याप्ति दोष
आषा. शुक्ल ५, शुक्रे	26 जून	१३ आषा	मघा	सिंह	।।।।ऽगु ऽअ ऽव ऽ।।	ल. गोधू., रात्रि लग्न २ (वृषे मंगल–शुक्र का दान), दिने लग्नऽभावः
आषा. शु. ६/७, रवि	28 जून	१५ आषा	उ.फा.	कन्ये	।ऽ।।।ऽ नृ ऽऽ।।	ल. गोधूलि, रा. ल. १२ (चं. गु. दा.), २ (वृषे मं. शु. का दान), रात्रौ व्यतीपात दोष अभावः

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
आषा. शुक्ल ८, सोम	29 जून	१६ आषा.	हस्त	कन्या	। । । । । । S S । S	ल. गोधू., रा. ल. १२ (चं. गु. का दा.), २ (मं. दान), वृषे तिथि दोष परिहारः
आषा. शुक्ल ९, मंग	30 जून	१७ आषा.	चित्रा	कं./तु.	। । । । । S चौ S परि । । ।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (चं. शु. गु. दान), २ (चं. मं. दान), चन्द्र षष्ठे–अष्टमे वा शत्रुक्षेत्रे परि. परिहारः = परिध का पूर्वार्ध भाग (प्रातः 8/12 तक) त्याज्य होगा।
आषा. शुक्ल१०, बुधे	1 जुला	१८ आषा.	स्वाती	तुला	। । । । । । । S । ।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (चं. शु. गु. दान), ल. २ (चं. मं. का दान)–(चन्द्र षष्टाष्टम शत्रुक्षेत्रे-परिहारः)
आषा. शुक्ल१२, शुक्रे	3 जुला	२० आषा.	अनु.	वृश्चिक	S सू S सा । । S मं । । । । ।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (चं. शु. दान), १ (चं. दा. मेषेऽष्टम चंद्र परिहार)
आषा. शुक्ल१२, शनि	4 जुला	२१ आषा.	अनु	वृश्चिक	S सू S । । S मं । । । । ।	दि. ल. ६ (कन्यायां चंद्र-शनि दान)
आषा. शुक्ल१३, रवि	5 जुला	२२ आषा.	मूल	धनु	। । । । । । S S S ।	ल. गोधू. (चं. दा.) रा. ल. १२ (गु. शु. दा.), १ (केतु दान), रात 27/24 के बाद सूर्य का वेध
श्रावण कृष्ण २, गुरू	9 जुला	२६ आषा.	श्रवण	मकर	। । । । S के । S । । ।	दि. ल. ६ (श. का दा.), गोधू. रा. ल. १२ (गु. शु. दान), १ (मेषे केतु दान)
श्रावण कृष्ण ३, शुक्र	10 जुला	२७ आषा.	धनि	म./कुं.	। । S गु । । S चो । । । ।	दि. ल. ६ (शनि का दा.), गोधू. रा. ल. १२ (गु. शु. चं. दान), १ (केतु दान) पादेन गुरू युत्यभावः
श्रावण कृष्ण ६, सोम	13 जुला	३० आषा.	उ.भा.	मीन	। । । । । । S ति । । ।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (गु. शु. चं दा. लग्ने मित्रक्षेत्रे चंद्र शुभः), १ (मेषे चंद्र दान) (मेष लग्ने अतिगण्ड योगअभावः)
श्रावण कृष्ण ७, मंग	14 जुला	३१ आषा.	रेवती	मीन	। । । । । S । । । ।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (चं. गु. शु. दा. लग्ने चंद्र परि.), १ (मेषे चंद्र दान)
श्रावण मासे (जुलाई–अगस्त)						
श्रावण कृष्ण११, शनि	18 जुला	३ श्राव.	रोहिणी	वृष	। Sगं S मं शु । । Sअ । S । ।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (मीने गु. शु. दा.), १, ३ (चं. मं. दा.) भौम युति परिहार (चन्द्र उच्चराशिस्थ)
श्रावण कृष्ण१२, रवि	19 जुला	४ श्राव.	रोहिणी	वृष	। । S मं शु । । S अ । S । ।	दि. ल. ६ (गुरू शनि दान), उच्चराशिस्थ चन्द्रे, भौम युति परिहारः
श्रावण शुक्ल २, गुरू	23 जुला	८ श्राव.	मघा	सिंह	। S व्य । । S गु । S । । ।	रा. ल. १ (चं. श. दा.), ३ (मिथुने मं. शु. दान), रात्रौ ग्रहण करिदोष अभावः
श्रावण शुक्ल ३, शुक्र	24 जुला	९ श्राव.	मघा	सिंह	। S । । S गु । S व्य । । ।	दि. ल. ६ (चं. श. दा.), ७ (भौमाष्टमे पूज्यः, गुरू दृष्टि शुभा),
श्रावण शुक्ल ५, शनि	25 जुला	१० श्राव.	उ.फा.	कन्ये	। । । । । S रो S परि S । ।	रा. ल. १ (मेषे चंद्र-शनि दान), ३ (मिथुने मं. शु. का दान)
श्रावण शुक्ल ५, रवि	26 जुला	११ श्राव.	उ.फा.	कन्या	। । । । । । S S । ।	दि. ल. ७ (भौमाष्टम पूज्य दान वा, लग्नोपरि गुरू दृष्ट्या शुभ एवं परिहार) (आवश्यके)
श्रावण शुक्ल ६, रवि	26 जुला	११ श्राव.	हस्त	कन्या	। । । । । । । । । S	ल. गोधू., रा. ल. १२ (चं. गु. दान), १ (चं. दा., चन्द्र षष्ठे परिहार), रात्रि 26/26 से मृ.बा. प्रा. [मीन व मेष लग्ने तिथि दोष परिहारः]
श्रावण शुक्ल ६, सोम	27 जुला	१२ श्राव.	चित्रा	कन्या	। । । । । S अ S S । ।	रा. ल. १२ (चं गु. दान), १ (चंद्र दान, षष्ठे चंद्र परिहार), ३ (मिथुने मं. का दान)
श्रावण शुक्ल ७, मंग	28 जुला	१३ श्राव.	चित्रा	तुला	। । । । । S अ S S । ।	दिवा. ल. ६ (चन्द्र दान)
श्रावण शुक्ल ८, मंग	28 जुला	१३ श्राव.	स्वाती	तुला	। S सा । । । । । S S ।	ल. गोधूली, रा. ल. १ (मेषे चन्द्र दान), मिथुने क्रांतिसाम्य दोष (गणितेन क्रांति, साम्य दोष रात्रि 1/26 से अगले दिन प्रातः 7/28 तक
श्रावण शुक्ल ८, बुध	29 जुला	१४ श्राव.	स्वाती	तुला	। S । । । । । S । ।	दिवौ ल. ६ (शनि का दान)
श्रावण शुक्ल१०, गुरू	30 जुला	१५ श्राव.	अनु.	वृश्चिक	। । । । । S नू । S S ।	रा. ल. १२ (चं. गु. दा.), १ (चं. दा. अष्टम चंद्र परि.), ३ (मिथुने चं. दा., चंद्र षष्ठे,परिहारः)
श्रावण शुक्ल१०, शुक्र	31 जुला	१६ श्राव.	अनु.	वृश्चिक	। । । । । । । S S ।	दि. ल. ६ (शनि दान), गोधूली च., रात्रि ल. १२ (चं. गु. दा.) मीन लग्न रात 10/45 तक ग्राह्य
श्राव. शु.११/१२, शनि	1 अग.	१७ श्राव.	मूल	धनु	S सू । । । । । । । । ।	रा. ल. ३ (मिथुने चन्द्र, मंग. का दान)
श्रावण शुक्ल१२, रवि	2 अग.	१८ श्राव.	मूल	धनु	S सू S वै । । । । S । । ।	दि. ल. ६ (श. बु. दान), गोधूली, रात्रि ल. १२ (गु. दा.)
श्रावण पूर्णिमा, बुध	5 अग.	२१ श्राव.	श्रवण	मकर	। । । S बु S के S S S । ।	दि. ल. ६ (श. बु. दा. कन्या ल. 10/45 के बाद), (दुपै. 12/10 से रात 24/36 तक मृत्युबाण) रा. ल. ३ (चं. गु. दा., चंद्राष्टम परिहारः) दिवस लग्ने भद्रा परिहार, पादेन युति अभावः

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
श्राव. शुक्ल १५, गुरु	6 अग.	२२ श्राव.	श्रवण	मकर	।।।S बु S के ।S S ।।	दि. ल. ६ (श., बु. दान)
भाद्र. कृष्ण ३/४, रवि	9 अग.	२५ श्राव.	उ.भा.	मीन	।।।।।।S ।।।	रात्रि ल. १ (मेषे चंद्र-शुक्र का दान), ३ (गुरु का दान)
भाद्र. कृष्ण ४, सोम	10 अग.	२६ श्राव.	उ.भा.	मीन	।।।।।S चो S ।।।	दि. ल. ६ (चं. श. बु. के दान), गोधू, रा. ल. १२ (चं. दा., मित्रक्षेत्रे लग्ने चन्द्रः शुभः) आवश्यके
भाद्र. कृष्ण ५, सोम	10 अग.	२६ श्राव.	रेवती	मीन	।।।।।S चो ।S ।।	रात्रि ल. १ (मेषे चंद्र, शुक्र के दान), ल. ३ (मिथुने मंगल का दान)
भाद्र. कृष्ण ५, मंग	11 अग.	२७ श्राव.	रेवती	मीन	।।।।।।।S ।।	दि. ल. ६ (चं. श. बु. दान), रा. ल. १२ (चंद्र पूज्य व दान–आवश्यके) रा. ल. १ [बु., शुक्र का दान)–मेष लग्न रात 23/15 तक]
भाद्रपद मासे (अगस्त–सितम्बर)						
भाद्र. शुक्ल २, शनि	22 अग.	७ भाद्र.	उ.फा.	सिं/कं.	।।S श बु ।।।S ।।।	दि. ल. ६ (चं. दा.), ७ (चंद्र व शनि दान), रात्रि ल. १२ (चं. बु. दान), १, २–(मेषे चंद्र दान), (वृषे मं. शु. दा.) सिंह व कन्येस्थ चन्द्रे–शनि युति परिहार (आवश्यके)
भाद्र. शुक्ल ३, रवि	23 अग.	८ भाद्र.	हस्त	कन्या	।S ।।।S चो ।।।।	दि. ल. ७ (चं. दा.), रा. ल. १२ (चं. बु. दा.), १ (चं. दा.), २ (मं शु. दा.) [रात्रौ भद्रा पातालगे शुभप्रदा]
भाद्र. शुक्ल ५, सोम	24 अग.	९ भाद्र.	चित्रा	कं./तुले	।।।।।।S S ।।	दिवा ल. ७ (चन्द्र दान), गोधूली, रा. ल. १ (मेषे चंद्र दान च)
भाद्र. शुक्ल ६, मंग	25 अग.	१० भाद्र.	स्वाती	तुलायां	।।।।।S रो ।।।।	दि. ल. ६ (शनि दान), गोधूली, रात्रि ल. १, (मेषे चन्द्र दान व पूजा)
भाद्र. शुक्ल ८, गुरु	27 अग.	१२ भाद्र.	अनु.	वृश्चिक	।।।।।S ।S ।।	दि. ल. ६ (प्रातः 8/32 तक) रात्रि ल. २ (चन्द्र, शुक्र के दान), प्रातः 8/33 से रात्रि 9/23 तक मृत्युबाण दोषः
भाद्र. शुक्ल १०, शनि	29 अग.	१४ भाद्र.	मूल	धनु	S श ।।।।।।।S ।S	दि. ल. ६ (श. दा. कन्या ल. प्रातः 8/08 बाद), ७ (तुला), गोधूली च. रा. ल. १२ (बु. गु. दा.), १ (मेषे शनि दान), तिथि दोष परिहार
भाद्र. शुक्ल १०, रवि	30 अग.	१५ भाद्र.	मूल	धनु	S श ।।।।।।।S ।S	दि. ल. ६ (श. दा.), ७ (तुला लग्न प्रातः 11/05 तक ग्राह्य), दग्धा तिथि परिहार
भाद्र. शुक्ल १२, मंग	1 सितं.	१७ भाद्र.	श्रवण	मकर	S सू।।।Sशु केS S ।।।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (बु दा.), १ (श. शु. दा.), २ (चं. शु. का दान)
भाद्र. शुक्ल १३, बुध	2 सितं.	१८ भाद्र.	श्रवण	मकर	S सू.।।।Sशु केSचोS।।।	दि. ल. ६ (श. दा.), ७ (गु. रा. दान), गोधू., रा. ल. १२ (मीने बु. दा.)
भाद्र शु.१३/१४, बुध	2 सितं.	१९ भाद्र.	धनि.	मकर	।।S गु ।।।।।।।	रा. ल. १२ (बु. दा.), १ (मेषे मं. श. दा.), २ (वृषे शुक्र का दा.)
भाद्र. शुक्ल १४, गुरु	3 सितं.	१९ भाद्र.	धनि	मं./कुं	।।S गु ।।S रो S ति ।।।	दि. ल. ६ (श. दा.), ७ (गु. रा. दा.), गोधू., रा. ल. १२ (चं., बु. दा. मीन ल. 19/55 तक, भद्रा पूर्वे
आश्विन मासे (सितम्बर–अक्तूबर)						
आश्विन शुक्ल१, शनि	19 सितं.	४ आश्वि	उफा	कन्या	।।S सू श बु।।SअS ।।।	दि. ल. ७ (चं. श. दा.) कन्यायां चन्द्र युति परिहारः–आवश्यके
आश्वि. शु. १/२, शनि	19 सितं.	४ आश्वि	हस्त	कन्या	।।।।।।।।।।	ल. गोधूली, रा. ल. २ (वृषे चं. श. दा.), ५ (सिंहे चं. श. दा.)
आश्वि. शुक्ल २, रवि	20 सितं.	५ आश्वि	हस्त	कन्या	।।।।।।।।।।	दि. ल. ७ (तुलायां चं. श. का दान)
आश्वि. शुक्ल ३, रवि	20 सितं.	५ आश्वि	चित्रा	कं./तुले	।।।।।S नृ ।।।।	ल. गोधूली, रा. ल. १ (मेषे चं. श. दा.), २ (मं. दा.), ५ (सू. श. दा.)
आश्वि. शुक्ल ३, सोम	21 सितं.	६ आश्वि	स्वाती	तुला	S के S ऐं ।।।।।।।।	रा. ल. १ (चं. श. दा.), २ (मं. दा.), ५ (सू. श. का दान)
आश्वि. शुक्ल ५, बुध	23 सितं.	८ आश्वि	अनु.	वृश्चिक	।।।।।।।।।।	ल. गोधू., रा. ल. १ (मेषे चंद्र दान अष्टमे चं. परि.), २ (चं. मं. दा.), ५ (सू. श. दा.)
आश्वि. शुक्ल ६, वीर	24 सितं.	९ आश्वि	अनु.	वृश्चिक	।।।।।।।।।।	दिवस ल. ७ (तुलायां च. श. का दान)
आश्वि. शु. १०, सोम	28 सितं.	१३ आश्वि	श्रवण	मकर	।।।S शु ।।S S ।।	रात्रि ल. ५ (चं. श. का दान, षष्ठे चन्द्र परिहारः), पादेन शुक्र वेधऽभाव
आश्वि. शु. ११, मंग.	29 सितं.	१४ आश्वि	श्रवण	मकर	।।।S शु ।।S S ।।	दि. ल. ७ (चं. श. दा.), गोधू., रा. ल. १, २, ५ (चन्द पूज्य दान वा) (पादेन शुक्रवेधाभावः, भद्रा परिहारः)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
आश्वि शु. ११, मंग.	29 सितं.	१४ आश्वि.	धनि.	मकर	I I S गु I I I I I I I	रा. ल. ५ (सिंह लग्ने चंद्र पूज्य दान वा) पादेन गुरु युत्यभावः
आश्वि.शु.११/१२, बुध	30 सितं.	१५ आश्वि	धनि.	म./कुं.	I I S गु I I S नृ I I I I	दि. ल. ७ (चं. श. दा.), गोधू., रा. ल. १, २ (श. दा.), ५ (चंद्र दान), (पादेन गुरू युत्यभाव)
कार्ति. कृ. १/२, सोम	5 अक्तू	२० आश्वि	अश्विनी	मेष	I S व्या I S शु I I I I I I	लग्न गोधूली, रा. ल. २ (चं. दा.), ५ (श. के. का दान)
कार्ति. कृष्ण ५, गुरु	8 अक्तू	२३ आश्वि	रोहिणी	वृष	I I I I I I I S I I	दि. ल. ८ (चं. मं. दान, वृश्चिक ल. 10/16 बाद, ९ (धनु में मं. दा., 8वें मं. परि.), गोधू., रा. ल. १, २ (मेष व वृषे श. चं. दा.), ३ (चं. गु. दा.), ५ (मं. श. दा.)
का. कृष्ण ११, बुध	14 अक्तू	२९ आश्वि	मघा	सिंह	I I I S गु I I S S I I I	दि. ल ७ (श. शु. सू. दा.), ८ (मं. दा.), ९ (मं. दा. धनु दुपै. 13/30 तक), गोधू., रा. ल. २, ३ वृष, मिथुने मं. शु. दा.) दुपै. 13/36 से 17/40 तक क्रान्तिसाम्य दोषः, पादेन गुरू वेधऽभावः)

कार्तिक मासे (पर्वतीय क्षेत्रे विशेष) (अक्तूबर–नवम्बर)

कार्तिक शुक्ल१, सोम	19 अक्तू	३ कार्ति	स्वाती	तुला	S के I I I I S अ I I I I	दि. ल. ८ (सू. चं. दा.), ९ (चं. मं. दा. भौमाष्टम परि.), गोधूलि च रा. ल. २ (वृषे चं. शु. दा., चन्द्र षष्ठे परिहारः)
कार्ति शुक्ल२/३, मंग	20 अक्तू	४ कार्ति	अनु.	वृश्चिक	I I I I I I I I I I	रा. ल. ३ (सू. चं. शु. दा., मिथुन ल. रात 9/21 बाद), ५ (सिंहे चं. मं. शु. के दान) (मिथुने वृश्चिकस्थ चन्द्र षष्ठे परिहारः)
कार्ति. शुक्ल ३, बुध	21 अक्तू	५ कार्ति	अनु.	वृश्चिक	I I I I I S नृ I I I I	दि. ल. ९ (चं. मं. के दान), गोधू, रा. ल. २-३ (चं. शु. दा.), (मिथुन रात्रि 10/29 तक ग्राह्य)
कार्ति. शुक्ल ८, सोम	26 अक्तू	१० कार्ति.	श्रवण	मकर	I S शू I I S मं I S S I I	दि. ल. ८ (सू. दा.), ९ (मं. दा. भौमाष्टम परि.), गोधूलि, रा. ल. २ (शु. दा.), ३ (शु. दा.) (मिथुने मं. बु. का दान) (शूल योग की आरंभिक पाँच घड़ियां त्याज्य मानी गई हैं)
कार्ति. शुक्ल ९, मंग	27 अक्तू	११ कार्ति.	श्रवण	मकर	I S गं I I S मं I S S I I	दि. ल. ८ (सू. दा.), ९ (मं. दा. धनु ल. दुपै. 11/50 तक ग्राह्य, दुपै 12/28 से मृत्युबाण शुरू
कार्ति. शुक्ल ९, मंग	27 अक्तू	११ कार्ति.	धनि.	कुम्भ	I S गं S गु I I I I I S I	रा. ल. ५ (सिंहे चं. दान) पादेन गुरुयुत्यभावः, दुपै. 12/28 से रात 24/28 तक मृत्युबाण गणितेन क्रान्ति साम्याभावः
कार्ति.शुक्ल १०, बुधे	28 अक्तू	१२ कार्ति.	धनि.	कुम्भ	I I S गु I I S अ I I S I	दि. ल. ८ (सू. दा.), ९ (मं. दान) पादेन गुरू युत्यभाव, गणितेन क्रांति साम्याऽभावः
कार्ति.शुक्ल १२, शुक्र	30 अक्तू	१४ कार्ति.	उभा	मीन	S सू I I I S शऽनृ S I I S	रा. ल. २, ३ (वृषे मिथुने च बु.-शु. दा.), (तिथि दोष परि.–**भीष्मपंचक विचार आवश्यके**)
कार्ति.शुक्ल १३, शनि	31 अक्तू	१५ कार्ति.	उभा	मीन	S सू I I I S श I S I I I	दि. ल. ८ (सू. दा.), ९ (मं. दा.), गोधू., रा. ल. २ (19/18 तक) भीष्मपंचक विचार–आवश्यके
कार्ति.शुक्ल १४, रवि	1 नवं.	१६ कार्ति.	अश्वि	मेष	I I I I S शु S चो S S I I	रा. ल. २ (चं. दा. वृष ल. रात 19/32 उपरांत), ३ (बु. शु. दा.), ५ (सू. मं. का दान- सिंह लग्ने भद्रा स्वर्गे परिहार, **भीष्म पंचक विचार–आवश्यके**
कार्ति.शुक्ल १५, सोम	2 नवं.	१७ कार्ति.	अश्वि	मेष	I I I I S शु I S S I I	दि. ल. ९ (मं., केतु दान, भद्रा परिहार), रा. ल. २ (मं. शु. दा.) वृष ल. रात 19/11 तक)– **भीष्म पंचक विचार (आवश्यके)**
मार्ग. कृष्ण २, बुध	4 नवं.	१९ कार्ति.	रोहिणी	वृष	I I I I I I I I I I	ल. गोधू., रा. ल. २ (शु. बु. दा.), ३ (चं. बु. शु. दा.), ५ (सू. शु. दा)
मार्ग. कृष्ण ३, गुरु	5 नवं.	२० कार्ति.	रोहिणी	वृष	I S परि. I I I S I I I I	दि. ल. ८ (सू. चं. दा.), (दुपै. 12/32 के बाद मृत्युबाण दोष प्रा.) प्रातः 8/10 बाद भद्रा परिहार. (परिघ का पूर्वार्द्ध ही त्याज्य)
मार्ग कृ. ८/९, मंग	10 नवं.	२५ कार्ति.	मघा	सिंह	I I I I S गु S चो S S I I	दि. ल. ८ (सू. बु. दा., लग्न प्रातः 8/44 बाद), ९ (मं. के. दान), गोधू., रा. ल. ३ (मु.बु.दा.)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
मार्ग. कृष्ण ११, गुरु	12 नवं.	२७ कार्ति.	उ.फा.	सिं./कं.	। S वै Sश। । Sरोs S । ।	दि. ल. ८ (सू. बु. दा.), ९ (मं.-के. का दान), दिवस लग्ने वैधृति दोष, रा. ल. ५ (सिंहे सू. शु. मं. दा.)–शनि युति परिहार
मार्ग. कृष्ण १२, शुक्र	13 नवं.	२८ कार्ति.	हस्त	कन्या	। । । । । । । S । S	दि. ल. ८ (सू. दा.), ९ (मं. के. का दान), रा. ल. ५ (सू मं. शु. श. दान) सिंह ल. रात्रि 26/17 तक ग्राह्य), दग्धा तिथि परिहारः

मार्गशीर्ष मासे (नवम्बर–दिसम्बर)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
मार्ग.शुक्ल १/२, मंग	17 नवं.	२ मार्ग.	अनु.	वृश्चिक	। । S बु । । S । । । ।	रा. ल. ७ (तुलायां चं. श. दान), (सिंह लग्ने चंद्र पूज्य दान वा, क्षीण चंद्र), **आवश्यके**
मार्ग.शुक्ल ५/६, रवि	22 नवं.	७ मार्ग.	श्रवण	मकर	। । । । । S चो S । । ।	ल. गोधू., **रात्रि** ल. ५ (सिंहे च, गु. व शु. दान), ७ (तुलायां शनि का दान)
मार्ग. शुक्ल ६, सोम	23 नवं.	८ मार्ग.	श्रवण	मकर	। । । । । । S । । ।	दि. ल. ११ (चं. श. दा., कुम्भ लग्ने, अष्टमस्थ शनि उपरि गुरु दृष्टि शुभा) सायं ल. १ (मेषे शु. पूज्य दान वा–**आवश्यके**), गोधूलि च
मार्ग. शुक्ल १०, शुक्र	27 नवं.	१२ मार्ग	उ.भा.	मीन	। । । । S श S अ S S । S	दि. ल. ११ (श. दा. अष्टम शन्युपरि गुरू दृष्टि शुभा)**–आवश्यके, गोधूली च**, दग्धा तिथि रा. ल. ५ (मं. बु. दा.), ७ (श. बु. दा.), चन्द्र षडाष्टके गुरूगृहे शुभप्रदः-चं.द. तिथि, **आवश्यके**
मार्ग. शुक्ल १२, रवि	29 नवं.	१४ मार्ग.	अश्वि	मेष	S सू गुS। । । S नृ S । । ।	दि. ल. ११ (श. दा. अष्टम शनि पर गुरू दृष्टि शुभा)-**आवश्यके**, ल. गोधूली रा. ल. ५ (मं. बु. दा.), ७ (चं. श. दा.) तुला लग्न. 30 नवं. की प्रातः 5/02 तक ग्राह्य
मार्ग. शुक्ल १५, मंग	1 दिसं.	१६ मार्ग.	रोहि.	वृष	। । । । S सू शु S चो। S । ।	रात्रि ल. ७ (तुलायां सूर्य, शनि दान स्वोच्च चंद्र एवं तदुपरि गुरू दृष्टि शुभा)
मार्ग. शुक्ल १५, बुध	2 दिसं.	१७ मार्ग.	रोहि.	वृष	। । । । S सू शु । । S । ।	दि. ल. ११ (श. दा., शनि पर गुरू की दृष्टि शुभप्रदा)**–आवश्यके** रा. ल. ५ (मं. बु. दान, **सिंह लग्न** मध्य रात्रि 12/43 तक ग्राह्य
पौष कृष्ण ६, सोम	7 दिसं.	२२ मार्ग.	मघा	सिंह	। S वै । । S गु S नृ S । । ।	रा. ल. ७ (तुलायां सूर्य, शनि दान), वैधृति दोष–आवश्यके
पौष कृष्ण ७, मंग.	8 दिसं.	२३ मार्ग.	मघा	सिंह	। S । । S गु S नृ S । । ।	दि. ल. ११ (चं. श. का दान, अष्टमस्थ शनि पर गुरू दृष्टि शुभप्रदा)**–आवश्यके**
पौष कृष्ण ८, बुध	9 दिसं.	२४ मार्ग.	उ.फा.	सिं./कं.	। । S श। । S चोS S । । ।	दि. ल. ११ (चं. श. दान, कुंभ ल. दुपै. 12 बजे के बाद, गोधू. रा. ल. ५ (मं. बु. दा.), ७ (चं. श. दा.) कन्या राशिस्थ चन्द्रे **शनि युति परिहारः**
पौष कृष्ण ९, गुरू	10 दिसं.	२५ मार्ग	हस्त	कन्या	। । । । । । । S । S	दि. ल. ११ (लग्नगते चंद्र–शनि पर गुरू की दृष्टिः परिहारः, **आवश्यके**, गोधूली रा. ल. ५ (श. मं. दान), ७ (चं. श. दान), दिवस लग्ने तिथि दोष अभाव, (रात्रौ तुला लग्ने तिथि व भद्रा दोष परिहार)

विशेष नोट—आगे माघ और फाल्गुण—दो महीनों के मध्य अर्थात् (14 जन. से 13 मार्च, 2010 ई.) के मध्य क्रमशः शुक्र एवं गुरु अस्त रहने के कारण विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों का अभाव रहेगा। ***शुक्रास्त***—13 दिसंबर, 2009 ई. अर्थात् 14 दिसं. की प्रातः (5/18) से 8 फरवरी (2010 ई.) तक शुक्र पूर्व में अस्त रहेगा।

गुरु अस्त—16 फर. से 21 मार्च (2010 ई.) के मध्य गुरु पश्चिमास्त रहेंगे।

गुरू–शुक्र अस्त से तीन दिन पूर्व वार्धक्य एवं तीन दिन बाद तक बाल्यत्व दोष का भी विवाहादि शुभ कृत्यों में विचार किया जाता है।

संवत् २०६७ में सम्भावित समय शुद्धि का विचार—15 अप्रैल से 14 मई, 2010 ई. तक वैशाख अधिक मास होगा। 23 सितंबर से 7 अक्तू. तक श्राद्ध रहेंगे तथा लगभग 25 मार्च से 25 अप्रैल 2011 ई. तक गुरु अस्त रहेगा।

त्रिबल शुद्धि पर आधारित

वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त संवत् २०६६ वि. (सन् 2009-10 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करें। **उदाहरण**—मिथुन राशि का लड़का और कुम्भ राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त मार्ग. (नवंबर, 2009 ई.) में देखना हो तो दोनों की राशियों में नवम्बर की १७, २७, एवं २९ ता. के रात्रिकालिक मुहूर्त्तों में समानता मिलती है। इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं।

कार्तिक मास के मुहूर्त्त केवल पर्वतीय (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। ध्यान रहे, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। कन्या की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि—अप्रैल की ता. १४, १५, १७, १८, १९, २७, २८, **मई** की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १७, १९-२०-२१ (चं.दा.), ३०, **जून** की १, २, ४, ५, ८, ९, ११, १२, १६-१७ (चं.दा.), २६, २८, २९, ३०, **जुला.** की १, ५, ९, १०, १३-१४ (चं.दा.), **अगस्त** की २२, २३, २४, २५, २९, ३०, **सितं.** की १, २, ३, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ५ (चं.दा.), ८, १४ [**कार्तिक में** अक्तू. की १९, २६, २७, २८, ३०-३१ (चं.दा.), **नवं.** की १-२ (चं.दा.), ४, ५, १०, १२, १३] तारीखें ग्रहणीय होंगी।	मेष राशि के लड़के को ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में सूर्य पूज्य तथा श्राव. और मार्ग मास वर्ज्य माने गए हैं। इस राशि की कन्या को मकरस्थ गुरू काल में साधारण पूजा व दान रहेगा।	**मेष राशि—अप्रैल** की १४, १५, १७, १८, १९, २७, २८, **मई** की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १७, १९, २०, २१, ३०, **जून** की १, २, ४, ५, ८, ९, ११, १२, १६, १७, २६, २८, २९, ३०, **जुला.** की १, ५, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, **अग.** की १, २, ५, ६, ९-१०-११ (चं.दा.), २२, २३, २४, २५, २९, ३० **सितं.** की १, २, ३, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ५, ८, १४ [**कार्तिक** में अक्तू. की १९, २६, २७, २८, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४, ५, १०, १२, १३] मार्गशीर्ष में नवं. की २२, २३, २७, २९, **दिसं.** की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।
वृष राशि—मई की ता. १५, १६, १७, १९, २०, २१, **जून** की १-२ (चं.दा.), ४, ५, ६, ७, ११, १२, १६, १७, २८, २९, ३०, **जुलाई** की ता. १, ३, ४, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, **अगस्त** की ५, ६, ९, १०, ११, **सितंबर** की १९, २०, २१, २३, २४, २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ५, ८, [**कार्तिक** में अक्तू. की १९, २०, २१, २६, २७, २८, ३०, ३१, **नवं.** की १-२ (चं.दा.), ४, ५, १२ (रा.ल.), १३] मार्गशीर्ष में **नवं.** की १७, २२, २३, २७, २९ (चं.दा.), **दिसं.** की १, २, ९ (रा.ल.) एवं १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।	**वृष के लड़के** को ज्येष्ठ, आश्वि., मार्ग., व माघ मासों में सूर्य पूज्य तथा वैशा. व भाद्रपद मास अशुभ एवं त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या के लिए मकर व कुम्भस्थ गुरू साधारण पूज्य व दान योग्य होंगे।	**वृष राशि—अप्रैल** की १७ (11/38 बाद), १८, १९, २७, २८, **मई** की ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १९, २०, २१, **जून** की १, २, ४, ५, ६, ७, ११, १२, १६, १७, २८, २९, ३०, **जुलाई** की १, ३, ४, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, **अगस्त** की ५, ६, ९, १०, ११, २२ (10/40 बाद), २३, २४, २५, २७, **सितंबर** की १, २, ३, १९, २०, २१, २३, २४, २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ५, ८, [**कार्तिक** में अक्तू. की १९, २०, २१, २६, २७, २८, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४, ५, १२, १३] मार्गशीर्ष में **नवं.** की १७, २२, २३, २७, २९, **दिसं.** की १, २, ९ (रा.ल.), १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।
मिथुन राशि—अप्रैल की ता. १४, १५, १७ (दि.ल.), २७-२८ (चं.दा.), **मई** की ७ (11/09 बाद), ८, १२, **जून** की १६, १७, २६, ३० (22/34 बाद), **जुला.** की १, ३, ४, ५, १० (रा.ल.), १३, १४, १८, १९, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१, **अग.** की १, २, ९, १०, ११, २२ (दि.ल.६), २४ (14/03 बाद), २५, २७, २९, ३०, **सितं.** की ३ (प्रात: 9/33 बाद), [**कार्तिक** में अक्तू. की ता. १९, २०, २१, २७ (25/15 बाद), २८, ३०, ३१, **नवंबर** की १, २, ४, ५, १०, १२ (दि.ल.)] मार्गशीर्षे नवं. की १७, २७, २९, **दिसं.** की १, २, ७, ८, ९ (ल. 17/46 तक) तारीखें ग्रहणीय होंगी।	मिथुन के वर को आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फागुन मासों में सूर्य पूज्य, दानादि तथा ज्येष्ठ, आश्वि. व माघ मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को मकर का गुरु विशेष पूज्य व दान योग्य होगा कुम्भस्थ गुरु शुभ होगा।	**मिथुन राशि—अप्रैल** की १४, १५, १७ (11/37 तक), २७, २८, **मई** की ७ (11/09 बाद), ८, १२, १७, १९, २०, २१, ३०, **जून** की ४, ५, ६, ७, ८, ९, १६, १७, २६, ३० (22/34 बाद), **जुला.** की १, ३, ४, ५, १० (21/10 बाद), १३, १४, १८, १९, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१, **अग.** की १, २, ९, १०, ११, २२ (10/39 तक), २४ (14/03 बाद), २५, २७, २९, ३०, **सितं.** की ३ (9/33 बाद), २० (23/50 बाद), २१, २३, २४, ३० (17/01 बाद), **अक्तू.** की ५, ८, १४, [**कार्तिक मासे** अक्तू. की १९, २०, २१, २७ (25/15 बाद), २८, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४, ५, १०, १२ (12/24 तक)] मार्गशीर्ष में नव. की १७, २७, २९, **दिसं.** की १, २, ७, ८, ९ (17/46 तक) तारीखें ग्रहणीय होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कर्क राशि—अप्रैल की १४, १५, १७, १८, १९, २७, २८, मई की ५, ६, ७ (दि.ल.), १२, १५, १६, १९, २०, २१, ३०, जून की १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, जुला. की १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, ३०, ३१, अगस्त की १, २, ५, ६, ९, १०, ११, २२, २३, २४ (दि.ल.), २७, २९, ३०, सितं. की १, २, ३ (दि.ल.६), १९, २० (रात्रि 11/50 तक), २३, २४, २८, २९, ३० (दि.ल.), अक्तू. की ५, ८, १४, नवंबर की १७, २२, २३, २७, २९, दिसंबर की १, २, ७, ८, ९ और १० तारीखें ग्रहणीय रहेंगी।	कर्क के लड़के को श्रावण, भाद्र, मार्ग. व माघ मासों में सूर्य की पूजा व दान तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। कर्क की कन्या को मकर का गुरू शुभ परन्तु कुम्भस्थ गुरू की विशेष पूजा, दानादि वांछित होगा।	**कर्क राशि**—अप्रै. की १४, १५, १७, १८, १९ (23/40 तक), २७, २८, मई की ५, ६, ७ (11/08 तक), १२, १५, १६, १९, २०, २१, ३०, जून की १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, १६, १७, २६, २८, २९, ३० (22/33 तक), जुला. की ३, ४, ५, ९, १० (21/09 तक), १३, १४, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६, ९, १०, ११, २२, २३, २४ (14/02 तक), २७, २९, ३०, सितं. की १, २, ३ (9/32 तक), १९, २० (23/49 तक), २३, २४, २८, २९, ३० (17/00 तक), अक्तू. की ५, ८, १४ [कार्तिक मासे अक्तू. की २०, २१, २६, २७ (25/14 तक), ३०, ३१, नवं. की १, २, ४, ५, १०, १२, १३] मार्गशीर्ष में नवं. की १७, २२, २३, २७, २९, दिसं. की १, २, ७, ८, ९ और १० तारीखें ग्रहणीय रहेंगी।
सिंह राशि—अप्रैल की १४, १५, १७, १८, १९, २७, २८, मई की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १७, ३०, जून की १, २, ४, ५, ८, ९, ११, १२, २६, २८, २९, ३०, जुला. की १, ५, ९, १०, अगस्त की २२, २३, २४, २५, २९, ३०, सितं. की १, २, ३, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, अक्तू. की ५, ८, १४ [कार्तिक में अक्तू. की १९, २६, २७, २८, नवं. की १, २, ४, ५, १०, १२ व १३] तारीखें ग्रहणीय होंगी।	सिंह राशि के लड़कों को आश्विन एवं फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा/दानादि रहेगा। श्रावण, मार्ग. व चैत्र मास त्याज्य होंगे। सिंह की कन्या को मकरस्थ गुरू साधारण पूज्य/दानादि तथा कुम्भस्थ गुरु शुभ होगा।	**सिंह राशि**—अप्रैल की १४, १५, १७, १८, १९, २७, २८, मई की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १७, ३०, जून की १, २, ४, ५, ८, ९, ११, १२, २६, २८, २९, ३०, जुला. की १, ५, ९, १०, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, अगस्त की १, २, ५, ६, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, सितं. की १, २, ३, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, अक्तू. की ५, ८, १४, [कार्तिक में अक्तू. की १९, २६, २७, २८, नवं. की १, २, ४, ५, १०, १२, १३] मार्गशीर्ष में नवं. की २२, २३, २९, दिसं. की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।
कन्या राशि—मई की १५, १६, १७, १९, २०, २१, ३०, जून की १, २, ४, ५, ६, ७, ११, १२, १६, १७, २६, २८, २९, ३०, जुलाई की १, ३, ४, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, अग. की ५, ६, ९, १०, ११, सितंबर की १९, २०, २१, २३, २४, २८, २९, ३०, अक्तू. की ८, १४ [कार्तिक में अक्तू. की १९, २०, २१, २६, २७, २८, ३०, ३१, नवंबर की ४, ५, १०, १२, १३] मार्ग. में नवं. की १७, २२, २३, २७, दिसंबर की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय रहेंगी।	*कन्या राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि होगा। वैशाख, भाद्र. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को मकरस्थ गुरु शुभ तथा कुंभस्थ गुरु सामान्यत: पूज्य/दानादि होगा।	**कन्या राशि**—अप्रैल की १७ (11/38 बाद), १८, १९, २७, २८, मई की ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १९, २०, २१, ३०, जून की १, २, ४, ५, ६, ७, ११, १२, १६, १७, २६, २८, २९, ३०, जुलाई की १, ३, ४, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, अग. की ५, ६, ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५, २७, सितं. की १, २, ३, १९, २०, २१, २३, २४, २८, २९, ३०, अक्तू. की ८, १४ [कार्तिके अक्तू. की १९, २०, २१, २६, २७, २८, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, १०, १२, १३] मार्ग. में नवं. की १७, २२, २३, २७, दिसं. की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।
तुला राशि—अप्रैल की १४, १५, १७ (प्रात: 11/38 तक), १९ (23/41 उप.), २८ (रा.ल.), मई की ५, ६, ७, ८, १२, जून की १६, १७, २६, २८, २९, ३०, जुला. की १, ३, ४, ५, १० (21/10 उप.), १३, १४, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, अगस्त की १, २, ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०, सिंत. की ३ (9.33 के बाद), [कार्तिक में अक्तू. की १९, २०, २१, २७ (रा.ल.), २८, ३०, ३१, नवं. की १, २,१०, १२, १३, १७, २७, २९] दिसंबर की ७, ८, ९ और १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।]	*तुला के वर को वैशा., आषा., कार्ति., मार्ग. व फागु. मासों में सूर्य की पूजा/दान होगा। ज्येष्ठ, आश्वि. व माघ मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को मकरस्थ विशेष रूप से पूज्य व दान योग्य होगा। कुम्भस्थ गुरु शुभ होगा।	**तुला राशि**—अप्रैल की १४, १५, १७ (11/37 तक), १९ (23/41 बाद), २८ (18/11 बाद), मई की ५, ६, ७, ८, १२, १७, १९, २०, २१, ३०, जून की १, २, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १६, १७, २६, २८, २९, ३०, जुला. की १, ३, ४, ५, १० (21/10 बाद), १३, १४, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, अग. की १, २, ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०, सिंत. की ३ (9/33 बाद), १९, २०, २१, २३, २४, ३० (17/01 बाद), अक्तू. की ५, १४, [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २०, २१, २७ (25/15 बाद), २८, ३०, ३१, नवं. की १, २, १०, १२, १३,] मार्ग. में नवं. की १७, २७, २९, दिसं. की ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।
वृश्चिक राशि—अप्रैल की १४, १५, १७, १८, १९ (23/41 तक), २७, २८ (18/10 तक), मई की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १९, २०, २१, ३०, जून की १, २-४-५ (चं.दा.), ६, ७, ८, ९, ११, १२, जुला. की १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, २८-२९ (चं.दा.), ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६, ९, १०, ११, २२, २३, २४-२५ (चं.दा.), २७, २९, ३०, सितं. की १, २, ३ (प्रात: 9/32 तक), १९, २०-२१ (चं.दा.), २३, २४, २८, २९, ३० (दि.ल.), अक्तू. की ५, ८, १४, नवं. की १७ (चं.दा.), २२, २३, २७, २९, दिसं. की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय रहेंगी।	वृश्चिक राशि के वर को ज्येष्ठ, श्राव. और मार्ग. मासों में सूर्य पूजा दानादि तथा आषाढ़, कार्तिक व फागु. त्याज्य हैं। इस राशि की कन्या को मकरस्थ गुरू की साधारण पूजादि होगी तथा कुम्भस्थ गुरु की विशेष पूजा-दानादि कर्त्तव्य होंगे।	**वृश्चिक राशि**—अप्रै. की १४, १५, १७, १८, १९ (23/41 तक), २७, २८ (18/10 तक), मई की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १९, २०, २१, ३०, जून की १, २, ४-५ (चं.दा.), ६, ७, ८, ९, ११, १२, १६, १७, २६, २८, २९, ३०, जुला. की १, ३, ४, ५, ९, १० (21/09 तक), १३, १४, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, २८-२९ (चं.दा.), ३०, ३१, अग. की १, २, ५, ६, ९, १०, ११, २२, २३, २४-२५ (चं.दा.), २७, २९, ३०, सितं. की १, २, ३ (9/32 तक), १९, २०-२१ (चं.दा.), २३, २४, २८, २९, ३० (17/00 तक), अक्तू. की ५, ८, १४, [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २०, २१, २६, २७ (25/14 तक), ३०, ३१, नवं. की १, २, ४, ५, १०, १२, १३] मार्ग. में नवं. की १७, २२, २३, २७, २९, दिसं. की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।

वर (लड़का)	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
धनु राशि—अप्रैल की १४, १५, १७, १८, १९, २७, २८, **मई** की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १७, ३०, **जून** की १, २, ४, ५, ६-७ (चं.दा.), ८, ९, ११, १२, २६, २८, २९, ३०, **जुलाई** की १, ३-४ (चं.दा.), ५, ९, १०, **अगस्त** की २२, २३, २४, २५, २७ (चं.दा.), २९, ३०, **सितं.** की १, २, ३, १९, २०, २१, २३-२४ (चं.दा.), २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ५, ८, १४, **कार्तिक मास** में अक्तू. की १९, २०-२१ (चं.दा.), २६, २७, २८, **नवंबर** की १, २, ४, ५, १०, १२, १३ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	धनु के लड़के को वैशा. आषा., भाद्र. मासों में सूर्य पूज्य होगा तथा श्राव., मार्ग. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को मकरस्थ गुरु शुभ तथा कुम्भस्थ गुरु में साधारण पूजा रहेगी।	**धनु राशि—अप्रै.** की १४, १५, १७, १८, १९, २७, २८, **मई** की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १७, ३०, **जून** की १, २, ४, ५, ६-७ (चं.दा.), ८, ९, ११, १२, २६, २८, २९, ३०, **जुलाई** की १, ३-४ (चं.दा.), ५, ९, १०, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०-३१ (चं.दा.), **अग.** की १, २, ५, ६, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०, **सितं.** की १, २, ३, १९, २०, २१, २३-२४ (चं.दा.), २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ५, ८, १४ [**कार्तिक मास** में अक्तू. की १९, २०-२१ (चं.दा.), २६, २७, २८, **नवं.** की १, २, ४, ५, १०, १२, १३] मार्ग. में **नवं.** की १७ (चं.दा.), २२, २३, २९, **दिसं.** की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।
मकर राशि—मई की १५, १६, १७, १९, २०, २१, **जून** की १, २, ४, ५, ६, ७, ८-९ (चं.दा.), ११, १२, १६, १७, २८, २९, ३०, **जुलाई** की १, ३, ४, ५ (चं.दा.), ९, १०, १३, १४, १८, १९, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, **अग.** की १-२ (चं.दा.), ५, ६, ९, १०, ११, **सितं.** की १९, २०, २१, २३, २४, २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ८, [**कार्तिक मास** में अक्तू. की १९, २०, २१, २६, २७, २८, ३०, ३१, **नवं.** की ४, ५, १२ (रा.ल.), १३] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** की १७, २२, २३, २७, **दिसंबर** की १, २, ९ (17/47 बाद) और १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।	मकर के लड़के को ज्ये., श्राव. एवं आश्विन मासों में सूर्य की पूजा तथा वैशा., भाद्र. मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को मकरस्थ गुरु की साधारण पूजा तथा कुम्भस्थ गुरु शुभ होंगे।	**मकर राशि—अप्रै.** की १४-१५ (चं.दा.), १७, १८, १९, २७, २८, **मई** की ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६, १७, १९, २०, २१, **जून** की १, २, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ११, १२, १६, १७, २८, २९, ३०, **जुला.** की १, ३, ४, ५, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, **अग.** की १-२ (चं.दा.), ५, ६, ९, १०, ११, २२ (10/40 बाद), २३, २४, २५, २७, २९, ३०, **सितं.** की १, २, ३, १९, २०, २१, २३, २४, २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ८ [**कार्तिक मासे** अक्तू. की १९, २०, २१, २६, २७, २८, ३०, ३१, **नवं.** की ४, ५, १२ (12/25 बाद), १३] मार्ग. में **नवं.** की १७, २२, २३, २७, **दिसं.** की १, २, ९ (17/47 बाद), १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।
कुम्भ राशि—अप्रै. की १४, १५, १७-१८-१९ (चं.दा.), २८ (रा.ल.), **मई** की ७ (रा.ल.), ८, १२, **जून** की १६, १७, २६, ३० (रा.ल.), **जुलाई** की १, ३, ४, ५, ९-१० (चं.दा.), १३, १४, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१, **अग.** की १, २, ५-६ (चं.दा.), ९, १०, ११, २२ (दि.ल.), २४ (14/03 उप.), २५, २७, २९, ३० **सितं.** की १-२ (चं.दा.), ३ [**कार्तिक** में अक्तू. की १९, २०, २१, २६-२७ (चं.दा.), २८, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, १०, १२ (12/24 तक)] मार्ग. में नवं. की १७, २२-२३ (चं.दा.), २७, २९, **दिसं.** की ७, ८, ९ (17/46 तक) तारीखें ग्रहणीय होंगी।	कुम्भ के लड़के को आषा., भाद्र. व कार्तिक में सूर्य की पूजा होगी। ज्येष्ठ, आश्वि. व माघ मास त्याज्य होंगे। कुम्भ राशि की कन्या को मकरस्थ गुरू में विशेष पूजा/दानादि होंगे। कुम्भ के गुरु में साधारण पूजा लगेगी।	**कुम्भ राशि—अप्रै.** की १४, १५, १७-१८-१९ (चं.दा.), २८ (18/11 बाद), **मई** की ७ (11/09 बाद), ८, १२, १५-१६ (चं.दा.), १७, १९, २०, २१, ३०, **जून** की ४, ५, ६, ७, ८, ९, ११, १२, १६, १७, २६, ३० (22/34 बाद), **जुला.** की १, ३, ४, ५, ९-१० (चं.दा.), १३, १४, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१, **अग.** की १, २, ५, ६, ९, १०, ११, २२ (10/39 तक), २४ (14/03 बाद), २५, २७, २९, ३०, **सितं.** की १-२ (चं.दा.), ३, २० (23/50 बाद), २१, २३, २४, २८-२९-३० (चं.दा.), **अक्तू.** की ५, १४ [**कार्तिक मासे** अक्तू. की १९, २०, २१, २६-२७ (चं.दा.), २८, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, १०, १२ (12/24 तक)] मार्ग. में **नवं.** की १७, २२-२३ (चं.दा.), २७, २९ **दिसं.** की ७, ८, ९ (17/46 तक) तारीखें ग्रहणीय होंगी।
मीन राशि—अप्रै. की १४, १५, १७, १८, १९ (चं.दा.), २७, २८ (18/10 तक), **मई** की ५, ६, ७ (11/08 तक), १२, १५, १६, १७ (चं.दा.), १९, २०, २१, ३०, **जून** की १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, **जुलाई** की १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, ३०, ३१, **अग.** की १, २, ५, ६, ९, १०, ११, २२, २३, २४ (14/02 तक), २७, २९, ३०, **सितं.** की १, २, ३ (चं.दा.), १९, २० (23/49 तक), २३, २४, २८, २९, ३० (चं.दा.), **अक्तू.** की ५, ८, १४, **नवं.** की १७, २२, २३, २७, २९, **दिसंबर** की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय रहेंगी।	मीन के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्वि. व मार्ग. मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की कन्या को मकर का गुरू शुभ परन्तु कुम्भ का गुरू विशेष रूपेण पूज्य होगा।	**मीन राशि—अप्रैल** की १४, १५, १७, १८, १९ (चं.दा.), २७, २८ (18/10 तक), **मई** की ५, ६, ७ (11/08 तक) १२, १५, १६, १७ (चं.दा.), १९, २०, २१, ३०, **जून** की १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, १६, १७, २६, २८, २९, ३० (22/33 तक), **जुला.** की ३, ४, ५, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २७, ३०, ३१, **अग.** की १, २, ५, ६, ९, १०, ११, २२, २३, २४ (14/02 तक), २७, २९, ३०, **सितं.** की १, २, ३, १९, २० (23/49 तक), २३, २४, २८, २९, ३०, **अक्तू.** की ५, ८, १४, [**कार्तिक मासे** अक्तू. की २०, २१, २६, २७, २८, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४, ५, १०, १२, १३] मार्ग. में **नवं.** की १७, २२, २३, २७, २९, **दिसं.** की १, २, ७, ८, ९, १० तारीखें ग्रहणीय होंगी।

मुण्डनादि शुभ एवं उपयोगी मुहूर्त्त

मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त सन् 2009 ई.

बालक के आयु के विषम वर्षों में, उत्तरायण मासों में तथा बालक की जन्मराशि से अष्टमस्थ राशि/लग्न को छोड़कर, ज्येष्ठ मास में बड़े (ज्येष्ठ) लड़के का मुण्डन करना शुभ नहीं होता। मुण्डन करने वाले बालक के सगोत्र परिवार में यदि छः मास के भीतर किसी का उपनयन या विवाह सम्पन्न हुआ तो गृह में मुण्डन नहीं करना चाहिए। यदि भिन्न संवत् में विवाहादि शुभ कार्य हुआ हो तो मुण्डन कार्य हो सकता है। कुल परम्परानुसार कुछ लोग नवरात्रों में अथवा अक्षया तीज आदि शुभ मुहूर्त्तों में, देवी माता के मन्दिर में या सिद्ध तीर्थ स्थलों पर बिना सुनियोजित मुहूर्त्त के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य कर लेते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र कृ. २, गुरु	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. १२, २, अभिजित
वैशा.कृ.८, शनि	18 अप्रै.	६ वैशा.	अभि.	मु. प्रातः 9/35 तक, २ वैश्य
वै.कृ. १०, सोम	20 अप्रै.	८ वैशा.	ध/श	मु. 12/02 के बाद-भद्रोतरे, अभिजित (चं. गु. दा.)
वैशा.शु. ६, गुरु	30 अप्रै.	१८ वैशा.	पुर्न.	ल. २, अभिजित
वैशा.शु.११, मंग	5 मई	२३ वैशा.	उ.फा.	ल. २,३ (बु.गु.दा.), अभि., क्षत्रियाणां (आवश्यके)
वै. शु. १३, गुरु	7 मई	२५ वैशा.	चित्रा	ल. २, ३, अभिजित
वै.शु. १५, शुक्र	8 मई	२६ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (प्रातः 8/56 के बाद) अभिजित
ज्ये.कृ. ७, शनि	16 मई	३ ज्ये.	श्रव.	दुपै. 11/00 के बाद (वैश्यानां), अभि.*
ज्ये.कृ. ८, रवि	17 मई	४ ज्ये.	धनि.	दि. ल. ३, अभि. (विप्राणां) विशेष*
ज्ये. कृ. ९, सोम	18 मई	५ ज्ये.	शत.	ल. ३, अभि., बु. दा.
ज्ये. कृ. १२, गु.	21 मई	८ ज्ये.	रेव.	दि. ल. ३, अभि., बु. दा.
ज्ये.शु. ४, बुध	27 मई	१४ ज्ये.	पुर्न.	अभि., रि. ति. चं. दा. आवश्यके
ज्ये.शु. ५, गुरु	28 मई	१५ ज्ये.	पुर्न	३ (मु. प्रातः 8/50 तक)
ज्ये.शु. १०, मंग	2 जून	२० ज्ये.	हस्त	ल. ३, अभि. (क्षत्रियाणां) केवलम्*
ज्ये.शु. ११, बुध	3 जून	२१ ज्ये.	चित्रा	मु. दुपै. 12/49 उप. रूद्र पू.
ज्ये.शु. १२, गुरु	4 जून	२२ ज्ये.	स्वा.	ल. ३ (सू. दा.), अभि.
ज्ये.शु. १३, शुक्र	5 जून	२३ ज्ये.	स्वा.	ल. ३ (प्रातः 6/52 तक
आषा.कृ.५, शुक्र	12 जून	३० ज्ये.	श्रव.	मु. प्रातः 9/22 उप., अभि.
आषा.कृ.७, सो.	15 जून	२ आषा.	शत.	मु. 6/39 तक
आषा.कृ.९, बुध	17 जून	४ आषा	रेव.	मु. प्रातः 9/12 बाद (रिक्ता तिथौ चं. दा.)

नवरात्रों में—परम्परागत वासन्त (चैत्र) या शारदीय नवरात्रों में मुण्डनादि कर्म करने का संकल्प हो, तो नवरात्रों में भी विशेष शुभ एवं ग्रहणीय मुहूर्त्त इस प्रकार से होंगे—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, शुक्र	27 मार्च	१४ चैत्र	रेवती	ल. १, २, अभिजित
चैत्र शु. ६, बुध	1 अप्रै.	१९ चैत्र	मृग.	ल. १, २, अभिजित
चैत्र शु. ८, शुक्र	3 अप्रै.	२१ चैत्र	पुर्न	ल. १, २, अभिजित
शारदीय नवरात्रों में—				
आश्वि.शु.१, शनि	19 सितं.	४ आश्वि	उ.फा.	ल. ७, ८, अभिजित
आश्वि.शु.२, रवि	20 सितं.	५ आश्वि	हस्त	ल. ७, ८, अभिजित चं. दा.
आश्वि.शु.३, चंद्रे	21 सितं.	६ आश्वि	चि/स्वा	ल. ८ (मं. दा.) अभिजित
आश्वि.शु.७, शुक्र	25 सितं.	१० आश्वि	ज्येष्ठा	ल. ७, अभिजित

माघ व फाल्गुण में शुक्र, गुरू अस्त रहने से दो महीनों में मुण्डनादि मुहूर्त्तों का अभाव रहेगा।

गृहारम्भ एवं नींवादि मुहूर्त्त–2009 ई.

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्त्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्त्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। गृहारम्भ में ५, ७, ९, १५, २१, २४ प्रविष्टों में भूमि–शयन (सुप्त भूमि) का भी विचार किया गया है। सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ एवं २६वें चन्द्र नक्षत्र पर भी भूमि शयन का विचार किया जाता है। अधिक सूक्ष्मता के लिए आगे दिए गए सूर्यभात् वृष चक्र का भी प्रयोग कर सकते हैं। लैंटर (छत) डालना और स्तम्भ आरोहणादि काल में पंचक नक्षत्रों का भी अवश्य विचार कर लेना उपयुक्त होगा।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा.कृ. ५, शनि	14 फर.	३ फागु	चित्रा	ल. १२, १, अभिजित
फा.कृ.१२, शनि	21 फर.	१० फागु.	उ.षा.	दुपै. 12/50 के बाद
फा.शु. २, शुक्र	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभिजित
फा.शु. ३, शनि	28 फर.	१७ फागु.	रेव.	मु. प्रातः 7/20 तक
चैत्र कृ. २, गुरू	12 मार्च	२९ फागु.	उ/ह	ल. १२, १, अभिजित
वैशा.कृ. ८, शनि	18 अप्रै.	६ वैशा.	उ/अ.	मुहूर्त्त प्रातः 9/35 तक
वै.कृ.१०/११, चं.	20 अप्रै.	८ वैशा.	ध/श.	मु. 12/02 बाद, भद्रोत्तरे
वैशा.शु. ३, चंद्र	27 अप्रै.	१५ वैशा.	रोहि.	ल. ३ (प्रातः 9/08 बाद), अभि.
वैशा. शु. ६, गुरु	30 अप्रै.	१८ वैशा.	पुर्न.	ल. १, २, अभिजित्
वैशा.शु.१३, गुरु	7 मई	२५ वैशा.	चित्रा	ल. २, ३, अभिजित्
वैशा.शु.१५, शुक्र	8 मई	२६ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (प्रातः 8/56 बाद), अभि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये.कृ.१२, गुरु	21 मई	८ ज्येष्ठ	रेवती	ल. ३, अभिजित
ज्ये. शु. ५, गुरु	28 मई	१५ ज्ये.	पुर्न	मुहूर्त्त प्रातः 8/50 तक
ज्ये. शु. ९, चंद्रे	1 जून	१९ ज्ये.	उ.फा.	ल. ३, रि. ति. चंद्र दा. आव.
ज्ये.शु. १२, गुरु	4 जून	२२ ज्ये.	चि/स्वा	ल. ३, गोधूली
ज्ये. शु. १३, शु.	5 जून	२३ ज्ये.	स्वा.	ल. ३ (प्रातः 6/52 तक)
श्राव.शु. ६, चंद्रे	27 जुला	१२ श्राव.	हस्त	मुहूर्त्त 13/05 के बाद
श्राव.शु. ८, बुध	29 जुला.	१४ श्राव.	स्वा.	ल. ६, अभिजित
श्राव.शु.१०, शुक्र	31 जुला.	१६ श्राव.	अनु.	ल. ६, अभिजित
भाद्र.कृ.४, सोम	10 अग.	२६ श्राव.	उ.भा.	मु. 13/02 उप. रिक्ता तिथि
भाद्र.शु. ८, गुरु	27 अग.	१२ भाद्र.	अनु.	ल. ६ (8/32 तक) श. दान
भा.शु. १३, बुध	2 सितं.	१८ भाद्र.	श्रव.	ल. ६ (शनि दान), अभि. (आवश्यके)
का.शु.१/२, चंद्र	19 अक्तू.	३ कार्ति.	स्वा.	ल. ८, ९ (चं.मं.दा.), अभि.
का.शु. १०, बुध	28 अक्तू.	१२ कार्ति.	धनि.	ल. ८, ९, अभि. (मं.सू.दा.)
मार्ग.कृ. ३, गुरु	5 नवं.	२० कार्ति.	रोहि.	ल. ८, (सू. दा.)
मार्ग.कृ. १२, शु.	13 नवं.	२८ कार्ति.	हस्त	ल. ८, ९, अभि. (सू.मं.दा.)
मार्ग.शु.८, बुध	25 नवं.	१० मार्ग.	शत	११, अभिजित, आवश्यके
मार्ग.शु. १०, शु.	27 नवं.	१२ मार्ग.	उ.भा.	ल. अभिजित
मार्ग.शु.१५, बुध	2 दिसं.	१७ मार्ग.	रोहि.	ल. कुम्भ (शनि दान), अभि.

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त–2009 ई.

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी से पूछ कर रखे गए पूर्व निर्धारित मुहूर्त्त पर **नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति**, नवग्रह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए। गृह प्रवेश फिर लग्न में विशेष प्रशस्त माना जाता है।

फागु.कृ.५, शनि	14 फर.	३ फागु.	चित्रा	ल. १२ (9/08 तक), १, अभि.
फा.कृ. १२, शनि	21 फर.	१० फागु.	उ.षा.	मु. 12/50 बाद व्य. आवश्यके (व्यतिपाते रूद्र पूजा)
फागु.शु.२, शुक्र	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १२, २, अभिजित
चै.कृ. २, गुरू	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. १२, २, अभिजित
वैशा.कृ.८, शुक्र	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.षा.	ल. ३ (चं.गु.दा.), अभि.
वैशा.कृ.८, शनि	18 अप्रै.	६ वैशा.	उ.षा.	मुहूर्त्त 7/53 तक
वैशा.शु.३, चंद्र	27 अप्रै.	१५ वैशा.	रोहि.	ल. ३ (प्रातः 9/08 बाद), अभि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु. ६, गुरु	30 अप्रै.	१८ वैशा.	पुर्न	ल. २, अभिजित
वैशा.शु.१३, गुरु	7 मई	२५ वैशा.	चित्रा	ल. २, ३, अभिजित
वैशा.शु.१५,शुक्र	8 मई	२६ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (प्रात: 8/56 बाद) अभि.
ज्ये.कृ.११, बुध	20 मई	७ ज्येष्ठ	उ.भा.	ल. ३ (बु.दा.), अभि.
ज्ये.कृ.१२, गुरु	21 मई	८ ज्येष्ठ	रेव	ल. ३ (सू.बु.दा.), अभि.
ज्ये.शुक्ल५,गुरु	28 मई	१५ ज्ये.	पुर्न.	ल. ३ (प्रात: 8/50 तक)
ज्ये.शु. ९, चंद्रे	1 जून	१९ ज्ये.	उ.फा.	ल. ३, अभि. रिक्ता ति. चंद्र पूजा (आवश्यके)
ज्ये.शु.११, बुध	3 जून	२१ ज्ये.	चित्रा	मु. दुपै. 12/49 उपरान्त
ज्ये.शु.१२, गुरु	4 जून	२२ ज्ये.	स्वा.	ल. ३ (बु. दा.), अभि.
ज्ये.शु.१३, शुक्र	5 जून	२३ ज्ये.	स्वा.	मु. प्रात: 6/52 तक
का.शु.१/२, चंद्रे	19 अक्तू	३ कार्ति.	स्वा.	ल. ८, ९, चं. मं. दान
कार्ति.शु. ३,बुध	21 अक्तू	५ कार्ति.	अनु.	ल. ९, अभि., चं. दा.
कार्ति.शु.१०,बुध	28 अक्तू	१२ कार्ति	धनि	ल. ८, ९ (सू.मं.) दा. अभि.
का.शु.१३, शनि	31 अक्तू	१५ कार्ति	उ.भा.	ल. ८, ९ (सू.मं.दा.), अभि.
का.शु. १५, चंद्र	2 नवं.	१७ कार्ति	अश्वि	ल. ९ (मं.दा.), भीष्मपंचक आवश्यके
मार्ग.कृ. ३, गुरु	5 नवं.	२० कार्ति	रोह.	ल. ८, अभि., भद्रा परि.
मा.कृ. १२,शुक्र	13 नवं.	२८ कार्ति	हस्त	ल. ८, ९, अभिजित
मार्ग.शु. ८, बुध	25 नवं.	१० मार्ग	शत.	ल. ११ (श.दा.पू.), अभि.
मार्ग शु.१०,शुक्र	27 नवं.	१२ मार्ग.	उ.भा.	अभिजित
मा.शु. १५, बुध	2 दिसं.	१७ मार्ग.	रोहि.	ल. ११ (श. दा.), अभि.
पौष कृ.८, बुध	9 दिसं.	२४ मार्ग.	उ.फा.	ल. ११ दुपै. 12 बाद, अभि., चं. श. दा.
पौ.कृ. १०,शुक्र	11 दिसं.	२६ मार्ग.	हस्त	मुहूर्त्त 11/05 तक, शुक्र वार्धक्य (आवश्यके)

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त-सन् 2009 ई.

अस्थायी तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मूहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए **नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।** ध्यान रहे, पुराने निजी या किराये के मकान में प्रवेश के समय भी कलश पूजन, देव पूजन, नवग्रह शान्ति, ब्राह्मण भोजन आदि करवाना शुभ होता है। आवश्यक परिस्थितिवश पुरातन गृह प्रवेश में गुरू-शुक्र के **अस्त, वार्धक्य,** बाल्यत्वादि का भी विचार नहीं किया जाता। ध्यान रहे, 11 जन. से 9 फर. तक गुरू अस्त रहेगा। इन दिनों में पुरान गृह प्रवेश गुरु को पूजा व दान के बाद करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ.कृ.५, गुरु	15 जन.	३ माघ	उ.फा.	दि. 11/25 से 12/35 तक
माघ.कृ. ६,शुक्र	16 जन.	४ माघ	उ/ह.	ल. १२ (प्रात: 10/29 से 11/50)
मा. कृ. ७, शनि	17 जन.	५ माघ	चित्रा	ल. १ (11/47 से 13/20)
माघ कृ. ११,बु.	21 जन.	९ माघ	अनु.	मु. प्रात: 10/09 से 11/31 तक
माघ शु. २, बुध	28 जन.	१६ माघ	धनि.	ल. १२ (चं.दा.), १, अभि.
माघ शु. ५,शनि	31 जन.	१९ माघ	उ.भा.	मु. 9/30 से 10/52 तक
माघ शु. ७, चंद्र	2 फर.	२१ माघ	अश्वि.	ल. १२, प्रात: 9/22 से 10/44 तक
माघ शु.१०, गुरु	5 फर.	२४ माघ	रोहि.	ल. १२, १, अभिजित

नोट—ध्यान रहे, 9 फरवरी के बाद गुरू उदित हो जाएगा।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा.कृ. ५, शुक्र	13 फर.	२ फागु.	हस्त	मु. 13/35 बाद, ल. २
फा. कृ. ५, शनि	14 फर.	३ फागु.	चित्रा	ल. १ (चं. दा.), अभिजित
फा.कृ. २, शुक्र	27 फर.	१६ फागु.	उभा	ल. मेष (चं. दा.), अभिजित
फा.शु. ३, शनि	28 फर.	१७ फागु.	रेव.	ल. मेष (चं. दा.), अभि.
फा. शु. ८, बुध	4 मार्च	२१ फागु.	रोहि.	१२, १, अभि. होला आव.
चैत्र कृ. २, गुरू	12 मार्च	२९ फागु.	उ/ह.	ल. १२, २, अभिजित
वै.कृ. १०, चंद्र	20 अप्रै.	८ वैशा.	ध/श.	मु. 12/02 बाद, भद्रोत्तरे
ज्ये.कृ. ७, शनि	16 मई	३ ज्येष्ठ	श्रव.	मु. 10/48 बाद, अभि.
आ.कृ. ४/५,शु.	12 जून	३० ज्येष्ठ	श्रव.	मु. 9/22 बाद, अभिजित
श्रा.कृ. ११,शनि	18 जुला	३ श्राव.	रोहि.	मु. दुपै. 14/53 उपरान्त
श्रा.शु. ८, बुध	29 जुला	१४ श्राव.	स्वा.	ल. कन्या (श. दा.), अभि.
श्रा.शु. १०,शुक्र	31 जुला	१६ श्राव.	अनु.	ल. कन्या (श. दा.), अभि.
श्रा.शु. १५, बुध	5 अग.	२१ श्राव.	श्रव.	कन्या ल. 10/45 बाद, अभि. (12/10 तक)
श्रा.शु. १५, गुरु	6 अग.	२२ श्राव.	श्रव.	कन्या ल., अभिजित
भा.कृ.९/१०,श.	15 अग.	३१ श्राव.	रोहि.	ल. मु. 8/25 से 10/44 तक (कन्या लग्ने मासान्त परिहार)

आगे **कार्तिक व मार्गशीर्ष के महीनों के मुहूर्त्त नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों में देखें॥ माघ व फाल्गुन** मासों में यद्यपि शुक्र/गुरु अस्त होने से अन्य मुहूर्त्तों का निषेध रहेगा परन्तु **आवश्यक परिस्थितिवश पुरातन गृह प्रवेश में शुक्र/गुरु की पूजा/दान करके** आगे लिखे कुछ मुहूर्त्तों को ग्रहण किया जा सकता है—

पौष कृ.१०,शुक्र	11 दिसं.	२६ मार्ग.	हस्त	अभिजित, भद्रा परिहार
पौष कृ.११,शनि	12 दिसं.	२७ मार्ग.	चित्रा	अभिजित

—सन् 2010 ई. में—

माघ शु. १,शनि	16 जन.	३ माघ	श्रव.	मु. 11/51 से 13/24 तक
माघ शु. ७,शुक्र	22 जन.	९ माघ	रेव.	ल. मेष (चं. दा.), अभि.
माघ शु. ८,शनि	23 जन.	१० माघ	अश्वि	ल. अभिजित
माघ शु. १२,बु.	27 जन.	१४ माघ	मृग	ल. मेष, अभिजित
फा.कृ. ५, बुध	3 फर.	२१ माघ	हस्त	ल. मेष, अभि., चं. दा.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा. शु. ३, बुध	17 फर.	६ फागु.	उ.भा.	मेष, अभि., चं. दा.
चैत्र कृ. ३, बुध	3 मार्च	२० फागु.	ह/चि	ल. मेष (चं. दा.), अभि.
चैत्र कृ. ५, शुक्र	5 मार्च	२२ फागु.	स्वा.	ल. मेष, अभिजित
चै.कृ.६/७, शनि	6 मार्च	२३ फागु.	अनु.	ल. मेष (चं. दा.)
चै. कृ. ११,गुरू	11 मार्च	२८ फागु.	उ.षा.	ल. मेष, अभिजित
चैत्र कृ. १२,शु.	12 मार्च	२९ फागु.	श्रव.	ल. मेष, अभिजित

विपणि (दुकानादि) या अन्य व्यवसाय शुरु करने के मुहूर्त-सन् 2009 ई०

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव पूजा, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश स्थापन एवं कन्या पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। कार्तिक मास में सूर्य की पूजा, दान आदि करना शुभ होगा।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा.कृ.४/५,शुक्र	13 फर.	२ फागु.	हस्त	मु. 13/35 बाद, ल. २
फा.कृ. ५, शनि	14 फर.	३ फागु.	चित्रा	मु. 9/56 से 11/28 तक
फा.कृ. ६, रवि	15 फर.	४ फागु.	स्वा.	ल. १ (चं. दा.), अभिजित
फा.शु.२/३,शुक्र	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभिजित
फागु.शु.३, शनि	28 फर.	१७ फागु.	रेव.	मु. 10/38 से 12/32 तक
चैत्र. कृ. २,गुरू	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. मीन, वृष, अभिजित
वैशा.कृ. ८,शुक्र	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.षा.	ल. ३ (चं. गु. दा.), अभि.
वैशा.कृ. ८,शनि	18 अप्रै.	६ वैशा.	उ.षा.	मु. प्रात: 7/53 तक
वै. कृ. १०,रवि	19 अप्रै.	७ वैशा.	धनि.	मु. 10/34 बाद, अभिजित
वै.कृ.१०/११,चं.	20 अप्रै.	८ वैशा.	धनि.	मु. दुपै. 12/02 से 12/41 तक
वैशा.शु. ३, चंद्रे	27 अप्रै.	१५ वैशा.	रोहि.	ल. ३ (प्रा. 9/08 बाद), अभि.
वै. शु. १३, गुरु	7 मई	२५ वैशा.	चित्रा	ल. वृष, मिथुन, अभिजित
वै.शु.१४/१५,शु.	8 मई	२६ वैशा.	स्वाती	ल. मिथुन प्रात: 8/56 बाद, अभि.
ज्ये.कृ. ८, रवि	17 मई	४ ज्येष्ठ	धनि.	ल. ३ (बु. दा.), अभि.
ज्ये.कृ. ११,बुध	20 मई	७ ज्ये.	उ.भा.	ल. ३ (बु. दा.), अभिजित
ज्ये.शु. ५, गुरु	28 मई	१५ ज्ये.	पुर्न.	ल. ३ (चं. दा.), अभि.
ज्ये. शु. ११,बुध	3 जून	२१ ज्ये.	चित्रा	मुहू. दुपै. 12/49 के बाद
ज्ये. शु. १२,गुरु	4 जून	२२ ज्ये.	स्वा.	ल. मिथुन, अभिजित
ज्ये. शु. १५,रवि	7 जून	२५ ज्ये.	अनु.	मु. प्रात: 10/49 बाद, अभि.
आ.कृ.४/५,शुक्र	12 जून	३० ज्ये.	श्रव.	मु. प्रात: 9/22 बाद, अभि.
आ. शु. १०,बुध	1 जुला	१८ आषा.	चि/स्वा	मु. अभिजित, दुपै.
आ.शु. १२,शनि	4 जुला	२१ आषा.	अनु.	ल. ६ (चं. दा.), अभिजित
श्राव. कृ. २,गुरु	9 जुला	२६ आषा.	श्रव.	ल. ६ (श. दा.), अभिजित

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
श्राव.कृ.१२,रवि	19 जुला	४ श्राव.	रोहि.	ल. ६, अभिजित
श्राव.शु. ५, रवि	26 जुला	११ श्राव.	उ.फा.	ल. ७, अभि., मं. दा.
श्राव.शु. ८, बुध	29 जुला	१४ श्राव.	स्वा.	ल. ६, अभिजित
श्रा.शु. १०, शुक्र	31 जुला	१६ श्राव.	अनु.	ल. ६, अभिजित
श्रा. शु. १५,बुध	5 अग.	२१ श्राव.	श्रव.	मु. 10/45 से 12/05 तक
श्रा. शु. १५,गुरु	6 अग.	२२ श्राव.	श्रव.	ल. कन्या, अभिजित
भा. कृ. ५,सोम	10 अग.	२६ श्राव.	उ.भा.	मुहूर्त्त दुपै. 13/02 उपरान्त
भाद्र.शु. ३, रवि	23 अग.	८ भाद्र	हस्त	ल. ७ (चं. दा.), अभिजित
भाद्र.शु. ५, चंद्र	24 अग.	९ भाद्र	चित्रा	ल. ७ (चं. दा.), अभिजित
भा. शु. ८, गुरु	27 अग.	१२ भाद्र	अनु.	ल. ६ (कन्या ल. 8/33 तक)
भा. शु. १३,बुध	2 सितं.	१८ भाद्र	श्रव.	ल. ६ (श. दा.), अभि.
आश्वि.शु.२,रवि	20 सितं.	५ आश्वि	हस्त	ल. ७ (चं. श. दा.), अभि.
आश्वि.शु.५,बुध	23 सितं.	८ आश्वि	अनु.	मु. 12/10 के बाद, अभि.
आश्वि.शु.६,गुरु	24 सितं.	९ आश्वि	अनु.	ल. ७ (चं. दा.), अभि.
आ.शु. ११, बुध	30 सितं.	१५ आश्वि	धनि.	ल. ७ (चं. श. दा.), अभि.
कार्ति.कृ.१/२,सो	5 अक्तू	२० आश्वि	अश्वि	मु. 11/12 के बाद, अभि.
का. कृ. ५, गुरू	8 अक्तू	२३ आश्वि	रोहि.	ल. ८, ९ (चं. मं. दा.), बृश्चिक प्रातः 10/16 बाद
का. शु. १, सोम	19 अक्तू.	३ कार्ति.	स्वाती	ल. ८, ९, अभिजित
का. शु. ३, बुध	21 अक्तू.	५ कार्ति.	अनु.	ल. ९ (चं. दा.), अभि.
का. शु. ८, सोम	26 अक्तू.	१० कार्ति.	श्रव.	ल. ८, ९ (मं. दा.), अभि.
का. शु. १०,बुध	28 अक्तू.	१२ कार्ति.	धनि.	ल. ८, ९ (मं. दा.), अभि.
का.शु. १३,शनि	31 अक्तू.	१५ कार्ति.	उ.भा.	ल. ८-९ (मं. दा.), अभि.
का.शु. १५,सोम	2 नवं.	१७ कार्ति.	अश्वि	ल. ९ (मं. के. दा.), अभि.
मार्ग. कृ.३, गुरू	5 नवं.	२० कार्ति.	रोहि.	ल. ८ (सू. चं. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. ७,चंद्र	9 नवं.	२४ कार्ति.	पुष्य	मु. प्रातः 9/59 तक, ल. वृश्चि.
मा.कृ. १२,शुक्र	13 नवं.	२८ कार्ति.	हस्त	ल. ८, ९ (मं.के.दा.), अभि.
मा.शु.५/६, रवि	22 नवं.	७ मार्ग.	श्रव.	ल. १०, अभिजित
मार्ग. शु. ६,चंद्र	23 नवं.	८ मार्ग.	श्रव.	ल. ११ (चं. श. दा.), अभि.
मा. शु. १०,शुक्र	27 नवं.	१२ मार्ग.	उ.भा.	ल. ११ (श. दा.), अभि.
मा. शु. १२,रवि	29 नवं.	१४ मार्ग.	अश्वि	ल. ११ (श. दा.), अभि.
मा. शु. १५,बुध	2 दिसं.	१७ मार्ग.	रोहि.	ल. ११ (श. दा.), अभि.
पौष कृ. ८, बुध	9 दिसं.	२४ मार्ग.	उ.फा.	लग्न अभिजित (चं. श. दा.)

आगे माघ व फाल्गुन के महीनों में शुक्र/गुरु क्रमशः अस्त होने के कारण विपणि आदि मुहूर्त नहीं होंगे॥

द्विरागमन (मुकलावां) मुहूर्त्त सं. 2009 ई.

विवाह उपरान्त पिता के गृह में आकर दूसरी बार पुनः पति के गृह में जाने को द्विरागमन (मुकलावा) कहते हैं। विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है—अर्थात् शुक्र जिस दिशा (पूर्व या पश्चिम) में उदित होता हो, उस दिशा में शुक्र सम्मुख तथा उससे दाहिनी ओर की दिशा दक्षिणस्थ मानी जाती है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा.कृ. १०,गुरू	19 फर.	८ फागु.	मूल	ल. मीन, अभिजित
फा.कृ. ११,शुक्र	20 फर.	९ फागु.	मूल	ल. १२, अभिजित
फा. शु. २, शुक्र	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभिजित
चैत्र कृ. २, गुरू	12 मार्च	२९ फागु.	उ.फा.	ल. १२, अभिजित
वैशा.कृ.६, बुध	15 अप्रै.	३ वैशा.	मूल	मु. दुपै. 13/40 के बाद
वैशा.कृ.८, शुक्र	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.षा.	ल. ३, अभिजित
वै.कृ. १०, चंद्र	20 अप्रै.	८ वैशा.	ध/श.	दुपै. 12/02 बाद, भद्रोत्तरे
वैशा.शु.३, सोम	27 अप्रै.	१५ वैशा.	रोहि.	ल. ३, मिथुन ल. 9/8 बाद
वैशा.शु. ६, गुरू	30 अप्रै.	१८ वैशा.	पुर्न.	ल. २, अभिजित
वै. शु. १३, गुरू	7 मई	२५ वैशा.	चित्रा	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. १५,शुक्र	8 मई	२६ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (प्रातः 8/56 बाद), अभि.
मार्ग.शु. ६,सोम	23 नवं.	८ मार्ग.	श्रव.	ल. कुम्भ (चं.श.दा.), अभि.
मा. शु. १०,शुक्र	27 नवं.	१२ मार्ग.	उ.भा.	ल. कुम्भ (चं.श.दा.), अभि.
मा. शु. १२,रवि	29 नवं.	१४ मार्ग.	अश्वि	ल. कुम्भ = आवश्यके
मा. शु. १५,बुध	2 दिसं.	१७ मार्ग.	रोहि.	ल. कुम्भ, अभिजित
पौष कृ. ८, बुध	9 दिसं.	२४ मार्ग.	उ.फा.	ल. कुंभ दुपै. 12 बजे के बाद
पौ.कृ.९/१०,गु.	10 दिसं.	२५ मार्ग.	हस्त	मुहूर्त्त दुपै. 15/43 बाद
पौ.कृ. १०,शुक्र	11 दिसं.	२६ मार्ग.	हस्त	ल. ११ (शु.चं.दा.), भद्रा परि आवश्यके [दुपै. 2/55 बाद भद्रा अभाव]

यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार मुहूर्त्त 2009 ई.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा. कृ. ५, शुक्र	13 फर.	२ फागु.	हस्त	मु. 12/35 बाद, ल. २
फा.शु.१/२, गुरु	26 फर.	१५ फागु.	पू.भा.	ल. १२, २, अभिजित
का.शु.२/३,शुक्र	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभिजित
चैत्र कृ. २, गुरु	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. १२, २, अभिजित
चैत्र कृ. ५, रवि	18 मार्च	२ चैत्र	स्वा.	मु. प्रातः 8/01 तक
चै. शु. ११, रवि	5 अप्रै.	२३ चैत्र	अश्ले.	ल. १, २ अभिजित
वैशा.शु. ५, बुध	29 अप्रै.	१७ वैशा.	आर्द्रा	ल. २ (श. दा.) अभि.
वैशा.शु. ६, गुरु	30 अप्रै.	१८ वैशा.	पुर्न	ल. २, अभिजित
वै. शु. १०, चंद्र	4 मई	२२ वैशा	पू.फा.	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. १३, गुरु	7 मई	२५ वैशा	चित्रा	ल. २, ३ अभिजित
ज्ये. शु. ३, बुध	27 मई	१४ ज्येष्ठ	आर्द्रा	मुहूर्त्त 7/45 तक
ज्ये.शु. ५, गुरु	28 मई	१५ ज्ये.	पुर्न	ल. मिथुन 8/50 तक
ज्ये.शु. १२, गुरु	4 जून	२२ ज्ये.	स्वा.	ल. ३ (बु. दा.), अभिजित
ज्ये.शु. १३,शुक्र	5 जून	२३ ज्ये.	स्वा.	प्रातः 6/52 तक

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है—

दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। **'नारद पुराण'** के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण—मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, दीपावली-तिथियां स्वयं सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितिवश गृहारम्भादि मुहूर्त्तों में कोई मुहूर्त्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

सन् 2009 ई. में सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्त्ति स्थापना) मुहूर्त्त

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण काल विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फागु.कृ.५, शनि	14 फर.	२ फागु.	चित्रा	ल. १२ (प्रा. 9/08 तक), १, श्री दुर्गा
फा.कृ. ६, रवि	15 फर.	४ फागु.	स्वा.	ल. १ (दुपै. 12/53 तक), (शिव, दुर्गा)
फा.कृ. ८, मंग.	17 फर.	६ फागु.	अनु.	श्री हनुमान, शिव
फा.शु.२/३, शु.	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभि. श्री दुर्गा/गौरी
चैत्र. कृ.२, गुरु	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. १२, २, अभि., विष्णु लक्ष्मी
वैशा.कृ. ६, बुध	15 अप्रै.	३ वैशा.	मूल	ल. ३, अभि. (श्री दुर्गादि देवी)
वैशा.कृ.८, शुक्र	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.षा.	ल. ३, अभि., श्रीकृष्ण राधा
वैशा.कृ. ८,शनि	18 अप्रै.	६ वैशा.	अभि.	ल. २ (प्रात: 7/53 तक) विष्णु, शिव
वै. कृ. १०, रवि	19 अप्रै.	७ वैशा.	धनि.	ल. ३ (प्रात: 10/34 बाद), अभि. (श्रीदुर्गा, हनुमान, शिव)
वै. कृ. ११, चंद्रे	20 अप्रै.	८ वैशा.	ध/श	मु. 12/02 बाद, भद्रोतरे, शिव विष्णु, लक्ष्मी, शिव, गौरि)
वैशा.शु. ३, चंद्र	27 अप्रै.	१५ वैशा.	रोहि.	ल. ३ (प्रात: 9/08 बाद) अभि., श्रीराम, विष्णु, लक्ष्मी
वैशा.शु. ६, गुरु	30 अप्रै.	१८ वैशा.	पुर्न.	ल. २, अभिजित, शिवजी
वै. शु. ११,मंग.	5 मई	२३ वैशा.	उ.फा.	ल. २, ३ अभि., श्रीहनुमान
वै. शु. १३, गुरु	7 मई	२५ वैशा.	चित्रा	ल. २, ३, अभि., शिवजी
वै. शु. १५,शुक्र	8 मई	२६ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (प्रात: 8/56 बाद), अभि., विष्णु, शिव, कृष्ण
ज्ये. कृ. ३, मंग.	12 मई	३० वैशा.	मूल	ल. ३ (चं. बु. दा.), अभि. श्री दुर्गा-शिव, गौरी
ज्ये. कृ. ८, रवि	17 मई	४ ज्येष्ठ	धनि.	ल. ३ (बु. दा.), विष्णु-लक्ष्मी, कृष्ण
ज्ये. कृ.११, बुध	20 मई	७ ज्येष्ठ	उ.भा.	ल. ३ (बु.दा.), अभि., विष्णु-दुर्गा
ज्ये.कृ. १२,गुरु	21 मई	८ ज्येष्ठ	रेव.	ल. ३ (बु.दा.), अभि., विष्णु-शिव
ज्ये. शु. ५, गुरु	28 मई	१५ ज्ये.	पुर्न.	मुहूर्त्त प्रा. 8/50 तक, शिवजी
ज्ये. शु. ९, सोम	1 जून	१९ ज्ये.	उ.फा.	ल. ३, अभि., श्रीदुर्गा, राम
ज्ये. शु. १०,मंग	2 जून	२० ज्ये.	हस्त	ल. ३, अभि., श्रीहनुमान, दुर्गा, शिव
ज्ये.शु. ११, बुध	3 जून	२१ ज्येष्ठ	चित्रा	मु. 12/49 बाद, भद्रा परिहार (लक्ष्मी नारायण)
ज्ये.शु. १२, गुरु	4 जून	२२ ज्ये.	स्वा.	३ (बु.दा.), अभि., विष्णु, शिव
ज्ये.शु. १३,शुक्र	5 जून	२३ ज्ये.	स्वा.	मु. प्रात: 6/52 तक, शिव वैशा.
ज्ये.शु. १५, रवि	7 जून	२५ ज्ये.	अनु.	ल. ३ (बु.दा.), भद्रा परि. (विष्णु, शिव)
आषा.कृ.२,मंग.	9 जून	२७ ज्ये.	मूल	ल. ३ (चं. बु. दा.), अभि. दुर्गा, शिव, हनुमान
आ.कृ.४/५,शुक्र	12 जून	३० ज्ये.	श्रव.	ल. ३ (चं.दा.), अभि., दुर्गा, शिव, विष्णु
आ. कृ. ७,सोम	15 जून	२ आषा.	शत.	मु. 6/39 तक, शिवजी

माघ व फाल्गुण मासों में शुक्र व गुरू अस्त होने से देव - प्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्तों का अभाव रहेगा।

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। **भैरव आदि तामस देवों** के लिए दक्षिणायन एवं मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, श्री महालक्ष्मी, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूल नक्षत्र, दीवाली एवं बसन्त पंचमी, नवरात्रे विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्त्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चौदश, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं। आगे दिए गए मुहूर्त्त भगवान् विष्णु, राम, शिव-शक्ति माता, श्री गणेश, हनुमान आदि देवों के लिए शुभ एवं ग्राह्य होंगे।

ऊपर लिखे सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों में श्रीगणेश, श्रीदुर्गा एवं शिवजी सम्बन्धी मुहूर्त्तों के साथ-साथ आगे लिखे विशेष मुहूर्त्त भी ग्रहणीय रहेंगे।

श्रीगणेश मूर्ति प्रतिष्ठा मुहूर्त्त–(2009 ई.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ कृ. ४, बुध	14 जन.	2 माघ	मघा	ल. १, अभि. (संकटचौथ) (गुरु अस्त-आवश्यके)
फा. कृ. ४, शुक्र	13 फर.	२ फागु.	हस्त	ल. १२, अभि., चं. दा.
वैशा.कृ.४, रवि	12 अप्रै.	३० चैत्र	विशा	मु. 8/54 तक, भद्रा पूर्वे, रात्रौ मासांत दोष
ज्ये.कृ.३/४, मंग	12 मई	३० वैशा	मूल	ल. ३ (चं. दा.), भद्रा परि., 14/09 उपरान्त
श्राव.कृ. ४,शनि	11 जुला	२८ आषा.	ध/श	ल. अभिजित (चं. दा.)
भा.कृ.३/४, रवि	9 अग.	२५ श्राव.	पू.भा.	मु. 12 बजे बाद, भद्रोत्तरे
भा.शु.३/४, रवि	23 अग.	८ भाद्र	हस्त	ल. ७ (चं. दा.), अभिजित्
का.शु.३/४, बुध	7 अक्तू	२२ आश्वि.	कृति.	मु. प्रात: 10/52 उप., अभि.
मा.कृ.३/४, गुरु	5 नवं.	२० कार्ति.	रोहि.	ल. वृश्चिक (चं.दा.), अभि.
पौष कृ. ४,शनि	5 दिसं.	२० मार्ग	पुर्न	ल. २, अभि. (केतु युति परि.)
माघ कृ. ४, रवि	3 जन.	२० माघ	अश्ले	14/21 बाद, शुक्रास्त विचारणीय

श्रीदुर्गा व अन्य देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त 2009 ई.

(निम्न मुहूर्त्त जो द्वितीया या तृतीया तिथियों को लगाए गए हैं, देवी गौरी प्रतिष्ठा में भी ग्राह्य होंगे।)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा.कृ. ५, शुक्र	13 फर.	२ फागु.	हस्त	ल. १२-२ (चं. दा.), अभि.
फा.शु.२/३,शुक्र	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभि. (गौरी)
चैत्र कृ. २, गुरु	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. १२, २, अभि., श्री गौरी
वैशा. कृ. ६,बुध	15 अप्रै.	३ वैशा.	मूल	ल. ३, अभिजित्
वै. कृ. ९, रवि	19 अप्रै.	७ वैशा.	धनि.	ल. ३, अभिजित्
वैशा. शु. ३,चंद्र	27 अप्रै.	१५ वैशा.	रोहि.	३ (प्रात: 9/08 बाद), अभि.
वैशा.शु. ५, बुध	29 अप्रै.	१७ वैशा.	आर्द्रा	ल. २, अभिजित्
ज्ये. कृ. ३, मंग.	12 मई	३० वैशा.	मूल	ल. ३ (चं. बु. दा.), अभि.
ज्ये.शु. १०, मंग	2 जून	२० ज्ये.	हस्त	ल. ३, अभिजित
आ. कृ. ५, शुक्र	12 जून	३० ज्ये.	श्रव.	ल. प्रात: 9/22 उप., अभि.
आ.शु. १४, चंद्र	6 जुला	२३ आषा	मूल	ल. कन्या, अभि. (रिक्ता)
श्राव.शु. ६, रवि	26 जुला	११ श्राव.	हस्त	ल. ६, अभिजित
श्रा. शु. १२,रवि	2 अग.	१८ श्राव.	मूल	ल. ६ (श.बु.दा.), अभि.
श्रा. शु. १५,बुध	5 अग.	२१ श्राव.	श्रव.	ल. ६ (10/45 बाद), अभि.
भाद्र. शु.३, रवि	23 अग.	८ भाद्र.	हस्त	ल. ७ (चं. दा.), अभि.
भा.शु.९/१०,श.	29 अग.	१४ भाद्र.	मूल	ल. ६ (8/08 बाद), ७ (तुला), रा. ल. १
भा. शु. १०,रवि	30 अग.	१५ भाद्र.	मूल	ल. ६ (श. दा.), ७ (11/05 तक)

—श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भा. शु. १३,बुध	2 सितं.	१८ भाद्र.	श्रव.	ल. ६, ७, अभिजित
आ.शु.२/३, रवि	20 सितं.	५ आश्वि	हस्त	ल. ७ (श. दा.), अभिजित
आ.शु. ११,मंग.	29 सितं.	१४ आश्वि	श्रव.	ल. ७, अभिजित
का. कृ. ५, गुरु	8 अक्तू	२३ आश्वि	रोहि.	वृश्चिक 10/16 बाद, ९, अभि.
का. शु. ९, मंग	27 अक्तू	१० कार्ति.	श्रव.	ल. ८, ९, अभिजित
मार्ग. कृ. ३,गुरु	5 नवं.	२० कार्ति.	रोहि.	ल. ८ (सू. चं. दान)
मार्ग.कृ. १२,शु.	13 नवं.	२८ कार्ति.	हस्त	ल. ८, ९, अभिजित
पौष कृ. ९, गुरु	10 दिसं.	२५ मार्ग.	हस्त	ल. ११, अभिजित

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त–2009 ई.

(नोट—शिव प्रतिष्ठा सम्बन्धी मुहूर्त्त, सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों में से भी ग्राह्य होंगे।)

फा. कृ. ६, रवि	15 फर.	४ फागु.	स्वा.	दुपै. 12/53 तक
फा.कृ. १४, चंद्र	23 फर.	१२ फागु.	श्रव.	ल. मीन, वृष, अभिजित
फा. शु. ३, शनि	28 फर.	१७ फागु.	रेव.	ल. १, २, अभिजित
वैशा.कृ. ६, बुध	15 अप्रै.	३ वैशा.	मूल	ल. ३, अभिजित
वैशा.शु. ५, बुध	29 अप्रै.	१७ वैशा.	आर्द्रा	ल. २, अभिजित
वै. शु. १०, चंद्रे	4 मई	२२ वैशा.	पू.फा.	ल. २, अभिजित
ज्ये. कृ. ७, शनि	16 मई	३ ज्ये.	श्रव.	मु. 10/48 बाद, भद्रोत्तरे
ज्ये. शु. ३, बुध	27 मई	१४ ज्ये.	आर्द्रा	ल. ३, अभिजित
श्रा. कृ. १२,रवि	19 जुला	४ श्राव.	रोहि.	ल. ६ (चं. दा.), अभि.
श्रा. शु. ३, शुक्र	24 जुला	९ श्राव.	मघा	ल. ६, ७, अभि., चं. दा.
श्राव.शु. ५, रवि	26 जुला	११ श्राव	हस्त	ल. ७, अभिजित
श्रा. शु. ८, बुध	29 जुला	१४ श्राव.	स्वा.	ल. ६, अभिजित
श्रा. शु. १२,रवि	2 अग.	१८ श्राव.	मूल	ल. ६ (बु. दा.), अभिजित
श्राव.शु.१५,गुरु	6 अग.	२२ श्राव.	श्रव.	ल. ६ (बु.श.दा.), अभि.
भाद्र.कृ. ५, मंग	11 अग.	२७ श्राव.	रेव.	ल. ६ (चं.बु.दा.), अभि.
भाद्र.कृ.१२, चंद्र	17 अग.	२ भाद्र	आर्द्रा	ल. ६, ७, अभि. (आवश्यके)

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना में उपयोगी

—शिववास चक्र—

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्रविहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है—उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना। उदाहरण—मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

शिववास चक्र

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ–लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(शून्य)	श्मशान	नेष्ट फल

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त २०६६–(अन्न प्राशन मुहूर्त्त में भी ग्राह्य)

अपनी कुल परम्परा अनुसार सूतक समाप्ति के पश्चात् जन्मदिन से १०, ११, १२, १३, १६, १९ या २२वें या ४१वें तथा **विपणि** में दिए गए शुभ मुहूर्त्तों में नामकरण संस्कार करना चाहिए। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में उसकी प्रसिद्ध नाम राशि का विशेष महत्त्व होता है। व्यापार, व्यवहार, सर्विस, संकल्पपूर्वक दान दीक्षा-मंत्र-सिद्धि आदि कार्यो में नाम की ही प्रधानता रहती है। नामकरण संस्कार अपने कुल के वृद्ध व्यक्ति, महात्मा, गुरु, पण्डित, ज्योतिषी, पिता या कुल पुरोहित जी से परामर्श के अनुसार अथवा जन्म–नक्षत्र के चरणाक्षर से प्रारम्भ होने वाले अक्षर से युक्त किसी महान् पुरुष, कुलदेवता, ईश्वर या देववाचक, मंगल/कल्याणार्थक तथा कानों को मधुर लगने वाले अक्षर वाला नाम रखना चाहिए। यदि जन्म नक्षत्र/राशि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो लग्न, लग्नेश या भाग्येश ग्रह से सम्बन्धित राशि वाले अक्षर से प्रारम्भ होने वाला नाम रखना चाहिए। उस दिन किसी ब्राह्मण द्वारा स्वास्ती वाचन, पंचदेव एवं नवग्रह पूजनादि करवा कर ब्राह्मण का भोजन, वस्त्र, फल दक्षिणा आदि द्वारा सत्कार करना चाहिए।

विवाहादि शुभ कार्यों में दोषपूर्ण, अशुद्ध एवं त्याज्य मुहूर्त–संवत् २०६६ वि.

नीचे वि. संवत् २०६६ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका प्रत्यक्षतः कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। अति आवश्यक परिस्थितिवश यदि निम्न मुहूर्तों में से कोई विवाह आदि शुभ कार्य करना हो, तो विवाह नक्षत्र व योग स्वामी एवं देवता की विशिष्ट संख्या में संकल्पपूर्वक पूजा–पाठ व दानादि करके शुभ कार्य सम्पादित करने चाहिएँ॥ हमारे मतानुसार निम्न दोषपूर्ण एवं अशुद्ध मुहूर्त काल में शुभ कार्य के आरम्भ का त्याग ही उचित होगा। (निवेदक—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी॥)

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
14 अप्रैल	मंग.	मूल	रात्रि 24/35 बाद मृत्युबाण
15 अप्रैल	बुध	मूल	दुपै. 13/39 तक मृत्युबाण
18 अप्रैल	शनि	श्रव.	राहु की युति
19 अप्रैल	रवि	श्रव.	राहु की युति
20 अप्रैल	सोम	धनि.	भद्रा दोष व्याप्त
22 अप्रैल	बुध	उभा.	कृष्ण त्र्योदशी
28 अप्रैल	मंग.	रोह.	नक्षत्रान्त
2 मई	शनि	मघा	राहु का वेध
3 मई	रवि	मघा	राहु का वेध
4 मई	सोम	उफा.	भद्रा दोष व्याप्त
5 मई	मंग.	हस्त	मं., शु. का वेध
6 मई	बुध	हस्त	मं., शु. का वेध
9 मई	शनि	अनु.	सूर्य का वेध
10 मई	रवि	अनु	सूर्य का वेध
13 मई	बुध	मूल	मासान्त
15 मई	शुक्र	उषा	राहु की युति
16 मई	शनि	श्रव.	लग्नाभाव मृ.बा. 11 तक
21 मई	गुरु	अश्वि	कृष्ण त्र्योदशी
25 मई	सोम	रोहि.	राहु का वेध
26 मई	मंग.	मृग	राहु का वेध
31 मई	रवि	उफा	लग्नाभाव
3 जून	बुध	चित्रा	मृत्युबाण, व्यतिपात
10 जून	बुध	उ.षा.	राहु युति, सूर्यवेध
11 जून	गुरु	उ.षा.	राहु युति, सूर्य वेध
12 जून	शुक्र	धनि.	मृत्युबाण
13 जून	शनि	धनि.	मृत्युवाण, मासान्त
17 जून	बुध	उ.भा.	लग्नाभाव
18 जून	गुरु	रेवती	भद्रा व्याप्ति

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
18 जून	गुरु	अश्वि	शनि का वेध
19 जून	शुक्र	अश्वि	शनि का वेध
27 जून	शनि	मघा	लग्नाभाव
29 जून	सोम	उ.फा.	लग्नाभाव
30 जून	मंग	हस्त	लग्नाभाव
1 जुला.	बुध	चित्रा	लग्नाभाव
2 जुला.	गुरु	स्वा.	लग्नऽभाव
6 जुला.	सोम	मूल	सूर्य का वेध
7 जुला.	मंग.	उ.षा.	राहु की युति
8 जुला.	बुध	उ.षा.	राहु की युति
10 जुला.	शुक्र	श्रव.	लग्नाभाव
11 जुला	शनि	धनि	लग्नाभाव
14 जुला.	मंग.	उ.भा.	भद्रा दोष व्या.
15 जुला.	बुध	रेव	मासान्त
19 जुला.	रवि	मृग	राहु वेध, कृष्ण १३
27 जुला.	सोम	हस्त	मृत्युबाण
4 अग.	मंग.	उ.षा.	राहु युति, भौम वेध
5 अग.	बुध	उ.षा.	राहु युति, भौम वेध
6 अग.	गुरु	धनि.	सूर्य का वेध
7 अग.	शुक्र	धनि.	सूर्य का वेध
11 अग.	मंग.	अश्वि	शनिवेध, क्रांति साम्य
12 अग.	बुध	अश्वि	शनि वेध, भुजंगपात
14 अग.	शुक्र	रोहि.	मृत्युबाण दोष
15 अग.	शनि	रोहि.	मासान्त
16 अग.	रवि	मृग.	राहु वेध, संक्रांति
21 अग.	शुक्र	मघा	सूर्य युति, क्षीण चंद्र
22 अग.	शनि	हस्त	लग्नाभाव
23 अग.	रवि	चित्रा	लग्नाभाव

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
24 अग.	सोम	स्वा.	लग्नाभाव
26 अग.	बुध	अनु.	लग्नाभाव
31 अग.	सोम	उ.षा.	राहु की युति
1 सितं.	मंग.	उ.षा.	राहु की युति
4 सितं. से 18 सितं. तक श्राद्ध रहेंगे			
21 सितं.	सोम	चित्रा	लग्नाभाव
22 सितं.	मंग.	स्वा.	लग्नाभाव:
25 सितं.	शुक्र	मूल	मंग., केतु का वेध
26 सितं.	शनि	उ.षा.	मं., के. का वेध
27 सितं.	रवि	उ.षा.	राहु की युति
28 सितं.	सोम	उ.षा	राहु की युति, अतिगंड
3 अक्तू.	शनि	उ.भा.	सूर्य का वेध
4 अक्तू.	रवि	रेव	शनि का वेध
5 अक्तू.	सोम	रेव	शनि का वेध
6 अक्तू.	मंग.	अश्वि.	मृत्युबाण दोष
9 अक्तू.	शुक्र	रोहि.	लग्नाभाव
9 अक्तू.	शुक्र	मृग	राहु का वेध
10 अक्तू.	शनि	मृग	राहु का वेध
13 अक्तू.	मंग.	मघा	लग्नाभाव
15 अक्तू.	गुरु	उ.फा.	कृष्ण त्र्योदशी
16 अक्तू.	शुक्र	उ.फा.	मासान्त
22 अक्तू.	गुरु	मूल	केतु का वेध
23 अक्तू.	शुक्र	मूल	केतु का वेध
25 अक्तू.	रवि	उ.षा.	राहु की युति
26 अक्तू.	सोम	उ.षा	राहु की युति
31 अक्तू.	शनि	रेव	शनि का वेध
1 नवं.	रवि	रेव.	शनि का वेध

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
5 नवं.	गुरु	मृग.	राहु का वेध
6 नवं.	शुक्र	मृग.	राहु का वेध
11 नवं.	बुध	मघा	नक्षत्रान्त (लग्नाभाव)
14 नवं.	शुक्र	चित्रा	कृष्ण त्र्योदशी
15 नवं.	शनि	स्वा.	मासान्त
18 नवं.	बुध	अनु.	लग्नाभाव
19 नवं.	गुरु	मूल	केतु का वेध
20 नवं.	शुक्र	मूल	केतु का वेध
21 नवं.	शनि	उ.षा.	राहु की युति
22 नवं.	रवि	उ.षा.	राहु की युति
23 नवं.	सोम	धनि.	मंगल का वेध
24 नवं.	मंग.	धनि.	मंगल का वेध
26 नवं.	वीर	उभा	लग्नाभाव
27 नवं.	शुक्र	रेव	शनि का वेध
28 नवं.	शनि	रेव.	शनि का वेध
2 दिसं.	बुध	मृग	राहु का वेध
3 दिसं.	गुरु	मृग	राहु का वेध
10 दिसं.	गुरु	उ.फा.	लग्नाभाव

11 दिसं. से शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ (प्रातः से)
14 दिसं. से 8 फर. (2010 ई.) तक शुक्रास्त।
13 फर. (2010 ई.) से गुरू वार्धक्य प्रारम्भ
16 फर. से 21 मार्च 2010 ई. तक गुरू अस्त होंगे।

फलस्वरूप माघ व फाल्गुण महीनों में विवाह आदि शुभ मुहूर्तों का अभाव रहेगा।

नोट—यदि किसी विद्वान को किसी मुहूर्त्त सम्बन्धी कोई शंका हो, तो पत्र लिखकर उसका स्पष्टीकरण माँग लें—

—पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्यो.
अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर (पं.)

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। **तिथि** को शरीर, **चन्द्रमा** को मन, **योग–नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा **लग्न** को **आत्मा** माना गया है। यथा–

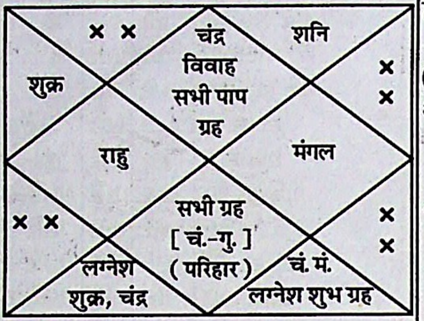
तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः –ज्योतिर्निबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ –ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह



विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्त्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न–मुहूर्त्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें **मंगल**, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं–

लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न–वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्–

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी, केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्त्तरि दोष–लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्त्तरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार–कर्त्तरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार–मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार–नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे–बृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार–"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तंड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद–नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे–

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त्त चिं. पीयूषंधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु–सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **"चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"**

'मुहूर्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु, शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार–पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। **–ज्योतिर्निबन्ध**

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है।

यथा—

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) **दग्धा तिथि परिहार**—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—मु० गणपति पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त्त लगाए गए हैं।

कश्यपर्वि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरू र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो–दोषो न, भवेत्सर्वं सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) **पीयूषधारानुसार**—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा–भद्र दायिनी॥

(iii) **"दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"**

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में—अर्थात् **सम्मुख रहती है।** जब भद्रा भू–लोक में (सम्मुख) रहती है, **अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्यांज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **बृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से**, दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **बृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **बृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ —मुहूर्त्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। **ज्योतिर्निबन्धानुसार–**

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपस्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम्॥ –नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

––क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन––

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

––तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन–हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता–(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, वायव्य (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बुधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक्र, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा **''एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च। प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत् योगिनी पूर्वम्॥।''**–(पीयूषधारा)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.–इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अत: उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु–केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना–बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष–ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार—

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। ''आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥''

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये।
जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है—

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोत्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं **(मु. मार्तण्ड)**। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। **(नारद)**, परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें **(वसिष्ठ)** तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे **(नारदः)**।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है **(वृन्द्मनुः)**। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे **(शार्गंधर)** जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे—

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूडाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है—

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है—

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है—

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है—

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

वर–वरण एवं सगाई मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई, कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबित सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अंगूठी, मिष्टान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह पद्धति'** का अवलोकन करें।

विवाह में प्रतिपादित शुभ मासों **वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों** में, रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में (विशेषकर शुक्ल पक्ष प्रशस्त है), चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवारों में तथा कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, मृग, हस्त, श्रवण, चित्रा नक्षत्रों में शुभ लग्न कालीन वर का वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त्त—

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

लता दोष

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः
१२	७	३	२२	६	२४	८	९
धन हानि	अशुभ	मृत्यु	अशुभ	बंधु-नाश	कार्य-नाश	कुल-क्षय	मरण

जैसे सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लता एवं पूर्ण चन्द्र के दिन नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र ७वां हो तो चन्द्रमा की लता जाने।

(पात-दोष कुरु, जांगल, कलिंग बंग और मगध में अतिनिन्दित है।)

अश्वि	भर	कृति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुर्न	विशा	अनु.	मूल	उषा	श्रव	धनि	शत	पूभा
मघा	हस्त	स्वा	मूला	मघा	रोह	रोहि	उफा	उषा	मृग	उषा	स्वा.	मृग	रोहि	उफा
अनु	उषा	उफा	००	हस्त	मृग	उषा	उषा	००	मघा	अनु.	००	स्वा.	हस्त	हस्त
रेव	उभा	००	००	मृग	उफा	००	००	००	मूला	००	००	मूला	उषा	अनु
००	००	००	००	००	अनु.	००	००	००	रेव	००	००	रेव	उभा	००

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात दोष लगता है, हर्षण, वैघृति, साध्य, व्यतिपात, शूल—इन योगों के अन्त में विवाह का नक्षत्र हो तो भी पात दोष लगता है।

युति-दोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो और उसी नक्षत्र पर यदि शुभ व पाप ग्रह हो तो युति दोष होता है, अथवा चंद्रमा की राशि में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। क्रूर ग्रहों की युति विशेष करके वर्जित है। यह गौड़ देश में अतिनिन्दित है।

वेध दोष

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	उषा	श्रव	रेव	उभा	शत	भर	पुन	मृग	हस्त	उफा

ऊपर के नक्षत्रों में से विवाह का नक्षत्र हो और उसके नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का वेध होता है। यह क्रूर ग्रहों के वेध विशेषतया वर्जित माना गया है।

विवाह नक्षत्र से सातवें ग्रह हो तो जामित्र

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	ज्ये.	धनि	पूभा	उभा	अश्वि	कृर्ति	मृग	पुन	उफा	हस्त

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जार्मित्र दोष होता है सो पाप ग्रह का जांर्मित्र विवाह में वर्जित कहा है यह यमुना प्रांत में अतिनिंद्य है।

बाण दोष

रोग	अग्नि	राजपं	चौरपंचक	मृत्यु	
८,१७ २६	२।११ २०।२९	४ १३।२२	६।१५ २४	१।१० १९।२८	सूर्यांश
व्रते रवौ रात्रौ	गृहकार्ये भौमे दिवा	सेवाया शनौ दिवां	यात्रा भौमे रात्रौ	विवाह बुधे संध्याया	कार्येषु वारे समये

एकार्गल दोष

वि.	अति	शू	गं	व्य	व	वै	यो

सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गणना करने से यदि विषम हो और इन विरुद्ध योगों में से कोई भी योग हो तो एकार्गल दोष होता है। यह काश्मीर में विशेष वर्जित है।

उप ग्रह दोष

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २२वें, २३वें, २४वें, २५वें, नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रान्ति साम्य दोष

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	सूर्य	चन्द्र
सिंह	मकर	धन	वृश्चि.	मीन	कुम्भ	चन्द्र	सूर्य

ऊपर व नीचे की राशि पर सूर्य व चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्ति-साम्य दोष हो जाने से विवाह में सर्वदा वर्जित है।

*वैशा., आषा., भाद्र., कार्ति., पौष., फा. मासों में शुक्ल पक्षीय तिथियां तथा ज्ये., श्रा., अश्वि., मार्ग व माघ में कृ. पक्षीया तिथियां ही वर्जित है।

दग्धा तिथि दोष

वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	मार्ग.	कार्ति	पौष	
श्रावण	फाल्गुन	आश्विन	भाद्र	माघ	चैत्र	मास
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

इन २ मासों में से २ तिथियां दग्ध होती है सो विवाह में वर्जित कहीं हैं, मध्य देश में त्याज्य है। कुछ विद्वानों अनुसार*

लत्तादि दोषाणां परिहारवाक्यानि-लत्ता मालवके (उज्जैनादि) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर इत्यादि)। एकार्गले व काश्मीरे वेघं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरु वाल्हिकेषु (आगरा आदि) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी, बंगाल, अयोध्या च पातिते भम्॥ सौराष्ट्र (कठियावाड़) शाल्वेः लताभं त्यजेत् विद्धकिल सर्वदेशे युतिदोषो भवेद गौड़े (बंगाल) जार्मित्रस्य च यामुने (यमुना के प्रांत)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे तिथयो मध्यदेशें विवर्जितः। युतिपरिहार-स्वर्क्षस्थः स्वोच्चगश्चंद्रो पित्रक्षेत्रगतोपिवा। गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो वली केन्द्रगतो विधुः। लत्तापांप उपग्रह परिहारः-वनसंख्यं चरणे खेट स्तत्संख्यं चरणं त्यजेत्। लत्तोपग्रहदानेषु त्याज्या नैवाऽघ्रय परे॥ परिहार-लत्तोपग्रहजामित्रयांतैकार्गलकर्त्तरी। एते दोषा विंनश्यंति लग्नेऽकें दुर्बलान्विते॥

भूमि खरीदने (क्रय) का मुहूर्त्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रवि. ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।

शुभ तिथियाँ—प्रतिपदा (कृष्ण-पक्षे), कृष्ण तथा शुक्ल पक्षे २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियां।

शुभ नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।

शुभवार—सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

आवश्यक मुहूर्त्त विचार

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में एवं चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (२१ दिसं. से २० जून तक) ५वें ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा—तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल, १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (२० जून तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३(शुक्ल) तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, वीर, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, वीर, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव-रेव।
स्कूटर, कारादि सवारी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में।	अश्वि, उत्तरा-३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, पूर्वा-३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.)ष १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भादर, माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	रोह, मृग, जुन, पुष्य, उत्तरी, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (१,५,७,९,१०,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्ट।
नए घर में प्रवेश	१(कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, चंद्र, बुध, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आ, श्रा, भा., आश्वि, मार्ग, माघ, फागु.।	अश्वि, कृति, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मू, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१(कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. श. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूला, रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, माघ व फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूला, रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूला, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८,१०,१३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा-३, ज्ये., मूला, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृ)२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३(शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ),२, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज़, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोर्टस Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्र, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकदमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त्त

मास—वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार—सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र—अशिव. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न—शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें प्रहाभाव।

विशेष—आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा—

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।

तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह   अन्येऽपि—

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष भंग होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, बृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

यथोक्तम्—

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे।

द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥   —मु. पारिजात

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

''द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते''   —मु. चिंतामणि

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।

न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥   —मुहूर्त्त दीपक

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता—

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।

वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥   —मुहूर्त्त दीपक

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता—

''केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।

तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥''   —मु. चिंतामणि

अपरं च—

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता—

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।

विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥   —मु. चिंतामणि

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

—मुहूर्त्त दीपक

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (''लग्ने व्यये पाताले—'') के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे—विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा—

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।   —मु. संग्रह दर्पण

सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। सभी लग्न कुण्डलियों में मंगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलियों में मंगल अथवा मंगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है, परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के सहचर्य से योगकारक हो, उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो, तो मंगल अशुभ की अपेक्षा **शुभ प्रभाव कारक** होगा। जैसे—मकर, मेष, बृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि के मंगल को शुभ माना जाता है तथा **कर्क** एवं **सिंह लग्नों** में मंगल **केन्द्र त्रिकोणपति** होने से मंगल अशुभ न होकर योगकारक माना जाएगा—

''सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहा शुभफलप्रदाः।
इसी भान्ति स्वोच्चस्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णम्।
नीचर्क्षगस्तु विपलं रिपु मन्दिरेऽल्पम्॥ (सारावली)
भाव सर्वे शुभपतियुता वीक्षितः वा शुभेशै—
तत्तद्भावाः सकल फलदाः पापदृक्योगहीनाः॥''

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जिनमें कुछ मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं—

(१) चलित भाव कुण्डली—जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली बनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में **मंगल** सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(२) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(३) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(४) इसके विपरीत सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप दृष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का **पूर्ण सुख नहीं होता**—

दुःस्थे कामपतौ तु पाप ग्रहगे पापेक्षिते-तद्युते। तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभं चान्यथा॥

(५) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलाबल का विचार करना भी नितान्त आवश्यक है।

(६) अष्टकूट नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमैत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (२७ या अधिक) गुण मिलते हों तो भी मंगलीक दोष अविचारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभत्व का सम्यक् विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को मेलापक सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे—सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वस्थ (शरीर) और आयु—इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में—विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :—

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** —ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग** ३६ होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार—४, ५, १२ राशियों का **ब्राह्मण,** १, ५, ९ का **क्षत्रिय,** २, ६, १० **वैश्य** तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार—सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। **समान वश्य होने पर २ गुण,** एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार—कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार—अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे—गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[**नोट**—योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण—वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री—ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार—वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा—

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —बृहज्जयोतिः सार

अपवाद—वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा—

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार—अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण,** तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण,** कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूला, धनि. और शत. का **राक्षसगण।**

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम,** देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

		वर		
	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्या	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गुण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में भिन्नता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। **—पीयूषधारा**

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। **—मुहूर्त्त मार्त्तण्ड**

(७) भकूट विचार—इसे राशिकूट भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष,** यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा—१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा राशि स्वामी ग्रह **समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा—

न वर्गवर्णो न गणो: न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाह:॥ —बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार—

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है—

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवर:। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

—बृहज्योतिष: सार:

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर—ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ **—शार्गंधर**

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार—

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पति प्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **—मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे—वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम **(समसप्तक)** होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया— **मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।**
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ **—ज्योतिनिवन्ध**

(८) नाड़ी दोष विचार—अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है—आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। **—बृहज्योतिषसार**

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार—

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार—

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है—

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नित्तान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्यओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता—अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ —मुहूर्त्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा—

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है— **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है—

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥

***नोट—** ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा **दूसरे** एवं **तीसरे पाद** में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) 'नरपतिजचर्या' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है।

आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन यादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्प दोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद—इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्दा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ —ज्यो० चिन्तामणि

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार—

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है—

अन्यत्र भी लिखा है—श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त—

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतपर्णं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-देष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा—

हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या	नक्षत्र ↓	अश्वि 1 से 4	भर 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1,2,3	२२ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३ ॥ 3,8	३१ ॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 1578	१३ ॥ 1567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४ ॥ 1238	१८ 1358	२६ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१ ॥ 3	२३ ॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८ ॥ 8,9व	२६ 9,व	२१ ॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६ ॥ 1236	२० 1356	२० ॥ 1356	२१ 1356	२५ ॥ 3,6	२६ ॥ 3,6	२३ ॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५ ॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६ ॥ 3,6	१७ ॥ 2,3,6	१७ ॥ 2,3,6	१८ ॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३ ॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३ ॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२ ॥ 3468	१० ॥ 3568	२४ ॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३ ॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९ ॥ 1,2,8	२४ ॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९ ॥ 456व	१५ 3458	२४ ॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७ ॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१ ॥ 3,4	१९ ॥ 2,4,5	१२ 2358	१४ ॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८ ॥ 3,व	३१ ॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९ ॥ 3,5,8	२७ ॥ 3,5	२१ ॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२० ॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९ ॥ 3,4व	२१ ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७ ॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३ ॥ 3,5,6	२० ॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१ ॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७ ॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९ ॥ 1,3	२५ ॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९ ॥ 3,6	१६ ॥ 1246	२० ॥ 1234	१५ ॥ 1238	१८ 1358	१९ ॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३० ॥ 1,3	२१ ॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११ ॥ 12358	१८ ॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५ ॥ 1238	२३ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२ ॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११ ॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५ ॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५ ॥ 1246	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६ ॥ 8,9,व	१७ ॥ 158व	९ ॥ 1568व	१७ ॥ 156व	२१ ॥ 146व	२२ ॥ 136व	२१ 1346व	१६ ॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६ ॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६ ॥ 1236	२१ ॥ 123व
	पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८ ॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३ ॥ 145व	१५ ॥ 1458	२० 148व	२८ ॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२ ॥ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	१६ ॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७ ॥ 1268
	उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८ ॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१ ॥ 1,3,8	१७ ॥ 2,3,8	२५ ॥ 2,3	२० 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६ ॥ 128व	१३ ॥ 1236
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२ ॥ -5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४ ॥ 3,9	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1,3,8	२४ ॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२ ॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७ ॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७ ॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२ ॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८ ॥ 236व	२२ ॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४ ॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२ ॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५ ॥ 1,3,6	२१ ॥ 356व	१२ ॥ 3568व	२७ 35,व	२२ ॥ 2,3,व	८ ॥ 2368व	१४ ॥ 2346व	२४ ॥ 3,4,6	२७ ॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-२)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२॥ 3,4,6	१४ 3468	२८॥ 3,4	२४ 3,7	२०॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९॥ 3,6,9	२०॥ 3,5,6	११ 3568	२६॥ 3,5,व	२५॥ 3,5,व	११॥ 3568	१७॥ 456व	१७॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७॥ 3,4	२९॥ 3	१७॥ 3,6,8	१३ 3678	१५॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५॥ 3,5व	२५॥ 3,5व	२६ 2,3	२७॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२०॥ 3,4,8	१५॥ 3478	१०॥ 3678	१८॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१॥ 4,5,6	१८॥ 3,5,8	१७॥ 358,व	१९॥ 358व	१७॥ 2346	१७॥ 2346	१९ 2346	२७॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४॥ 1478	१९॥ 1,4,8	१४॥ 1368	२२॥ 1,3,6	१२॥ 1567	१३ 1567	१३॥ 1567	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	१५॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३॥ 136व	२१॥ 146व	१७॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५॥ 1378	२० 1367	२४॥ 1,3,6	२७॥ 1,3,4	२०॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२०॥ 1,5,7	२६॥ 9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८॥ 1367	२५ 1,3,7	२९॥ 1,3	२२॥ 1,3,6	२२॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५॥ 135678	१०॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९॥ 1,5,7	१३ 1567	१३॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७॥ 4678	१७॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८॥ 8,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 14567	१८॥ 1457	११ 14578	१८॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३॥ 37,व	१३ 3478	१७॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७॥ 8,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७॥ 1,3,5	२३॥ 37,व	२३॥ 3,7,व	८॥ 678व	८॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२८॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,4,5	२८॥ 4,5	१४॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६॥ 5678	१८॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४॥ 4,9व	१९॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२०॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९॥ 4,5,7	५॥ 5678	१२॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१०॥ 4568	२६ 3,4,5	३०॥ 3,4	२७ 4,6	१९॥ 4,6,8	१२ 4689	१९ 4,6,9	१८॥ 3469	१३ 4567	४॥ 45678	१९॥ 357व	२५॥ 3,5,व	११ 568व	१८॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२॥ 3	२५॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६॥ 3,5,व	२०॥ 356व	१२॥ 568व	११॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१॥ 3,4	३१॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७॥ 4,8,9	१८॥ 4,8,9	१३॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९॥ 5,6,व	२५॥ 4,5व	१६॥ 458व	१५॥ 4,7,8	१५॥ 3478	१७॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४॥ 1248	२२ 1234	१६॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८॥ 1458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३॥ 1347	१४॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७॥ 9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९॥ 1456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-३)

कन्या (राशि)	वर/नक्षत्र →	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	कन्या नक्षत्र ↓	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२॥ 1346	२६॥ 1,3,4	२२॥ 1346	१८॥ 3467	२५॥ 3,7	१४॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२०॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
मेष	भर 1 से 4	१३॥ 1368	२९ 1,3	२१॥ 1,3,6	१७॥ 3467	१७॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८॥ 8,9	२६ 4,9	२७॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	२७ 2,3
मेष	कृति 1 चरण	२७॥ 1,3,4	१५ 1368	१९॥ 1348	१५॥ 3478	१९॥ 3,6,7	२५॥ 3,7	२५ 3,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 6,8,9	१३॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९॥ 1356	१७॥ 2346	१९॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४॥ 1378	२०॥ 3,4,8	२४॥ 3,6	३०॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१०॥ 4689	२४ 3,4,9	२९॥ 1,3,4	३१॥ 1,3	२३॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
वृष	रोह 1 से 4	१९॥ 1,6,7	१५॥ 1378	९॥ 1678	१५ 1368	२९॥ 3,4	२४ 3,6	१४॥ 3567	१९॥ 3,5,7	११॥ 4578	१६ 4,8,9	१७॥ 4,8,9	२०॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
वृष	मृग 1-2	१२ 1678	२५॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१॥ 3,5,8	२४॥ 3,6	१५ 3567	१०॥ 3578	१७॥ 3457	२२ 3,4,9	२५॥ 4,9	१३ 4689	१९॥ 1468	२७ 1,4,6	२९॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८॥ 3458	२५ 3,4,5	२०॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१॥ 6,9	२४ 3,9	२५॥ 3,5,व	१७॥ 3,5,8	२६॥ 3,5,व
मिथुन	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२०॥ 4,6,9	१३ 4567	१७॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१८ 467व	१९॥ 4,6,7	१२॥ 4689	१७॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६॥ 3,5व	२७ 3,5,व
मिथुन	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१७॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८॥ 14678	२१ 147व	२१॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८॥ 1567	१०॥ 14578	१६॥ 4,8,9	२६॥ 9	२६ 3,9
कर्क	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६॥ 1,3,5	२१॥ 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	१७॥ 1367	११॥ 1478	२१॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४॥ 145678	१४ 13567	१८॥ 1457	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७ 9
कर्क	श्ले. 1 से 4	२५॥ 1,3,5	१२ 1568	१७॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२०॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४॥ 1,3,5	११॥ 13568	१६॥ 1358व	२२॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९॥ 6,9व	८॥ 689व	३॥ 15678	४॥ 15678	१८॥ 1,5,7	२४॥ 1,5,व	२५॥ 1,5,व	१८॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३॥ 6,7,8
सिंह	पू.फा. 1 से 4	१०॥ 1568	२५॥ 135व	१८॥ 156व	२४ 3,6व	२३॥ 3,8व	२५॥ 3,6व	२० 6,9व	१७॥ 8,9,व	२४ 4.9व	१९ 1,5,7	१८॥ 1,5,7	४॥ 15678	११ 1568	१९॥ 156व	२४॥ 135व	२५ 3,7	१७॥ 3,7,8	२६ 3,7
सिंह	उ.फा. 1	१७ 13456	२५॥ 1,3,5	१६॥ 13456	२२॥ 3,4,6	३१॥ 3,व	१७॥ 3,6,8	९॥ 3689	२५ 9,व	२५॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११॥ 1567	१७॥ 1356	११ 3568	१५॥ 358व	१६ 3478	२६॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६॥ 1246	२५॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७॥ 3,5व	१३॥ 568व	१४ 3568	२९॥ 5	२९॥ 5	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६॥ 1367	१०॥ 3678	१४॥ 1378	१७॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७॥ 3,5,व
कन्या	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६॥ 1,2,3	१८॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८॥ 34678	१३॥ 1378	१६॥ 3458	२६॥ 3,5व	२७॥ 3,5,व
कन्या	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६॥ 1,2,3	२८॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६॥ 1467	१९॥ 3456	१० 34568	१९॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-४)

वर/नक्षत्र →	कन्या नक्षत्र ↓	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूला 1 से 4	पूषा 1 से 4	उषा 1 चरण	उषा 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पूभा 1,2,3	पूभा 4	उभा 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 3,7,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
बृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12568	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3,4	३१ 3,4	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3,4	२२॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ [illegible]	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽवग्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूला नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूला नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूला नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूला के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूला नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूला नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से **"व्रत और त्यौहार"** एवं **सप्तवार कथा** मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र **"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः"** मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। **आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्॥** अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—**"एहि सूर्य सहस्त्राशों तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर"** स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूं, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर **"ॐ नमः शिवाय"** आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे—चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज मंत्र **"ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः"** की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, हृदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **"ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः"** बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारण करना शुभ होता है। **मंगल देवता** का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रणाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र **"ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः"** का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे—मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारणा करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरू के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र **"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः"** का यथाशक्ति पाठ करे। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समिध,

सौरभ सौरभ

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

''ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'' की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथा शक्ति मात्रा में करें—मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करे। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा काबल, जौं आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के बीजमंत्र **''ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥''** का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र **''ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः''** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरंभ न करे। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	बृश्चिक	बृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	बृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	बृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे. २०°	बृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य -	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उषा
आर्द्रा	कु. घ. ङ छ.	मिथुन	नर (मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पूषा
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूला
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि·	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उभा
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पूभा
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मिश्र	४	भर.
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूला	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ।जर	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ .	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उफा

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	बृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वंय करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है—

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, स्वास्थ्य धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं—

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), **(९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।**

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**—यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला)स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां—१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार—सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न—लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल—रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**—यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार—रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल** व बुध वारों में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र—रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**—यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**—रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र—मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवण:

लग्न—१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त—यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां—२, ७, १२

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**—कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)

शुभ वार = च., बु., गु., शु.

नक्षत्र—अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेघा-जनन संस्कार**—जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः **"ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।"** तथा **ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **स्तनपान का मुहूर्त्त**—जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र—रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **षष्ठी पूजन**—जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी पूजन,**

कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞ **प्रसूता स्नान मुहूर्त्त**—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र—आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞ **नामकरण संस्कार**—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है—

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''

गृहारम्भ—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞ **नामकरण**—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞ **झूला आरोहन मुहूर्त्त**—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞ **निष्क्रमण मुहूर्त्त**—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞ **भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त**—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त—

शुभ तिथियां—१ (कृ) 2,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२,५,८,११ राशि लग्न।

☞ **जीविका परीक्षा**—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞ **अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त**—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☞**कर्ण वेध का मुहूर्त्त**—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव, विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की शलाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☞**कन्या की नासिका छेदन**—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यतः लोग अंग्रेजी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिंद्धान्तः एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

☞मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में —वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयातीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ वर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

☞**क्षौर (हज़ामत) कर्म मुहूर्त्त**—मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हज़ामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुनः ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र वल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्डा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग टेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष वच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १०, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, **सूर्य-नक्षत्र** से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला—सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणरम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, विना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु कालम का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार—प्रात: ७/३० से प्रात: ९ बजे तक
मंगलवार—अपरान्ह ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार—दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार—दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार—प्रात: १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार—प्रात: ९/०० से प्रात: १०/३० बजे तक
रविवार—सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

स्त्री जातक विचार

- यदि कन्या की जन्म कुण्डली में सप्तमेश ग्रह के साथ शनि स्थित हो, तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में होता है।
- यदि सूर्य, मंगल, बुध लग्न में हो और गुरु द्वादश भाव में स्थित हों, तो भी उस कन्या का विवाह दीर्घकाल में ही होता है।
- जिस स्त्री के जन्म काल में सप्तम भाव में शुभ-अशुभ—दोनों प्रकार के ग्रह होते हैं, उसके दो विवाहों के योग बनते हैं।
- यदि किसी स्त्री के सप्तम भाव में सूर्य हो अथवा अन्य कोई पाप ग्रह ७वें भाव में स्थित हो, तो ऐसी स्त्री को वैवाहिक—सुख कम मिलता है।
- यदि सप्तम भाव में बुध तथा शनि की युति हों, तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।
- आठवें भाव में बुध गया हो ऐसी स्त्री काक—बन्ध्या होती है अर्थात् एक बार सन्तान होकर पुन: सन्तान होने में बाधा होती है।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री—

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वीं को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- (विशेष) —भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पांव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसुतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँच से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

ग्रह व राशियों के तत्त्वों पर से शारीरिक स्थिति

जन्म समय जिस प्रकार की उदित लग्न राशि और ग्रह के तत्त्व होंगे, जातक की शरीर संरचना भी वैसी ही होगी। शरीर की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करने के लिए ग्रह और राशियों के तत्त्व नीचे लिखे जाते हैं—

ग्रह	शुष्कादि	तत्त्व	कद
सूर्य	शुष्क ग्रह	अग्नि	मध्यम
चन्द्र	जल ग्रह	जल	दीर्घ
मंगल	शुष्क ग्रह	अग्नि	ह्रस्व
बुध	जलीय	पृथ्वी	मध्यम
गुरु	जलीय	आकाश या तेज	मध्यम या ह्रस्व
शुक्र	जलीय	जल तत्त्व	ह्रस्व
शनि	शुष्क	वायु तत्त्व	दीर्घ
राहु	शुष्क	वायु	दीर्घ
केतु	शुष्क	वायु	मध्यम

राशि तत्त्व

मेष	अग्नि	ह्रस्व
वृष	पृथ्वी	ह्रस्व
मिथुन	वायु	मध्यम
कर्क	जल	मध्यम
सिंह	अग्नि	दीर्घ
कन्या	पृथ्वी	दीर्घ
तुला	वायु	दीर्घ
वृश्चिक	जल	दीर्घ
धन	अग्नि	मध्यम
मकर	पृथ्वी	मध्यम
कुम्भ	वायु	ह्रस्व
मीन	जल	ह्रस्व

(१) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जल तत्त्व ग्रह की स्थिति हो, तो जातक का शरीर मोटा एवं पुष्ट होगा।

(२) लग्न एवं लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो, तो भी शरीर स्थूल एवं पुष्ट होगा।

(३) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि का हो और अग्नि तत्त्व के ग्रह उसमें स्थित हों, तो मनुष्य शक्तिशाली एवं बली होता है, पर शरीर देखने में दुबला लगेगा।

(४) पृथ्वी राशि का लग्न हो और उसका राशि स्वामी ग्रह जल राशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

(५) पृथ्वी राशि लग्न हो और लग्नपति ग्रह पृथ्वी राशि में हो, तो शरीर स्थूल और दृढ़ होता है।

(६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्त्व की हो और उसमें पृथ्वी तत्त्व का ही ग्रह पड़ा हो, तो जातक नाटे (छोटे) कद वाला होता है।

(७) यदि लग्न वायु तत्त्व राशि वाला हो और उसमें वायु तत्त्व के ग्रह हों, तो जातक दुबला, परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा।

(८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्त्व की राशि वाला हो और लग्नाधिपति जल राशिगत हो तो शरीर स्थूल होगा।

(९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्त्व की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो, तो हड्डियाँ साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट होगा।

इसके साथ ही लग्न की राशि ह्रस्व, दीर्घ या सम (मध्यम), जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की ऊँचाई समझनी चाहिए।

इसी भान्ति लग्न राशि और लग्नेश ग्रह के अनुसार जातक के रूप-रंग का निर्णय करना चाहिए।

राशियों द्वारा वर्ण ज्ञान

मेष लग्न में लाल मिश्रित, **वृष** में पीला मिश्रित श्वेत, **मिथुन** में विविध मिश्रित श्वेत, **कर्क** में नीला मिश्रित सफेद, **सिंह** में गन्दमी, **कन्या** में श्याम मिश्रित सफेद, **तुला** में तालिका युक्त सफेद, **वृश्चिक** में लालिमा युक्त सफेद, **धनु** में पीत वर्ण युक्त सफेद, **मकर** में चितकबरा सफेद, **कुम्भ** में आकाश सदृश नीला, **मीन** में पीत युक्त गौर वर्ण। इस भान्ति लग्न राशि और लग्नेश के स्वरूप के अनुसार जातक के रूप-रंग का निश्चय करना चाहिए। इसके अतिरिक्त लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों का भी प्रभाव रहता है।

ग्रहों के अनुसार वर्ण (रूप-रंग) विचार

सूर्य से रक्त-श्याम (गन्दमी) **चन्द्र** से गौरवर्ण, **मंगल** से लाल वर्ण, **बुध** से दूर्वादल के समान श्यामल, **गुरु** सुवर्ण (बादामी), **शुक्र** से (नीलिमा युक्त) सफेद, **शनि** से श्यामवर्ण, **राहु** से कृष्ण एवं **केतु** से **धूम्र वर्ण** जानना चाहिए। **बुध-शुक्र** एक साथ हों तो गौरववर्ण न होते हुए भी सुन्दर आकृति होती है। **लग्न** एवं **लग्नेश** पर पाप ग्रह की दृष्टि होने से जातक के सौन्दर्य में कमी आती है।

शरीर के अंगों पर व्रण, तिलादि का विचार—जिस अंग का विचार करना हो, उस अंग की राशि जिस प्रकार की ह्रस्व या दीर्घ हो तथा उस राशि में रहने वाला जैसा ग्रह होगा, उस अंग की वैसी ही स्थिति (ह्रस्व या दीर्घ) होगी।

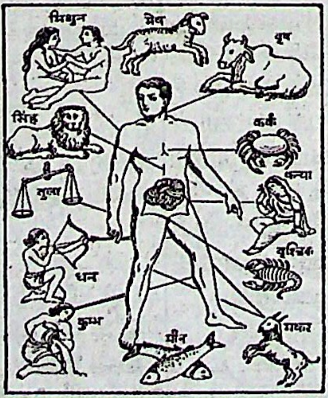
द्वादश भावों में अंग ज्ञान—ज्योतिष शास्त्र में लग्न भाव में स्थित राशि से सिर, **दूसरे भाव** की राशि को मुख, **तीसरे भाव** से वक्षस्थल और फेफड़े, **चौथे भाव** की राशि से हृदय और छाती, **पंचम** स्थान से कुक्षि और पीठ, **छठे भाव** से कमर और आंते, **सप्तम** स्थान से नाभि और गुप्तांग के बीच का स्थान, **अष्टम** स्थान से गुप्तांग, **नवम्** भाव से ऊरू और जंघा, **दशम्** स्थान से टेहुना, **एकादश** स्थान की राशि से पिण्डलियाँ, **द्वादश** स्थान से पाँव का विचार करना चाहिए।

राशि के अनुसार अंगों का विचार—(१) **मेष** राशि से मुख, मस्तिष्क। (२) **वृष** से नेत्र, जिह्वा, कण्ठ, भुजाएँ। (३) **मिथुन** राशि से हाथ, कन्धे, हृदय। (४) **कर्क** से पेट, (५) **सिंह** राशि से कमर, पीठ, मेरूदण्ड। (६) **कन्या** राशि से नाभि, पेट। (७) **तुला** राशि से नाभि के नीचे, गुर्दे, मूत्राशय। (8) **वृश्चिक** से मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय, गुदा आदि। (9) **धनु** से जंघाएँ, नितम्ब। (10) **मकर** राशि से दोनों घुटने। (11) **कुम्भ** से दोनों पिंडलियां। (12) **मीन** राशि से दोनों पाँवों का विचार किया जाता है।

काल पुरुष में राशि ज्ञान

काल पुरुष एक काल्पनिक विराट् समय को पुरुष माना गया है, जिसमें द्वादश राशियों की कल्पना की गई है।

कालपुरुष के शिर में मेष राशि मुख में वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय में कर्क, उदर में सिंह, कटि में कन्या इत्यादि काल पुरुष



के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्मे वह शिर जानना अन्य सब राशि क्रम से अंग होते हैं।

ग्रहों के अनुसार अंगों पर चिन्ह विचार

जिस भाव एवं राशि पर पाप ग्रह हों, उसमें व्रण (घाव) आदि और जिसमें शुभ ग्रह हों, उस स्थान पर चिन्ह कहना चाहिए। यदि ग्रह अपनी राशि या अपने नवांश में हो, तो, व्रण या चिन्ह जन्म (गर्भ) से ही समझना चाहिए। अन्यथा ग्रह की अपनी दशा के समय व्रण या चिन्ह प्रकट होते हैं।

यदि किसी जातक के जन्म लग्न में मंगल और सप्तम भाव में गुरु या शुक्र हो, तो उसके सिर में व्रण (दाग) होता है।

जन्म लग्न में **मंगल-शुक्र** और चन्द्रमा हों तो जातक को जन्म से दूसरे या छठे वर्ष सिर में चोट लगने से घाव होता है। जन्म लग्न में शुक्र और आठवें स्थान में राहु हो, तो मस्तक या बाएँ कान में चिन्ह होगा। यदि लग्न में गुरु, सप्तम में राहु और आठवें स्थान में पाप ग्रह हों, तो जातक के बाएँ हाथ में चिन्ह होता है अथवा लग्न में गुरु या शुक्र हो और अष्टम में पाप ग्रह हों, तो भी बाएँ हाथ पर चिन्ह होगा।

पाँचवें या नवें (८, ९) शनि हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तो मूत्रेन्द्रिय या गुदा के समीप तिल होता है। पांचवें या नवम् भाव में शुक्र और बुध हों, अष्टम में गुरु और लग्न या चतुर्थ भाव में शनि हो, तो पेट पर चिन्ह होता है। **चतुर्थ स्थान** में राहु या शुक्र दोनों में से एक ग्रह स्थित हो और लग्न में शनि या मंगल स्थित हो, तो पाँव के तलवे में चिन्ह होता है। दूसरे भाव में शुक्र, **आठवें भाव** में सूर्य और तीसरे में मंगल हो तो जातक की कमर के आस-पास चिन्ह होता है। १२वें भाव में गुरु, नौवे भाव में चन्द्रमा और तीसरे या ११वें में बुध हो, तो गुदा स्थान में चिन्ह होता है।

जातक के शरीर में तिल, मस्सा, चिन्ह आदि का विचार लग्न राशि, लग्न स्थित द्रेष्काण राशि एवं शीर्षोदय राशि आदि के द्वारा भी किया जाता है।

पितृ-परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय पिता घर में था या नहीं ? जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान में चर राशि का होकर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थित राशि का हो तो पिता घर में नहीं था, परन्तु देश ही में है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा होगा।

माता पिता को अरिष्ट योग

पिता के लिये सूर्य तथा दशम् स्थान से और माता के लिये चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिये। यदि बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम् स्थान में पाप ग्रह बैटे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिये। यदि सूर्य से ४/ ६ /८ स्थान में पाप ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानें।

इसी प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २। १२ स्थान में व ४। ६। ८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जाने।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'**पंचांगदिवाकर**' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 8 अप्रै., 2009 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/08 सू.उ. प्राप्त ('भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदयास्त' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/12) से 5 मिनट पूर्व (पहले) है। अतः घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 5 मिनट के घटी पल 13 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे,** सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

8 अप्रैल, 2009 ई. को जालन्धर का पंचांग	**8 अप्रैल, 2009 ई. को दिल्ली का पंचांग**
घटी पल	**घटी पल**
तिथि — ३७/२५ (समाप्ति काल)	**तिथि** — ३७/३८ (समाप्ति काल)
नक्षत्र — २४/१८	**नक्षत्र** — २४/३१
योग — ४६/०८	**योग** — ४६/२६

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०६६ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल एकादशी प्रविष्टे २३ चैत्र, तदनुसार 5 अप्रै., २००९ ई. को दोपहर २ बजकर २४ मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ३० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२१°/४३′/१६″ होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई उसके निकटवर्ती अक्षांश ३१/२० की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जा सकती है। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २१° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें १/४४ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/३० में जमा कर देने से कुल जोड़ २२/१४ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २२/१४ कर्क (३) राशि के सामने और २७ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २२/१४ से केवल १ पल अधिक है। अब अनुपातिक विधि द्वारा १ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इसी प्रकार १ पलों के पीछे ५ कलाओं का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/३० घट्यादि) ३ गत राशि अर्थात् कर्क लग्न, २६ अंश, ५५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ३/२६°/५५′/००″)। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक '**ज्योतिष तत्त्व**' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।।५० **लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)** **चरखण्ड १५१।१२०।५१**

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे—लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	२१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° **पलभा ४।७।५५**

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°   पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
वृष	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	७
२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१७
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	४७
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	४२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	१५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	४८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५९

अक्षांश २७°   पलभा ६।६।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५२
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	४३
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	०९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३६	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	०६
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	४३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	२८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	[illegible]	५०

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, अमृतसर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चिक	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) पलभा ७/४८/३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
कन्या	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
वृश्चिक	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
धनु	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१६	२३	३१	३९	४७
१०	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१३ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।—लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव में षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त** हो जाती हैं।

—पं० पन्ना लाल ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	रा. षट्	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रें.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रें.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रें.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रें.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रें.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रें.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
कं.	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६	द्रें.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	सं	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	द्वा	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	द्रें.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	सं	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.	द्वा	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८	द्रें.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सं	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	द्वा	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९	द्रें.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सं	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	द्वा	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०	द्रें.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सं	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं	द्वा	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रें.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
११	सं	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.	द्वा	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्गी फलादेश विचार

षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमाश, ४ नवमांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिशांश स्पष्ट कुण्डलियों का विचार किया जाता है। यदि ६ वर्गों में वर्गेश अधिकांश शुभ ग्रह हों तो शुभफल यदि अधिकांश अशुभ ग्रह हों तो अनिष्ट फल देते हैं।

षड्वर्ग सारणी—होरादि ६ वर्गों के लग्न व उनमें ग्रह स्थापन हेतु पीछे जो षड्वर्ग सारिणी दी गई है। अपने लग्न स्पष्ट से प्राप्त राशि अंशानुसार नवांशादि लग्न का ज्ञान करें। राशि व होरादि वर्ग के सामने और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक होगा, वही उस वर्ग का लग्न होगा।

उदाहरण—मान लें लग्न स्पष्ट ५।४।२९।२५ है। यहां पर लग्न राशि कन्या और अंशादि ४।२९।।२५ है। सारिणी में ३ भाग ४।१७ पर समाप्त होता है। अत: हमारे अभीष्ट अंशादि (४।२९) ४ चतुर्थ खाने के नीचे पड़ेगे। अतएवं कन्या राशि के सामने (दाईं ओर) तथा चतुर्थ भाग के नीचे की तालिका पर होरा के सामने ४ अर्थात् **कर्क लग्न, द्रेष्काण ६** (कन्या), सप्तमांश का १ (मेष), नवमांश का ११ (कुम्भ), द्वादशांश का ७ (तुला), एवं त्रिशांश का २ (वृष) लग्न निकलेगा। इन वर्गों के स्वामी क्रमशः चंद्र, बुध, मंगल, शनि, शुक्र व शुक्र ग्रहों में २ पापग्रह तथा शेष ४ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त कन्या लग्न शुभग्रह फलयुक्त-श्रेष्ठ फल होगा। ग्रहस्थापन हेतु उदाहरणार्थ यदि सूर्य स्पष्ट ७।८।१०।४२ है, ७वें भाग एवं ८।३४।१७ अंशादि के नीचे तथा (७) एवं राशि वृश्चिक के सामने दाईं ओर कोष्ठक के होरादि वर्गों में क्रमशः ४।८ ।३ ।६ ।११ ।६ राशियां होंगी। सूर्य होरादि वर्गों में तदनुसार राशि में स्थापित करे। इसी भाँति अन्य चन्द्रादि ग्रहों की स्थापना करेंगे।

होरा फल

होरा लग्न में सिंह (५) अथवा कर्क लग्न ही रहता है। **होरा लग्न** विषम ५ राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक पुरुषार्थी, उच्चपदाभिलाषी, शूरवीर होगा, गुरु, मंगलादि मित्र ग्रह साथ में हों तो व्यक्ति विद्वान, धन धान्य युक्त उत्तम मित्र युक्त, उच्चपदासीन, नेता व सम्पत्तिवान् होगा। यदि सम ४ राशि सूर्य होरा में शनि, भौम क्षीण चंद्र, राहु आदि पाप ग्रह हों तो जातक नीच प्रकृति वाला, कुल मर्यादा विरुद्ध आचरण करने वाला एवं निर्धनी होता है। **होरा लग्न** में सम राशि हो और चन्द्रमा उसी में स्थित हो तथा साथ में शुक्रादि शुभ ग्रह हों तो जातक मृदु-भाषी, शान्त स्वभाव, व्यवसायी, समृद्ध, धनी, सुखी परिवार वाला, सुशील व राजदरवार से लाभ प्राप्त करने वाला होगा। यदि चन्द्र होरा में सूर्य, शनि आदि पाप ग्रह हों तो नीचाचरण वाला निर्धनी, नीच कार्यों में प्रवृत्त, सुख में कमी होगी।

द्रेष्काण फल विचार

अपने वर्ग के द्रेष्काण में स्थित सौम्य ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो जातक सत्यवक्ता, धनी, विद्वान् व अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। **द्रेष्काणपति** शुभ ग्रह की राशि में हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हो तो धन, मान व यश की वृद्धि और अनेक सुखों की पूर्ति करता है। **द्रेष्काणपति** चन्द्रमा से युक्त व भौम अथवा शुक्र द्वारा वीक्षित हो तो जातक को स्वार्जित धन की प्राप्ति होती है। **द्रेष्काणेश** शत्रु या नीच राशि में हो तो उस राशि अनुसार शरीर में घाव, चोटादि का चिन्ह होगा। जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा स्थित हो उस द्रेष्काण का स्वामी सौम्य ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो तदग्रहानुरूप शुभफलदायक होगा।

सप्तमांश फल विचार

सप्तमांश लग्नपति चन्द्रमा से युक्त या शुभ ग्रहों द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भाई बन्धुओं से युक्त प्रसिद्ध कांतिवान, धनी, वाक्पटु, एवं मित्रों द्वारा सहायक होता है। सप्तमाँश में पड़े अधिकांश ग्रह उच्च राशिस्थ हों तो जातक समृद्ध, नीच हों तो दरिद्र होता है। सप्तमांशपति पुरुष ग्रह स्वराशि हों या मित्रराशि में हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों तो जातक को सुन्दर, सुशील, गुणी, पुत्र संतान का सुख प्राप्त होता है। **सप्तमांश लग्नपति** पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो अयोग्य व नीच कर्म करने वाली सन्तान होती है। सप्तमांश लग्नपति स्त्री ग्रह हो और शुक्र, बुध आदि स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होंगी। **सप्तमांश** लग्नपति लग्न से ७।८ ।१२वें स्थान में पापग्रह से दृष्ट या गृष्ट हो तो जातक संतानहीन होता है। तृतीय स्थान स्थित रवि या गुरु अथवा भौम सप्तमांश में हो तो जातक सत्यवादी, मनोवांछित अर्थात् निर्वाह योग्य धन प्राप्त करने वाला होता है।

नवमांश कुण्डली विचार

वर्गोत्तम (लग्नानुरूप नवांश) को छोड़कर लग्न का प्रथम नवांश हो तो जातक चंचल, दुष्ट स्वभाव व चोर होता है। **द्वितीय नवांश** हो तो पुरुष संगीत और स्त्रियों का प्रेमी व भोगी होता है। तृतीय नवांश में उत्पन्न धर्मात्मा, रोगी व ज्ञानी होगा। चतुर्थ में उत्पन्न व्यक्ति गुरुभक्त व सम्पन्न होता है। पंचम में दीर्घायु प्रसिद्ध व बहुपुत्र वाला, **षष्ठ** में स्त्री के वशीभूत, नपुसंक अपव्ययी व प्रमादी होता है। सप्तम में उत्पन्न पराक्रमी व बुद्धिमान्, अष्टम नवांश में व्यक्ति कृतघ्न द्वेषी, बहुसंतान युक्त व क्लेश में रहता है। नवांश में उत्पन्न पुरुष प्रतापी, कार्य-कुशल व धनधान्य से युक्त होता है। जो ग्रह जन्मकुण्डली व नवमांश कुण्डली-दोनों में उच्चराशिस्थ या स्वराशिस्थ हो वह वर्गोत्तम कहलाता है जिसका फल अत्युत्तम कहा जाता है। **नवमांश लग्न** का स्वामी मंगल हो या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो जातक की स्त्री मिलनसार, श्वेत वर्ण पर कुछ तेज़ स्वभाव की होगी। बुध हो तो सुन्दर आकृति, चतुर, शिल्पविद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, विद्यावान, धार्मिक स्वभाव व शुभाचरभ वाली। शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगारप्रिय, श्वेतवर्णा सुन्दरी व कामुक होगी। **नवमांशपति शनि** हो तो क्रूर स्वभाव की, श्यामवर्णा पति से विरोध करने वाली स्त्री होती है। नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह स्वराशिस्थ अथवा केन्द्र त्रिकोण में स्थित तो जातक को स्त्री का अच्छा सुख मिलता है। **नवांशपति** भाग्येश के साथ २।५ ।११वें भाव में उच्च या स्वराशि का होकर पड़ा हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल से धन लाभ होता है। नवमांशपति पाप ग्रहों से युक्त या पाप ग्रह से दृष्टय होकर ६, ८वें या १२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। अधिकांश ग्रह यदि नीच नवांश में हों तो जातक पराधीन होकर जीवन निर्वाह करता है। **नवाँश कुण्डली** में जितने पुरुष ग्रह बलवान् होकर ५वें भाव में

स्थित हों व ५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि ५वें चन्द्रमा, शुक्र या बुध हो या इनसे दृष्ट हो तो कन्याएं होती हैं। केतु या शनि होने से गर्भ स्थिर नहीं रहता अर्थात् गर्भपात का भय होता है।

द्वादशांश फल विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख तथा आयु सीमा का विचार किया जाता हैं। **द्वादशांश लग्न** का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि, मित्रराशि या उच्च राशि में स्थित होकर १ ।४ ।५ । ७ ।९ ।१०वें भावों में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि हो तो पिता का अल्प सुख होता है इसी भांति **द्वादशांश लग्न** का स्वामी स्त्री ग्रह शुभ ग्रहों युक्त, स्वराशि, मित्र या उच्चराशिस्थ होकर १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० वें भावों में हो तो माता का विशेष सुख होता है। यदि स्त्री ग्रह पापयुक्त या दृष्ट होकर ६ ।८ ।१२वें भाव में हों तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के द्वादशांश में क्रम से आयु प्रमाण इस प्रकार से वर्णित है। ८०, ८४, ८६, ८४, ६०, ५३, ७०, ५०, ६६, १०० अर्थात् क्रम से द्वादशांश में इतने वर्ष की आयु प्राप्ति की संभावना होती है।

त्रिशांश फल विचार

त्रिशांश में जो ग्रह मित्र के घर में या उच्च में हो वह सभी कार्यों में उत्साही धनी, धर्मिष्ठ व पूज्य होता है। मंगल अपने त्रिशांश में स्थित हो तो वह प्राणी तेजस्वी धैर्यवान स्त्री-धन से युक्त, बुध अपने त्रिशांश में हो तो बुद्धिमान, संगीत, प्रेमी, गुरु हो तो जातक उद्यमी, धनवान, **शुक्र हो** तो जातक बहुपुत्रों वाला, अनेक स्त्रियों से मित्रता करने वाला होता है। **शनि** हो तो परस्त्रीगमन करने वाला, दुःखी व मलिन हृदय होगा।

पंजाब के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
अमृतसर	31 37	74 55	30 20
अजनाला	31 51	74 48	30 48
अटारी	31 37	74 36	31 36
अमलोह	30 37	76 15	25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	26 36
अबोहर	30 08	74 12	33 12
अकालगढ़	29 50	75 54	26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	25 56
अलावलपुर	31 27	75 26	28 16
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	23 52
आदमपुर	31 21	75 26	28 16
उरमर-टाण्डा	31 40	75 41	27 16
कपूरथला	31 23	75 25	28 20
करतारपुर	31 27	75 32	27 52
कादियां	31 49	75 23	28 28
कीरतपुर साहिब	31 11	76 34	23 44
कुराली	30 50	76 35	23 40
कोटकपुरा	30 34	74 52	30 32
खन्ना	30 42	76 13	25 08
खरड़	30 45	76 37	23 32
खेमकरण	31 08	74 35	31 40
गढ़दीवाला	31 44	75 45	27 00
गढ़शंकर	31 13	76 11	25 16
गुरदासपुर	32 03	75 27	28 12
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	29 28
गोराया	31 06	75 47	26 52
गोबिन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	24 28
गुर हरसहाय	30 40	74 32	31 42
घनौर	30 21	76 37	23 32
चण्डीगढ़	30 44	76 53	22 28
चमकौर साहिब	30 55	76 24	24 24

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
छहरटा	31 16	74 53	30 28
जण्डियाला गुरु	31 51	75 37	27 32
जगरांव	30 48	75 30	28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	33 00
जालन्धर	31 19	75 34	27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	28 16
जीरा	30 57	74 59	30 04
जैतों	30 28	74 53	30 28
जैजों	31 21	76 09	25 24
जाखल	29 48	75 41	26 36
ढिलवां	31 25	75 19	28 44
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	31 12
डेरा बाबा नानक	32 02	75 04	29 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	28 36
तरनातरन	31 28	74 58	30 08
तलवाड़ा	32 05	75 38	27 38
तलवंडी साबो	29 59	74 59	30 04
दतारपुर	31 53	75 45	27 00
दसूहा	31 49	75 39	27 24
दीनानगर	32 08	75 30	28 00
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	25 56
दमदमा साहिब	30 50	76 04	25 44
दौलतपुर	31 58	75 38	27 28
धारीवाल	31 57	75 19	28 44
धूरी	30 22	75 52	26 32
धर्मकोट	30 53	75 14	29 04
नकोदर	31 07	75 29	28 04
नूरमहल	31 01	75 22	28 32
नवांशहर	31 07	76 08	25 28
नाभा	30 25	76 09	25 24
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	24 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
नंगल	31 23	76 23	24 28
पटियाला	30 20	76 25	24 20
पट्टी	31 17	74 51	30 36
पठानकोट	32 17	75 42	27 12
फरीदकोट	30 40	74 57	30 12
फाज़िल्का	30 24	74 04	33 44
फगवाड़ा	31 13	75 47	26 52
फतेहगढ़ साहिब	30 39	76 22	24 32
फिल्लौर	31 01	75 48	26 48
फतेहगढ़ (फिरोज)	31 03	75 03	29 48
फिरोज़पुर	30 55	74 40	31 20
बरनाला	30 23	75 33	27 48
बस्सी	30 35	76 50	22 40
ब्यास	31 32	75 18	28 48
बसी पठानां	30 40	76 23	24 28
बटाला	31 49	75 14	29 04
बंगा	31 11	75 59	26 04
बलाचौर	31 03	76 19	24 44
बेला	30 56	76 24	24 24
बिलगा	31 02	75 26	28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	27 44
भटिण्डा	30 11	75 00	30 00
भुलत्थ	31 32	75 32	27 32
भवानीगढ़	30 16	76 01	25 56
भुच्चो (मंण्डी)	30 13	75 06	29 36
भीखीविण्ड	31 21	74 52	31 12
मजीठा	31 46	74 57	30 12
मोरांवली	31 18	76 01	25 56
मुकेरियां	31 57	75 37	27 32
मलोट	30 13	74 29	32 04
मलकाणा	29 56	75 03	29 48
मलेरकोटला	30 31	75 59	26 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
मोगा	30 48	75 10	29 20
मोरिण्डा	30 48	76 30	24 00
माच्छीवाड़ा	30 56	76 14	25 04
मोहाली	30 43	76 42	23 12
मानसा (मण्डी)	29 59	75 23	28 28
मुबारिकपुर	30 37	76 51	22 36
मुक्तसर	30 29	74 31	31 56
राजपुरा	30 29	76 34	23 44
रामपुरा फूल	30 17	75 14	29 04
रायकोट	30 41	75 36	27 36
राहों	31 03	76 07	25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	23 52
लोहियां खास	31 08	75 28	28 04
लहरगागा	29 55	75 54	26 04
लुधियाना	30 55	75 54	26 24
शाहकोट	31 03	75 19	28 44
शाहपुर	32 17	75 46	26 56
संगरूर	30 12	75 53	26 28
सुजानपुर	32 19	75 26	28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 11	75 12	29 12
सरहिन्द	30 38	76 23	24 28
समराला	30 51	76 11	25 16
सनौर	30 18	76 30	24 00
समाना	30 09	76 12	25 12
सोहाणां	30 42	76 42	23 12
सुनाम	30 08	75 48	26 48
हमीरा	31 27	75 19	28 44
हरयाणा	31 36	75 48	26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	30 12
होशियारपुर	31 32	75 57	26 12
हाजीपुर	31 57	75 37	27 32

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट–जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश में उतने मिनट पश्चिम है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अमृतसर (पंजा.)	31 37	74 55	-30 20
अलीगढ़ (उ. प्र.)	27 54	78 06	-17 36
अगरतला (त्रिपुरा)	23 49	91 18	+35 12
अटारी (पं.)	31 36	74 35	-31 40
अहमदाबाद (गुज.)	23 03	72 40	-39 20
अहमदनगर (महा.)	19 05	74 48	-30 48
अखनूर (काश.)	32 54	74 45	-31 00
अजमेर (राज.)	26 27	74 42	-31 12
अल्मोड़ा (उत्तरां)	29 37	79 40	-11 20
अलवर (राज.)	27 34	76 38	-23 28
अमरावती (महा.)	20 56	77 48	-18 48
अम्बाला (हर.)	30 21	76 52	-22 32
अम्बिकापुर (म. प्र.)	23 10	83 15	+03 00
अंकलेश्वर (गुज.)	21 38	73 03	-37 48
अमेठी (उ. प्र.)	26 08	81 50	-02 40
अमरोहा (उ. प्र.)	28 54	78 29	-16 04
आनन्दपुर सा. (पं.)	31 15	76 32	-23 52
आनन्द (गुज.)	22 32	73 00	-38 00
अनन्तनाग (काश.)	33 43	75 12	-29 12
अनूपगढ़ (राज.)	29 07	73 06	-37 36
आजमगढ़ (उ. प्र.)	26 03	83 13	+02 52
अयोध्या (उ. प्र.)	26 48	82 14	-01 04
अबोहर (पंजा.)	30 08	74 12	- 33 12
आसनसोल (बंगा.)	23 42	87 01	+18 04
आगरा (उ. प्र.)	27 10	78 00	-18 00
आबू (राज.)	24 40	72 45	-39 00
इलाहाबाद (उ. प्र.)	25 28	81 54	-02 24
इटावा (उ. प्र.)	26 47	79 02	-13 52
इम्फाल (मणि.)	24 46	93 58	+45 52
इन्दौर (म. प्र.)	22 44	75 50	-26 40
इटारसी (म. प्र.)	22 30	77 55	-18 20
उदयपुर (राज.)	24 35	73 41	-35 16

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उज्जैन (म. प्र.)	23 09	75 43	-27 08
उन्नाव (उ. प्र.)	26 33	80 31	-07 56
उत्तरकाशी (उत्तरां.)	30 44	78 27	-16 12
ऊना (हि. प्र.)	31 32	76 18	-24 48
उधमपुर (ज. का.)	32 55	75 07	-29 32
ऋषिकेश (उत्तरां)	30 07	78 18	-15 12
ऐजावल (मिज़ो)	23 43	92 44	+40 56
एटा (उ. प्र.)	27 38	78 40	-15 20
औरंगाबाद (महा.)	19 53	75 23	-28 28
कटक (उड़ी.)	20 28	85 54	+13 36
कठुआ (ज. का.)	32 22	75 31	-27 56
कारगिल (ज. का.)	34 30	76 13	-25 08
किश्तवाड़ (ज. का.)	33 19	75 48	-26 48
कटरा (ज. का.)	33 01	74 58	-30 08
कटनी (म. प्र.)	23 47	80 27	-08 12
करनाल (हरि.)	29 42	77 02	-21 52
करतारपुर (पंजा.)	31 27	75 32	-27 52
कपूरथला (पंजा.)	31 23	75 25	-28 20
करौली (राज.)	26 30	77 01	-21 56
कांगड़ा (हि. प्र.)	32 05	76 18	-24 48
कानपुर (उ. प्र.)	26 28	80 22	-08 32
कालका (हरि.)	30 49	76 57	-22 12
कुल्लू (हि. प्र.)	31 58	77 10	-21 20
कुराली (पंजाब)	30 50	76 35	-23 40
कोटकपूरा (पंजाब)	30 34	74 52	-30 32
कादियां (पंजाब)	31 49	75 23	-28 28
करसोग (हि. प्र.)	31 23	77 14	-21 04
किन्नौर (हि. प्र.)	31 32	78 20	-16 40
कंडाघाट (हि. प्र.)	30 57	77 08	-21 28
कोहिमा (ना.)	25 41	94 07	+46 28
कुमारसेन (हि. प्र.)	31 18	77 37	-19 32
कुरुक्षेत्र (हरि.)	29 59	76 48	-22 48

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कैथल (हरि.)	29 48	76 26	-24 16
कोल्हापुर (महा.)	16 42	74 16	-32 56
कोचीन (केर.)	9 58	76 14	-25 04
कोलकाता (बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोटखाई (हि.प्र.)	31 08	77 36	-19 36
कन्नौज (उ. प्र.)	27 03	79 58	-10 08
कोटा (राज.)	25 10	75 52	-26 32
खन्ना (पंजाब)	30 42	76 13	-25 08
खरड़ (पंजाब)	30 45	76 37	-23 32
खुर्जा (उ. प्र.)	28 15	77 50	-18 40
खण्डवा (म. प्र.)	21 50	78 07	-24 28
खेमकरण (पं.)	31 08	74 35	-31 40
गया (बिहार)	24 49	85 01	+10 04
गगरेट (हि. प्र.)	31 41	76 04	-25 44
ग्वालियर (म. प्र.)	26 14	78 10	-17 20
गंगटोक (सि.)	27 22	88 36	+24 24
गिलगित (ज. का.)	35 55	74 22	-32 32
गुरदासपुर (पंजाब)	32 03	75 27	-28 12
गुड़गांव (हरि.)	28 28	77 04	-21 44
गोरखपुर (उ. प्र.)	26 45	83 24	+03 36
गुवाहाटी (आसा.)	26 11	91 47	+37 08
गोधरा (गुज.)	22 45	73 40	-35 20
गाजीपुर (उ. प्र.)	25 34	83 35	+04 20
गोइंदवाल (पंजा.)	31 22	75 08	-29 28
गोराया (पंजा.)	31 06	75 47	-26 52
गोण्डा (उ. प्र.)	27 08	82 01	-01 56
गढ़शंकर (पंजा.)	31 13	76 11	-25 16
गाजियाबाद (उ. प्र.)	28 40	77 26	-20 16
गाजीपुर (उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गुलमर्ग (ज. का.)	34 05	74 25	-32 20
गुना (म.प्र.)	24 40	77 20	-20 40
गोवा (पंजिम)	15 27	73 50	-34 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
गोलकुण्डा (आ. प्र.)	17 24	78 23	-16 28
घुमारवीं (हि. प्र.)	31 28	76 42	-23 12
चम्बा (हि. प्र.)	32 34	76 08	-25 28
चित्तौड़गढ़ (राज.)	24 54	74 42	-31 12
चण्डीगढ़ (के. प्र.)	30 44	76 52	-22 32
चन्दौसी (उ. प्र.)	28 27	78 49	-14 44
चमौली (उत्तरां.)	30 24	79 21	-12 36
चूरु (राज.)	28 19	75 01	-29 56
छपरा (बिहा.)	25 47	84 45	+ 9 00
छतरपुर (म.प्र.)	24 54	79 38	-11 28
छिन्दवाड़ा (म. प्र.)	22 03	78 58	-14 08
जालन्धर (पंजा.)	31 19	75 34	-27 44
जण्डयाला	31 36	75 03	-29 48
जंडियाला गुरु	31 51	75 37	-27 32
जम्मू (ज. का.)	32 43	74 54	-30 24
जौनपुर (उ. प्र.)	25 46	82 44	+00 56
जैसलमेर (राज.)	26 55	70 54	-46 24
जयपुर (राज.)	26 55	75 52	-26 32
जीन्द (हरि.)	29 19	76 21	-24, 36
जमशेदपुर (बिहार)	22 50	86 10	+14 40
जामनगर (गुज.)	22 27	70 07	-49 32
जोगिन्द्रनगर (हि. प्र.)	31 58	76 45	-23 00
जोधपुर (राज.)	26 18	73 04	-37 44
जबलपुर (म. प्र.)	23 10	79 59	-10 04
जलगांव (महा.)	21 03	75 39	-27 24
जैतों (पंजाब)	30 28	74 53	-30 28
ज़ीरा	30 57	74 59	-30 04
जगाधरी (हरि.)	30 10	77 16	-20 56
ज्वालामुखी (हि. प्र.)	31 53	76 20	-24 40
जाखल (हरि.)	29 49	75 49	-26 44
जूनागढ़ (गुज.)	21 31	70 36	-47 36
जोरहाट (आसा.)	26 46	94 16	+47 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
झांसी (उ. प्र.)	25 27	78 37	−15 32
झरिया (बिहार)	23 50	86 24	+15 36
झुंझुनू (राज.)	28 06	75 25	−28 20
टांडा उडमड़ (पंजा.)	31 40	75 39	−27 24
टोहाना (हरि.)	29 43	75 53	−26 28
टिहरी (उत्तरां.)	30 20	78 00	−16 00
टोंक (राज.)	26 11	75 50	−26 40
टोडारायसिंह (राज.)	26 00	75 29	−28 04
डबवाली मंडी (पं.)	29 59	74 42	−31 12
डोडा (ज. का.)	33 11	75 34	−27 44
डलहौज़ी (हि. प्र.)	32 31	76 00	−26 00
डिब्रूगढ़ (आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डिगबोई (आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डूँगरपुर (राज.)	23 50	73 43	−35 08
तरनतारन (पंजा.)	31 28	74 58	−30 08
तिरुपति (आंध्र)	13 40	79 24	−12 24
तेजपुर (आसा.)	26 38	92 49	+41 16
त्रिवेन्द्रम (के.)	08 29	76 57	−22 12
थानेसर (हरि.)	29 58	76 56	−22 16
दिल्ली	28 39	77 12	−21 12
देहरादून (उत्तरां.)	30 19	78 04	−17 44
दसूहा (पंजा.)	31 49	75 39	−27 24
दीनानगर (पंजा.)	32 08	75 30	−28 00
देहरा गोपीपुरा (हि.प्र.)	31 55	76 14	−25 04
देवास (म. प्र.)	22 58	76 06	−25 36
दतारपुर (पंजा.)	31 53	75 45	−27 00
दार्जिलिंग (बंगा.)	27 03	88 18	+23 12
दुर्गापुर (बंगा.)	23 30	87 20	+19 20
दुर्ग (छत्तीसगढ़)	21 10	81 17	−04 52
द्वारिका (गुज.)	22 14	69 01	−53 56
देवरिया (उ. प्र.)	26 32	83 45	+05 00
दतिया (म. प्र.)	25 39	78 27	−16 12
धनबाद (बिहा.)	23 47	86 30	+16 00
धर्मशाला (हि. प्र.)	32 16	76 23	−24 28
धौलपुर (राज.)	26 42	77 53	−18 28
धूरी (पंजा.)	30 22	75 52	−26 32
नागौर (राज.)	27 11	73 40	−35 20

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
नवलगढ़ (राज.)	27 51	75 18	−28 48
नकोदर (पंजा.)	31 07	75 29	−28 04
नूरमहल (पंजा.)	31 01	75 22	−28 32
नौहर (राज.)	29 11	74 46	−30 56
नसीराबाद (राज.)	26 18	74 46	−30 56
नरवाणा (हरि.)	29 36	76 08	−25 28
नासिक (महा.)	20 01	73 50	−34 40
नागपुर (महा.)	21 09	79 09	−13 24
नारनौल (हरि.)	28 02	76 14	−25 04
नंगल (पंजा.)	31 23	76 23	−24 28
नवांशहर (पंजा.)	31 07	76 08	−25 28
नाभा (पंजा.)	30 25	76 09	−25 24
नाहन (हि. प्र.)	30 33	77 21	−20 36
नालागढ़ (हि. प्र.)	30 57	76 22	−24 32
नैनीताल (उत्तरां.)	29 23	79 30	−12 00
नौशेहरा (ज. का.)	33 11	74 17	−32 52
पठानकोट (पंजा.)	32 17	75 42	−27 12
पटियाला (पंजा.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी (पंजा.)	31 17	74 51	−30 36
पंचकूला (हरि.)	30 43	76 53	−22 28
पानीपत (हरि.)	29 23	77 01	−21 56
पिहोवा (हरि.)	29 56	76 36	−23 36
पिथौरागढ़ (उत्तरां.)	29 35	80 13	−09 08
पिंजौर (हरि.)	30 49	76 55	−22 20
पुँछ (ज. का.)	33 51	74 08	−33 28
पहलगाँव (ज. का.)	34 01	75 24	−28 24
पटना (बिहार)	25 37	85 13	+10 52
पीलीभीत (उ. प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पालमपुर (हि. प्र.)	32 06	76 33	−23 48
पपरौला (हि. प्र.)	32 04	76 34	−23 44
प्रतापगढ़ (उ. प्र.)	25 50	81 59	−02 04
पाली (राज.)	25 46	73 25	−36 20
पोरबन्दर (गुज.)	21 40	69 37	−51 32
पंचमढ़ी (म. प्र.)	22 30	78 22	−16 32
पुरी (उड़ी)	19 48	85.52	+13 28
पुरुलिया (बंगा.)	23 20	86 24	+15 36
पूना (महा.)	18 34	73 53	−34 28
पोर्टब्लेयर (अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पन्ना (म. प्र.)	24 44	80 14	−09 04
पिलानी (राज.)	28 23	75 35	−27 40
पुष्कर (राज.)	26 30	74 34	−31 44

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पौड़ीगढ़वाल (उत्तरां)	30 09	78 47	−14 52
फतेहगढ़ सा. (पंजा.)	30 39	76 22	−24 32
फैज़ाबाद (उ. प्र.)	26 47	82 06	−01 36
फर्रुखाबाद (उ. प्र.)	27 24	79 35	−11 40
फगवाड़ा (पंजा.)	31 13	75 47	−26 52
फतेहपुर (उ. प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी (उ.प्र.)	27 07	77 40	−19 20
फतेहाबाद (उ. प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद (हरि..)	29 31	75 29	−28 04
फरीदकोट (पंजा.)	30 40	74 45	−31 00
फाज़िल्का (पंजा.)	30 24	74 04	−33 44
फिरोज़पुर (पंजा.)	30 55	74 40	−31 20
फिल्लौर (पंजा.)	31 01	75 48	−26 48
फरीदाबाद (हरि.)	28 25	77 20	−20 40
बटाला (पंजा.)	31 49	75 14	−29 04
बंगा (पंजा.)	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर (पंजा.)	31 03	76 19	−24 44
बद्रीनाथ (उत्तरां.)	30 44	79 30	−12 00
बक्सर (उ. प्र.)	25 35	83 59	+05 56
बड़ौदा (गुज.)	22 18	73 13	−37 08
बड़गाम (ज. का.)	34 00	74 44	−31 04
बरनाला (पंजा.)	30 23	75 33	−27 48
बिजनौर (उ. प्र.)	29 23	78 09	−17 24
बुलन्दशहर (उ. प्र.)	28 24	77 52	−18 32
बनारस (उ. प्र.)	25 20	83 00	+02 00
बरेली (उ. प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बलिया (उ. प्र.)	25 44	84 11	+06 44
बहराईच (उ. प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बदायूं (उ. प्र.)	28 02	79 07	−13 32
बाराबंकी (उ. प्र.)	26 56	81 13	−05 08
बारामूला (ज. का.)	34 10	74 20	−32 40
बनिहाल (ज. का.)	33 32	75 19	−28 44
बल्लभगढ़ (हरि.)	28 21	77 19	−20 44
बहादुरगढ़ (हरि.)	28 42	76 55	−22 20
बीकानेर (राज.)	28 01	73 22	−36 32
बांसवाड़ा (राज.)	23 30	74 24	−32 24
बागपत (उ. प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बून्दी (राज.)	25 27	75 40	−27 20
बैजनाथ (हि. प्र.)	32 03	76 36	−23 36
बिलासपुर (हि. प्र.)	31 19	76 45	−23 00
बिलासपुर (छत्ती.)	22 05	82 12	−01 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बस्तर (म. प्र.)	19 10	81 59	−02 04
बैंगलुरू (क.)	12 58	77 36	−19 36
बुदलाडा (पं.)	29 56	75 34	−27 44
बगुसराय (बि.)	25 25	86 08	+14 32
भटिंडा (पंजाब)	30 11	75 00	−30 00
भद्रवाह (का.)	33 01	75 50	−26 40
भिवानी (हरि.)	28 47	76 08	−25 48
भुवनेश्वर (उड़ी)	20 10	85 50	+13 20
भरतपुर (राज.)	27 05	77 30	−20 00
भावनगर (गुज.)	21 46	72 11	−41 16
भुज (गुज.)	23 15	69 40	−51 20
भिलाई (छत्ती.)	21 13	81 26	−04 16
भिण्ड (म. प्र.)	26 36	78 46	−14 56
भीलवाड़ा (राज.)	25 21	74 40	−31 20
भोपाल (म. प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मलेरकोटला (पंजा)	30 31	75 59	−26 04
मजीठा (पंजाब)	31 46	74 57	−30 12
मलोट (पंजाब)	30 13	74 29	−32 04
मानसा (पंजाब)	29 59	75 23	−28 28
मोगा (पंजाब)	30 48	75 10	−29 20
मोहाली (पंजा.)	30 43	76 42	−23 12
मार्तण्ड (का.)	33 48	75 18	−28 48
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	28 18	76 09	−25 24
मनसादेवी (हरि.)	30 44	76 52	−22 32
मकराना (राज.)	27 04	74 43	−31 08
मेरठ (उ. प्र.)	29 00	77 42	−19 12
मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)	25 10	82 36	+00 24
मुरादाबाद (उ. प्र.)	28 51	78 49	+14 44
मुगलसराय (उ. प्र.)	25 17	83 11	+02 44
मंसूरी (उत्तरां.)	30 27	78 06	−17 36
मथुरा (उ. प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मुज़फ्फर नगर (उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुक्तसर (पंजाब)	30 29	74 31	−31 56
मन्दसौर (म. प्र.)	24 03	75 08	−29 28
मैसूर (कर्ना.)	12 18	76 42	−23 12
मण्डी (हि. प्र.)	31 43	76 58	−22 08
मनीकरण (हि. प्र.)	32 01	77 20	−20 40
मनीमाजरा (ह.)	30 42	76 52	−22 32
मनाली (हि. प्र.)	32 17	77 10	−21 20
मद्रास (चेन्नई) (ता.ना.)	13 05	80 17	−08 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुम्बई (महा.)	19 00	72 54	-38 24	राजकोट (गुज.)	22 18	70 48	-46 48	श्रीगंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40	सिरोही (राज.)	24 54	72 55	-38 20
मोरिण्डा (पं.)	30 48	76 30	-24 00	रामेश्वरम् (ता.)	09 17	79 22	-12 32	श्रीमाधोपुर (राज.)	27 25	75 32	-27 52	सागर (म. प्र.)	23 50	78 48	-14 48
यमुनानगर (हरि.)	30 08	77 16	-20 56	रूड़की (उत्तरां.)	29 52	77 53	-18 28	संगरूर (पं.)	30 12	75 53	-26 28	सिहोर (म. प्र.)	23 12	77 00	-22 00
रामपुर बुशै. (हि. प्र.)	31 28	77 39	-19 24	रुद्रप्रयाग (उत्तरां.)	30 16	78 59	-14 04	सरहिन्द (पं.)	30 38	76 23	-24 28	सहारनपुर (उ. प्र.)	29 58	77 30	-20 00
रोहड़ू (हि. प्र.)	31 12	77 44	-19 04	लुधियाना (पंजा.)	30 55	75 54	-26 24	सुल्तानपुर लोधी (पं.)	31 11	75 12	-29 12	सीतापुर (उ. प्र.)	27 36	80 42	-07 12
रोपड़ (पंजाब)	30 57	76 32	-23 52	लेह (ज. का.)	34 10	77 40	-19 20	समाना (पं.)	30 09	76 12	-25 12	सीतामढ़ी (बि.)	26 35	85 32	+12 -8
राजपुरा (पंजाब)	30 29	76 34	-23 44	लक्सर (उत्तरां.)	29 48	78 02	-17 52	समराला (पं.)	30 51	76 11	-25 16	सीवां (बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
रायकोट (पंजाब)	30 40	75 36	-27 36	ललितपुर (उ. प्र.)	24 41	78 25	-16 20	सुनाम (पंजाब)	30 08	75 48	-26 48	सोमनाथ (गुज.)	21 04	70 26	-48 16
रोहतक (हरि.)	28 54	76 38	-23 28	लैंसडाऊन (उत्तरां.)	29 50	78 41	-15 16	समस्तीपुर (बि.)	25 55	85 50	+13 20	होशियारपुर (पंजा.)	31 32	75 57	-26 12
रिवाड़ी (हरि.)	28 12	76 40	-23 20	लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	-10 00	सिलीगुड़ी (बं.)	26 42	88 26	+23 44	हमीरपुर (हि. प्र.)	31 42	76 30	-24 00
रामबन (ज. का.)	33 14	75 15	-29 00	लखनऊ (यू.पी.)	26 52	80 56	-06 16	साम्बा (ज. का.)	32 33	75 07	-29 32	हांसी (हरि.)	29 06	76 00	-26 00
रियासी (ज. का.)	33 04	74 53	-30 28	लखीमपुर (उ. प्र.)	27 57	80 49	-06 44	सुन्दरनगर (हि. प्र.)	31 33	76 54	-22 24	हिसार (हरि.)	29 10	75 46	-26 56
रामनगर (ज. का.)	32 50	75 22	-28 32	लाडवा (हरि.)	29 59	77 05	-21 40	सोलन (हि. प्र.)	30 55	77 09	-21 24	हरिद्वार (उत्तरां.)	29 58	78 12	-17 12
रतलाम (म. प्र.)	23 21	75 07	-29 32	वाराणसी	25 20	83 00	+02 00	सुजानपुर टि. (हि.प्र.)	31 50	76 31	-23 56	हल्द्वानी (उत्तरां.)	29 13	79 31	-11 56
राजौरी (ज. का.)	33 23	74 18	-32 48	विशाखापट्टनम	17 42	83 20	+03 20	सरकाघाट (हि. प्र.)	31 43	76 22	-24 32	हाथरस (उ. प्र.)	27 36	78 06	-17 36
रायपुर (छत्ती.)	21 15	81 41	-03 16	विदिशा (म. प्र.)	23 32	77 50	-18 40	सिरसा (हरि.)	29 32	75 06	-29 36	हनुमानगढ़ (राज.)	29 35	74 21	-32 36
रायबरेली (उ. प्र.)	26 14	81 16	-04 56	शिमला (हि. प्र.)	31 06	77 13	-21 08	सोनीपत (हरि.)	28 58	76 59	-22 04	हापुड़ (उ. प्र.)	28 43	77 50	-18 40
रामपुर (उ. प्र.)	28 48	79 2	-13 52	शाहदरा (दिल्ली)	28 40	77 20	-20 40	सूरतगढ़ (राज.)	29 19	73 57	-34 12	हरदोई (उ. प्र.)	27 23	80 10	-09 20
राँची (झार.)	23 23	85 23	+11 32	शाहाबाद (हरि.)	30 10	76 55	-22 20	सूरत (गुजरात)	21 10	72 50	-38 40	हसनपुर (उ. प्र.)	28 43	78 17	-16 52
रायसिंहनगर (राज.)	29 32	73 27	-36 12	शाहजहांपुर (उ. प्र.)	27 54	79 57	-10 12	सीकर (राज.)	27 36	75 09	-29 24	हुबली (कर्ना.)	15 20	75 14	-29 04
रानीखेत (उत्तरा.)	29 39	79 25	-12 20	शोलापुर (महा.)	17 42	75 56	-26 16	सवाईमाधोपुर (राज.)	25 59	76 30	-24 00	होशंगाबाद (म. प्र.)	22 46	77 45	-19 00
राबर्टसगंज (उ. प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16	शिलांग (मेघा)	25 34	91 56	+37 44	साम्भर (राज.)	26 55	75 10	-29 20	हैदराबाद	17 24	78 30	-16 00
रिवालसर (हि. प्र.)	31 38	76 50	-22 40	श्रीनगर (का.)	34 06	74 51	-30 36					हावड़ा (बंगाल)	22 25	88 23	+23 32

गण्डमूलादि शान्ति आवश्यक क्यों ?

गण्डान्त नक्षत्रों की शान्ति करवाने का प्रचलन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। फलित दृष्टि से भी आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूलादि गण्डमूलक षड् नक्षत्रों के अरिष्ट प्रभाव का उल्लेख फलित ग्रन्थों में सर्वत्र मिलता है। कुछ गण्डान्त नक्षत्र-चरणों के विशेष अंशों में शिशु के जन्म को अपने शरीर अथवा अपने परिवार के सदस्यों (माता, पिता, भाई आदि) के लिए अशुभ माना गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से तो महान् सन्त तुलसीदासजी का जन्म भी मूल नक्षत्र में होने से, उन्हें भी उसके अरिष्ट प्रभाव स्वरूप माता-पिता के सुख से वंचित रहना पड़ा। केवल गण्डान्त नक्षत्र (आश्ले., मघा, ज्ये., मूल, रेवती एवं अश्विनी) ही अरिष्ट प्रभावोत्पादक नहीं होता, बल्कि कुछ अन्य नक्षत्रों को भी किसी विशेष आयु में अशुभ फल प्रकट करता है।

यदि किसी कारणवश जन्म काल से लगभग 27वें दिन उसी नक्षत्र में गण्डान्त शान्ति न करवाई जा सकी हो, तो जातक के जन्मदिन के आसपास, अथवा 27वें मास या 27वें वर्ष में विवाह से पूर्व उसी गण्डमूल नक्षत्र में शान्ति करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश गण्डान्त शान्ति करवाने वाले सुयोग्य पण्डित न उपलब्ध हो सकें, तो फिर उसी नक्षत्र में जातक द्वारा **महामृत्युञ्जय का पाठ या अमोघ शिव कवच का पाठ,** अथवा **श्री दुर्गा सप्तशती** का **दुर्गा कवच सहित** पाठ करके जातक द्वारा तुलादान करवाकर, उस अनाज को अन्धविद्यालय आदि किसी समाज संस्था में वस्त्र-फल आदि सहित लंगर करवा देना चाहिए। अभुक्त मूल गण्डान्त की स्थिति में तो यदाशक्ति गौओं एवं कुष्टों की सेवा करने का भी विधान है। **ग्रह-नक्षत्रों का प्रतीकात्मक रूप से ध्यान, अर्चन, होमादि करना वास्तव में उस विराट, परमपुरुष परमात्मा की ही पूजा है।** पं. पन्नालाल ज्यो. की छपी 'सम्पूर्ण गण्डमूल शान्ति' मंगवाएं।

हिमाचल प्रदेश के नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर (स्टैण्डर्ड अन्तर सर्वत्र ऋण है।)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं.	सैं.
अम्ब	31	43	76	06	25	36
अर्की	31	09	76	59	22	04
आनी	31	28	77	20	20	40
आलमपुर	31	54	76	30	24	00
इन्दौरा	32	06	75	41	27	16
ऊना	31	32	76	18	24	48
करसोग	31	23	77	14	21	04
कसौली	30	54	77	02	21	52
कथला	31	59	76	47	22	52
कल्पा	31	34	78	16	16	56
कण्डाघाट	30	57	77	08	21	28
कांगड़ा	32	05	76	18	24	48
काला अम्ब	30	29	77	13	21	08
कुफरी	31	07	77	12	21	12
कुम्हारहट्टी	30	52	77	03	21	48
कोटखाई	31	08	77	36	19	36
कोटगढ़	31	19	77	29	20	04
कोटला	32	17	76	02	25	52
कुल्लू	31	58	77	10	21	20
कुमारसेन	31	18	77	37	19	32
कुनिहार	30	58	77	10	21	20
किन्नौर	31	32	78	20	16	40
केलांग	32	37	77	05	21	40
खजियार	32	31	76	03	25	40
गर्ली (परागपुर)	31	48	76	18	24	48
गगरेट	31	41	76	04	25	44
गोहर	31	32	77	02	21	52
घुमारवीं	31	28	76	42	23	12
चम्बा	32	34	76	08	25	28
चच्योट	31	36	77	04	21	44
चामुण्डा देवी	32	08	76	22	24	32
चिन्तपूरणी	31	47	76	04	25	44
चायल	31	03	77	14	21	04
चौपाल	30	58	77	36	19	36
जवाली	32	06	76	01	25	56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं.	सैं.
जस्सूर	32	17	75	55	26	20
जतोग	31	08	77	08	21	28
जुब्बल	31	07	77	38	19	28
जोगिन्द्र नगर	31	58	76	45	23	00
ज्वालामुखी	31	53	76	20	24	40
टीसा	32	48	76	12	25	12
ठयोग	31	08	77	33	19	48
डमटाल	32	13	75	41	27	16
डगशाई	30	53	77	06	21	36
डल्हौज़ी	32	31	76	00	26	00
डैहर	31	29	76	52	22	22
ढलियारा	31	52	76	11	25	16
तारादेवी	31	04	77	10	21	20
तत्तापानी	31	14	77	10	21	20
त्रिलोकनाथ	32	43	76	39	23	24
त्रिलोकपुर	30	34	77	09	21	24
ददाहू	30	35	77	28	20	08
देहरा गोपीपुर	31	55	76	14	25	04
दौलतपुर	31	46	75	58	26	08
धनेटा	31	38	76	29	24	04
धर्मशाला	32	16	76	23	24	28
धर्मपुर	30	54	77	04	21	44
धारा	31	49	77	15	21	00
धौलाकुआं	30	30	77	29	20	04
नगर	32	08	77	08	21	28
नगरोटा बगवां	32	06	76	22	24	32
नादौन	31	47	76	22	24	32
नाहन	30	33	77	21	20	36
नालागढ़	30	57	76	22	24	32
नूरपुर	32	18	75	56	26	16
नगरोटा	32	07	76	23	24	28
निरमण्ड	31	28	77	34	19	44
नारकण्डा	31	15	77	28	20	08
नैना देवी	31	19	76	31	23	56
पच्छाद	31	47	77	08	21	28

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं.	सैं.
पण्डोह	31	41	77	07	21	32
पपरोला	32	04	76	34	23	44
परवाणू	30	52	77	05	21	40
पाओंटा साहिब	30	28	77	38	19	28
पालमपुर	32	06	76	33	23	48
बरसर (भोटा)	31	34	76	28	24	08
बसौली	31	34	76	23	24	28
बंगाना तै.	31	33	76	27	24	16
बड़ागांव	31	20	77	15	21	00
बंजार	31	40	77	20	20	40
बनीखेत	32	32	75	58	26	08
बकलोह	32	27	75	59	26	04
बिलासपुर	31	19	76	45	23	00
बैजनाथ	32	03	76	36	23	36
भरवाईं	31	47	76	07	25	36
भरमौर	32	27	76	32	23	52
भुन्तर	31	54	77	09	21	24
भांखड़ा	31	20	76	30	24	00
मण्डी	31	43	76	58	22	08
मनाली	32	17	77	10	21	20
मनीकरण	32	01	77	20	20	40
मुबारकपुर	31	44	75	59	26	04
मशोबरा	31	07	77	14	21	04
मंगवाल	32	03	76	05	25	40
महासू	31	05	77	13	21	08
मैहतपुर	31	22	76	17	24	52
रिवालसर	31	38	76	50	22	40
रामपुर बुशैहर	31	28	77	39	19	24
राजगढ़	30	52	77	22	20	32
रायसन	32	05	77	07	21	32
रोहड़ू	31	12	77	44	19	04
लाहौल स्पीति	32	31	77	01	21	56
शाहपुर	32	14	76	12	25	12
शिमला	31	06	77	10	21	20
शेरपुर	32	34	75	59	26	04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं.	सैं.
सपाटू	30	59	76	59	22	04
सरकाघाट	31	43	76	22	24	32
सन्धोल	31	59	76	45	22	56
संतोखगढ़	31	21	76	20	24	40
सैंज	31	49	77	19	20	44
सोलन	30	55	77	09	21	24
सुन्दरनगर	31	33	76	54	22	24
सुजानपुर टिहरा	31	50	76	31	23	56
हमीरपुर	31	42	76	30	24	00
हड़सर	32	21	76	33	23	48
हाटकोटी	31	09	77	44	19	04
हरिपुर	32	39	76	11	25	16
हरिपुरधार	30	53	77	28	20	08

राजस्थान के मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
अजमेर	26 27	74 42	31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	37 36
अलवर	27 34	76 38	23 28
असोप	26 48	73 44	35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	25 30
अमेट	25 20	73 59	34 04
आबू	24 40	72 45	39 00
आमेर	26 59	75 52	26 32
उदयपुर	24 35	73 41	35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	34 56
करौली	26 30	77 01	21 56
कांकरोली	25 02	73 54	34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	30 32
केकड़ी	25 55	75 10	29 20
कोटा	25 10	75 52	26 32
खण्डेला	27 37	75 32	27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	35 44
गंगानगर	29 49	73 50	34 40
गंगापुर (टोंक)	26 29	76 46	22 56
गंगापुर (भीलवाड़ा)	25 13	74 16	32 56
घोटारू	27 18	70 04	49 44
चात्सू	26 36	75 59	26 04
चितौड़गढ़	24 54	74 42	31 12
चूरू	28 19	75 01	29 56
चौमू	27 08	75 47	26 52
चोटां	25 28	71 06	45 36
छाबरा	24 40	76 54	22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	31 36
जयपुर	26 55	75 52	26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	40 00
जालौर	25 22	72 38	39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	46 24
जोधपुर	26 18	73 04	37 44
जोधासर	28 07	73 50	34 40
झालावाड़	24 36	76 09	25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	28 04
टोंक	26 11	75 50	26 40
डूंगरपुर	23 50	73 43	35 08
डीडवाना	27 17	74 25	32 20
तिजारा	27 55	76 50	22 40
थानागाजी	27 25	76 19	24 44
देओरा	26 30	70 42	47 12
देचू	26 47	72 20	40 40

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
देवली	25 46	75 25	28 20
देवलिया	24 38	74 42	31 12
देवीकोट	26 38	71 07	45 32
दौसा	26 51	76 21	24 36
धौलपुर	26 42	77 53	18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	30 56
नागौर	27 11	73 40	35 20
नाचना	27 29	71 45	43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	26 48
नोखा	27 35	73 29	36 04
नौहर	29 11	74 46	30 56
पचपदरा	25 55	72 21	40 36
पाली	25 46	73 25	36 20
परबतसर	26 53	74 47	30 52
पिलानी	28 23	75 35	27 40
पल्लू	28 56	74 13	33 08
पुष्कर	26 30	74 34	31 44
पोखरन	26 56	71 55	42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	30 00
फलौदी	27 09	72 22	40 32
फुलेरा	26 52	75 16	28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	32 08
बयाना	26 55	77 17	20 52
ब्यावर	26 06	74 21	32 36
बाड़मेर	25 46	71 25	44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	23 44
बाप	27 24	72 22	40 32
बाराँ	25 07	76 30	24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	32 24
बालोतरा	25 50	72 14	41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	35 12
बीकानेर	28 01	73 22	36 32
बून्दी	25 27	75 40	27 20
भरतपुर	27 05	77 30	20 00
भादरा	29 15	75 20	28 40
भीनमाल	25 01	72 19	40 44
भीलवाड़ा	25 21	74 40	31 20
मकराना	27 04	74 43	31 08
महाजन	28 49	73 56	34 16

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
मांगरोल	25 21	76 30	24 00
मारवाड़ जंक्शन	25 44	73 45	35 00
मावली	24 48	73 58	34 08
मेड़ता	26 40	74 06	33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	34 20
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	25 56
मुनाबाओ	25 43	70 15	49 00
मोहनगढ़	27 17	71 18	44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	41 08
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	29 20
रामगढ़ (जैसलमेर)	27 23	70 30	48 00
रायसिंहनगर	29 32	73 27	36 12
रीगस	27 21	75 34	27 44
रूपनगर	26 47	74 54	30 24
लछमनगढ़	27 45	75 04	29 44
लाठी	27 03	71 30	44 00
लूनी	26 00	72 52	38 32
शाहगढ़	27 08	69 58	50 08
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	40 36
शेरगढ़ (झालावाड़)	24 41	76 32	23 52
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	27 52
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	45 12
समदड़ी	25 49	72 35	39 40
सरदार शहर	28 27	74 30	32 00
सरूपसर	29 22	73 37	35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	24 00
सांगानेर	26 49	75 52	26 32
सांचोर	24 41	71 50	42 40
साम्भर	26 55	75 10	29 20
सादुलपुर	28 39	75 24	28 24
सिरोही	24 54	72 55	38 20
सिवाना	25 37	72 27	40 12
सिरोही	24 53	72 54	38 24
सीकर	27 36	75 09	29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	32 36

हरियाणा के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.		अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.		अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
अम्बाला	30 21	76 52	22 32	नरवाणा	29 36	76 08	25 28	महेन्द्रगढ़	28 18	76 09	25 24
अलीपुर	29 10	75 52	26 32	नारनौल	28 02	76 14	25 04	माहम	28 58	76 19	24 44
अगरोहा	29 20	75 38	27 28	नारायणगढ़	30 30	77 09	21 24	मोहाना	29 04	76 50	22 40
करनाल	29 42	77 02	21 52	नाहर	28 23	76 23	24 28	यमुनानगर	30 08	77 16	20 56
कलानौर	28 52	76 23	24 28	नीलोखेड़ी	29 52	76 54	22 24	रादौर	30 02	77 06	21 36
कालका	30 49	76 57	22 12	पंचकूला	30 45	76 53	22 28	रैना	29 28	74 54	30 24
कुरुक्षेत्र	29 59	76 48	22 48	पटौदी	28 19	76 48	22 48	रिवाड़ी	28 12	76 40	23 20
केसरी	30 15	76 53	26 28	पलवल	28 10	77 19	20 44	रोडी	29 44	75 15	29 00
कैथल	29 48	76 26	24 16	पानीपत	29 23	77 01	21 56	रोहतक	28 54	76 38	23 28
खतौली	30 37	76 58	22 08	पिंजौर	30 49	76 55	22 20	रिवासा	28 48	75 57	26 12
गुड़गांव	28 29	77 04	21 44	पिपली	29 59	76 52	22 32	लाडवा	29 59	77 05	21 40
गोहाना	29 09	76 41	23 16	पिहोवा	29 56	76 36	23 36	लोहारू	28 16	75 45	27 00
बरोण्डा	29 34	76 58	22 08	फतेहाबाद	29 31	75 30	28 00	शाहाबाद	30 10	76 55	22 20
चरखी दादरी	28 36	76 16	24 56	फरीदाबाद	28 25	77 22	20 32	सिरसा	29 32	75 06	29 36
जगाधरी	30 10	77 16	20 56	बल्लभगढ़	28 21	77 19	20 44	सिवानी	28 55	75 37	27 32
जाखल	29 49	75 49	26 44	बहादुरगढ़	28 42	76 55	22 20	सोनीपत	28 58	76 59	22 04
जीन्द	29 19	76 21	24 36	बरवाला	29 22	75 54	26 44	हसनपुर	27 59	77 29	20 04
झज्जर	28 38	76 39	23 24	भादसों	29 56	76 56	22 16	हांसी	29 06	76 00	26 04
टोहाना	29 43	75 53	26 28	भिवानी	28 47	76 08	25 48	हिसार	29 10	75 46	26 56
थानेसर	29 58	76 56	22 16	मनसादेवी	30 44	76 52	22 32				
दादरी	28 33	77 32	19 52	मनीमाजरा	30 42	76 52	22 32				

जम्मू-कश्मीर के नगरों के अक्षांश-रेखांश

अनन्तनाग	33 43	75 12	29 12	चिलास	35 27	74 06	33 36	बसौली	32 30	75 49	26 24
अखनूर	32 54	74 45	31 00	चुशूल	33 35	78 39	15 24	बारामूला	34 10	74 20	32 40
अवन्तीपुरा	33 56	75 03	29 48	छम्ब	32 51	74 23	32 28	भद्रवाह	33 01	75 50	26 40
अमरनाथ गुफा	34 13	75 33	27 48	जम्मू	32 43	74 54	30 24	मार्तण्ड	33 48	75 18	28 48
इस्कुमान	36 36	73 50	34 40	जंगला	33 40	77 00	22 00	मिनीमर्ग	34 49	75 02	29 52
उड़ी	34 04	74 02	33 52	जास्कार	33 30	77 00	22 00	मुजफ्फराबाद	34 22	73 31	35 56
ऊधमपुर	32 55	75 07	29 32	जस्मेरगढ़	32 18	75 05	29 40	मनावर	32 50	74 25	32 20
कठुआ	32 22	75 31	27 56	डोडा	33 11	75 34	27 44	रामनगर	32 50	75 22	28 32
कटरा	33 01	74 58	30 08	तेरू	36 11	72 45	39 00	राजौरी	33 23	74 18	32 48
कारगिल	34 30	76 13	25 08	द्रास	34 22	75 50	26 40	रामबन	33 14	75 15	29 00
केरन	34 40	73 59	34 04	नवांशहर	32 30	74 46	30 56	रियासी	33 04	74 53	30 28
किश्तवाड़	33 19	75 48	26 48	नागिर	36 17	74 45	31 00	लेह	34 10	77 40	19 20
कोटली	33 30	73 57	34 12	नौशेहरा	33 11	74 17	32 52	वैष्णो देवी	33 03	74 56	30 16
कुलगाम	33 42	75 02	29 52	पदम	33 28	76 54	22 24	वूलर	34 20	74 37	31 22
खयालू	35 10	76 20	24 40	पहलगांव	34 01	75 24	28 24	शेरकिला	36 05	74 04	33 44
खरताक्षो	34 53	76 12	25 12	परिपंजाल	33 36	74 22	22 32	श्रीनगर	34 06	74 51	30 36
गुलमर्ग	34 05	74 25	32 20	पुंछ	33 51	74 08	33 28	साम्बा	32 33	75 07	29 32
गिलगित	35 55	74 22	32 32	बनिहाल	33 32	75 19	28 44	सोपूर	34 19	74 30	32 00
गुरयास	34 38	74 56	30 16	बटोटी	33 06	75 19	28 44	सोनामर्ग	34 19	75 20	28 40
चिनेनी	33 01	75 20	28 40	बटोत	33 10	75 06	29 36	सोन्दर	33 29	75 57	26 12
				बड़गाम	34 00	74 44	31 04	सोपुर	34 19	74 30	32 00

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंगलैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंगलैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। **जैसे– एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। पं. विवेक शर्मा

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
अर्थीस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	-24 32	30 00 पू.	+03 30
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	-21 12	180 00 पू.	-06 30
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	-02 48	75 00 प.	+10 30
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	-22 20	60 00 पू.	+01 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	-31 00	90 00 प.	+11 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	-38 56	90 00 प.	+11 30
ऐब्टसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	-10 00	120 00 प.	+13 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland)	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	-40 28	15 00 पू.	+04 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)*	England	55 52 उ.	3 12 प.	-12 48	00 00	+05 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 29 प.	-33 56	105 00 प.	+12 30
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	-5 00	00 00	+05 30
इस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
इस्तबूल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	-04 00	30 00 पू.	+03 30
काठमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	-03 44	86 15 पू.	-00 15
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	-73 20	120 00 पू.	-02 30
कुवैत	Kuwait	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
कराची	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	-31 48	75 00 पू.	+00 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	-08 00	67 30 पू.	+01 00
कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	-07 28	82 30 पू.	+00 00
कोलम्बो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	-10 56	82 30 पू.	00 00
कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	-10 00	15 00 पू.	+04 30
कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	-39 56	75 00 प.	+10 30
कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	-09 20	90 00 प.	+11 30
कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	-36 12	105 00 प.	+12 30
ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	35 24	15 00 पू.	+04 30
जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	-07 16	105 00 पू.	-01 30
जाफना	Sri Lanka	09 10 उ.	80 00 पू.	10 00	82 30 पू.	00 00
जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	17 32	75 00 प.	+10 30
टोक्यो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	19 04	135 00 पू.	-03 30
टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	5 48	120 00 प.	+13 30
डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	04 08	00 00	+05 30
डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	32 12	75 00 प.	+10 30
डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	25 00	00 00 प.	+05 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
न्यूजर्सी (E.T.)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 09 प.	+03 24	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट(Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकांक	Thailand	13 43 उ.	100 31 पु.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीजिंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रैडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
बेकर्जफील्ड(Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 प.	+13 30
ब्रिसटल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30
मस्कट	(Oman)	23 37 उ.	58 35 पू.	-5 40	60 00 पू.	+01 30
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मौंट्रियाल (Montreal)*	Canada (E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada (E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
*रोम (Rome)	Italy	41 55 उ.	12 27 पू.	-10 12	15 00 पू.	+04 30
लाहौर (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एजलंस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वौलवरहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada (P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada (P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वैलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकांगो (C.T.)*	U.S.A.	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A (P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A (P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैम्लटन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	39 08 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (—) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (—) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३० 'के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३० 'पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (—) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर —२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (—२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे—इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

—शुभचिन्तक पं. पन्ना लाल गणितकर्त्ता

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या — करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4. 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्तू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग २ मिनट घटाने तथा अस्त में २ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में ११ अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय ६ घण्टे १ मिनट तथा सूर्यास्त १८ घण्टे ४४ मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार—१ घण्टे ०४ मिनट घटाने से हमें ५ घण्टे ५९ मिनट ५६ सैकेण्ड और १८ घण्टे ४२ मिनट २६ सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्तू	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
कोटरवाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३ मिनट घटाने तथा अस्त में ३ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		जयपुर		हरिद्वार		वाराणसी		जम्मू		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	7 20	17 40	7 17	17 24	6 48	17 15	7 37	17 29	7 18	17 31	7 24	17 28	7 16	18 08	1
2	35	34	29	31	23	30	21	33	20	41	17	25	48	16	37	30	18	32	25	28	16	09	2
3	35	35	29	32	23	31	21	34	21	43	17	25	48	17	37	31	19	32	25	29	16	10	3
4	35	36	29	33	24	32	22	35	21	43	33	26	48	17	38	32	19	33	25	30	17	10	4
5	35	36	29	34	24	32	22	35	21	43	18	27	49	18	38	32	19	34	25	31	17	11	5
6	35	37	29	35	24	33	22	36	21	44	18	28	49	19	38	33	19	34	25	31	17	11	6
7	35	38	29	36	24	34	22	37	22	45	18	28	49	20	38	34	19	35	25	32	17	12	7
8	35	39	29	36	24	35	22	38	22	46	18	29	49	20	38	36	19	36	25	33	17	12	8
9	35	40	29	37	24	36	22	39	22	46	18	30	49	21	39	37	19	37	25	34	17	13	9
10	35	40	29	38	24	37	22	39	22	47	18	31	49	22	39	38	19	38	25	35	18	14	10
11	35	41	29	39	24	38	22	40	22	48	18	32	49	23	39	38	20	38	25	36	18	14	11
12	35	42	29	39	24	39	22	41	22	49	18	32	49	23	38	39	20	39	25	36	18	15	12
13	35	43	29	40	24	40	22	42	22	50	18	33	49	24	38	39	19	40	25	37	19	16	13
14	35	44	29	41	24	40	22	43	21	50	18	34	49	25	38	40	19	41	25	38	19	17	14
15	35	45	29	42	24	41	22	44	21	51	18	35	49	26	38	42	19	42	25	39	19	17	15
16	35	46	29	43	24	42	22	45	21	52	18	36	49	26	37	43	19	42	25	40	19	18	16
17	34	47	29	44	24	42	21	46	21	53	18	37	49	27	37	43	19	43	24	41	19	18	17
18	34	47	28	46	23	43	21	46	21	53	17	38	49	28	37	44	19	44	24	42	19	19	18
19	34	48	28	47	23	44	21	47	21	54	17	39	49	29	36	45	18	45	24	43	19	20	19
20	34	49	28	46	23	45	21	48	21	55	17	40	49	29	36	46	18	46	24	43	19	20	20
21	33	50	27	47	23	46	20	48	20	56	17	41	49	30	36	47	18	47	24	44	19	21	21
22	33	51	27	48	22	47	20	49	21	56	16	42	49	31	35	48	18	47	23	45	19	22	22
23	33	52	27	49	22	48	20	50	20	57	16	43	48	32	35	49	17	48	23	46	19	22	23
24	32	53	27	50	21	49	20	51	20	58	16	43	48	32	35	50	17	49	23	47	19	23	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	19	17 59	15	44	48	33	35	51	17	50	22	48	19	23	25
26	31	55	26	52	21	50	19	53	19	18 00	15	44	47	34	34	52	16	51	22	49	18	24	26
27	31	56	25	53	20	51	19	54	18	01	14	46	47	35	33	53	16	52	21	50	18	24	27
28	30	57	25	54	20	52	18	55	18	01	14	46	47	35	32	54	16	52	21	51	18	25	28
29	30	58	24	55	19	53	18	56	18	02	13	47	46	36	32	55	15	53	20	52	18	25	29
30	29	58	23	56	19	54	17	56	17	03	13	48	46	37	31	56	15	54	20	53	18	26	30
31	7 29	17 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	7 17	18 03	7 12	17 49	6 46	17 38	7 31	17 57	7 14	17 55	7 19	17 54	7 18	18 27	31
फर.	7 28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	7 16	18 04	7 12	17 50	6 45	17 38	7 30	17 57	7 14	17 56	7 19	17 54	7 17	18 28	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	59	16	05	11	50	45	39	29	58	13	57	18	55	17	28	2
3	27	02	21	17 59	17	57	15	17 59	15	06	11	51	44	40	29	58	12	57	17	56	17	29	3
4	26	03	21	18 00	16	58	14	18 00	55	06	10	52	44	41	28	17 59	12	58	17	57	16	29	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	01	14	07	09	53	43	41	28	18 00	11	17 59	16	58	16	30	5
6	25	05	21	02	15	18 00	13	02	14	08	09	54	43	42	27	02	11	18 00	15	59	16	30	6
7	24	06	19	02	14	01	13	03	14	08	08	55	42	43	26	03	10	01	15	17 59	15	31	7
8	7 23	18 07	18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	7 13	18 09	7 07	17 56	6 41	17 43	7 25	18 04	7 09	18 01	7 14	18 00	7 15	18 31	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	6 52	18 10	7 07	17 56	6 41	17 44	7 24	18 05	7 09	18 02	7 13	18 01	7 14	18 32	9
10	21	08	16	05	11	04	10	06	11	11	06	57	40	45	23	06	08	03	12	02	14	32	10
11	20	09	15	06	11	05	09	06	10	12	05	58	39	45	23	07	07	04	11	03	13	33	11
12	20	10	14	07	10	06	09	07	10	12	04	17 59	39	46	22	07	06	05	11	04	13	33	12
13	19	11	13	08	09	06	08	08	09	13	03	18 00	38	47	21	08	05	05	10	04	12	34	13
14	17	12	12	09	08	07	07	09	08	14	03	00	37	47	20	09	05	06	09	05	12	34	14
15	18	13	11	10	07	08	06	09	07	14	02	01	37	48	19	09	04	07	08	06	11	35	15
16	16	14	10	11	06	09	06	10	06	15	01	02	36	49	18	10	03	08	07	07	11	35	16
17	15	14	10	11	05	09	05	11	06	16	7 00	03	35	49	17	11	02	08	06	08	10	36	17
18	13	15	09	12	04	10	04	12	05	16	6 59	04	34	50	16	12	01	09	05	09	09	36	18
19	14	16	08	13	03	11	03	13	44	17	58	04	34	50	15	13	00	10	04	09	09	37	19
20	12	17	07	13	02	11	02	13	43	18	57	05	33	51	14	14	59	11	03	10	08	37	20
21	11	18	06	14	01	12	01	14	02	18	56	06	32	52	13	15	59	11	02	11	08	37	21
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	01	19	55	07	31	52	12	16	58	12	01	12	07	38	22
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	7 00	20	54	07	30	53	11	17	57	13	00	13	06	38	23
24	08	20	03	17	58	14	58	15	6 59	20	53	08	29	53	10	17	56	13	59	14	06	38	24
25	07	21	02	18	57	15	57	16	59	21	52	09	29	54	09	18	55	14	58	15	05	39	25
26	06	22	01	19	56	15	56	16	58	21	51	09	28	55	07	19	54	15	57	15	04	39	26
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	57	23	50	10	27	55	06	20	53	15	56	16	03	39	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 55	18 23	6 49	18 11	6 26	17 56	7 05	18 20	6 52	18 16	6 55	18 16	7 03	18 39	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 55	18 23	6 47	18 12	6 25	17 56	7 03	18 22	6 51	18 17	6 54	18 17	7 02	18 40	मार्च
2	01	25	56	21	52	19	52	19	54	24	46	13	24	57	02	23	50	17	53	17	01	40	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	53	24	45	14	23	57	01	24	49	18	51	18	01	41	3
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	52	25	44	14	22	58	00	25	48	19	50	19	00	41	4
5	57	27	53	23	49	20	49	22	51	26	43	15	21	58	58	26	46	19	49	19	7 00	42	5
6	56	28	51	24	48	21	48	22	50	26	41	16	20	59	57	27	45	20	48	20	6 59	42	6
7	55	29	50	25	47	21	47	23	49	27	40	18	19	17 59	55	28	44	21	47	21	58	42	7
8	54	29	49	25	45	22	45	23	48	27	39	17	18	18 00	54	29	43	21	46	21	57	43	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	46	28	37	38	17	00	53	30	42	22	45	22	56	43	9
10	51	31	46	27	43	23	43	24	45	28	37	18	16	01	52	31	41	22	43	23	55	44	10
11	50	31	45	27	42	24	42	25	44	29	36	19	15	01	50	32	40	23	42	23	54	44	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	43	30	35	20	14	02	49	32	39	24	41	24	53	44	12
13	48	33	43	29	40	26	40	27	42	31	33	20	13	02	48	33	38	24	40	25	53	44	13
14	46	34	42	29	39	27	38	27	41	31	32	21	12	03	47	33	37	25	39	25	52	44	14
15	45	34	40	29	38	27	37	28	40	32	31	21	11	03	45	33	35	25	37	26	51	44	15
16	44	35	39	30	36	28	36	28	39	32	30	22	10	03	44	34	34	26	36	26	51	44	16
17	43	36	38	31	35	28	35	29	38	33	29	23	09	04	43	34	33	26	35	27	50	44	17
18	41	36	36	31	34	29	34	29	37	33	27	23	08	04	42	35	32	27	34	27	49	45	18
19	40	37	35	32	33	30	33	30	36	34	26	24	07	05	41	36	31	28	32	28	48	45	19
20	39	38	34	33	31	31	31	30	35	34	25	25	06	05	40	36	29	28	31	29	47	45	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	33	35	24	25	05	06	39	37	28	29	30	30	46	45	21
22	36	39	32	34	29	32	29	31	32	35	23	26	04	07	38	38	27	29	29	30	45	46	22
23	35	40	31	34	28	32	28	32	31	36	21	26	03	07	36	38	26	30	27	31	45	46	23
24	34	40	30	35	26	33	26	32	30	36	20	27	02	07	35	39	25	30	26	32	44	46	24
25	32	41	28	36	25	33	25	33	29	37	19	28	6 01	08	34	40	24	31	25	32	44	47	25
26	31	42	27	37	24	34	24	33	28	37	18	28	5 00	08	33	41	22	31	24	33	43	47	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 27	18 38	6 17	18 29	5 59	18 09	6 32	18 41	6 22	18 32	6 22	18 34	6 42	18 47	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 26	18 38	6 15	18 29	5 57	18 09	6 30	18 42	6 20	18 32	6 20	18 35	6 41	18 48	28
29	27	44	23	39	20	35	21	36	25	38	14	30	57	09	28	42	19	33	19	35	40	48	29
30	26	44	22	39	19	36	20	36	24	39	13	31	56	10	26	43	18	33	18	36	39	48	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 23	18 39	6 12	18 31	5 55	18 10	6 25	18 44	6 17	18 34	6 16	18 36	6 38	18 49	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 22	18 40	6 10	18 32	5 54	18 11	6 24	18 45	6 16	18 35	6 16	18 37	6 36	18 49	अप्रै.
2	22	46	18	42	15	38	16	38	21	40	09	32	53	11	23	45	15	36	15	37	35	49	2
3	21	47	17	42	14	39	15	38	20	41	08	33	52	11	21	46	13	36	14	38	34	49	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	19	41	07	34	51	12	19	47	12	37	13	39	34	49	4
5	19	48	15	43	12	40	13	39	18	42	06	34	50	12	18	48	11	38	11	40	33	49	5
6	17	49	13	44	11	41	12	40	16	42	05	35	49	13	17	49	10	38	10	40	32	49	6
7	16	50	12	44	10	41	11	40	15	43	03	35	48	13	16	50	09	39	09	41	31	49	7
8	15	50	11	45	09	82	09	41	14	43	02	36	47	14	15	51	08	39	08	42	30	50	8
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	13	44	01	37	46	14	14	52	07	40	07	42	30	50	9
10	16	52	09	47	06	43	07	43	12	44	6 00	37	45	15	12	52	06	40	05	43	29	50	10
11	11	52	07	47	05	43	06	43	11	45	5 59	38	44	15	11	53	04	41	04	44	29	51	11
12	10	53	06	48	03	44	05	44	10	45	58	39	43	15	10	54	03	41	03	45	28	51	12
13	09	54	05	48	02	44	04	44	09	46	57	39	42	16	08	54	02	42	02	45	27	51	13
14	08	54	04	49	01	45	03	45	08	46	55	40	41	16	07	55	01	43	01	46	26	51	14
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	08	46	55	40	41	16	06	56	6 00	43	6 00	46	25	52	15
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	06	47	52	42	39	17	04	56	5 59	44	5 58	47	24	52	16
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	05	48	52	42	38	18	03	57	58	44	57	47	23	52	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	04	48	51	42	37	18	02	58	57	45	56	48	23	53	18
19	02	58	57	53	56	48	58	47	03	49	51	42	37	19	01	58	56	45	55	49	22	53	19
20	01	58	56	54	55	49	57	48	02	49	49	43	35	19	6 00	18 59	55	46	54	49	21	53	20
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	01	50	49	44	34	20	5 59	19 00	54	46	53	50	21	53	21
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	6 01	50	49	45	33	20	58	00	53	47	52	51	20	54	22
23	58	00	53	56	52	51	54	50	5 59	51	47	45	23	21	57	01	52	48	51	52	19	54	23
24	57	01	52	57	51	51	53	51	59	52	46	46	56	21	55	02	51	48	50	52	19	54	24
25	56	02	51	57	50	52	52	51	58	52	45	46	31	21	54	02	50	49	49	53	18	54	25
26	55	02	50	57	49	53	51	52	57	53	44	47	30	22	53	03	49	49	48	54	17	55	26
27	54	03	49	58	48	53	50	52	56	53	43	47	29	22	52	04	48	50	47	54	17	55	27
28	53	04	48	58	47	54	49	53	55	54	42	48	28	23	51	05	47	50	46	55	16	56	28
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	54	54	41	49	27	23	50	06	47	51	45	55	16	56	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 53	18 55	5 40	18 49	5 26	18 24	5 49	19 07	5 46	18 52	5 44	18 56	6 15	18 56	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 53	18 55	5 34	18 50	5 25	18 24	5 48	19 08	5 45	18 52	5 43	18 57	6 15	18 56	मई
2	49	06	45	02	43	57	45	55	52	56	38	51	29	25	47	08	44	53	42	58	14	56	2
3	48	07	43	03	43	57	44	56	51	56	37	51	24	25	46	09	43	53	41	58	14	57	3
4	47	08	43	03	42	58	44	57	50	57	36	52	23	26	45	09	42	54	40	59	13	57	4
5	46	09	42	04	42	59	43	57	50	57	36	53	23	26	44	10	42	54	40	18 59	13	58	5
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	49	58	35	53	22	27	43	11	41	55	39	19 00	12	58	6
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	48	59	34	54	21	27	43	11	40	56	38	01	12	58	7
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	47	18 59	33	55	21	28	42	12	39	56	37	01	12	59	8
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	47	19 00	32	55	19	29	41	13	39	57	36	02	11	59	9
10	42	12	38	07	38	02	40	01	46	00	32	56	19	29	41	14	38	57	36	03	11	18 59	10
11	41	13	37	07	37	02	39	01	46	01	31	56	19	29	40	15	37	58	35	03	10	19 01	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 45	19 01	5 30	18 57	5 18	18 30	5 39	19 16	5 37	18 59	5 34	19 04	6 10	19 01	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	5 36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 44	19 02	5 30	18 58	5 18	18 31	5 39	19 17	5 36	18 59	5 34	19 05	6 09	19 01	13
14	39	15	35	10	35	04	38	03	44	02	29	58	17	31	38	17	35	00	33	05	09	02	14
15	38	15	34	11	34	05	37	03	43	03	28	59	17	32	37	18	35	00	32	06	09	02	15
16	38	16	34	11	33	06	36	04	43	04	28	00	16	32	36	18	34	01	32	07	09	02	16
17	37	17	33	12	33	06	36	04	42	04	27	00	16	33	36	11	34	02	5 31	07	09	03	17
18	37	17	33	12	32	07	35	05	42	05	26	01	15	33	35	20	33	02	5 30	08	08	03	18
19	36	18	32	13	32	08	34	06	41	05	26	02	15	34	35	21	32	03	30	08	08	03	19
20	35	19	32	13	31	08	34	07	41	06	25	02	15	34	34	21	32	03	29	09	07	04	20
21	35	20	31	14	31	09	33	07	40	06	25	03	14	35	33	22	32	04	29	10	07	04	21
22	34	20	31	15	30	09	33	08	40	07	24	03	14	35	33	23	31	05	28	11	07	04	22
23	34	21	30	15	30	10	32	08	40	07	24	04	14	36	32	24	31	05	28	11	06	05	23
24	33	22	30	16	29	10	32	09	39	08	23	05	13	36	31	25	30	06	27	12	06	05	24
25	33	22	29	16	29	11	31	09	39	08	23	05	13	37	30	25	30	06	27	12	06	05	25
26	33	23	29	17	29	11	31	10	39	09	23	06	13	37	30	25	29	07	26	13	06	06	26
27	32	24	28	18	28	12	30	10	38	10	22	06	12	38	30	26	29	07	26	13	06	06	27
28	32	24	28	18	27	13	30	11	38	10	22	07	12	38	29	26	29	08	26	14	05	07	28
29	31	25	27	19	27	14	30	11	38	11	22	08	12	39	29	27	29	08	25	15	05	07	29
30	31	26	27	19	27	14	29	12	37	11	21	08	12	39	29	28	28	09	25	15	05	08	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 37	19 12	5 21	19 09	5 12	18 40	5 29	19 28	5 28	19 09	5 25	19 16	6 05	19 08	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 37	19 12	5 21	19 09	5 11	18 40	5 28	19 29	5 28	19 10	5 25	19 16	6 05	19 08	जून
2	30	27	26	21	26	16	28	13	37	12	21	10	11	40	28	29	28	10	24	16	05	09	2
3	30	27	26	22	26	16	28	14	37	13	20	10	11	41	28	30	27	11	24	17	05	09	3
4	30	28	26	23	26	17	28	14	37	13	20	11	11	41	28	30	27	11	24	17	05	09	4
5	30	28	27	23	26	17	28	53	36	26	20	11	11	42	28	31	27	12	24	18	05	10	5
6	30	29	26	23	26	18	28	15	36	14	20	12	11	42	28	32	27	12	24	18	05	10	6
7	29	29	26	24	26	18	28	16	36	15	20	12	11	43	27	32	27	13	23	19	05	10	7
8	29	30	26	24	25	19	28	16	36	15	20	13	11	43	27	32	27	13	23	19	05	11	8
9	29	30	26	24	25	19	28	17	36	15	20	13	11	43	27	33	27	14	23	20	05	11	9
10	29	30	26	25	25	19	28	17	36	16	20	13	11	44	27	33	27	14	23	20	05	11	10
11	29	31	26	25	25	20	28	18	36	16	19	14	11	44	26	34	27	14	23	21	05	11	11
12	29	31	26	26	25	20	28	18	36	16	19	14	11	44	26	34	27	15	23	21	05	12	12
13	29	32	26	26	25	20	28	19	36	17	20	15	11	45	26	34	27	15	23	21	05	12	13
14	29	32	26	26	25	21	28	19	36	17	20	15	11	45	26	35	27	16	23	22	05	12	14
15	29	32	26	27	25	21	28	19	36	17	20	15	11	45	26	35	27	16	23	22	05	12	15
16	29	33	26	27	25	21	28	19	37	18	20	15	11	45	26	35	27	16	23	22	05	13	16
17	30	33	26	27	25	22	28	20	37	18	20	15	12	46	27	36	27	17	24	23	06	13	17
18	30	33	26	27	25	22	28	20	37	18	20	16	12	46	27	36	27	17	24	23	06	13	18
19	30	34	26	27	25	22	29	20	37	19	20	16	12	46	27	36	28	17	24	23	06	13	19
20	30	34	26	28	26	23	29	21	37	19	20	17	12	47	27	37	28	17	24	24	06	14	20
21	30	34	27	28	26	23	29	21	37	19	20	17	12	47	28	37	28	18	24	24	06	14	21
22	30	34	27	28	26	23	30	21	37	20	20	17	12	47	28	37	28	18	24	24	07	14	22
23	31	34	27	28	26	23	30	22	38	20	20	17	13	47	28	37	28	18	25	24	07	14	23
24	31	35	27	29	27	23	30	22	38	20	21	18	13	47	29	37	29	18	25	24	07	14	24
25	31	35	28	29	27	23	30	22	39	20	21	18	13	48	29	37	29	18	25	25	07	15	25
26	31	35	28	29	27	23	31	22	39	20	22	18	13	48	29	38	29	18	25	25	07	15	26
27	31	35	28	29	27	24	31	22	39	20	22	18	14	48	30	38	29	19	26	25	07	15	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 19	19 20	5 46	19 18	5 41	18 48	5 30	19 38	5 30	19 19	5 26	19 25	6 07	19 15	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 40	19 20	5 23	19 18	5 15	18 48	5 30	19 38	5 30	19 19	5 26	19 25	6 08	19 16	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 40	19 20	5 23	19 18	5 15	18 48	5 31	19 38	5 30	19 19	5 27	19 25	6 08	19 16	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 2	5 41	19 21	5 23	19 18	5 15	18 48	5 31	19 38	5 31	19 19	5 27	19 25	6 09	19 16	जुला
2	34	35	29	29	30	24	32	22	41	21	24	18	16	48	31	38	31	19	5 28	25	09	16	2
3	34	35	30	29	30	24	33	22	41	21	24	18	16	48	32	38	31	19	28	25	10	16	3
4	34	35	30	29	31	24	34	22	41	21	25	18	16	48	32	38	32	19	28	25	10	16	4
5	35	35	31	29	31	24	34	22	42	21	25	18	17	48	32	38	32	19	29	25	10	16	5
6	35	35	31	29	31	23	34	22	43	20	26	18	18	48	33	38	33	18	29	25	11	16	6
7	36	35	33	29	32	23	35	22	42	21	25	18	17	48	33	38	33	18	30	24	11	16	7
8	36	34	33	29	32	23	35	21	43	20	26	18	18	48	34	38	34	18	30	24	12	16	8
9	37	34	33	29	33	23	35	21	43	20	27	17	18	48	34	37	34	18	31	24	12	16	9
10	37	34	34	28	33	22	36	21	44	20	27	17	19	48	35	37	34	18	31	24	12	16	10
11	38	34	35	28	34	22	36	21	44	20	28	17	19	48	36	37	35	18	32	23	13	16	11
12	38	33	35	28	34	22	37	20	45	20	28	17	20	48	36	37	35	18	32	23	13	16	12
13	39	33	36	27	35	22	38	20	45	19	29	17	21	47	37	36	36	17	33	23	13	16	13
14	39	33	36	27	35	21	38	20	46	19	29	16	21	47	37	36	36	17	33	23	14	16	14
15	40	32	37	27	36	21	39	20	46	19	30	16	21	47	38	36	37	17	34	22	14	16	15
16	41	32	37	26	36	21	39	19	47	18	30	16	22	47	38	36	37	16	34	22	14	16	16
17	41	32	37	26	37	21	40	19	47	18	31	15	22	46	39	35	38	16	35	22	14	15	17
18	42	31	38	26	38	20	40	19	48	18	32	15	23	46	39	35	38	16	35	21	15	15	18
19	42	31	39	25	38	20	5 18	57	48	17	32	14	23	46	40	35	39	15	36	21	15	15	19
20	43	30	39	25	39	20	41	18	49	17	33	14	23	45	40	35	40	15	37	21	15	14	20
21	44	30	39	24	39	19	42	17	49	17	33	13	24	45	41	34	40	14	37	20	16	14	21
22	44	29	40	24	40	19	42	17	50	16	34	13	24	45	42	34	41	14	38	20	16	14	22
23	45	29	41	23	40	18	43	16	50	16	34	12	25	44	42	33	41	13	38	19	16	13	23
24	45	29	41	23	41	18	43	16	51	15	35	12	25	44	43	32	42	13	39	19	17	13	24
25	46	28	42	22	42	17	44	15	51	15	36	11	26	43	44	32	42	12	40	18	17	13	25
26	47	27	43	22	42	17	44	15	52	14	36	11	5 26	43	45	31	43	12	40	17	17	12	26
27	47	26	44	21	42	16	45	14	32	14	37	10	5 26	43	45	30	43	11	41	17	18	12	27
28	48	26	44	21	43	16	45	14	53	13	37	10	27	42	46	30	44	11	41	16	18	12	28
29	48	25	44	20	44	15	46	13	53	13	38	09	27	41	47	29	44	10	42	15	18	11	29
30	49	24	45	19	45	14	46	13	54	12	39	08	28	41	47	27	45	10	43	15	19	11	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 54	19 12	5 39	19 08	5 28	18 40	5 48	19 27	5 46	19 09	5 43	19 14	6 19	19 10	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 55	19 11	5 40	19 07	5 29	18 40	5 48	19 25	5 46	19 08	5 44	19 13	6 20	19 10	अग.
2	51	22	47	17	46	12	48	11	55	10	40	06	29	40	49	25	47	08	44	12	20	09	2
3	52	21	48	16	47	11	49	10	56	10	41	05	30	38	49	24	47	07	45	11	20	09	3
4	52	20	49	15	47	10	50	09	56	09	42	05	31	37	50	23	48	06	46	11	21	08	4
5	53	20	49	15	48	10	50	48	57	19	42	04	31	37	51	23	48	05	46	10	21	08	5
6	54	19	49	13	49	09	51	08	57	08	43	03	31	36	52	22	49	05	47	09	21	07	6
7	54	18	50	12	49	08	51	07	58	07	43	02	32	36	52	21	49	04	47	08	22	07	7
8	55	17	51	11	50	07	52	06	58	06	44	01	32	36	53	20	50	03	48	07	22	06	8
9	55	16	51	11	51	06	32	05	59	05	45	00	32	34	53	19	51	02	49	06	22	05	9
10	56	15	52	05	51	05	53	04	59	04	5 45	00	33	34	54	19 18	51	01	49	05	22	05	10
11	57	14	53	09	52	04	53	03	00	04	5 46	59	33	33	55	19 17	52	01	50	04	22	04	11
12	57	14	54	08	52	03	54	02	00	03	46	58	34	32	56	16	52	00	51	03	23	03	12
13	58	12	54	07	53	92	54	01	01	02	47	57	34	31	57	15	5 53	59	51	02	23	03	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	1900	6 01	19 01	5 48	18 56	5 35	18 30	5 57	19 13	5 53	18 58	5 52	19 02	6 23	19 02	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	6 02	18 59	5 49	18 54	5 36	18 29	5 58	19 12	5 54	18 57	5 52	19 01	6 23	19 02	15
16	6 00	09	56	04	55	59	57	58	02	59	49	54	36	29	59	11	54	56	53	00	24	01	16
17	01	08	56	03	55	58	57	57	03	58	49	53	36	28	59	10	55	55	54	59	24	01	17
18	01	07	56	02	56	57	58	56	04	58	50	52	36	27	00	09	55	54	54	58	24	00	18
19	02	06	57	19 01	56	56	58	55	04	57	50	51	36	27	00	08	56	53	55	56	24	00	19
20	02	05	59	18 59	57	55	59	54	05	56	51	50	36	26	01	06	56	52	55	55	24	00	20
21	03	04	59	59	58	54	5 59	53	05	55	52	49	37	24	01	05	57	51	56	18 54	25	59	21
22	04	03	5 59	58	58	53	6 00	52	05	54	52	48	38	24	02	04	58	50	56	18 53	25	58	22
23	04	02	6 00	57	59	52	00	51	06	53	53	47	38	23	02	03	58	49	57	52	25	57	23
24	05	19 00	01	55	5 59	51	01	50	07	52	53	46	39	22	03	02	59	48	58	51	25	56	24
25	06	18 59	01	55	6 00	50	01	49	07	51	54	54	39	18 22	04	01	59	47	58	50	26	55	25
26	06	58	02	54	00	49	02	48	07	50	54	43	39	18 21	04	00	00	46	59	49	26	54	26
27	07	57	03	52	01	47	6 02	47	08	49	55	42	40	20	05	59	00	45	59	47	26	53	27
28	07	54	04	50	01	46	5 48	27	08	47	56	40	40	19	06	57	01	44	00	46	27	52	28
29	08	54	04	49	02	45	6 03	45	08	47	56	40	41	18	07	55	01	43	01	45	27	51	29
30	09	53	04	49	03	44	04	44	09	46	57	39	41	17	07	54	02	42	01	44	28	50	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	6 09	18 46	5 57	18 39	5 41	18 17	6 08	18 53	6 02	18 41	6 02	18 43	6 28	18 49	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	6 10	18 44	5 55	18 36	5 42	18 14	6 08	18 52	6 03	18 39	6 02	18 42	6 29	18 48	सितं.
2	10	50	06	46	05	41	05	40	10	42	58	35	42	13	09	51	03	38	03	41	29	47	2
3	11	48	06	45	05	40	06	39	11	41	59	34	43	12	10	50	04	36	03	40	29	46	3
4	12	47	07	43	06	39	06	33	11	40	59	33	43	11	11	49	04	35	04	38	29	45	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	11	39	00	32	44	10	11	48	05	34	05	37	29	44	5
6	13	45	08	41	07	36	07	36	12	38	00	30	44	09	12	47	05	33	05	35	29	44	6
7	13	43	09	40	07	35	08	34	12	37	01	29	44	07	12	45	06	32	06	34	30	43	7
8	14	42	10	38	08	34	08	32	13	36	02	28	45	06	13	43	06	31	06	33	30	43	8
9	15	41	11	36	08	32	09	31	13	35	02	27	45	05	14	42	07	29	07	32	30	42	9
10	15	39	11	35	09	31	09	30	14	34	03	26	46	04	14	40	07	28	07	30	30	41	10
11	16	38	12	34	09	29	10	29	14	33	03	24	46	03	15	38	07	27	08	29	30	40	11
12	16	37	12	33	10	28	10	28	14	31	04	23	46	02	16	37	08	26	08	28	30	40	12
13	17	36	13	31	10	27	11	27	15	30	04	22	47	01	16	37	08	25	09	27	30	39	13
14	17	34	13	31	11	26	11	00	15	29	05	21	47	00	17	36	09	23	10	25	30	18 38	14
15	18	33	13	30	11	24	12	00	16	28	05	19	47	59	17	35	09	22	10	24	30	18 37	15
16	19	32	14	28	12	23	12	00	16	27	06	18	48	58	18	33	10	21	11	23	31	36	16
17	19	30	15	25	12	22	13	22	17	26	06	17	48	57	18	31	10	20	11	22	31	35	17
18	20	29	15	25	13	21	13	21	17	25	07	16	49	56	19	30	11	19	12	20	31	34	18
19	20	28	16	24	13	19	14	20	17	23	07	14	49	55	20	28	11	17	12	19	31	34	19
20	21	26	17	22	14	18	14	19	18	22	08	13	49	53	21	27	12	16	13	18	31	33	20
21	22	25	18	20	14	17	15	18	18	21	09	12	50	52	22	26	12	15	14	16	32	32	21
22	22	24	18	19	15	16	15	17	19	20	09	11	50	51	22	25	13	14	14	15	32	31	22
23	23	23	18	19	16	14	16	16	19	19	10	09	50	50	23	24	13	13	15	14	32	30	23
24	23	21	19	18	16	13	16	14	20	18	10	08	51	49	24	23	14	12	15	13	32	29	24
25	24	20	20	15	17	12	17	13	20	17	11	07	51	48	24	21	14	10	16	11	33	28	25
26	25	19	20	14	17	11	17	12	20	15	11	06	52	47	25	20	15	09	16	10	33	27	26
27	25	17	21	13	18	09	18	11	21	14	12	04	52	46	25	18	15	08	17	09	33	26	27
28	26	16	21	12	18	08	18	09	21	13	12	03	53	45	26	16	16	07	18	08	33	25	28
29	27	15	22	10	19	07	19	08	22	12	13	02	53	43	26	15	16	06	18	06	33	24	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 22	18 11	6 13	18 01	5 53	17 43	6 27	18 14	6 17	18 04	6 19	18 05	6 33	18 23	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्तू	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अक्तू
अक्तू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 23	18 10	6 14	17 59	5 54	17 42	6 28	18 12	6 17	18 03	6 19	18 04	6 34	18 23	अक्तू
2	28	11	24	07	21	03	20	05	23	09	15	58	54	40	28	10	18	02	20	03	34	22	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	24	08	15	47	54	39	29	09	18	00	21	01	34	21	3
4	30	08	25	04	22	01	21	18 01	24	06	16	56	55	38	30	08	19	59	21	00	34	21	4
5	30	07	25	02	22	18 00	22	17 00	25	05	16	55	55	37	30	07	20	17 58	22	59	34	20	5
6	31	06	26	02	23	17 58	23	59	25	04	17	53	55	36	31	06	20	17 57	22	58	35	19	6
7	32	05	27	00	23	57	24	58	26	03	18	52	56	35	31	05	21	56	23	56	35	19	7
8	32	03	27	18 00	24	56	24	57	26	02	18	51	57	34	32	04	21	55	24	55	35	18	8
9	33	02	27	17 59	25	55	25	56	27	01	19	50	57	33	33	03	22	54	24	54	35	17	9
10	34	01	29	57	25	54	25	55	27	00	19	17 49	57	32	33	01	22	52	25	53	35	16	10
11	34	18 00	30	55	26	53	26	54	28	59	20	17 48	58	31	34	00	23	51	26	52	36	15	11
12	35	17 59	30	55	27	51	26	53	28	58	21	46	58	30	35	59	24	50	26	51	36	14	12
13	36	57	31	54	27	50	27	52	29	57	21	45	59	29	36	57	24	49	27	49	36	14	13
14	36	56	32	52	28	49	27	51	29	56	22	44	59	28	37	55	25	48	28	48	6 37	13	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	30	55	23	43	00	27	38	54	25	47	28	47	6 37	12	15
16	38	54	33	50	29	47	28	49	30	54	23	42	00	27	38	53	26	46	29	46	37	11	16
17	39	53	33	49	30	46	29	48	31	53	24	41	01	26	39	52	27	45	30	45	38	10	17
18	39	52	34	48	30	45	30	47	31	52	24	40	01	25	40	51	27	44	30	44	38	09	18
19	40	50	35	48	31	44	31	46	32	51	25	39	01	17 24	41	50	28	43	31	43	38	08	19
20	41	49	35	46	32	43	31	45	33	50	26	38	02	17 23	41	49	28	42	32	42	39	07	20
21	42	48	36	45	32	42	32	44	33	49	26	37	03	22	42	48	29	41	32	41	39	06	21
22	42	47	37	44	33	41	33	43	34	48	27	36	03	21	43	47	30	40	33	40	39	06	22
23	43	46	38	42	34	40	34	42	34	47	28	35	04	20	43	46	30	39	34	39	40	05	23
24	44	45	39	42	35	39	34	41	35	47	29	34	05	20	44	45	31	38	35	38	40	05	24
25	45	44	40	41	35	38	35	40	36	45	29	33	05	19	45	44	32	37	35	17 37	40	04	25
26	45	43	40	39	36	37	35	39	36	45	30	32	06	18	46	43	32	37	36	17 36	41	04	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	37	44	31	31	06	17	47	42	33	36	37	35	41	04	27
28	47	41	42	37	37	35	36	37	37	43	31	31	07	16	48	41	34	35	38	34	41	03	28
29	48	40	42	37	38	34	37	36	37	42	31	30	07	16	49	39	34	34	38	33	42	03	29
30	49	39	43	36	39	35	38	35	39	42	33	28	08	15	50	38	35	34	39	32	42	03	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 40	17 40	6 34	17 27	6 10	17 14	6 51	17 38	6 36	17 33	6 40	17 31	6 43	18 02	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 40	17 40	6 34	17 27	6 09	17 14	6 51	17 35	6 37	17 32	6 41	17 30	6 43	18 02	नवं.
2	51	37	45	33	41	31	40	34	41	39	34	26	10	13	52	34	37	34	41	30	44	01	2
3	52	36	47	32	42	31	41	33	41	39	36	25	11	12	53	33	38	33	42	29	44	01	3
4	53	35	48	31	43	30	42	32	42	38	37	24	11	12	54	32	39	32	43	28	45	00	4
5	53	34	48	31	43	30	42	32	42	38	37	24	11	11	54	31	39	31	44	27	45	00	5
6	54	33	48	30	44	29	43	31	44	37	38	23	12	10	55	30	40	30	45	26	45	59	6
7	55	33	50	30	45	28	44	30	44	36	39	22	13	10	56	30	41	30	46	26	46	59	7
8	56	32	51	29	46	27	45	29	45	36	40	21	14	09	57	29	42	29	46	25	46	58	8
9	57	31	52	28	47	27	45	29	46	35	41	21	15	09	58	28	43	28	47	24	47	58	9
10	58	31	52	27	47	26	46	28	46	35	41	20	15	08	59	28	43	28	48	24	47	58	10
11	6 59	30	53	27	48	25	47	28	47	34	42	20	6 16	08	00	27	44	27	49	23	48	57	11
12	7 00	29	54	26	49	24	48	27	48	33	43	19	6 17	07	01	26	45	26	50	22	49	57	12
13	00	29	54	26	50	23	48	27	49	33	44	18	17	07	02	26	46	26	51	22	49	57	13
14	01	28	55	26	51	23	49	26	49	33	45	18	18	06	03	26	46	25	51	21	50	56	14
15	02	28	56	25	52	22	50	26	29	32	02	17	37	06	04	25	47	25	52	21	50	56	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 51	17 32	6 46	17 17	6 19	17 06	7 05	17 25	6 48	17 24	6 53	17 20	6 51	17 56	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		दिल्ली		चण्डीगढ़		मुम्बई		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 52	17 31	6 47	17 16	6 20	17 05	7 06	17 24	6 49	17 24	6 54	17 20	6 51	17 55	17
18	05	26	6 59	23	54	21	53	24	52	31	48	16	21	05	07	23	50	23	55	19	52	55	18
19	06	26	7 00	23	55	21	54	23	53	31	49	16	22	05	08	23	50	23	56	19	52	55	19
20	07	25	01	22	56	21	55	23	54	30	50	15	22	04	09	23	51	22	57	19	53	55	20
21	07	25	01	22	57	20	55	23	34	30	06	15	23	04	10	22	52	22	57	18	54	55	21
22	08	24	02	22	57	20	56	22	55	30	51	15	24	04	11	22	53	22	58	18	54	55	22
23	09	24	04	22	58	20	57	22	56	30	52	14	24	04	12	22	54	21	59	18	55	55	23
24	10	24	05	21	6 59	20	58	22	57	29	53	14	25	04	13	21	54	21	00	18	55	55	24
25	11	23	06	21	7 00	19	6 59	22	58	29	54	14	26	03	14	21	55	21	7 01	17	56	55	25
26	12	23	06	21	01	19	7 00	22	58	29	55	14	27	03	15	21	56	20	7 02	17	56	55	26
27	13	23	07	21	02	19	01	22	59	29	6 55	13	27	03	16	20	57	20	03	17	57	55	27
28	14	23	08	20	03	19	02	22	00	29	6 56	13	28	03	16	20	58	20	03	17	57	55	28
29	14	23	08	20	03	19	02	21	01	29	57	13	29	03	17	20	58	20	04	17	58	55	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	7 02	17 29	6 58	17 13	6 30	17 03	7 18	17 20	6 59	17 20	7 05	17 17	6 59	17 55	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	7 02	17 29	6 59	17 13	6 30	17 03	7 19	17 20	7 00	17 20	7 06	17 16	6 59	17 56	दिसं.
2	17	22	11	20	06	19	04	21	03	29	59	13	31	03	7 19	20	01	20	07	16	00	56	2
3	18	22	11	20	06	19	04	21	04	29	00	13	32	03	7 20	20	02	20	08	16	01	56	3
4	19	22	12	20	07	19	05	21	05	29	01	13	32	03	21	20	02	20	08	16	01	56	4
5	19	22	13	20	08	19	06	21	06	29	02	13	33	04	22	20	03	20	09	16	02	57	5
6	20	22	14	20	09	19	07	21	07	29	03	13	34	04	23	20	04	20	10	16	03	57	6
7	21	22	14	20	09	19	07	21	07	29	03	13	35	04	23	20	05	20	11	17	03	57	7
8	22	23	15	20	10	19	08	22	08	30	04	13	35	04	24	20	05	20	11	17	04	57	8
9	22	23	16	20	11	19	09	22	09	30	05	14	36	04	25	20	06	21	12	17	05	58	9
10	23	23	17	20	12	19	10	22	09	30	06	14	37	05	26	21	07	21	13	17	05	58	10
11	24	23	18	20	12	19	10	22	09	30	06	14	37	05	27	21	07	21	14	17	06	58	11
12	25	23	19	21	13	20	11	23	10	30	07	14	38	05	28	21	08	21	14	17	07	59	12
13	25	24	19	21	14	20	12	23	11	31	08	14	38	05	28	21	09	21	15	18	07	59	13
14	26	24	20	21	14	20	13	23	11	31	08	15	39	06	29	22	09	22	16	18	08	59	14
15	27	24	21	22	15	21	13	24	12	31	09	15	40	06	30	22	10	22	16	18	08	59	15
16	27	25	22	22	16	21	14	24	13	32	10	15	41	06	30	22	11	22	17	19	09	00	16
17	28	25	22	22	16	21	14	24	13	32	10	16	41	07	31	23	11	23	18	19	09	00	17
18	28	25	23	23	17	22	15	25	14	32	11	16	41	07	31	23	12	23	18	20	10	01	18
19	29	26	23	23	17	22	15	25	14	33	11	17	42	08	32	23	12	23	19	20	10	01	19
20	30	26	24	23	18	23	16	26	14	33	12	17	42	08	32	23	13	24	19	20	11	02	20
21	30	27	24	24	18	23	16	26	15	34	12	17	43	09	33	24	14	24	20	21	11	02	21
22	13	27	25	25	19	14	17	27	16	34	13	18	44	09	33	24	14	25	20	21	12	03	22
23	31	28	25	25	19	24	17	27	16	35	13	18	44	10	34	25	15	26	21	22	12	03	23
24	32	28	25	26	20	25	18	28	17	35	14	19	45	10	34	26	15	26	21	23	13	04	24
25	32	29	25	26	20	26	18	28	17	36	14	20	45	11	35	26	15	27	22	23	13	04	25
26	32	29	26	27	21	26	19	29	18	37	15	20	45	11	35	27	16	27	22	24	14	05	26
27	33	30	26	27	21	27	19	29	18	37	15	21	45	21	36	27	16	28	23	24	14	05	27
28	33	31	27	28	21	27	20	30	18	38	15	21	46	12	36	28	17	29	23	25	14	06	28
29	33	31	27	28	22	28	20	30	19	38	16	22	47	13	36	29	17	29	23	26	15	06	29
30	34	32	28	29	22	28	21	'31	19	39	16	23	47	14	37	30	17	30	24	26	15	07	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	7 20	17 40	7 16	17 23	6 47	17 14	7 37	17 31	7 18	17 31	7 24	17 27	7 15	18 07	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करे॥

उदाहरण—यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१°।५२' है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२' कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अत: **५ दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।**

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश-कला		भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश-कला		भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	कला
	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	
१	० ०३	० ०९	० ०३	० ०५	० ०३	० ०८	० ०७	० ०९	० ०८	१
२	० ०६	० १८	० ०५	० ०९	० ०६	० १६	० १४	० १७	० १५	२
३	० ०९	० २७	० ०८	० १४	० ०९	० २४	० २२	० २६	० २३	३
४	० १३	१ ०६	० ११	० १८	० १३	१ ०२	० २९	१ ०४	१ ०१	४
५	० १६	१ १५	० १४	० २३	० १६	१ ११	१ ०६	१ १३	१ ०८	५
६	० १९	१ २४	० १६	० २७	० १९	१ १९	१ १३	१ २१	१ १६	६
७	० २२	२ ०३	० १९	१ ०२	० २२	१ २७	१ २०	२ ००	१ २४	७
८	० २५	२ १२	० २२	१ ०६	० २५	२ ०५	१ २८	२ ०८	२ ०१	८
९	० २८	२ २१	० २४	१ ११	० २८	२ १३	२ ०५	२ १७	२ ०९	९
१०	१ ०१	३ ००	० २७	१ १५	१ ०१	२ २१	२ १२	२ २६	२ १७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से **ज्योतिष तत्त्व** मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
कृ. उ. फा. उ. षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.				आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा.पू. भा.				पुष्य. अनु.उ. भा. ५७				श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूला. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिएं चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	कें.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्रवण, आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि			पुष्य विशा शत.			श्ले. अनु. पूभा. अश्वि			मघा. ज्ये. उभा. भर.			पूफा मूला रेव कृति			उफा. पूषा रोह			हस्त उषा मृग		

योगिनी दशा विचार—योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा—ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि—अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ—यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा—अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा—मंगला, धा. भ. सि., नेष्टदशा—पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि—जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोतरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत—विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर-दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र—6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	6
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	16	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	16	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	26	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु की महादशा में केतु आदि ग्रहों की अन्तर्दशाएं

गतवर्षों की 'पंचांगदिवाकर' में हमने सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध ग्रहों की महादशाओं में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं का फल दिया गया था। इस बार केतु एवं शुक्र की महादशा में अन्तर्दशाओं का फल दे रहे हैं। अधिक व सम्पूर्ण जानकारी के लिए **'ज्योतिष तत्त्व'** फलित खण्ड (द्वितीय भाग) पढ़ें।

केतु मध्ये केतु का अन्तर—केतु यदि शुभ ग्रह से युक्त होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक को भूमि, धन, मकान एवं स्त्री व सन्तान आदि से सुख, नवीन कार्य में रूचि, शेयर, लाटरी या व्यवसाय में अकस्मात् धन लाभ एवं सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है। यदि केतु नीच या पाप ग्रह से युक्त होकर २, ४, ६, ८ या १२वें स्थान में हो, तो जातक को पारिवारिक सुख में कमी, दुर्घटना या शस्त्राघात से चोटादि का भय, निकट बन्धुओं एवं मित्रों से विरोध, अप्रिय भाषा, धन हानि, पित्त प्रकोप, ज्वर आदि का भय एवं परिवारिक कलह-क्लेश की सम्भावना होती है।

केतु मध्ये शुक्र का अन्तर—शुक्र स्वराशि, उच्च हो या केन्द्र-त्रिकोण व 11वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो, तो धन, लाभ, सौभाग्य में वृद्धि, स्त्री व सन्तान सुख तथा वाहन आदि सांसारिक सुखों की प्राप्ति। दशा के उत्तरार्द्ध में कामुक एवं विलासप्रिय वस्तुओं पर व्यय अधिक होगा। कन्या सन्तति की सम्भावना, स्त्री का सहयोग लाभदायक होगा। यदि शुक्र नीच या पाप युक्त होकर ६, ८ या १२वें भाव में हो, तो स्त्री से वैमनस्य या सुख में कमी हो, धन हानि, बनते कामों में अड़चनें पड़ें, शिर पीड़ा एवं आंखों में कष्ट हो।

केतु मध्ये सूर्य का अन्तर—सूर्य यदि उच्च या स्वराशिगत हो,तो दशा के प्रारम्भ में सरकारी क्षेत्रों से लाभ, मान-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, विदेश गमन, धन लाभ तथा पिता से सुख एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से से सम्पर्क होते हैं। यदि सूर्य नीच या पाप ग्रह युक्त होकर 6, 8, या 12वें स्थान में हो, तो जातक का पारिवारिक लोगों से विरोध, किसी आत्मीय जन से वियोग, शिर पीड़ा, नेत्र रोग, धन का अपव्यय एवं हानि, पित्त, कफ़ रोग आदि अशुभ फल होते हैं। परन्तु विदेश जाने से लाभ होने के योग होते हैं।

केतु मध्ये चन्द्र का अन्तर—चन्द्र उच्च का या स्वराशि का हो, तो उच्च विद्या में लाभ, व्यवसाय में संघर्ष के बाद धन लाभ, स्त्री सुख एवं कन्या सन्तति का सुख, उद्योग में सफलता, संगीत, साहित्य एवं कला की ओर रूचि तथा मनोरंजन के साधन बढ़ते हैं। यदि चन्द्र नीच या क्षीण होकर 6, 8 या 12वें भाव में हो, तो जातक को परिवार, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, धन का खर्च अधिक, गुप्त रोग, वात, कफ़ आदि रोगों के कारण चिन्ता तथा निकट-बन्धुओं से परेशानी व तनाव रहें।

केतु मध्ये मंगल का अन्तर—मंगल उच्च, स्वराशि या केन्द्र-त्रिकोण व 11वें हो, तो जातक के पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि, विद्या में सफलता, भूमि, जायदाद, पुत्र सन्तति एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति, धन लाभ, मित्रों, भाई-बन्धुओं का सुख व शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। विदेश गमन की भी सम्भावना होती है। यदि मंगल केतु से 2, 6, 8 या 12वें स्थान में हो, तो व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं, धन हानि, गृह-कलह, प्रिय-बन्धुओं से तनाव, स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना, दुर्घटना से चोट या ज्वरादि का भय होता है।

केतु मध्ये राहु का अन्तर—राहु उच्च, स्वराशि या मित्र क्षेत्री हो, तो इस दशा में धन-धान्य का लाभ, वाहनादि सुख-सुविधाओं में वृद्धि, नौकरी में तरक्की, शेयर, लाटरी आदि में अकस्मात् लाभ एवं विदेशादि यात्रा से लाभ की सम्भावना होती है। यदि राहु 2, 7, 8, या 12वें भाव में पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो व्यवसाय या नौकरी में गड़बड़ी, धन हानि, मन को दुख देने वाली घटनाएं घटित हों, पारिवारिक जनों के साथ कलह-क्लेश, बनते कामों में बाधाएं, स्वास्थ्य हानि, शिर पीड़ा व नेत्र कष्ट, आय कम व खर्च अधिक होते हैं।

केतु मध्ये गुरु का अन्तर—गुरु केन्द्र, त्रिकोण व 11वें भाव में स्वराशि या उच्च दोनों हो, तो जातक की धर्म एवं परोपकारी कार्यों में प्रवृत्ति, विद्या में सफलता, धन लाभ, सवारी, भूमि, जायदाद, पुत्र सन्तति एवं एवं विदेश यात्रा के अवसर प्राप्त होते हैं। भाई-बन्धुओं एवं उच्चाधिकारियों से सम्बन्ध होते हैं। गुरु नीच, अस्तंगत होकर केतु से 6, 8 या 12वें भाव में हो, तो उच्च शिक्षा में विघ्न, पारिवारिक सदस्यों से मन-मुटाव, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानी, स्वयं का भी स्वास्थ्य ठीक न रहें तथा धन सम्बन्धी उलझनों का सामना रहता है।

केतु मध्ये शनि का अन्तर—शनि उच्च, स्वराशि होकर केतु से 3, 6 या 11वें भाव में स्थित हो, तो जातक को सोची हुई योजनाओं में सफलता, कृषि, रबड़, लोह पुर्जे आदि के कार्यों में लाभ व सफलता, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनते हैं। विदेश गमन से लाभ आदि फल होते हैं। यदि केतु से शनि 1, 4, 8 .या 12वें स्थान में हो तो जातक के शरीर में कष्ट, सुख में कमी, कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ता अथवा पारिवारिक कलह, धन हानि, बनते कामों में अड़चनें, चित्त में व्याकुलता, गुप्त एवं क्लिष्ट रोगों के कारण परेशानी व खर्च की अधिकता रहें।

केतु मध्ये बुध का अन्तर—बुध स्वराशि या उच्चराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो इस दशा काल में जातक को बन्धु-मित्रों आदि से मिलाप, उच्च विद्या में सफलता अथवा सर्विस में पदोन्नति या व्यवसाय में धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त हों। धर्म-कर्म या विदेश यात्रा एवं बौद्धिक कार्यों की ओर रूचि बढ़े। यदि बुध नीच, अस्त या केतु से 6, 8 या 12वें हों, तो जातक का बन्धुओं के साथ मतान्तर हो, किसी व्यक्ति द्वारा धोखा मिलने की सम्भावना, स्थान परिवर्तन संकेत, वात, कफ़, पित्तादि के कारण शरीर कष्ट के योग होते हैं।

शुक्र की महादशा में शुक्रादि अन्तर्दशाओं के फल

शुक्र मध्ये शुक्रान्तर—शुक्र स्वराशि या उच्चस्थ होकर केन्द्र-त्रिकोण भावों में स्थित हो, तो जातक-जातिका को रत्नाभूषण, सुन्दर वस्त्र, वाहन एवं धन सम्पदा, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी सुखों की प्राप्ति होती है। सुन्दर आवास तथा जातक की प्रवृति संगीत, गायन, कलादि, कामवासना एवं विलासादि कार्यों की ओर बढ़े। अकस्मात् धन प्राप्ति के साधनों तथा भाई-बन्धुओं एवं मित्रों के साथ सम्बन्धों में बेहतरी रहे। शुक्र यदि नीच, अस्तंगत या पाप ग्रह युक्त होकर 6,8, 12वें स्थान में हो, तो स्त्री, सम्पदा के सम्बन्ध में परेशानी अथवा विरोध रहे। धन हानि, स्त्री कष्ट एवं गुप्त रोगों की आशंका होती है।

शुक्र मध्ये सूर्यान्तर—यदि सूर्य उच्च या स्वराशि का हो अथवा शुक्र से केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो प्रशासन तथा माता-पिता एवं भाई से सुख एवं लाभ, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, धन लाभ, सरकारी क्षेत्रों एवं उच्च स्तरीय लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे। सूर्य यदि पापग्रह से युत, नीचादि स्थिति में अथवा 6, 8, 12वें भाव में हो, तो धनहानि, घरेलू कलह, प्रियजन से वियोग, सरकारी क्षेत्रों से परेशानियां, शिर पीड़ा एवं नेत्र रोग आदि अशुभ फल होते हैं।

शुक्र मध्ये चन्द्रान्तर—चन्द्र उच्च या स्वराशि का होकर शुभ भावस्थ हो, तो उस दशा में विद्या में सफलता, मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति, स्त्री का सुख, धन लाभ, पुत्री की प्राप्ति, संगीत, गायन, सौंदर्य प्रसाधनों, स्त्री प्रसंग एवं देश-विदेश में भ्रमण के अवसर भी प्राप्त होते हैं। परन्तु मानसिक तनाव भी रहता है। यदि चन्द्रमा नीच, पापयुक्त या शुक्र से 6, 8, 12वें भाव में हो, तो घरेलू कलह, स्त्री कष्ट, सिर में पीड़ा, धन हानि, मानसिक तनाव, नेत्र विकार, वात, कफ़ आदि रोगों के कारण शरीर कष्ट आदि अशुभ फल घटित होता हैं।

शुक्र मध्ये मंगल का अन्तर—मंगल उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो भूमि, जायदाद, पुत्र सन्तति, धन लाभ, वाहन प्राप्ति, उद्यम एवं पराक्रम में वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य लाभ तथा प्रिय-बन्धुओं से मेल-मिलाप एवं प्रेम-प्रसंग आदि सुखों की प्राप्ति होती है। यदि शुक्र से मंगल की स्थिति 6, 8, 12वें स्थान में हो, तो जातक का भाई-बन्धुओं से तनाव, कलह-क्लेश, स्त्री कष्ट, वाणी में कठोरता, मदिरापान एवं अन्य व्यसन तथा राग-विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होते हैं। मंगल अशुभ होने की स्थिति में शरीर कष्ट एवं दुर्घटना से चोटादि का भय रहे।

शुक्र मध्ये राहु का अन्तर—राहु १, ३, ५, ६, ९, १०, ११वें भाव में स्वराशि आदि शुभ राशिगत हो, तो इस दशा में अभीष्ट कार्यों में सिद्धि, व्यवसाय में धन लाभ, स्त्री एवं सन्तान सुख, सवारी आदि सुख-साधनों में वृद्धि, शेयर, लाटरी आदि गुप्त युक्तियों से भी लाभ, स्थानान्तरण या विदेश यात्रा की सम्भावना हो। यदि राहु शुक्र से 7, 8, या 12वें भाव में पाप ग्रह से युक्त हो, तो बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव, किसी बन्धु से वियोग, शरीर कष्ट, धन हानि, ऋण रोग, व शत्रु भय होता है।

शुक्र मध्ये गुरु का अन्तर—गुरु उच्च या स्वराशि का हो एवं केन्द्र-त्रिकोण में स्थित हो, तो जातक की धर्म-कर्म एवं परोपकारी कार्यों में प्रवृत्ति बढ़े, माता-पिता एवं श्रेष्ठ व प्रिय-बन्धुओं का सहयोग मिले, उच्च विद्या, भूमि, मकान, स्त्री एवं पुत्र सन्तति का सुख प्राप्त हो, धन आय के साधनों में वृद्धि व सौभाग्यादि शुभ फल होते हैं। गुरु 6, 8 12वें भाव में नीचादि हो, तो मानसिक व शरीर कष्ट, आत्मीय भाई-बन्धुओं से मतभेद, स्त्री व सन्तान के कारण परेशानी, उच्च विद्या में विघ्न, पेट विकार, धन एवं परिवार सम्बन्धी उलझनों का सामना होता है।

शुक्र मध्ये शनि का अन्तर—शनि उच्च एवं स्वराशिस्थ होकर शुभ भावस्थ हो, तो जातक को भूमि, धन, वाहन एवं स्त्री, सन्तान आदि पारिवारिक सुखों में वृद्धि होती है। धर्म, ज्योतिष, तन्त्र आदि में रूचि हो, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के सम्बन्ध हों, व्यवसाय में भी धन लाभ के अवसर प्राप्त हों। शनि यदि नीच, अस्त, शत्रु आदि राशि का होकर 6, 8, 12वें भाव में हो,तो शरीर कष्ट, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, निकट-बन्धुओं के साथ कलह, कार्यों में विघ्न- बाधाएं, आय कम तथा खर्च अधिक रहें, आर्थिक परेशानियां, क्लिष्ट रोग से शरीर कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

शुक्र मध्ये बुध का अन्तर—बुध उच्च, स्वराशि होकर केन्द्र-त्रिकोण में, शुभ ग्रह युक्त हो, तो जातक को उच्च विद्या में सफलता, किसी नए विषय जैसे संगीत, साहित्य, कला, शिल्प, कम्प्यूटर, ज्योतिष, धर्मादि विषयों में जानकारी की वृद्धि, व्यवसाय में क्रय-विक्रय से लाभ, स्त्री व सन्तान सुख, नए-नए मित्रों के साथ सम्बन्ध होते हैं। यदि बुध शुक्र से 6, 8 या 12वें भाव में नीच, अस्तादि हो, तो जातक का परिवार जनों से झगड़ा, धन की फ़िजूलखर्ची बहुत हो, स्त्री-सन्तान आदि के बारे परेशानी, वात, कफ़ आदि के कारण रक्त विकार एवं कष्ट हो।

शुक्र मध्ये केतु का अन्तर—केतु स्वराशि, उच्च आदि स्थिति में होकर 3, 6, 9 या 11वें हो, तो मान-सम्मान में वृद्धि, गुप्त युक्तियों से धन लाभ, किसी नवीन कार्य में रूचि एवं देश-प्रदेश की यात्रा का प्रसंग बने। यदि केतु शुक्र से 6, 8 या 12वें स्थान से अशुभ राशिगत हो, तो परिवार में कलह, वियो, शत्रु द्वारा भय, धन हानि, दुर्घटना से चोटादि का भय अथवा पित्तादि के कारण रोगादि की सम्भावना हो। केतु का उचित उपाय करने से लाभ रहे।

योगिनी दशाओं का फल

भारतीय फलित ज्योतिष में अनेक प्रकार की दशाओं और उनके फलों का वर्णन मिलता है। विंशोत्तरी दशा पद्धति के पश्चात् उत्तर-पश्चिमी भारत में योगिनी दशा का प्रणयन अवश्य किया जाता है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर इत्यादि प्रदेशों में योगिनी दशाओं का विशेष प्रचलन है।

योगिनी दशा के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हम अपने ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) में उदाहरण सहित विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं। पाठकों की सुविधा के लिए संक्षेप में पुन: जानकारी देते हैं।

योगिनी दशा में मंगल आदि दशाओं का कुल मान 36 वर्ष का होता है। 36 वर्ष के पश्चात् उनकी पुन: आवृत्ति होती है। इन आठ दशाओं के क्रमश: ये नाम हैं—

1. मंगला, 2. पिंगला, 3. धान्या, 4. भ्रामरी, 5. भद्रिका, 6. उल्का, 7. सिद्धा, और **8. संकटा।** इनकी क्रम संख्या अनुसार ही इनकी वर्ष संख्या निर्धारित की गई है, जिनका कुल जोड़ 36 वर्ष आता है। 1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 = कुल 36 वर्ष। मंगला, पिंगला आदि दशाएं अपना नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा जानने की विधि—विंशोत्तरी दशा की भांति ही योगिनी दशा का आधार 27 नक्षत्र हैं। यथा-अश्विनी नक्षत्र से प्रारम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में 3 जोड़ करके, कुल जमा को 8 द्वारा भाग देने से यदि 1 शेष बचे तो मंगला, 2 शेष बचें तो पिंगला, 3 बचें तो धान्या इत्यादि क्रमानुसार दशा जानें, यदि शेष शून्य (0) बचे तो आठवीं अर्थात् संकटा दशा जानें।

प्रत्येक दशा का स्वामी ग्रह भी अलग-अलग ग्रह होता है। किस नक्षत्र के अन्तर्गत मंगला, पिंगला, आदि कौन सी दशा आती है तथा उस दशा का स्वामी कौन सा ग्रह है। यह सब आगामी तालिका (चक्र) से जान सकते हैं—

जन्म नक्षात्रानुसार योगिनी दशा चक्र

दशा नाम	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
दशा वर्ष क्रम	1	2	3	4	5	6	7	8
दशा स्वामी	चंद्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	रा. के
जन्म नक्षत्र	आर्द्रा चित्रा श्रवण	पुर्न स्वाती धनिष्ठा	पुष्य विशाखा शतभिषा	अश्ले. अनु. पू. भा. अश्वि.	मघा ज्येष्ठा उभा. भरणी	पूफा. मूला रेवती कृतिका	उफा. पूषा. रोहिणी	हस्त उषा. मृग.

जन्म नक्षत्र से योगिनी दशा का भोग्य काल जानना

विंशोत्तरी दशा पद्धति के समान ही योगिनी दशा में जन्म कालीन नक्षत्र का भयात (नक्षत्र का बीता हुआ काल) तथा भभोग (कुल मान)—दोनों को पलात्मक में बना लें। फिर पलात्मक भयात् को योगिनी की जन्म दशा वर्षों से गुणा करके, प्राप्त संख्या को पलात्मक भभोग के द्वारा भाग देने से योगिनी दशा के भुक्त वर्ष, मास आदि निकल आएँगे। इस प्राप्त वर्ष, मासादि जो जन्म दशा के कुल वर्षों में से घटा देने से हमें जन्म कालीन भोग्य दशा के वर्ष, मास आदि प्राप्त हो जाएंगे।

उदाहरण—मान लो, 20 अक्तूबर, सन् 2000 ई., शुक्रवार की अर्द्धरात्रि 1 बजकर 30 मिंट (ईष्ट ४७/१३) पर जन्म किसी बालक की योगिनी दशा निकालनी है। जन्म समयानुसार पुष्य नक्षत्र का भयात् ३० घड़ी १० पल तथा भभोग ६६ घड़ी ४५ पल होंगे। ऊपर लिखी तालिका अनुसार धान्या दशा प्रारंभ होगी। अब पलात्मक भयात् को दशा वर्ष 3 से गुणा करने पर 5430 पल प्राप्त हुए। इसको पुष्य नक्षत्र के भभोग 4005 से भाग देने पर हमें भुक्त दशा 1 वर्ष 4 मास, 8 दिन प्राप्त हुए।

इसको धान्या दशा के कुल मान 3 वर्ष में से घटा देने पर हमें भोग्य धान्या दशा के 1 वर्ष 07 मास तथा 22 दिन प्राप्त हुए। इसको जन्म तारीख, मास, वर्ष आदि में जमा करने पर धान्य दशा 12 जून, 2002 तक समाप्त होगी। इसके आगे क्रमानुसार भ्रामरी (4 वर्ष), भद्रिका (5 वर्ष) इत्यादि जमा करते जाने से आगामी वर्षों का भोग्य दशाकाल प्राप्त हो जाएगा।

योगिनी दशा में अन्तर्दशा निकालने की विधि—अन्तर्दशा सम्बन्धी चक्र ज्योतिष तत्त्व गणित-खण्ड में उदाहरण सहित पढ़ सकते हैं।

(1) मंगला दशा (1 वर्ष)—(ज्ञानान्दकरी दशा भवति सा ज्ञेया सदा मंगला)—मंगला दशा में मंगल कार्यों का उदय होता है। विद्या में सफलता, जातक की प्रवृत्ति धार्मिक कार्यों, ब्राह्मणों एवं ईश्वर भक्ति एवं परोपकार के कार्यों में बढ़ती है। स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होता है। गृह में किसी मंगल कार्य का उत्सव होने की भी सम्भावना होती है। जातक की प्रवृत्ति सत्कार्यों की ओर अधिक रहती है।

(2) पिंगला दशा (2 वर्ष)—इस दशा में शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, घरेलू कलह-क्लेश, धन हानि, बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, कार्यों में विफलता, नीच लोगों से कुसंगति, व्याकुलता, गुप्त चिन्ता, अस्वस्थता आदि अशुभ फल होते हैं। पिंगला दशा प्रारम्भ में कुछ

सुखकारक परन्तु उत्तरार्द्ध में कष्टकारी मानी जाती है। जातक का अधिकांश समय सोच-विचार में व्यतीत होता है। मित्र भी शत्रुओं जैसा व्यवहार करते हैं। आय कम खर्च अधिक होते हैं।

(3) धान्या दशा फल (3 वर्ष)—इस दशा में जातक को धन-धान्य एवं सुख के साधनों में वृद्धि होती है। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं। स्त्री एवं सन्तान की ओर से खुशी प्राप्त होती है। विद्या लाभ, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। जातक व धन तीर्थ यात्रा, धर्म एवं परोपकारी कार्यों में भी व्यय होता है। सरकारी क्षेत्रों से भी सम्मान एवं लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं।

(4) भ्रामरी दशा (4 वर्ष)—स्त्री, संतान अथवा परिवार की तरफ से परेशानी, कलह-कलेश का भय, अधिकांश समय भ्रमण (घूमने फिरने) में व्यतीत हो, कई प्रकार के कार्यों में व्यस्तता रहे, परन्तु स्थिरता न हो, आय कम तथा खर्च अधिक रहें, स्वास्थ्य भी ठीक न रहे, चित्त में व्याकुलता रहे, शत्रु भय, शरीर कष्ट तथा किसी ऋण लेने की भी सम्भावना हो सकती है। इस दशा काल में दौड़धूप व खर्च अधिक होते हैं।

(5) भद्रिका दशा (5 वर्ष)—इस दशा काल में जातक के पुण्यों का उदय और धर्म-कर्म की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। साथ ही धन-धान्य की वृद्धि तथा जातक के गुणों का प्रकाश बढ़ता है। उच्च विद्या में सफलता, व्यवसाय में लाभ व उन्नति, गृह में कोई मंगल कार्य हो, विप्रादि श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क, सुन्दर एवं सुशील स्त्री का सुख, वाहन एवं भूमि आदि सुखों की प्राप्ति होती है। कामुक एवं विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। दशा के अन्तिम भाग में व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष व कठिनाइयों का सामना होता है।

(6) उल्का दशा (6 वर्ष)—इस दशा में जातक का निकटस्थ सम्बन्धियों एवं मित्रों से मतभेद एवं विरोध रहे, कोई बना बनाया काम बिगड़े, अत्यधिक संघर्ष करने पर भी आय कम व खर्चों की अधिकता रहे। स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानियां, क्रोध एवं तनाव अधिक हो। दुर्घटना से चोटादि का भय, शरीर कष्ट, बुद्धि में विभ्रम, व्याधि एवं शत्रु भय, हृदय, उदर, कान, दांतों, पैरों एवं नेत्रों में पीड़ा तथा व्यसनों आदि के कारण कष्ट आदि अशुभ फल प्रकट होते हैं।

(7) सिद्धा दशा (7 वर्ष)—उच्च विद्या में सफलता, सोचे हुए (अभीष्ट) कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, जातक की धार्मिक कृत्यों (परोपकार आदि) की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि विधाओं की ओर रूचि, भूमि-जायदाद, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों में वृद्धि तथा उच्चपदासीन (प्रतिष्ठित)लोगों से सम्बन्ध बढ़ते हैं। विवाह एवं गृहस्थ सुख और सौभाग्य में वृद्धि तथा व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं। दशा के अन्त में पारिवारिक उलझनों के कारण कुछ कठिनाईयां व चिन्ताएं होती हैं।

(8) संकटा दशा (8 वर्ष)—में भाई-बन्धुओं या पारिवारिक सदस्यों के साथ विरोध एवं मन-मुटाव पैदा हो। शरीर कष्ट एवं शत्रु भय, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएं, अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष करने पर भी विशेष लाभ प्राप्त न हो, किसी विश्वस्त मित्र द्वारा धोखा दिए जाने की सम्भावना एवं धन हानि, स्त्री एवं सन्तान आदि के कारण तनाव व गुप्त चिन्ता, व्यवसाय में अस्थिरता, भ्रमणशीलता व खर्च अधिक हो, परदेश (विदेश आदि) में जाने की उत्कट इच्छा (अभिलाषा) बनी रहती है। इस दशावधि में उत्साह एवं पराक्रम में कमी, मानसिक व शारीरिक कष्ट, वात-पित्त एवं कफ़ादि में विकार के कारण रोग भय, अपव्यय, विघ्न भय आदि अशुभ फल होते हैं। संकटा दशा का पूर्वार्ध भाग राहु से तथा उत्तरार्द्ध भाग केतु से प्रभावित रहता है।

उपरोक्त पिंगला, उल्का, संकटा आदि क्रूर एवं अशुभ दशा के फल प्रकट हो रहें हों, तो जातक को उस दशा स्वामी ग्रह से सम्बन्धित ग्रह का जाप, पूजा एवं दानादि करके ग्रह शान्ति करवा लेना चाहिए।

--योगिनी दशा में अन्तर्दशाओं का फल विचार--

योगिनी अन्तर्दशाओं में जब मंगला आदि शुभ दशाओं के अन्तर में धान्या, भद्रिका आदि शुभ योगिनी की ही अन्तर्दशा चलती है, तो अपने ग्रह स्वामी के गुणों के अनुसार शुभ फलों में वृद्धि होती है। यदि दोनों योगिनी अन्तर्दशाऐं अशुभ फलप्रदा होंगी, तो अशुभ फलों की मात्रा में वृद्धि होगी। यदि मुख्य योगिनी शुभफली एवं उपदशा अशुभफली हो, तो मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

नोट—विंशोत्तरी, योगिनी आदि सभी प्रकार की दशाओं के फल का विचार करते समय उस समय की **'पंचाँग दिवाकर'** में दी गई ग्रहों की गोचर स्थिति एवं उसके प्रभाव को भी ध्यान में अवश्य रखना चाहिए। इससे ग्रह फलकथन में अधिक सूक्ष्मता होगी— पं. पन्ना लाल ज्योतिषी।

जन्मदिन पर क्या करें, क्या ना करें ?

—आवश्यक नियम—

सनातन धर्म में जन्मदिन (वर्धापन) संस्कार एक सर्वांगपूर्ण जन्मोत्सव है, जिसे विधिपूर्वक करने से आयु एवं आरोग्य की वृद्धि होती है, सुख-समृद्धि होती है। देवताओं, ऋषियों एवं माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त होता है तथा अनिष्ट ग्रहों की शान्ति होती है। जन्मदिन पर जन्मदिन की पूजा, होमादि के अतिरिक्त शास्त्रकारों ने जन्मदिन पर विशेष नियमों का पालन करने के निर्देश दिए हैं, उन्हें सावधानीपूर्वक करने से अनिष्ट की शान्ति तथा दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

(१) जन्मदिन की प्रातःकाल उठकर हाथ-मुँह धोकर एवं शौचादि से निवृत्त होकर सर्वप्रथम अपने इष्टदेव का ध्यान करके मन ही मन प्रणाम करें। फिर प्राणायाम एवं हल्का व्यायाम करके माता-पिता एवं अग्रजों का अभिवादन करके उनसे आशीर्वाद ग्रहण करें।

(२) प्रातः ही मार्कण्डेय, अश्वत्थामा, हनुमान आदि अष्ट दीर्घजीवियों को स्मरण करके उन्हें प्रणाम करना चाहिए। इससे अपमृत्यु नहीं होती तथा दीर्घायु प्राप्त होती है। इनकी पूजादि का विवरण '**जन्मदिन पूजा पद्धति**' के अन्दर दिया गया है। तत्पश्चात् अन्य मांगलिक देवों एवं दिव्य वस्तुओं के दर्शन करके उन्हें प्रणाम करें, जैसे—श्री गणेश मूर्ति, सूर्य देव, गाय, तुलसी, शंख, दर्पण आदि।

(३) जन्मदिन को तिलों आदि के तेल की मालिश करके जल में तिल एवं गंगाजल डालकर मंत्रपूर्वक एवं विधिपूर्वक स्नान करना चाहिए। धर्मशास्त्रानुसार जन्मदिन को सामान्य परिस्थितियों में गर्म जल से स्नान नहीं करना चाहिए। ताज़ा अथवा गंगादि नदी के पानी में स्नान करना शुभ होता है।

(४) जन्मदिन पर क्षौर कर्म, केश कटवाना, दाढ़ी बनवाना आदि एवं नखों को नहीं काटना चाहिए।

(५) जन्मदिन को किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा जन्मदिन पूजन (स्वस्तिवाचन, ॐकार, गणेश, शिव, विष्णु, सूर्य आदि नवग्रह, गौरी, मार्कण्डेय आदि अष्टदीर्घजीवी, षष्ठी देवी आदि की पूजा तथा आवाहित देवी-देवताओं के होमपूर्वक मनाना चाहिए। पूजानादि के पश्चात् ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दान करना चाहिए।

(६) जन्म कुण्डली अथवा वर्षफल में जो कोई भी अरिष्ट ग्रह हो अथवा उनकी दशा हो, उनकी विशेष पूजा, दान एवं होम द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। इसके अतिरिक्त आरोग्य एवं सुखमय व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन के लिए गायत्री मंत्र जप, सूर्य द्वादश नाम स्तोत्र, श्री गणेश स्तोत्र, आदित्य हृदय, सूर्याष्टक स्तोत्र, सूर्य चालीसा, अमोघ शिव कवच, महामृत्युञ्जय स्तोत्र, श्रीलक्ष्मी स्तोत्र एवं जन्म या वर्ष कुण्डली के अरिष्ट ग्रह के अशुभ फल निवारण हेतु सूर्य, भौमादि गायत्री जप-दान स्वयं अथवा किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवाना शुभ होगा।

(७) जन्मदिन को सारा दिन शुभ कार्यों (विशेषकर सत्संग) मन्त्र-जाप, स्तोत्र पाठ, प्रभु कीर्तन आदि में व्यतीत करना चाहिए। वृथा-वार्तालाप, वृथा दौड़-धूप, कलह-क्लेश, झूठ-कपट एवं क्रोधादि से बचना चाहिए।

(८) वैसे तो मांस, अण्डा, मदिरा आदि-तामसिक भोजन नहीं लेना चाहिए। परन्तु जन्मदिन को विशेषतया तामसिक भोजन से परहेज रखना चाहिए। स्त्री-प्रसंग, मैथुनादि वासनात्मक कृत्यों से परहेज़ चाहिए।

(९) यदि किसी कारणवश **जन्मदिन पूजन** न करवा सकें, तो गृह में या मन्दिर में गायत्री मन्त्र जप या अन्य जप विष्णु सहस्रणामादि स्तोत्र पाठ, सूर्य के द्वादश नाम मन्त्र व अर्घ्य, षष्ठी देवी स्तोत्र का पाठ, अष्ट दीर्घजीवियों का नाम स्मरण एवं नमस्कार तथा धर्म स्थान पर ब्राह्मण भोजन एवं उन्हें यथाशक्ति दान आदि करना चाहिए।

(१०) विशेष शरीर क़ष्ट या अरिष्ट हो, तो अनाजादि का तुलादान दक्षिणा सहित (संकलक्पवूर्वक) करवाना चाहिए। इसके अतिरिक्त इस दिन मन्त्रपूर्वक सर्वोषधि स्नान, महामृत्युञ्जय मन्त्र जाप अथवा बालारिष्ट योग हो, तो षष्ठी पूजन एवं षष्ठी देवी का स्तोत्र पाठ एवं पूजित देवताओं नवग्रहों आदि के हवन करवाना कल्याणकारी होता है। पूजनोपरान्त बालक द्वारा छायापात्र दान एवं मंगल ग्रन्थी बंधन करवाना शुभ होता है। (इसका विस्तृत विवरण पुस्तक के भीतर देखें।)

(११) जन्म दिन पर अपने आस-पड़ोस फूल एवं फलदार पौधे लगाने सौभाग्यवर्द्धक एवं दीर्घायुकारक होते हैं।

(१२) इस दिन अन्ध विद्यालय, गौशाला, अस्पताल, कुष्टाश्रम आदि चैरिटेबल स्थानों पर अन्न, वस्त्र फल, दवाईयों अथवा धन आदि द्वारा सेवा करना कल्याणकारी होता है।

(१३) यदि जन्म दिन को ग्रहण हो या संक्रान्ति, अमावस, चतुर्दशी, ग्रहणवेध या किसी क्रूर ग्रह की दशा हो या जन्म राशि पापाक्रान्त हो, तो उस दिन मिष्ठान्न सहित अनाज का दान तथा दक्षिणा सहित तुलादान कराना चाहिए।

भाग्योदय देखने का चक्र

यदि आपको किसी व्यक्ति के भाग्य का फल जानना हो, तो उस व्यक्ति को कहें कि वह व्यक्ति 1 से 31 की संख्या के भीतर कोई भी अंक मन में सोच ले। तदुपरान्त उसको पूछें कि नीचे लिखे A से लेकर E तक के पाँच यन्त्रों में से किस-किस यन्त्र में उसका सोचा हुआ अंक विद्यमान् है। जिस-जिस यन्त्र में अमुक व्यक्ति का सोचा हुआ अंक मिले, उस यन्त्र के दाईं तरफ के सबसे ऊपर के कोने वाले पहले हिन्दसों को परस्पर जमा कर लेने से व्यक्ति विशेष के मन में सोची हुई संख्या पता लग जाएगी। उस अंक की संख्या के आधार पर व्यक्ति के '**भाग्य का फल**' आगे लिखे अनुसार जानें—

उदाहरण—मान लो किसी मनुष्य ने अपने मन में 22 का अंक सोचा है। अब देखो कि यह 22 का अंक खाना नं० A, B, C, D, E में कहाँ मिलता है। अब इन यन्त्रों B,C, E के ऊपर के दायें कोनें के अंकों 2 + 4 +16 को जोड़ो तो 22 का जोड़ बनता है। अत: प्रश्नकर्त्ता ने 22 का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। इसी भान्ति अन्य अंकों के बारे में भी विचार करें।

नं० A

7	5	3	1
15	13	11	9
17	19	21	23
25	27	29	31

नं० B

7	6	3	2
15	14	11	10
23	22	19	18
31	30	27	26

नं० C

30	29	28	4
22	21	20	23
15	13	12	14
5	6	7	31

नं० D

30	10	28	8
26	25	24	31
14	13	12	27
9	29	11	15

नं० E

29	30	31	16
26	25	24	20
21	22	23	27
17	18	19	28

(1) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुमकों इस का ध्यान भी न होगा। (2) धैर्य रखें, भाग्योदय होने वाला है। फिर भी प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का पाठ करते रहें। (3) किसी ऐसे साधन द्वारा तुम्हारी आशा पूर्ण होगी जिसका आपको ध्यान भी नहीं होगा। (4) जिस गुप्त चिन्ता के लिए आप परेशान हो, उसकी सफलता के लिए अभी कुछ विलम्ब हो सकता है, अपना पुरुषार्थ जारी रखें। (5) आपके लिए खुशी का समय आने वाला है, धैर्य रखें। सूर्य उपासना करना शुभ होगा। (6) घबराओ नहीं, तुम्हारी बेहतरी का साधन (ईश्वर कृपा से) शीघ्र निकल आएगा। (7) आपकी मुश्किलों का हल माता-पिता के आशीर्वाद से ही निकल पाएगा। (8) तुम्हारे भाग्य में धन-सम्पत्ति का सुख लिखा है, किन्तु विशेष परिश्रम करना होगा, लक्ष्मी चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा। (9) थोड़े दिनों में आपके सामने विदेश यात्रा सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जाएगा, इसको स्वीकृति देने से पहले गम्भीरता से विचार करना उचित होगा। (10) इस समय आपका भाग्य गर्दिश में है, विशेष पुरुषार्थ एवं शिव उपासना करने से सफलता मिलेगी। (11) आपके संघर्ष और परेशानियों का समय बीत गया है, आने वाले दिनों में धन-लाभ एवं सुख के साधन बढ़ेंगे। (12) उतावलेपन से बनते काम बिगड़ सकते हैं। धीरज से काम लें, धीरे-धीरे ही बिगड़े कामों में सुधार आएगा। (13) किसी प्रिय बन्धु के सहयोग से बिगड़ा हुआ कोई विशेष काम बनेगा। (14) अभी बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। मानसिक तनाव व उद्विग्नता से बचें। (15) भाग्य में अभी कशमकश रहेगी। लगभग अढ़ाई महीने बाद सुधार के योग हैं। (16) ईश्वर पर भरोसा रखो, लगभग दो महीने बाद भाग्य में परिवर्तन होने के संकेत मिलते हैं। (17) अभी सितारे गर्दिश में है, लगभग डेढ़ मास बाद हालात में सुधार होगा। (18) अनावश्यक चिन्ता एवं तनाव से बचें, अच्छा समय आने वाला है। (19) उत्साहपूर्वक कर्म करते रहें, भाग्य में परिवर्तन व शुभ लाभ के योग पाए जाते हैं। (20) अपने भाग्य एवं पुरुषार्थ पर भरोसा रखें, मनोवांछित कार्यों में सफलता मिलने वाली है। (21) वर्तमान काल में आपके भाग्य के सितारे गर्दिश में है। लगभग एक मास बाद हालात में सुधार के योग हैं। (22) विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। (23) आर्थिक परेशानियों के कारण तनाव होगा, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में लाभ व उन्नति के योग हैं। (24) वर्तमान में समय संघर्षपूर्ण होगा। निकट भविष्य में मनोवांछित कार्यों में सिद्धि प्राप्ति होने के संकेत हैं। (25) किसी अंतरंग मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा। अचानक धन लाभ भी होगा। (26) वृथा कामों में समय न गंवाओ, आने वाले दो महीनों में लाभ व उन्नति के योग हैं। (27) व्यर्थ की चिन्ता न करें, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में सुखद परिवर्तन होने के आसार हैं। (28) उत्साह से अपने कर्त्तव्य पालन में लगे रहें, लगभग दो मास में भाग्य में शुभ परिवर्तन होने वाला है। (29) संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के कारण मन अशान्त रहेगा। लगभग अढ़ाई मास बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। (30) अपने निश्चय पर दृढ़ रहें, लगभग डेढ़ मास आर्थिक कामों में सुधार होगा। (31) वर्तमान परिस्थितियां संघर्षपूर्ण होंगी। कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन के बाद सफलता प्राप्त होगी।

स्वप्न — शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति
अन्धेरा देखना	दुःख मिले
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता
अर्थी देखना	रोग मुक्त
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग
आकाश देखना	तरक्की होना
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो
आत्महत्या करना	दीर्घायु
आलू देखना	मुसीबत आना
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की
ईंजन देखना	योजनाएं असफल
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले
ऊँट देखना	अंग घात
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान
ऐनक देखना (काली)	निराशा
कमल देखना	धन प्राप्ति

स्वप्न	फल
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद
कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो
कबूतर देखना	शुभ समाचार
काला नाग	राज्य सम्मान
किला देखना	तरक्की पाना
कोढ़ी देखना	रोग सूचक
कन्या देखना	तीर्थ यात्रा
कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा
कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी
कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो
कोयल देखना	कोई शुभ समाचार
कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता
कबाब खाना	अपयश/विवाद
कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि
खून करना	संकट आना
खिलौना देखना	सुख शान्ति
खरबूजा देखना	धन लाभ
खेत देखना	संकट पूर्ण
खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप
गुरु देखना	कार्य सफलता
गोबर देखना	पशु लाभ हो
गंगा देखना	शेष जीवन सुखी
ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता
गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण
गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो
गरीबी देखना	सुख समृद्धि

स्वप्न	फल
गर्भपात	गम्भीर रोग
घूंघट देखना	नया कारोबार
घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता
घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा
घायल देखना	संकट से मुक्त होना
घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो
घडी देखना	यात्रा का संकेत
घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक
चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ
चरखा देखना	आर्थिक लाभ
चावल खाना	शुभ समाचार
चोर देखना	धन प्राप्ति
चादर देखना	बदनामी हो
चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद
चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत
चीखें मारना	परेशानी व कष्ट
चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक
छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद
छिपकली देखना	अचानक धन लाभ
छींकना	कार्य बाधा
छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा
छपाई देखना	अपमानित होना
छंटनी देखना	पदोन्नति
जख्म देखना	परेशानियां
जादूगर देखना	अशुभ लक्षण
जहाज देखना	परेशानी दूर हो
जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति
जल देखना	मान सम्मान

स्वप्न	फल
ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक
जुआ खेलना	धन हानि
जेब काटना	धन हानि
जड़ें देखना	दीर्घायु
जड़ें काटना	संकट का सूचक
जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की
झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले
झाड़ू देखना	नुकसान हो
झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ
झांकी देखना	अशुभ
झोली देखना	विजय संकेत
झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक
झरना देखना	दुःख दूर हों
टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना
टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि
टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति
टेलीफोन करना	शुभ समाचार
टापू देखना	संकट लक्षण
टोपी देखना	प्रगति हो
ठग मिलना	धन हानि
ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य
ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक
ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति
डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति
डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना
डोली देखना	कोई परेशानी हो
डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो
डाकू देखना	धन हानि

स्वप्न	फल
ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
तैरते देखना	आयु में वृद्धि
तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
तीर मारना	खुशी मिले
तूफान देखना	परेशानी बढ़े
तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
तोता देखना	धन लाभ
तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
तराजू देखना	व्यापार लाभ
ताली बजाना	खुशी मिले
ताश खेलना	व्यापार लाभ
ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
तरबूज देखना	परेशानी
तांगा देखना	झगड़ा हो
थूक देना	परेशानी बढ़े
थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
थप्पड़ खाना	शुभ
धन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
दूध पीना	खुशी प्राप्ति
दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
दही देखना	सफलता
दाँव लगाना	भारी हानि

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दक्षिणा देना	मंगल कार्य
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व दखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मधुमक्खी देखना	व्यापार वृद्धि
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दुःख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	चिन्ता, हानि
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
	रोग दिन संख्या									
अश्विनी १	०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवैद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवैद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्घखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्रचयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णाम्नि
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्ञनेषु। यदी दयच्छ वसत्रृतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्लया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नंहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्कात्र दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं घियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमबितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु–वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृत्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्गगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड्ग	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र– –पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा– –द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्य पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पूफा	उफा	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूला	श्रव०	पूभा	अश्वि	रोहि
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वाती	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

। । अथ बालकष्टावली पूतना विधान । ।

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटें से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गो श्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गो श्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से **राहु**, ५ बचें तो **गुरु**, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से **केतु**, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—**सूर्य** के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९
गुप्त मित्र	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११
प्रत्यक्ष शत्रु	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७
गुप्त शत्रु	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। "सूर्य सिद्धान्तानुसार" उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से '**वर्षफल चन्द्रिका**' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०
गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे।

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में—**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्पयूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 3	22	44
	8	28	14
अर्थात् (रविवार)	1 वार	4	14

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि—आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2005 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2005 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 31 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 31 के सामने हमें 3 वार, 22 घण्टे एवं 44 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 7 वार 28 घण्टे, 14 मिनट प्राप्त हुए। अब 28 घण्टों में से 24 घं. घटा देने और 1 वार बढ़ा देने से हमें 8 वार अर्थात् रविवार की प्रातः 4 बजकर, 14 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की मध्य रात्रि एवं 2 अक्तू. की प्रातः 4 बजकर 14 पर हमें **सिंह वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न सिंह में सं. २०६२ की पंचांग से 2 अक्तू. 2005 ई. प्रातः 4/14 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित '**वर्षफल चन्द्रिका**' पुस्तक का अध्ययन करें।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

श्री दुर्गा चरित् एवं सप्तशती की महिमा

कलियुग में समस्त दुःखों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। "**कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं श्री दुर्गार्चनम्॥**" श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री दुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पड़ने वाले विघ्नों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवाँछित फल प्रदान कराने वाली **मन्दाकिनी** है।

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। माँ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरान्त पाठ की दशांश संख्या में श्री दुर्गा हवन करने से शीघ्र ही कामना सिद्धि होती है।

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्म ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रन्थ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा सप्तशती के प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में मूल पाठ के साथ हिन्दी टीका, श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ विधि, श्री दुर्गा पाठ सार कथा, श्री नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्गला स्तोत्र, तीनों रहस्य, नवचण्डी, शतचण्डी-विधान, श्री सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के मन्त्रों की आहुतियां हवन विधि सहित, अनुष्ठान हेतु अनेक **काम्य तान्त्रिक प्रयोग,** कनकधारा स्तोत्र, आरतियां इत्यादि अनेक नवीन विषय जो अन्य किसी भी अन्य प्रचलित सप्तशती में आप नहीं पाएँगे॥ धर्म पारायण प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं उपयोगी पुस्तक। इसमें दिए गए तान्त्रिक प्रयोगों की सहायता से मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति हो सकती है। श्रीदुर्गासप्तशती (सरल भाषा में) भी उपलब्ध है। **पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।**

भेंट—55 रु., डाक व्यय अलग॥

नोट—कार्यालय के नियमानुसार 50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

—मुंथहा अर्थात् मुंथा स्तोत्र—

वर्ष कुण्डली में कई बार मुंथहा चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में आ जाने से व्यक्ति के आगामी वर्ष में शरीर कष्ट, निकट बन्धुओं से विरोध, व्यवसाय में विघ्न, धन हानि, गुप्त, दुर्घटना आदि की आशंका होती है। मुंथा युक्त अशुभ ग्रह एवं मुंथेश ग्रह की यथाशक्ति पूजा, दान आदि करने से तथा निम्नलिखित मुंथा स्तोत्र का पाठ करने से अनिष्ट मुंथा की शान्ति होती है—

कैलाश शिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्। पार्वती प्रणता भूत्वा वचनं समभाषत॥
श्री पार्वत्युवाच भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशत्रुविमर्दन। यस्मिन् वर्षे व्याधिभयं मुन्थहा कुरुते यदि॥
केनोपायेन शान्तिः स्यात् तद् वदस्व सुरेश्वर। (श्री महादेवोवाच)
अस्तहि मुन्थहादे व्याश्चाष्टकं नाम सिद्धिदम्॥
यस्यविज्ञानमात्रेण बहवो निर्भयंगता। (मुन्थहा प्रथमे। नाम द्वितीयं कीर्तिवर्धिनी॥
तृतीयं देवजननी चतुर्थं मधवप्रिया। पञ्चमं भयहन्त्री च षष्ठं विश्वेश्वरी तया॥
सप्तमं कलुषध्नी व वरदा चाष्टमं तया। इत्यतेनमिभिर्देवी प्रत्यहं पूजिता यदि॥
तस्य पीड़ाभयं नाऽस्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्। यज्ज्ञात्वा निर्जरेर्देवैः सर्वे दानव राक्षसाः॥
निहताः समरे देवि तस्मान्मुन्थां सदा जपेत्।
राज्यदां भोग्यदां श्रीदां पुत्रदां कीर्तिदां तथा॥ नामान्येतानि मुन्थाया पठेन्नित्यं महेश्वरि॥

स्तोत्र पाठ के अनन्तर 3 बार श्री दुर्गा मन्त्र "सर्व मङ्गल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते" मंत्र का पाठ करके श्री दुर्गा माता की आरती करना कल्याणकारी होगा।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°—२०' (अंश कला) होगा (१३°—२०') ÷ 4 = 3°—20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रतयेक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०—००—००	अश्विनी (१) मेषे	४—००—००	मघा (१) सिंहे	८—००—००	मूला (१) धनु
०—०३—२०	,, (२) ,,	४—०३—२०	,, (२) ,,	८—०३—२०	,, (२) ,,
०—०६—४०	,, (३) ,,	४—०६—४०	,, (३) ,,	८—०६—४०	,, (३) ,,
०—१०—००	,, (४) ,,	४—१०—००	,, (४) ,,	८—१०—००	,, (४) ,,
०—१३—२०	भरणी (१) ,,	४—१३—२०	पूफा (१) ,,	८—१३—२०	पूषा (१) ,,
०—१६—४०	,, (२) ,,	४—१६—४०	,, (२) ,,	८—१६—४०	,, (२) ,,
०—२०—००	,, (३) ,,	४—२०—००	,, (३) ,,	८—२०—००	,, (३) ,,
०—२३—२०	,, (४) ,,	४—२३—२०	,, (४) ,,	८—२३—२०	,, (४) ,,
०—२६—४०	कृतिका (१) मेषे	४—२६—४०	उफा (१) ,,	८—२६—४०	उषा (१) ,,
१—००—००	,, (२) वृषे	५—००—००	,, (२) कन्या	९—००—००	उषा (२) मक
१—०३—२०	,, (३) ,,	५—०३—२०	,, (३) ,,	९—०३—२०	,, (३) ,,
१—०६—४०	,, (४) ,,	५—०६—४०	,, (४) ,,	९—०६—४०	,, (४) ,,
१—१०—००	रोहिणी (१) ,,	५—१०—००	हस्ते (१) ,,	९—१०—००	श्रवं (१) ,,
१—१३—२०	,, (२) ,,	५—१३—२०	,, (२) ,,	९—१३—२०	,, (२) ,,
१—१६—४०	,, (३) ,,	५—१६—४०	,, (३) ,,	९—१६—४०	,, (३) ,,
१—२०—००	,, (४) ,,	५—२०—००	,, (४) ,,	९—२०—००	,, (४) ,,
१—२३—२०	मृगशिर (१) ,,	५—२३—२०	चित्रा (१) ,,	९—२३—२०	धनि (१) ,,
१—२६—४०	,, (२) ,,	५—२६—४०	,, (२) ,,	९—२६—४०	,, (२) ,,
२—००—००	,, (३) मिथुन	६—००—००	चित्रा (३) तुला	१०—००—००	,, (३) कुंभे
२—०३—२०	,, (४) ,,	६—०३—२०	,, (४) ,,	१०—०३—२०	,, (४) ,,
२—०६—४०	आर्द्रा (१) ,,	६—०६—४०	स्वाती (१) ,,	१०—०६—४०	शतभिषा (१) ,,
२—१०—००	,, (२) ,,	६—१०—००	,, (२) ,,	१०—१०—००	,, (२) ,,
२—१३—२०	,, (३) ,,	६—१३—२०	,, (३) ,,	१०—१३—२०	,, (३) ,,
२—१६—४०	,, (४) ,,	६—१६—४०	,, (४) ,,	१०—१६—४०	,, (४) ,,
२—२०—००	पुनर्वसु (१) ,,	६—२०—००	विशाखा (१) ,,	१०—२०—००	पूभा (१) ,,
२—२३—२०	,, (२) ,,	६—२३—२०	,, (२) ,,	१०—२३—२०	,, (२) ,,
२—२६—४०	,, (३) ,,	६—२६—४०	,, (३) ,,	१०—२६—४०	,, (३) ,,
३—००—००	पुनर्वसु (४) कर्के	७—००—००	,, (४) वृश्चिके	११—००—००	पूभा (४) मीने
३—०३—२०	पुष्ये (१) ,,	७—०३—२०	अनुराधा (१) ,,	११—०३—२०	उभा (१) ,,
३—०६—४०	,, (२) ,,	७—०६—४०	,, (२) ,,	११—०६—४०	,, (२) ,,
३—१०—००	,, (३) ,,	७—१०—००	,, (३) ,,	११—१०—००	,, (३) ,,
३—१३—२०	,, (४) ,,	७—१३—२०	,, (४) ,,	११—१३—२०	उभा (४) ,,
३—१६—४०	अश्ले (१) ,,	७—१६—४०	ज्ये. (१) ,,	११—१६—४०	रेवती (१) ,,
३—२०—००	,, (२) ,,	७—२०—००	,, (२) ,,	११—२०—००	,, (२) ,,
३—२३—२०	,, (३) ,,	७—२३—२०	,, (३) ,,	११—२३—२०	,, (३) ,,
३—२६—४०	,, (४) ,,	७—२६—४०	,, (४) ,,	११—२६—४०	रेवती (४) ,,
				००—००—००	अश्वि (१) मेषे

घड़ी पलों का घण्टा-मिनट (भा. स्टैं. टा.) में परिवर्तन

भारतीय ज्योतिष में प्राचीन काल से ही तिथि, नक्षत्र, योग एवं ग्रहों के मान के सम्बन्ध में घड़ी-पलों का ही प्रयोग होता आया है। परन्तु आधुनिक काल में पाश्चात्य प्रभाव से घण्टों-मिनटों का प्रचलन विशेषतया सर्वत्र होने लगा है। इसके अतिरिक्त उल्लेखनीय है कि तिथि-नक्षत्रों के सम्बन्ध में दिए गए घटी-पलादि स्थानीय सूर्योदय से सम्बन्धित होने के कारण क्षेत्रीय (एक देशीय) (अथवा निकटस्थ नगर) के लिए ही गाह्य होते हैं जबकि घण्टा-मिनटों एवं स्टैं. टा. में दिए गए तिथि, नक्षत्र एवं ग्रहों के संचार आदि सम्पूर्ण भारत में सभी प्रदेशों व नगरों के लिए ग्राह्य एवं उपयोगी होते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए पंचांगदिवाकर में सूर्यादि सभी ग्रहों के राशि-प्रवेश-घंटा-मिनटों (भा. स्टैं. टा.) में भी दिए गए हैं। उनका समय भा. स्टै. टा. में सभी प्रदेशों के लिए समान रूप में ग्राह्य है। ग्रहों के प्रवेश आदि के समय में विदेशी नगरों का स्टैं. अन्तर जमा अथवा घटा करके विदेशों में ग्रहों के प्रवेश आदि का समय भी जान सकते हैं।

पंचागदिवाकर में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योग, भद्रा, सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों को घण्टा-मिनटों एवं भा. स्टैं. टा. में परिवर्तन करना अत्यन्त सरल है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के घड़ी-पलों को आगे लिखी सारिणी द्वारा घण्टा-मिनटों में परिवर्तन कर लेने तथा प्राप्त घण्टा-मिनटों में उसी दिन का सूर्योदय जमा कर देने से हमें भारतीय स्टैं. टाईम में तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों का प्रवेश काल ज्ञात हो जाएगा। यह स्टैं. समय भारत के सभी नगरों के लिए ग्राह्य होगा। उदाहरणस्वरूप मान लो हमने वि. संवत् 2066, चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (1 मार्च, 2010 ई.) के तिथि, नक्षत्र आदि के घड़ी-पलों को स्टैं. टा. में परिवर्तित करना है। इसकी प्रक्रिया इस प्रकार से होगी। प्रतिपदा के आगे 28 घड़ी 55 पल लिखा है। आगे लिखी तालिका के आधार पर इसके 11 घण्टा, 34 मिनट बने, इसको उसी दिन के सूर्योदय 6/58 में जमा करने से 18 घण्टा, 32 मिनट अर्थात् सायं 18 बजकर 34 मिनट तक प्रतिपदा रही। इसी भान्ति पू.फा. नक्षत्र के २०/१८ घड़ी/पलों के 8/07 घं. मिं. में सूर्योदय (6/58) जमा करने पर पू.फा. नक्षत्र का समाप्ति काल 15/05 घं. मिं. मिला।

उदाहरण (2)—मानलो कि संवत् 2066 में 15 मार्च, सन् 2010 को अमावस ४९/३५ घट्यादि, के 19 घण्टे 50 मिनट बने इनमें सूर्योदय 6/41 जमा करने से 26/31 घं. मिं. स्टैं. टा. प्राप्त हुआ। इसी दिन पू.भा. नक्षत्र 60/00 घटी पलों के 24/00 घण्टा/ मिनटों अर्थात् पूरा दिन (अगले दिन के सूर्योदय) तक पू.भा. नक्षत्र रहेगा। यह समय सम्पूर्ण भारतीय नगरों के लिए ग्राह्य होगा। इसी दिन अमावस तिथि का समाप्ति काल यदि इंग्लैण्ड में जानना चाहें तो वहाँ पर अमावस का समाप्ति काल 5./30 घण्टे पहिले [सामान्यत: इंग्लैण्ड का भारत से स्टैण्डर्ड अन्तर 5.30 घण्टे का होता है परन्तु लगभग अप्रैल से अक्तूबर के मध्य ग्रीष्म कालीन संस्कार होने से एक घण्टा कम करके यह अन्तर 4/30 घण्टे का हो जाता है।] **अर्थात् रात्रि 21 बजकर 01 मिनट पर समाप्त हो जाएगा। इसी प्रकार सभी देशों में तिथि, नक्षत्र एवं ग्रहों का प्रवेश काल जानें।**

घड़ी-पलों का घण्टे-मिनटों में परिवर्तन सारिणी

घड़ी	घंटे मिंट	घड़ी	घंटे मिंट	घड़ी	घंटे मिंट	पल	मिंट सैकिं.	पल	मिंट सैकिं.	पल	मिंट सैकिं.
1	0 ... 24	21	8 ... 24	41	16 ... 24	1	0 ... 24	21	8 ... 24	41	16 ... 24
2	0 ... 48	22	8 ... 48	42	16 ... 48	2	0 ... 48	22	8 ... 48	42	16 ... 48
3	1 ... 12	23	9 ... 12	43	17 ... 12	3	1 ... 12	23	9 ... 12	43	17 ... 12
4	1 ... 36	24	9 ... 36	44	17 ... 36	4	1 ... 36	24	9 ... 36	44	17 ... 36
5	2 ... 00	25	10 ... 00	45	18 ... 00	5	2 ... 00	25	10 ... 00	45	18 ... 00
6	2 ... 24	26	10 ... 24	46	18 ... 24	6	2 ... 24	26	10 ... 24	46	18 ... 24
7	2 ... 48	27	10 ... 48	47	18 ... 48	7	2 ... 48	27	10 ... 48	47	18 ... 48
8	3 ... 12	28	11 ... 12	48	19 ... 12	8	3 ... 12	28	11 ... 12	48	19 ... 12
9	3 ... 36	29	11 ... 36	49	19 ... 36	9	3 ... 36	29	11 ... 36	49	19 ... 36
10	4 ... 00	30	12 ... 00	50	20 ... 00	10	4 ... 00	30	12 ... 00	50	20 ... 00
11	4 ... 24	31	12 ... 24	51	20 ... 24	11	4 ... 24	31	12 ... 24	51	20 ... 24
12	4 ... 48	32	12 ... 48	52	20 ... 48	12	4 ... 48	32	12 ... 48	52	20 ... 48
13	5 ... 12	33	13 ... 12	53	21 ... 12	13	5 ... 12	33	13 ... 12	53	21 ... 12
14	5 ... 36	34	13 ... 36	54	21 ... 36	14	5 ... 36	34	13 ... 36	54	21 ... 36
15	6 ... 00	35	14 ... 00	55	22 ... 00	15	6 ... 00	35	14 ... 00	55	22 ... 00
16	6 ... 24	36	14 ... 24	56	22 ... 24	16	6 ... 24	36	14 ... 24	56	22 ... 24
17	6 ... 48	37	14 ... 48	57	22 ... 48	17	6 ... 48	37	14 ... 48	57	22 ... 48
18	7 ... 12	38	15 ... 12	58	23 ... 12	18	7 ... 12	38	15 ... 12	58	23 ... 12
19	7 ... 36	39	15 ... 36	59	23 ... 36	19	7 ... 36	39	15 ... 36	59	23 ... 36
20	8 ... 00	40	16 ... 00	60	24 ... 00	20	8 ... 00	40	16 ... 00	60	24 ... 00

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जनवरी ता.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

फरवरी ता.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	24 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	24 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	24 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 01	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी — मार्च — भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली — DELHI

	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी — अप्रैल — भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली — DELHI

	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मई	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जून	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	11 34	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जुलाई ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अगस्त ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

सितंबर — दैनिक लग्न सारणी — भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली (DELHI)

ता.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्तू	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अक्तूबर — दैनिक लग्न सारणी — भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली (DELHI)

ता.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

नवंबर — दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दिसंबर — दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दिनमान से मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न, प्रदोष काल जानना

प्राचीन भारतीय महर्षियों ने विभिन्न शास्त्रीय, वैदिक एवं लौकिक कार्यों को करने के लिए अपने सहस्त्रों वर्षों के अनुभवों एवं अनुसन्धानों के आधार पर मानव-उपयोगी '**काल मान**' के ज्ञान का प्रकाश किया था। आजकल यद्यपि काल-विभाजन अधिकांशत: घण्टा मिनटों, सैकिण्डों आदि में किया जाता है, परन्तु भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने दिन-रात (अहोरात्र) का विभाजन दिनमान, रात्रिमान, घड़ी, पल, विपल, प्रहर, मुहूर्त्तों आदि में दिया गया है। व्रत, पर्व, त्यौहारों एवं यज्ञादि अनुष्ठानों सम्बन्धी नियमों में मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष, ब्रह्म आदि काल के विशेष उल्लेख मिलते हैं।

—अथ दिवारात्रौ पंचदश मुहूर्त्ता—

मुहूर्त्त—**मुहूर्त्त मार्त्तण्ड** के अनुसार दिन और रात में पन्द्रह-पन्द्रह कुल (३०) मुहूर्त्त होते हैं। दिनमान अथवा रात्रिमान को १५ से भाग देने पर प्रत्येक मुहूर्त्त का समान मान निकलता है।

दिन के पांच भाग—अक्षांश भेद एवं सूर्योदयास्त में अन्तर होने के कारण प्रत्येक नगर के दिनमान और रात्रिमान परिवर्तित होते रहते हैं। सम्भवत: इसी कारण हमारे पूर्वाचार्यों ने दिवस का प्रारम्भ काल सूर्योदय से मानते हुए दिन के पाँच भाग किए हैं, यथा—सूर्योदय से ३ मुहूर्त्त (२ घण्टा, २४ मिनट) तक **प्रात:काल**, उसके बाद २ घण्टा, २४ मिनट **संगवकाल**, इसके बाद २ घण्टे २४ मिनट तक **मध्याह्नकाल**, फिर २ घण्टा, २४ मिनट के बाद **अपराह्नकाल** और फिर आगे २ घण्टा २४ मिनट का **सायंह्नकाल** होता है।

प्रात:काल स्नानादि के पश्चात् देवपूजन, जपादि के लिए प्रशस्त, मध्याह्न में **ब्रह्मयज्ञ**, ऋषि तर्पण आदि, अपराह्न में श्राद्ध, पितृकर्म तथा **सायंकाल** में भी स्नान, संध्या, जप, देवार्चन आदि करने की शास्त्राज्ञा है।

अभिजित मुहूर्त्त—यह दिन का अष्टम मुहूर्त्त है। यह विशेष प्रशस्त मुहूर्त्त कहलाता है। नारद पुराण अनुसार दिन के बारह बजे से 1 घड़ी पूर्व और एक घड़ी पश्चात् अर्थात् मध्याह्न 11.36 से 12.24 बजे तक का समय तथा तदनन्तर नवम मुहूर्त्त '**ब्राह्म**' या '**रौहिण**' कहलाता है, जो श्राद्ध में श्रेष्ठ माना जाता है। अभिजित् काल में क्रियमाण सभी कार्य सफल होते हैं, ऐसी मान्यता है।

—मध्याह्न, अपराह्न आदि का प्रारम्भ व समाप्ति—

मध्याह्न काल—अभीष्ट दिन के दिनमान को अढ़ाई से भाग देकर जो मान (घड़ी-पलों या घण्टा-मिनटों में) प्राप्त होवे, उसको अपने स्थानीय सूर्योदय में जमा करने से, आपको अपने नगर के **मध्याह्न** का **आरम्भकाल** ज्ञात होगा।

दिनमान को अढ़ाई से भाग देने के पश्चात् जो संख्या घण्टा/मिनटादि प्राप्त हो, उसे २ से भाग देकर अर्ध-भाग करें, तथा इस अर्ध-संख्या को **मध्याह्न** के आरम्भकाल में जमा कर देने से मध्याह्न का समाप्ति काल जान सकते हैं।

मध्याह्न काल की समाप्ति से अपराह्न का प्रारम्भकाल शुरु होता है।

दिनमान से मध्याह्न, अपराह्न, सायह्न जानने की प्रक्रिया

भारतीय भूखण्ड में दिनमान का विस्तार लगभग 9/30 घं. मिंट से लेकर **14-30** घं. मि. के मध्य में पड़ता है। इसीलिए 9/30 घं. मिं. दिनमान से लेकर 14/30 घं. मिं. के दिनमान के मध्यान्तर में आने वाले मध्याह्न, अपराह्न आदि के आरम्भ व समाप्ति काल जानने की प्रक्रिया लिख रहे हैं। मध्याह्न तथा अपराह्न काल के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल के घण्टा मिनट को अपने नगर के सूर्योदय में अलग-अलग जमा कर देने से क्रमश: मध्याह्न एवं अपराह्न काल का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल पता चल जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए हमें जम्मू नगर में 31 अग. 2008 को मध्याह्न का आरम्भ, समाप्ति व मध्यम काल जानना है, तो 31 अग. के सूर्योदय (6/08) को उस दिन के सूर्यास्त (18-53 घं. मिं.) में से घटा देने पर हमें 12 घं. 45 मिनट का दिनमान प्राप्त हुआ। आगे दी गई तालिका में दिनमान घं. 12/45 मिं. के आगे दाईं ओर देखने से हमें मध्याह्न का आरम्भ 5 घं. 6 मिं. मिला। इसको उस दिन के सूर्योदय (6-08) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का प्रारम्भ 11 घं. 14 मिं. तथा उसी दिनमान के सामने समाप्ति काल (7.39) में सू.उ. जमा करने से हमें 31 अग. के मध्याह्न का समा. काल (13-47) प्राप्त हुआ। आरम्भ व समाप्ति के समयान्तर के अर्ध भाग (10/17) को मध्याह्नारम्भ (11-14) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का मध्य काल प्राप्त होगा।

दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायह्न		दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायह्न	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति		प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	3 48	5 42	5 42	7 36	7 36	9 30	12 15	4 54	7 21	7 21	9 48	9 48	12 15
9 45	3 54	5 51	5 51	7 48	7 48	9 45	12 30	5 00	7 30	7 30	10 00	10 00	12 30
10 00	4 00	6 00	6 00	8 00	8 00	10 00	12 45	5 06	7 39	7 39	10 12	10 12	12 45
10 15	4 06	6 9	6 9	8 12	8 12	10 15	13 00	5 12	7 48	7 48	10 24	10 24	13 00
10 30	4 12	6 18	6 18	8 24	8 24	10 30	13 15	5 18	7 57	7 57	10 36	10 36	13 15
10 45	4 18	6 27	6 27	8 36	8 36	10 45	13 30	5 24	8 06	8 06	10 48	10 48	13 30
11 00	4 24	6 36	6 36	8 48	8 48	11 99	13 45	5 30	8 15	8 15	11 00	11 00	13 45
11 15	4 30	6 45	6 45	9 00	9 00	11 15	14 00	5 36	8 24	8 24	11 12	11 12	14 00
11 30	4 36	6 54	6 54	9 12	9 12	11 30	14 15	5 42	8 33	8 33	11 24	11 24	14 15
11 45	4 42	7 03	7 03	9 24	9 24	11 45	14 30	5 48	8 42	8 42	11 36	11 36	14 30
12 00	4 48	7 12	7 12	9 36	9 36	12 00	15 00	6 00	9 00	9 00	12 00	12 00	15 00

इसी भान्ति अभीष्ट दिनमान की दाईं तरफ चौथे कालम में अपराह्न के आरम्भ तथा समाप्ति के घं.मिं. उस दिन के स्थानीय सूर्योदय में अलग-अलग जोड़ देने पर अपराह्न का आरम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) मालूम हो जाएगा।

सायह्नकाल का प्रारम्भ और समाप्ति जानने के लिए भी दी गई तालिकानुसार दिनमान देखकर उसके सामने लिखे अनुसार प्रारम्भ और समाप्ति (घं. मिं.) काल में अभीष्ट दिन को सूर्योदय जोड़ देने से सायंकाल का प्रा. व समाप्ति निकल आएगी।

-प्रदोषकाल ज्ञात करना-

स्थानीय सूर्यास्त के बाद मध्यमान से तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी), अर्थात् 2 घण्टे 24 मिनट तक प्रदोष काल होता है—''**त्रिमुहूर्त्त प्रदोष:स्यात् भानौऽस्तं गते सति।**''

प्रदोषकाल में सूर्यास्त के बाद शिवपूजनार्चनादि तथा ब्राह्मण भोजन का विधान है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त के बाद **2 घड़ी** (1 घण्टा, 12 मिनट) तक के काल को प्रदोष मानते हैं। सम्भवत: यह काल प्रदोष काल में शिवपूजन में ही विशेष प्रशस्त होने से ग्राह्य माना गया है। **रात्रिमान** में 15 मुहूर्त्तों में से प्रथम मुहूर्त्त का स्वामी भी भगवान् शिव ही हैं।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार सूर्यास्त के बाद 3 घड़ियाँ तक प्रदोष काल होती हैं। रात्रिमान के आधार पर प्रदोष काल का आरम्भ काल तो स्थानीय सूर्यास्त से ही माना जाता है। अतएव आगे प्रत्येक रात्रिमान के स्थानिक सूर्यास्त से प्रदोष काल शुरु होकर, उसकी दाईं तरफ लिखे हुए घण्टा मिनट जोड़ देने से आपके नगर के प्रदोष काल का समाप्ति काल प्राप्त हो जाएगा। (घं.मिं.) सूर्यास्त में से सूर्योदय घटा देने से **दिनमान** निकल आता है तथा कुल चौबीस घण्टों में से **दिनमान घटा देने से रात्रिमान** घण्टा मिनट में प्राप्त हो जाता है।

अपनी अभीष्ट रात्रिमान के साथ लिखे स्थानीय सूर्यास्त से प्रदोषकाल शुरु होगा। उस सूर्यास्त के साथ दाहिनी ओर प्रदोष समाप्ति के घण्टा मिनट जमा करने से प्रदोष काल का समाप्ति काल ज्ञात हो जाएगा।

निशीथकाल—**प्रदोषकाल** के **समाप्तिकाल** से **निशीथकाल** का प्रारम्भ माना जाता है, तथा उसमें 3 मुहूर्त (2 घण्टा, 24 मिनट) जमा कर देने से हमें निशीथ का समाप्ति काल प्राप्त हो जाएगा। **निशीथ** में 2 घ. 24 मिनट जोड़ देने से **महानिशीथ** काल निकल आएगा।

उदाहरण—जैसे 7 जुलाई को जालन्धर में प्रदोष का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल जानना है। इसी दिन जालन्धर में रात्रिमान 10 घं. 00 मिं. है। इस रात्रिमान के आगे नीचे के कोष्ठक में 'प्रदोषकाल' के नीचे 'प्रारम्भ' और 'समाप्ति' के घं.मिं. क्रमश: 'सूर्यास्त' और २ घं. ०० मिं. है। अतएव जालन्धर के इस दिन के सूर्यास्त 19 घं. 33 मिं. से प्रदोष काल का प्रारम्भ काल तथा इसमें समाप्तिकाल के २ घं. ०० मिं. जोड़ने से 21 घं. 33 मिं. प्रदोषकाल का समाप्तिकाल होगा।

इसी प्रकार इसी दिन के अरुणोदय काल जानने के लिए हमें 7 जुलाई को जालन्धर के सूर्यास्त में 'अरुणोदय' के नीचे प्रारम्भ और समाप्ति के घं.मिं. को, क्रमश: 8 घं. 40 मिं. और 10घं.00मिं. जमा करने होंगे। सूर्यास्त काल 19घं.33मिं. में इन्हें अलग-अलग जोड़ने पर हमें 28घं.13मिं. और 29घं.33मिं. मिले, जो इस दिन जालन्धर में अरुणोदय काल के क्रमश: प्रारम्भ और समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) हैं।

इसी प्रकार किसी भी नगर का रात्रिमान निकालकर आप स्थानीय प्रदोष, निशीथ, महानिशीथ, अरुणोदय काल निकाल सकते हैं।

रात्रिमान	प्रदोषकाल		निशीथकाल		महानिषीथकाल		अरूणोदयकाल	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	सूर्यास्त	1 54	1 54	3 48	3 48	5 42	8 14	9 30
9 45	सूर्यास्त	1 57	1 57	3 54	3 54	5 51	8 27	9 45
10 00	सूर्यास्त	2 00	2 00	4 00	4 48	6 00	8 40	10 00
10 15	सूर्यास्त	2 03	2 03	4 06	4 06	6 09	8 53	10 15
10 30	सूर्यास्त	2 06	2 06	4 12	4 12	6 18	9 06	10 30
10 45	सूर्यास्त	2 09	2 09	4 18	4 18	6 27	9 19	10 45
11 00	सूर्यास्त	2 12	2 12	4 24	4 24	6 36	9 32	11 00
11 15	सूर्यास्त	2 15	2 15	4 30	4 30	6 45	9 45	11 15
11 30	सूर्यास्त	2 18	2 18	4 36	4 36	6 54	9 58	11 30
11 45	सूर्यास्त	2 21	2 21	4 42	4 42	7 03	10 11	11 45
12 00	सूर्यास्त	2 24	2 24	4 48	4 48	7 12	10 24	12 00
12 15	सूर्यास्त	2 27	2 27	4 54	4 54	7 21	10 37	12 15
12 30	सूर्यास्त	2 30	2 30	5 00	5 00	7 30	10 50	12 30
12 45	सूर्यास्त	2 33	2 33	5 06	5 06	7 39	11 03	12 45
13 00	सूर्यास्त	2 36	2 36	5 12	5 12	7 48	11 16	13 00
13 15	सूर्यास्त	2 39	2 39	5 18	5 18	7 57	11 29	13 15
13 30	सूर्यास्त	2 42	2 42	5 24	5 24	8 06	11 42	13 30
13 45	सूर्यास्त	2 45	2 45	5 30	5 30	8 15	11 55	13 45
14 00	सूर्यास्त	2 48	2 48	5 36	5 36	8 24	11 58	14 00
14 15	सूर्यास्त	2 51	2 51	5 42	5 42	8 33	12 11	14 15
14 30	सूर्यास्त	2 54	2 54	5 48	5 48	8 42	12 24	14 30
15 00	सूर्यास्त	3 00	3 00	6 00	6 00	9 00	12 50	15 00

सामान्य रूप में सूर्योदय से 4 से 5 घड़ी पूर्व **उषा:काल** होता है। इसे **ब्राह्म मुहूर्त्त** भी कहते हैं। इस मुहूर्त्त में श्री भगवान् का चिन्तन, पूजा, ध्यान पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

अरूणोदय—सूर्योदय से 4 घड़ी पूर्व **अरूणोदय** काल होता है, इसमें भी स्नान, जप, पुण्य श्लोकों व स्तोत्रों का पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

प्रदोषकाल में भगवान शिव पूजन व जप करने का विशेष विधान होता है। निशीथ एवं महानिशीथ (महानिशा) काल में ध्यान, समाधि श्री दुर्गालक्ष्मी, व काली की उपासना तथा यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रादि अनुष्ठान का विशेष प्रभावी होता है। सोमवासरी, भौमवारी एवं दीपावली की रात्रि को महानिशीथ काल में यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सम्बन्धी साधनाओं का विशेष महत्त्व होता है।

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**—पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

।।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

।।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	७.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	४.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त १ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टम्मांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमश: उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाश: रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**—सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल–कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक वर्ष** १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला–साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर–दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र–बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय–विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा है।** भाग्योदयकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क–वितर्क करने में कुशल, दूर–दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन–पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य–क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए–नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय–विक्रय, पुस्तक–लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल–पुर्जों के कार्य–व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियो के लिए पुखराज भी अच्छा होगा।** भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। चन्द्र–मंगल शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला–संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, वृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती तथा सफेद पुखराज है।** भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर–पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश–विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि–चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी–छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े–बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई–बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य–व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन–यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना करनी चाहिए।** भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। बुध–शुक्र का शुभ योग होने से लेखा–गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय–विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना है।** भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक

श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए–नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन–सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र–शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश–विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा** (Diamond) अथवा **श्वेत मोती शुभ नग** है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न–वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार–कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न–धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु–बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा–दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ–साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि–जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल–गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग हैं। शिक्षक, धर्म–प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य–डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न–मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार–कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु–शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार–कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली–बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क–वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न–लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे–सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए–नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश–विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न–बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय–विक्रय, प्रोफैसर, जज–वकील अथवा उच्च एवं धनी–व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम है। स्त्रियों के लिए, पुखराज शुभ** होगा।

मीन लग्न–मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान्, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म–कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान–मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे–सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल–चित्र, व्यवसाय, खाने–पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए पन्ना धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

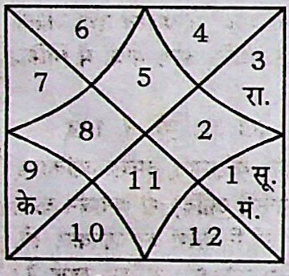
द्विग्रही योग / त्रिग्रही योग आदि योगों का फल

किसी एक भाव/राशी में दो या दो से अधिक ग्रह हों, तो उस भाव सम्बन्धी शुभाशुभ फल में अन्तर आ जाता है, कई बार तो चमत्कारी प्रभाव उत्पन्न करते हैं। परन्तु द्विग्रही / त्रिग्रही आदि योग सभी लग्नों में एक समान फल प्रदान नहीं करते। प्रत्येक लग्न में भावस्थ एवं भावेश ग्रहों के कारकत्व सम्बन्धी फल में अन्तर पड़ सकता है। अतएव द्विग्रही/त्रिग्रही आदि योग भी कुण्डलियों एवं भावों में एक जैसा प्रभाव नहीं करते। ज्योतिष तत्त्व फलित के प्रथम भाग में प्रत्येक लग्न फल से पूर्व दो या अधिक ग्रहों के विशेष योगायोग के फल का वर्णन किया गया है। यद्यपि सामान्य रूप से कुछ ग्रह योगों में कुछ समान फल भी मिलते हैं।

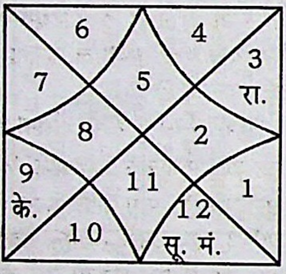
यह बात विशेष ध्यान रखने योग्य है कि शुभ ग्रहों का योग उत्तम फल देता है। शुभ एवं पाप ग्रहों के योग में जो उनमें से बलान्वित एवं योगकारक होगा, उसी की प्रकृति के अनुसार फल होगा। प्राय: बलवान ग्रह अन्य ग्रहों के प्रभाव को अपने में केन्द्रित कर लेता है। इसी भान्ति अस्तंगत, नीच अथवा वक्री ग्रहों के योगों के सम्बन्ध में भी फलादेश में अन्तर पड़ जाने की सम्भावना हो जाती है। वक्री, नीच एवं अस्त ग्रहों के योग जातक को मानसिक एवं शारीरिक कष्ट, धन हानि, गुप्त चिन्ता, शत्रु-भय एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा करते हैं। जबकि योगकारक एवं उदित ग्रहों के योग जातक को धन-लाभ, पदोन्नति, सुख-साधनों की प्राप्ति एवं सौभाग्य में वृद्धि करवाते हैं। शुभ ग्रहों का योग यदि शुभ भाव में होगा तो शुभ फल में वृद्धि करेगा।

अतएव यह बात विचारणीय है कि योगकारक ग्रह किस भाव में है, किन भावों के स्वामी हैं, किस भावेश (शुभ या अशुभ) ग्रह से दृष्ट हैं, एवं च योगकारी ग्रह किस नक्षत्र में है। उदाहरणार्थ निम्नलिखित कुण्डलियां स्पष्टीकरण के लिए प्रस्तुत हैं—

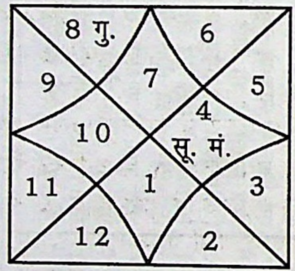
कुण्डली (201)



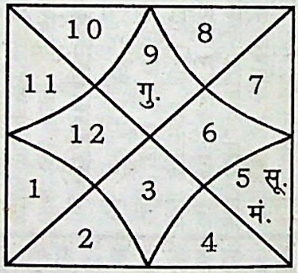
कुण्डली (202)



कुण्डली (203)



कुण्डली (204)



कुण्डली संख्या नं. 201 तथा कुं. नं. 202 में सूर्य लग्नेश एवं मंगल भाग्येश व चतुर्थेश इकट्ठे बैठे हैं। परन्तु कुं. नं. 201 में सूर्य--मंगल का योग नवम स्थान (त्रिकोण) में होने से अत्यन्त शुभ एवं भाग्यकारी होगा। जबकि कुं. नं. 202 में वही योग दु:स्थान (अष्टम) में होने से शुभफल में कमी हो जाएगी।

इसी भान्ति कुण्डली नं. 203 में सू.-मं. के योग पर गुरू की नवम दृष्टि पड़ने पर भी उतना शुभ फल नहीं करेगी जितना कि कुण्डली नं. 204 में, क्योंकि कुं. 204 में गुरु लग्नेश होकर ग्रह योग (सू.-मं.) को पुष्टि प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त यदि किसी कुण्डली में सूर्य, मंगल आदि योगकारक ग्रह स्वोच्च या स्वगृही स्थिति में हो, परन्तु नवांश आदि कुण्डली में भी उन्हीं ग्रहों की स्थिति स्वोच्च या स्वगृही हो, तो जातक को सम्बद्ध भाव सम्बन्धी अत्यन्त शुभ फल होंगे। यदि नवांश कुण्डली में नीच या शत्रु नवांश का है, तो जातक को वांछित शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे।

इसके अतिरिक्त योगकारक ग्रह किस नक्षत्र में संचार कर रहे हैं, इसके बारे में भी विचार कर लिया जाए, तो फलादेश में और भी सूक्ष्मता आ जाएगी। जैसे, मान लो कुण्डली नं. 201 में मंगल भरणी नक्षत्र में तथा सूर्य अश्विनी नक्षत्र में है, तो मंगल भाग्य एवं चतुर्थ भाव सम्बन्धी सुखों (भूमि, वाहनादि) के अतिरिक्त भरणी नक्षत्र के स्वामी, शुक्र (जो कुण्डली में छोटे भाई/बहिन एवं व्यवसाय का भी द्योतक है) ग्रह सम्बन्धी लाभ प्रदान करेगा। तथा सूर्य अश्विनी के स्वामी ग्रह (केतु) स्थित राशि स्वामी के कारकत्वादि का प्रभाव भी जातक को देगा।

इस भान्ति किसी कुण्डली में दो, तीन या अधिक ग्रहों के फल का विवेचन जातक सम्बन्धी फलादेश में अधिक सूक्ष्म एवं सटीक होगा।

उपरोक्त विभिन्न कारणों से अलग-अलग लग्न कुण्डलियों में प्रत्येक ग्रह योग भिन्न-भिन्न फल प्रकट करता है, इस कारण दो ग्रहों के योग या तीन ग्रहों के योग सभी कुण्डलियों में एक जैसा फल करें, यह आवश्यक नहीं। आगे द्विग्रही योगों का फल वर्णन ग्रह सम्बन्धी सामान्य नियमों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। किसी कुण्डली में लग्नेश होकर सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह शुभ भावों में योगकारक हों, तो विशेष प्रभावी होते हैं।

द्वि-ग्रही (दो ग्रह) योगों का फल

विशेष—सूर्य अत्यन्त तेजस्वी ग्रह होने से सूर्य अपने सहयोगी ग्रहों के प्रभाव को प्राय: क्षीण कर देता है। सूर्य के योग में अन्य सभी ग्रह अपेक्षित फल प्रकट नहीं कर पाते। फलकथन से पूर्व इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य यदि

पाप ग्रहों से युक्त हो, तो पिता को कष्टकारी होता है, तथा चन्द्रमा यदि पाप ग्रहों के साथ हो, तो माता के लिए कष्टकारी होता है। यदि सूर्य व चन्द्र शुभ ग्रहों के योग में हों, तो क्रमशः पिता और माता के लिए सुखदायक होते हैं।

सूर्य-चन्द्र—जन्म कुण्डली में सूर्य-चन्द्र का योग एक ही राशि में होने से जातक स्त्रियों के वशीभूत होने वाला, कामुक, क्रय-विक्रय आदि, कार्य व्यवसाय में कुशल, धनवान होता है। जातक लौह, ताम्रादि धातुओं, यन्त्र एवं रबड़, चमड़ा, कैमीकल्ज, पत्थर, औषधि, अल्कोहल, कोयला, तैल आदि के क्रय-विक्रय से विशेष लाभान्वित हो सकता है। ऐसा जातक अपने कार्य (स्वार्थ) पूरा करने में कुशल, स्वाभिमानी, कामुक, नकली वस्तु बनाने में कुशल, विषयासक्त, गुप्त युक्तियों से धनोपार्जन करने वाला, कुछ लालची, आकर्षक व्यक्तित्व, कार्य कुशल, स्वाभिमानी और अपने गौरव को प्रदर्शित करने वाला होता है। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. 9 तथा 10 ज्योतिष तत्त्व (फलित) भाग-I तथा कुं. नं. 114

पाषाण यन्त्र क्रय विक्रयेषु कूट क्रियायां हि विचक्षणः स्यात् । कामी प्रकामी पुरुष सगर्वः सर्वोषिधीशेन रवौ समेते ॥

यह योग 3, 5, 9 एवं 10वें भावों में अधिक प्रशस्त माना जाता है। 2, 6, 8 या 12वें भाव में वांछित फल में कमी करके अशुभ फल भी प्रदान करता है। द्वादश भाव में यह योग होने से जातक क्रूर कर्म करने में पटु, अशिष्ट एवं कठोर प्रकृति, क्रोधी, आंखों में कष्ट एवं आर्थिक परेशानियां होती हैं। मेष, वृष, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक व मीन लग्न में यह योग प्रशस्त होते हैं।

सूर्य-मंगल—सूर्य-मंगल एक ही राशि में हो, तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि, अत्याधिक परिश्रमी, बौद्धिक किन्तु राजसिक प्रवृत्ति, साहसी, पराक्रमी दूसरों पर अधिकार (दबाव) डालने वाला, कुछ स्वार्थी, स्वाभिमानी, झगड़ा करने में जल्दी तथा अपने बन्धुओं से प्रेम करने वाला होता है। ऐसा जातक विदेश में अधिक सफल होता है। सिंह लग्न में यह योग विशेष फलप्रद होता है। देखें कुं. संख्या नं. 47 (पृष्ठ 175) ज्यो. तत्त्व फलित भाग (1)

ऐसा जातक क्रोधी एवं हिंसक कार्यों में जल्दी प्रवृत्त होता है। यह योग 1, 3, 5, 9, 10 एवं 11वें भावों में प्रशस्त तथा जातक को उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त भूमि, जायदाद, मकान, वाहनादि सुखों से युक्त एवं भाग्यशाली करता है। जबकि अन्य भावों में मिश्रित फल होते हैं। उदा. कुं. देखें नं. 48 (पृष्ठ 176) फलित ज्योतिष तत्त्व भाग (1)

1, 4, 5, 7, 8, 9, 10, 11, 12 लग्नों में यह योग प्रशस्त तथा अन्यों में सामान्य फल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 109

सूर्य-बुध—सूर्य-बुध का योग बुधादित्य योग भी कहलाता है। इस योग में जातक प्रियभाषी, विद्वान्, बुद्धिमान, अच्छा व्यक्तित्व, अच्छा वक्ता, राजा अर्थात् उच्च प्रतिष्ठित लोगों द्वारा आदर प्राप्त (राज मान्य), सेवा आदि कार्य (नौकरी आदि) से धनार्जन करने वाला, शिल्प, तकनीकि, गायन आदि कलाओं में कुशल तथा धर्म, ज्योतिष, योग आदि विभिन्न प्रकार की विद्याओं का जानकार हो, धार्मिक विचार युक्त तथा धन एवं सुख साधनों से युक्त होता है। परन्तु जातक पा. अनुसार ऐसे व्यक्ति की बुद्धि अस्थिर रहती है। यदि सूर्य-बुध नीच राशिस्थ हों, तो शुभ फलों में कमी होती है।

विद्या रूप बलन्विता ऽस्थिरमीतः सान्यान्विते पूषणिं॥

मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला व धनु लग्नों से यह योग प्रशस्त माना जाता है। देखें उदा. कुं, 2 पृष्ठ (70) ज्यो. तत्त्व फलित (1) तथा कुं. नं. 5, 11, 13 एवं नं. 41 (पृष्ठ 172) नं . 45 (पृ. 174) तथा कुं. नं. 59, 66, 72, 84, 86, 104, 108, 110, 96

सूर्य-गुरु-सूर्य-गुरु का योग हो, तो जातक धार्मिक कार्यों में श्रद्धावान, दूसरों के कार्यों (सेवा आदि) में लगने वाला, मित्रों की सहायता से धन लाभ प्राप्त करने वाला, राज मन्त्री अर्थात् उच्च प्रतिष्ठित अधिकारी वर्ग से सम्पर्क रखने वाला, भूमि, जायदाद, धन, संतान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, परोपकारी एवं चतुर बुद्धि वाला एवं विख्यात होता है।

पुरोहि तत्त्वे निपुणो नृपाणां मन्त्री च मित्राप्तधनः समृद्धः। परोपकारी चतुरो दिनेशे वाचामधीशेन युते नरः स्यात्॥

ऐसे जातक को धर्म, योग, चिकित्सा, ज्योतिष आदि में भी रुचि होती है। मेष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, धनु, कुम्भ व मीन लग्न में यह ग्रह योग अच्छा फल (प्रशस्त) प्रकट करता है, जबकि अन्य लग्नों में यह ग्रह योग अच्छा फल (प्रशस्त) प्रकट करता है। जबकि अन्य लग्नों में सामान्य फल प्रदान करता है। यह योग लग्न या चतुर्थ में हो, तो जातक विद्वान्, धनवान्, नीतिज्ञ, भृत्यादि सुखों से युक्त, प्रियभाषी एवं सदाचारी होता है। सप्तम में हो तो स्त्रियों के वशीभूत, धन/धान्य से सम्पन्न एवं पिता से वैमनस्य हो। दशम में यह योग हो, तो जातक कीर्तिमान एवं सुख साधनों से युक्त हो। अशुभ ग्रह दृष्टि हो, तो कर्ण योग होता है । सूर्य-गुरु का योग, यदि शनि से दृष्ट हो, तो जातक को मैडीकल क्षेत्र (डाक्टरी आदि) में अच्छी सफलता प्रदान करता है।

सूर्य-शुक्र—का योग हो, तो जातक नाच, गायन, संगीत, सिनेमा, टैलीविज़न आदि के शौक हों तथा इन्हीं के माध्यम से धनोपार्जन होने की संभावना हो, मित्रों एवं बन्धुओं के सुख से युक्त, अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण, स्त्री के सहयोग से धनादि का लाभ प्राप्त करने वाला, आंखों में कष्ट की सम्भावना, स्त्रियों के संग में खुश रहे, हुनर और दस्तकारी के कामों में कुशल हो। यह योग तृतीय, पंचम, नवम् या दशम् भावों में हो, तो जातक व्यवहार कुशल, उच्च प्रतिष्ठित, धन, सवारी आदि सुखों से युक्त, चतुर बुद्धि एवं विख्यात होता है। अन्य ग्रहों में यह योग इतना सफल नहीं रहता है। देखें कुं. नं. 75

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर एवं कुम्भ लग्नों में सूर्य-शुक्र का योग विशेष प्रशस्त माना जाता है, जबकि अन्य लग्नों में साधारण फल रहता है। उदा. कुं. नं. 10 (पृष्ठ 74 फलित भाग 1), 102

सूर्य-शनि-कुण्डली में सूर्य-शनि का योग होने से जातक धातुओं (लोहा, ताम्बा, पीतल, सोना, चांदी) आदि के व्यापार में निपुण, स्वास्थ्य में कमी, अपने धर्म-कर्म में निपुण, अपने वंश के गुणों से युक्त, क्रय-विक्रय एवं व्यापारिक क्षेत्र में कुशल हो। जड़ी-बूटियों की पहचान करने में रुचि, स्त्री, पुत्र आदि सन्तान से चिन्तित परन्तु भूमि, वाहन आदि सुख साधनों एवं सम्पत्ति से युक्त हो। मतान्तर में ऐसे योग में उत्पन्न जातक को पिता, भाईयों एवं सन्तान पक्ष से चिन्ताएं बनी रहती हैं। जातक अपने विचारों, गुणों का सदुपयोग अथवा लाभ नहीं उठा पाता। पिता के साथ वैचरिक मतभेद रहते हैं। सूर्य एवं शनि यदि नीच राशिस्थ होंगे, तो विशेष अशुभ फल प्रकट होंगे।

यह योग मेष, वृष, मिथुन, तुला, बृश्चिक, धनु व कुम्भ लग्नों में विशेष प्रशस्त माना जाता है। जबकि अन्य लग्नों में सामान्य फल होता है। सिंह लग्न में यह योग संघर्षपूर्ण पारिवारिक परिस्थितियों का परिचायक है। उदाहरणस्वरूप देखें ज्यो. तत्त्व फलित भाग (1) उदा. कुं. नं. 39 (पृष्ठ 172) प्रस्तुत बालक 7 मास का था, जब इसके पिता की आकस्मिक मृत्यु हुई।

सूर्य-राहु-इस योग के प्रभाव से किसी का भला करने पर भी जातक को बुराई मिले, पिता को कष्ट या पितृ सुख में कमी हो, कार्य व्यवसाय में आय कम व उलझनें अधिक रहें। सरकारी क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना हो। 42वें वर्ष सन्तान को कष्ट का भय, भाग्योन्नति में विघ्न बाधाएं हों, सिरपीड़ा, आंखों को कष्ट या रोग भय हो। जातक का मन सांसारिक विषयों की ओर अधिक आकृष्ट होता है। निकट बन्धुओं के साथ मन-मुटाव एवं कलह रहे।

सूर्य-केतु-का योग हो तो जातक का पारिवारिक लोगों से विग्रह या कलह रहे अथवा किसी निकटस्थ के कलह कारण मन विक्षुब्ध रहे। धन हानि एवं आर्थिक उलझनें अधिक हों, सिर एवं चक्षुओं में पीड़ा हो, घरेलू एवं व्यावसायिक परेशानियों के कारण तनाव रहे। शत्रु एवं रोग भय हो। परन्तु तृतीय, पंचम, नवम एवं दशम भाव में यह योग शुभ होगा। चिकित्सा, धर्म, योग, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रुचि, सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित हों। देखें उदा. कुं. 87 (धनु जातक)

चन्द्र-मंगल-का योग हो तो जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, कुछ तीक्ष्ण स्वभाव, अपने धर्म एवं नियमों का पालन करने वाला, साहसी एवं कुशल वक्ता, कैमीकल, चर्म, धातु, शिल्प आदि एवं तकनीकि कार्यों में कुशल, क्रय-विक्रय एवं व्यापार द्वारा अच्छा धनार्जन करने में सफल होता है। सर्विस में भी हो, तो एक से अधिक साधनों द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में कुशल होता है। यह योग तृतीय, पंचम, नवम, दशम एवं ग्यारहवें भावों में हो, तो अच्छा फलप्रद कहा गया है। दशम में चंद्र-मंगल का योग होने से उच्चाधिकारी या सेनाध्यक्षकर्त्ता होता है। सारावली में प्रथम, चतुर्थ एवं सप्तम भावों में इसका फल अच्छा नहीं कहा। इसके अतिरिक्त यह योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, बृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन लग्नों में विशेष प्रशस्त माना जाता है। शेष अन्य लग्नों में साधारण फल। देखें कुं. नं. 71, 89.

चन्द्र-बुध—का योग हो, तो जातक मधुरभाषी, सुन्दर व्यक्तित्व, व्यवहार कुशल बुद्धि, हंसमुख, स्त्रियों के प्रति विशेषत: आसक्त, संगीत, साहित्य एवं काव्यादि रचनाओं में रुचि, धार्मिक प्रवृत्ति, लग्न भाव, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम भावों में यह योग हो तो जातक पराक्रमी, बुद्धिमान, भूमि, वाहन, स्त्री आदि सुखों से युक्त होगा। यदि दशम में यह योग हो तो जातक धनवान् और विख्यात होता है। द्वादश में हो, तो संगीत, काव्य आदि कलाओं में कुशल होता है। अष्टम भाव में हो, तो माता-पिता के लिए अरिष्टकर होता है। वृष, मिथुन, कर्क कन्या, तुला, बृश्चिक, धन, मकर व मीन लग्नों वालों के लिए इस योग का फल विशेष लाभप्रद रहता है, जबकि अन्य लग्न वालों को साधारण फल होता है। देखें कुं. नं. 62

चन्द्र-गुरु—का योग हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, अच्छे लोगों की संगति करने वाला, परोपकारी स्वभाव एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। अपने भाई-बन्धुओं का सम्मान करने वाला, भाई-बन्धुओं, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त, यदि शुभ एवं योगकारक ग्रह से दृष्ट हो तो जातक सुख-साधनों से सम्पन्न हो। केन्द्र-त्रिकोण में यह योग जातक को सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला एवं स्त्री, पुत्र आदि सुखों से युक्त बनाता है। चतुर्थ भाव में ऐश्वर्य एवं वैभव आदि सुखों से युक्त, सप्तम में विविध कलाओं में कुशल, पंचम में विनयशील, बुद्धिमान व विचारों को गुप्त रखने वाला एवं पारिवारिक सुखों से युक्त, नवम में भाग्यशाली, धार्मिक आस्था युक्त तथा दशम में व्यापारिक क्षेत्र में सफल होता है।

यह योग मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु एवं मीन लग्नों के शुभ भावों को विशेष प्रशस्त माना जाता है। चन्द्र-गुरु के सम्बन्ध से गज-केसरी नामक शुक्र योग भी बनता है। देखें कुं. नं. 65, 79, 108.

चन्द्र-शुक्र-कुण्डली में चन्द्र-शुक्र का योग हो, तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उत्साहशील, सुन्दर वस्त्रों, पुष्पों, सुगन्धित (पर्फयूम आदि) वस्तुओं या दवाइयों आदि के कार्य से सम्बन्धित रहे, जातक क्रय-विक्रय (व्यापार) करने में समझदार, व्यवहार कुशल, ऐश्वर्य पसन्द-स्त्रियों में प्रीति एवं मनोरंजन आदि कार्यों में अधिक रूचि, आवास, वाहन एवं स्त्री आदि तथा अभिनय, नृत्य आदि के क्षेत्र में सफलता दिलाता है। देखें कुं. नं. (67) ऐश्वर्य राय। यदि यह योग दशम भाव में हो, तो जातक विस्तृत/वैभवयुक्त एवं विख्यात होता है, उसके अधीन बहुत से कर्मचारी होते हैं। एकादश भाव में अल्प पुत्र एवं कन्या सन्तति अधिक देता है। छठे आठवें एवं बारहवें भाव में यह योग शुभ नहीं माना जाता है तथा मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर व मीन लग्नों में यह योग प्रशस्त होता है। अन्य लग्नों में साधारण फल होता है। यदि चन्द्र व शुक्र नीच राशिस्थ हो, तो जातक शराबादि नशों में भी रुचि रखे। देखें कुं. नं. 63.

चन्द्र-शनि—का योग हो, तो अत्यन्त मेहनती, गहन चिन्तनशील, दूरदर्शी, विभिन्न प्रकार के फुटकर कार्यों द्वारा धनोपार्जन करने वाला, शिल्पज्ञ (हुनरमन्द), अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, चतुर्थ भाव में योग हो, तो चौपाय, सवारी आदि का शौक हो। जातक जल, मोती, मणि, जवाहरात, चान्दी, सुवर्ण एवं जहाज आदि की आजीविका अथवा भूमि की खुदाई या उससे निकलने वाली या गूढ़ वस्तुओं से सम्बन्धित वृत्ति वाला होगा। देखें कुं. नं. 106.

दशम भाव में शुभ योग हो, तो जातक विशिष्ट समुदाय का नेता (स्वामी) एवं विख्यात होता है। चन्द्र-शनि नीच राशिगत हों तो जातक नीच स्वभाव का, स्वार्थी, शराब, स्त्री आदि ऐश परस्ती पर धन का अपव्यय करने वाला अथवा ज़मीन-जायदाद सम्बन्धी झगड़े या मुकद्दमों में धन की क्षति होती है। उदाहरणार्थ देखें कुं. नं. 27 पृष्ठ 124, फलित खण्ड भाग (1)। मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु व मीन लग्न में चन्द्र-शनि का योग प्रायः प्रशस्त होता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 75, 81

चन्द्र-राहु—का योग होने से निकटस्थ बन्धुओं के व्यवहार के कारण मन अशान्त रहे, माता एवं स्त्री को कष्ट, भोजन विकार (खाने-पीने की गड़बड़ी) के कारण शरीर अस्वस्थ , धन की फिजूलखर्ची अधिक रहे। गुप्त चिन्ताएं एवं मानसिक तनाव के कारण शरीर कष्ट की सम्भावना। यदि इस योग पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो अशुभ फल कम होंगे।

चन्द्र-केतु—किसी बन्धु को कष्ट हो अथवा वैमनस्य पैदा हो, धन हानि, सहयोगियों के साथ गलतफहमी रहे, धन हानि, मन को परेशान करने वाली घटनाएं हों, तन्त्र, मन्त्र, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में विशेष रुचि हो। गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने वाला तथा अशान्त चित्त वाला होता है।

मंगल-बुध—का योग हो, तो जातक कुशलवक्ता, भूमि अथवा मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त, औषधि अथवा शिल्प एवं विविध धातुओं से मिश्रित वस्तुओं के व्यापार से धनी एवं लाभन्वित होने वाला, ज्योतिष, गणितादि में रुचि, सुन्दर शरीर सौष्ठव एवं स्त्रियों में विशेषतः आसक्त होने वाला होता है। ऐसा जातक कार्य/व्यवसाय में कूटनीति एवं युक्तियों का प्रयोग करने वाला अर्थात् सत्यासत्य वचनों द्वारा अपना काम निकलवाने वाला होता है। तैल, पैट्रोलियम पदार्थ, मोबिल आयल, घृतादि चिकनाईयुक्त पदार्थ, जड़ी-बूटियों आदि से औषधि निर्माण, वैद्य, हकीम, डाक्टर, कैमिस्ट, कैमीकल्स आदि के कार्यों से विशेष लाभान्वित होने के योग होंगे। केन्द्र-त्रिकोण में यह योग हो तो जातक अनेक मित्र-बन्धुओं आदि धन एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होता है, परन्तु दोनों शत्रु ग्रह होने से जातक के जीवन में संघर्ष, तनाव एवं अशान्ति रहती है। देखें कुं. नं. 93

मंगल-गुरु—का योग हो, तो जातक मेधावी, बुद्धिमान, विद्वान्,उत्साहशील, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, शिल्प और गणित, ज्योतिष, मंत्र एवं धर्मादि शास्त्रों में रुचि रखने वाला, शिल्पादि कामों में गुणी, परोपकारी, बोलने में चतुर, अग्रणी, भूमि, जायदाद, भाई-बन्धु, धन-सन्तान एवं सवारी आदि सुख-साधनों से सम्पन्न और प्रमुख व्यक्तित्व होता है। परन्तु अत्यन्त संघर्ष के बाद अपने कार्य क्षेत्र में सफल होता है। देखें कुं. नं. 70, 102, 76.

मेधावी शिल्पशास्त्रज्ञः श्रुतिज्ञो वाक्विशारदः ॥ अश्वप्रियः प्रधानश्च जीव मंगल संगमे ॥ (मानसागरी)

यह योग केन्द्र भावों में विशेष शुभफलप्रद होता है। जबकि षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में जातक अल्पधनी, रोगी एवं अल्पसुखी होता है। मं.-गु. का योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर एवं मीन लग्न में विशेष प्रशस्त माना जाता है। देखें उदा. कुं. नं. (76)।

मंगल-शुक्र—का योग हो, तो जातक ज्योतिष, गणित, तन्त्र आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, अपने कार्य की सिद्धि के लिए सत्यासत्य आदि युक्तियों का आश्रय लेने वाला, लोक व्यवहार में कुशल, मिलनसार, हंसमुख, विविध साधनों से धनार्जन करने वाला, क्रय-विक्रय एवं व्यापार आदि में कार्य कुशल, स्त्रियों से मित्रता करने में कुशल अथवा स्त्री के वशीभूत होकर अनैतिक कार्य भी कर सकता है। ऐश परस्त एवं मनोरंजन आदि कार्यों पर अपव्यय (वृथा खर्च) करने वाला, संगीत, कला, अभिनय आदि में कुशल होगा। यह योग लग्न, चतुर्थ एवं दशम भावों में विशेष फलप्रद होता है। इसके अतिरिक्त मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, बृश्चिक, मकर व कुम्भ लग्नों में यह योग प्रशस्त माना जाता है। भौमादि ग्रह लग्नेश होकर शुभ भावों में हों तो विशेष प्रभावी होते हैं। देखें कुं. नं. 59

मंगल-शनि—का योग हो, तो जातक मिथ्याचरण करने वाला, वाद-विवाद (बहस), झगड़े, मुकद्दमे आदि के कार्यों में होशियार हो तथा कलह-क्लेश के कारण परेशान रहे, ज्योतिष तन्त्र, मन्त्र, जादू आदि के कार्यों में रुचि, क्लिष्ट, चौर प्रवृत्ति, प्रपंच आदि मिथ्या व्यवहार करने में कुशल, रहस्यमय स्वभाव, भाईयों से हानि परन्तु शत्रुओं पर प्रभावी हो, अपने स्वार्थ (फायदे) का विशेष ध्यान रखे, लौह, पत्थर, रबड़, कैमीकल, सोना, चांदी, रत्नों आदि के कामों में विशेष लाभ की सम्भावना हो, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, तुला, धनु, मकर व कुम्भ लग्न में यह योग विशेष प्रशस्त होता है। प्रथम, चतुर्थ, सप्तम भावों में तो अशुभ होता है, परन्तु दशम भाव में जातक का उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क एवं उनसे लाभान्वित होने वाला तथा वाहन आदि सुख साधनों से संयुक्त होता है। कई बार किसी षड्यंत्र का भी शिकार हो जाता है। देखें कुं. नं. 68, 78. **(ज्योतिष तत्त्व—फलित खण्ड-प्रथम भाग)**

मंगल-राहु—के योग के कारण जातक के अग्रज या आत्मीय जन के शरीर कष्ट के कारण मन परेशान रहे। जातक स्वयं आंखों, शिर एवं पित्त जनित रोगों के कारण रूग्ण रहे। बनते कार्यों में बार-बार विघ्न बाधाएं हों। आय सीमित तथा वृथा खर्च बहुत अधिक रहें। वाहनादि से बार-बार चोट लगने की सम्भावना रहती है। मंगल-राहु का योग प्रायः तृतीय, छठे, नवें, दशम एवं एकादश भावों में अपेक्षाकृत शुभ माना जाता है।

मंगल-केतु—के योग के कारण जातक को दुर्घटना आदि से चोट का भय, पत्थर, लोहा अथवा शस्त्र आदि से चोट / घाव आदि का भय हो, निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हों परन्तु आकस्मिक धन हानि की भी सम्भावना हो। स्त्री कष्ट, मानसिक तनाव एवं अपव्यय अधिक रहें। तन्त्र, मन्त्र/ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि रहे।

बुध-गुरु—के योग से जातक बुद्धिमान्, विद्वान्, अच्छा वक्ता, संगीत, नृत्य, शिल्प, कला, अभिनय आदि कलाओं का जानकार अथवा सिनेमा, टैलीविज़न आदि कलाओं के द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यदि यह युति केन्द्र भावों (1, 4, 7 या दशम) में हो, तो जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, उच्चप्रतिष्ठित, भूमि, अच्छी पत्नी, वाहन एवं धन-धान्य, प्रतिष्ठा आदि सुखों से सम्पन्न होता है। यह योग छठे, आठवें, दसवें एवं बारहवें भावों में भी प्रशस्त माना जाता है। यह योग मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, कुम्भ व मीन लग्नों में विशेष शुभ माना जाता है।

बुध-शुक्र—का योग लग्न में हो, तो जातक सुन्दराकृति, बुद्धिमान, विवेकशील, शालीन एवं प्रियभाषी, कामुक, व्यवहार कुशल, उच्च प्रतिष्ठित, हुनरमन्द, सम्मानित, प्रसिद्ध, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, गुणवान, अनेक लोगों (बहुतों) की सहायता करने वाला और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है। प्रसन्नचित्त, हंसमुख, गायन, संगीत आदि का शौकीन, चतुर्थ भाव में यह योग होने से जातक मित्र-बन्धुओं तथा सवारी आदि सुखों के युक्त होता है। सप्तम भाव में होनें से धन-धान्य, स्त्री सुख आदि ऐश्वर्यों से युक्त तथा दशम में होने से जातक नीतिवान, तीव्र बुद्धि, सामर्थ्यवान तथा सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। केन्द्र-त्रिकोण में यह योग विशेष शुभ होता है। ऐसा जातक विलासप्रिय, नीतिवान, कला, अभिनय, एकाउंट्स, कानून, ज्योतिष आदि विषयों का भी जानकार होता है। यह योग वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर व कुम्भ लग्न वालों को शुभ फल देता है। देखें उदा कुं. नं. 71, 82, 94.

बुध-शनि—का योग हो, तो जातक शिल्प कलाओं में कुशल परन्तु चंचल बुद्धि, बोलने में चतुर, चिन्तनशील, भ्रमणशील, दुर्बल शरीर, विभिन्न स्रोतों द्वारा आय के साधन प्राप्त करने वाला, वाद-विवाद करने वाला, माया पर (चालाक) एवं व्यवसाय में धीरे-धीरे लाभ व उन्नति करने वाला होता है, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धन, मकर व कुम्भ लग्न में शुभ भावों में पड़ा हो, तो शुभ फल प्रदान करता है, जबकि अन्य लग्नों में इस योग का फल शुभाशुभ (मिश्रित) होता है। देखें उदा कुं. नं. 70.

बुध-राहु—यह योग कुण्डली में 3, 6, 10 एवं 11 वे भावों में घटित हो, तो जातक तीव्र बुद्धि, अकस्मात्-धन लाभ, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध, व्यापार या सर्विस में लाभ व उन्नति के योग बनते हैं। बुध-राहु का योग जातक को कार्य कुशल, व्यवहारशील, गणित, एकाउंट्स, वकालत, मैडीकल आदि क्षेत्रों में सफलता करवाता है। यह योग वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ व मीन लग्न में अच्छा फल प्रकट करता है। जबकि अन्य लग्नों में शरीर कष्ट, तनाव, गुप्त रोग आदि अशुभ फल है।

बुध-केतु—बुध-केतु यदि शुभ भावों पर पड़ा हो तो यह योग जातक को अत्यन्त बुद्धिमान, उच्च विद्या, सम्मान व उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से सम्बन्ध व सम्पर्क करवाता है। यदि कुण्डली में 4,5,9 या 12 वें भावों में यह योग बना हो तो प्रायः शुभ फल देता है। अन्य भावों में ये योग शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में अड़चनें आदि अशुभ फल प्रदान करता है। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ व मीन लग्नों में प्रायः शुभ फल प्रदान करता है।

गुरु-शुक्र—दोनों ग्रह एक साथ पड़े हों, तो जातक उच्च विद्या प्राप्त, बुद्धिमान, भूमि, आवास, वाहन आदि साधनों से युक्त, धर्म में आस्था रखने वाला परन्तु नीतिवान, सुन्दर स्त्री का पति, विवाह के पश्चात् विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, विद्या से जीविका कमाने वाला, ज्योतिष, धर्म, नीति आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला एवं अनेक गुणों से सम्पन्न होता है। श्रेष्ठ एवं उच्च प्रतिष्ठित आत्मीयजनों एवं मित्रों से युक्त एवं साधन सम्पन्न होता है। यह योग केंद्रों एवं त्रिकोण (1,5,9) भावों में विशेष प्रशस्त माना जाता है तथा यह ग्रह योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर व कुम्भ लग्न में विशेष प्रशस्त माना जाता है। देखें कुं. नं. 92, 106, 110

गुरु-शनि—किसी कुण्डली में गुरु-शनि का योग हो, तो जातक परिश्रमी, कीर्तिमान, यशस्वी, उच्च शिक्षित, चिन्तनशील, अध्यात्म, ज्योतिष, मन्त्र आदि गूढ़ शास्त्रों में रूचि रखने वाला, लोकप्रिय, भूमि, मकान एवं सवारी आदि सुख साधनों से युक्त, अनेक विद्याओं एवं कलाओं को मानने वाला गुणी व्यकितत्व होता है। जातक में लेखन, ऐतिहासिक एवं गूढ़ विषयों का पाठ/पाठन की प्रवृत्ति/ लग्न में हो तो जातक गुणवान होते हुए भी आलस्ययुक्त, मदिरा आदि व्यसनों से ग्रस्त, निष्ठुर व कुटिल नीतिज्ञ होता है। पृथुयशस् के अनुसार यह योग उपचय भावों (3, 6, 10, 11वें) भावों में होने से जातक उच्च प्रतिष्ठित, राजमान्य एवं धनाढ्य होता है। जबकि अनुपचय (1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, या 12 वें) भावों में धन सम्पदादि के सम्बन्ध में कष्टकारी एवं अशुभ होता है। गुरु-शनि का योग मेष, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धनु कुम्भ व मीन लग्नों में शुभस्थ हो, तो विशेष प्रशस्त होगा परन्तु तुला लग्न में अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् सफलता मिलती है। देखें कुं. नं. 72, 83, 109.

गुरु-राहु—का योग हो, तो जातक उदासीन प्रवृत्ति का, निकट बन्धुओं से वैमनस्य एवं संताप रहे। मन में विभिन्न प्रकार की दुश्चिन्ताएं हों। प्रियजनों से दूर होने का दुख, धन हानि की चोरी आदि का भय, उदर विकार एवं गुप्त रोग एवं गुप्त शत्रुओं का भय हो, धन का अपव्यय अधिक रहे। अपने आत्मीयजन (माता-पिता) के शरीर कष्ट के कारण परेशानी हो। वृथा दौड़-धूप व धन खर्च भी अधिक रहे।

गुरु-केतु—का योग होने से अपने पारिवारिक जनों अर्थात् माता-पिता, भाई-बन्धु अथवा स्त्री व सन्तान को कष्ट, सहयोगी कर्मचारियों के साथ विरोध रहने की सम्भावना, दुर्घटना आदि के कारण शरीर कष्ट एवं चोटादि का भय हो। अनावश्यक खर्चों की भी अधिकता रहे।

शुक्र-शनि—का योग हो, जो जातक चंचल किन्तु सूक्ष्म एवं कुशल बुद्धि, सुन्दराकृति, हस्त-शिल्प आदि कलाओं का जानकार, डिज़ाइनिंग, पत्थर के शिल्प कार्य (मूर्ति निर्माण, संगमरमर तराशी), नक्शा विशेषज्ञ (Architect), लिपिकारी, चित्रकारी आदि की वस्तुएं बनाने में कुशल, धन-धान्य, स्त्री भोग, वाहन आदि सुख के साधनों से समन्वित होता है। ऐसा जातक पुस्तकों के लेखनादि कार्यों में तथा लकड़ी चीरने, जौहरी, कारपेण्टरी के कार्यों में भी कुशल होता है तथा ऐसे जातक को लवण, कषाय एवं आम्ल-रसास्वादन में विशेष रुचि होती है। स्त्री तेजतरार होगी। यह योग होने से जातक कामुकवृत्ति तथा सुरा-सुन्दरी एवं विलासादि पर अधिक व्यय होता है। शुभ भावों में हो, तो मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, बृश्चिक, मकर व कुम्भ लग्न आदि यह योग केन्द्र-त्रिकोण में बना हो, तो शुभ फल प्रदान करता है।

शुक्र-राहु—का योग यदि उपचय स्थानों (3, 6, 10 एवं 11 वें) में विशेष वृष, मिथुन,कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर व कुम्भ लग्नों में हो, तो जातक को इन ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा में श्रेष्ठ लोगों की संगति, विदेशगमन, धन-धान्य, स्त्री प्राप्ति एवं पुत्रादि सन्तान की उत्पत्ति, वाहन सुखों आदि की प्राप्ति होती है। परन्तु राहु भुक्ति के अंतिम समय (Period) में मानसिक तनाव, शरीर पीड़ा एवं वृथा खर्च आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

शुक्र-केतु—का योग हो, तो जातक को धनार्जन में विघ्न बाधाएं हों, पर वृथा खर्च भी बहुत बढ़े। अपनी सेहत में विकार हो, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट हो, घरेलू परेशानियां भी बढ़े। पारिवारिक सुख में कमी हो।

सूर्य-चन्द्रादि ग्रह योगों के सम्बन्ध में विशेष

कुंड़ली में सूर्य आदि पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को पिता के कष्ट या सुख में कमी एवं सरकारी क्षेत्रों से परेशानी होती है। यदि चन्द्र पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो माता को कष्ट या सुख में कमी व मानसिक तनाव व खर्च अधिक होते हैं। इसी भांति यदि सूर्य शुभ ग्रहों से युक्त हो, तो जातक को पिता से लाभ व सुख में वृद्धि, सरकारी क्षेत्रों से लाभ तथा यदि चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो, तो माता एवं मातुल पक्ष से सुख-लाभ, स्त्री एवं धन सम्पदा के सुख होते हैं। यह नियम केवल सूर्य और चन्द्र पर ही लागू नहीं होता बल्कि अन्य ग्रहों पर भी लागू होता है। जैसे मंगल शुभ एवं मित्र ग्रहों से युक्त हो, तो जातक को भूमि, मकान, भाई, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति हो तथा यदि शनि आदि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो इन सुखों में कमी रहेगी। यदि बुध शुभ एवं मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को बुद्धि, विद्या, मामा अदि सुख तथा शिल्प कला, गणित, ज्योतिष आदि में कुशलता प्रदान करता है। यदि पाप ग्रहों से युक्त हो, तो इन सुखों में कमी करता है।

गुरु : यदि नीच या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को उच्च विद्या, बड़े भाई, पति एवं पुत्र संतति के सुख की हानि करता है। यदि शुभ ग्रह युक्त हो, तो उच्च विद्या, पति संतान आदि सुखों में वृद्धि करता है।

शुक्र : यदि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को धन-सम्पत्ति, स्त्री-सुख, मित्र, संगीत-सौन्दर्य आदि सुखों की वृद्धि करता है तथा पाप-ग्रहों के योग से हानि करता है।

शनि : यदि शुभ एवं मित्र ग्रहों के योग में हो, तो जातक दीर्घायु, धैर्य, व्यापार का तैल, लोहा या तकनीकी कार्यों से अच्छा लाभ करवाता है। यदि शुभ ग्रहों के सम्बन्ध में हो, तो अपनी कारक वस्तुओं के सुख की हानि करवाता है।

सभी ग्रहों से सम्बन्धित वस्तुओं के सम्बन्ध में संक्षिप्त वर्णन आगामी पृष्ठों के पंचग्रही योग सम्बन्धी वर्णन में देखें अथवा ग्रहों के स्थिर कारक एवं भाव आदि सम्बन्धित विस्तृत ज्योतिष तत्त्व फलित प्रथम खंड में पढ़ें।

श्री दुर्गा चरित् एवं सप्तशती की महिमा

कलियुग में समस्त दुःखों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। ''**कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं श्री दुर्गार्चनम्॥**'' श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री दुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पड़ने वाले विघ्नों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवाँछित फल प्रदान कराने वाली **मन्दाकिनी है।**

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। माँ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरान्त पाठ की दशांश संख्या में श्री दुर्गा हवन करने से शीघ्र ही कामना सिद्धि होती है।

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्म ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रन्थ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा सप्तशती के प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में मूल पाठ के साथ हिन्दी टीका, श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ विधि, श्री दुर्गा पाठ सार कथा, श्री नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्गला स्तोत्र, तीनों रहस्य, नवचण्डी, शतचण्डी-विधान, श्री सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के मन्त्रों की आहुतियां हवन विधि सहित, अनुष्ठान हेतु अनेक **काम्य तान्त्रिक प्रयोग,** कनकधारा स्तोत्र, आरतियां इत्यादि अनेक नवीन विषय जो अन्य किसी भी अन्य प्रचलित सप्तशती में आप नहीं पाएँगे॥ धर्म पारायण प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं उपयोगी पुस्तक। इसमें दिए गए तान्त्रिक प्रयोगों की सहायता से मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति हो सकती है। श्रीदुर्गासप्तशती (सरल भाषा में) भी उपलब्ध है।

पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।
भेंट—65 रु., डाक व्यय अलग॥

नोट—कार्यालय के नियमानुसार 50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

शिवमन्त्रावली भा. टी.

प्रस्तुत बृहद् पुस्तक ''**शिवमन्त्रावली**'' में भगवान् **शिव** के अतिरिक्त अन्य प्रमुख देवी-देवताओं जैसे गौरीपुत्र गणेश, भगवान् विष्णु, महालक्ष्मी, भगवान् कृष्ण, माता-गायत्री, श्री राम, माता सरस्वती देवी, श्रीदुर्गा माता, श्रीहनुमान, भगवान् सूर्य, ब्रह्म मन्त्र, यक्षिणी, बगुलामुखी, महाकाली, अन्नपूर्णा देवी इत्यादि देवी-देवताओं के प्रमुख जपनीय मन्त्रों का अपूर्व संग्रह किया गया है।

इसके साथ ही शिवलिङ्ग का प्रादुर्भाव, सृष्टिक्रम, जपानुष्ठान के नियम, विविध कल्याणकारी मन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्रों के विभिन्न स्वरूप **बीज मन्त्रों** का रहस्य, **यन्त्र** निर्माण विधि, प्राण-प्रतिष्ठा, **भगवान् शिव के त्रिनेत्र, सर्पादि रहस्यमय प्रतीक चिह्न,** रूद्राक्ष महिमा, **शिवोपासना से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति,** महाशिवरात्रि व्रत माहात्म्य, द्वादश ज्योतिलिङ्ग, मन्त्र और स्तोत्र में अन्तर, विविध स्तोत्र, अभीष्ट वर, कन्या प्राप्ति प्रयोग आदि अनेक विषयों का समावेश दिया गया है। मूल्य 150 रु., फोन—0181-2457959

मंगवाने का पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-8 (पं.)

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी ३१° । १९ अक्षांश जालन्धर, एवं २३° । ३० अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबिक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यतः अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन २८ की अपेक्षा २९ होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की १ तारीख से २८ फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **१ मार्च से ३१ दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

२९ फरवरी के लग्न मान के लिए २८ फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस संस्कार तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**—ता. १६ अप्रैल, १९९५ को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. १६ अप्रैल को ७.२९ पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +२ मिनट प्राप्त हुए। अतः सन् १९९५ में **मेष लग्न ७.३१** पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९२**A**	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९२**B**	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
१९९३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१९९४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९६**A**	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९६**B**	–१	–१	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१	–१
१९९७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१९९८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००**A**	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००**B**	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४**A**	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४**B**	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८**A**	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८**B**	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	३१	५ ३९	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	१ १५	२ ४०	४ ०२
15	ज्ये.	५ ३५	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	२	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	३	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	४	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	५	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	६	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	७	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	८	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	९	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	१०	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	११	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१२	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१३	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१४	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१५	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१६	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१७	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१८	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	१९	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२०	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२१	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२२	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२३	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२४	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२५	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२६	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२७	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२८	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	२९	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३०	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३१	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी **जून-जुलाई (आषाढ़)** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी **जुला.-अग. (श्रावण)** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८, ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	३२	६०१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५
17	भाद्र	५ ५७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	२	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	३	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	४	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	५	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	६	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	७	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	८	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	९	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	१०	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	११	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१२	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१३	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१४	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१५	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं	१६	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१७	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१८	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	१९	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२०	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२१	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२२	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२३	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२४	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२५	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२६	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२७	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२८	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	२९	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३०	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	३१	६ १९	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४
17	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	२	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	३	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	४	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	५	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	६	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	७	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	८	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	९	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	१०	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	११	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१२	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१३	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१४	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू	१५	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१६	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१७	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१८	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	१९	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२०	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२१	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२२	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२३	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२४	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२५	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२६	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२७	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२८	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	२९	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३०	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्तू-नवं. (कार्तिक) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्तूबर	कार्तिक	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ [illegible]	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ०२	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ०
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३
13	फा.	७ १४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	—

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५६	९ १८	१० ५१	१२ ४५	१४ ५९	१७ २२	१९ ४२	२२ ००	० २२	२ ४२	४ ४६	६ २७
25	१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
26	१४	७ ५०	९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३६	२१ ५४	० १६	२ ३६	४ ४०	६ २१
27	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३६	६ १८
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (—) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**—मान लो आपने १६ जुलाई, २००७ को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें —८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**—नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। **निधि शर्मा M.Sc.**

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	-५	-५	-५	-३	-३	-६	-५	-५	-४	-५	-५	-५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	-१	-३	-४	-१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	-१	-५	-४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	-१५	-१२	-१३	-१५	-२१	-२९	-३४	-३७	-३६	-३२	-२६	-२०
अलीगढ़	-४	-३	-३	-५	-७	-१३	-१६	-१७	-१७	-१३	-११	-७
अयोध्या	-१८	-१८	-१५	-१९	-२१	-२५	-२८	-३०	-२८	-२७	-२४	-१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	-४	-६	-७	-७	-४	+१	+४
आगरा	-४	-२	-३	-६	-७	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-६
अगरतला	-५०	-४७	-४६	-५३	-६०	-६७	-७५	-७८	-७६	-७३	-६४	-५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	-८	-१४	-१९	-१७	-१०	-१	+७
ऊना (हि. प्र.)	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३
उधमपुर	-२	-२	-२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	-७	-१४	-१९	-१७	-१०	-२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	-४	-८	-६	-१	+६	+१३
करनाल	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-४	-३
कालका	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-४	-३
कुरुक्षेत्र	-४	-३	-३	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-३	-३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	-१	-१	+१	-०	-०	-०	-०	-१
कोटखाई	-७	-७	-७	-७	-७	-८	-७	-७	-७	-६	-६	-७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	-१	-६	-११	-१४	-१३	-८	-२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	-०	-०	-१	+०	-०	-०	-०	-०	-१
काठमण्डू	-३२	-३१	-३१	-३०	-३३	-३८	-४०	-४२	-४२	-४०	-३६	-३३
कोलकत्ता	-३७	-३२	-३५	-४०	-४९	-५८	-६४	-६९	-६८	-६१	-५३	-४४
कानपुर	-११	-१०	-१०	-१३	-१८	-२२	-२५	-२७	-२६	-२१	-१७	-१३
कांगड़ा	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
कुल्लू	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-५	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	-२	-२	-२	-१	-०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	-१	-१	-१	-०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-३
ग्वालियर	-२	+१	+०	-५	-९	-१२	-१६	-१८	-१७	-१३	-८	-५
गुरदासपुर	-१	-१	-१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	-२३	-२१	-२२	-२४	-२७	-३२	-३५	-३७	-३६	-३२	-२७	-२४
गुड़गांव	-१	-१	-१	-३	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-६	-४
गोहाटी	-५५	-४८	-५३	-५५	-६१	-६८	-७२	-७५	-७३	-६९	-६४	-६०
गाज़ियाबाद	-२	-१	-१	-२	-२	-७	-९	-११	-११	-९	-६	-३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	-२६	-१८	-२३	-२७	-३३	-४२	-४७	-५१	-४१	-४४	-३७	-३२
चण्डीगढ़	-५	-४	-४	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
चिन्तपूर्णी	-२	-१	-२	-२	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-१
चम्बा	-६	-६	-६	-५	-४	-२	+१	+२	+१	+०	+३	-४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	-३	-७	-९	-९	-७	-२	+३
ज्वालामुखी	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
जम्मू	-१	-१	-१	+०	+२	+४	+६	+७	+६	+५	+३	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	-२	-१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	-१	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	-२	+१	+०	-६	-११	-१७	-२२	-२५	-२३	-१८	-१३	[illegible]
जगन्नाथपुरी	-२२	-१६	-१३	-२६	-३७	-४९	-५९	-६४	-६३	-५५	-४४	[illegible]
दिल्ली	-२	-१	-१	-४	-४	-८	-११	-१२	-१२	-१०	-७	[illegible]
दुर्ग (म. प्र.)	-६	-०	-२	-१०	-१९	-२७	-३७	-४२	-४२	-३१	-२१	[illegible]
देहरादून	-१०	-१०	-९	-१०	-९	-११	-१२	-१२	-१३	-११	-९	[illegible]
धर्मशाला	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	[illegible]

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	−६	−६	−६	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−५	−६
नंगल (पंजा.)	−३	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−३
नैनीताल	−१३	−११	−१२	−१४	−१३	−१७	−१८	−२०	−१९	−१७	−१४	−११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	−२	−१	+४	+४
नवांशहर	−२	−२	−२	−२	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−२	−२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	−१४	−२३	−३२	−३५	−३३	−२७	−७	−६
नदौन(हि.प्र.)	−३	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−३	−३
नाभा (पंजा.)	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−३	−३	−२	−२	−२	−२
पटियाला	−३	−३	−३	−४	−३	−३	−५	−५	−४	−३	−३	−३
पानीपत	−६	−६	−६	−६	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−५
पठानकोट	−४	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१
पुंछ	−१	−२	−१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	−१६	−१४	−१५	−२०	−२४	−३०	−३५	−३७	−३७	−३१	−२७	−२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	−२	−१३	−१९	−१७	−९	+३	+१७
पंचकूला	−५	−५	−५	−४	−४	−६	−६	−६	−५	−५	−५	−५
पटना	−२९	−२६	−२३	−३०	−३५	−४२	−४७	−४९	−४९	−४६	−४०	−३३
पालमपुर	−६	−६	−६	−५	−५	−५	−६	−६	−५	−५	−५	−५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	−१	−१	−१	−१	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	−३	−२	−२	−३	−५	−९	−१२	−१३	−१३	−११	−८	−६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	−२०	−१६	−१६	−२३	−२६	−३३	−३८	−४१	−४१	−३७	−३२	−२५
बिलासपुर	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−४	−४	−४	−३	−३	−४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	−१	−२१	−३६	−४४	−४१	−२८	−११	+६
बरेली	−११	−१०	−११	−१३	−१२	−१५	−१७	−१९	−१९	−१७	−१३	−११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	−५	−५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	−५	−५	−५	−७	−८	−१२	−१४	−१५	−१५	−१४	−११	−८
बरनाला	−१	−१	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−०	−०	−०	−०
विशाखापटनम	−९	−१	+१	−१३	−२६	−४०	−५२	−५८	−५६	−४७	−३४	−२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	−२३	−१८	−२०	−२८	−३६	−४९	−५८	−६३	−६२	−५४	−४३	−३२
भरतपुर	−२	+०	+०	−५	−८	−१२	−१५	−१७	−१७	−१२	−१०	−५
भोपाल	+६	+१०	+८	+२	−३	−१३	−२०	−२३	−२२	−१७	−९	−१
मेरठ(उ.प्र.)	−६	−३	−४	−७	−४	−७	−१०	−११	−११	−१०	−७	−५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	−८	−७	−७	−८	−१०	−१४	−१६	−१८	−१७	−१४	−११	−८
मण्डी (हि.प्र.)	−७	−७	−७	−७	−७	−६	−४	−४	−४	−६	−६	−६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	−२	+०	−१	−४	−६	−१०	−१२	−१३	−१३	−११	−८	−६
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	−१३	−३१	−४६	−५५	−५२	−४०	−२३	−०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	−१७	−३३	−४१	−३९	−२६	−९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	−१	−१	−१	−१	−१	−२	+०	−१	−१	−१	−२	−२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	−८	−१४	−१२	−३	+९	+२१
रोपड़	−४	−३	−३	−४	−३	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−३
राँची	−२५	−२१	−२३	−२८	−३६	−४५	−५१	−५७	−५५	−४८	−३९	−३१
रायपुर (छत्ती.)	−८	−२	−४	−१२	−२१	−२९	−३९	−४४	−४४	−३४	−२३	−१६
रोहतक	−१	+१	+१	−२	−२	−६	−९	−१०	−१०	−८	−५	−३
लुधियाना	−२	−२	−१	−२	−१	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−२
लखनऊ	−१४	−१२	−१२	−१६	−२२	−२४	−३०	−३०	−३०	−२७	−२३	−१८
शिलांग	−५५	−४९	−५२	−५५	−६१	−६९	−७४	−७६	−७५	−७१	−६५	−६१
श्रीनगर	−३	−३	−३	−१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	−६	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५	−५	−७	−७	−६
सोलन	−६	−५	−६	−६	−६	−६	−५	−५	−६	−६	−६	−६
सोनीपत	−२	−२	−२	−२	−३	−७	−१०	−११	−११	−९	−७	−५
सहारनपुर	−६	−६	−५	−७	−६	−७	−८	−९	−९	−७	−५	−६
सुन्दरनगर	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	−४	−९	−८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	−४	−४	−५	−५	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−३
हरिद्वार	−८	−७	−७	−९	−८	−१०	−११	−११	−१२	−११	−१०	−९
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	−७	−२१	−३३	−३९	−३७	−२८	−१५	−१
होशियारपुर	−३	−४	−३	−३	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−२	−३
हमीरपुर	−५	−५	−४	−४	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	−४	−५	−७	−५	−४	−१	+२
हिसार	+२	+४	+३	+१	+०	−२	−३	−४	−४	−२	−१	+१

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

सट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा–तेजी)	120 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	50 रु.
मोटर वाईडिंग	40 रु.
पशु चिकित्सा	40 रु.
विवाहित आनन्द	35 रु.
पत्नी पथ प्रदर्शक	35 रु.
लाटरी गाईड	40 रु.
स्वर लिपि संग्रह	50 रु.
व्यापार रत्न	350 रु.
तबला वादन कोर्स	80 रु.
Dictionary (Big)	250 रु.
Dictionary (Med.)	120 रु.
ताश के जादू	40 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज (बड़ी)	150 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	150 रु.
कम्पयूटर कोर्स (बड़ा)	200 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	120 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	50 रु.
जूडो कराटे सीखें	30 रु.
हारमोनियम सीखिए	60 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	50 रु.
सिलाई कटाई शिक्षा	50 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	48 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	40 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	25 रु.
मिलिंग मशीन	45 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	50 रु.
मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज	300 रु.
कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज	200 रु.
इन्वर्टर सर्विसिंग	80 रु.
ए. सी. मोटर वाईडिंग	80 रु.
स्टीम बायलर्स और इंजन	100 रु.
आर्य संगीत रामायण	110 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

बनाइये खाना वेजीटेरियन	75 रु.
खाना खजाना	250 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	100 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	40 रु.
भारतीय व्यंजन	25 रु.
आलू पनीर के व्यंजन	40 रु.
माइक्रोवेव कुकिंग	40 रु.
फल सब्ज़ी से चिकित्सा	40 रु.
चाइनिज कुकरी	35 रु.
शहनाज ब्यूटी बुक	125 रु.
योगासन चिकि. स्वा. रामदेव	125 रु.
प्राणायाम चिकित्सा	50 रु.
ब्यूटी पार्लर कोर्स	50 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	35 रु.
55 चालीसा एवं आरती संग्रह	40 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

एलोपेथिक चिकि. (कोकचा)	200 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	180 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	100 रुपए
स्वदेशी चिकित्सा सार	60 रुपए
घर का वैद्य	40 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
सूर्य शक्ति से ईलाज	25 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	150 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	35 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	135 रुपए
न्यू एलोपैथिक मैडी. गाईड	40 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	50 रुपए
योगासन एवं साधना	50 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	35 रुपए
जड़ी–बूटियाँ	30 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	170 रु.
यूनानी चिकित्सा सार (वैद्यनाथ)	150 रु.
सचित्र योगासन	30 रु.
वनौषधि शतक (बैद्यनाथ)	100 रु.
भैषज्य भास्कर	50 रु.
ईलाजुलगुर्बा	85 रु.
शरीर रचना क्रिया वि.	50 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	40 रु.
आयुर्वेद मंथन	30 रु.
महत्त्वपूर्ण जड़ी–बूटियां	200 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	245 रु.
गुणकारी जड़ी–बूटियां	60 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	60 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	70 रु.
भाव प्रकाश निघन्टु	120 रु.
योग के अद्भुत चमत्कार	50 रु.
आपका आरोग्य आपके हाथ	55 रु.
योगासन	30 रु.
प्राकृतिक चिकित्सा	30 रु.
घरेलू इलाज	30 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	125 रु.
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	100 रु.
84 योगासन व स्वास्थ्य	40 रु.
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	50 रु.

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र

काली किताब	500 रु.
काली किताब (छोटी)	150 रु.
महाइन्द्रजाल	500 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	100 रु.
शाबर मंत्र विद्या	50 रु.
तंत्र–मंत्र–यंत्र रहस्य	300 रु.
यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र (छोटी)	40 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	60 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	60 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	125 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	200 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र और टोटके	120 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	40 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	60 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	60 रु.
काली तंत्र शास्त्र	75 रु.
तारा तंत्र शास्त्र	75 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	60 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	30 रु.
यंत्र–मंत्र–तंत्र टोटके	40 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	80 रु.
धनप्रदायक तांत्रिक क्रियाएं	50 रु.
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	40 रु.
11000 गंडे ताबीज़ और टोटके	200 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	200 रु.
मंत्र रहस्य	80 रु.
यंत्र विधान	120 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	75 रु.
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	50 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	50 रु.
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	60 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	60 रु.
मनोकामना सिद्धि	30 रु.
वशीकरण मन्त्र	30 रु.
चीन बंगाल का जादू	30 रु.
कामाक्षा मन्त्र	30 रु.
सूर्य तन्त्रम्	45 रु.
कामाख्या उपासना	60 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	150 रु.
महाविद्या मंत्र तंत्र	35 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	80 रु.
श्री नवग्रह साधना रहस्य	50 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	35 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	20 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	30 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीपः	95 रु.
विवाह पद्धति	45 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25 रु.
कर्मकाण्ड पद्धति	125 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	65 रु.
नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?)	150 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	100 रु.
कर्मकाण्ड भारती	70 रु.
पूजा पद्धति	50 रु.
पूजा भास्कर	50 रु.
हवन रहस्यम्	50 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	30 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	55 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	60 रु.
श्री दुर्गा पूजन विधान	15 रु.
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	60 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा)	30 रु.
सनातन संस्कार विधि	150 रु.
संस्कार पद्धति	60 रु.
श्राद्ध विवेक	150 रु.
नित्यकर्म पद्धति	55 रु.
पितृकर्म पद्धति	75 रु.
सर्वदेव पूजा पद्धति	20 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	180 रु.
हवन पद्धति	25 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	25 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा	60 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	40 रु.
सर्व व्रतोद्यापन प्रकाश	100 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	40 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	100 रु.

अपने आर्डर के साथ 50/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

फोन–2457959

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LL.B.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि—असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (२) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (३) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र—ॐ, ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न **मोती को संस्कृत** में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं अंग्रेज़ी में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान—शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना,चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा—(१) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (२) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न—चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)—यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा—(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न वालों** को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र

में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र—ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

''पन्ना'' बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद/व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald) । पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा—(१) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (२) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण—'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि—यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र—ॐ, ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु—रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि—जो पुखराज स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि** का माना जाता है।

परीक्षा—(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण—पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि में लाभदायक होता है।

धारण विधि—पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **''ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः''** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक, राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न—सुनैला इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, **हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान—अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा—(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण—हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक** सुख में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण—हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे—दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः) का १६ हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहुर्त्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न—(i) फिरोज़ा नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)– यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान—असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा—(i) असली **नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो** दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने **से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।**

गुण—नीलम धारण करने से **धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति—नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि—नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उभा, चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों में शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० **की संख्या में अभिमन्त्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न–गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि—सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि—गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र—"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया ४ रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान—(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि—लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र—"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'रत्न ज्योतिष विज्ञान' पुस्तक 35 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य १०० रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह (सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.) पड़ जाएँ, तो कालसर्प नामक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है—

अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येकपार्श्वे भानांषट्के राहुकेत्वो न खेटः।
योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्जातो जाता वाऽर्थपुत्रर्त्तिमीयात्॥

कालसर्प योग से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं—स्वतन्त्र **भारतवर्ष एवं पाकिस्तान की जन्म कुण्डली, पं० जवाहर लाल नेहरू**, पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक **जुल्फकार भुट्टो, हिटलर (जर्मनी), सुश्री लतामंगेशकर** इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेषात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) में पढ़ें।

वास्तव में राहु-केतु छाया ग्रह हैं। राहु का नक्षत्र भरणी है एवं इसका देवता 'काल' है। केतु का नक्षत्र अश्लेषा है एवं इसके देवता सर्प हैं। कालसर्प योग के प्रभाव के कारण प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएँ तथा आर्थिक उन्नति में बाधाएं रहती हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कुण्डली में केवल कालसर्प योग ही प्रभावित कर रहा हो। कुंडली में बैठे अन्य शुभ योग जातक को आश्चर्यजनक सफलताएं दिला सकता है। कालसर्प योग अत्यन्त समृद्ध साधन सम्पन्न अमीर व्यक्ति की कुंडली में भी हो सकता है अथवा दीन, अभावग्रस्त गरीब व्यक्ति की कुण्डली में भी हो सकता है। मुख्यतः इस योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य अपनी अन्तर्मन की शक्तियों का पूर्णतया उपयोग नहीं कर पाता अथवा सब सुख-साधन सम्पन्न होते हुए भी मानसिक तनाव एवं असन्तोष बना रहता है तथा अज्ञातभय एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त रहती है।

लक्षण—इस योग के कारण जातक को स्वप्नों में सर्प दिखाई देते हैं, पानी दिखना, अपने-आप को उड़ते हुए देखना, परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति आना, पितृशिव देखना, सर्प और नेवेले की लड़ाई दिखे तो निश्चय ही गृह-कलह हो सकता है। कालसर्प योग का उपाय कर लें। ये सब लक्षण है कि आपकी कुण्डली में कालसर्प या आंशिक कालसर्प योग है। आप अपनी कुण्डली किसी विद्वान् ज्योतिषी को दिखाकर उपाय करें।

कालसर्प दोष केवल ग्रह-जनित पीड़ा है, इसलिए इसकी शान्ति मुख्य रूप से—(१) द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से किसी एक ज्योतिर्लिंग के निकट (२) क्योंकि इस योग के अधिष्ठाता श्री महाकाल ही हैं। अतएव यदि प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग एवं सिद्ध शक्ति पीठ, कलिया नाग के निवास स्थल पुण्य सलिला क्षिप्रा गंगा के तट पर उज्जैन नगर में है। (३) प्रयागराज (४) नासिक में (५) अथवा यदि सम्भव न हो तो शिव मन्दिर में द्वादश ज्योतिर्लिंग का ध्यान करते हुए करें।

—कालसर्प दोष शान्ति के लिए उपाय—

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे—(१) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र—ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(२) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें—ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(३) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छींटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(४) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(५) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(६) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(७) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए—

अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्।
शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥
एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये।
सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(८) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(९) सोना—७ रत्ती, चाँदी—१२ रत्ती, तांबा—१६ रत्ती—ये तीनों मिलाकर सर्पाकार अंगूठी अनामिका अंगुली में धारण करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(१०) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(११) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(१२) यदि किसी स्त्री की कुंडली इस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करवा सकती तो किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

(१३) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

-पितृदोष के ज्योतिषीय कारण एवं उपाय-

भारतीय धर्मशास्त्र के अनुसार गृहस्थाश्रम में पंचमहायज्ञ को द्विजातियों के लिए आवश्यक कर्त्तव्य माना गया है। इस विषय में मनुस्मृति में कहा गया है—अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो दैवो बालिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।

पञ्चमहायज्ञ इस प्रकार से हैं—(१) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ, (3) भूतयज्ञ, (4) पितृयज्ञ और (5) मनुष्य यज्ञ।

गृहस्थाश्रम केवल सुखोपभोग हेतु नहीं है, अपितु इस आश्रम के कुछ आवश्यक कर्त्तव्य भी हैं, जिनको जातक ने अपने ऋषियों, देवताओं, पितरों आदि के ऋण के रूप में हमारा दायित्व बनता है।

ब्रह्मयज्ञ—वेदों एवं वेदाङ्ग का अध्ययन, आचरण एवं अध्यापन करना ब्रह्मयज्ञ है। गायत्री मन्त्र का विनियोग सहित यथेष्ठ संख्या में जप करने से भी ब्रह्मयज्ञ की पूर्ति होती है।

(२) **देवयज्ञ** में भगवान् शिव, शक्ति, गणेश, सूर्य एवं विष्णु—इन प्रमुख पंचदेवों की यथाविधि पूजन की परम्परा है। पूजनोपरान्त प्रमुख देवी-देवताओं के निमित्त यज्ञ द्वारा पवित्र अग्नि में आहुतियाँ दी जाती हैं। 'देवता' सूक्ष्म शरीरी होने से हवन किए गए द्रव्यों की सुगन्ध से ही सन्तुष्ट होते हैं और यज्ञकर्ता को आयु, आरोग्य, धन-सन्तति एवं ऐश्वर्य भोग का आशीर्वाद देते हैं।

(३) **पितृ यज्ञ**—स्मृतिकारों ने पितृयज्ञ के तीन मुख्य तत्त्व बतलाए हैं—(१) तर्पण (२) पिण्डदान एवं श्राद्धकर्म तथा (३) दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन करवाना।

'पितर' गृहस्थ की वंश संतति एवं वंश परम्परा अविच्छिन्न रखते हैं। पुत्र सन्तान द्वारा दिए गए अन्न, जल, तर्पणादि श्राद्धीय द्रव्यों से पितर संतृप्त होकर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं, और उन्हें लम्बी आयु, सन्तति, धन, विद्या, सौभाग्य सुख आदि प्रदान करते हैं—

आयु प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्य प्रीता नृणां पितामहाः॥

दिवंगत पितरों में पिता वसु, पितामह रूद्र तथा प्रपितामह आदित्य रूप कहलाते हैं।

'ब्रह्म यज्ञ' करने पर ऋषि-ऋण से मुक्ति होती है, **देवयज्ञ** करने से 'देवऋण' की संकल्प पूर्ति होती है और **पितृयज्ञ** करने से **'पितृऋण'** से मुक्ति मिलती है।

भूत यज्ञ में गाय, कुत्ता, कुष्ट, रूग्ण, कौवा, कीड़े, चीटियों आदि को खाद्य पदार्थ प्रदान किए जाते हैं। तथा

मनुष्य यज्ञ में अतिथियों का भोजन, जलादि से सत्कार किया जाता है।

ज्योतिष में पितृदोष का प्रभाव

ज्योतिष में द्वादश भाव एवं नवग्रहों के आधार पर पितृदोष का विचार किया जाता है।

नवग्रहों में बृहस्पति (गुरु) आकाश तत्त्व का, सूर्य व मंगल अग्नि तत्त्व का, शुक्र एवं चन्द्र जल का तत्त्व, शनि वायु तत्त्व का तथा राहु व केतु चुम्बकीय छाया ग्रह कहलाते हैं। **सम्बन्धों में सूर्य** आत्मा एवं पिता का, **चन्द्रमा** मन एवं माता का, **मंगल** छोटे भाई-बहन तथा पुत्र एवं सम्पत्ति, रुधिर, चोटादि का, **बुध** मातुल पक्ष, मामा, मौसी, चाची का, बहन की सन्तान या सबसे छोटा पुत्र या पुत्री एवं बन्धु सुख का, **गुरु** पति सुख, बड़ा भाई, पुत्र सन्तति, विद्या आदि का कारक होता है। **शुक्र** से पत्नी एवं स्त्री सुख, एवं धन-सम्पदा, **शनि** से सांसारिक सुख-दुःख, श्वास प्रक्रिया, हड्डियों एवं वायु जनित रोगों का, डीज़ल या पेट्रोल से चालित कार्य, तकनीकि कार्यों एवं कर्मचारी वर्ग से सम्बन्ध रखता है। **राहु** से मशीनरी, चर्म उद्योग, शेयर्ज व लाटरी तथा पितृपक्ष के सम्बन्धों का विचार तथा **केतु** से शल्य चिकित्सा, मैडीसन्ज (Medicines) चिकित्सक, तम्बाकू व शराब एवं पड़ोसियों से सम्बन्धित विषयों का कारक होता है।

जब **पितृकारक** ग्रहों का योग राहु-केतु, शनि आदि दुःखकारक एवं पृथकताजन्य ग्रहों के साथ होता है, तो **पितृदोष** कहलाता है।

पितृकारक ग्रहों का **प्रभाव लग्न, पंचम, सप्तम, अष्टम एवं नवम भावों** पर विशेष तौर देखा गया है।

पितृदोष के प्रमुख योग

(1) जब लग्न भाव पर राहु एवं शनि आदि अशुभ ग्रह का प्रभाव हो, तो पितृदोष होता है। अथवा जब **लग्नेश** ग्रह नीच राशिस्थ होकर राहु एवं शनि के साथ योग अथवा दृष्टि सम्बन्ध रखता हो तो **पितृदोष** होता है।

(2) नवम भाव में गुरु व शुक्र का योग हो अथवा दशम भाव में चन्द्र पर शनि व केतु का प्रभाव हो तो जातक पितृदोष से पीड़ित होता है। **नवम** में राहु युक्त गुरु हो तो भाग्य उन्नति में बार-बार विघ्न/बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

(3) लग्न व पंचम भाव पर शनि, राहु, केतु या मंगल ग्रहों का प्रभाव हो, तो जातक को **पितृदोष** के कारण सन्तान हानि अथवा सुख में कमी होती है।

(4) सूर्य लग्न एवं सूर्य स्थित राशि स्वामी ग्रह तथा चन्द्रलग्न एवं चंद्र स्थित राशि स्वामी ग्रह, जब राहु, शनि व केतु ग्रहों में से किसी एक या दो ग्रहों के प्रभाव में हो तो **पितृदोष** होता है। इससे प्रभावित जातक/जातिका को मानसिक तनाव, डिप्रैशन, स्त्री सम्बन्धी परेशानी, सन्तान कष्ट एवं कलह-क्लेश रहते हैं। व्यवसाय में भी आर्थिक परेशानियाँ एवं अस्थिरताएँ होती हैं।

(5) व्ययेश लग्न भाव में, अष्टमेश पंचम में एवं दशमेश अष्टम में हो तो पितृदोष के कारण धन एवं सन्तान हानि होती है।

(6) जन्म कुण्डली में बृहस्पति नीच राशि में या नीच नवांश में राहु या शनि युक्त होकर पंचम भाव में हो तो उच्च विद्या या सन्तान सुख में विघ्नकारक होता है। यदि यह योग सप्तम में हो तो स्त्री या पति के साथ कलह-क्लेश होता है। अष्टम में धन हानि एवं दीर्घायु में कमी, नवम भाव में यह योग हो तो भाग्योन्नति में बाधक तथा दशम या एकादश में हो तो कार्य व्यवसाय व लाभ उन्नति में **पितृदोष** के कारण बाधाएँ होती हैं।

कुछ लोग **चन्द्र-बुध** का योग अथवा **सूर्य-शनि** का समसप्तक योग होने से भी पितृदोष मानते हैं।

इत्यादि बहुत से **पितृदोष** कारक योग बनते हैं जिनके कारण कार्य क्षेत्र एवं गृहस्थ जीवन में दुःख व कष्ट बने रहते हैं। **पितृदोष** सम्बन्धी और अधिक विवरण के लिए हमारी शीघ्र प्रकाशनाधीन पुस्तक ''अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय'' मंगवाएँ। पता पंचाग दिवाकर कार्यालय की पुस्तक सूची में देखें।

तदर्थ पाठकों से निवेदन है कि पितृदोष के **निवारण हेतु** अपने दिवंगत आत्मीयजनों का श्रद्धापूर्वक श्राद्धकर्म (पितृ पूजन, तर्पण, ब्राह्मण भोजन, वस्त्र, फल, अनाज, दक्षिणा सहित) अवश्य करना चाहिए।

श्राद्ध के दिनों में, अमावस को, तथा अन्य पर्व के दिनों में पितृ तर्पण, पीपल वृक्ष को (रविवार को छोड़कर) अन्य दिनों में दूध, जल, गंगाजल सहित, तिल, चावल, जौं एवं पुष्पादि सहित विधि एवं मन्त्रपूर्वक सींचना चाहिए।

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो. तुलसीकृत रामायण (भाषा–टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित् की महिमा को हृदयंगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन-पठनार्थ घर में रखना अथवा दान-दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत 251/- रु.। आर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य 150 रु. (डाक व्यय अलग)

श्री वाल्मीकि रामायण (सचित्र)

हिन्दी भाषा में सुन्दर मोटे अक्षरों में प्राप्य हैं। (मूल्य 200 रु.) ये ग्रन्थ पंजाबी भाषा में भी उपलब्ध हैं। मूल्य 800 रुपए। डाक व्यय अलग।

श्री प्रेम सागर (सचित्र)

प्रेम, भक्ति और भावना से परिपूर्ण भगवन् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं तथा उनके जीवन चरित्रों का सजीव एवं सचित्र वर्णन जिसे धर्म में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। मूल्य 100 रुपए, डाक व्यय अलग।

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्त्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्रा से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र 250 रुपए आर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। **मध्यम सुखसागर—मूल्य 100 रु.।**

सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पीपल, करवा-चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे—एकादशी, धन, त्र्योदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई-दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। मूल्य—25 रु.

अष्टावक्र गीता

चित्त के सन्देहों को दूर करने एवं ज्ञान के मुमुक्षओं को तमोमय अंधकार नष्ट करने तथा शान्त, अद्वैत और निर्मल आत्मा के लिए इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। (मूल्य 120 रु.)

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जोकि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि, सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शतचण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल 55 रुपए। सजिल्द 65 रुपए।

श्री हरिवंश पुराण

नि:सन्तान दम्पत्ति को सन्तान प्रदान करने वाला, निर्धन को धन देने वाला और महापातकी मनुष्य के सब पापों का नाश कर देने में समर्थ ये 'हरिवंश पुराण' सुनने से अथवा पढ़ने से कलियुग में व्यक्ति महापापों से भी मुक्त हो जाता है।

मूल्य 350 रुपए।

श्रीमद्भगवत् गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली महात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मंगवाएँ। **मूल्य 100 रु.।**

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्दवेद-1 खण्ड, अर्थर्ववेद-2 खण्ड, समावेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। **मूल्य सम्पूर्ण सैट-500 रु.।**

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। मूल्य केवल 200 रु.। मनीआर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय पृथक।

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) 25/-

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

श्रीमद्देवी भागवत पुराण	200/-
श्री विष्णु पुराण	175/-
श्री विश्वकर्मा महापुराण	150/-
योग वशिष्ठ (दो भाग)	500/-
व्यापार रत्न	350/-
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	350/-
निर्णयसिन्धु (भाषा टीका)	450/-
चाणक्य नीति	40/-
विदुर नीति	50/-
महामृत्युञ्जय साधना	60/-
श्री गरुण पुराड़ (प्रेतकल्प)	60/-
कर्मकाण्ड कुसुमाञ्जली	35/-
कर्मकाण्ड प्रदीप:	95/-
कर्मठगुरु	**85/-**
कवच संग्रह	20/-
भद्रबाहु संहिता (मंदा-तेजी पर)	150/-
लाल किताब गुटका	135/-
मंत्र महोदधि	450/-
षोडश संस्कार पद्धति	80/-
वास्तु शान्ति प्रयोग	25/-
मन्त्र सागर	100/-
बगुलामुखी उपासना	40/-
मंत्र द्वारा कामना सिद्धि	40/-
मंत्र द्वारा रोग निवारण	60/-
मंत्र शक्ति	40/-
मनोकामना पूरक मंत्र	60/-
वृहद् कौवा तंत्र	30/-
सूर्यशक्ति से इलाज	25/-
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	40/-
आरती संग्रह ग्लेज़चित्र	30/-
योग वसिष्ठ महारामायण	150/-
55 चालीसा संग्रह (55 आरतियां सहित)	40/-

गरुड़ पुराण भा. टी.	60/-
विशाल हस्त सामुद्रिक	100/-
वैशाख महात्म्य	25/-
विशाल भृगु संहिता पद्धति	250/-
पं. देवीदयालु का राशिफल	**28/-**
माघ महात्म्य	25/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	**225/-**
कार्तिक महात्म्य	25/-
ज्योतिष सर्व संग्रह	45/-
वशिष्ठी हवन पद्धति	25/-
असली आल्हाखण्ड	**101/-**
विवाहपद्धति देवीदयालु	**50/-**
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	**65/-**
सूर्य पुराण (भा. टी.)	60/-
हस्त रेखा विज्ञान	60/-
सूर्य उपासना	60/-
तान्त्रिक सिद्धियाँ	60/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	150/-
मन्त्र सिद्धि	35/-
श्री हरिवंश पुराण (मध्यम)	100/-
श्रीगणेश महापुराण	225/-
मनुस्मृति	60/-
देवी-देवता सिद्धि	50/-
कर्मकाण्ड पद्धति	**125/-**
भजन सरोवर	100/-
लाल किताब (हिन्दी)	**600/-**
शिव मंत्रावली	150/-

अपने आर्डर के साथ 50/- रुपपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ पूरा लिखें। वी. पी. द्वारा मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर

फोन—2457959

ज्योतिष सम्बन्धी अनुपम पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

पं० देवी दयालु ज्यो० जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग	680 रु.
श्री दशवर्षीय पंचांग	180 रु.
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	50 रु.
वर्षफल चन्द्रिका	65 रु.
ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड)	65 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I)	250 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II)	250 रु.
शिव मन्त्रावली	**150 रु.**
विवाह पद्धति	50 रु.
श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.)	65 रु.
गण्डमूल शान्ति प्रयोग	**40 रु.**
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति	20 रु.
नवग्रह पूजा विधान	30 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	30 रु.
कार्तिक माहात्म्य	25 रु.
55 चालीसा आरती संग्रह	40 रु.
लघु पंचांग दिवाकर	20 रु.
शिवरात्रि व्रत भा.टी.	25 रु.
षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.)	10 रु.
जन्माङ्क पत्रिका (16 पृ.)	8 रु.
जन्माङ्क पत्रिका (12 पृ.)	6 रु.
जन्माक्षर टेवा (16 पृ.)	3 रु.
जन्म अक्षर पत्रिका (8 पृ.)	3 रु.
ज्यो० ज्ञान शास्त्र (गुरमुखी)	75 रु.
लाल किताब (गुरमुखी)	100 रु.
फलित ज्योतिष (गुरमुखी)	400 रु.
राशिफल सन् 2009 ई.	**28 रु.**

अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें

ज्यो० और संतान योग	60 रु.
ज्योतिष और रोग विचार	125 रु.
ज्यो० और धन योग	60 रु.
ज्यो० और विवाह योग	60 रु.
ज्यो० और व्यवसाय का चुनाव	60 रु.
भारतीय ज्योतिष (नेमिचन्द्र)	280 रु.
फलदीपिका	145 रु.
भृगु संहिता	250 रु.
भृगु संहिता (छोटी)	150 रु.
भारतीय ज्योतिष (लाल किताब)	155 रु.
लाल किताब ज्योतिष (पं० अशान्त)	250 रु.
शनि साढ़ेसति से छुटकारा	40 रु.
षड्वर्ग फलम	**200 रु.**
मन्त्र मञ्जरी	275 रु.
ज्योतिष के अनुभूत रहस्य	250 रु.
अष्टकवर्ग सिद्धान्त व प्रयोग	110 रु.
कालसर्पयोग कारण-निवारण	120 रु.
मंगलीक दोष भ्रान्ति-निदान	135 रु.
फलित ज्योतिष रेडिरेक्नर	68 रु.
रावण संहिता (बड़ी)	2500 रु.
रावण संहिता	500 रु.
रावण संहिता	200 रु.
काली किताब	500 रु.
काली किताब	300 रु.
दशाफल दर्पण (वृहद्)	300 रु.
भृगु संहिता महाशास्त्र	1900 रु.
शनि शमन	115 रु.
शत्रु शमन	225 रु.
मानसागरी (भा.टी.)	100 रु.
भारतीय फलित ज्योतिष	130 रु.
बृहज्योतिषसार	150 रु.
जातकभरणम्	100 रु.
मुहूर्त्त चिन्तामणी	60 रु.
बृहजातकम्	150 रु.
वृहद् होरा शास्त्रम्	200 रु.
आयुर्निर्णय	200 रु.
जातकतत्त्वम्	150 रु.
मुहूर्त्त मार्तण्ड	135 रु.
मुहूर्त्त पारिजात	150 रु.
ज्योतिष तत्त्व प्रकाश	175 रु.
प्रश्न मार्ग (दो खण्ड)	**300 रु.**
कु. विवेचन तथा फलित सिद्धान्त	250 रु.
केवलज्ञान प्रश्नचूड़ामणि	60 रु.
प्रश्न चन्द्रप्रकाश	95 रु.
प्रश्न भास्कर	80 रु.
प्रश्न विद्या	50 रु.
वैवाहिक सुख	135 रु.
वैवाहिक विलम्ब के उपाय	110 रु.
संतान सुख-सर्वांग चिन्तन	195 रु.
कर्मठगुरू	85 रु.
भावकुतूहलम्	60 रु.
जातक भूषणम्	150 रु.
कुण्डली दर्पण	100 रु.
दशाफल विचार	50 रु.
दशाफल दर्पण	60 रु.
कालसर्पयोग निवारण अनुष्ठान	65 रु.
लघु पराशरी भाष्य	165 रु.
लघु पराशरी सिद्धान्त	**295 रु.**
मन्त्र सागर	100 रु.
हस्तरेखा शास्त्र श्रीमाली	88 रु.
चन्द्र हस्त विज्ञान	395 रु.
हस्त रेखा विज्ञान-कीरो	60 रु.
सम्पूर्ण हस्तरेखा शास्त्र	200 रु.
हस्तरेखाएँ और दाम्पत्य जीवन	50 रु.
चमत्कार चिन्तामणि	195 रु.
ज्यो० द्वारा रोग विचार	130 रु.
ज्यो० और दाम्पत्य जीवन	200 रु.
ज्यो० और कालनिर्णय	50 रु.
कालसर्प एवं घट विवाह	100 रु.
लग्न दर्शन पं. अशान्त (चार भाग)	400 रु.
ज्योतिष सर्वस्व	200 रु.
अनिष्ट ग्रह निवारण	40 रु.
सूर्य सिद्धान्त	150 रु.
लघु पाराशरी	50 रु.
सर्वार्थ चिन्तामणि	100 रु.
सुनहरी किताब	120 रु.
अष्टकवर्ग से भविष्य ज्ञान	100 रु.
शनि शत्रु नहीं मित्र (श्याम सुंदर)	275 रु.
उपाय मार्तण्ड	**150 रु.**
देखने में छोटे लगे...(1)	65 रु.
सुख-समृद्धि के दुर्लभ उपाय...(2)	65 रु.
आपका भाग्य आपके हाथ...(3)	65 रु.
कर्ज से मुक्ति	70 रु.
आपकी राशि भविष्य की झांकी	50 रु.
उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर	50 रु.
जातकालंकार (भा.टी.)	50 रु.
गोचर विचार	50 रु.
चुने हुए ज्यो० योग	50 रु.
व्यापार रत्न (तेज़ीमंदी)	350 रु.
फलित ज्यो. में ग्रहों के फल	80 रु.
जातक सारदीप (2 खण्डों में)	400 रु.
ताजिक नीलकंठी	100 रु.
सारावली	200 रु.
हाथ का अंगूठा-भाग्य का दर्पण	100 रु.
जैमिनी सूत्रम	150 रु.
जातक सत्याचार्य	80 रु.
वैदिक उपचारीय ज्योतिष	**160 रु.**
कालसर्पः शोध संज्ञान	395 रु.
मंत्र रहस्य (श्री माली)	96 रु.
लाल किताब (बड़ी)	800 रु.
लाल किताब	150 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	200 रु.
नक्श-ए-सुलेमानी	150 रु.
सुलेमानी नक्श	60 रु.
11000 गंडे ताबीज़ टोटके	200 रु.
5001 टोने-टोटके और ताबीज़	150 रु.
दान द्वारा रोग निवारण (गोला)	125 रु.
ग्रहों की शांति के अनुभव	125 रु.
स्वप्न फल दर्पण	50 रु.
स्वप्न ज्योतिष विज्ञान	60 रु.
स्वप्न एवं शकुन	60 रु.
रत्न ज्योतिष	50 रु.
रत्न पहने भाग्य बदलें	80 रु.
रत्न प्रदीप	100 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	100 रु.
रत्न और रूद्राक्ष	40 रु.
रत्न परिचय	40 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	200 रु.
आपका भाग्यरत्न	60 रु.
अंक विद्या रहस्य	50 रु.
अंकों में छिपा भविष्य	50 रु.
अंकों का अद्भुत संसार	120 रु०
अंक किताब (कीरो)	60 रु.

वास्तुशास्त्र विज्ञान पव

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	150 रु.
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	75 रु.
रेमिडियल वास्तुशास्त्र	150 रु.
व्यावहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुकला और भवन निर्माण	110 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य	300 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य (2 भाग)	450 रु.
फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र	100 रु.
इंटीरियर डिजाइनिंग वास्तुशास्त्र	150 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

"लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 1650 रु. (डाक व्यय सहित)
हिन्दी रुपान्तरण 'अरुण संहिता' मूल्य 550 रु.

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता :

50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेजें।

जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन-0181-2457959